श्रीदासबोध

(मराठी)



गीताप्रेस, गोरखपुर

श्रीदासबोध

(मराठी)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्विणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

गीताप्रेस, गोरखपुर

पुस्तकें यहाँ भी उपलब्ध हैं-

गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान

- १-सूरत— वैभव एपार्टमेन्ट, भटार रोड Ø (0261) 2237362, 2238065
- २-मुम्बई— 282, सामलदास गाँधी मार्ग (मरीन लाईन्स स्टेशनके पास) 🗷 (022) 22030717
- ३-नागपुर- 851, न्यू इतवारी रोड 🛡 (0712) 2734354
- ४-जलगाँव— 7, भीमसिंह मार्केट, रेलवे स्टेशनके पास 🛭 (0257) 2226393
- ५-औरंगाबाद- रेलवे स्टेशन, प्लेटफार्म नं० १
- ६-हैदराबाद—दूकान नं० 41, 4-4-1, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार 🗷 (040) 24758311

सं० २०७४ छठा पुनर्मुद्रण २,००० कुल मुद्रण १८,०००

मूल्य—₹ ११०
 (एक सौ दस रुपये)

प्रकाशक एवं मुद्रक-

गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)

फोन: (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स: (०५५१) २३३६९९७

web: gltapress.org e-mail: booksales@gitapress.org

गीताप्रेस प्रकाशन gitapressbookshop. in से online खरीदें।

1780 Dasbodh (Marathi)_Section_1_1_Back

निवेदन

भारतवर्षात श्रीविठ्ठलभक्ती करणारा वारकरी संप्रदाय, श्रीदत्तभक्ती करणारा दत्त संप्रदाय जसा प्रसिद्ध आहे, तसाच श्रीरामभक्ती करणारा रामदासी संप्रदाय प्रसिद्ध आहे. प्रत्येक संप्रदायाचे अंगभूत असे काही मौलिक ग्रंथ असतात. रामदासी संप्रदायाचे प्रवर्तक श्रीसमर्थ रामदासस्वामी यांनी मानवाच्या ऐहिक व पारमार्थिक उत्कर्षासाठी मनाचे श्लोक, दासबोध, आत्माराम या व अन्य श्रेष्ठ ग्रंथांची निर्मिती केली.

त्यांपैकी दासबोध या ग्रंथात 'नराचा नारायण' बनण्यासाठी आवश्यक असणारा एकही विषय त्यांनी गाळला नाही. विषयाच्या दृष्टीने तर हा ग्रंथ अद्वितीय आहेच, पण रामदासी सांप्रदायिकांच्या दृष्टीने याचे आगळे महत्त्व आहे. ज्ञानेश्वरी-हरिपाठ हे जसे वारकऱ्यांचे, श्रीगुरुचरित्र हे जसे दत्तभक्तांचे, श्रीमद्भागवत हे जसे श्रीकृष्णभक्तांचे तसाच श्रीमद् दासबोध हा रामदासी संप्रदायाचा नित्य-पठन-पारायणाचा ग्रंथ आहे.

या ग्रंथाचे महत्त्व विशद करताना श्रीसमर्थ रामदासस्वामी सांगतात—

आत्माराम दासबोध । माझें स्वरूप स्वतःसिद्ध।
असतां न करावा हो खेद । भक्तजनीं ॥१॥
माझी काया गेली खरें । परी मी आहे जगदाकारें।
ऐका स्वहित उत्तरें । सांगेन तीं ॥२॥
नका करूं खटपट । पाहा माझा ग्रंथ नीट।
तेणे सायुज्याची वाट । ठायीं पडे ॥३॥

राहा देहाच्या विसरें । वर्तों नका वाईट बरें। तेणें मुक्तीचीं द्वारें । चोजविती तुम्हांसी ॥४॥ रामी रामदास म्हणे । सदा स्वरूपीं अनुसंधान। करा श्रीरामाचें ध्यान । निरंतर ॥५॥

अशा दासबोधाची शुद्ध, ठळक अक्षरांची, सुंदर प्रत सांप्रदायिकांना उपलब्ध व्हावी, म्हणून श्रीसमर्थांच्या चारशेव्या जयंतीवर्षात आम्ही प्रकाशित करीत आहोत. याच्या पारायणाची पद्धती ग्रंथाच्या सुरुवातीला दिली आहे. ती पाहून श्रीरामभक्तांनी याचे पठन-पारायण करून स्वत:चे जीवन धन्य करावे, ही प्रार्थना.

विनीत **प्रकाशक**

विषय-सूची

| विषय पृष्ठ-संख्या | विषय पृष्ठ-संख्या |
|------------------------------|---------------------------------|
| १- पहिला दशक | समास ४ : स्वगुणपरीक्षा १०२ |
| समास १ : ग्रंथारंभलक्षण १३ | समास ५ : स्वगुणपरीक्षा १०७ |
| समास २ : गणेशस्तवन १६ | समास ६ : आध्यात्मिकताप ११२ |
| समास ३ : शारदास्तवन १९ | समास ७ : आधिभौतिकताप११७ |
| समास ४: सद्गुरुस्तवन२२ | समास ८ : आदिदैविकताप१२४ |
| समास ५: संतस्तवन२५ | समास ९ : मृत्युनिरूपण १२७ |
| समास ६ : श्रोतेजनस्तवन २७ | समास १० :वैराग्यनिरूपण १३२ |
| समास ७ : कवेश्वरस्तवन २९ | ४- चौथा दशक |
| समास ८: सभास्तवन ३३ | समास १: श्रवणभक्ती१३९ |
| समास ९ : परमार्थस्तवन ३६ | समास २ : कीर्तनभक्ती१४२ |
| समास १०: नरदेहस्तवन- | समास ३: नामस्मरणभक्ती १४५ |
| निरूपण ३८ | समास ४ : पादसेवनभक्ती१४७ |
| २- दुसरा दशक | समास ५ : अर्चनभक्ती १५० |
| समास १: मूर्खलक्षण४५ | समास ६ : वंदनभक्ती १५३ |
| समास २: उत्तमलक्षण५१ | समास ७ : दास्यभक्ती१५५ |
| समास ३: कुविद्यालक्षण५५ | समास ८ : सख्यभक्ती१५८ |
| समास ४: भिक्तनिरूपण५९ | समास ९ : आत्मनिवेदन– |
| समास ५ : रजोगुणलक्षण ६१ | भक्ती१६१ |
| समास ६ : तमोगुणलक्षण ६५ | समास १० : मुक्तिचतुष्टय १६४ |
| समास ७ : सत्त्वगुणलक्षण ६९ | ५- पाचवा दशक |
| समास ८ : सद्विद्यानिरूपण ७६ | समास १ : गुरुनिश्चय१६७ |
| समास ९ : विरक्तलक्षण ७९ | समास २ : गुरुलक्षण१७१ |
| समास १० : पढतमूर्खलक्षण ८३ | समास ३ : शिष्यलक्षण १७७ |
| ३- तिसरा दशक | समास ४ : उपदेशलक्षण१८६ |
| समास १: जन्मदु:खनिरूपण ८७ | समास ५ : बहुधाज्ञान १९० |
| समास २ : स्वगुणपरीक्षा ९२ | समास ६ : शुद्धज्ञान१९४ |
| समास ३ : स्वगुणपरीक्षा ९८ | समास ७: बद्धलक्षण २०० |
| 11.114 6 ' LALIALIAI " 10 10 | 11 11 21 2 1 100 11 11 11 11 11 |

| विषय पृष्ठ-संख्या | विषय पृष्ठ-संख्या |
|--------------------------------|-----------------------------|
| समास ८ : मुमुक्षुलक्षण २०५ | ८- आठवा दशक |
| समास ९: साधकलक्षण२०९ | समास १: देवदर्शन ३११ |
| समास १० :सिद्धलक्षण २१४ | समास २ : सूक्ष्म आशंका ३१६ |
| ६- सहावा दशक | समास ३ : सूक्ष्म आशंका ३२१ |
| समास १ : देवशोधन २१९ | समास ४: सूक्ष्मपंचभूते- |
| समास २: ब्रह्मपावननिरूपण २२२ | निरूपण ३२७ |
| समास ३ : मायोद्भव२२६ | समास ५ : स्थूलपंचमहाभूते |
| समास ४: ब्रह्मनिरूपण २२९ | स्वरूपाकाशभेद ३३३ |
| समास ५: मायाब्रह्मनिरूपण २३२ | समास ६ : दुश्चीतनिरूपण ३३९ |
| समास ६: सृष्टिकथन २३४ | समास ७: मोक्षलक्षण ३४४ |
| समास ७: सगुणभजन २४० | समास ८ : आत्मदर्शन ३५० |
| समास ८ : दृश्यनिर्शन २४४ | समास ९: सिद्धलक्षण ३५६ |
| समास ९: सारशोधन २४९ | समास १० :सुन्यत्वनिर्शन ३६२ |
| समास १० :अनुर्वाच्य २५३ | ९- नववा दशक |
| ७- सातवा दशक | समास १ : आशंका ३६९ |
| समास १: मंगळाचरण २५९ | समास २ : ब्रह्मनिरूपण ३७२ |
| समास २: ब्रह्मनिरूपण २६५ | समास ३ : नि:संदेहनिरूपण ३७५ |
| समास ३ : चतुर्दशब्रह्म- | समास ४: जाणपणनिरूपण ३७९ |
| निरूपण २७० | समास ५: अनुमाननिर्शन ३८३ |
| समास ४ : विमलब्रह्म- | समास ६: गुणरूपनिरूपण ३८७ |
| निरूपण २७५ | समास ७ : विकल्पनिर्शन ३९२ |
| समास ५ : द्वैतकल्पनानिर्शन २७९ | समास ८: देहांतनिरूपण ३९७ |
| समास ६ : बद्धमुक्तनिरूपण २८३ | समास ९: संदेहवारण४०१ |
| समास ७: साधनप्रतिष्ठा- | समास १० :स्थितिनिरूपण ४०५ |
| निरूपण २९० | १०- दहावा दशक |
| समास ८: श्रवणनिरूपण २९७ | समास १: अंत:कर्ण येक४०९ |
| समास ९: श्रवणनिरूपण ३०१ | समास २ : देह आशंका४१२ |
| समास १० :देहांतनिरूपण ३०६ | समास ३ : देहआशंकाशोधन४१४ |

| विषय पृष्ठ-संख्या | विषय पृष्ठ-संख्या |
|-------------------------------|------------------------------|
| समास ४ : बीजलक्षण४१६ | समास ६: सृष्टिक्रमनिरूपण ४८२ |
| समास ५ : पंचप्रळयनिरूपण ४२० | समास ७ : विषयत्याग- |
| समास ६ : भ्रमनिरूपण ४२३ | निरूपण४८५ |
| समास ७ : सगुणभजन- | समास ८: काळरूप४८८ |
| निरूपण४२७ | समास ९ : येत्नसिकवण४९१ |
| समास ८: प्रचितनिरूपण४३० | समास १० : उत्तमपुरुष- |
| समास ९: पुरुषप्रकृति ४३३ | निरूपण४९४ |
| समास १०: चळाचळनिरूपण ४३६ | १३- तेरावा दशक |
| ११- अकरावा दशक | समास १ : आत्मानात्म- |
| समास १: सिद्धांतनिरूपण ४४३ | विवेक४९९ |
| समास २ : चत्वारदेव- | समास २: सारासारनिरूपण ५०२ |
| निरूपण४४७ | समास ३: उभारणीनिरूपण ५०४ |
| समास ३: सिकवणनिरूपण ४५० | समास ४: प्रलय५०७ |
| समास ४: सारविवेक- | समास ५: कहाणीनिरूपण ५०९ |
| निरूपण४५३ | समास ६: लघुबोध५११ |
| समास ५ : राजकारणनिरूपण ४५६ | समास ७ : प्रत्ययेविवरण ५१४ |
| समास ६: महंतलक्षण ४५९ | समास ८: कर्तानिरूपण५१७ |
| समास ७: चंचळनदी- | समास ९ : आत्मविवरण५२० |
| निरूपण ४६१ | समास १० :सिकवणनिरूपण ५२४ |
| समास ८ : अंतरात्माविवरण ४६३ | १४- चौदावा दशक |
| समास ९: उपदेश४६५ | समास १: निस्पृहलक्षण५२७ |
| समास १० : नि:स्पृह वर्तणूक४६८ | समास २: भिक्षानिरूपण ५३४ |
| १२- बारावा दशक | समास ३ : कवित्वकळा- |
| समास १ : विमळलक्षण४७१ | निरूपण५३६ |
| समास २ : प्रत्ययनिरूपण ४७३ | समास ४: कीर्तनलक्षण५४१ |
| समास ३: भक्तनिरूपण४७५ | समास ५ : हरिकथालक्षण५४४ |
| समास ४ : विवेकवैराग्य४७८ | समास ६ : चातुर्येलक्षण५४८ |
| समास ५ : आत्मनिवेदन ४८० | समास ७ : युगधर्मनिरूपण ५५१ |

| विषय पृष्ठ-संख्या | विषय पृष्ठ-संख्या |
|-----------------------------|------------------------------|
| समास ८ : अखंडध्यान- | समास ७: महद्भूतनिरूपण ६१० |
| निरूपण ५५५ | समास ८ : आत्माराम- |
| समास ९ : शाश्वतनिरूपण ५५९ | निरूपण६१४ |
| समास १०:मायानिरूपण ५६२ | समास ९: नाना उपासना- |
| १५- पंधरावा दशक | निरूपण६१७ |
| समास १: चातुर्यलक्षण ५६५ | समास १०:गुणभूत- |
| समास २: नि:स्पृहव्याप- | निरूपण६१९ |
| लक्षण५६८ | १७- सतरावा दशक |
| समास ३ : श्रेष्ठअंतरात्मा- | समास १ : देवबळात्कार ६२३ |
| निरूपण५७१ | समास २ : शिवशक्ती- |
| समास ४: शाश्वतब्रह्म- | निरूपण ६२६ |
| निरूपण५७३ | समास ३ : श्रवणनिरूपण ६२९ |
| समास ५ : चंचळलक्षण | समास ४ : अनुमाननिर्शन ६३१ |
| निरूपण५७६ | समास ५ : अजपानिरूपण ६३४ |
| समास ६ : चातुर्यविवरण ५७९ | समास ६ : देहात्मनिरूपण६३७ |
| समास ७ : अधोर्धनिरूपण५८२ | समास ७ : जगज्जीवन- |
| समास ८ : सूक्ष्मजीव- | निरूपण६४० |
| निरूपण५८५ | समास ८ : तत्त्वनिरूपण ६४२ |
| समास ९ : पिंडोत्पत्ती ५८९ | समास ९: तनुचतुष्टये६४६ |
| समास १०: सिद्धांतनिरूपण ५९२ | समास १० : टोणपसिद्धलक्षण ६४८ |
| १६- सोळावा दशक | १८- अठरावा दशक |
| समास १: वाल्मीकिस्तवन.५९५ | समास १ : बहुदेवस्थान ६५१ |
| समास २ : सूर्यस्तवन ५९७ | समास २ : सर्वज्ञसंग- |
| समास ३ : पृथ्वीस्तवन५९९ | निरूपण६५३ |
| समास ४ : आपनिरूपण६०१ | समास ३: नि:स्पृहसिकवण- |
| समास ५ : अग्निनिरूपण ६०४ | निरूपण ६५६ |
| समास ६ : वायोस्तवन- | समास ४: देहे दुल्लभ- |
| निरूपण ६०७ | 546 |

| विषय पृष्ठ-संख्या | विषय पृष्ठ-संख्या |
|------------------------------|-------------------------------|
| समास ५: करंटपरीक्षा- | समास ८ : उपाधीलक्षण- |
| निरूपण६६१ | निरूपण६९७ |
| समास ६: उत्तमपुरुष- | समास ९ : राजकारण- |
| निरूपण ६६५ | निरूपण७०० |
| समास ७ : जनस्वभाव- | समास १० :विवेकलक्षण- |
| निरूपण६६७ | निरूपण७०४ |
| समास ८ : अंतर्देवनिरूपण ६६९ | २०- विसावा दशक |
| समास ९ : निद्रानिरूपण ६७१ | समास १ : पूर्णापूर्ण- |
| समास १०:श्रोताअवलक्षण- | निरूपण७०७ |
| निरूपण ६७३ | समास २: सृष्टित्रिविध- |
| १९- एकोणिसावा दशक | लक्षणनिरूपण७०९ |
| समास १: लेखनक्रिया- | समास ३ : सूक्ष्मनामाभिधान ७१२ |
| निरूपण ६७९ | समास ४ : आत्मानिरूपण७१५ |
| समास २: विवरणनिरूपण ६८१ | समास ५ : चत्वारजिनस७१७ |
| समास ३: करंटलक्षण- | समास ६ : आत्मागुण- |
| निरूपण६८३ | निरूपण७२० |
| समास ४: सदेवलक्षण- | समास ७ : आत्मनिरूपण७२३ |
| निरूपण ६८६ | समास ८ : देहक्षेत्रनिरूपण७२६ |
| समास ५ : देहेमान्यनिरूपण ६८९ | समास ९ : सूक्ष्मनिरूपण७२९ |
| समास ६ : बुद्धिवादनिरूपण ६९१ | समास १० : विमलब्रह्म- |
| समास ७ : येत्निनरूपण६९४ | निरूपण७३२ |
| | |

श्रीदासबोध-पठन-पारायण-पद्धती

सकाळी स्नान करून धुतलेले वस्त्र नेसून आसनावर बसावे. समोर व्यासपीठ ठेवून त्यावर ग्रंथ ठेवावा. आचमन, प्राणायाम करून पठनाचा किंवा पारायणाचा संकल्प करावा. नंतर ग्रंथाची अष्टगंध, फुले वाहून उदबत्ती, नीरांजन ओवाळून व प्रदक्षिणा–नमस्कार करून पूजा करावी. नंतर पुढील श्लोक म्हणावे.

गणेशः शारदा चैव सद्गुरुः सञ्जनस्तथा। आराध्यदैवतं गुह्यं सर्वं मे रघुनंदनः॥१॥ गणेश शारदा सद्गुरू । संत सज्जन कुळेश्वरू । सर्विह माझा रघुवीरू । सद्गुरुरूपें ॥२॥ माझें आराध्यदैवत । परम गुह्य गुह्यातीत । गुह्यपणाची मात । न चले जेथें ॥३॥ यो जातो मरुदंशजः क्षितितले संबोधयन् सज्जनान् ग्रंथं यो रचयन् सुपुण्यजनकं श्रीदासबोधाभिधम् । यः कीर्त्या पठनेन सर्वविदुषां स्वांतापहारी सदा सोऽयं मुक्तिकरः क्षितौ विजयते श्रीरामदासो गुरुः ॥४॥ मला वाटते अंतरीं त्वां वसावें। तुझ्या दासबोधासि त्वां बोधवावें॥ अपत्यापरी पाववी प्रेमग्रासा। रामदासा ॥ ५ ॥ महाराजया सद्गुरु ब्रह्मानंदं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति द्वंद्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्। एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥६॥ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥७॥ अनेन प्रीयतां देवो भगवान् जानकीपतिः। श्रीरामचंद्रः पूर्वेषामस्माकं कुलदैवतम्॥८॥

॥ श्रोता वक्ता श्रीरामसमर्थ । जय जय रघुवीर समर्थ ॥

यानंतर श्रीमनाचे श्लोक नित्य व क्रमाने १३ म्हणून श्रीमद्दासबोधाचे वाचन करावे.

श्रीमत् दासबोधाचे नित्याचे/पारायणाचे वाचन झाल्यावर त्यापुढील समासाची पहिली ओवी वाचावी.

त्यानंतर दासबोधाच्या शेवटच्या १२ ओव्या वाचाव्या. संपूर्ण पारायणानंतर ग्रंथातील पहिली ओवी वाचावी. त्यानंतर श्रीमत् दासबोधाची आरती म्हणावी. आरतीनंतर पुढील श्लोक म्हणावे.

सदा सर्वदा योग तूझा घडावा
तुझे कारणीं देह माझा पडावा।
उपेक्षूं नको गूणवंता अनंता
रघूनायका मागणें हेंचि आतां॥
सदा चक्रवाकासि मार्तड जैसा
उडी घालितो संकटीं स्वामि तैसा।
हरीभिक्तचा घाव गाजे निशाणीं
नुपेक्षी कदा रामदासाभिमानी॥
मुखीं राम त्या काम बाधूं शकेना
गुणें इष्ट धारिष्ट त्याचें चुकेना।
हरीभक्त तो शक्त कामासि मारी
जगीं धन्य तो मारुती ब्रह्मचारी॥

हनुमंत आमुची कुळवल्ली । राममंडपा वेला गेली। श्रीरामभक्तीनें फळली । रामदास बोले या नांवें ॥१॥ आमुचे कुळीं हनुमंत । हनुमंत आमुचें मुख्य दैवत। तयावीण आमुचा परमार्थ । सिद्धितें न पवे सर्वथा ॥२॥ साह्य आम्हांसी हनुमंत । आराध्यदैवत श्रीरघुनाथ। श्रीगुरु श्रीरामसमर्थ । काय उणें दासासी ॥३॥ दाता येक श्रीरघुनंदन । वरकड लंडी देईल कोण। तया सोडोन आम्ही जन । कोणाप्रति मागावें ॥४॥ म्हणोनि आम्ही रामदास । श्रीरामचरणीं आमुचा विश्वास। कोसळोनि पडो हें आकाश । आणिकाची वास न पाहूं ॥५॥ स्वरूपसांप्रदाय अयोध्यामठ । जानकीदेवी श्रीरघुनाथदैवत।
मारुती उपासना नेमस्त । वाढिवला परमार्थ रामदासीं ॥६॥
स्वधामासि जातां महारामराजा । हनूमंत तो ठेविला याचि काजा।
सदासर्वदा रामदासांसि पावे । खळीं गांजितां ध्यान सांडोनि धावे॥ ७॥
आग्रदामण्डर्तारं दातारं सर्वसंपदाम।

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसंपदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयोभूयो नमाम्यहम्॥

नमो आदि बोधात्मरूपा परेशा नमो हंस नारायणा निर्जरेशा। नमो ब्रह्मदेवा वसिष्ठा श्रीरामा नमो मारुती रामदासाभिरामा॥

ध्यान करूं जातां मन हारपलें । सगुणीं जाहलें गुणातीत॥१॥ जेथें पाहे तेथें राघवाचें ठाण । करीं चापबाण शोभतसे॥२॥ राम माझे मनीं राम माझे ध्यानीं । शोभे सिंहासनीं राम माझ्या॥३॥ रामदास म्हणे विश्रांति मागणें । जीवीचें सांगणें हितगुज॥४॥

शुकासारिखें पूर्ण वैराग्य ज्याचें। विसष्ठापरी ज्ञान योगेश्वराचें॥ कवी वाल्मिकासारिखा मान्य ऐसा। नमस्कार माझा सद्गुरु रामदासा॥

॥ जय जय रघुवीर समर्थ ॥

॥ सद्गुरु समर्थ रामदास स्वामीमहाराज की जय ॥॥ महारुद्र हनुमान की जय ॥

॥ श्रेष्ठ गंगाधर स्वामी महाराज की जय ॥

॥ भगवान सद्गुरु श्रीधरस्वामी महाराज की जय ॥

॥ जय जय रघुवीर समर्थ ॥

यानंतर आचमन करून ग्रंथाला साष्टांग नमस्कार घालून उठावे.

दररोज वाचनाचा नियम असल्यास किमान दोन समास वाचावे. कमी जास्त न करता समासवाचनसंख्या नियमित ठेवावी. प्रत्येक ओवी वाचून झाल्यावर 'श्रीराम' म्हणावे.

साप्ताहिक पारायण पद्धतीत पहिल्या दिवशी तीन दशक, दुसऱ्या दिवशी चार ते सहा दशक, तिसऱ्या दिवशी सात व आठ दशक, चौथ्यापासून सातव्या दिवसापर्यंत दररोज तीन दशक वाचावे. तसेच दररोज दासबोध वाचनानंतर मनाचे १३ श्लोक क्रमाने वाचून सातव्या दिवशी पूर्ण वाचावा. संपूर्ण पारायणानंतर दासबोधाची पहिली ओवी व पहिला मनाचा श्लोक वाचावा.

॥ श्रीराम समर्थ ॥

।। श्रीमत् दासबोध ॥

दशक पहिला: स्तवनाचा

दशक १: समास १

॥ श्रीराम ॥

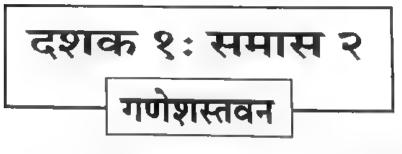
| श्रोते पुसती कोण ग्रंथ । काय बोलिलें जी येथ । | l | | |
|--|---|---|---|
| श्रवण केलियानें प्राप्त । काय आहे | l | 8 | 1 |
| त्रंथा नाम दासबोध । गुरुशिष्यांचा संवाद । | 1 | | |
| | | 7 | ı |
| नवविधा भक्ति आणि ज्ञान । बोलिलें वैराग्याचें लक्षण । | l | | |
| - | | ş | I |
| भक्तिचेन योगें देव। निश्चयें पावती मानव। | 1 | | |
| | • | 8 | ١ |
| मुख्य भक्तीचा निश्चयो । शुद्धज्ञानाचा निश्चयो । | ı | | |
| | | ų | l |
| शुद्ध उपदेशाचा निश्चयो । सायोज्यमुक्तीचा निश्चयो । | l | | |
| | | Ę | l |
| शुद्ध स्वरूपाचा निश्चयो । विदेहस्थितीचा निश्चयो । | l | | |
| | | 9 | 1 |
| मुख्य देवाचा निश्चयो। मुख्य भक्ताचा निश्चयो। | l | | |
| जीवशिवाचा निश्चयो । बोलिला असे | | 6 | ł |

| मुख्य ब्रह्माचा निश्चयो । नाना मतांचा निश्चयो । |
|--|
| मुख्य ब्रह्माचा निश्चया । नाना मताचा निश्चया । |
| आपण कोण हा निश्चयो । बोलिला असे । ९ । |
| मुख्य उपासनालक्षण। नाना कवित्वलक्षण। |
| नाना चातुर्यलक्षण । बोलिलें असे ।१०। |
| मायोद्भवाचें लक्षण । पंचभूतांचें लक्षण । |
| कर्ता कोण हें लक्षण। बोलिलें असे १११। |
| |
| नाना किंत निवारिले । नाना संशयो छेदिले । |
| नाना आशंका फेडिले । नाना प्रश्न । १२। |
| ऐसें बहुघा निरोपिलें । ग्रंथगर्भी जें बोलिलें । |
| तें अवधेंचि अनुवादलें। न वचे किं कदा । १३। |
| |
| तथापि अवघा दासबोध। दशक फोडून केलाविशद। |
| जे जे दशकींचा अनुवाद । ते ते दशकीं बोलिला । १४। |
| नाना ग्रंथांच्या संमती । उपनिषदें वेदांतश्रुती। |
| आणि मुख्य आत्मप्रचीती । शास्त्रेंसहित ।१५1 |
| |
| |
| तथापि हें अनुभवासि ये । प्रत्यक्ष आतां ।१६। |
| मत्सरें यासी मिथ्या म्हणती । तरी अवघेचि ग्रंथ उछेदती । |
| नाना ग्रंथांच्या संमती । भगवद्वाक्यें ।१७। |
| |
| शिवगीता रामगीता । गुरुगीता गर्भगीता । |
| उत्तरगीता अवधूतगीता। वेद आणी वेदांत ।१८। |
| भगवद्गीता ब्रह्मगीता । हंसगीता पांडवगीता। |
| गणेशगीता येमगीता । उपनिषदें भागवत ।१९। |
| |
| इत्यादिक नाना ग्रंथ। संमतीस बोलिले येथ। |
| भगवद्वाक्यें येथार्थ । निश्चयेंसीं । २०। |

| भगवद्वचनी अविस्वासे । ऐसा कोण पतित असे । भगवद्वाक्याविरहित नसे । बोलणें येथीचें । २१। |
|---|
| पूर्ण प्रंथ पाहिल्याविण । उगाच ठेवी जो दूषण । तो दुरात्मा दुराभिमान । मत्सरें करी । २२। |
| अभिमानें उठे मत्सर । मत्सरें ये तिरस्कार । पुढें क्रोधाचा विकार । प्रबळे बळें । २३। |
| ऐसा अंतरीं नासला। कामक्रोधें खवळला। अहंभावें पालटला। प्रत्यक्ष दिसे । २४। |
| कामक्रोधें लिथाडिला। तो कैसा म्हणावा भला। अमृत सेवितांच पावला। मृत्य राहो । २५। |
| आतां असो हें बोलणें। अधिकारासारिखें घेणें। परंतु अभिमान त्यागणें। हे उत्तमोत्तम । २६। |
| मागां श्रोतीं आक्षेपिलें । जी ये ग्रंथीं काय बोलिलें । तें सकळिह निरोपिलें । संकळीत मार्गे । २७। |
| आतां श्रवण केलियाचें फळ। क्रिया पालटे तत्काळ। तुटे संशयाचें मूळ। येकसरां ।२८। |
| मार्ग सांपडे सुगम । न लगे साधन दुर्गम । सायोज्यमुक्तीचें वर्म । ठांई पडे । २९। नासे अज्ञान दुःख भ्रांती । शीध्रचि येथें ज्ञानप्राप्ती । |
| ऐसी आहे फळश्रुती । ईये ग्रंथीं ।३०। योगियांचे परम भाग्य । आंगीं बाणें तें वैराग्य । |
| चातुर्य कळे यथायोग्य । विवेकेंसहित ।३१। भांत अवगुणी अवलक्षण । तेचि होती सुलक्षण। |
| धूर्त तार्किक विचक्षण । समयो जाणती ।३२। |

आळसी तेचि साक्षपी होती । पापी तेचि प्रस्तावती । निंदक तेचि वंदूं लागती । भक्तिमार्गासी 1331 बद्धचि होती मुमुक्ष। मूर्ख होती अतिदक्ष। अभक्तचि पावती मोक्ष । भक्तिमार्गे 1881 नाना दोष ते नासती। पतित तेचि पावन होती। प्राणी पावे उत्तम गती । श्रवणमात्रें 1341 नाना धोकें देहबुद्धीचे । नाना किंत संदेहाचे । नाना उद्वेग संसाराचे । नासती श्रवणें । ३६। ऐसी याची फलश्रुती। श्रवणें चुके अधोगती। मनास होय विश्रांति । समाधान 1391 जयाचा भावार्थ जैसा । तयास लाभ तैसा । मत्सर धरी जो पुंसा । तयास तेंचि प्राप्त ।३८।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'ग्रंथारंभलक्षणनाम' समास पहिला समाप्त.



॥ श्रीराम ॥

उँ नमोजि गणनायेका । सर्वसिद्धिफळदायेका । अज्ञानभ्रांतिछेदका । बोधरूपा । १। माझिये अंतरीं भरावें । सर्वकाळ वास्तव्य करावें । मज वाग्सून्यास वदवावें । कृपाकटाक्षेंकरूनी । १।

| तुझिये कृपेचेनि बळें। वितुळती भ्रांतीचीं पडळें। |
|---|
| |
| आणि विश्वभक्षक काळें । दास्यत्व कीजे । ३ । |
| येतां कृपेची निज उडी । विघ्नें कांपती बापुडीं। |
| होऊनि जाती देशघडी । नाममात्रें । ४ । |
| म्हणौन नामें विघ्नहर । आम्हा अनाथांचें माहेर । |
| |
| आदि करूनी हरीहर। अमर वंदिती । ५। |
| वंदूनियां मंगळनिधी । कार्य करितां सर्वसिद्धी । |
| आधात अडथाळें उपाधी । बाधूं सकेना । ६ । |
| जयाचें आठवितां ध्यान । वाटे परम समाधान । |
| नेत्रीं रिघोनियां मन । पांगुळे सर्वांगीं । ७ । |
| |
| सगुण रूपाची टेव। माहा लावण्य लाघव। |
| नृत्य करितां सकळ देव । तटस्त होती । ८ । |
| सर्वकाळ मदोन्मत । सदा आनंदें डुल्लत । |
| हरुषें निर्भर उद्दित । सुप्रसन्नवदनु । ९ । |
| |
| भव्यरूप वितंड। भीममूर्ति माहा प्रचंड। |
| विस्तीर्ण मस्तकीं उदंड । सिंधूर चर्चिला ।१०। |
| नाना सुगंध परिमळें । थबथबां गळती गंडस्थळें । |
| तेथें आलीं षट्पदकुळें । झुंकारशब्दें । ११। |
| मुर्डीव शुंडादंड सरळे। शोभे अभिनव आवाळें। |
| लंकित अल्प किल्ला को अपनिय आपाळ । |
| लंबित अधर तिक्षण गळे। क्षणक्ष्णा मंदसत्वी ।१२। |
| चौदा विद्यांचा गोसावी । हरस्व लोचन ते हिलावी । |
| लवलवित फडकावी । फडै फडै कर्णथापा । १३। |
| रलखचित मुगुटीं झळाळ । नाना सुरंग फांकती कीळ। |
| केंडलें तळपती नीळ । वरि जडिले झमकती ।१४। |
| गळपता नाळ । वार जाडल झनकता । १०। |

| दंत शुभ्र सहट। | रत्यखचित हेमकट्ट। |
|--|--|
| तया तळवटीं पत्रें नीट। | तळपती लघु लघु ।१५। |
| लवथवित मलपे दोंद । | |
| क्षुद्र घंटिका मंद मंद। | वाजती झणत्कारें । १६। |
| चतुर्भुज लंबोदर। | |
| फडके दोंदिचा फणीवर । | धुधूकार टाकी । १७। |
| डोलवी मस्तक जिव्हा लाळी। | |
| उभारोनि नाभिकमळीं । | · · |
| नाना याति कुशममाळा । | |
| | वरी पदक शोभे ।१९। |
| शोभे फरश आणी कमळ । | |
| | तयावरी अति प्रीति ।२०। |
| नट नाट्य कळा कुसरी। | _ |
| - | उपांग हुंकारे । २१। |
| स्थिरता नाहीं येक क्षण । | चपळविशर्ड अग्रगण । |
| | • |
| | लावण्यखाणी ।२२। |
| रुणझुणां वाजती नेपुरें। | लावण्यखाणी ।२२। वांकी बोभाटती गजरें। |
| रुणझुणां वाजती नेपुरें । घागरियांसहित मनोहरें । | लावण्यखाणी ।२२। वांकी बोभाटती गजरें। पाउलें दोनि ।२३। |
| रुणझुणां वाजती नेपुरें। घागरियांसहित मनोहरें। ईश्वरसभेसी आली शोभा। | लावण्यखाणी । २२। वांकी बोभाटती गजरें। पाउलें दोनि । २३। दिव्यांबरांची फांकली प्रभा। |
| रुणझुणां वाजती नेपुरें। घागरियांसहित मनोहरें। ईश्वरसभेसी आली शोभा। साहित्यविशईं सुल्लभा। | लावण्यखाणी । २२। वांकी बोभाटती गजरें। पाउलें दोनि । २३। दिव्यांबरांची फांकली प्रभा। अष्ट नायका होती । २४। |
| रुणझुणां वाजती नेपुरें। घागरियांसहित मनोहरें। ईश्वरसभेसी आली शोभा। साहित्यविशईं सुल्लभा। ऐसा सर्वांगें सुंदरु। | लावण्यखाणी । २२। वांकी बोभाटती गजरें। पाउलें दोनि । २३। दिव्यांबरांची फांकली प्रभा। अष्ट नायका होती । २४। सकळ विद्यांचा आगरू। |
| रुणझुणां वाजती नेपुरें। घागरियांसहित मनोहरें। ईश्वरसभेसी आली शोभा। साहित्यविशईं सुल्लभा। ऐसा सर्वांगें सुंदरु। त्यासी माझा नमस्कारू। | लावण्यखाणी । २२। वांकी बोभाटती गजरें। पाउलें दोनि । २३। दिव्यांबरांची फांकली प्रभा। अष्ट नायका होती । २४। सकळ विद्यांचा आगरू। साष्टांग भावें । २५। |
| रुणझुणां वाजती नेपुरें। घागरियांसहित मनोहरें। ईश्वरसभेसी आली शोभा। साहित्यविशईं सुल्लभा। ऐसा सर्वांगें सुंदरु। त्यासी माझा नमस्कारू। ध्यान गणेशांचें वर्णितां। | लावण्यखाणी । २२। वांकी बोभाटती गजरें। पाउलें दोनि । २३। दिव्यांबरांची फांकली प्रभा। अष्ट नायका होती । २४। सकळ विद्यांचा आगरू। साष्टांग भावें । २५। |

जयासी ब्रह्मादिक वंदिती । तेथें मानव बापुडे किती ।
असो प्राणी मंदमती । तेहीं गणेश चिंतावा ।२७।
जे मूर्ख अवलक्षण । जे कां हीणाहूनि हीण ।
ते चि होती दक्ष प्रविण । सर्विवशई ।२८।
ऐसा जो परम समर्थ । पूर्ण करी मनोरथ ।
सप्रचीत भजनस्वार्थ । कल्लौ चंडीविनायेकौ ।२९।
ऐसा गणेश मंगळमूर्ती । तो म्यां स्तविला येथामती ।
वांछ्या धरूनि चित्तीं । परमार्थाची ।३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवाादे 'गणेशस्तवननाम' समास दुसरा समाप्त.

दशक १: समास ३

शारदास्तवन

ा श्रीराम ॥

आतां वंदीन वेदमाता । श्रीशारदा ब्रह्मसुता । शब्दमूळ वाग्देवता । माहं माया । १ । जे उठवी शब्दांकुर । वदे वैखरी अपार । जे शब्दांचें अभ्यांतर । उकलून दावी । २ । जे योगियांची समाधी । जे धारिष्टांची कृतबुद्धी । जे विद्या अविद्या उपाधी । तोडून टाकी । ३ । जे माहापुरुषाची भार्या । अति सलग्न अवस्था तुर्या । जयेकरितां महत्कार्या । प्रवर्तले साधु । ४ । जे महंतांची शांती । जे ईश्वराची निज शक्ती । जे ज्ञानियांची विरक्ती । नैराशशोभा । ५ ।

| जे अनंत ब्रह्मांडें घडी । लीळाविनोदेचि मोडी । |
|--|
| आपण आदिपुरुषीं दडी । मारून राहे । ६ । |
| जे प्रत्यक्ष पाहातां आडळे । विचार घेतां तरी नाडळे । |
| जयेचा पार न कळे। ब्रह्मादिकांसी । ७। |
| जे सर्व नाटकअंतर्कळा । जाणीव स्फूर्ति निर्मळा । |
| जयेचेनि स्वानंदसोहळा । ज्ञानशक्ती । ८ । |
| जे लावण्यस्वरूपाची शोभा । जे परब्रह्मसूर्याची प्रभा । |
| जे शब्दीं वदोनि उभा । संसार नासी । ९। |
| जे मोक्षश्रिया माहामंगळा । जे सत्रावी जीवनकळा । |
| जे सत्वलीळा सुसीतळा। लावण्यखाणी ।१०। |
| जे अवेक्त पुरुषाची वेक्ती । विस्तारें वाढली इच्छाशक्ती । |
| जे कळीकाळाची नियंती। सद्गुरुकृपा ।११। |
| जे परमार्थमार्गींचा विचार । निवडून दावी सारासार । |
| भवसिंघूचा पैलपार । पाववी शब्दबळें ।१२। |
| ऐसी बहुवेषें नटली। माया शारदा येकली। |
| सिद्धचि अंतरीं संचली। चतुर्विधा प्रकारें । १३। |
| तींहीं वाचा अंतरीं आलें। तें वैखरिया प्रगट केलें। |
| म्हणौन कर्तुत्व जितुकें जालें। तें शारदागुणें 1१४। |
| जे ब्रह्मादिकांची जननी । हरीहर जयेपासुनी । |
| सृष्टिरचना लोक तिनी। विस्तार जयेचा ।१५। |
| जे परमार्थाचें मूळ । नांतरी सद्विद्याचि केवळ । |
| निवांत निर्मळ निश्चळ । स्वरूपस्थिती ।१६। |
| जे योगियांचे ध्यानीं । जे साधकांचे चिंतनीं । |
| जे सिद्धांचे अंतःकर्णी । समाधिरूपें । १७१ |

जे निर्गुणाची वोळखण। जे अनुभवाची खूण। जे व्यापकपणें संपूर्ण । सर्वां घटीं ।१८। शास्त्रें पुराणें वेद श्रुति । अखंड जयेचें स्तवन करिती । नाना रूपीं जयेसी स्तविती । प्राणिमात्र 1881 जे वेदशास्त्रांची महिमा। जे निरोपमाची उपमा। जयेकरितां परमात्मा । ऐसें बोलिजे । २०। नाना विद्या कळा सिन्द्री । नाना निश्चयाची बुन्दी । जे सूक्ष्म वस्तूची शुद्धी । ज्ञेप्तीमात्र ।२१। जे हरिभक्तांची निजभक्ती । अंतरनिष्ठांची अंतरस्थिती । जे जीवन्मुक्तांची मुक्ती। सायोज्यता ते ।२२। जे अनंत माया वैष्णवी। न कळे नाटक लाघवी। जे थोरथोरासी गोवी। जाणपणें ।२३। जें जें दृष्टीनें देखिलें। जें जें शब्दें वोळखिलें। जें जें मनास भासलें । तितुकें रूप जयेंचे । २४। स्तवन भजन भक्ति भाव । मायेवांचून नाहीं ठाव । या वचनाचा अभिप्राव । अनुभवी जाणती । २५। म्हणौनि थोराहुनि थोर । जे ईश्वराचा ईश्वर । तयेसी माझा नमस्कार । तदांशोंचि आतां । २६।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'शारदास्तवननाम' समास तिसरा समाप्त.

दशक १: समास ४

सद्गुरुस्तवन

॥ श्रीराम ॥

| आतां सद्गुरु वर्णवेना । जेथें माया स्पर्शों सकेना | ı | | |
|--|---|----|---|
| तें स्वरूप मज अज्ञाना । काये कळे | l | 8 | 1 |
| न कळे न कळे नेति नेति । ऐसें बोलतसे श्रुती | ı | | |
| तेथें मज मूर्खाची मती । पवाडेल कोठें | ı | 7 | ı |
| मज न कळे हा विचारु। दुन्हूनि माझा नमस्कारु | l | | |
| गुरुदेवा पैलपारू। पाववीं मज | l | 3 | l |
| होती स्तवनाची दुराशा। तुटला मायेचा भर्वसा | ı | | |
| आतां असाल तैसे असा । सद्गुरु स्वामी | l | 8 | ı |
| मायेच्या बळें करीन स्तवन । ऐसें वांछित होतें मन | l | | |
| माया जाली लज्यायमान । काय कर्क | l | ų | l |
| नातुडे मुख्य परमात्मा । म्हणौनि करावी लागे प्रतिमा | l | | |
| तैसा मायायोगें महिमा । वर्णीन सद्गुरूचा | | Ę | l |
| आपल्या भावासारिखा मनीं । देव आठवावा ध्यानीं | Į | | |
| तैसा सद्गुरु हा स्तवनीं । स्तऊं आतां | l | 9 | I |
| जय जयाजि सद्गुरुराजा । विश्वंभरा विश्वबीजा | l | | |
| परमपुरुषा मोक्षध्वजा । दीनबंधु | ŀ | 6 | l |
| तुझीयेन अभयंकरें। अनावर माया हे वोसरे | 1 | | |
| जैसें सूर्यप्रकाशें अंघारें । पळोन जाये | l | 9 | l |
| आदित्यें अंधकार निवारे । परंतु मागुतें ब्रह्मांड भरे | ı | | |
| नीसी जालियांनंतरें। पुन्हा काळोखें | ı | १० | Ì |

तैसा नव्हे स्वामीराव । करी जन्ममृत्य वाव । समूळ अज्ञानाचा ठाव । पुसून टाकी 1881 सुवर्णांचे लोहो कांहीं। सर्वथा होणार नाहीं। तैसा गुरुदास संदेहीं । पडोंचिं नेणे सर्वथा । १२। कां सरिता गंगेसी मिळाली । मिळणी होतां गंगा जाली । मग जरी वेगळी केली। तरी होणार नाहीं सर्वथा । १३। परी ते सरिता मिळणीमागें। वाहाळ मानिजेत जगें। तैसा नव्हे शिष्य वेगें। स्वामीच होये ।१४। परीस आपणाऐसें करीना । सुवर्णें लोहो पालटेना । उपदेश करी बहुत जना । अंकित सद्गुरुचा ।१५। शिष्यास गुरुत्व प्राप्त होये । सुवर्णे सुवर्ण करितां न ये । म्हणौनि उपमा न साहे । सद्गुरुसी परिसाची । १६। उपमे द्यावा सागर । तरी तो अत्यंतचि क्षार । अथवा म्हणों क्षीरसागर । तरी तो नासेल कल्पांतीं ।१७। उपमे द्यावा जरी मेरु । तरी तो जड पाषाण कठोरु । तैसा नव्हे कीं सद्गुरु। कोमळ दिनाचा ।१८। उपमे म्हणों गगन । तरी गगनापरीस तें निर्गुण । या कारणें दृष्टांत हीण । सद्गुरुस गगनाचा । १९। धीरपणें उपमूं जगती । तरी हेहि खचेल कल्पांतीं । म्हणौन धीरत्वास दृष्टांतीं । हीण वसुंघरा ।२०। आता उपमावा गभस्ती । तरी गभस्तीचा प्रकाश किती । शास्त्रें मर्यादा बोलती । सद्गुरु अमर्याद । २१। म्हणौनि उपमें उणा दिनकर । सद्गुरु ज्ञानप्रकाश थोर । आतां उपमावा फणीवर । तरी तोही भारवाही । २२।

आतां उपमा द्यावें जळ । तरी तें काळांतरीं आटेल सकळ। सद्गुरुरूप तें निश्चळ । जाणार नाहीं 1831 सद्गुरुसी उपमावें अमृत । तरी अमर धरिती मृत्यपंथ । सद्गुरुकृपा यथार्थ । अमर करी 1281 सद्गुरुसी म्हणावें कल्पतरु । तरी हा कल्पनेतीत विचारु । कल्पवृक्षाचा अंगिकारु । कोण करी 1241 चिंता मात्र नाहीं मनीं । कोण पुसे चिंतामणी । कामधेनूचीं दुभणीं । निःकामासी न लगती । २६। सद्गुरु म्हणों लक्ष्मीवंत । तरी ते लक्ष्मी नाशिवंत । ज्याचे द्वारीं असे तिष्ठत । मोक्षलक्ष्मी । २७। स्वर्गलोक इंद्र संपती । हे काळांतरी विटंबती । सद्गुरूकृपेची प्राप्ती । काळांतरीं चळेना । २८। हरीहर ब्रह्मादिक । नाश पावती सकळिक । सर्वदा अविनाश येक। सद्गुरूपद । २९। तयासी उपमा काय द्यावी । नाशिवंत सृष्टी आघवी । पंचभूतिक उठाठेवी। न चलें तेथें ।३०। म्हणौनि सद्गुरु वर्णवेना । हे गे हेचि माझी वर्णना । अंतरस्थितीचिया खुणा । अंतर्निष्ठ जाणती । ३१।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सद्गुरुस्तवननाम' समास चौथा समाप्त.

दशक १: समास ५

संतस्तवन

॥ श्रीराम ॥

| आतां वदीन सज्जन । जे परमाथचि अधिष्ठान । | |
|---|---|
| जयांचेनि गुह्यज्ञान । प्रगटे जनीं । १ । | |
| जे वस्तु परम दुल्लभ । जयेचा अलभ्य लाभ । | |
| तेंचि होये सुल्लभ । संतसंगें करूनी । २ । | |
| वस्तु प्रगटचि असे । पाहातां कोणासीच न दिसे । | |
| नाना साधनीं सायासें। न पडे ठाईं। ३। | |
| जेथें परीक्षवंत ठकले । नांतरी डोळसचि अंघ जाले । | |
| पाहात असतांचि चुकले । निजवस्तूसी । ४ । | |
| जें दीपाचेनि दिसेना । नाना प्रकाशें गवसेना । | |
| नेत्रांजनेंहि वसेना। दृष्टीपुढें । ५। | |
| सोळां कळी पूर्ण शशी । दाखऊं शकेना वस्तूसी । | |
| तीव्र आदित्य कळारासी । तोहि दाखवीना । ६ । | 1 |
| जया सूर्याचेनि प्रकाशें । ऊर्णतंत तोहि दिसे । | |
| नाना सूक्ष्म पदार्थ भासे । अणुरेणादिक । ७ । | |
| चिरलें वाळाग्र तेंहि प्रकासी । परी तो दाखवीना वस्तूसी । | |
| तें जयाचेनि साधकांसी । प्राप्त होये | 1 |
| जेथें आक्षेप आटले। जेथें प्रेत्न प्रस्तावले। | |
| जेथें तर्क मंदावले । तर्कितां निजवस्तूसी । ९ | ı |
| बळे विवेकाची वेंगडी। पडे शब्दाची बोबडी। | |
| जेथें मनाची तांतडी। कामा नये ।१० | I |
| | |

| जो बोलकेपणें विशेष । सहस्र मुखांचा जो शेष । |
|--|
| तोहि सिणला निःशेष । वस्तु न संगवे ।११। |
| वेदें प्रकाशिलें सर्वही । वेदविरहित कांहीं नाहीं। |
| तो वेद कोणासही । दाखऊं सकेना । १२। |
| तेचि वस्तु संतसंगे। स्वानुभवें कळों लागे। |
| त्याचा महिमा वचनीं सांगे । ऐसा कवणु ।१३। |
| विचित्र कळा ये मायेची । परी वोळखी न संगवे वस्तूची । |
| मायातीता अनंताची । संत सोये सांगती । १४। |
| वस्तूसी वर्णिलें नवचे । तेंचि स्वरूप संतांचें । |
| या कारणें वचनांचें। कार्य नाहीं । १५। |
| संत आनंदाचें स्थळ। संत सुखचि केवळ। |
| नाना संतोषाचें मूळ । ते हे संत । १६। |
| संत विश्रांतीची विश्रांती। संत तृप्तीची निजतृप्ती। |
| नातरी भक्तीची फळश्रुती। ते हे संत ।१७। |
| संत धर्माचें धर्मक्षेत्र । संत स्वरूपाचें सत्पात्र । |
| नातरी पुण्याची पवित्र। पुण्यभूमी ।१८। |
| संत समाधीचें मंदिर । संत विवेकाचें भांडार । नातरी बोलिजे माहेर । सायोज्यमुक्तीचें । १९। |
| संत सत्याचा निश्चयो। संत सार्थकाचा जयो। |
| संत प्राप्तीचा समयो। सिद्धरूप ।२०। |
| मोक्षित्रया आळंकृत। ऐसे हे संत श्रीमंत। |
| जीव दरिद्री असंख्यात । नृपती केले ।२१। |
| जे समर्थपणें उदार । जे कां अत्यंत दानशूर । |
| तयांचेनि हा ज्ञानविचार । दिघला न वचे । २२। |

माहाराजे चक्रवर्ती । जाले आहेत पुढें होती ।
परंतु कोणी सायोज्यमुक्ती । देणार नाहीं ।२३।
जें त्रैलोकीं नाहीं दान । तें करिती संतसज्जन ।
तयां संतांचे महिमान । काय म्हणौनि वर्णावें ।२४।
जें त्रैलोक्याहून वेगळें । जें वेदश्रुतीसी नाकळें।
तेंचि जयांचेनि वोळें। परब्रह्म अंतरीं ।२५।
ऐसी संतांची महिमा । बोलिजे तितुकी उणी उपमा ।
जयांचेनि मुख्य परमात्मा । प्रगट होये ।२६।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'संतस्तवननाम' समास पाचवा समाप्त.

> दशक १: समास ६ श्रोतेजनस्तवन

आतां वंदूं श्रोते जन । भक्त ज्ञानी संत सज्जन । विरक्त योगी गुणसंपन्न । सत्यवादी । १ । येक बुद्धीचे आगर । येक श्रोते वैरागर । नाना शब्दरत्नाचे । २ । जे नाना अर्थांबृताचे भोक्ते । जे प्रसंगी वक्तयाचे वक्ते । नाना संशयातें छेदिते । निश्चई पुरुष । ३ । ज्यांची धारणा अपार । जे ईश्वराचे अवतार । नातरी प्रत्यक्ष सुरवर । बैसले जैसे । ४ ।

| कीं हे सरस्वतीचें निजस्थान । कीं हे नाना कळांचें जीवन । |
|---|
| नाना शब्दांचें मुवन । येथार्थ होये । २ । |
| कीं हे पुरुषार्थाचें वैभव । कीं हे जगदेश्वराचें महत्त्व । |
| |
| |
| कीं हे शब्दरत्नाचे सागर । कीं हे मुक्तांचें मुक्त सरोवर । |
| नाना बुद्धीचे वैरागर । निर्माण जाले । ४ । |
| अध्यात्मग्रंथांची खाणी। कीं हे बोलके चिंतामणी। |
| नाना कामधेनूचीं दुभणीं । वोळलीं श्रोतयांसी । ५ । |
| कीं हे कल्पनेचे कल्पतरु । कीं हे मोक्षाचे मुख्य पडीभरु । |
| नाना सायोज्यतेचे विस्तारु । विस्तारले । ६ । |
| |
| कीं हा परलोकींचा निजस्वार्थु । कीं हा योगियांचा गुप्त पंथु। |
| नाना ज्ञानियांचा परमार्थु । रूपासि आला । ७। |
| कीं हे निरंजनाची खूण । कीं हे निर्गुणाची वोळखण । |
| मायाविलक्षणाचें लक्षण । ते हे कवी । ८ । |
| कीं हा श्रुतीचा भावगर्भ । कीं हा परमेश्वराचा अलभ्य लाभ । |
| नातरी होये सुल्लभ । निजबोध कविरूपें । ९ । |
| कवि मुमुक्षाचें अंजन । कवि साधकांचें साधन । |
| कवि सिद्धांचें समाधान । निश्चयात्मक । १०। |
| कवि स्वधर्माचा आश्रयो । कवि मनाचा मनोजयो । |
| कवि धार्मिकाचा विनयो । विनयकर्ते । ११। |
| कवि वैराग्याचें संरक्षण । कवि भक्तांचें भूषण । |
| नाना स्वधर्मरक्षण । ते हे कवी ।१२। |
| कवि प्रेमळांची प्रेमळ स्थिती । कवि ध्यानस्थांची ध्यानमूर्ती । |
| किव उपासकांची वाढ कीर्ती । विस्तारली । १३। |

| नाना साधनाचें मूळ । कवि नाना प्रेत्नाचें फळ । |
|---|
| नाना कार्यसिद्धी केवळ । कविचेनि प्रसादें । १४। |
| आधीं कवीचा वाग्विळास । तरी मग श्रवणीं तुंबळे रस । |
| कवीचेनि मतिप्रकाश । कवित्वास होये । १५। |
| कवि वित्पन्नाची योग्यता । कवि सामर्थ्यवंतांची सत्ता । |
| कवि विचक्षणाची कुशळता । नाना प्रकारें । १६। |
| कवि कवित्वाचा प्रबंद । कवि नाना धाटी मुद्रा छंद । |
| कवि गद्यपद्यें भेदाभेद । पदप्रासकर्ते । १७। |
| कवि सृष्टीचा आळंकार। कवि लक्ष्मीचा शृंगार। |
| सकळ सिद्धीचा निर्धार । ते हे कवी । १८। |
| कवि सभेचें मंडण । कवि भाग्याचें भूषण । |
| नाना सुखाचें संरक्षण । ते हे कवी । १९। |
| कवि देवांचे रूपकर्ते । कवि ऋषींचें महत्त्ववर्णिते । |
| नाना शास्त्रांचे सामर्थ्या ते । कवि वाखाणिती ।२०। |
| नस्ता कवीचा व्यापार । तरी कैंचा अस्ता जगोद्धार । |
| म्हणौनि कवि हे आधार । सकळ सृष्टीसी ।२१। |
| नाना विद्या ज्ञातृत्व कांहीं। कवेश्वरेंविण तों नाहीं। |
| कविपासून सर्विह । सर्वज्ञता ।२२। |
| मागां वाल्मीक व्यासादिक। जाले कवेश्वर अनेक। |
| तयांपासून विवेक । सकळ जनासी ।२३। |
| पूर्वीं काव्यें होतीं केलीं । तरीच वित्पत्ति प्राप्त जाली । |
| तेणें पंडिताआंगीं बाणली । परम योग्यता । २४। |
| ऐसें पूर्वीं थोर थोर। जाले कवेश्वर अपार। |
| आतां आहेत पुढें होणार । नमन त्यांसी ।२५। |

नाना चातुर्याच्या मूर्ती । कीं हे साक्षात् खृहस्पती । वेद श्रुती बोलों म्हणती । ज्यांच्या मुखें 1751 परोपकाराकारणें । नाना निश्चय अनुवादणें। सेखीं बोलिले पूर्णपणें । संशयातीत । २७। कीं हे अमृताचे मेघ वोळले । कीं हे नवरसाचे वोघ लोटले । नाना सुखाचें उचंबळलें। सरोवर हे 1261 कीं हे विवेकनिधीचीं भांडारें । प्रगट जालीं मनुष्याकारें । नाना वस्तूचेनि विचारें। कोंदाटले हे 1281 कीं हे आदिशक्तीचें ठेवणें । नाना पदार्थास आणी उणें। लाधलें पूर्व संचिताच्या गुणें । विश्वजनासी 1301 कीं हे सुखाचीं तारुवें लोटलीं । आक्षे आनंदें उतटलीं । विश्वजनास उपेगा आलीं । नाना प्रयोगाकारणें ।३१। कीं हे निरंजनाची संपत्ती । कीं हे विराटाची योगस्थिती । 1351 नातरी भक्तीची फळश्रुती । फळास आली कीं हा ईश्वराचा पवाड । पाहातां गगनाहून वाड । ब्रह्मांडरचनेहून जाड । कविप्रबंदरचना ।३३। आतां असो हा विचार । जगास आधार कवेश्वर । 1381 तयांसी माझा नमस्कार । साष्टांग भावें

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'कवेश्वरस्तवननाम' समास सातवा समाप्त.

दशक १: समास ८ सभास्तवन

॥ श्रीराम ॥

| आतां वंदूं सकळ सभा । जये सभेसी मुक्ती सुल्लभा । |
|--|
| जेथें स्वयें जगदीश उभा । तिष्ठतु भरें । १। |
| नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदये रवौ। |
| मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।। |
| नाहीं वैकुंठीचा ठाईं । नाहीं योगियांचा हृदईं । |
| माझे भक्त गाती ठाईं ठाईं । तेथें मी तिष्ठतु नारदा । २। |
| याकारणें सभा श्रेष्ठ । भक्त गाती तें वैकुंठ । |
| नामघोषें घडघडाट । जयजयकारें गर्जती । ३ । |
| प्रेमळ भक्तांचीं गायनें । भगवत्कथा हरिकीर्तनें । |
| वेदव्याख्यान पुराणश्रवणें । जेथें निरंतर । ४ । |
| परमेश्वराचे गुणानुवाद । नाना निरूपणाचे संवाद । |
| अध्यात्मविद्या भेदाभेद । मथन जेथें । ५ । |
| नाना समाधानें तृप्ती । नाना आशंकानिवृत्ती । |
| चित्तीं बैसे ध्यानमूर्ति । वाग्विळासें । ६ । |
| भक्त प्रेमळ भाविक । सभ्य सखोल सात्विक । |
| रम्य रसाळ गायक। निष्ठावंत । ७। |
| कर्मसीळ आचारसीळ । दानसीळ धर्मसीळ । |
| सुचित्मंत पुण्यसीळ । अंतरशुद्ध कृपाळु । ८ । |
| योगी वीतरागी उदास । नेमक नित्रह तापस । |
| विरक्त निस्पृह बहुवस । आरण्यवासी । ९ । |
| |

| दंडघारी जटाघारी | | |
|-------------------------|---|---------------------------|
| येक बाळब्रह्मच्यारी | | |
| पुरश्चरणी आणि तपस्वी | ١ | तीर्थवासी आणि मनस्वी। |
| महायोगी आणि जनस्वी | | _ |
| सिद्ध साधु आणी साधक | ı | मंत्रयंत्रशोधक । |
| येकनिष्ठ उपासक | | _ |
| संत सज्जन विद्वज्जन | ı | वेदज्ञ शास्त्रज्ञ माहाजन। |
| प्रबुद्ध सर्वज्ञ समाधान | | |
| योगी वित्पन्न ऋषेश्वर | ı | धूर्त तार्किक कवेश्वर । |
| | | आणी दिग्वल्की । १४। |
| ब्रह्मज्ञानी आत्मज्ञानी | ı | तत्त्वज्ञानी पिंडज्ञानी। |
| योगाभ्यासी योगज्ञानी | ì | उदासीन । १५। |
| पंडित आणी पुराणिक | l | विद्वांस आणी वैदिक। |
| भट आणी पाठक | 1 | येजुर्वेदी । १६। |
| माहाभले माहाश्रोत्री | l | याज्ञिक आणी आग्नहोत्री । |
| वैद्य आणी पंचाक्षरी | ı | परोपकारकर्ते । १७। |
| भूत भविष्य वर्तमान | ı | जयांस त्रिकाळाचें ज्ञान । |
| बहुश्रुत निराभिमान | | निरापेक्षी । १८। |
| शांती क्षमा दयासीळ | ŀ | पवित्र आणी सत्वसीळ। |
| अंतरशुद्ध ज्ञानसीळ | l | ईश्वरी पुरुष ।१९। |
| ऐसे जे कां सभानायेक | ı | जेथे नित्यानित्यविवेक। |
| त्यांचा महिमा अलोलिक | 1 | काय म्हणोनि वर्णावा ।२०। |
| जेथें श्रवणाचा उपाये | ŀ | आणी परमार्थसमुदाये । |
| तेथें जनासी तरणोपाये | l | सहजचि होये । २१। |

| उत्तम गुणांची मंडळी। सत्त्वधीर सत्त्वागळी। |
|---|
| नित्य सुखाची नव्हाळी। जेथें वसे ।२२। |
| विद्यापात्रें कळापात्रें । विशेष गुणांची सत्पात्रें । |
| भगवंताचीं प्रीतिपात्रें । मिळालीं जेथें । २३। |
| प्रवृत्ती आणी निवृत्ती । प्रपंची आणी परमार्थी । |
| गृहस्थाश्रमी वानप्रहस्ती । संन्यासादिक । २४। |
| वृद्ध तरुण आणी बाळ । पुरुष स्त्रियादिक सकळ। |
| अखंड ध्याती तमाळनीळ । अंतर्यामीं १२५। |
| ऐसे परमेश्वराचे जन । त्यांसी माझे अभिवंदन । |
| जयांचेनि समाधान । अकस्मात बाणे । २६। |
| ऐसिये सभेचा गजर । तेथें माझा नमस्कार । |
| जेथें नित्य निरंतर । कीर्तन भगवंताचें ।२७। |
| जेथे भगवंताच्या मूर्ती । तेथें पाविजे उत्तम गती । |
| ऐसा निश्चय बहुतां ग्रंथीं । महंत बोलिले । २८। |
| कल्लौ कीर्तन वरिष्ठ। जेथें होय ते सभा श्रेष्ठ। |
| कथाश्रवणें नाना नष्ट । संदेह मावळती ।२९। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सभास्तवननाम' समास आठवा समाप्त.

दशक १: समास ९

परमार्थस्तवन

।। श्रीराम ।।

| आतां स्तऊं हा परमार्थ । जो साधकांचा निजस्वार्थ । |
|---|
| नांतरी समर्थामध्यें समर्थ। योग हा |
| आहे तरी परम सुगम । परी जनासी जाला दुर्गम । |
| कां जयाचें चुकलें वर्म। सत्समागमाकडे । २। |
| नाना साधनांचे उधार । हा रोकडा ब्रह्मसाक्षात्कार । |
| वेदशास्त्रीं जें सार । तें अनुभवास ये । ३ । |
| आहे तरी चहूंकडे। परी अणुमात्र दृष्टी न पडे। |
| उदास परी येकीकडे। पाहातां दिसेना । ४। |
| आकाशमार्गी गुप्त पंथ । जाणती योगिये समर्थ । |
| इतरांस हा गुह्यार्थ। सहसा न कळे। ५। |
| साराचेंहि निजसार । अखंड अक्षै अपार । |
| नेऊं न सकती तश्कर । कांहीं केल्या । ६ । |
| तयास नाहीं राजभये। अथवा नाहीं अग्निभये। |
| अथवा स्वापदभये। बोलोंच नये । ७। |
| परब्रह्म तें हालवेना । अथवा ठावहि चुकेना । |
| काळांतरीं चळेना । जेथीचा तेथें । ८ । |
| ऐसें ते निज ठेवणें। कदापि पालटों नेणें। |
| अथवा नव्हे आदिक उणें। बहुतां काळें । ९। |
| अथवा तें घसवटेना । अथवा अदृश्य होयेना । |
| नातरी पाहाता दिसेना। गुरुअंजनेविण ।१०। |

| मागां योगिये समर्थ। त्यांचाहि निजस्वार्थ। |
|---|
| थासा बालिज परमार्थ । परमगुह्य म्हणौनि । ११। |
| जेंहीं शोधून पाहिला । त्यासी अर्थ सांपडला । |
| येरां असोनि अलभ्य जाला । जन्मोजन्मीं ।१२। |
| अपूर्वता या परमार्थाची । वार्ता नाहीं जन्ममृत्याची । आणि पदवी सारोज्यतेची । क्विक्टिक |
| आणि पदवी सायोज्यतेची। सन्निधिच लाभे । १३। माया विवेकें पावले। पारास्क |
| परबहा वेंदि कियो केंद्रिश |
| ब्रह्म भासलें उदंड । ब्रह्मीं बुडालें ब्रह्मांड । |
| पंचभूतांचें थोतांड । तुछ्य वाटे । १५। |
| प्रपंच वाटे लटिका। माया वाटे लापणिका। |
| शुद्ध आत्मा विवेका। अंतरीं आला । १६। |
| ब्रह्मस्थित बाणतां अंतरीं । संदेह गेला ब्रह्मांडाबाहेरी । |
| दृश्याची जुनी जर्जरी। कुहिट जाली । १७। |
| ऐसा हा परमार्थ। जो करी त्याचा निजस्वार्थ। |
| आतां या समर्थास समर्थ । किती म्हणौनि म्हणावें ।१८। |
| या परमार्थाकरितां । ब्रह्मादिकांसि विश्रामता । |
| योगी पावती तन्मयता । परब्रह्मीं ।१९। |
| परमार्थ सकळांस विसांवा। सिद्ध साधु माहानुभावां। सेखीं सात्त्विक जड जीवां। सत्संगेंकरूनी ।२०। |
| परमार्थ जन्माचें सार्थक। परमार्थ संसारीं तारक। |
| परमार्थ दाखवी परलोक । धार्मिकासी । २१। |
| परमार्थ तापसांसी थार । परमार्थ साघकांसी आधार। |
| परमार्थ दाखवी पार। भवसागराचा ।२२। |
| |

परमार्थी तो राज्यधारी । परमार्थ नाहीं तो भिकारी ।
या परमार्थाची सरी । कोणास द्यावी । २३।
अनंत जन्मींचें पुण्य जोडे । तरीच परमार्थ घडे ।
मुख्य परमात्मा आतुडे । अनुभवासी । २४।
जेणें परमार्थ वोळखिला । तेणें जन्म सार्थक केला ।
येर तो पापी जन्मला । कुलक्षयाकारणें । २५।
असो भगवत्प्राप्तीविण । करी संसाराचा सीण ।
त्या मूर्खांचें मुखावलोकन । करूंच नयें । २६।
भल्यानें परमार्थीं भरावें। शरीर सार्थक करावें।
पूर्वजांस उद्धरावें । हरिभक्ती करूनी । २७।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'परमार्थस्तवननाम' समास नववा समाप्त.

दशक १: समास १० नरदेहस्तवन

धन्य धन्य हा नरदेहो । येथील अपूर्वता पाहो । जो जो कीजे परमार्थलाहो । तो तो पावे सिद्धीतें । १ । या नरदेहाचेनि लागवेगें । येक लागले भिक्तसंगें । येकों परम वीतरागें । गिरिकंदरें सेविलीं । २ । येक फिरती तीर्थाटणें । येक करिती पुरश्चरणें । येक अखंड नामस्मरणें । निष्ठावंत राहिले । ३ ।

| येक | तपें करू लाग | ाले । | येक योगाभ्यासी माहाभले | 1 | | |
|--------|---------------------|-----------|-------------------------------------|-----|----|---|
| येक | अभ्यासयोगें ज | ाले । | वेदशास्त्रीं वित्पन्न | ı | 8 | 1 |
| येकीं | हटनिग्रह के | ला । | देह अत्यंत पीडिला | i | | |
| येकीं | देव ठाईं पाडि | ला । | भावार्थबळें | ı | 4 | ı |
| येक | माहानुभाव विख्य | ात । | येक भक्त जाले ख्यात | ı | | |
| येक | सिद्ध अकस | गत । | गगन वोळगती | l | Ę | 1 |
| येक | तेजीं तेजचि ज | ाले । | येक जळीं मिळोन गेले | 1 | | |
| येक ते | ते दिसतचि अदृश्य ज | गलें । | वायोस्वरूपीं | 1 4 | 9 | 1 |
| येक | येकचि बहुधा ह | ोती । | येक देखतचि निघोनि जाती | 1 | | |
| येक | बैसलें असताची भ्रा | पती । | नाना स्थानीं समुद्रीं | l | 6 | 1 |
| | | | येक अचेतनें चालविती | i | | |
| | | | | | ? | 1 |
| | | | येक जळें आटविती | | | |
| | | | | | 0 | 1 |
| ऐसे | हटनिग्रही कृतब् | ब्द्वी । | जयांस वोळल्या नाना सिद्धि | ł | | |
| | | | होऊन गेले | | 8 | l |
| येक | मनोसिद्ध येक वाचानि | प्रबद्ध । | येक अल्पसिद्ध येक सर्वसिद्ध | l | | |
| | | | विख्यात जाले | | ? | l |
| | | | गेले तरले परलोकींच्या निजस्वार्थे । | | | |
| | | | ब्रह्मभुवना पावले | | \$ | l |
| येक | वैकुंठास र | ोले । | येक सत्यलोकीं राहिले। | | | |
| येक | केळासीं बैर | रले । | शिवरूप होउनी | 8 | X | ı |

येक इंद्रलोकीं इंद्र जाले। येक पितृलोकीं मिळाले। येक ते उडगणीं बैसले । येक ते क्षीरसागरीं । १५। सलोकता समीपता । स्वरूपता सायोज्यता । या चत्वार मुक्ती तत्वतां। इच्छा सेऊन राहिले ।१६। ऐसे सिद्ध साधु संत । स्वहिता प्रवर्तले अनंत । ऐसा हा नरदेह विख्यात । काय म्हणौनि वर्णावा ।१७। या नरदेहाचेनि आधारें । नाना साधनांचेनि द्वारें । मुख्य सारासारविचारें । बहुत सुटले । १८। या नरदेहाचेनि संमंधें। बहुत पावले उत्तम पदें। अहंता सांडून स्वानंदें । सुखी जाले ।१९। नरदेहीं येऊन सकळ। उधरागती पावले केवळ। येथें संशयाचें मूळ। खंडोन गेलें ।२०। पशुदेहीं नाहीं गती। ऐसें सर्वत्र बोलती। म्हणौन नरदेहींच प्राप्ती । परलोकाची । २१। संत महंत ऋषी मुनी। सिद्ध साधु समाघानी। भक्त मुक्त ब्रह्मज्ञानी । विरक्त योगी तपस्वी । २२। तत्त्वज्ञानी योगाभ्यासी । ब्रह्मचारी दिगंबर संन्यासी । शड्दर्शनी तापसी । नरदेहींच जाले । २३। म्हणौनि नरदेह श्रेष्ठ । नाना देहांमधें वरिष्ठ । जयाचेनि चुके आरिष्ट । येमयातनेचें । २४। नरदेह हा स्वाधेन । सहसा नव्हे पराधेन । परंतु हा परोपकारीं झिजऊन । कीर्तिरूपें उरवावा । २५।

| अश्व वृषभ गाई महैसी। नाना पशु स्त्रिया दासी। |
|---|
| कृपाळूपणें सोडितां त्यांसी । कोणी तरी धरील । २६। |
| तैसा नव्हे नरदेहो । इच्छा जाव अथवा राहो । |
| परी यास कोणी पाहो । बंधन करूं सकेना । २७। |
| नरदेह पांगुळ असता। तरी तो कार्यास न येता। |
| अथवा थोंटा जरी असता । तरी परोपकारास न ये । २८। |
| नरदेह अंघ असिला । तरी तो निपटचि वायां गेला । |
| अथवा बधिर जरी असिला । तरी निरूपण नाहीं । २९। |
| नरदेह असिला मुका । तरी घेतां न ये आशंका । |
| अशक्त रोगी नासका । तरी तो निःकारण ।३०। |
| नरदेह असिला मूर्ख । अथवा फेंपऱ्या समंधाचें दुःख । |
| तरी तो जाणावा निरार्थक । निश्चयेंसीं ।३१। |
| इतुकें हें नस्तां वेंग । नरदेह आणी सकळ सांग । |
| तेणें धरावा परमार्थमार्ग । लागेवेगें । ३२। |
| सांग नरदेह जोडले । आणि परमार्थबुद्धि विसरलें । |
| तें मूर्ख कैसें भ्रमलें। मायाजाळीं । ३३। |
| मृत्तिका खाणोन घर केलें। तें माझें ऐसें दृढ कल्पिलें। |
| परी तें बहुतांचें हें कळलें। नाहींच तयासी ।३४। |
| मूषक म्हणती घर आमुचें। पाली म्हणती घर आमुचें। |
| मिक्षिका म्हणती घर आमुचें । निश्चयेंसीं । ३५। |
| कांतण्या म्हणती घर आमुचें। मुंगळे म्हणती घर आमुचें। |
| मुंग्या म्हणती घर आमुचें । निश्चयेंसीं । ३६। |

विंचू म्हणती आमुचें घर । सर्प म्हणती आमुचें घर । झुरळें म्हणती आमुचें घर । निश्चयेंसीं 1391 भ्रमर म्हणती आमुचें घर । भिंगोऱ्या म्हणती आमुचें घर । आळिका म्हणती आमुचें घर । काष्ठामध्यें 1361 मार्जरें म्हणती आमुचें घर । श्वानें म्हणती आमुचें घर । मुंगसें म्हणती आमुचें घर । निश्चयेंसीं 1381 पुंगळ म्हणती आमुचें घर । वाळव्या म्हणती आमुचें घर । पिसुवा म्हणती आमुचें घर । निश्चयेंसीं 1801 ढेंकुण म्हणती आमुचें घर । चांचण्या म्हणती आमुचें घर । घुंगर्डी म्हणती आमुचें घर । निश्चयेंसीं 1881 पिसोळे म्हणती आमुचें घर । गांधेले म्हणती आमुचें घर । सोट म्हणती आमुचें घर । आणी गोंबी 1831 बहुत किड्यांचा जोजार। किती सांगावा विस्तार। समस्त म्हणती आमुचें घर । निश्चयेंसीं 1831 पशु म्हणती आमुचें घर । दासी म्हणती आमुचें घर । घरीचीं म्हणती आमुचें घर । निश्चयेंसीं 1881 पाहुणे म्हणती आमुचें घर । मित्र म्हणती आमुचें घर । ग्रामस्य म्हणती आमुचें घर । निश्चयेंसीं 1841 तश्कर म्हणती आमुचें घर । राजकी म्हणती आमुचें घर । आग्न म्हणे आमुचें घर । भस्म करूं 1881 समस्त म्हणती घर माझें । हें मुर्खही म्हणे माझें माझें । सेवट जड जालें वोझें। टाकिला देश 1891

अवधीं घरें भंगलीं । गांवांची पांढरी पडिली । मग ते गृहीं राहिली। अरण्यश्वापदें ।४८। किडा मुंगी वाळवी मूषक । त्यांचेंच घर हें निश्चयात्मक । हें प्राणी बापुडें मूर्ख । निघोन गेलें ।४९। ऐसी गृहांची स्थिती । मिथ्या आली आत्मप्रचिती । जन्म दों दिसांची वस्ती । कोठे तरी करावी ।५०। देह म्हणावें आपुलें । तरी हें बहुतांकारणें निर्मिलें । प्राणीयांच्या माथां घर केलें । वा मस्तकीं भक्षिती ।५१। रोमेमुळे किडे भक्षिती । खांडुक जाल्यां किडे पडती । पोटामध्यें जंत होती । प्रत्यक्ष प्राणियांच्या ।५२। कीड लागे दांतांसी । कीड लागे डोळ्यांसी । कीड लागे कर्णासी । आणी गोमाशा भरती । ५३। गोंचिड अश्ब्द्ध सेविती । चामवा मांसांत घुसती । पिसोळे चाऊन पळती । अकस्मात । ५४। भोंगें गांधेलें चाविती । गोंबी जळवा अशुद्ध घेती । विंचू सर्प दंश करिती। कानटें फुर्सी । ५५। जन्मून देह पाळिलें। तें अकस्मात व्याघ्रें नेलें। कां तें लांडगींच भक्षिलें । बळात्कारें । ५६। मूषकें मार्जरे दंश करिती । स्वानें अश्वें लोले तोडिती । रीसें मर्कटें मारिती । कासावीस करूनी ।५७। उष्टरें डसोन उचलिती । हस्थी चिर्डून टाकिती । वृषभ टोचून मारिती । अकस्मात 1461

तस्कर तडतडां तोडिती। भूतें झडपोन मारिती।
असो या देहाची स्थिती। ऐसी असे ।५९।
ऐसें शरीर बहुतांचें। मूर्ख म्हणे आमुचें।
परंतु खाजें जिवांचें। तापत्रैं बोलिलें ।६०।
देह परमार्थीं लाविलें। तरीच याचें सार्थक जालें।
नाहीं तरी हें वेर्थिच गेलें। नाना आघातें मृत्यपंथें ।६९।
असो जे प्रापंचिक मूर्ख। ते काये जाणती परमार्थसुख।
त्या मूर्खांचें लक्षण कांहीं येक। पुढें बोलिलें असे ।६२।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'नरदेहस्तवननिरूपणनाम' समास दहावा समाप्त.

दशक पहिला समाप्त

दशक दुसरा: मूर्खलक्षणांचा

दशक २ः समास १

॥ श्रीराम ॥

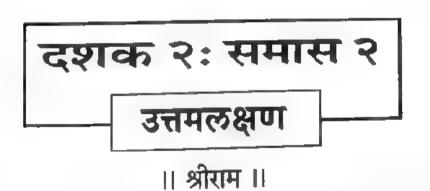
| ॐ नमोजि गजानना । ये | कदंता त्रिनयना। |
|-----------------------------|---------------------|
| कृपादृष्टी भक्तजना । अ | वलोकावें । १ । |
| तुज नमू वेदमाते । श्री | शारदे ब्रह्मसुते। |
| अंतरी वसे कृपावंते । स्पृ | र्हित्रक्षें । २ । |
| वंदूनी सद्गुरुचरण। क | |
| त्यागार्थ मूर्खलक्षण । बो | |
| येक मूर्ख येक पढतमूर्ख । उश | |
| श्रोती सादर विवेक । के | |
| पढतमूर्खांचें लक्षण। पुर | |
| सावध होऊनि विचक्षण । पा | |
| आतां प्रस्तुत विचार । ल | |
| परि कांहीं येक तत्पर। हो | • |
| जे प्रापंचिक जन। ज | |
| जे केवळ अज्ञान।त्य | |
| | यांसी जो विरोध करी। |
| सखी मानिली अंतुरी। तो | |
| सांडून सर्वहि गोत। स्त्र | |
| सांगे अंतरींची मात तो | येक मूर्ख । ९। |

परस्त्रीसी प्रेमा धरी। श्वशुरगृहीं वास करी। कुळेंविण कन्या वरी। तो येक मूर्ख ।१०। समर्थावरी अहंता। अंतरी मानी समता। सामर्थ्यीवण करी सत्ता। तो येक पूर्ख ।११। आपली आपण करी स्तुती । स्वदेशीं भोगी विपत्ती । सांगे वडिलांची कीर्ती। तो येक मूर्ख ।१२। अकारण हास्य करी। विवेक सांगतां न धरी। जो बहुतांचा वैरी। तो येक मूर्ख ।१३। आपुली धरूनियां दुरी। पराव्यासीं करी मीत्री। परन्यून बोले रात्रीं । तो येक मूर्ख ।१४। बहुत जागते जन। तयांमध्यें करी शयन। परस्थळीं बहुभोजन । करी, तो येक मूर्ख । १५। मान अथवा अपमान । स्वयें करी परिच्छित्र । सप्त वेसनीं जयाचें मन । तो येक मूर्ख ।१६। घरून परावी आस । ग्रेल सांडी सावकास । निसुगाईचा संतोष । मानी, तो येक मूर्ख । १७। घरीं विवेक उमजे। आणि सभेमध्यें लाजे। शब्द बोलतां निर्बुजे। तो येक मूर्ख ।१८। आपणाह्न जो श्रेष्ठ । तयासीं अत्यंत निकट । सिकवणेचा मानी वीट । तो येक मूर्ख । १९। नायेके त्यांसी सिकवी । वडिलांसीं जाणीव दावी । जो आरजास गोवी। तो येक मूर्ख ।२०१ येकायेकीं येकसरा । जाला विषंई निलाजिरा । मर्यादा सांडून सैरा । वर्ते, तो येक मूर्ख । २१। औषध ने घे असोन वेथा। पथ्य न करी सर्वथा। न मिळे आलिया पदार्था । तो येक मूर्ख । २२। संगेविण विदेश करी। वोळखीविण संग धरी। उडी घाली माहापुरीं। तो येक मूर्ख ।२३। आपणास जेथें मान । तेथें अखंड करी गमन । रक्षुं नेणें मानाभिमान । तो येक मूर्ख । २४। सेवक जाला लक्ष्मीवंत । तयाचा होय अंकित । सर्वकाळ जो दुश्चित । तो येक मूर्ख । २५। विचार न करितां कारण। दंड करी अपराधेंविण। स्वल्पासाठीं जो कृपण । तो येक मूर्ख । २६। देवलंड, पितृलंड। शक्तिवीण करी तोंड। ज्याचे मुखीं भंडउभंड । तो येक मूर्ख ।२७। घरीच्यावरी खाय दाढा। बाहेरी दीन बापुडा। ऐसा जो कां वेडमूढा। तो येक मूर्ख ।२८। नीच यातीसीं सांगात । परांगनेसीं येकांत । मार्गे जाय खात खात । तो येक मूर्ख । २९। स्वयें नेणें परोपकार । उपकाराचा अनोपकार । करी थोडें बोले फार । तो येक मूर्ख ।३०। तपीळ खादाड आळसी । कुश्चीळ कुटीळ मानसीं । धारिष्ट नाहीं जयापासीं । तो येक मूर्ख ।३१। विद्या वैभव ना धन। पुरुषार्थ सामर्थ्य ना मान। कोरडाच वाहे अभिमान । तो येक मूर्ख ।३२। लंडी लटिका लाबाड । कुकर्मी कुटीळ निचाड । निद्रा जयाची वाड। तो येक मूर्ख ।३३। उंचीं जाऊन वस्त्र नेसे। चौबारां बाहेरी बैसे। सर्व काळ नग्न दिसे। तो येक मूर्ख ।३४। दंत चक्षु आणि घ्राण । पाणी वसन आणि चरण । सर्वकाळ जयाचे मळिण । तो येक मूर्ख ।३५। वैद्यृति आणि वितिपात । नाना कुमुहूर्ते जात । अपशकुनें करी घात । तो येक मूर्ख ।३६। क्रोधें अपमानें कुबुद्धि । आपणास आपण वधी । जयास नाही दृढ बुद्धि । तो येक मूर्ख ।३७। जिवलगांस परम खेदी । सुखाचा शब्द तोहि नेदी । नीच जनास वंदी । तो येक मूर्ख ।३८। आपणास राखे परोपरी। शरणागतांस अव्हेरी। लक्ष्मीचा भर्वसा धरी। तो येक मूर्ख ।३९। पुत्र कळत्र आणी दारा । इतुकाची मानुनिया थारा । विसरोन गेला ईश्वरा। तो येक मूर्ख ।४०। जैसें जैसें करावें। तैसें तैसें पावावें। हें जयास नेणवें। तो येक मूर्ख ।४१। पुरुषाचेनि अष्टगुणें । स्त्रियांस ईश्वरी देणें । ऐशा केल्या बहुत जेणें। तो येक मूर्ख ।४२। दुर्जनाचेनि बोलें । मर्यादा सांडून चाले । दिवसा झांकिले डोळे। तो येक मूर्ख ।४३। देवद्रोही गुरुद्रोही। मातृद्रोही पितृद्रोही। ब्रह्मद्रोही स्वामीद्रोही। तो येक मूर्ख ।४४। परपीडेचें मानी सुख । परसंतोषाचें मानी दुःख । गेले वस्तूचा करी शोक । तो येक मूर्ख ।४५।

आदरेंविण बोलणें । न पुसतां साक्ष देणें । निंद्य वस्तु आंगिकारणें । तो येक मूर्ख ।४६। तुक तोडून बोले । मार्ग सांडून चाले । कुकर्मी मित्र केले। तो येक मूर्ख 1891 पत्य राखों नेणे कदा । विनोद करी सर्वदा । हासतां खिजे पेटे द्वंदा । तो येक मूर्ख ।४८। होड घाली अवघड। काजेंविण करी बडबड। बोलोंचि नेणे मुखजड। तो येक मूर्ख ।४९। वस्त्र शास्त्र दोनी नसे। उंचे स्थळीं जाऊन बैसे। जो गोत्रजांस विस्वासे। तो येक मूर्ख ।५०। तश्करासी वोळखी सांगे। देखिली वस्तु तेचि मागे। आपलें आन्हीत करी रागें । तो येक मूर्ख ।५१। हीन जनासीं बरोबरीं। बोल बोले सरोत्तरीं। वामहस्तें प्राशन करी। तो येक मूर्ख ।५२। समर्थासीं मत्सर धरी। अलभ्य वस्तूचा हेवा करी। घरीच्या घरीं करी चोरी । तो येक मूर्ख ।५३। सांडूनियां जगदीशा । मनुष्याचा मानी भर्वसा । सार्थकेंविण वेंची वयसा। तो येक मूर्ख १५४। संसारदुः खाचेनि गुणें । देवास गाळी देणें । मैत्राचें बोले उणें। तो येक मूर्ख ।५५। अल्प अन्याय क्ष्मा न करी । सर्व काळ धारकीं घरी। जो विस्वासघात करी । तो येक मूर्ख ।५६। समर्थाचे मनींचे तुटे। जयाचेनि सभा विटे। क्षणा बरा क्षणा पालटे । तो येक मूर्ख ।५७। बहुतां दिवसांचे सेवक । त्यागून ठेवी आणिक । ज्याची सभा निर्नायेक । तो येक मूर्ख 1461 अनीतीनें द्रव्य जोडी । धर्म नीति न्याय सोडी । संगतीचें मनुष्य तोडी । तो येक मूर्ख ।५९। घरीं असोन सुंदरी। जो सदांचा परद्वारी। बहुतांचें उचिष्ट अंगीकारी। तो येक मूर्ख ।६०। आपुलें अर्थ दुसऱ्यापासीं । आणी दुसऱ्याचें अभिळासी । पर्वत करी हीनासी । तो येक मूर्ख ।६१। अतिताचा अंत पाहे । कुग्रामामधें राहे । सर्वकाळ चिंता वाहे । तो येक मूर्ख 15 21 दोघे बोलत असती जेथें। तिसरा जाऊन बैसे तेथें। डोई खाजवी दोहीं हातें। तो येक मूर्ख ।६३। उदकामधें सांडी गुरळी। पायें पायें कांडोळी। सेवा करी हीन कुळीं। तो येक मूर्ख ।६४। स्त्री बाळका सलगी देणें। पिशाच्यासन्निध बैसणें। मर्यादेविण पाळी सुणें। तो येक मूर्ख ।६५। परस्त्रीसीं कळह करी । मुकी वस्तु निघातें मारी । मुर्खाची संगती घरी। तो येक मूर्ख ।६६। कळह पाहात उभा राहे । तोडविना कौतुक पाहे । खरें अस्तां खोटें साहे। तो येक मूर्ख ।६७। लक्ष्मी आलियावरी । जो मागील वोळखी न घरी । देवींब्राह्मणीं सत्ता करी । तो येक मूर्ख ।६८। आपलें काज होये तंवरी। बहुसाल नम्रता धरी। पुढिलांचें कार्य न करी। तो येक मूर्ख ।६९।

अक्षरें गाळून वाची । कां तें घालीं पदिरचीं ।
नीघा न करी पुस्तकाची । तो येक मूर्ख ।७०।
आपण वाचीना कधीं । कोणास वाचावया नेदी ।
बांधोन ठेवी बंदीं । तो येक मूर्ख ।७१।
ऐसीं हें मूर्ख लक्षणें । श्रवणें चातुर्य बाणे ।
चित्त देउनियां शहाणे । ऐकती सदा ।७२।
लक्षणें अपार असती । परी कांहीं येक येथामती ।
त्यागार्थ बोलिलें श्रोतीं । क्ष्मा केलें पाहिजे ।७३।
उत्तम लक्षणें घ्यावीं । मूर्ख लक्षणें त्यागावीं ।
पुढिले समासीं आघवीं । निरोपिलीं ।७४।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'मूर्खलक्षणनाम' समास पहिला समाप्त.



श्रोतां व्हावें सावधान । आतां सांगतों उत्तम गुण । जेणें करिता बाणें खुण । सर्वज्ञपणाची । १ । वाट पुसल्याविण जाऊं नये । फळ वोळखिल्याविण खाऊं नये । पिंडली वस्तु घेऊं नये । येकायेकीं । २ । अति वाद करूं नये । पोटीं कपट धरूं नये । शोधिल्याविण करूं नये । कुळहीन कांता । ३ ।

| विचारेविण बोलों नये। विवंचनेविण चालों नये। मयदिविण हालों नये। कांहीं येक | |
|---|----------|
| प्रीतीविण रुसों नये । चोरास वोळखी पुसों नये । रात्रीं पंथ क्यां उसे । केल्के-? | • |
| जनीं आर्जव तोडूं नये। पापद्रव्य जोडूं नये। | t I |
| निंदा द्वेष करूं नये। असत्संग धरूं नये। | i |
| वक्तयास खोदूं नये। ऐक्यतेसी फोडं नये। | 9 |
| विद्याभ्यास सोडूं नये। कांहीं केल्या । व तोंडाळासीं भांडों नयें। वाचाळासीं तंडों नये। | 1 |
| संतसंग खंडूं नये। अंतर्यामीं अतिक्रोध करूं नये। जिवलगांस खेदूं नये। | 1 |
| मना वाट मानू नये। सिकवणेचा । १ | 0 |
| क्षणक्षणां रुसों नये। लटिका पुरुषार्थ बोलों नये। केल्याविण सांगों नये। आपला पराक्रमु ।१ | ११ |
| बोलिला बोल विसरों नये । प्रसंगीं सामर्थ्य चुकों नये। केल्याविण निखंदूं नये । पुढिलांसि कदा । १ | २। |
| | 31 |
| सुखा आंग देऊं नये । प्रेल पुरुषें सांडूं नये । कष्ट करितां त्रासों नये । निरंतर | 81 |
| सभेमध्ये लाजों नये। बाष्कळपणें बोलों नये। | 41 |

| बहुत चिंता कर | ं नये | 1 | निसुगपणें राहों नये। |
|-------------------|--------------|---|---------------------------|
| परस्त्रीतें पाहों | नये | 1 | पापबुद्धी । १६। |
| | | | घेतलातरी राखों नये। |
| | | | विश्वासघात । १७। |
| शोच्येंविण असं | ों नये | ı | मळिण वस्त्र नेसों नये। |
| | | | कोठें जातोस म्हणौनी । १८। |
| व्यापकपण सांड् | र्ं नये | ı | पराधेन होऊं नये। |
| आपलें वोझें घा | ू लूं नये | ŧ | कोणीयेकासी । १९। |
| | | | हीनाचें रुण घेऊं नये। |
| गोहीविण जाऊं | नये | 1 | राजद्वारा ।२०। |
| | | | सभेस लटिकें करूं नये। |
| आदर नस्तां बो | लों नये | l | स्वभाविक । २१। |
| आदखणेपण क | रूं नये | ı | अन्यायेंविण गांजं नये। |
| अवनीतीनें वतं | िं नये | 1 | आंगबळें । २२। |
| बहुत अन्न खा | ऊं नये | 1 | बहुत निद्रा करूं नये। |
| बहुत दिवस र | ाहों नये | l | पिसुणाचेथें । २३। |
| आपल्याची गोही | देऊं नये | 1 | आपली कीर्ती वर्ण उसे । |
| आपले आपण ह | ासों नये | 1 | गोष्टी सांगोनी । २४। |
| धूप्रपान घेऊं | नये | 1 | उत्पत्त दत्य योगं को |
| बहुचकासी कर | न नये | 1 | मैत्री कदा । २६। |
| कामेविण राह | ों नये | 1 | नीच उत्तर माहों को। |
| आसुद अन्न स | ऊ नये | 1 | वडिलांचेंहि । २६। |
| ताडा सोवी अस | र्शे नये | 1 | दसऱ्यास देखोज हांकों को । |
| उण अगा सचा | रा नय | | कुळवंताचे । २७। |
| दाखली वस्तु च | रूं नये | 1 | बहुत कामा होकं उसे । |
| जिवलगांसी कर | तं नये | ł | कळह कदा । २८। |

| येकाचा घात करूं नये । लटिकी गोही देऊं नये । |
|---|
| अप्रमाण वर्तीं नये । कदाकाळीं । २९। |
| चाहाडी चोरी धरूं नये। परद्वार करूं नये। |
| मार्गे उणें बोलों नये। कोणीयेकाचें ।३०। |
| समई यावा चुकों नये। सत्वगुण सांडूं नये। |
| वैरियांस दंडूं नये। शरण आलियां । ३१। |
| अल्पधनें माजों नये । हरिभक्तीस लाजों नये । |
| मर्यादेविण चालों नये। पवित्र जनीं ।३२। |
| मुर्खासीं संमंघ पडो नये । अंधारीं हात घालू नये। |
| दुश्चितपणें विसरों नये। वस्तु आपुली । ३३। |
| स्नानसंध्या सांडूं नये। कुळाचार खंडूं नये। |
| अनाचार मांडूं नये। चुकुरपणें ।३४। |
| हरिकथा सांडूं नये। निरूपण तोडूं नये। |
| परमार्थास मोडूं नये। प्रपंचबळें । ३५। |
| देवाचा नवस बुडऊं नये । आपला धर्म उडऊं नये । |
| भलतें भरीं भरों नये। विचारेविण ।३६। |
| निष्ठुरपण धर्कं नये। जीवहत्या कर्कं नये। |
| पाऊस देखोन जाऊं नये । अथवा अवकाळीं ।३७। |
| सभा देखोन गळों नये। समई उत्तर टळों नये। |
| धिःकारितां चळों नये। धारिष्ट आपुलें ।३८। |
| गुरुविरहित असों नये । नीच यातीचा गरु करूं नये । |
| जिणें शाश्वत मानूं नये । वैभवेंसीं ।३९। |
| सत्य मार्ग सांडं नये । असत्य पंशें जाकं नरो । |
| कदा अभिमान घेऊं नये । असत्याचा ।४०। |

अपकीर्ति ते सांडावी । सद्कीर्ति वाढवावी । विवेकें दृढ धरावी । वाट सत्याची ।४१। नेघतां हे उत्तम गुण । तें मनुष्य अवलक्षण । ऐक तयांचें लक्षण । पुढिलीये समासीं ।४२।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'उत्तमलक्षणनाम' समास दुसरा समाप्त.

दशक २: समास ३ कुविद्यालक्षण

॥ श्रीराम ॥

ऐका कुविद्येचीं लक्षणें। अति हीनें कुलक्षणें। त्यागार्थ बोलिलीं ते श्रवणें । त्याग घडे ऐका कुविद्येचा प्राणी। जन्मां येऊन केली हानी। सांगिजेल येहीं लक्षणीं । वोळखावा कुविद्येचा प्राणी असे। तो कठिण निरूपणें त्रासे। अवगुणाची समृद्धि असे । म्हणौनियां दंभो दपोंऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च। अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमास्रीम् ॥ काम क्रोध मद मत्सर। लोभ दंभ तिरस्कार। गर्व ताठा अहंकार । द्वेष विषाद विकल्पी । ४ । आशा ममता तृष्णा कल्पना । चिंता अहंता कामना भावना । असूया अविद्या ईषणा वासना । अतृप्ती लोलंगता । ५ । इछ्या वांछ्या चिकित्सा निंदा । आनित्य ग्रामणी मस्ती सदा । जाणीव अवज्ञा विपत्ती आपदा । दुर्वृत्ती दुर्वासना

| स्पर्धा खटपट आणी चटपट । तन्हे झटपट आणी वटवट । |
|---|
| सदा खटखट आणी लटपट । परम वेथा कुविद्या । ७ । |
| कुरूप आणी कुलक्षण। अशक्त आणी दुर्जन। |
| दरिद्री आणी कृपण । आतिशयेंसीं । ८ । |
| आळसी आणी खादाड । दुर्बळ आणी लाताड । |
| तुटक आणी लाबाड । आतिशयेंसीं । ९ । |
| मूर्ख आणी तपीळ। वेडें आणी वाचाळ। |
| लटिकें आणी तोंडाळ । आतिशयेंसीं । १०। |
| नेणे आणी नायके। न ये आणी न सीके। |
| न करी आणी न देखे । अभ्यासदृष्टी । ११। |
| अज्ञान आणी अविस्वासी । छळवादी आणी दोषी । |
| अभक्त आणी भक्तांसी। देखों सकेना ।१२। |
| पापी आणी निंदक। कष्टी आणी घातक। |
| दुःखी आणी हिंसक । आतिशयेंसीं । १३। |
| हीन आणी कृत्रिमी। रोगी आणी ककर्मी। |
| आचंगुल आणी अधर्मी । वासना रमे । १४। |
| हीन देह आणी ताठा । अप्रमाण आणी फांटा । |
| बाष्कळ आणी करंटा। विवेक सांगे ।१५। |
| लंडी आणी उन्मत्त । निकामी आणी हरूकत । |
| भ्याड आणी बोलत। पराक्रमु । १६। |
| कनिष्ठ आणी गर्विष्ठ । नपरतें आणी जा |
| र्थं। आणा भ्रष्ट । आतिशयेंसीं १९७१ |
| अभिमानी आणी निसंगळ । वोह्यस्त अणी |
| दंभिक आणी अनर्गळ। आतिश्रायेंसीं ।१८। |

| वोखटे आणी विकारी । खोटें आणी अनोपकारी । |
|--|
| अवलक्षण आणी धिःकारी । प्राणिमात्रांसी । १९। |
| अल्पमती आणी वादक। दीनरूप आणी भेदक। |
| सूक्ष्म आणी त्रासक। कुशब्देंकरूनि ।२०। |
| कठिणवचनी कर्कशवचनी। कापट्यवचनी संदेहवचनी। |
| दुःखवचनी तीव्रवचनी। क्रूर निष्ठुर दुरात्मा ।२१। |
| न्यूनवचनी पैशून्यवचनी । अशभवचनी अनित्यवचनी । |
| द्वेषवचनी अनृत्यवचनी। बाष्कळवचनी धिःकारु । २२। |
| कपटी कुटिळ गाठ्याळ। कुटैं कचर नट्याळ। |
| कोपी कुधन टवाळ । आतिशयेंसीं । २३। |
| तपीळ तामस अविचार । पापी अनर्थी अपस्मार । |
| भूत समंधी संचार । आंगीं वसे । २४। |
| आत्महत्यारा स्त्रीहत्यारा। गोहत्यारा ब्रह्महत्यारा। |
| अलियारा प्रहास्यारा प्रहाहत्यारा । |
| मातृहत्यारा पितृहत्यारा । महापापी पतित । २५। |
| मातृहत्यारा पितृहत्यारा । महापापी पतित । २५। उणें कुपात्र कुतर्की । मित्रद्रोही विस्वासघातकी । |
| मातृहत्यारा पितृहत्यारा । महापापी पतित । २५। उणें कुपात्र कुतर्कीं । मित्रद्रोही विस्वासघातकी । कृतघ्न तल्पकी नारकी । आतित्याई जल्पक । २६। |
| मातृहत्यारा पितृहत्यारा । महापापी पतित । २५। उणें कुपात्र कुतर्की । मित्रद्रोही विस्वासघातकी । कृतघ्न तल्पकी नारकी । आतित्याई जल्पक । २६। किंत भांडण झगडा कळ्हो । अधर्म अनराहाटी शोकसंग्रहो । |
| मातृहत्यारा पितृहत्यारा। महापापी पतित । २५। उणें कुपात्र कुतर्की। मित्रद्रोही विस्वासघातकी। कृतघ्न तल्पकी नारकी। आतित्याई जल्पक । २६। किंत भांडण झगडा कळ्हो। अधर्म अनराहाटी शोकसंत्रहो। चाहाड वेसनी विग्रहो। निग्रहकर्ता । २७। |
| मातृहत्यारा पितृहत्यारा । महापापी पतित । २५। उणें कुपात्र कुतर्कीं । मित्रद्रोही विस्वासघातकी । कृतघ्न तल्पकी नारकी । आतित्याई जल्पक । २६। किंत भांडण झगडा कळ्हो । अधर्म अनराहाटी शोकसंत्रहो । चाहाड वेसनी विप्रहो । निग्रहकर्ता । २७। द्वाड आपेसी वोंगळ । चाळक चंबक लच्याळ । |
| मातृहत्यारा पितृहत्यारा । महापापी पतित । २५। उणें कुपात्र कुतर्की । मित्रद्रोही विस्वासघातकी । कृतघ्न तल्पकी नारकी । आतित्याई जल्पक । २६। किंत भांडण झगडा कळ्हो । अधर्म अनराहाटी शोकसंत्रहो । चाहाड वेसनी वित्रहो । नित्रहकर्ता । २७। |
| मातृहत्यारा पितृहत्यारा । महापापी पतित ।२५। उणें कुपात्र कुतर्कीं । मित्रद्रोही विस्वासघातकी । कृतघ्न तल्पकी नारकी । आतित्याई जल्पक ।२६। किंत भांडण झगडा कळ्हो । अधर्म अनराहाटी शोकसंत्रहो । चाहाड वेसनी वित्रहो । नित्रहकर्ता ।२७। द्वाड आपेसी वोंगळ । चाळक चुंबक लच्याळ । स्वार्थी अभिळासी वोढाळ । आदत्त झोड आदखणा ।२८। शठ शुंभ कातरु । लंड तमुंड सिंतरु । |
| मातृहत्यारा पितृहत्यारा । महापापी पतित ।२५। उणें कुपात्र कुतर्कीं । मित्रद्रोही विस्वासघातकी । कृतघ्न तल्पकी नारकी । आतित्याई जल्पक ।२६। किंत भांडण झगडा कळ्हो । अधर्म अनराहाटी शोकसंत्रहो । चाहाड वेसनी वित्रहो । नित्रहकर्ता ।२७। द्वाड आपेसी वोंगळ । चाळक चुंबक लच्याळ । स्वार्थी अभिळासी वोढाळ । आदत्त झोड आदखणा ।२८। शठ शुंभ कातरु । लंड तमुंड सिंतरु । बंड पाषांड तश्करु । अपहारकर्ता ।२९। |
| मातृहत्यारा पितृहत्यारा । महापापी पतित ।२५। उणें कुपात्र कुतर्कीं । मित्रद्रोही विस्वासघातकी । कृतघ्न तल्पकी नारकी । आतित्याई जल्पक ।२६। किंत भांडण झगडा कळ्हो । अधर्म अनराहाटी शोकसंत्रहो । चाहाड वेसनी विग्रहो । निग्रहकर्ता ।२७। द्वाड आपेसी वोंगळ । चाळक चुंबक लच्चाळ । स्वार्थी अभिळासी वोढाळ । आदत्त झोड आदखणा ।२८। शठ शुंभ कातरु । लंड तमुंड सिंतरु । |

मारेकरी वरपेकरी। दरवडेकरी खाणोरी। मैंद भोंदु परद्वारी । भुररेकरी चेटकी । ३१। निशंक निलाजिरा कळभंट। टोणपा लौंद घट उद्धट। ठस ठोंबस खट नट । जगभांड विकारी ।३२। अधीर आळिका अनाचारी। अंध पंगु खोंकलेकरी। थोटा बधिर दमेकरी । तन्ही ताठा न संडी । ३३। विद्याहीन वैभवहीन । कुळहीन लक्ष्मीहीन । शक्तिहीन सामर्थ्यहीन । अदृष्टहीन भिकारी । ३४। बळहीन कळाहीन । मुद्राहीन दीक्षाहीन । लक्षणहीन लावण्यहीन । आंगहीन विपारा । ३५। युक्तिहीन बुद्धिहीन । आचारहीन विचारहीन । सत्वहीन । विवेकहीन संशई । ३६। क्रियाहीन भक्तिहीन भावहीन । ज्ञानहीन वैराग्यहीन । शांतिहीन क्ष्माहीन । सर्वहीन क्षुल्लकु । ३७। समयो नेणे प्रसंग नेणे। प्रेत्न नेणे अभ्यास नेणे। आर्जव नेणे मैत्री नेणे । कांहींच नेणे अभागी ।३८। असो ऐसे नाना विकार । कुलक्षणाचें कोठार । ऐसा कुविद्येचा नर । श्रोतीं वोळखावा । ३९। ऐसीं कुविद्येचीं लक्षणें। ऐकोनि त्यागचि करणें। अभिमानें तन्हें भरणें। हें विहित नव्हे ।४०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'कुविद्यालक्षणनाम' समास तिसरा समाप्त.

दशक २: समास ४

भक्तिनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

| नाना सुकृताचें फळ। तो हा नरदेह केवळ। |
|--|
| त्याहिमध भाग्य सफळ। तरीच सन्मार्ग लागे । १। |
| नरदेही विशेष ब्राह्मण । त्याहीवरी मंध्यारकार । |
| सद्वासना भगवद्धजन । घडे पूर्वपुण्यें । २ । |
| भगवद्भक्ति हे उत्तम । त्याहीवरी स्वापापार । |
| काळ साथक हाचि परम । लाभ जाणावा |
| प्रेमप्रीतीचा सद्धाव । आणि भक्तांचा गणकाः |
| हरिकथा मोहोत्साव। तेणें प्रेमा दुणावे । ४। |
| नरदेहीं आलियां येक । कांद्रीं करातें गर्णान |
| जेणें पाविजे परलोक । परम दुल्लभ जो । ५ । |
| विधियुक्त ब्रह्मकर्म । अथवा त्या त्या राज |
| अथवा करणें सुगम । भजन भगवंताचें । ६ । |
| अनुतापें करावा त्याग । अथवा करणें भक्तियोग । |
| नोही तरी धरामें संग । स्वयन |
| नाना शास्त्रें धांडोळावीं । अथवा तीर्थें तरी करावीं । |
| अथवा पुरश्चरणें बरवीं। पापक्षयाकारणें । ८। |
| अथवा कीने प्रयोगन्तर । अस्ति । |
| अथवा कीजे परोपकार । अथवा ज्ञानाचा विचार । निरूपणीं सारासार । विवेक करणें । ९ । |
| पाळाळी केलंक करण १९। |
| पाळावी वेदांची आज्ञा । कर्मकांड उपासना । जेणें होईजे ज्ञाना । अधिकारपात्र । १०। |
| ११०। |

| काया वाचा आणि मनें। पत्रें पुष्पें फळें जीवनें। |
|--|
| कांही तरी येका भजनें। सार्थक करावें ।११। |
| जन्मा आलियाचें फळ। कांहीं करावें सफळ। |
| ऐसें न करितां निर्फळ । भूमिभार होये ।१२। |
| नरदेहाचें उचित । कांहीं करावें आत्महित । |
| यथानुशक्त्या चित्तवित्त । सर्वोत्तमीं लावावें । १३। |
| हें कांहींच न धरी जो मनीं । तो मृत्यप्राय वर्ते जनीं। |
| जन्मा येऊन तेणें जननी । वायांच कष्टविली ।१४। |
| नाहीं संध्या नाहीं स्नान । नाहीं भजन देवतार्चन । |
| नाहीं मंत्र जप ध्यान । मानसपूजा ।१५। |
| नाहीं भक्ति नाहीं प्रेम । नाहीं निष्ठा नाहीं नेम । |
| नाहीं देव नाहीं धर्म। अतीत अभ्यागत । १६। |
| नाहीं सदुद्धि नाहीं गुण । नाहीं कथा नाहीं श्रवण । |
| नाहीं अध्यात्मनिरूपण । ऐकिलें कदां । १७। |
| नाहीं भल्यांची संगती। नाहीं शुद्ध चित्तवृत्ती। |
| नाहीं कैवल्याची प्राप्ती । मिथ्यामदें । १८। |
| नाहीं नीति नाहीं न्याये। नाहीं पुण्याचा उपाये। |
| नाहीं परत्रीची सोये। युक्तायुक्त क्रिया ।१९। |
| नाहीं विद्या नाहीं वैभव । नाहीं चातुर्याचा भाव । |
| नाहीं कळा नाहीं लाघव। रम्यसरस्वतीचें ।२०। |
| शांती नाहीं क्ष्मा नाहीं । दीक्षा नाहीं मीत्री नाहीं । |
| शुभाशुभ कांहींच नाहीं। साघनादिक ।२१। |
| सुचि नाहीं स्वधर्म नाहीं । आचार नाहीं विचार नाहीं । |
| आरत्र नाहीं परत्र नाहीं । मुक्त क्रिया मनाची । २२। |

कर्म नाहीं उपासना नाहीं । ज्ञान नाहीं वैराग्य नाहीं ।
योग नाहीं धारिष्ट नाहीं । कांहींच नाहीं पाहातां । २३।
उपरती नाहीं त्याग नाहीं । समता नाहीं लक्षण नाहीं ।
आदर नाहीं प्रीति नाहीं । परमेश्वराची । २४।
परगुणाचा संतोष नाहीं । परोपकारें सुख नाहीं ।
हरिभक्तीचा लेश नाहीं । अंतर्यामीं । २५।
ऐसे प्रकारीचे पाहातां जन । ते जीतिच प्रेतासमान ।
त्यांसीं न करावें भाषण । पवित्र जनीं । २६।
पुण्यसामग्री पुरती । तयासीच घडे भगवद्भक्ती ।
जे जे जैसें करिती । ते पावती तैसेंचि । २७।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'भक्तिनरूपणनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक २ः समास ५
रजोगुणलक्षण

मुळीं देह त्रिगुणाचा । सत्त्वरजतमाचा । त्यामध्यें सत्त्वाचा । उत्तम गुण । १ । सत्त्वगुणें भगवद्भक्ती । रजोगुणें पुनरावृत्ती । तमोगुणें अधोगती । पावति प्राणी । २ ।

ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः। जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः॥

| त्यांतिह शुद्ध आणी सबळ । तेहि बोलिजेति सकळ। |
|---|
| शुद्ध तेंचि जें निर्मळ । सबळ बाघक जाणावें । ३ । |
| शुद्धसबळाचें लक्षण । सावध परिसा विचक्षण । |
| शुद्ध तो परमार्थी जाण । सबळ तो संसारिक । ४। |
| तया संसारिकाची स्थिती । देहीं त्रिगुण वर्तती । |
| येक येतां दोनी जाती। निघोनियां । ५। |
| रज तम आणी सत्त्व। येणेंचि चालें जीवित्व। |
| रजोगुणाचें कर्तुत्व । दाखऊं आतां । ६ । |
| रजोगुण येतां शरीरीं। वर्तणुक कैसी करी। |
| सावध होऊनी चतुरीं। परिसावें । ७। |
| माझें घर माझा संसार। देव कैंचा आणिला थोर। |
| ऐसा करी जो निर्धार। तो रजोगुण । ८। |
| माता पिता आणि कांता । पुत्र सुना आणि दुहिता । |
| इतुकियांची वाहे चिंता । तो रजोगुण । ९ । |
| बरें खावें बरें जेवावें। बरें ल्यावें बरें नेसावें। |
| दुसऱ्याचें अभिळाषावें । तो रजोगुण ।१०। |
| कैंचा धर्म कैंचें दान। कैंचा जप कैंचें ध्यान। |
| विचारीना पापपुण्य । तो रजोगुण ।११। |
| नेणे तीर्थ नेणे व्रत । नेणे अतीत अभ्यागत । |
| अनाचारी मनोगत। तो रजोगुण ।१२। |
| धनधान्यांचे संचित । मन होये द्रव्यासक्त । |
| अत्यंत कृपण जीवित्व । तो रजोगुण ।१३। |
| मी तरुण मी सुंदर । मी बळाढ्य मी चतुर । |
| मी सकळांमध्ये थोर । म्हणे तो रजोगुण । १४। |
| |
| |

माझा देश माझा गांव । माझा वाडा माझा ठाव । ऐसी मनीं धरी हांव । तो रजोगुण ।१५। दुसऱ्याचे सर्व जावें । माझेंचि बरें असावें । ऐसें आठवे स्वभावें । तो रजोगुण ।१६। कपट आणी मत्सर। उठे देहीं तिरस्कार। अथवा कामाचा विकार। तो रजोगुण ।१७। बाळकावरी ममता । प्रीतीनें आवडे कांता । लोभ वाटे समस्तां । तो रजोगुण । १८। जिवलगांची खंती । जेणें काळें वाटे चित्तीं । तेणें काळें सीघ्रगती । रजोगुण आला । १९। संसाराचे बहुत कष्ट। कैसा होईल सेवट। मनास आठवे संकट । तो रजोगुण ।२०। कां मागें जें जें भोगिलें। तें तें मनी आठवलें। दुःख अत्यंत वाटलें । तो रजोगुण । २१। वैभव देखोनी दृष्टी । आवडी उपजली पोटीं । आशागुणें हिंपुटी- । करी, तो रजोगुण । २२। जें जें दृष्टी पडिलें। तें तें मने मागितलें। लभ्य नस्तां दुःख जालें । तो रजोगुण ।२३। विनोदार्थीं भरें मन । शृंघारिक करी गायेन । राग रंग तान मान। तो रजोगुण । २४। टवाळी ढवाळी निंदा। सांगणे घडे वेवादा। हास्य विनोद करी सर्वदा । तो रजोगुण ।२५। आळस उठे प्रबळ । कर्मणुकेचा नाना खेळ । कां उपभोगाचे गोंधळ । तो रजोगुण । २६।

| कळावंत बहुरूपी । नटावलोकी साक्षेपी । |
|---|
| नाना खेळीं दान अर्पी । तो रजोगुण । २७। |
| उन्मत्त द्रव्यावरी अति प्रीती । ग्रामज्य आठवे चित्तीं । |
| आवडे नीचाची संगती। तो रजोगुण ।२८। |
| तश्करविद्या जीवीं उठे । परन्यून बोलावें वाटे । |
| नित्यनेमास मन विटें। तो रजोगुण ।२९। |
| देवकारणीं लाजाळु । उदरालागीं कष्टाळु । |
| प्रपंची जो स्नेहाळु । तो रजोगुण ।३०। |
| गोडग्रासी आळकेपण । अत्यादरें पिंडपोषण । |
| रजोगुणें उपोषण । केलें न वचे ।३१। |
| शृंगारिक तें आवडे । भक्ती वैराग्य नावडे । |
| कळालाघवीं पवाडे । तो रजोगुण ।३२। |
| नेणोनियां परमात्मा । सकळ पदार्थी प्रेमा । |
| बळात्कारें घाली जन्मा । तो रजोगुण ।३३। |
| असो ऐसा रजोगुण। लोभें दावी जन्ममरण। |
| प्रपंचीं तो सबळ जाण। दारुण दुःख भोगवी ।३४। |
| आतां रजोगुण हा सुटेना । संसारिक हें तुटेना । |
| प्रपंचीं गुंतली वासना । यास उपाय कोण ।३५। |
| उपाये येक भगवद्भक्ती । जरी ठाकेना विरक्ती । |
| तरी येथानुशक्ती । भजन करावें । ३६। |
| काया वाचा आणि मनें। पत्रें पुष्यें फळें जीवनें। |
| ईश्वरीं अपूर्निया मनें। सार्थक करावें ।३७। |
| येथानुशक्ती दानपुण्य । परी भगवंती अनन्य । |
| सुखदुःखें परी चिंतन । देवाचेंचि करावें ।३८। |

आदिअंती येक देव। मध्येंचि लाविली माव।
महणोनियां पूर्ण भाव। भगवंतीं असावा ।३९।
ऐसा सबळ रजोगुण। संक्षेपें केलें कथन।
आतां शुद्ध तो तूं जाण। परमार्थिक ।४०।
त्याचे वोळखीचें चिन्ह। सत्त्वगुणीं असे जाण।
तो रजोगुण परिपूर्ण। भजनमूळ ।४१।
ऐसा रजोगुण बोलिला। श्रोतीं मनें अनुमानिला।
आतां पुढें परिसला। पाहिजे तमोगुण ।४२।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'रजोगुणलक्षणनाम' समास पाचवा समाप्त.

> दशक २ः समास ६ तमोगुणलक्षण

> > ।। श्रीराम ॥

मागां बोलिला रजोगुण । क्रियेसहित लक्षण ।
आतां ऐका तमोगुण । तोहि सांगिजेल । १ ।
संसारी दुःखसंमंध । प्राप्त होतां उठे खेद ।
कां अद्भुत आला क्रोध । तो तमोगुण । २ ।
शोरीरीं क्रोध भरतां । नोळखे माता पिता ।
बंधु बहिण कांता । ताडी, तो तमोगुण । ३ ।
दुसऱ्याचा प्राण घ्यावा । आपला आपण स्वयं द्यावा ।
विसरवी जीवभावा । तो तमोगुण । ४ ।

| भरलें क्रोधाचें काविरें । पिश्याच्यापरी वावरे । |
|---|
| नाना उपायें नावरे । तो तमोगुण । ५ । |
| आपला आपण शस्त्रपात । पराचा करी घात । |
| ऐसा समय वर्तत । तो तमोगुण । ६ । |
| डोळां युध्यचि पाहावें । रण पडिलें तेथें जावें । |
| ऐसें घेतलें जीवें। तो तमोगुण । ७। |
| अखंड भ्रांती पडे। केला निश्चय विघडे। |
| अत्यंत निद्रा आवडे । तो तमोगुण । ८ । |
| क्षुघा जयाची वाड । नेणे कडु अथवा गोड । |
| अत्यंत जो कां मूढ । तो तमोगुण । ९ । |
| प्रीतिपात्र गेलें मरणें । तया लागीं जीव देणें। |
| स्वयें आत्महत्या करणें। तो तमोगुण ।१०। |
| किडा मुंगी आणी स्वापद। यांचा करूं आवडे वध। |
| अत्यंत जो कृपामंद । तो तमोगुण ।११। |
| स्त्रीहत्या वाळहत्या । द्रव्यालागीं ब्रह्महत्या । |
| करूं आवडे गोहत्या। तो तमोगुण ।१२। |
| विसाळाचेनि नेटें। वीष घ्यावेंसें वाटे। |
| परवध मनीं उठे। तो तमोगुण ।१३। |
| अंतरीं धरूनि कपट। पराचें करी तळपट। |
| सदा मस्त सदा उद्धट । तो तमोगुण ।१४। |
| कळहो व्हावा ऐसें वाटे । झोंबी घ्यावी ऐसें उठे । |
| अंतरीं द्वेष प्रगटे । तो तमोगुण ।१५। |
| युध्य देखावें ऐकावें । स्वयें युध्यचि करावें । |
| मारावें कीं मरावें। तो तमोगुण ।१६। |
| मत्सरें भक्ति मोडावी । देवाळयें विघडावीं । |
| फळतीं झाडें तोडावीं । तो तमोगुण ।१७। |

| सत्कर्में ते नावडती । नाना दोष ते आवडती । |
|--|
| - 0: 0 0: 1 |
| · |
| ब्रह्मवृत्तीचा उछेद । जीवमात्रास देणें खेद । |
| करूं आवडे अप्रमाद । तो तमोगुण ।१९। |
| आग्नप्रळये । भूतप्रळये वीषप्रळये। |
| मत्सरें करी जीवक्षये। तो तमोगुण ।२०। |
| परपीडेचा संतोष । निष्ठुरपणाचा हव्यास । |
| संसाराचा नये त्रास । तो तमोगुण ।२१। |
| भांडण लाऊन द्यावें। स्वयें कौतुक पाहावें। |
| कुबुद्धि घेतली जीवें। तो तमोगुण ।२२। |
| प्राप्त जालियां संपत्ति । जीवांस करी यातायाती । |
| कळवळा नये चित्तीं। तो तमोगुण ।२३। |
| नावडे भक्ति नावडे भाव । नावडे तीर्थ नावडे देव । |
| वेदशास्त्र नलगे सर्व। तो तमोगुण । २४। |
| · |
| स्नानसंध्या नेम नसे । स्वधर्मी भ्रष्टला दिसे । अकर्तत्य करीतसे । तो तमोगण ।२५। |
| oldified district |
| जेष्ठ बंधु बाप माये। त्यांचीं वचनें न साहे। |
| सीघ्रकोपी निघोन जाये । तो तमागुण । २६। |
| उगेंचि खावें उगेंचि असावें । स्तब्ध होऊन बैसावें । |
| कांहींच स्मरेना स्वभावें । तो तमोगुण ।२७। |
| चेटकविद्येचा अभ्यास । शस्त्रविद्येचा हव्यास । |
| मल्लिवद्या व्हावी ज्यास । तो तमोगुण ।२८। |
| केले गळाचे नवस। राडिबेडीचे सायास। |
| काष्ठयंत्र छेदी जिव्हेस । तो तमोगुण ।२९। |
| काळवत्र छदा जिल्हा सामा उ |
| मस्तकीं भदें जाळावें। पोतें आंग हुरपळावें। स्तरों गान बोंचन प्रयावें। तो तमोगण ।३०। |
| स्वयें शस्त्र टोंचून घ्यावें । तो तमोगुण ।३०। |

| देवास सिर वाहावें। कां तें आंग समर्पावें। | |
|--|------------|
| पडणीवरून घालून घ्यावें । तो तमोगुण । ३ | 81 |
| नियह करून धरणें। कां तें टांगून घेणें। | |
| देवद्वारी जीव देणें। तो तमोगुण ।३ | २ । |
| निराहार उपोषण । पंचारनी धूम्रपान । | |
| आपणास घ्यावें पुरून । तो तमोगुण ॥३: | 1 6 |
| सकाम जें कां अनुष्ठान । कां तें वायोनिरोधन । | |
| अथवा राहावें पडोन । तो तमोगुण । ३ | 81 |
| नखें केश वाढवावे । हस्तचि वर्ते करावे । | |
| अथवा वाग्सुंन्य व्हावें। तो तमोगुण ।३० | ų l |
| नाना निप्रहें पिडावें। देहदुःखें चर्फडावें। | |
| क्रोधें देवास फोडावें। तो तमोगुण ।३१ | ٩l |
| देवाची जो निंदा करी। तो आशाबिद्ध अघोरी। | |
| जो संतसंग न धरी। तो तमोगुण ।३ | 9 [|
| ऐसा हा तमोगुण। सांगतां तो असाधारण। परी त्यागार्थ निरूपण। कांहीं येक । ३ | <i>/</i> 1 |
| ऐसें वर्ते तो तमोगुण। परी हा पतनास कारण। | 51 |
| मोक्षप्राप्तीचें लक्षण । नव्हे येणें । ३ | 9 1 |
| केल्या कर्माचें फळ। प्राप्त होईल सकळ। | • |
| जन्म दुःखाचें मूळ। तुटेना कीं । ४ | 0 |
| व्हावया जन्माचें खंडण। पाहिजे तो सत्त्वगुण। | |
| तेंचि असे निरूपण । पुढिलिये समासीं । ४ | १। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'तमोगुणलक्षणनाम' समास सहावा समाप्त.

दशक २: समास ७

सत्त्वगुणलक्षण

॥ श्रीराम ॥

| मागां बोलिला तमोगुण। जो दुःखदायक दारुप | ЛI | | |
|---|--------|----|---|
| आतां ऐका सत्त्वगुण। परम दुल्लभ | 1 | १ | 1 |
| जो भजनाचा आधार। जो योगियांची था | र । | | |
| जो निरसी संसार । दुःखमूळ जो | 1 | ? | 1 |
| जेणें होये उत्तम गती। मार्ग फुटे भगवंत | | | |
| जेणें पाविजे मुक्ती । सायोज्यता ते | 1 | 3 | 1 |
| जो भक्तांचा कोंवसा । जो भवार्णवींचा भर्वस | ग । | | |
| मोक्षलक्ष्मीची दशा। तो सत्त्वगुण | - 1 | 8 | 1 |
| जो परमार्थाचें मंडण । जो महंतांचें भूषा | ग। | | |
| रजतमाचें निर्शन । जयाचेनि | 1 | 4 | l |
| जो परम सुखकारी। जो आनंदाची लह | री । | | |
| देऊनियां, निवारी-। जन्ममृत्य | ١ | Ę | 1 |
| जो अज्ञानाचा सेवट। जो पुण्याचें मूळपी | ठ । | | |
| जयाचेनि सांपडे वाट। परलोकाची | 1 | 9 | 1 |
| ऐसा हा सत्त्वगुण। देहीं उमटतां आप | ण । | | |
| तये क्रियेचें लक्षण । ऐसें असे | -1 | 6 | 1 |
| ईश्वरीं प्रेमा अधिक । प्रपंच संपादणें लोकित | क । | | |
| सदा सन्निघ विवेक । तो सत्त्वगुण | 1 | 9 | 1 |
| संसारदुःख विसरवी । भक्तिमार्ग विमळ दाव | त्री । | | |
| भजनिक्रया उपजवी। तो सत्त्वगुण | -1 | १० | 1 |

| परमार्थाची आवडी । उठे भावार्थाची गोडी । |
|--|
| परोपकारीं तांतडी । तो सत्त्वगुण ।११। |
| स्नानसंध्या पुण्यसीळ । अभ्यांतरींचा निर्मळ । |
| शरीर वस्त्रें सोज्वळ । तो सत्त्वगुण ।१२। |
| येजन आणी याजन । अध्ययन आणी अध्यापन । |
| स्वयें करी दानपुण्य । तो सत्त्वगुण । १३। |
| निरूपणाची आवडी । जया हरिकथेची गोडी । |
| क्रिया पालटे रोकडी । तो सत्त्वगुण । १४। |
| अश्वदानें गजदानें । गोदानें भूमिदानें । |
| नाना रत्नांचीं दानें। करी, तो सत्त्वगुण ।१५। |
| धनदान वस्त्रदान । अन्नदान उदकदान । |
| करी ब्राह्मणसंतर्पण। तो सत्त्वगुण ।१६। |
| कार्तिकस्नानें माघस्नानें। व्रतें उद्यापनें दानें। |
| निःकाम तीर्थं उपोषणे । तो सत्त्वुण ।१७। |
| सहस्रभोजनें लक्षभोजनें । विविध प्रकारींचीं दानें। |
| निःकाम करी सत्त्वगुणें। कामना रजोगुण ।१८। |
| तीर्थी अपी जो अग्रारें। बांघे वापी सरोवरें। |
| बांधे देवाळयें सिखरें। तो सत्त्वगुण ।१९। |
| देवद्वारीं पडशाळा । पाईरीया दीपमाळा । |
| वृंदावनें पार पिंपळा । बांघे, तो सत्त्वगुण ।२०। |
| लावी वनें उपवनें। पुष्पवाटिका जीवनें। |
| निववी तापस्यांचीं मनें। तो सत्त्वगुण ।२१। |
| संध्यामठ आणि भुयेरीं । पाईरीया नदीतीरीं । |
| भांडारगृहें देवद्वारीं । बांघे, तो सत्त्वगुण ।२२। |
| नाना देवांची जी स्थानें । तेथें नंदादीप घालणें। |
| वाहे अळंकार भूषणें । तो सत्त्वगुण |

जेंगट मृदांग टाळ । दमामे नगारे काहळ । नाना वाद्यांचे कल्लोळ । सुस्वरादिक । २४। नाना सामग्री सुंदर । देवाळई घाली नर । हरिभजनीं जो तत्पर । तो सत्त्वगुण । २५। छेत्रें आणि सुखासनें । दिंड्या पताका निशाणें । वाहे चामरें सूर्यापानें । तो सत्त्वगुण ।२६। वृंदावनें तुळसीवने । रंगमाळा संमार्जनें । ऐसी प्रीती घेतली मनें । तो सत्त्वगुण ।२७। सुंदरें नाना उपकर्णे। मंडप चांदवे आसनें। देवाळईं समर्पणें। हा सत्त्वगुण ।२८। देवाकारणें खाद्य । नाना प्रकारीं नैवेद्य । अपूर्व फळें अर्पी सद्य । तो सत्त्वगुण । २९। ऐसी भक्तीची आवडी । नीच दास्यत्वाची गोडी । स्वयें देवद्वार झाडी। तो सत्त्वगुण ।३०। तिथी पर्व मोहोत्साव। तेथें ज्याचा अंतर्भाव। काया वाचा मनें सर्व। अपीं, तो सत्त्वगुण ।३१। हरिकथेसी तत्पर । गंधें माळा आणी धुशर । घेऊन उभीं निरंतर । तो सत्त्वगुण ।३२। नर अथवा नारी। येथानुशक्ति सामग्री। घेऊन उभीं देवद्वारीं। तो सत्त्वगुण ।३३। महत्कृत्य सांडून मार्गे। देवास ये लागवेगें। भक्ति निकट आंतरंगें । तो सत्त्वगुण ।३४। थोरपणा सांडून दुरी। नीच कृत्य आंगीकारी। तिष्ठत उभीं देवद्वारीं। तो सत्त्वगुण ।३५। देवालागीं उपोषण । वर्जी तांबोल भोजन । नित्य नेम जप ध्यान । करी, तो सत्त्वगुण ।३६।

| शब्द कठीण न बोले। अतिनेमेंसी चाले। |
|--|
| योगी जेणें तोषविले । तो सत्त्वगुण ।३७। |
| सांडूनिया अभिमान । निःकाम करी कीर्तन । |
| श्रेद रोमांच स्फुरण। तो सत्त्वगुण ।३८। |
| अंतरीं देवाचें ध्यान । तेणें निडारले नयन । |
| पडे देहाचें विस्मरण। तो सत्त्वगुण ।३१। |
| हरिकथेची अति प्रीती। सर्वथा नये विकृती। |
| आदिक प्रेमा आदिअंती । तो सत्त्वगुण ।४०। |
| मुखीं नाम हातीं टाळी । नाचत बोले ब्रीदावळी । |
| घेऊन लावी पायधुळी। तो सत्त्वगुण ।४१। |
| देहाभिमान गळे। विषईं वैराग्य प्रबळे। |
| मिथ्या माया ऐसें कळे। तो सत्त्वगुण ।४२। |
| कांहीं करावा उपाये। संसारीं गुंतोन काये। |
| उकलवी ऐसें हृदये। तो सत्त्वगुण ।४३। |
| संसारासी त्रासे मन । कांहीं करावें भजन । |
| ऐसें मनीं उठे ज्ञान । तो सत्त्वगुण ।४४। |
| असतां आपुले आश्रमीं । अत्यादरें नित्यनेमीं । |
| सदा प्रीती लागे रामीं। तो सत्त्वगुण ।४५। |
| सकळांचा आला वीट। परमार्थी जो निकट। |
| आघातीं उपजे धारिष्ट । तो सत्त्वगुण ।४६। |
| सर्वकाळ उदासीन । नाना भोगीं विटे मन । |
| आठवे भगवद्भजन । तो सत्त्वगुण ।४७। |
| पदार्थी न बैसे चित्त । मनीं आठवे भगवंत । |
| ऐसा दृढ भावार्थ । तो सत्त्वगुण ।४८। |
| लोक बोलती विकारी। तरी आदिक प्रेमा धरी। |
| निश्चय बाणे अंतरी । तो सत्त्वगुण ।४९। |

| अंतरी स्फूर्ती स्फुरे। सस्वरूपीं तर्क भरे। |
|---|
| नष्ट संदेह निवारे । तो सत्त्वगुण ।५०। |
| शरीर लावावें कारणीं । साक्षेप उठे अंतःकर्णीं । |
| सत्त्वगुणाची करणी । ऐसी असे । ५१। |
| शांति क्ष्मा आणि दया । निश्चय उपजे जया । |
| सत्त्वगुण जाणावा तया। अंतरीं आला ।५२। |
| आले अतीत अभ्यागत। जाऊं नेदी जो भुकिस्त। |
| येथानशक्ती दान देत । तो सत्त्वगुण ।५३। |
| तिडतापडी दैन्यवाणें। आलें आश्रमाचेनि गुणें। |
| तयालागीं स्थळ देणें। तो सत्त्वगुण ।५४। |
| आश्रमीं अन्नाची आपदा। परी विमुख नव्हे कदा। |
| शक्तिनुसार दे सर्वदा। तो सत्त्वगुण । ५५। |
| जेणें जिंकिली रसना। तृप्त जयाची वासना। जयास नाहीं कामना। तो सत्त्वगुण । ५६। |
| |
| होणार तैसें होत जात। प्रपंचीं जाला आघात। डळमळिना ज्याचें चित्त। तो सत्त्वगुण । ५७। |
| येका भगवंताकारणें। सर्व सुख सोडिलें जेणें। |
| केलें देहाचें सांडणें। तो सत्त्वगुण । ५८। |
| विषईं धांवे वासना । परी तो कदा डळमळिना । |
| ज्याचे धारिष्ट चळेना । तो सत्त्वगुण ।५९। |
| देह आपदेनें पीडला । श्रुधे तृषेनें वोसावला । |
| तरी निश्चयो राहिला। तो सत्त्वगुण ।६०। |
| श्रवण आणी मनन । निजध्यासें समाधान । |
| शुद्ध जालें आत्मज्ञान । तो सत्त्वगुण ।६१। |
| जयास अहंकार नसे । नैराशता विलसे । |
| जयापासीं कृपा वसे । तो सत्त्वगुण ।६२। |

| सकळांसी नम्र बोले। मर्यादा धरून चाले। |
|---|
| सर्व जन तोषविले । तो सत्त्वगुण ।६३। |
| सकळ जनासी आर्जव। नाहीं विरोधास ठाव। |
| परोपराकारीं वेची जीव। तो सत्त्वगुण ।६४। |
| आपकार्याहून जीवीं । परकार्यसिद्धी करावी । |
| मरोन कीर्ती उरवावी। तो सत्त्वगुण ।६५। |
| पराव्याचे दोषगुण । दृष्टीस देखे आपण । |
| समुद्राऐंसी सांठवण । तो सत्त्वगुण ।६६। |
| नीच उत्तर साहाणें । प्रत्योत्तर न देणें । |
| आला क्रोध सावरणें । तो सत्त्वगुण ।६७। |
| अन्यायेंवीण गांजिती । नानापरी पीडा करिती । |
| तितुकेंहि साठवी चित्तीं। तो सत्त्वगुण ।६८। |
| शरीरें घीस साहाणें। दुर्जनासीं मिळोन जाणें। |
| निंदकास उपकार करणें । हा सत्त्वगुण ।६९। |
| मन भलतीकडे घावें। तें विवेकें आवरावें। |
| इंद्रियें दमन करावें। तो सत्त्वगुण ।७०। |
| सिक्किया आचरावी । असिक्किया त्यागावी । |
| वाट भक्तीची घरावी । तो सत्त्वगुण ।७१। |
| जया आवडे प्रातः स्नान । आवडे पुराणश्रवण । |
| नाना मंत्रीं देवतार्चन । करी, तो सत्त्वगुण ।७२। |
| पर्वकाळीं अतिसादर । वसंतपूजेस तत्पर । |
| जयंत्याची प्रीती थोर । तो सत्त्वगुण ।७३। |
| विदेशीं मेलें मरणें। तयास संस्कार देणें। |
| अथवा सादर होणें। तो सत्त्वगुण ।७४। |

| कोणी येकास मारी। तयास जाऊन वारी। |
|--|
| जीव जंगा – १ |
| E. J J J. D. |
| लग लाखाला आभशेष । नामस्मरणीं विस्वास । नेवरणी |
| देवदर्शनीं अवकाश । तो सत्त्वगुण ।७६। |
| संत देखोनि घावें। परमसुखे हेलावे। |
| नमस्कारी सर्वभावें । तो सत्त्वगुण ।७७। |
| संतकृपा होय जयास। तेणें उद्धरिला वंश। |
| तो ईश्वराचा अंश। सत्त्वगुणें ।७८। |
| सन्मार्ग दाखवी जनां। जो लावी हरिभजना। |
| ज्ञान सिकवी अज्ञाना । तो सत्त्वगुण ।७९। |
| आवडे पुण्य संस्कार । प्रदक्षणा नमस्कार । |
| जया गर्हे गारांस के |
| भक्तीचा हव्यास भारी। ग्रंथसामग्री जो करी। |
| धातप्रति अस्मारी । स्मी ने —— |
| |
| झळफळित उपकर्णे । माळा गवाळी आसनें। |
| पवित्रें सोज्वळें वसनें। तो सत्त्वगुण ।८२। |
| परपीडेचें वाहे दुःख। परसंतोषाचें सुख। |
| वैराग्य देखोन हरिख । मानी, तो सत्त्वगुण ।८३। |
| परभूषणें भूषण। परदूषणें दूषण। |
| परदःखे सिमो जाम । जो जाना |
| आतां असो हें बहुत । देवीं धर्मी ज्यांचें चित्त । |
| भज कामनारहित । जो गानका |
| |
| ऐसा हा सत्त्वगुण सात्त्विक । संसारसागरीं तारक। |
| येणें उपजे विवेक । ज्ञानमार्गाचा ।८६। |

सत्त्वगुणें भगवद्भक्ती । सत्त्वगुणें ज्ञानप्राप्ती । सत्त्वगुणें सायोज्यमुक्ती । पाविजेते । ८७। ऐसी सत्त्वगुणाची स्थिती । स्वल्प बोलिलें येथामती । सावध होऊन श्रोतीं । पुढें अवधान द्यावें ।८८।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सत्त्वगुणलक्षणनाम' समास सातवा समाप्त.

दशक २: समास ८

सद्विद्यानिरूपण

॥ श्रीराम ॥

ऐका सद्विद्येचीं लक्षणें। परम शुद्ध सुलक्षणें। विचार घेतां बळेंचि बाणें। सद्विद्या आंगी सद्विद्येचा जो पुरुष। तो उत्तमलक्षणीं विशेष। त्याचे गुण ऐकतां संतोष । परम वाटे भाविक सात्त्विक प्रेमळ। शांती क्ष्मा दयासीळ। लीन तत्पर केवळ । अमृतवचनी । ३ । परम सुंदर आणि चतुर । परम सबळ आणि धीर । परम संपन्न आणि उदार । आतिशयेंसीं परम ज्ञाता आणी भक्त । महापंडित आणी विरक्त । महातपस्वी आणी शांत । आतिशयेंसीं 141 वक्ता आणी नैराशता ! सर्वज्ञ आणी सादरता ! श्रेष्ठ आणी नप्रता । सर्वत्रांसीं 1 & 1 राजा आणी घार्मिक । शूर आणी विवेक । तारुण्य आणी नेमक । आतिशयेंसीं 9

| | ळाचारी । युक्ताहार ोपकारी । पद्महस्ती | ी निर्विकारी। । ८ । | |
|-------------------|--|---|---|
| कार्यकर्ता निरा | भिमानी । गायक अ इद्धजनी । अत्यादरें | ाणी वैष्णव जनी । | |
| तत्त्वज्ञ आणी | उदासीन । बहुश्रुत सगुण । नीतिवंत | | |
| साधु पवित्र पु | एयसीळ । अंतरशुद्ध निर्मळ । निर्लोभ | ।१०। इ धर्मात्मा कृपाळ । अनुतापी ।११। | |
| गोडी आवडी पर | मार्थप्रीती । सन्मार्ग स ा युक्ति । स्तुती मत | क्तिया घारणा घृती । | |
| दक्ष धूर्त योग्य | तार्किक । सत्य सा तिकारिक । नाना प्रव | हित्य नेमक भेदक । | |
| आदर सन्मान तार्तर | म्य जाणे । प्रयोग स हें जाणें । विचक्षण | तमयो प्रसंग जाणे। | |
| सावध साक्षेपी | साधक । आगमि । निश्चयात | नेगमशोधक । | |
| पुरश्चरणी त | तीर्थवासी । दृढव्रती नित्रहासी । करूं ज | कायाक्लेसी। | |
| सत्यवचनी श | गुभवचनी । कोमळ ख्यवचनी । सर्वकाट | वचनी येकवचनी। | |
| वासनातृप्त सखो | ल योगी । भव्य | सुप्रसन्न वीतरागी। | l |
| सुगड संगीत | शुद्धमार्गी । निःकप गुणप्राही । अनापेश | क्षी लोकसंग्रही। | 1 |
| आर्जव सख्य | सर्वहि । प्राणीम | ात्रासी । १९ | 1 |

| द्रव्यसुची | रायसनी । | 30300 3in | 4. |
|---------------|----------------|-------------------------|-------|
| प्रवृत्तिसुची | | न्यायसुची अंतरसुर्च | |
| | | सर्वसुची निःसंगपणें | |
| मित्रपणें | परहितकारी । | वाग्माधुर्य परशोकहार | 1 |
| सामर्थ्यपणें | वेत्रघारी । | पुरुषार्थं जगमित्र | 1281 |
| संशयछेदक वि | शाळ वक्ता । | सकळ क्लूप्त असोनि श्रोत | ΠI |
| कथानिरूपणीं | शब्दार्था । | जाऊंच नेदी | 1221 |
| वेवादरहित | संवादी । | संगरहित निरोपार्ध | ी । |
| दुराशारहित | अक्रोधी । | निर्दोष निर्मत्सरी | 1531 |
| विमळज्ञानी | निश्चयात्मक । | समाधानी आणि भजव | F 1 |
| सिद्ध असो | नी साधक। | साधन रक्षी | 1881 |
| सुखरूप | संतोषरूप । | आनंदरूप हास्यरू | प। |
| ऐक्यरूप | आत्मरूप। | सर्वत्रांसी | 1241 |
| भाग्यवंत | जयवंत । | रूपवंत गुणवं | त । |
| आचारवंत | क्रियावंत । | विचारवंत स्थिती | 1251 |
| येशवंत | कीर्तिवंत । | शक्तिवंत सामर्थ्यवं | ति । |
| वीर्यवंत | वरदवंत | सत्यवंत सुकृती | 1२७1 |
| विद्यावंत | कळावंत | लक्ष्मीवंत लक्ष्णव | ांत । |
| कुळवंत | सुचिष्मंत । | बळवंत दयाळु | 1261 |
| युक्तिवंत गुण | गवंत वरिष्ठ। | बुद्धिवंत बहुधारि | ा छ |
| दीक्षावंत स | ादा संतुष्ट । | निस्पृह वीतरागी | 1281 |
| असो ऐसे | उत्तम गुण | हें सिद्धद्येचें लक्ष | ण । |
| | _ | अल्पमात्र बोलिलें | |
| रूप लावण्य अ | भ्यासितां न ये | । सहज गुणास न चले उप | ाये । |
| कांहीं तरी | घरावी सोये। | अगांतुक गुणाची | 1381 |

ऐसी हे सद्विद्या बरवी । सर्वत्रांपासी असावी । परी विरक्तपुरुषे अभ्यासावी । अगत्यरूप । ३२।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सद्विद्यानिरूपणनाम' समास आठवा समाप्त.

दशक २: समास ९

विरक्तलक्षण

॥ श्रीराम ॥

ऐका विरक्तांची लक्षणें । विरक्तें असावें कोण्या गुणें । जेणें आंगीं सामर्थ्ये बाणें । योगियाचें जेणें सदकीर्ति वाढे। जेणें सार्थकता घडे। जेणेंकरिता महिमा चढे । विरक्तांसी जेणें परमार्थ फावे। जेणें आनंद हेलावे। जेणें विरक्ति दुणावे । विवेकेंसहित 131 जेणें सुख उचंबळे। जेणें सद्विद्या वोळे। जेणें भाग्यश्री प्रबळे। मोक्षेंसहित 181 मनोरथ पूर्ण होती। सकळ कामना पुरती। मुखीं राहे सरस्वती । मधुर बोलावया । ५ । हे लक्षणें श्रवण कीजे। आणि सदृढ जीवीं धरिजे। तरी मग विख्यात होईजे। भूमंडळीं 1 8 1 विरक्तें विवेकें असावें । विरक्तें अध्यात्म वाढवावें । विरक्तें धारिष्ट धरावें । दमनविषईं विरक्तें राखावें साधन । विरक्तें लावावें भजन । विरक्तें विशेष ब्रह्मज्ञान । प्रगटवावें

| विरक्तें भक्ति वाढवावी । विरक्तें शांती दाखवावी। |
|---|
| विरक्तें येलें करावी । विरक्ती आपुली । ९ । |
| विरक्तें सत्क्रिया प्रतिष्ठावी । विरक्तें निवृत्ति विस्तारावी । |
| विरक्तें नैराशता धरावी । सदृढ जिवेंसी ।१०। |
| विरक्तें धर्मस्थापना करावी । विरक्तें नीति आवलंबावी। |
| विरक्तें क्ष्मा सांभाळावी । अत्यादरेंसी ।११। |
| विरक्तें परमार्थ उजळावा । विरक्तें विचार शोधावा । |
| विरक्तें सन्निध ठेवावा । सन्मार्ग सत्वगुण ।१२। |
| विरक्तें भाविकें सांभाळावी । विरक्तें प्रेमळें निववावीं । |
| विरक्तें साबडीं नुपेक्षावीं । शरणागतें । १३। |
| विरक्तें असावें परम दक्ष । विरक्तें असावें अंतरसाक्ष । |
| विरक्तें वोढावा कैपक्ष । परमार्थाचा । १४। |
| विरक्तें अभ्यास करावा । विरक्तें साक्षेप धरावा । |
| विरक्तें वगत्रृत्वें उभारावा । मोडला परमार्थ । १५। |
| विरक्तें विमळज्ञान बोलावें । विरक्तें वैराग्य स्तवीत जावें । |
| विरक्तें निश्चयाचें करावें । समाधान । १६। |
| पर्वे करावी अचाटें। चालवावीं भक्तांची थाटे। |
| नाना वैभवें कचाटें। उपासनामार्ग ।१७। |
| हरिकीर्तनें करावीं । निरूपणें माजवावीं । |
| भक्तिमार्गे लाजवावीं । निंदक दुर्जनें । १८। |
| बहुतांस करावें परोपकार । भलेपणाचा जीर्णोद्धार । |
| पुण्यमार्गाचा विस्तार । बळेचि करावा ।१९। |
| स्नानसंध्या जप ध्यान। तीर्थयात्रा भगवद्भजन। |
| नित्यनेम पवित्रपण। अंतरशुद्ध असावें ।२०। |
| दृढिनिश्चयो धरावा । संसार सुखाचा करावा । |
| विश्व जन उद्धरावा । संसर्गमात्रें । २१। |

विरक्तें असावें जगमित्र । विरक्तें असावें स्वतंत्र । विरक्तें असावें विचित्र । बहुगुणी ।३४। विरक्तें असावें विरक्त । विरक्तें असावें हरिभक्त । विरक्तें असावें नित्यमुक्त । अलिप्तपणें 1341 विरक्तें शास्त्रें घांडोळावीं । विरक्तें मतें विभांडावीं । विरक्तें मुमुक्षें लावावीं । शुद्धमार्गे 1361 विरक्तें शुद्धमार्ग सांगावा । विरक्तें संशय छेदावा । विरक्तें आपला म्हणावा । विश्वजन । ३७। विरक्तें निंदक वंदावें । विरक्तें साधक बोधावें । विरक्तें बद्ध चेववावे । मुमुक्षनिरूपणें ।३८। विरक्तें उत्तम गुण घ्यावे । विरक्तें अवगुण त्यागावे । नाना अपाय भंगावे । विवेकबळें 1381 ऐसीं हें उत्तम लक्षणें। ऐकावीं येकात्र मनें। याचा अव्हेर न करणें । विरक्तपुरुषें ।४०। इतुकें बोलिलें स्वभावें । त्यात मानेल तितुकें घ्यावें । श्रोतीं उदास न करावें । बहु बोलिलें म्हणौनी ।४१। परंतु लक्षणें न घेतां । अवलक्षणें बाष्कळता । तेणें त्यास पढतमूर्खता । येवों पाहे 1831 त्या पढतमूर्खाचें लक्षण । पुढिलिये समासीं निरूपण । बोलिलें असे सावधान । होऊन, ऐका ।४३।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'विख्तलक्षणनाम' समास नववा समाप्त.

दशक २: समास १०

पढतमूर्खलक्षण

| मागां सांगितलीं लक्षणें। मूर्खाआंगीं चातुर्य बाणे | 1 | | |
|---|---|----|---|
| आतां ऐका शाहाणे । असोनि मूर्ख | 1 | 8 | l |
| तया नाव पढतमूर्ख । श्रोतीं न मनावें दुःख | 1 | | |
| अवगुण त्यागितां सुख । प्राप्त होये | | ? | l |
| बहुश्रुत आणी वित्पन्न । प्रांजळ बोले ब्रह्मज्ञान | 1 | | |
| दुराशा आणी अभिमान । घरी तो येक पढतमूर्ख | | 3 | l |
| मुक्त क्रिया प्रतिपादी । सगुण भक्ति उछेदी | 1 | | |
| स्वधर्म आणी साधन निंदी । तो येक पढतमूर्ख | | 8 | l |
| आपलेन ज्ञातेपणें। सकळांस शब्द ठेवणें | 1 | | |
| प्राणीमात्रांचें पाहे उणें। तो येक पढतमूर्ख | ı | 4 | ŀ |
| शिष्यास अवज्ञा घडे । कां तो संकटी पडे | | | |
| जयाचेनि शब्दें मन मोडे । तो येक पढतमूर्ख | 1 | Ę | l |
| रजोगुणी तमोगुणी । कपटी कुटिळ अंत:कणीं | 1 | | |
| वैभव देखोन वाखाणी । तो येक पढतमूर्ख | 1 | 9 | 1 |
| समूळ प्रंथ पाहिल्याविण । उगाच ठेवि जो दूषण | | | |
| गुण सांगतां अवगुण । पाहे तो येक पढतमूर्ख | į | 6 | 1 |
| लक्षणें ऐकोन मानी वीट। मत्सरें करी खटपट | 1 | | |
| नीतिन्याय उद्धट । तो येक पढतमूर्ख | 1 | 9 | Į |
| जाणपणें भरीं भरे। आला क्रोध नावरे | 1 | | |
| क्रिया शब्दास अंतरे। तो येक पढतमूर्ख | ı | १० | 1 |

वक्ता अधिकारेंवीण । वगत्रृत्वाचा करी सीण । वचन जयाचें कठीण। तो येक पढतमूर्ख ।११। श्रोता बहुश्रुतपणें । वक्तयास आणी उणें। वाचाळपणाचेनि गुणें। तो येक पढतमूर्ख ।१२। दोष ठेवी पुढिलांसी । तेंचि स्वयें आपणापासी । ऐसें कळेना जयासी। तो येक पढतमूर्ख ।१३। अभ्यासाचेनि गुणें। सकळ विद्या जाणे। जनास निवऊं नेणें। तो येक पढतमूर्ख ।१४। हस्त बांधीजे ऊर्णतंतें । लोभें मृत्य भ्रमरातें । ऐसा जो प्रपंचीं गुंते। तो येक पढतमूर्ख ।१५। स्त्रियांचा संग घरी। स्त्रियांसी निरूपण करी। निंद्य वस्तु आंगिकारी । तो येक पढतमूर्ख । १६। जेणें उणीव ये आंगासी । तेंचि दृढ घरी मानसीं। देहबुद्धि जयापासीं । तो येक पढतमूर्ख । १७। सांडूनियां श्रीपती । जो करी नरस्तुती । कां दृष्टीं पडिल्यांची कीर्ती। वर्णी तो येक पढतमूर्ख ।१८। वर्णी स्त्रियांचे आवेव । नाना नाटकें हावभाव । देवा विसरे जो मानव । तो येक पढतमूर्ख । १९। भरोन वैभवाचे भरीं। जीवमात्रास तुच्छ करी। पाषांडमत थावरी। तो येक पढतमूर्ख ।२०। वित्यन्न आणी वीतरागी। ब्रह्मज्ञानी माहायोगी। भविष्य सांगों लागे जगीं । तो येक पढतमूर्ख ।२१। श्रवण होतां अभ्यांतरी । गुणदोषाची चाळणा करी । परभूषणें मत्सरी । तो येक पढतमूर्ख । २२।

नाहीं भक्तीचें साधन । नाहीं वैराग्य ना भजन । क्रियेविण ब्रह्मज्ञान । बोले तो येक पढतमूर्ख । २३। न मनी तीर्थ न मनी क्षेत्र। न मनी वेद न मनी शास्त्र। पवित्र कुळीं जो अपवित्र । तो येक पढतमूर्ख । २४। आदर देखोनि मन धरी । कीर्तीविण स्तुती करी । सर्वेचि निंदी अनादरी। तो येक पढतमूर्ख ।२५। मागें येक पुढें येक । ऐसा जयाचा दंडक । बोले येक करी येक। तो येक पढतमूर्ख ।२६। प्रपंचिवशीं सादर । परमार्थी ज्याचा अनादर । जाणपणें घे अधार । तो येक पढतमूर्ख । २७। येथार्थ सांडून वचन। जो रक्षुन बोले मन। ज्याचें जिणें पराधेन । तो येक पढतमूर्ख । २८। सोंग संपाधी वरीवरी। करूं नये तेंचि करी। मार्ग चुकोन भरे भरीं। तो येक पढतमूर्ख ।२९। रात्रंदिवस करी श्रवण । न संडी आपले अवगुण । स्वहित आपलें आपण । नेणे तो येक पढतमूर्ख ।३०। निरूपणीं भले भले। श्रोते येऊन बैसले। क्ष्रुरें लक्षुनी बोले। तो येक पढतमूर्ख ।३१। शिष्य जाला अनाधिकारी । आपली अवज्ञा करी। पुन्हा त्याची आशा धरी । तो येक पढतमूर्ख ।३२। होत असतां श्रवण । देहांस आले उणेपण । कोधें करी चिणचिण । तो येक पढतमूर्ख ।३३। भरोन वैभवाचे भरीं। सद्गुरुची उपेक्षा करी। गुरुपरंपरा चोरी । तो येक पढतमूर्ख ।३४।

ज्ञान बोलोन करी स्वार्थ । कृपणा ऐसा सांची अर्थ। अर्थासाठी लावी परमार्थ । तो येक पढतमूर्ख ।३५। वर्तल्यावीण सिकवी । ब्रह्मज्ञान लावणी लावी । पराधेन गोसावी । तो येक पढतमूर्ख । ३६। भक्तिमार्ग अवघा मोडे । आपणामध्यें उपंढर पडे । ऐसिये कर्मीं पवाडे । तो येक पढतमूर्ख ।३७। प्रपंच गेला हातीचा । लेश नाहीं परमार्थाचा । द्वेषी देवां ब्राह्मणांचा । तो येक पढतमूर्ख ।३८। त्यागावया अवगुण । बोलिलें पढतमूर्खाचें लक्षण । विचक्षणें नीउन पूर्ण। क्ष्मा केलें पाहिजे ।३९। परममुर्खामाजी मुर्ख । जो संसारीं मानी सुख । या संसारदुःखाऐसें दुःख। आणीक नाहीं ।४०। तेंचि पुढें निरूपण। जन्मदुःखाचें लक्षण। गर्भवास हा दारुण। पुढें निरोपिला ।४१।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'पढतमूर्खलक्षणनाम' समास दहावा समाप्त.

> > दशक दुसरा समाप्त

दशक तिसरा : स्वगुण परीक्षा

दशक ३: समास १

जन्मदुःखनिरूपण

।। श्रीराम ॥

| | 11 MAINT II | | | |
|------|--------------------------------------|-----------|---|---|
| जन्म | दुःखाचा अंकुर । जन्म शोकाचा साग | र । | | |
| जन्म | भयाचा डोंगर । चळेना ऐसा | - 1 | 8 | 1 |
| जन्म | कर्माची आटणी। जन्म पातकाची खाण | ती । | | |
| जन्म | काळाची जाचणी । निच नवी | | 2 | 1 |
| जन्म | कुविद्येचें फळ। जन्म लोभाचें कम | 亚 | | |
| जन्म | भ्रांतीचें पडळ । ज्ञानहीन | | 3 | 1 |
| जन्म | जिवासी बंधन । जन्म मृत्यासी कारा | ग। | • | |
| जन्म | हेंचि अकारण। गथागोवी | | 8 | 1 |
| जन्म | सुखाचा विसर । जन्म चिंतेचा आग | र । | | |
| जन्म | वासनाविस्तार । विस्तारला | | 4 | 1 |
| जन्म | जिवाची आवदसा। जन्म कल्पनेचा ठर | ं ग्रा | 1 | • |
| जन्म | लांवेचा वळसा । ममतारूप | 1 | B | |
| जन्म | मायेचें मैंदावें। जन्म कोधानें विस | તે. ને | ٩ | |
| जन्म | मोक्षास आडवें । विघ्न आहे | | 9 | |
| जन्म | जिलाने भीका । | ं ग। | • | ' |
| जन्म | हेंचि विस्मरण । ईश्वराचें | | 6 | |
| जन्म | विषयांची आवडी । जन्म दराष्ट्रोची बेट | ੀ ਜ਼ੀ | 3 | • |
| जन्म | काळाची कांकडी । भक्षिताहे | | 9 | |
| | | | 9 | |

जन्म हाचि विषमकाळ। जन्म हेंचि वोखटी वेळ। जन्म हा अति कुश्चीळ । नर्कपतन । १०। पाहातां शरीराचें मूळ । या ऐसें नाहीं अमंगळ । रजस्वलेचा जो विटाळ । त्यामध्यें जन्म यासी ।११। अत्यंत दोष ज्या विटाळा । त्या विटाळाचाचि पुतळा । तेथें निर्मळपणाचा सोहळा । केवी घडे ।१२। रजस्वलेचा जो विटाळ। त्याचा आळोन जाला गाळ। त्या गाळाचेंच केवळ । शरीर हें । १३। वरि वरि दिसे वैभवाचें । अंतरी पोतडें नर्काचें। जैसें झांकणें चर्मकुंडाचे । उघडितांच नये ।१४। कुंड धुतां शुद्ध होतें। यास प्रत्यईं धुईजेतें। तरी दुर्गंधी देहातें। शुद्धता न ये ।१५। अस्तीपंजर उभविला । सीरानाडीं गुंडाळिला । मेदमांसें सरसाविला । सांदोसांदीं भरूनी । १६। अशुद्ध शब्दें शुद्ध नाहीं । तेंहि भरलें असे देहीं । नाना व्याघी दुःखें तेंहि । अभ्यांतरीं वसती ।१७। नकिंचें कोठार भरलें। आंतबाहेरी लिडीबिडिलें। मूत्रपोतडें जमलें । दुर्गंधीचें । १८। जंत किडे आणी आंतडी। नाना दुर्गंधीची पोतडी। अमुप लवथविती कातडी । कांटाळवाणी ।१९। सर्वांगास सिर प्रमाण। तेथें बळसें वाहे घ्राण। उठे घाणी फुटतां श्रवण। ते दुर्गंधी नेघवे ।२०। डोळां निघती चिपडें। नाकीं दाटतीं मेकडें। प्रातःकाळीं घाणी पडे। मुखीं मळासारिखी ।२१।

| लाळ थुंका आणी मळ । पीत इलेब्मा प्रबळ । |
|---|
| तयास म्हणती मुखकमळ । चंद्रासारिखें ।२२। |
| मुख ऐसें कुश्चीळ दिसे । पोटीं विष्ठा भरली असे । |
| प्रत्यक्षास प्रमाण नसे । भूमंडळी । २३। |
| पोटीं घालितां दिव्यात्र । कांहीं विष्ठा कांहीं वमन । |
| भागीरथीचें घेतां जीवन । त्याची होये लघुशंका । २४। |
| एवं मळ मूत्र आणी वमन । हेंचि देहाचें जीवन । |
| येणेंचि देह वाढे जाण । यदर्थीं संशय नाहीं ।२५। |
| पोटीं नस्तां मळ मूत्र वोक । मरोन जाती सकळ लोक । |
| जाला राव अथवा रंक । पोटीं विष्ठा चुकेना ।२६। |
| निर्मळपणें काढूं जातां। तरी देह पडेल तत्त्वतां। |
| एवं देहाची वेवस्ता। ऐसी असे ।२७। |
| ऐसा हा घड असतां । येथाभूत पाहों जातां । मग ते दुर्दशा सांगतां । शंका बाधी । २८ |
| ऐसिये कारागृहीं वस्ती। नवमास बहु विपत्ती। |
| नवहि द्वारें निरोधती। वायो कैंचा तेथें ।२१। |
| वोका नरकाचे रस झिरपती । ते जठराग्नीस्तव तापती । |
| तेणें सर्विह उकडती । अस्थिमांस ।३०। |
| त्वचेविण गर्भ खोळे। तंव मातेसी होती डोहळे। |
| कटवातक्षणे सर्वांग पोळे। तया बाळकाचें । ३१। |
| बांघलें चर्माचें मोटाळें। तेथें विष्तेचें गेटाचें। |
| रसउपाय वंकनाळें । होत असे । ३२। |
| विष्ठा मूत्र वांती पीत । नाकीं तोंदीं किएती जंद । |
| तेणे निर्बुजलें चित्त । आतिशयेंसीं |

| ऐसिये कारागृहीं प्राणी। पडिला | अत्यंत दाटणीं। |
|--------------------------------------|-------------------|
| कळवळोन म्हणे चक्रपाणी । सोडवीं र | येथून आतां । ३४। |
| देवा सोडविसी येथून । तरी मी | स्वहित करीन। |
| गर्भवास हा चुकवीन । पुन्हां न | |
| ऐसी दुखवोन प्रतिज्ञा केली । तंव जन | विळ पुढें आली । |
| माता आक्रंदों लागली । प्रसूतकाव | |
| नाकीं तोंडीं बैसलें मांस । मस्तकद्व | ारें सांडी स्वास। |
| तेंहि बुजलें निशेष । जन्मकाळ | |
| मस्तकद्वार तें बुजलें। तेणें | चित्त निर्बुजलें। |
| प्राणी तळमळूं लागलें। चहूंकडे | |
| स्वास उस्वास कोंडला । तेणें प्र | ाणी जाजावला । |
| मार्ग दिसेनासा जाला। कासावीर | 1391 F |
| चित्त बहु निर्बुजलें । तेणें 3 | ग्राडभरीं भरलें। |
| लोक म्हणती आडवें आलें । खांडून | |
| मग ते खांडून काढिती । हस्तपाद | छेदून घेती। |
| हातां पडिलें तेंचि कापिती । मुख नावि | |
| ऐसे टवके तोडिले। बाळकें | प्राण सोडिले । |
| · · | |
| मृत्य पावला आपण । मातेचा | |
| दुःख भोगिलें दारुण । गर्भवासी | |
| तथापी सुकृतेंकरूनी । मार्ग | |
| तन्हीं आडकला जाउनी । कंठ स्कं | |
| तये संकोचित पंथीं । बळेंचि | |
| तेणें गुणें प्राण जाती । बाळकाचे | |

बाळकाचे जातां प्राण । अंतीं होये विस्मरण । तेणें पूर्वील स्मरण । विसरोन गेला ।४६। गर्भी म्हणे सोहं सोहं। बाहेरी पडतां म्हणे कोहं। ऐसा कष्टी जाला बहु। गर्भवासीं ।४७। दुःखा वरपडा होता जाला । थोरा कष्टीं बाहेरी आला । सवेंच कष्ट विसरला। गर्भवासाचे ।४८। सुंन्याकार जाली वृत्ती । कांहीं आठवेना चित्तीं । अज्ञानें पडिली भ्रांती । तेणें सुखिच मानिलें ।४९। देह विकार पावलें। सुखदुःखें झळंबलें। असो ऐसें गुंडाळलें। मायाजाळीं ।५०। ऐसें दुःख गर्भवासीं । होतें प्राणीमात्रांसीं । म्हणोनियां भगवंतासी । शरण जावें । ५१। जो भगवंताचा भक्त । तो जन्मापासून मुक्त । ज्ञानबळें विरक्त । सर्वकाळ ।५२। ऐशा गर्भवासीं विपत्ती । निरोपिल्या येथामती । सावध होऊन श्रोतीं । पुढें अवधान द्यावें । ५३।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'जन्मदुःखनिरूपणनाम' समास पहिला समाप्त.

दशक ३: समास २

स्वगुणपरीक्षा

| संसार हाचि दु:खमूळ । लागती दु:खाचे इंगळ। |
|--|
| मागां बोलिली तळमळ । गर्भवासाची । १ |
| गर्भवासीं दुःख जालें। तें बाळक विसरलें। |
| पुढें वाढों लागलें। दिवसेंदिवस |
| बाळपणीं त्वचा कोंवळी । दुःख होतांचि तळमळी । |
| वाचा नाहीं तये काळीं । सुखदुःख सांगावया । ३ |
| देहास कांहीं दुःख जालें। अथवा क्षधेनें पीडलें। |
| तरी ते परम आक्रंदलें । परी अंतर नेणवे । ४ |
| माता कुरवाळी वरी । परी जे पीडा जाली अंतरीं । |
| ते मायेसी न कळे अभ्यांतरीं । दुःख होये बाळकासीं । ५ |
| मागुतें मागुतें फुंजे रडे। माता बुझावी घेऊन कडे। |
| वथा नेणती बापुडें। तळमळी जीवीं । ६। |
| नाना व्याधीचे उमाळे। तेणें दुःखें आंदोळे। |
| रडे पडे कां पोळे। अग्निसंगें । ७। |
| शरीर रक्षितां नये। घडती नाना अपाये। |
| खोडी अद्यांतरीं होये । आवेवहीन बाळक |
| अथवा अपाय चुकले । पूर्व पुण्य पुढें ठाकलें। मातेस बोळखों लागलें । दिवसेंदिवस |
| - । । । । । । । । । । । । । । । । । । । |

क्षणभरी मातेस न देखे । तरी आक्रंदे रुदन करी दुःखें। ते समई मातेसारिखें। आणीक कांहींच नाहीं। १०। आस करून वास पाहे । मातेविण कदा न राहे। वियोग पळमात्र न साहे । स्मरण जालियां नंतरें ।११। जरी ब्रह्मादिक देव आले । अथवा लक्ष्मीनें अवलोकिलें । तरी नवचे बुझाविलें । आपले मातेवांचूनी । १२। कुरूप अथवा कुलक्षण । सकळांहूनि करंटेपण । तरी नाहीं तीसमान । भूमंडळीं कोणी । १३। ऐसें तें केविलवाणें। मातेविण दिसे उणें। रागें परतें केलें तिनें। तरी आक्रंदोनी मिठी घाली। १४। सुख पावे मातेजवळी। दुरी करितांचि तळमळी। अति प्रीति तयेकाळीं । मातेवरी लागली । १५। तंव ते मातेस मरण आलें। प्राणी पोरटें जालें। दुःखें झुर्णीं लागलें । आई आई म्हणोनी । १६। आई पाहातां दिसेना । दीनरूप पाहे जना । आस लागलिसे मना । आई येईल म्हणोनी । १७। माता म्हणौन मुख पाहे । तंव ते आपुली माता नव्हे । मग हिंवासलें राहे। दैन्यवाणें । १८। मातावियोगें कष्टलें। तेणें मानसीं दुःख जालें। देहहि क्षीणत्व पावलें । आतिशयेंसीं 1881 अथवा माताही वांचली । मायलेंकुरा भेटी जाली । बाळदशा ते राहिली । दिवसेंदिवस । २०। बाळपण जालें उणें । दिवसेंदिवस होये शाहाणें । मग ते मायेचें अत्यंत पेरुणें । होतें तें राहिलें 1281

| पुढें लो लागला खेळाचा । कळप मेळविला पोरांचा। |
|--|
| आल्यागेल्या डावाचा । आनंद शोक वाहे । २२। |
| मायबापें सिकविती पोटें । तयाचें परम दुःख वाटे । |
| चट लागली न सुटे। संगती लेंकुरांची ।२३। |
| लेंकुरांमध्यें खेळतां । नाठवे माता आणि पिता । |
| तंव तेथेंहि अवचिता । दुःख पावला । २४। |
| पडिले दांत फुटला डोळा। मोडले पाय जाला खुळा। |
| गेला माज अवकळा । ठाकून आली । २५। |
| निघाल्या देवी आणी गोवर । उठलें कपाळ लागला ज्वर । |
| पोटसुळीं निरंतर । वायगोळा । २६। |
| लागलीं भूतें जाली झडपणी । जळीच्या मेसको मायेराणी । |
| मुंज्या झोटिंग करणी । म्हैसोबाची । २७। |
| वेताळ खंकाळ लागला। ब्रह्मगिऱ्हो संचरला। |
| नेणों चेडा वोलांडिला। कांहीं कळेना । २८। |
| येक म्हणती बीरेदेव। येक म्हणती खंडेराव। |
| येक म्हणती सकळ वाव । हा ब्राह्मणसमंघ ।२९। |
| येक म्हणती कोणें केलें । आंगीं देवत घातलें। |
| येक म्हणती चुकलें । सटवाईचें ।३०। |
| येक म्हणती कर्मभोग । आंगीं जडले नाना रोग । |
| वैद्य पंचाक्षरी चांग । बोलाऊन आणिले ।३१। |
| येक म्हणती हा वांचेना। येक म्हणती हा मरेना। |
| भोग भोगितो यातना । पापास्तव ।३२। |
| गर्भदुःख विसरला । तो त्रिविधतापें पोळला । |
| प्राणी बहुत कष्टी जाला । संसारदुःखें ।३३। |

| इतुकेंहि चुकोन वांचला । तरी मारमारूं शहाणा केला । |
|--|
| लोकिकीं नेटका जाला । नांव राखे ऐसा ।३४। |
| पुढें मायेबापीं लोभास्तव । संध्रमें मांडिला विव्हाव । |
| दाऊनियां सकळ वैभव । नोवरी पाहिली । ३५। |
| वन्हाडीवैभव दाटलें । देखोन परमसुख वाटलें । |
| मन हें रंगोन गेलें । सासुरवाडीकडे । ३६। |
| मायबापीं भलतैसें असावें । परी सासुरवाडीस नेटकें जावें। |
| द्रव्य नसेल तरी घ्यावें । रुण कळांतरें । ३७। |
| आंतर्भाव ते सासुरवाडीं । मायेबापें राहिलीं बापुडीं । |
| होताती सर्वस्वें कुडकुडीं । तितुकेंच कार्य त्यांचें ा३८। |
| नोवरी आलियां घरा। अती हव्यास वाटे वरा। |
| म्हणे मजसारिखा दुसरा । कोणीच नाहीं ।३९। |
| मायबाप बंधु बहिणी । नोवरी न दिसतां वाटे काणी । |
| अत्यंत लोधला पापिणीं । अविद्येनें भुलविला ।४०। |
| संभोग नस्तां इतुका प्रेमा । योग्य जालिया उलंघी सीमा । |
| प्रीती वाढविती कामा । करितां प्राणी गुंतला ।४१। |
| जरी न देखे क्षण येक डोळां । तरी जीव होय उताविळा । |
| प्रीतीपात्र अंतर्कळा । घेऊन गेली । ४२। |
| कोवळे कोवळे शब्द मंजुळ । मर्यादा लज्या मुखकमळ। |
| वक्त्रलोकनें केवळ । ग्रामज्याचे मैंदावें ।४३। |
| कळवळा येतां सांवरेना । शरीर विकळ आवरेना । |
| अनेत्र वेवसाई क्रमेना । हुरहुर वाटे ।४४। |
| वेवसाय करितां बाहेरी। मन लागलेंसे घरीं। |
| क्षणाक्षणां अभ्यांतरीं । स्मरण होये कामिनीचें ।४५। |
| |

| तुम्हीं माझिया जिवांतील जीव । म्हणौनि अत्यंत लाघव | |
|---|------|
| दाऊनियां चित्त सर्व । हिरोन घेतलें | 1881 |
| मैंद सोइरीक काढिती । फांसे घालून प्राण घेती | 1 |
| तैसें आयुष्य गेलियां अंतीं । प्राणीयांस होये | |
| प्रीति कामिनीसीं लागली । जरी तयेसी कोणी रागेजलीं | 1 |
| तरी परम क्षिती वाटली। मानसीं गुप्तरूपें | 1881 |
| तये भार्येचेनि कैवारें । मायेबापासीं नीच उत्तरें | t |
| बोलोनियां तिरस्कारें । वेगळा निघे | 1881 |
| स्त्रीकारणें लाज सांडिली । स्त्रीकारणें सखीं सोडिलीं | ı |
| स्त्रीकारणें विघडिलीं । सकळहि जिवलगें | 1401 |
| स्त्रीकारणें देह विकिला । स्त्रीकारणें सेवक जाला | l |
| स्त्रीकारणें सांडवला । विवेकासी | 1481 |
| स्त्रीकारणें लोलंगता । स्त्रीकारणें अतिनग्रता | l |
| स्त्रीकारणें पराधेनता । अंगिकारिली | 1421 |
| स्त्रीकारणें लोभी जाला। स्त्रीकारणें वर्म सांडिला | 1 |
| स्त्रीकारणें अंतरला । तीर्थयात्रा स्वधर्म | 1431 |
| स्त्रीकारणें सर्वथा कांहीं । शुभाशुभ विचारिलें नाहीं | |
| तनु मनु घनु सर्वही । अनन्यभावें अर्पिलें | ।५४। |
| स्त्रीकारणें परमार्थ बुडविला । प्राणी स्वहितास नाडल | |
| ईश्वरीं कानकोंडा जाला। स्वीकारणें कामबुद्धी | ।५५। |
| स्त्रीकारणें सोडिली भक्ती । स्त्रीकारणें सोडिली विरक्ती | I |
| स्त्रीकारणें सायोज्यमुक्ती । तेहि तुख्य मानिली | ।५६। |
| येके स्थियेचेनि गुणें। ब्रह्मांड मानिलें ठेंगणें | 1 |
| जिवलगे तीं पिसुणें। ऐसें वाटलीं | ।५७। |

ऐसी अंतरप्रीति जडली। सर्वस्वाची सांडी केली। तंव ते मरोन गेली । अकस्मात भार्या । ५८। तेणें मनीं शोक वाढला । म्हणे थोर घात जाला । आतां कैंचा बुडाला । संसार माझा । ५९। जिवलगांचा सोडिला संग । अवचिता जाला घरभंग । आतां करू मायात्याग । म्हणे दुःखें ।६०। स्त्री घेऊन आडवी । ऊर बडवी पोट बडवी । लाज सांडून गौरवी । लोकांदेखतां ।६१। म्हणे माझें बुडालें घर । आतां न करी हा संसार । दुःखें आक्रंदला थोर । घोर घोषें । ६२। तेणें जीव वारयावेघला। सर्वस्वाचा उबग आला। तेणें दुःखें जाला । जोगी कां महात्मा । ६३। कां तें निघोन जाणें चुकलें । पुन्हां मागुतें लग्न केलें। तेणें अत्यंतचि मग्न जालें । मन द्वितीय संमंधीं ।६४। जाला द्वितीय संमंघ । सर्वेचि मांडिला आनंद । श्रोतीं व्हावें सावध । पुढिले समासीं । ६५।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'स्वगुणपरीक्षानाम' समास दुसरा समाप्त.

दशक ३: समास ३

स्वगुणपरीक्षा

| द्वितीय संमंध जाला । दुःख मागील विसरला । |
|---|
| सुख मानून राहिला । संसाराचें । १ । |
| जाला अत्यंत कृपण। पोटें न खाय अन्न। |
| रुक्याकारणें सांडी प्राण । येकसरा । २ । |
| कदा कल्पांतीं न वेची । सांचिलेंचि पुन्हा सांची। |
| अंतरीं असेल कैंची । सद्वासना । ३ । |
| स्वयें धर्म न करी। धर्मकर्त्यासिह वारी। |
| सर्वकाळ निंदा करी । साधुजनाची । ४ । |
| नेणे तीर्थ नेणे व्रत । नेणे अतित अभ्यागत । |
| मुंगीमुखींचें जें सीत । तेंहि वेंचून सांची । ५ । |
| स्वयें पुण्य करवेना । केलें तरी देखवेना । |
| उपहास्य करी मना । नये म्हणौनी । ६ । |
| देवां भक्तांस उछेदी। आंगबळें सकळांस खेदी। |
| निष्ठुर शब्दें अंतर भेदी । प्राणीमात्राचें । ७ । |
| नीति सांडून मागें। अनीतीनें वर्तों लागे। |
| गर्व धरून फुगे। सर्वकाळ । ८। |
| पूर्वजांस सिंतरिलें । पक्षश्राद्धिह नाहीं केलें । |
| कुळदैवत ठिकलें । कोणेपरी । ९। |
| आक्षत भरिली भाणा। दुजा ब्राह्मण मेहुणा। |
| आला होता पाहुणा । स्त्रियेस मूळ ।१०। |

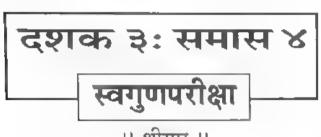
| कदा नावडे हरिकथा। देव नलगे सर्वथा। |
|--|
| स्नानसंध्या म्हणे वृथा। कासया करावी ।११। |
| अभिळाषें सांची वित्त । स्वयें करी विस्वासघात । |
| मदें मातला उन्मत्त । तारुण्यपणें ।१२। |
| तारुण्य आंगी भरलें। धारिष्ट नवचे धरिलें। |
| करूं नये तेंचि केलें। माहापाप ।१३। |
| स्त्री केली परी धाकुटी । धीर न धरवेचि पोटीं । |
| विषयलोभें सेवटीं। वोळखी सांडिली ।१४। |
| माये बहिण न विचारी । जाला पापी परद्वारी । |
| दंड पावला राजद्वारीं । तऱ्हीं पालटेना । १५। |
| परस्त्री देखोनि दृष्टीं । अभिळाष उठे पोटीं । |
| अकर्तव्यें हिंपुटी । पुन्हा होये । १६। |
| ऐसें पाप उदंड केलें। शुभाशुभ नाहीं उरलें। |
| तेणें दोषें दुःख भरलें। अकस्मात आंगीं । १७। |
| व्याघी भरली सर्वांगीं। प्राणी जाला क्षयरोगी। |
| केले दोष आपुले भोगी । सीघ्र काळें ।१८। |
| दुःखें सर्वांग फुटलें । नासिक अवधेंचि बैसलें। |
| लक्षण जाऊन जालें । कुलक्षण । १९। |
| देहास क्षीणता आली । नाना वेथा उद्भवली । |
| तारुण्यशक्ती राहिली । खंगला प्राणी ।२०। |
| सर्वांगीं लागल्या कळा। देहास आली अवकळा। |
| प्राणी कांपे चळचळां । शक्ति नाहीं । २१। |
| हस्तपादादिक झडले। सर्वांगीं किडे पडिले। |
| देखोन थुंकों लागले । लाहानथोर । २२। |

| जाली विष्टेची सारणी। भोवती उठली वर्ढाणी। | |
|--|---|
| अत्यंत खंगला प्राणी। जीव न वचे । २३। | l |
| आतां मरण देगा देवा। बहुत कष्ट जाले जीवा। | |
| जाला नाहीं नेणों ठेवा । पातकाचा । २४। | l |
| दुःखें घळघळां रडे। जों जों पाहे आंगाकडे। | |
| तों तों दैन्यवाणें बापुडें। तळमळी जीवीं । २५। | l |
| ऐसे कष्ट जाले बहुत। सकळ जालें वाताहात। | |
| दरवडा घालून वित्त । चोरटीं नेलें । २६। | |
| जालें आरत्र ना परत्र। प्रारब्ध ठाकलें विचित्र। | |
| आपला आपण मळमूत्र । सेविला दुःखें । २७। | |
| पापसामग्री सरली । दिवसेंदिवस वेथा हरली । | |
| वैद्यें औषधें दिघलीं । उपचार जाला । २८। | l |
| मरत मरत वांचला । यास पुन्हां जन्म जाला । | |
| लोक म्हणती पडिला । माणसांमधें । २२। | |
| येरें स्त्री आणिली। बरदो धरवात मांडिली। | |
| अति स्वार्थबुद्धी धरिली । पुन्हां मागुती ।३०। | |
| कांहीं वैभव मेळविलें। पुन्हा सर्विह संचिलें। | |
| परंतु गृह बुडालें । संतान नाहीं । ३१। | |
| पुत्रसंतान नस्तां दुःखी । टांज नांव पडिलें लोकिकीं । | |
| तें न फिटे म्हणौनी लेंकी । तरी हो आतां ।३२। | |
| म्हणोन नाना सायास । बहुत देवास केले नवस । | |
| तीर्थें व्रतें उपवास । धरणें पारणें मांडिलें ।३३। | J |
| विषयसुख तें राहिलें। वांजपणें दुःखी केलें। | |
| तंव तें कुळदैवत पावलें । जाली वृद्धी | |

| त्या लेकुरावरी अति प्रीति । दोघेहि क्षण येक न विशंभती | | | |
|--|----|------------|----------------|
| कांहीं जाल्या आक्रंदती । दीर्घस्वरें | 1 | 3 | 41 |
| ऐसी ते दुःखिस्ते । पूजीत होती नाना दैवते | 1 | | |
| तंव तेंहि मेलें अवचितें । पूर्वपापंकरूनी | 1 | 3 | ٤١ |
| तेणें बहुत दुःख जालें। घरीं आरंधें पडिलें | 1 | | |
| म्हणती आम्हांस कां ठेविलें। देवें वांज करूनी | 1 | 3 | 91 |
| आम्हांस द्रव्य काये करावें । तें जावें परी अपत्य व्हावें | 1 | | |
| अपत्यालागीं त्यजावें । लागेल सर्व | | 3 | ८। |
| वांजपण संदिसें गेलें। तों मरतवांज नांव पडिलें | 1 | | |
| तें न फिटे कांहीं केलें। तेणें दुःखें आक्रंदती | | 3 (| १। |
| आमुची वेली कां खुंटिली । हा हा देवा वृत्ती बुडाली | 1 | | |
| कुळस्वामीण कां क्षोभली । विझाला कुळदीप | | ሪ « |) i |
| आतां लेंकुराचें मुख देखेन । तरी आनंदें राडी चालेन | | | |
| आणी गळिह टोंचीन । कुळस्वामिणीपासीं | | 8 9 | Ŗ١ |
| आई भुता करीन तुझा। नांव ठेवीन केरपुंजा | | | |
| वेसणी घालीन माझा । मनोरथ पुरवी | | ጻ : | १। |
| बहुत देवांस नवस केले । बहुत गोसावी धुंडिले | | | |
| गटगटां गिळिले । सगळे विंचु | | g 3 | § I |
| केले संमंधाचे सायास । राहाणें घातलें बहुवस | | | |
| केळें नारिकेळें ब्राह्मणास । अंब्रदानें दिघलीं | | ጸ <i>ነ</i> | ۲ I |
| केलीं नाना कवटालें। पुत्रलोभें केलीं ढालें | 1 | | |
| तरी अदृष्ट फिरलें। पुत्र नाहीं | | 80 | ą į |
| वृक्षाखालें जाऊन नाहाती । फळतीं झाडें करपती | | | |
| ऐसे नाना दोष करिती । पुत्रलोभाकारणें | 17 | 2 8 | 1 |

सोडून सकळ वैभव । त्यांचा वारयावेघला जीव । तंव तो पावला खंडेराव । आणी कुळस्वामिणी आतां मनोरथ पुरती । स्त्रीपुरुषें आनंदती । होऊन श्रोतीं । पुढें अवधान द्यावें सावध

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'स्वगुणपरीक्षानाम' समास तिसरा समाप्त.



॥ श्रीराम् ॥

लेंकुरें उदंड जालीं । तों ते लक्ष्मी निघोन गेली । बापडीं भिकेसी लागलीं । कांहीं खाया मिळेना । १ । लेंकुरें खेळती धाकुटीं। येकें रांगती येकें पोटीं। ऐसी घरभरी जाली दाटी । कन्या आणी पुत्रांची । २ । दिवसेंदिवस खर्च वाढला । यावा होता तो खुंटोन गेला । कन्या उपवरी जाल्या त्यांला । उजवावया द्रव्य नाहीं । ३ । मायेबापें होतीं संपन्न । त्यांचें उदंड होतें धन । तेणेंकरितां प्रतिष्ठा मान । जनीं जाला होता । ४ । भरम आहे लोकाचारीं । पहिली नांदणूक नाहीं घरीं । दिवसेंदिवस अभ्यांतरीं । दरिद्र आलें । ५ । ऐसी घरवात वाढली। खातीं तोंडें मिळालीं। तेणें प्राणीयांस लागली । काळजी उद्वेगाची । ६ । कन्या उपवरी जाल्या । पुत्रांस नोवऱ्या आल्या । उजवणी केल्या । पाहिजेत कीं । ७ । आतां

| जरी मुलें तैसींच राहिलीं। तरी पुन्हां लोकलाज जाली। |
|---|
| म्हणता कासया व्यालीं । जन्मदारिद्व्यें । ८ । |
| ऐसी लोकलाज होईल । वडिलांचें नांव जाईल । |
| आता रुण कोण देईल । लग्नापुरतें । ९ । |
| मार्गे रुण ज्याचें घेतलें । त्याचें परतोन नाहीं दिल्हें । |
| ऐसे आभाळ कोंसळलें । उद्वेगाचें । १०। |
| आपण खातों अन्नासी । अन्न खातें आपणासी । |
| सर्वकाळ मानसीं । चिंतातुर ।११। |
| पती अवधीच मोडली । वस्तभाव गाहाण पडिली। |
| अहा देवा वेळ आली । आंता डिवाळ्याची । १२। |
| कांहीं केला ताडामोडा । विकिला घरींचा पाडारेडा । |
| कांहीं पैका रोकडा। कळांतरें कर्तला । १३। |
| ऐसें रुण घेतलें। लोकिकीं दंभ केलें। |
| सकळ म्हणती नांव राखिलें । विडलांचें । १४। |
| ऐसें रुण उदंड जालें । रिणाइतीं वेढन घेतलें। |
| मग प्रयाण आरंभिलें । विदेशाप्रती । १५। |
| दोनी वरुषें बुडी मारिली । नीच सेवा अंगीकारिली । |
| शरीरें आपदा भोगिली । आतिशयेंसीं । १६। |
| कांहीं मेळविलें विदेशीं । जीव लागला मनुष्यांपासीं । |
| मग पुसोनियां स्वामीसी । मुरडता जाला । १७। |
| तंव तें अत्यंत पीडावलीं । वाट पाहात बैसलीं । |
| म्हणती दिवसगती कां लागली । काये कारणें देवा ।१८। |
| आतां आम्ही काये खावें । किती उपवासीं मरावें। |
| ऐसियाचे संगतीस देवें । कां पां घातलें आम्हांसी ।१९। |
| |

| _ | । परी त्याचें दुःख नेणती । । कोणीच कामा न येती ।२०। |
|---|--|
| असो ऐसी वाट पाहतां | । दृष्टीं देखिला अवचिता। । भागलास म्हणौनी । २१। |
| स्त्री देखोन आनंदली | । म्हणे आमुची दैन्यें फिटलीं । |
| | । म्हणती आमुचा वडील आला । |
| तेणें तरी आम्हांला ऐसा आनंद च्यारी दिवस | । आंग्या टोप्या आणिल्या । २३। । सर्वेच मांडिली कुसमुस । |
| म्हणती हें गेलियां आम्हांस म्हणौनी आणिलें तें असावें | । पुन्हा आपदा लागती । २४। । येणें मागुतें विदेशास जावें । |
| आम्ही हें खाऊं न तों यावें ऐसी वासना सकळांची | । द्रव्य मेळऊन । २५। । अवधीं सोइरीं सुखाचीं। |
| स्त्री अत्यंत प्रीतीची | । तेहि सुखाच लागली । २६। |
| स्वासिह नाहीं टाकिला | । विश्रांती घ्यावया आला। । तों जाणें वोढवलें ।२७। |
| वृत्ति गुंतली तयाची | । केली विवंचना मुहूर्ताची । । जातां प्रशस्त न वाटे । २८। |
| माया मात्रा सिद्ध केली लेंकुरें दृष्टीस पाहिलीं | । कांहीं सामग्री बांधली। । मार्गस्त जाला । २९। |
| स्त्रियेस अवलोकिलें प्रारब्धसूत्र तुकलें | । वियोगें दुःख बहुत वाटलें । । रुणानबंधाचें ।३०। |
| कंठ सद्गदित जाला | । न संवरेच गहिवरला। । तडातोडी जाली ।३१। |

आतां भलतैसें करावें। परि द्रव्य मेळऊन न्यावें। रितें जातां स्वभावें । दुःख आहे ।४५। ऐसी वेवर्धना करी। दुःख वाटलें अंतरीं। चिंतेचिये माहापुरीं । बुडोन गेला । ४६। ऐसा हा देह आपुला। असतांच पराधेन केला। ईश्वरीं कानकोंडा जाला। कुटुंबकाबाडी ।४७। या येका कामासाठीं । जन्म गेला आटाटी । वय वेचल्या सेवटीं । येकलेंचि जावें । ४८। ऐसा मनीं प्रस्तावला । क्षण येक उदास जाला । सर्वेचि प्राणी झळंबला । मायाजाळें ।४९। कन्यापुत्रें आठवलीं । मनींहुनि क्षिती वाटली । म्हणे लेंकुरें अंतरलीं। माझीं मज ।५०। मागील दुःख आठवलें। जें जें होतें प्राप्त जालें। मग रुदन आरंभिलें। दीर्घ स्वरें। ५१। आरण्यरुदन करितां । कोणी नाहीं बुझाविता । मग होये विचारिता । आपुले मनीं । ५२। आतां कासया रडावें। प्राप्त होतें तें भोगावें। ऐसें बोलोनिया जीवें । घारिष्ट केलें ।५३। ऐसा दुःखें दगदला। मग विदेशाप्रती गेला। पुढें प्रसंग वर्तला । तो सावध ऐका ।५४।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'स्वगुणपरीक्षानाम' समास चौथा समाप्त.

दशक ३: समास ५

स्वगुणपरीक्षा

| पुढें गेला विदेशासी । | प्राणी लागला व्यासंगासी। | |
|-----------------------------|-------------------------------|-------------|
| | | १। |
| ऐसा दुस्तर संसार | करितां कष्टला थोर। | |
| पुढें दोनी च्यारी संवत्सर । | द्रव्य मेळिवलें | ٦ <u>ا</u> |
| सर्वेचि आला देशासी। | तों आवर्षण पडिलें देसीं। | |
| तेणे गुणें मनुष्यांसी। | बहुत कष्ट जाले | ا ş |
| येकांच्या बैसल्या अमृतकळा | येकांस चंद्री लागली डोळां । | |
| येकें कांपती चळचळां। | दैन्यवाणीं | 8 1 |
| येकें दीनरूप बैसलीं | येकें सुजलीं येकें मेलीं। | |
| ऐसीं कन्यापुत्रें देखिलीं। | | لر ا |
| तेणें बहुत दुःखी जाला | देखोनियां उभड आला। | |
| प्राणी आक्रंदों लागला । | 4 | ६ । |
| तंव तीं अवधीं सावध जालीं। | म्हणती बाबा बाबा जेऊं घालीं । | |
| अन्नालागीं मिडकलीं । | झडा घालिती | 9 1 |
| गांठोडें सोडून पाहाती। | हातां पडिलें तेंचि खाती। | |
| कांहीं तोंडीं कांहीं हातीं। | | ሪ ነ |
| तांतडी तांतडी जेऊं घाली। | | |
| कांहीं होतीं धादावलीं। | 20 2 20 0 20 | ९ 1 |
| ऐसीं बहुतेकें मेलीं | येक दोनी मलें उरलीं। | |
| तेहि दैन्यवाणी जालीं | आपले मातेवांचुनी । १ | 0 [|
| | | |

| ऐसें आवर्षण आलें | 1 | तेणें घरचि बुडालें | l | | |
|--|---|-------------------------------|-----|-----|------------|
| पुढें देसीं सुभिक्ष जालें | 1 | आतिशयेंसी | 1 5 | ११ | 1 |
| लेकुरां नाही वाढविते | ı | अन्न करावें लागे आपुलेन हातें | l | | |
| बहु त्रास घेतला चित्तें | ı | स्वयंपाकाचा | ! | १२ | 1 |
| लोकीं भरीस घातलें | | | 1 | | |
| द्रव्य होतें तें वेचलें | | | | £ 3 | 1 |
| पुन्हा विदेशासी गेला | | | l | | |
| तंव घरीं कळहो लागला | | _ | | १४ | 11 |
| स्त्री जाली न्हातीधुती | | | | | |
| भ्रताराची गेली शक्ति | | | | १५ | į l |
| सदा भांडण पुत्रांचें | | | | | |
| वनिता अति प्रीतीचें | | | | १६ | i I |
| किंत बैसला मना | Ì | येके ठाईं पडेना | | | |
| म्हणोनियां पांचा जणा | | | | १७ | |
| पांच जण वांटे करिती | | | | | |
| निवाडा नव्हेचि अंतीं | | | | १८ | , 1 |
| बापलेकां भांडण जालें | | | | | |
| तंव ते मातेनें घेतलें | | | | 8 8 | |
| ऐकोनि मिळाले लोक | 1 | उभे पाहती कौतुक | 1 | | |
| म्हणती बापास लेक | | | | २० |) |
| ज्या कारणें केले नवस | ı | | | | |
| | | | | | |
| ते पुत्र पितीयास | 1 | | | २१ | } |
| ते पुत्र पितीयास ऐसी आली पापकळी उभे तोडिती कळी | 1 | आश्चिर्य मानिलें सकळीं | 1 | | |

| पुढें बैसोन पांच जण। वांटे केले तत्समान। बापलेकांचें भांडण। तोडिलें तेहीं । २३। |
|---|
| बापास वेगळें घातलें। कोंपट बांधोन दिधलें। मन कांतेचें लागलें। स्वार्थबुद्धी । २४। |
| कांता तरुण पुरुष वृद्ध । दोघांस पडिला संमंघ । खेद सांडून आनंद । मानिला तेहीं । २५। |
| स्त्री सांपडली सुंदर । गुणवंत आणी चतुर । म्हणे माझें भाग्य थोर । वृद्धपणीं । २६। |
| ऐसा आनंद मानिला । दुःख सर्विह विसरला । तंव तो गल्बला जाला । परचक्र आलें । २७। |
| अकस्मात धाडी आली । कांता बंदी धरून नेली । वस्तभावहि गेली । प्राणीयाची । २८। |
| तेणें दुःख जालें भारी । दीर्घ स्वरें रुदन करी । मनीं आठवे सुंदरी । गुणवंत । २९। |
| तंव तिची वार्ता आली । तुमची कांता भ्रष्टली। ऐकोनियां आंग घाली । पृथ्वीवरी । ३०। |
| सव्य अपसव्य लोळे। जळें पाझरती डोळे। आठवितां चित्त पोळे। दुःखानळें ।३१। |
| द्रव्य होतें मेळिविलें। तेंहि लग्नास वेचलें। कांतेसिहि धरून नेलें। दुराचारीं। ३२। |
| मजिह वृद्धाप्य आलें। लेकीं वेगळें घातलें। अहा देवा वोढवलें। अदृष्ट माझें । ३३। |
| देवा मज कोणीच नाहीं । तुजवेगळें । ३४। |

| पूर्वी देव नाहीं पुजिला । वैभव देखोन भुलला । |
|---|
| सेखीं प्राणी प्रस्तावला । वृद्धपणीं ।३५। |
| देह अत्यंत खंगलें । सर्वांग वाळोन गेलें । |
| वातपीत उसळलें । कंठ दाटला कफें । ३६। |
| वळे जिव्हेचि बोबडी । कफें कंठ घडघडी । |
| दुर्गंधी सुटली तोंडीं । नाकीं स्लेष्मा वाहे । ३७। |
| मान कांपे चळचळां । डोळे गळतीं भळभळां । |
| वृद्धपणीं अवकळा । ठाकून आली । ३८। |
| दंतपाटी उखळली । तेणें बोचरखिंडी पडिली । |
| मुखीं लाळ गळों लागली । दुर्गंधीची ।३९। |
| डोळां पाहतां दिसेना । कानीं शब्द ऐकेना । |
| दीर्घ स्वरें बोलवेना । दमा दाटे ।४०। |
| शक्ती पायांची राहिली। बैसवेना मुरुकुंडी घाली। |
| बृहती वाजों लागली । तोंडाच ऐसी ।४१। |
| क्षुघा लागतां आवरेना । अन्न समईं मिळेना । |
| मिळालें तरी चावेना । दांत गेले ।४२। |
| पित्तें जिरेना अन्न । भक्षीतांच होये वमन । |
| तैसेंचि जाये निघोन । अपानद्वारें । ४३। |
| विष्टा मूत्र आणी बळस । भोवता वमनें केला नास । |
| दुरून जातां कोंडे स्वास । विश्वजनाचा ।४४। |
| नाना दुःखें नाना व्याधी । वृद्धपणीं चळे बुद्धी । |
| तन्हीं पुरेना आवधी। आयुष्याची ।४५। |
| पापण्या भवयाचे केश । पिकोन झडले निःशेष । |
| सर्वांगीं लोंबलें मांस । चिरकुटासारिखें ।४६। |

देह सर्व पारिखें जालें। सवंगडे नि:शेष राहिले। सकळ प्राणीमात्र बोले । मरेना कां ।४७। जें जन्मून पोसलीं । तेंचि फिरोन पडिलीं । अंतीं विषम वेळ आली । प्राणीयांसी ।४८। गेलें तारुण्य गेलें बळ । गेलें संसारीचें सळ। वाताहात जालें सकळ। शरीर आणि संपत्ती ।४९। जन्मवरी स्वार्थ केला। तितुकाहि वेर्थ गेला। कैसा विषम काळ आला। अंतकाळीं ।५०। सुखाकारणें झुरला । सेखीं दुःखें कष्टी जाला । पुढें मागुता धोका आला । येमयातनेचा ।५१। जन्म अवघा दुःखमूळ । लागती दुःखाचे इंगळ । म्हणोनियां तत्काळ । स्वहित करावें ।५२। असो ऐसें वृद्धपण । सकळांस आहे दारुण । म्हणोनियां शरण । भगवंतास जावें ।५३। पुढें वृद्धीस तत्त्वतां । गर्भी प्रस्तावा होता । तोचि आला मागुता । अंतकाळीं । ५४। म्हणौनि मागुतें जन्मांतर । प्राप्त मातेचें उदर । संसार हा अति दुस्तर । तोचि ठाकून आला ।५५। भगवद्धजनावांचुनी । चुकेना हे जन्मयोनी। तापत्रयांची जाचणी । सांगिजेल पुढें ।५६।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'स्वगुणपरीक्षानाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक ३: समास ६

आध्यात्मिकताप

॥ श्रीराम ॥

| तापत्रयाचें लक्षण । आतां सांगिजेल निरूपण । |
|--|
| श्रोतीं करावें श्रवण। येकाग्र होऊनी । १ |
| जो तापत्रैं पोळला । तो संतसंगें निवाला । |
| आर्तभूत तोषला । पदार्थ जेवी । २ । |
| क्षुधाक्रांतास मिळे अन्न । तृषाक्रांतास जीवन । |
| बंदी पडिल्याचें बंधन। तोडितां सुख । ३। |
| माहापुरें जाजावला । तो पैलतीरास नेला । |
| कां तो स्वप्नींचा चेइला । स्वप्नदुःखी । ४। |
| कोणी येकासी मरण । येतां दिलें जीवदान । |
| संकटास निवारण । तोडितां सुख । ५ । |
| रोगियास औषध । सप्रचित आणी शुद्ध । |
| तयासी होये आनंद । आरोग्य होता । ६ । |
| तैसा संसारें दुःखवला । त्रिविधतापें पोळला । |
| तोचि येक अधिकारी जाला । परमार्थासी । ७ । |
| ते त्रिविध ताप ते कैसे । आतां बोलिजेत तैसे । |
| येविषईं येक असे। वाक्याधार । ८। |
| देहेंद्रियप्राणेन सुखं दुःखं च प्राप्यते। |
| इममाध्यात्मिकं तापं जायते दु:खं देहिनाम्।। |
| सर्वभूतेन संयोगात् सुखं दुःखं च जायते। |
| द्वितीयतापसंतापः सत्यं चैवाधिभौतिकः ॥ |
| विशानपात्रपात्रः सूर्य चुनावमातिकः। |

| शुभाशुभेन कर्मणा देहान्ते यमयातना। |
|---|
| स्वर्गनरकादि भोक्तव्यमिदं चैवाधिदैविकम्।। |
| येक ताप आध्यात्मिक । दुजा तो आदिभूतिक । |
| तिसरा आदिदैविक । ताप जाणावा । १ । |
| आध्यात्मिक तो कोण । कैसी त्याची वोळखण । |
| आदिभूतिकांचें लक्षण । जाणिजे कैसें ।१०। |
| आदिदैविक तो कैसा। कवण तयाची दशा। |
| हेंहि विशद कळे ऐसा । विस्तार कीजे । ११। |
| हां जी म्हणोनि वक्ता । जाला कथा विस्तारिता । |
| आध्यात्मिक ताप आतां । सावध ऐका ।१२। |
| देह इंद्रिय आणी प्राण । यांचेनि योगें आपण । |
| सुखदुःखें सिणे जाण । या नांव आध्यात्मिक ।१३। |
| देहामधून जें आलें। इंद्रियें प्राणें दु:ख जालें। तें आध्यात्मिक बोलिलें। तापत्रईं। १४। |
| |
| देहामधून काये आलें। प्राणें कोण दुःख जालें। आतां हें विश्वाद केहें। स्वास्ति की |
| आतां हें विशद केलें। पाहिजे कीं 1१५। |
| खरुज खवडे पुळिया नारु । नखरुडें मांजऱ्या देवि गोवरु । देहामधील विकारु । या नांव आध्यात्मिक । १६। |
| |
| काखमांजरी केशतोड । वोखटें वर्ण काळफोड । |
| व्याधी मूळव्याधी माहाजड । या नांव आध्यात्मिक ।१७। |
| अंगुळवेडे गालफुगी। कंड लागे जे वाउगी। |
| हिरडी सुजे भरे बलंगी । या नांव आध्यात्मिक । १८। वाउगे फोड उठती । कां ते सुजे आंगकांती । |
| वात आणि तिडका लागती । या नांव आध्यात्मिक ।१९। |
| ा श्री नाव आध्यात्मक । ११। |

नाइटे अंदु गजकर्ण । पेहाचें पोट विस्तीर्ण । बैसलें टाळें फुटती कर्ण। या नांव आध्यात्मिक ।२०। कुष्ट आणी वोला कुष्ट । पंड्यारोग अतिश्रेष्ठ । क्षयरोगाचे कष्ट । या नांव आध्यात्मिक । २१। वाटी वटक वायेगोळा । हातीं पाईं लागती कळा । भोवंडी लागे वेळोवेळां । या नांव आध्यात्मिक ।२२। वोलांडा आणि वळ । पोटसुळाची तळमळ । आर्घिशिसी उठे कपाळ । या नांव आध्यात्मिक । २३। दुःखे माज आणि मान । पुष्ठी ग्रीवा आणि वदन। अस्तिसांदे दुःखती जाण । या नांव आध्यात्मिक । २४। कुळिक तरळ कामिणी। मुरमा सुंठरें माळिणी। विदेसीं लागलें पाणी । या नांव आध्यात्मिक । २५। जळसोस आणि हिवारें। गिरीविरी आणि अंघारे। ज्वर पाचाव आणि शारें। या नांव आध्यात्मिक ।२६। शैत्य उच्चा आणि तृष्णा । क्षुधा निद्रा आणी दिशा । विषयतृष्णेची दुर्दशा । या नांव आध्यात्मिक । २७। आळसी मूर्ख आणी अपेसी । भय उद्भवे मानसीं । विसराळु दुश्चित्त आहिर्निशी । या नांव आध्यात्मिक । २८। मूत्रकोड आणी परमें। रक्तपिती रक्तपरमें। खडाचढाचेनि श्रमे । या नांव आध्यात्मिक । २९। मुरडा हागवण उन्हाळे । दिशा कोंडतां आंदोळे । येक वेथा असोन न कळे। या नांव आध्यात्मिक ।३०। गांठी ढळली जाले जंत । पडे आंव आणी रक्त । अन्न तैसेंचि पडत । या नांव आध्यात्मिक ।३१।

| पोटफुगी आणि तडस । भरला हिर लागला घांस । |
|---|
| फोडी लागतां कासावीस । या नांव आध्यात्मिक ।३२। |
| उचकी लागली उसित गेला । पीत उसळलें उलाट जाला । |
| खरे पडसा आणि खोंकला । या नांव आध्यात्मिक ।३३। |
| उसळला दमा आणी घाप । पडजिभ ढासि आणी कफ । |
| मोवाज्वर आणी संताप। या नांव आध्यात्मिक ।३४। |
| कोणी सेंदुर घातला । तेणें प्राणी निर्बुजला । |
| घशामध्ये फोड जाला । या नांव आध्यात्मिक । ३५। |
| गळसोट्या आणी जीभ झडे । सदा मुखीं दुर्गंघी पडे । |
| दंतहीन लागती किडे । या नांव आध्यात्मिक ।३६। |
| जरंडी घोलाणा गंडमाळा । अवचिता स्वयें फुटे डोळा । |
| आपणचि कापी अंगुळा । या नांव आध्यात्मिक ।३७। |
| कळा तिडका लागती। कां तें दंत उन्मळती। |
| अधर जिव्हा रगडती। या नांव आध्यात्मिक ।३८। |
| कर्णदुःख नेत्रदुःख । नाना दुःखें घडे शोक । |
| गर्भांध आणि नपुश्यक । या नांव आध्यात्मिक ।३९। |
| फुलें वडस आणी पडळें। कीड गर्ता रातांधळें। |
| दुश्चित्त भ्रमिष्ट आणी खुळें। या नांव आध्यात्मिक ।४०। |
| मुकें बधीर राखोंडें। थोटें चळलें आणी वेडें। |
| पांगुळ कुन्हें आणी पावडें । या नांव आध्यात्मिक ।४१। |
| तारसें घुलें काणें कैरें। गारोळें जामुन टाफरें। |
| शडांगुळें गेंगाणें विदरें। या नांव आध्यात्मिक ।४२। |
| दांतिरें बोचिरें घानाळ । घ्राणहीन श्रोत्रहीन बरळ । |
| अतिकृश अतिस्थूळ । या नांव आध्यात्मिक । ४३। |

तोंतरें बोंबडें निर्बळ । रोगी कुरूप कुटीळ । मत्सरी खादाड तपीळ । या नांव आध्यात्मिक ।४४। संतापी अनुतापी मत्सरी । कामिक हेवा तिरस्कारी। पापी अवगुणी विकारी । या नांव आध्यात्मक ।४५। उठवर्णे ताठा करक। आवटळे आणी लचक। सुजी आणी चालक । या नांव आध्यात्मिक ।४६। सल आडवें गर्भपात । स्तनगुंते सनपात । संसारकोंडे आपमृत्य । या नांव आध्यात्मिक ।४७। नखविख आणी हिंगुर्डे । बाष्ट आणि वावडें । उगीच दांतिखळ पडे । या नांव आध्यात्मिक ।४८। झडती पातीं सुजती भवया । नेत्रीं होती राझणवडीया । चाळसी लागे प्राणियां । या नांव आध्यात्मिक ।४९। वांग तिळ सुरमें लांसे । चामखिळ गलंडें मसें । चुकुर होईजे मानसें। या नांव आध्यात्मिक ।५०। नाना फुग आणी आवाळें । आंगी दुर्गंधी प्रबळे । चाईचाटी लाळ गळे। या नांव आध्यात्मिक ।५१। नाना चिंतेची काजळी। नाना दुःखें चित्त पोळी। व्याधीवांचून तळमळी । या नांव आध्यात्मिक ।५२। वृद्धपणीच्या आपदा । नाना रोग होती सदा । देह क्षीण सर्वदा । या नांव आध्यात्मिक । ५३। नाना व्याघी नाना दुःखें । नाना भोग नाना खांडकें । प्राणी तळमळी शोकें। या नांव आध्यात्मिक ।५४। ऐसा आध्यात्मिक ताप । पूर्वपापाचा संताप । ા ધ્ધા सांगतां सरेना अमूप । दुःखसागर

बहुत काय बोलावें । श्रोतीं संकेतें जाणावें । पुढें बोलिजे स्वभावें । आदिभूतिक । ५६।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आध्यात्मिकतापनाम' समास सहावा समाप्त.

> > दशक ३: समास ७ आधिभौतिकताप

॥ श्रीराम ॥

मागां जालें निरूपण । आध्यात्मिकाचें लक्षण । आतां आदिभूतिक तो कोण । सांगिजेल 8 1 सर्वभूतेन संयोगात् सुखं दुःखं च जायते। द्वितीयतापसंतापः सत्यं चैवाधिभौतिकः ॥ सर्व भूतांचेनि संयोगें। सुख दुःख उपजों लागे। ताप होतां मन भंगे । या नांव आदिभूतिक । २ । तरी या आदिभूतिकाचें लक्षण । प्रांजळ करूं निरूपण । जेणें अनुभवास ये पूर्ण । वोळखी तापत्रयाची । ३ । ठेंचा लागती मोडती कांटे । विझती शस्त्रांचे घायटे । सल सिलका आणी सरांटे । या नांव आदिभूतिक । ४ । अंग्या आणि काचकुहिरी । आवचटा लागे शरीरीं। गांधील येऊन दंश करी । या नांव आदिभूतिक । ५ । मासी गोमासी मोहळमासी । मुंगी तेलमुंगी डांस दसी। सोट जळु लागे यासी । आदिभूतिक बोलिजे । ६ ।

पिसा पिसोळे चांचण । कुसळें मुंगळे ढेंकुण । विसीफ भोवर गोंचिड जाण । या नांव आदिभूतिक । ७ । गोंबी विंचु आणी विखार । व्याघ्र लांडिंगे आणी शूकर । गौसायळ सामर । या नांव आदिभूतिक । ८ । रानगाई रानम्हैसे । रानशकट्ट आणी रींसें। रानहाती लाविपसें । या नांव आदिभूतिक । ९ । सुसरीनें वोढून नेलें। कां तें आवचितें बुडालें। अथवा खळाळीं पडिलें। या नाव आदिभूतिक ।१०। नाना विखारें आजगर। नाना मगरें जळचर। नाना वनचरें अपार । या नांव आदिभूतिक ।११। अश्व वृषभ आणी खर । स्वान शूकर जंबुक मार्जर । ऐसीं बहुविध क्रूर । या नांव आदिभूतिक । १२। ऐसीं कर्कशें भयानकें । बहुविध दुःखदायकें । दुःखें दारुणें अनेकें । या नांव आदिभूतिक । १३। भिंती माळवदें पडती । कडे भुयेरीं कोंसळती । वृक्ष आंगावरी मोडती । या नांव आदिभूतिक । १४। कोणी येकाचा श्राप जडे । कोणी येकें केलें चेडें। आधांतरी होती वेडे । या नांव आदिभूतिक ।१५। कोणी येकें चाळविलें। कोणी येंके भ्रष्टविलें। कोणी येकें धरून नेलें । या नांव आदिभूतिक । १६। कोणी येकें दिलें वीष । कोणी येंके लाविले दोष । कोणी येकें घातले पाश । या नांव आदिभूतिक ।१७। अवचिता सेर लागला। नेणो बिबवा चिडला। प्राणी धुरें जाजावला । या नांव आदिभूतिक । १८। इंगळावरी पाय पडे। शिळेखालें हात सांपडे। धावतां आडखुळे पडे। या नांव आदिभूतिक ।१९।

वापी कूप सरोवर। गर्ता कडा नदीतीर। आवचितें पडे शरीर। या नांव आदिभूतिक ।२०। दुर्गाखाले कोंसळती । झाडावरून पडती । तेणें दुःखें आक्रंदती । या नांव आदिभूतिक । २१। सीतें वोठ तरकती। हात पाव टांका फुटती। चिखल्या जिव्हाळ्या लागती । या नांव आदिभूतिक ।२२। अशनपानाचिये वेळे। उष्ण रसें जिव्हा पोळे। दांत कस्करे आणि हरळे। या नांव आदिभूतिक पराधेन बाळपणीं। कुशब्दमारजाचणी अन्तवस्त्रेंवीण आळणी । या नांव आदिभूतिक । २४। सासुरवास गालोरे। ठुणके लासणें चिमोरे। आलें रुदन न धरे। या नांव आदिभूतिक । २५। चुकतां कान पिळिती। कां तो डोळां हिंग घालिती। सर्वकाळ धारकों धरिती। या नांव आदिभूतिक । २६। नाना प्रकारीचे मार। दुर्जन मारिती अपार। दुरी अंतरे माहेर। या नांव आदिभूतिक । २७। कर्ण नासिक विधिलें। बळेंचि धरून गोंधिले। खोडी जालिया पोळिवलें। या नांव आदिभूतिक । २८। परचक्रीं धरून नेलें। नीच यातीस दिधलें। दुर्दशा होऊन मेलें । या नांव आदिभूतिक । २९। नाना रोग उद्भवले। जे आध्यात्मिकीं बोलिले। वैद्य पंचाक्षरी आणिले। या नांव आदिभूतिक ।३०। नाना वेथेचें निर्शन। व्हावया औषध दारुण। बळात्कारें देती जाण। या नांव आदिभूतिक ।३१। नाना वल्लीचे रस। काडे गर्गोंड कर्कश। घेतां होये कासावीस । या नांव आदिभूतिक । ३२।

ढाळ आणी उखाळ देती । पथ्य कठीण सांगती । अनुपान चुकतां विपत्ती । या नांव आदिभूतिक ।३३। फाड रक्त फांसणी । गुल्लडागांची जाचणी। तेणें दुःखें दुखवे प्राणी । या नांव आदिभूतिक । ३४। रुचिक बिबवे घालिती । नाना दुःखें दडपे देती। सिरा तोडिती जळवा लाविती । या नांव आदिभूतिक ।३५। बहु रोग बहु औषधें । सांगतां अपारें अगाधें। प्राणी दुखवे तेणें खेदें । या नांव आदिभूतिक । ३६। बोलाविला पंचाक्षरी । धूरमार पीडा करी । नाना यातना चतुरीं । आदिभूतिक जाणिजे ।३७। दरवडे घालूनियां जना । तश्कर करिती यातना । तेणें दुःख होये मना । या नांव आदिभूतिक ।३८। अग्नीचेनि ज्वाळें पोळे । तेणे दुःखें प्राणी हरंबळे । हानी जालियां विवळे। या नांव आदिभूतिक ।३९। नाना मंदिरें सुंदरें। नाना रत्नांचीं भांडारें। दिव्यांबरें मनोहरें। दग्ध होती ।४०। नाना धान्यें नाना पदार्थ । नाना पशु नाना स्वार्थ । नाना पात्रें नाना अर्थ । मनुष्यें भस्म होती । ४१। आग्न लागला सेती । धान्यें बणव्या आणि खडकुती । युक्षदंड जळोन जाती । अकस्मात । ४२। ऐसा आग्न लागला। अथवा कोणीं लाविला। हानी जाली कां पोळला। या नांव आदिभूतिक ।४३। ऐसे सांगतां बहुत । होती वन्हीचे आघात । तेणें दुःखें दुःखवें चित्त । या नांव आदिभूतिक ।४४। हारपे विसरे आणि सांडे। नासे गाहाळे फुटे पडे। असाध्य होये कोणीकडे । या नांव आदिभूतिक ।४५।

प्राणी स्थानभ्रष्ट जालें । नाना पशूतें चुकलें । कन्यापुत्र गाहाळले । या नांव आदिभूतिक ।४६। तश्कर अथवा दावेदार । आवचिता करिती संव्हार । लुटिती घरें नेती खिल्लार । या नांव आदिभूतिक ।४७। नाना धान्यें केळी कापिती । पानमळां मीठ घालिती । ऐसे नाना आघात करिती । या नांव आदिभूतिक ।४८। मैंद उचले खाणोरी । सुवर्णपंथी भुररेकरी । ठकु सिंतरु वरपेकरी । वरपा घालिती । गठीछोडे द्रव्य सोडिती । नाना आळंकार काढिती । नाना वस्तू मूषक नेती । या नांव आदिभूतिक ।५०। वीज पडे हिंव पडे । प्राणी प्रजंनीं सांपडे । कां तो माहापुरीं बुडे । या नांव आदिभूतिक । ५१। भोंवरे वळणें आणी धार । वोसाणें लाटा अपार । वृश्चिक गोंबी आजगर । वाहोन जाती 1421 तयांमधें प्राणी सांपडला । खडकीं बेटीं आडकला । बुडत बुडत वांचला । या नांव आदिभूतिक । ५३। मनासारिखा नसे संसार । कुरूप कर्कश स्त्री क्रूर । विधवा कन्या मूर्ख पुत्र । या नांव आदिभूतिक । ५४। भूत पिशाच्य लागलें । आंगावरून वारें गेलें। अबद्ध मंत्रें प्राणी चळलें । या नांव आदिभूतिक । ५५। ब्राह्मणसमंध शरीरीं । बहुसाल पीडा करी। शनेश्वराचा घोका घरी । या नांव आदिभूतिक । ५६। नाना ग्रहे काळवार । काळतिथी घातचंद्र । काळवेळ घातनक्षत्र । या नांव आदिभूतिक । ५७। सिंक पिंगळा आणी पाली । वोखटें होला काक कलाली । चिंता काजळी लागली । या नांव आदिभूतिक । ५८।

| दिवटा सरवदा भाकून गेला । | अंतरीं धोका लागला। |
|----------------------------|---|
| दुःस्वप्नें जाजावला । | या नांव आदिभूतिक । ५९। |
| भालु भुंके स्वान रडे। | पाली आंगावरी पड़े। |
| नाना चिन्हें चिंता पवाडे । | या नांव आदिभूतिक ।६०। |
| बाहेरी निघतां अपशक्न । | नाना प्रकारें विच्छित्र । |
| तेणें गुणें भंगे मन। | या नांव आदिभूतिक ।६१। |
| प्राणीं बंदीं सांपडला । | यातने वरपडा जाला। |
| नाना दुःखें दुःखवला । | या नांव आदिभूतिक । ६ २। |
| प्राणी राजदंड पावत। | जेरबंद चाबुक वेत। |
| दरेमार तळवेमार होत। | या नांव आदिभूतिक । ६३। |
| कोरडे पारंब्या फोक। | बहुप्रकारें अनेक। |
| बहु ताडिती आदिभूतिक । | या नांव बोलिजे । ६४। |
| मोघरीमार बुधलेमार। | चौखुरून डंगारणेमार। |
| | या नांव आदिभूतिक । ६५। |
| लाता चपराखा सेणमार । | कानखंडे दगडमार। |
| नाना प्रकारींचे मार । | • |
| टांगणें टिपऱ्या पिछोडे । | |
| | या नांव आदिभूतिक । ६७। |
| नाकवणी चुनवणी । | |
| | या नांव आदिभूतिक । ६८। |
| जळामध्यें बुचकुळिती । | |
| | या नांव आदिभूतिक । ६९। |
| कर्णछेद ग्राणछेद । | |
| | या नांव आदिभूतिक ।७०। |
| तीरमार सुळीं देती। | नत्र वृषण काढिता। या नांव आदिभूतिक । ७१। |
| नजानजा सुपा भारता । | ना नाप जादि मूर्तिक । ७ १ । |

पारड्यामध्यें घालणें। कां कडेलोट करणें। कां भांड्यामुखें उडवणें । या नांव आदिभूतिक ।७२। कानीं खुंट्या आदळिती । अपानीं मेखा मारिती । खाल काढून टाकिती । या नांव आदिभूतिक ।७३। भोत आणी बोटबोटी । अथवा गळ घालणें कंठीं । सांडस लावून आटाटी । या नांव आदिभूतिक ।७४। सिसें पाजणें वीष देणें । अथवा सिरछेद करणें। कां पायातळीं घालणें । या नांव आदिभूतिक । ७५। सरडे मांजरें भरिती । अथवा फांशी नेऊन देती । नानापरी पीडा करिती । या नांव आदिभूतिक । ७६। स्वानप्रळये व्याघ्रप्रळये। भूतप्रळये सुसरीप्रळये। शस्त्रप्रळये । या नांव आदिभूतिक ।७७। सीरा वोढून घेती । टेंभें लाऊन भाजिती । ऐशा नाना विपत्ती । या नांव आदिभूतिक ।७८। मनुष्यहानी वित्तहानी। वैभवहानी महत्त्वहानी। पशुहानी पदार्थहानी । या नांव आदिभूतिक । ७९। बाळपणीं मरे माता । तारुण्यपणीं मरे कांता । वृद्धपणीं मृत्य सुता । या नांव आदिभूतिक ।८०। दुःख दारिद्र आणी रुण। विदेशपळणी नागवण। आपदा अनुपती कदान्न । या नांव आदिभूतिक ।८१। आकांत वाखाप्रळये । युध्य होतां पराजये । जिवलगांचा होये क्षये । या नांव आदिभूतिक ।८२। कठीण काळ आणी दुष्काळ । साशंक आणि वोखटी वेळ । उद्देग चिंतेचे हळाळ । या नांव आदिभूतिक ।८३। घाणा चरखीं सिरकला। चाकाखालें सांपडला। नाना वन्हींत पडिला। या नांव आदिभूतिक ।८४।

नाना शक्तें भेदिला । नाना स्वापदीं भक्षिला । नाना बंदीं पडिला । या नांव आदिभूतिक ।८५। नाना कुवासें निर्बुजे । नाना अपमानें लाजे । नाना शोकें प्राणी झिजे । या नांव आदिभूतिक ।८६। ऐसें सांगतां अपार । आहेत दुःखाचे डोंगर । श्रोतीं जाणावा विचार । आदिभूतिकाचा ।८७।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आधिभौतिकतापनाम' समास सातवा समाप्त.

> > दशक ३ : समास ८

आदिदैविकताप

।। श्रीराम ।।

मागां बोलिला आध्यात्मिक । त्याउपरी आदिभूतिक । आतां बोलिजेल आदिदैविक । तो सावध ऐका । १ ।

शुभाशुभेन कर्मणा देहांते यमयातना।

स्वर्गनरकादि भोक्तव्यमिदं चैवाधिदैविकम्।।

शुभाशुभ कर्मानें जना । देहांतीं येमयातना ।

स्वर्ग नर्क भोग नाना । या नांव आदिदैविक । २ ।

नाना दोष नाना पातकें। मदांधपणें अविवेकें।

केलीं परी तें दुःखदायकें । येमयातना भोगविती । ३ ।

आंगबळें द्रव्यबळें । मनुष्यबळें राजबळें ।

नाना सामर्थ्याचेनि बळें। अकृत्य करिती । ४।

| नीती सांडूनियां तत्वतां। करूं नये तेंचि करितां। |
|--|
| येमयातना भोगितां । जीव जाये । ५ । |
| डोळे झांकून स्वार्थबुद्धी। नाना अभिळाश कुबुद्धी। |
| वृत्ति भूमिसिमा सांधी। द्रव्य दारा पदार्थ । ६। |
| मातलेपणें उन्मत्त । जीवघात कुटुंबघात । |
| अप्रमाण क्रिया करीत । म्हणौन येमयातना । ७ । |
| मर्यादा सांडूनि चालती । ग्रामा दंडी ग्रामाधिपती । |
| देशा दंडी देशाधिपती । नीतिन्याय सांडितां । ८ । |
| देशाधिपतीस दंडिता रावो । रायास दंडिता देवो । |
| राजा न करितां नीतिन्यावो । म्हणौन येमयातना । ९। |
| अनीतीनें स्वार्थ पाहे। राजा पापी होऊन राहे। |
| राज्याअंतीं नर्क आहे। म्हणौनियां ।१०। |
| राजा सांडितां राजनीति । तयास येम गांजिती । |
| येम नीति सांडितां धावती । देवगण ।११। |
| ऐसी मर्यादा लाविली देवें । म्हणौनि नीतीनें वर्तावें। नीति न्याय सांडितां भोगावें । येमयातनेसी १२२। |
| नेते नेत्र नेत्र नेत्र निवास मागाव । यमयातनसा ११२। |
| देवें प्रेरिले येम । म्हणौनि आदिदैविक नाम । वृतीय ताप दुर्गम । येमयातनेचा । १३। |
| |
| येमदंड येमयातना । शास्त्रीं बोलिले प्रकार नाना । तो भोग कदापि चुकेना । या नांव आदिदैविक । १४। |
| येमग्रातनेने ने निर्माणकोने |
| येमयातनेचे खेद । शास्त्री बोलिले विशद । शेरीरीं घालून अप्रमाद । नाना प्रकारें । १५। |
| पापपुण्याचीं शरीरें। स्वर्गी असती कळीवरें। |
| त्यांत घालून नाना प्रकारें। पापपुण्य भोगविती ।१६। |
| of the state of th |

| नाना पुण्यें नाना विळास । नाना दोषें यातना कर्कश । |
|--|
| शास्त्रीं बोलिलें अविश्वास । मानूंच नये ।१७। |
| वेदाज्ञेनें न चालती । हरिभक्ती न करिती। |
| त्यास येमयातना करिती । या नांव आदिदैविक ।१८। |
| अक्षोभ नर्ली उनंद की । जानाव आदिदावक । १८। |
| अक्षोभ नर्की उदंड जीव । जुनाट किडें करिती रवरव । |
| बांधोन टाकिती हातपाव । या नांव आदिदैविक ।१९। |
| उदंड पैस लाहान मुख । कुंभाकार कुंड येक । |
| दुर्गंधी उकाडा कुंभपाक। या नांव आदिदैविक ।२०। |
| तप्त भूमिका ताविती। जळत स्तंभ पोटाळविती। |
| नाना सांडस लाविती। या नाव आदिदैविक ।२१। |
| येमदंडाचे उदंड मार । यातनेची सामग्री अपार । |
| भाग भौगिती पापी नर । या नांव आदिदैविक । २२। |
| पृथ्वीमध्यें मार नाना । त्याहून कठीण येमयातना । |
| मारितां उसंतचि असेना । या नांव आदिदैविक । २३। |
| चौघे चौंकडे वोढिती । येक तें झोंकून पाडिती । |
| ताणिती मारिती वोढूनि नेती । या नांव आदिदैविक । २४। |
| उठवेना बैसवेना । रडवेना पडवेना । |
| यातनेवरी यातना । या नांव आदिदैविक । २५। |
| आक्रंदे रडे आणी फुंजे । धकाधकीनें निर्बुजे । |
| झुर्झुरों पंजर होऊन झिजे। या नांव आदिदैविक । २६। |
| कर्कश वचनें कर्कश मार । यातनेचे नाना प्रकार । |
| त्रास पावती दोषी नर । या नांव आदिदैविक । २७। |
| मागां बोलिला राजदंड । त्याहून येमदंड उदंड । |
| तेथील यातना प्रचंड । भीमरूप दारुण । २८। |

आध्यात्मिक आदिभूतिक। त्याहूनि विशेष आदिदैविक। अल्पसंकेतें कांहींयेक। कळावया बोलिलें । २९।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आधिदैविकतापनाम' समास आठवा समाप्त.

दशक ३: समास ९ मृत्युनिरूपण

संसार म्हणजे सवेंच स्वार । नाहीं मरणास उधार । मापीं लागलें शरीर । घडीनें घडी नित्य काळाची संगती । न कळे होणाराची गती । कर्मासारिखे प्राणी पडती । नाना देसीं विदेसीं । २ । सरतां संचिताचें शेष । नाहीं क्षणाचा अवकाश । भरतां न भरतां निमिष्य । जाणें लागे । ३ । अवचितें काळाचे म्हणियारे । मारित सुटती येकसरें। नेऊन घालिती पुढारे । मृत्युपंथें होतां मृत्याची आटाटी । कोणी घालूं न सकती पाठीं । सर्वत्रांस कुटाकुटी । मार्गेपुढें होतसे । ५ । मृत्यकाळ काठी निकी। बैसे बळियाचे मस्तकीं। माहाराजे बळिये लोकीं । राहों न सकती 181 मृत्य न म्हणे किं हा क्रूर । मृत्य न म्हणे हा जुंझार । मृत्य न म्हणे संप्रामशूर । समरंगणीं मृत्य न म्हणे किं हा कोपी । मृत्य न म्हणे हा प्रतापी । मृत्य न म्हणे उत्ररूपी । माहाखळ

| मृत्य न म्हणे बळाढ्य | ì | मृत्य न म्हणे धनाढ्य | ı | | |
|---------------------------|---|----------------------------|---|----|------------|
| मृत्य न म्हणे आढ्य | ı | सर्वगुणें | | 9 | 1 |
| मृत्य न म्हणे हा विख्यात | ı | मृत्य न म्हणे हा श्रीमंत | 1 | | |
| मृत्य न म्हणे हा अद्भुत | 1 | पराक्रमी | | १ | 1 |
| मृत्य न म्हणे हा भूपती | | मृत्य न म्हणे हा चक्रवर्ती | 1 | | |
| मृत्य न म्हणे हा करामती | l | कैवाड जाणे | | ११ | ? I |
| मृत्य न म्हणे हयपती | ı | मृत्य न म्हणे गजपती | l | | |
| मृत्य न म्हणे नरपती | | | | १ः | 15 |
| मृत्य न म्हणे वरिष्ठ जनीं | | | I | | |
| मृत्य न म्हणे वेतनी | | | | १३ | 1 { |
| मृत्य न म्हणे देसाई | | | ı | | |
| मृत्य न म्हणे ठाई ठाई | | | | १४ | S I |
| मृत्य न म्हणे मुद्राधारी | | | 1 | | |
| मृत्य न म्हणे परनारी | | | | १७ | ţ l |
| मृत्य न म्हणे कार्याकारण | | | l | | |
| मृत्य न म्हणे हा ब्राह्मण | | | | १६ | 1 |
| मृत्य न म्हणे वित्पन्न | | | l | | |
| मृत्य न म्हणे विद्वज्जन | | | | १७ | 9 |
| मृत्य न म्हणे हा धूर्त | | | l | | |
| मृत्य न म्हणे हा पंडित | | | | १८ | ; [|
| मृत्य न म्हणे पुराणिक | | | | | |
| मृत्य न म्हणे हा याज्ञिक | | | | १९ | } |
| मृत्य न म्हणे अग्निहोत्री | | | | | |
| मृत्य न म्हणे मंत्रयंत्री | i | पूर्णागमी | | 50 | 1 |

| मृत्य न म्हणे शास्त्रज्ञ । मृत्य न म्हणे वेदज्ञ । मृत्य न म्हणे सर्वज्ञ । सर्व जाणे । २१। |
|--|
| मृत्य न न्हण सवज्ञा सव जाण ।२१। |
| मृत्य न म्हणे ब्रह्महत्या। मृत्य न म्हणे गोहत्या। |
| मृत्य न म्हणे नाना हत्या । स्त्रीबाळकादिक ।२२। |
| मृत्य न म्हणे रागज्ञानी । मृत्य न म्हणे ताळज्ञानी । |
| मृत्य न म्हणे तत्वज्ञानी । तत्ववेत्ता । २३। |
| मृत्य न म्हणे योगाभ्यासी । मृत्य न म्हणे संन्यासी । |
| गरा न म्हारो कालागी । जंनं — |
| मृत्य ग न्हर्ग काळासा । वचू जाण । २४। |
| मृत्य न म्हणे हा सावध । मृत्य न म्हणे हा सिद्ध। |
| मृत्य न म्हणे वैद्य प्रसिद्ध । पंचाक्षरी ।२५। |
| मृत्य न म्हणे हा गोसावी । मृत्य न म्हणे हा तपस्वी । |
| मृत्य न म्हणे हा मनस्वी । उदासीन । २६। |
| 1581 |
| मृत्य न म्हणे ऋषेश्वर । मृत्य न म्हणे कवेश्वर । |
| मृत्य न म्हणे दिगंबर । समाधिस्थ । २७। |
| मृत्य न म्हणे हठयोगी । मृत्य न म्हणे राजयोगी । |
| मृत्य न म्हणे वीतरागी । निरंतर । २८। |
| |
| मृत्य न म्हणे ब्रह्मच्यारी । मृत्य न म्हणे जटाधारी। |
| मृत्य न म्हणे निराहारी । योगेश्वर । २९। |
| मृत्य न म्हणे हा संत । मृत्य न म्हणे हा महंत । |
| क्षा है। सत । मृत्य न म्हण हा महत । |
| राप न म्हण हा गुप्त। होत असे 1301 |
| मृत्य न म्हारी प्रवाशीन : |
| मृत्य न म्हणे स्वाधेन। मृत्य न म्हणे पराधेन। |
| जावास प्राप्ता । मत्यनि करी |
| येक गाउँ |
| येक मृत्यमार्गी लागले। येकीं आर्ध पंथ क्रमिले। |
| येक ते सेवटास गेले। वृद्धपणीं ।३२। |
| |

गेले बहुत संसारी । गेले बहुत वेषधारी ।

गेले बहुत नानापरी । नाना छंद करूनी । ५७।

गेले ब्राह्मणसमुदाये । गेले बहुत आच्यार्ये ।

गेले बहुत सांगों काये । किती म्हणौनि । ५८।

असो ऐसे सकळिह गेले । परंतु येकिचि राहिले ।

जे स्वरूपाकार जाले । आत्मज्ञानी । ५९।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'मृत्युनिरूपणनाम' समास नववा समाप्त.

दशक ३ : समास १०

वैराग्यनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

संसार म्हणिजे माहापूर । माजीं जळचरें अपार ।
डंखूं धावती विखार । काळसर्प । १ ।
आशा ममता देहीं बेडी । सुसरी करिताती तडातोडी ।
नेऊन दुःखाचे सांकडी । माजीं घालिती । २ ।
अहंकारनक्रें उडविलें । नेऊनि पाताळीं बुडविलें ।
तेथुनियां सोडविलें । न वचे प्राणी । ३ ।
काममगरमिठी सुटेना । तिरस्कार लागला तुटेना ।
मद मत्सर वोहटेना । भूलि पडिली । ४ ।
वासनाधामिणी पडिली गळां । घालून वेंटाळें वमी गरळा ।
जिव्हा लाळी वेळोवेळां । भयानक । ५ ।

| माथां प्रपंचाचें वोझें। घेऊन म्हणे माझें माझें। |
|--|
| बुडतांहि न सोडी, फुंजे । कुळाभिमानें । ६ । |
| पडिलें भ्रांतीचें अंघारें । नागविलें अभिमानचोरें । |
| आलें अहंतेचें काविरें। भूतबाधा । ७। |
| बहुतेक आवर्ती पडिले । प्राणी वाहातचि गेले । |
| जेंहिं भगवंतासी बोभाइलें । भावार्थबळें । ८ । |
| देव आपण घालूनि उडी । तयांसी नेलें पैलथडी । |
| येर तें अभाविकें बापुडीं । वाहातिच गेलीं । ९ । |
| भगवंत भावाचा भुकेला। भावार्थ देखोन भुलला। |
| संकटीं पावे भाविकाला। रक्षितसे ।१०। |
| जयास भगवंत आवडे। तयाचें देवासीं सांकडें। |
| संसारदु:ख सकळ उडे। निज दासाचें ।११। |
| जे अंकित ईश्वराचे । तयांस सोहळे निजसुखाचे । |
| धन्य तेचि दैवाचे । भाविक जन । १२। |
| जैसा भाव जयापासीं। तैसा देव तयासी। |
| जाणे भाव अंतरसाक्षी । प्राणीमात्रांचा । १३। |
| जरी भाव असिला माईक । तरी देव होये माहा ठक । |
| नवल तयाचें कौतुक। जैशास तैसा । १४। |
| |
| जैसें जयाचें भजन । तैसेंचि दे समाधान । |
| जैसें जयाचें भजन । तैसेंचि दे समाधान । भाव होतां किंचित न्यून । आपणिह दुरावे ।१५। |
| जैसें जयाचें भजन । तैसेंचि दे समाधान । भाव होतां किंचित न्यून । आपणिह दुरावे । १५। दर्पणीं प्रतिबिंब दिसे । जैस्यास तैसें भासे । |
| जैसें जयाचें भजन । तैसेंचि दे समाधान । भाव होतां किंचित न्यून । आपणिह दुरावे ।१५। दर्पणीं प्रतिबिंब दिसे । जैस्यास तैसें भासे । तयाचें सूत्र असे । आपणाच पासीं ।१६। |
| जैसें जयाचें भजन । तैसेंचि दे समाधान । भाव होतां किंचित न्यून । आपणिह दुरावे । १५। दर्पणीं प्रतिबिंब दिसे । जैस्यास तैसें भासे । |

| 97 2 1) |
|--|
| भृकुटीस घालून मिठी। पाहाता क्रोधें तेंहि उठी। |
| आपण हास्य करितां पोटीं । तेंहि आनंदे । १८। |
| जैसा भाव प्रतिबिंबला । तयाचाचि देव जाला । |
| जो जैसें भजे त्याला । तैसाचि वोळे ।१९। |
| |
| भावें परमार्थाचिया वाटा । वाहाती भक्तीचिया पेठा । |
| भरला मोक्षाचा चोहाटा । सज्जनसंगें ।२०। |
| भावें भजनीं जे लागले। ते ईश्वरीं पावन जाले। |
| भावार्थबळें उद्धरिले । पूर्वज तेहीं । २१। |
| |
| आपण स्वयें तरले । जनासिंह उपेगा आले । |
| कीर्तिश्रवणें जाले । अभक्त भावार्थी । २२। |
| धन्य तयांची जननी। जे लागले हरिभजनीं। |
| तेहिंच येक जन्म जनीं । सार्थक केला । २३। |
| तयांची वर्णूं काय थोरी । जयांचा भगवंत कैवारी। |
| कासे लाऊन उतरी। पार दुःखाचा । २४। |
| बहुतां जन्मांचे सेवटीं। जेणें चुके अटाटी। |
| तो हा नरदेह भेटी। करी भगवंतीं ।२५। |
| म्हणौन थन्य ते भाविक जन । जेंहिं जोडिलें हरिनिधान । |
| अनंत जन्मांतरीचें पुण्य । फळासि आलें । २६। |
| आयुष्य हेचि रत्नपेटी । माजीं भजनरत्नें गोमटीं । |
| ईश्वरीं अपूनिया, लुटी । आनंदाची करावी । २७। |
| |
| हरिभक्त वैभवें कनिष्ठ । परी तो ब्रह्मादिकां वरिष्ठ । |
| सदा सर्वदा संतुष्ट । नैराशबोधें । २८। |
| घरून ईश्वराची कास । केली संसाराची नैराश । |
| तयां भाविकां जगदीश । सबाह्य सांभाळी ।२९। |

| जया ससाराचे दुःख। विवेकें वाटे परम सुख | l . |
|--|------|
| संसारसुखाचेनि पढतमूर्ख । लोघोन पडती | 1301 |
| जयांचा ईश्वरीं जिव्हाळा । ते भोगिती स्वानंदसोहळा | l |
| जयांचा जनावेगळा । ठेवा आक्षै | 1381 |
| ते आक्षै सुखें सुखावले । संसारदुःखें विसरले | 1 |
| विषयेरंगीं वोरंगले । श्रीरंगरंगीं | 1351 |
| तयांस फावली नरदेह पेटी । केली ईश्वरेंसिं साटी | |
| येरें अभाविकें करंटी । नरदेह गेला | |
| आवचटें निधान जोडलें। तें कवडिच्या बदल नेलें | |
| तैसें आयुष्य निघोनि गेलें । अभाविकाचें | |
| बहुत तपाचा सांठा । तेणें लाधला परीस गोटा | |
| परी तो ठाईचा करंटा । भोगूंच नेणे | 1३५1 |
| तैसा संसारास आला। मायाजाळीं गुंडाळला | |
| अंती येकलाचि गेला । हात झाडुनी | |
| या नरदेहाचेनि संगती । बहुत पावले उत्तम गती | 1 |
| येकें बापुडीं यातायाती । वरपडीं जालीं | |
| या नरदेहाचेनि लागवेगें। सार्थक करावें संतसंगें | 1 |
| नीचयोनीं दुःख मार्गे। बहुत भोगिलें | 1361 |
| कोण समयो येईल कैसा । याचा न कळे किं भर्वसा | |
| | 1361 |
| तैसें वैभव हें सकळ। कोण जाणें कैसी वेळ | |
| पुत्रकळत्रादि सकळ। विघडोन जाती | |
| पाहिली घडी नव्हे आपुली । वयसा तरी निघोन गेली | 1 |
| देह पडतांच ठेविली । आहे नीच योनी | 1881 |

| स्वान शुकरादिक नीच याती | 1 | भोगणें घडे विपत्ती। |
|----------------------------|---|-----------------------------|
| तेथें कांहीं उत्तम गती | ı | पाविजेत नाहीं । ४२। |
| मागां गर्भवासीं आटाटी | ı | भोगितां जालासि रे हिंपुटी । |
| तेथुनियां थोरा कष्टीं | 1 | सुटलासि दैवें ।४३। |
| दुःख भोगिलें आपुल्या जीवें | | |
| तैसेंचि पुढें येकलें जावें | 1 | लागेल बापा ।४४। |
| कैंची माता कैंचा पिता | | |
| | | पुत्रकळत्रादिक ।४५। |
| हे तूं जाण मावेचीं | | . 3 |
| हे तुझ्या सुखदु:खाचीं | | |
| कैंचा प्रपंच कैंचें कुळ | | |
| · | | जाइजणें ।४७। |
| कैंचें घर कैंचा संसार | | |
| | | सेखीं सांडून जासी ।४८। |
| कैंचें तारुण्य कैंचें वैभव | | |
| हें सकळिह जाण माव | | |
| येच क्षणीं मरोन जासी | | |
| माझें माझें म्हणतोसी | l | म्हणौनियां ।५०। |
| तुवां भोगिल्या पुनरावृत्ती | | · · |
| | | लक्षानलक्ष । ५१। |
| कर्मयोगें सकळ मिळालीं | | |
| | | कैसीं रे पढतमूर्खा । ५२। |
| तुझें तुज नव्हे शरीर | | |
| आतां येक भगवंत साचार | 1 | घरीं भावार्थबळें । ५३। |

| येका दुर्भराकारणें। | नाना नीचांची सेवा करणें। |
|--|-----------------------------|
| नाना स्तुती आणी स्तवनें । | मर्यादा घरावी । ५४। |
| जो अन्न देतो उदरासी। | शेरीर विकावें लागे त्यासी। |
| मां जेणें घातलें जन्मासी | त्यासी कैसें विसरावें । ५५। |
| अहिर्निशीं ज्या भगवंता। | सकळ जीवांची लागली चिंता । |
| मेघ वरुषे जयाची सत्ता। | सिंधु मर्यादा घरी । ५६। |
| भूमि धरिली धराधरें | । प्रगट होईजे दिनकरें। |
| | चालवी जो कां । ५७। |
| ऐसा कृपाळू देवाधिदेव | नेणवे जयाचें लाघव। |
| | कृपाळुपणें ।५८। |
| ऐसा सर्वात्मा श्रीराम | सांडून धरिती विषयकाम । |
| | केलें पावती । ५९। |
| रामेविण जे जे आस | । तितुकी जाणीव नैराश। |
| | सीणचि उरे ।६०। |
| जयास वाटे सीण व्हावा। | तेणें विषयो चिंतीत जावा। |
| विषयो न मिळतां जीवा | |
| सांडून राम आनंदघन | ज्याचे मनीं विषयचिंतन। |
| त्यासी कैंचे समाधान | |
| जयास वाटे सुखचि असावें | तेणे रघुनाथभजनीं लागावें। |
| न्यान सकळाह त्यागाव | दुःखमूळ जे ।६३। |
| जेथें वासना झोंबोन पडे । म्हणौनि विषयवासना मोडे | |
| | |
| विषयजनित जें जें सुख । पूर्वी गोड अंतीं शोक । | 1 |
| द्वा । । जाता शाका | नमस्त आह |

गळ गिळितां सुख वाटे । वोढून घेतां घसा फाटे । कां तें बापुडें मृग आपटे । चारा घेऊन पळतां ।६६। तैसी विषयेसुखाची गोडी । गोड वाटे परी ते कुडी। म्हणौनियां आवडी । रघुनाथीं धरावी । ६७। ऐकोनि बोले भाविक । कैसेनि घडे जी सार्थक । सांगा स्वामी येमलोक । चुके जेणें ।६८। देवासी वास्तव्य कोठें। तो मज कैसेंनि भेटे। दुःखमूळ संसार तुटे । कोणेपरी स्वामी ।६९। घडपुडी भगवत्प्राप्ती । होऊन चुके अधोगती । ऐसा उपाये कृपामूर्ती । मज दीनास करावा ।७०। वक्ता म्हणे हो येकभावें । भगवद्भजन करावें । तेणें होईल स्वभावें। समाधान १७१। कैसें करावें भगवद्भजन । कोठे ठेवावें हें मन । भगवद्भजनाचें लक्षण । मज निरोपावें ।७२। ऐसा म्लानवदनें बोले । धरिले सदृढ पाऊलें । कंठ सद्गदित गळाले । अश्रुपात दुःखें ।७३। देखोन शिष्याची अनन्यता । भावें वोळला सद्गुरु दाता । स्वानंद तुंबळेल आतां । पुढिले समासीं । ७४।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'वैराग्यनिरूपणनाम' समास दहावा समाप्त.

दशक तिसरा समाप्त

दशक चौथा : नवविधा भक्ती

दशक ४: समास १ श्रवणभक्ती

॥ श्रीराम ॥

| जयजय जी गणनाथा। तू विद्यांवैभवें समथ | fı | | |
|--|----|---|---|
| अध्यात्मविद्येच्या परमार्था । मज बोलवावें | 1 | 8 | ı |
| नमूं शारदा वेदजननी । सकळ सिद्धि जयेचेर्न | 1 | | |
| मानस प्रवर्तलें मननीं । स्फूर्तिरूपे | 1 | 7 | ı |
| आतां आठऊं सद्गुरु । जो पराचाहि पर | il | | |
| जयाचेनि ज्ञानविचारु । कळों लागे | | 3 | 1 |
| श्रोतेन पुसिलें बरवें। भगवद्भजन कैसें करावे | i | | |
| म्हणौनि बोलिलें स्वभावें । ग्रन्थान्तरीं | | 8 | l |
| सावध होऊन श्रोतेजन । ऐका नवविधा भजन | П | | |
| सत्शास्त्रीं बोलिलें पावन । होईजे येणें | 1 | ų | 1 |
| श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्। | | | |
| अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।। | | | |
| नवविधा भजन बोलिलें। तेंचि पुढें प्रांजळ केले | | | |
| श्रोतीं अवधान दिघलें । पाहिजे आतां | | Ę | ı |
| प्रथम भजन ऐसें जाण । हरिकथापुराणश्रवण | 1 | | |
| नाना अध्यात्मनिरूपण । ऐकत जावे | Ì | 9 | 1 |
| कर्ममार्ग उपासनामार्ग । ज्ञानमार्ग सिन्द्रांतमार्ग | 1 | | |
| योगमार्ग वैराग्यमार्ग । ऐकत जावे | 1 | 4 | 1 |

| नाना व्रतांचे महिमे। नाना तीर्थांचे महिमे। | |
|--|-----|
| नाना हाजांचे नक्त्र | 9 1 |
| नाना माहात्में नाना स्थानें। नाना मंत्र नाना साधनें। | • |
| नाना तार्रे गारकार्य | 801 |
| दुग्धाहारी निराहारी। फळाहारी पर्णाहारी। | |
| तापारामी | ११। |
| उष्णवास जळवास । सीतवास आरण्यवास । | |
| भूगर्भ आणी आकाशवास । कैसे ते ऐकावे | १२। |
| जपी तपी तामस योगी । नाना निग्रह हटयोगी। | |
| | १३। |
| नाना मुद्रा नाना आसनें। नाना देखणीं लक्षस्थानें। | |
| पिंडज्ञानें तत्त्वज्ञानें । कैसीं तें ऐकावीं । | १४। |
| नाना पिंडाची रचना। नाना भूगोळरचना। | |
| नाना सृष्टीची रचना । कैसी ती ऐकावी । | १५। |
| चंद्र, सूर्य तारामंडळें। त्रहमंडळें मेघमंडळें। | |
| येकवीस स्वर्गे सप्तपाताळें । कैसीं तें ऐकावीं | १६। |
| ब्रह्माविष्णु महेशस्थानें । इन्द्रदेवऋषीस्थानें । | |
| वायोवरुणकुबेरस्थानें । कैसीं ते ऐकावीं । | १७। |
| नव खंडें चौदा भुवनें । अष्ट दिग्पाळांचीं स्थानें । | |
| नाना वनें उपवनें गहनें । कैसीं ते ऐकावीं । | १८। |
| गण गंधर्व विद्याधर । येक्ष किन्नर नारद तुंबर । | |
| अष्ट नायका संगीतविचार । कैसा तो ऐकावा | १९। |
| रागज्ञान ताळज्ञान । नृत्यज्ञान वाद्यज्ञान । | |
| अमृतवेळ प्रसंगज्ञान । कैसें तें ऐकावें । | 201 |

| चौदा विद्या चौसष्टी कळा । सामुद्रिक लक्षणें सकळ कळा । |
|---|
| बत्तीस लक्षणें नाना कळा । कैशा त्या ऐकाव्या । २१। |
| मंत्र मोहरे तोटके सिद्धी । नाना वल्ली नाना औषधी । |
| धातु रसायण बुद्धी । नाडिज्ञानें ऐकावीं । २२। |
| कोण्या दोषें कोण रोग । कोणा रोगास कोण प्रयोग । |
| कोण्या प्रयोगास कोण योग । साधे तो ऐकावा ।२३। |
| रवरवादि कुंभपाक । नाना यातना येमलोक । |
| सुखदुःखादि स्वर्गनर्क। कैसा तो ऐकावा । २४। |
| कैशा नवविधा भक्ती। कैशा चतुर्विधा मुक्ती। |
| कैसी पाविजे उत्तम गती । ऐसें हें ऐकार्वे ।२५। |
| पिंडब्रम्हांडाची रचना। नाना तत्त्वविवंचना। |
| सारासारविचारणा । कैसी ते ऐकावी । २६। |
| सायोज्यता मुक्ती कैसी होते । कैसें पाविजे मोक्षातें । |
| याकारणें नाना मतें। शोधित जावीं । २७। |
| वेदशास्त्रं आणि पुराणें । माहावाक्याचीं विवरणें । |
| तनुचतुष्टयनिश्निं। कैसीं तें ऐकावीं। २८। |
| ऐसें हें अवधेंचि ऐकावें । परंतु सार शोधून घ्यावें । |
| असार तें जाणोनि त्यागावें। या नांव श्रवणभक्ति ।२९। |
| सगुणाचीं चरित्रें ऐकावीं । कां तें निर्गुण अध्यात्में शोघावीं । |
| श्रवणभक्तीचीं जाणावीं । लक्षणें ऐसीं ।३०। |
| सगुण देवांचीं चरित्रें। निर्गुणाचीं तत्त्वें यंत्रें। |
| हे दोनी परम पवित्रें। ऐकत जावीं ।३१। |
| जयंत्या उपोषणें नाना साधनें । मंत्र यंत्र जप ध्यानें । |
| कीर्ति स्तुती स्तवनें भजनें । नानाविधें ऐकावीं । ३२। |

ऐसें श्रवण सगुणाचें । अध्यात्मनिरूपण निर्गुणाचें । विभक्ती सांडून भक्तीचें । मूळ शोधावें । ३३। श्रवणभक्तीचें निरूपण । निरोपिलें असे जाण । पुढें कीर्तनभजनांचें लक्षण । बोलिलें असे । ३४।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'श्रवणभक्तिनाम' समास पहिला समाप्त.

दशक ४: समास २ कीर्तनभक्ती

॥ श्रीराम ॥

श्रोतीं भगवद्भजन पुसिलें । तें नवविधा प्रकारें बोलिलें । त्यांत प्रथम श्रवण निरोपिलें । दुसरें कीर्तन ऐका । १ । सगुण हरिकथा करावी । भगवत्कीर्ती वाढवावी । अखंड वैखरी वदवावी । येथायोग्य 1 7 1 बहुत करावें पाठांतर । कंठीं धरावें ग्रन्थांतर । निरंतर । करीत जावी भगवत्कथा आपुलिया सुखस्वार्था । केलीच करावी हरिकथा । हरिकथेविण सर्वथा । राहोंचि नये 181 नित्य नवा हव्यास धरावा । साक्षेप अत्यंतचि करावा । हरिकीर्तनें भरावा । ब्रह्मगोळ अवघा 141 मनापासून आवडी । जीवापासून अत्यंत गोडी । सदा सर्वदा तांतडी । हरिकीर्तनाची | & |

| भगवंतास कीर्तन प्रिये । कीर्तनें समाधान होये । |
|---|
| बहुत जनासी उपाये । हरिकीर्तनें कलयुगीं । ७ । |
| विविध विचित्रें ध्यानें । वर्णावीं आळंकार भूषणें । |
| ध्यानमूर्ति अंतःकरणें । लक्षून कथा करावी । ८ । |
| येश कीर्ति प्रताप महिमा । आवडीं वर्णावा परमात्मा । |
| जेणें भगवद्भक्तांचा आत्मा । संतुष्ट होये । ९ । |
| कथा अन्वय लापणिका । नामघोष करताळिका । |
| प्रसंगें बोलाव्या अनेका । धात माता नेमस्त । १०। |
| ताळ मृदांग हरिकीर्तन । संगीत नृत्य तान मान । |
| नाना कथानुसंधान । तुटोंचि नेदावें ।११। |
| करुणाकीर्तनाच्या लोटें। कथा करावी घडघडाटें। |
| श्रोतयांचीं श्रवणपुटें । आनंदें भरावीं । १२। |
| कंप रोमांच स्फुराणें । प्रेमाश्रुसहित गाणें । |
| देवद्वारीं लोटांगणें । नमस्कार घालावे । १३। |
| पदें दोहडे श्लोक प्रबंद । धाटी मुद्रा अनेक छंद । |
| बीरभाटिंव विनोद । प्रसंगें करावे । १४। |
| नाना नवरसिक शृंघारिक । गद्यपद्याचें कौतुक । |
| नाना वचनें प्रस्ताविक । शास्त्राधारें बोलावीं । १५। |
| भक्तिज्ञान वैराग्यलक्षण । नीतिन्यायस्वधर्मरक्षण । |
| साधनमार्ग अध्यात्मनिरूपण । प्रांजळ बोलावें । १६। |
| प्रसंगें हरिकथा करावी । सगुणीं सगुणकीर्ति घरावी । |
| निर्गुणप्रसंगें वाढवावी । अध्यात्मविद्या । १७। |
| पूर्वपक्ष त्यागून सिद्धांत । निरूपण करावें नेमस्त । |
| बहुधा बोलणें अव्यावेस्त । बोलोंचि नये । १८। |

| करावें वेदपारायेण । सांगावें जनासी पुराण । |
|---|
| मायाब्रह्मीचें विवरण । साकल्य वदावें ।१९। |
| ब्राह्मण्य रक्षावें आदरें। उपासनेचीं भजनद्वारें। |
| गुरुपरंपरा निधरिं। चळोंच नेदावी ।२०। |
| करावें वैराग्यरक्षण । रक्षावें ज्ञानाचें लक्षण । |
| परम दक्ष विचक्षण । सर्विह सांभाळी । २१। |
| कीर्तन ऐकतां संदेह पडे। सत्य समाधान तें उडे। |
| नीतिन्यायसाधन मोडे । ऐसें न बोलावें । २२। |
| सगुणकथा या नांव कीर्तन । अद्वैत म्हणिजे निरूपण । |
| सगुण रक्षून निर्गुण । बोलत जावें । २३। |
| असो वग्त्रुत्वाचा अधिकार । अल्पास न घडे सत्योत्तर । |
| वक्ता पाहिजे साचार । अनुभवाचा । २४। |
| सकळ रक्षून ज्ञान सांगे । जेणे वेदज्ञा न भंगे । |
| उत्तम सन्मार्ग लागे। प्राणीमात्रांसी ।२५। |
| असो हें सकळ सांडून । करावें गुणानवादकीर्तन । |
| या नाव भगवद्भजन । दुसरी भक्ती । २६। |
| कीर्तनें माहा दोष जाती । कीर्तनें होये उनम राजी । |
| कार्तने भगवत्प्राप्ती । येदर्थीं संदेह नाही । २७। |
| कतिने वाचा पवित्र । कीर्तने होरा सन्तान । |
| हारकातन प्राणीमात्र । सुसिळ होती |
| कार्तन अवेग्रता घड़े। कीर्ति किल्ले |
| सदह वुडे । श्रोतयांवक्त्यांचा । २०। |
| सदा सवदा हरिकोर्तन । सन्तर्यः २ |
| तेणें नारद तोचि नारायेण । बोलिजेत आहे ।३०। |

म्हणोनि कीर्तनाचा अगाध महिमा । कीर्तनें संतोषे परमात्मा । सकळ तीर्थें आणी जगदात्मा । हरिकीर्तनीं वसे । ३१।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'कीर्तनभक्तिनाम' समास दुसरा समाप्त.

दशक ४: समास ३ नामस्मरणभक्ती

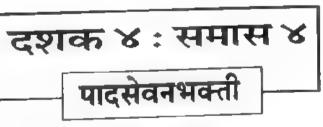
॥ श्रीराम ॥

| मागां निरोपिलें कीर्तन । जें सकळांस करी पावन | ı | | |
|--|---|---|---|
| आतां ऐका विष्णोः स्मरण । तिसरी भक्ती | | १ | 1 |
| स्मरण देवाचें करावें । अखंड नाम जपत जावें | l | | |
| नामस्मरणें पावावें । समाधान | | 2 | ı |
| नित्य नेम प्रातःकाळीं । माध्यानकाळीं सायंकाळीं | l | | |
| नामस्मरण सर्वकाळीं । करीत जावें | | 3 | ı |
| सुख दुःख उद्वेग चिंता । अथवा आनंदरूप असतां | 1 | | |
| नामस्मरणेविण सर्वथा । राहोंच नये | | 8 | 1 |
| हरुषकाळीं विषमकाळीं। पर्वकाळीं प्रस्तावकाळीं | l | | |
| विश्रांतिकाळीं निद्राकाळीं। नामस्मरण करावें | l | 4 | 1 |
| कोडें साकडें संकट । नाना संसारखटपट | 1 | | |
| आवस्ता लागतां चटपट । नामस्मरण करावें | | Ę | ı |
| चालतां बोलतां धंदा करितां । खातां जेवितां सुखी होतां | ı | | |
| नाना उपभोग भोगितां । नाम विसरों नये | | 9 | ı |
| | | | |

| संपत्ती अथवा विपत्ती । जैसी पडेल काळगती । |
|---|
| नामस्मरणाची स्थिती । सांडूंच नये । ८ । |
| वैभव सामर्थ्य आणी सत्ता । नाना पदार्थ चालता । |
| उत्कट भाग्यश्री भोगितां । नामस्मरण सांडूं नये । ९ । |
| आधीं आवदसा मग दसा । अथवा दसेउपरी आवदसा । |
| प्रसंग असो भलतैसा। परंतु नाम सोडूं नये ।१०। |
| नामें संकटें नासती। नामें विघ्नें निवारती। |
| नामस्मरणें पाविजेती । उत्तम पदें ।११। |
| भूत पिशाच्य नाना छंद । ब्रह्मगिऱ्हो ब्राह्मणसमंघ । |
| मंत्रचळ नाना खेद । नामनिष्ठें नासती । १२। |
| नामें विषबाधा हरती। नामें चेडे चेटकें नासती। |
| नामें होये उत्तम गती । अंतकाळीं ११३। |
| बाळपणीं तारुण्यकाळीं । कठिणकाळीं वृधाप्यकाळीं । |
| सर्वकाळीं अंतकाळीं । नामस्मरण असावें । १४। |
| नामाचा महिमा जाणे शंकर । जना उपदेसी विश्वेश्वर । |
| वाराणसी मुक्तिक्षेत्र । रामनामेंकरूनी । १५। |
| उफराट्या नामासाठीं । वाल्मिक तरला उठाउठी । |
| भविष्य वदला शतकोटी । चरित्र रघुनाथाचें । १६। |
| हरिनामें प्रल्हाद तरला । नाना आघातांपासून सुटला । |
| नारायणनामें पावन जाला । अजामेळ ११७। |
| नामें पाषाण तरले। असंख्यात भक्त उद्धरले। |
| माहापापी तेचि जाले। परम पवित्र ।१८। |
| परमेश्वराची अनंत नामें । स्मरतां तरिजे नित्यनेमें । |
| नामस्मरण करितां येमें । बाधिजेना ।१९। |

सहस्रा नामामध्यें कोणी येक । म्हणतां होतसे सार्थक ।
नाम स्मरतां पुण्यश्लोक । होईजे स्वयें ।२०।
कांहींच न करूनि प्राणी । रामनाम जपे वाणी ।
तेणें संतुष्ट चक्रपाणी । भक्तांलागीं सांभाळी ।२१।
नाम स्मरे निरंतर । तें जाणावें पुण्यशारीर ।
माहा दोषांचे गिरिवर । रामनामें नासती ।२२।
अगाध महिमा न वचे वदला । नामें बहुत जन उद्धरला ।
हळहळापासून सुटला । प्रत्यक्ष चंद्रमौळी ।२३।
चहुं वर्णां नामाधिकार । नामीं नाहीं लहानथोर ।
जड मूढ पैलपार । पावती नामें ।२४।
म्हणौन नाम अखंड स्मरावे । रूप मनीं आठवावें।
तिसरी भक्ती स्वभावें । निरोपिली ।२५।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'नामस्मरणभक्तिनाम' समास तिसरा समाप्त.



॥ श्रीराम ॥

मागां जालें निरूपण । नामस्मरणाचें लक्षण । आतां ऐका पादसेवन । चौथी भक्ती । १ । पादसेवन तेंचि जाणावें । कायावाचामनोभावें । सद्गुरूचे पाय सेवावे । सद्गतिकारणें । २ ।

| या नांव पादसेवन । सद्गुरुपदीं अनन्यपण | 1 | | |
|--|---|----|---|
| निरसावया जन्ममरण। यातायाती | I | 3 | I |
| सद्गुरुकृपेविण कांहीं । भवतरणोपाव तों नाहीं | 1 | | |
| याकारणें लवलाहीं । सद्गुरुपाय सेवावे | l | 8 | I |
| सद्वस्तु दाखवी सद्गुरु । सकळ सारासारविचारु | 1 | | |
| परब्रह्माचा निर्धारु । अंतरीं बाणे | ŧ | 4 | Ī |
| जे वस्तु दृष्टीस दिसेना । आणी मनास तेहि भासेना | 1 | | |
| संगत्यागेविण ये ना । अनुभवासी | l | Ę | l |
| अनुभव घेतां संगत्याग नसे । संगत्यागें अनुभव न दिसे | 1 | | |
| हे अनुभवीयासीच भासे । येरां गथागोवी | ı | 9 | I |
| संगत्याग आणी निवेदन । विदेहस्थिती अलिप्तपण | l | | |
| सहजस्थिती उन्मनी विज्ञान । हे सप्तिह येकरूप | 1 | 6 | 1 |
| याहिवेगळीं नामाभिधानें। समाधानाचीं संकेतवचनें | 1 | | |
| सकळ कांहीं पादसेवनें । उमजों लागे | l | 9 | ŧ |
| वेद वेदगर्भ वेदांत । सिन्द सिन्द्रभावगर्भ सिन्दांत | 1 | | |
| अनुभव अनुर्वाच्य घादांत । सत्य वस्तु | | १० | 1 |
| बहुधा अनुभवाचीं आंगें। सकळ कळती संतसंगें | 1 | | |
| चौथे भक्तीचे प्रसंगें। गौप्य तें प्रगटे | ١ | ११ | l |
| प्रगट वसोनि नसे। गोप्य असोनि भासे | | | |
| भासाअभासाहून अनारिसे । गुरुगम्य मार्ग | | १२ | ŧ |
| मार्ग होये परी अंतरिक्ष । जेथें सर्विह पूर्वपक्ष | 1 | | |
| पाहों जातां अलक्ष । लक्षवेना | 1 | १३ | ţ |
| लक्षें जयासी लक्षावें। ध्यानें जयासी ध्यावें | | | |
| तें गे तेंचि आपण व्हावें । त्रिविधा प्रचिती | | १४ | I |
| असो हीं अनुभवाचीं द्वारें। कळती सारासारविचारें | | | |
| सत्संगें करून सत्योत्तरें। प्रत्ययासि येतीं | t | १५ | ı |

सत्य पाहातां नाहीं असत्य । असत्य पाहातां नाहीं सत्य । सत्याअसत्याचें कृत्य । पाहाणारापासीं ।१६। पाहाणार पाहाणें जया लागलें । तें तद्रूपत्वें प्राप्त जालें। तरी मग जाणावें बाणलें। समाधान 1891 नाना समाधानें पाहतां । बाणतीं सद्गुरुकरितां । सद्गुरुविण सर्वथा । सन्मार्ग नसे । १० प्रयोग साधनें सायास । नाना साक्षेपें विद्याअभ्यास । अभ्यासें कांहीं गुरुगम्यास । पाविजेत नाहीं । १९। जें अभ्यासें अभ्यासितां न ये । जें साघनें असाध्य होये । तें हें सद्गुरुविण काये। उमजों जाणे ।२०। याकारणें ज्ञानमार्ग । कळाया धरावा सत्संग । सत्संगेविण प्रसंग । बोलोंचि नये । २१। सेवावे सद्गुरूचे चरण । या नांव पादसेवन । चौथे भक्तीचें लक्षण । तें हें निरोपिलें ।२२। देव ब्राह्मण माहानुभाव । सत्पात्र भजनाचें ठाव । ऐसिये ठाईं सद्भाव । दृढ धरावा । २३। हें प्रवृत्तीचें बोलणें। बोलिलें रक्षाया कारणें। परंतु सद्गुरुपाय सेवणें । या नांव पादसेवन । २४। पादसेवन चौथी भक्ती । पावन करितसे त्रिजगतीं । जयेकरितां सायोज्यमुक्ती । साधकास होये । २५। म्हणौनि थोराहुनि थोर । चौथे भक्तीचा निर्घार । जयेकरितां पैलपार । बहुत प्राणी पावती । २६।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'पादसेवनभक्तिनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक ४: समास ५

अर्चनभक्ती

॥ श्रीराम ॥

| मागा जाले निरूपण | 1 | चौथे भक्तीचें लक्षण | ı | | |
|-------------------------------------|---|---------------------------|----|----|---|
| आतां ऐका सावधान | ı | पांचवी भक्ती | 1 | 8 | 1 |
| पाचवी भक्ती तें आर्चन | 1 | आर्चन म्हणिजे देवतार्चन | 1 | | |
| शास्त्रोक्त पूजाविधान | | | | 2 | ı |
| नाना आसर्ने उपकर्णे | ı | वस्त्रें आळंकार भूषणें | ı | | |
| मानसपूजा मूर्तिध्यानें | | | | 3 | i |
| देवब्राह्मण अग्नीपूजन | ı | साधुसंत अतीतपूजन | ı | | |
| इतिमहानुभावगाइत्रीपूजन | | या नांव पांचवी भक्ती | | ሄ | ı |
| धातुपाषाणमृत्तिकापू जन | ı | चित्रलेप सत्पात्रपूजन | ı | | |
| आपले गृहींचें देवतार्चन | l | या नांव पांचवी भक्ती | ł | ų | l |
| सीळा सप्तांकित नवांकित | ı | शालिग्राम शकलें चक्रांकित | 1 | | |
| लिंगें सूर्यकांत सोमकांत | I | बाण तांदळे नबीदे | l | Ę | 1 |
| भैरव भगवती मल्लारी | ŧ | मुंज्या नृसिंह बनशंकरी | ı | | |
| नाग नाणी नानापरी | 1 | पंचायेत्नपूजा | l | 9 | I |
| गणेशशारदाविठलमूर्ती | ŧ | रंगनाथजगन्नाथतांडवपूर्ती | ı | | |
| श्रीरंगहनुमंतगरुडमूर्ती | l | देवतार्चनीं पूजाव्या | l | 6 | l |
| मत्छकूर्मवऱ्हावमूर्ती | 1 | नृसिंहवामनभागवमूर्ती | ı | | |
| रामकृष्णहयप्रीवमूर्ती | 1 | देवतार्चनीं पूजाव्या | I | 9 | 1 |
| केशवनारायणमाघवमूर्ती | t | गोविंदविष्णुमदसूदनमूर्ती | 1 | | |
| त्रिविक्रमवामनश्रीधर मू र्ती | 1 | रुषीकेश पद्मनाभि | 13 | १० | I |

| दामोदरसंकर्षणवासुदेवमूर्ती । प्रद्युम्नअनुरधपुरुषोत्तम मूर्ती । |
|---|
| अधोक्षजनारसिंहअच्युतमूर्ती । जनार्दन आणि उपेंद्र । ११। |
| हरिहरांच्या अनंत मूर्ती । भगवंत जगदात्मा जगदीशमूर्ती । |
| शिवशक्तीच्या बहुधा मूर्ती । देवतार्चनीं पूजाव्या । १२। |
| अश्वत्थनारायेण सूर्यनारायेण । लक्ष्मीनारायेण त्रिमल्लनारायेण । |
| श्रीहरीनारायण आदिनारायण । शेषशाई परमात्मा । १३। |
| ऐश्या परमेश्वराच्या मुर्ती । पाहों जातां उदंद असती । |
| त्यांचे आर्चन करावें भक्ती । पांचवी ऐसी । १४। |
| याहि वेगळे कुळधर्म। सोडूं नये अनुक्रम। |
| उत्तम अथवा मध्यम । करीत जावें । १५। |
| जाखमाता मायराणी । बाळा बगुळा मानविणी । |
| पूजा मांगिणी जोगिणी । कुळधर्में करावीं । १६। |
| नाना तीर्था क्षेत्रांस जावें। तेथें त्या देवांचें पूजन करावें। |
| नाना उपचारीं आर्चावें। परमेश्वरासी । १७। |
| पंचामृतें गंधाक्षतें । पुष्पें परिमळद्रव्यें बहतें। |
| धूपदीप असंख्यातें । नीरांजनें कर्पुराचीं ।१८। |
| नाना खाद्य नैवेद्य संदर । नाना फळें तांबोळपळाट । |
| दक्षणा नाना आळंकार । दिव्यांबरें वनमाळा । १९। |
| सिबिका छत्रें सखासनें । माहि मेघहंतें सर्वापने |
| दिंड्या पताका निशाणें। टाळ घोळ मृदांग ।२०। |
| नाना वाद्ये नाना उत्साव । नाना भक्तसमुदाव । |
| Will Bidgith Higher I Street Comment. |
| वापी कप सरोहरें। जाना नेकानरें |
| (19 10 Hallet) are 3 (-9) |
| मठ मंड्या धर्मशाळा । देवद्वारीं पडशाळा । |
| नीना उपकर्णी नथन्याला । नाम कर्ण कर्णाणा |
| १२३। |

| नाना पडदे मंडप चांदोवे । नाना रत्नघोष लोंबती बरवे । |
|--|
| नाना देवाळई समर्पावे । हस्थी घोडे शक्कटें ।२४। |
| आळंकार आणी आळंकारपात्रें । द्रव्य आणी द्रव्यपात्रें। |
| जनविका अधि। अञ्चादकाम् । नान्य नान्य रे |
| वनें उपवनें पुष्पवाटिका। तापस्यांच्या पर्णकुटिका। |
| ऐसी पूजा जगनायन । तेपस्याच्या पूर्णकृटिका। |
| ऐसी पूजा जगन्नायका। येथासांग समर्पावी ।२६। |
| शुक शारिका मयोरें। बदकें चक्रवाकें चकोरें। |
| कारिक चितळ सामरे । देवाळई समर्पावीं |
| सुगधमृगं आणी मार्जरें। गार्ड म्हैसी साधा वार्जें। |
| नाना पदार्थ आणी लेंकुरें । देवाळई समर्पावीं । २८। |
| काया वाचा मनें। चित्तें वित्तें जीतें पालें। |
| सद्भावे भगवंत आर्चने । या नाव आर्चनभक्ती । २९। |
| ऐसेचि सद्गुरूचें भजन । करून असावें अनन्य । |
| था नाव भगवद्भजन । पांचवी भक्ती ।३०। |
| ऐसी पूजा न घडे बरवी। तरी मानसपजा करावी। |
| मानसपूजा अगत्य व्हावी । परमेश्वरासी । ३१। |
| मनें भगवंतास पूजावें । कल्पन सर्वही समर्पावें । |
| मानसपूजेचें जाणावें। लक्षण ऐसें ।३२। |
| जें जें आपणांस पाहिजे। तें तें कल्पून वाहिजे। |
| येणें प्रकारें कीजे। मानसपूजा ।३३। |
| |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'अर्चनभक्तिनाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक ४: समास ६

वंदनभक्ती

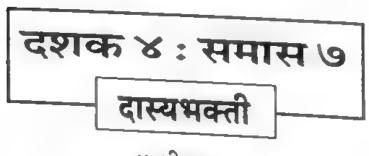
॥ श्रीराम ॥

| मार्गा जालें निरूपण । पांचवे भक्तीचें लक्षण | 1 | | |
|---|---|---|---|
| आतां ऐका सावधान । साहावी भक्ती | l | 8 | ı |
| साहावी भक्ती तें वंदन । करावें देवासी नमन | 1 | | |
| संत साधु आणी सज्जन । नमस्कारीत जावे | l | 7 | ì |
| सूर्यासि करावे नमस्कार । देवासि करावे नमस्कार | | | |
| सद्गुरूस करावे नमस्कार । साष्टांग भावें | | ş | 1 |
| साष्टांग नमस्कारास अधिकारु । नाना प्रतिमा देवगुरु | | | |
| अन्यत्र नमनाचा विचारु । अधिकारें करावा | | 8 | 1 |
| छपन्न कोटी वसुमती। मधें विष्णूमूर्ती असती | 1 | | |
| तयांस नमस्कार प्रीती । साष्टांग घालावे | | ų | 1 |
| पशुपति श्रीपति आणी गभस्ती । यांच्या दर्शनें दोष जाती | l | | |
| तैसाचि नमावा मारुती । नित्य नेमें विशेष | l | Ę | l |
| शंकरः शेषशायी च मार्तंडो मारुतिस्तथा। | | | |
| एतेषां दर्शनं पुण्यं नित्यनेमे विशेषतः॥ | | | |
| भक्त ज्ञानी आणी वीतरागी । माहानुभाव तापसी योगी | 1 | | |
| सत्पात्रे देखोनि वेगी । नमस्कार घालावे | 1 | 9 | ı |
| वेदज्ञ शास्त्रज्ञ आणी सर्वज्ञ । पंडित पुराणिक आणी विद्वज्जन | 1 | | |
| याज्ञिक वैदिक पवित्रजन । नमस्कारीत जावे | ı | 6 | 1 |

जेथे दिसती विशेष गुण । तें सद्गुरुचें अधिष्ठान । याकारणें तयासी नमन । अत्यादरें करावें । ९ । गणेश शारदा नाना शक्ती । हरिहरांच्या अवतारमूर्ती । नाना देव सांगों किती । पृथकाकारें 1801 सर्व देवांस नमस्कारिलें। तें येका भगवंतास पावलें। येदर्थी येक वचन बोलिलें । आहे, तें ऐका । ११। आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति॥ याकारणें सर्व देवांसीं । नमस्कारावें अत्यादरेंसीं । अधिष्ठान मानितां, देवांसी । परम सौख्य वाटे ।१२। देव देवाचीं अधिष्ठानें । सत्पात्रें सद्गुरुंचीं स्थानें । याकारणें नमस्कार करणें । उभय मार्गी । १३। नमस्कारें लीनता घड़े। नमस्कारें विकल्प मोड़े। नमस्कारें सख्य घडे । नाना सत्पात्रासीं । १४। नमस्कारें दोष जाती । नमस्कारें अन्याय क्ष्मतीं । नमस्कारें मोडलीं जडतीं । समाधानें 1841 सिसापरता नाहीं दंड। ऐसें बोलती उदंड। याकारणें अखंड । देव भक्त वंदावे । १६। नमस्कारें कृपा उचंबळे । नमस्कारें प्रसन्नता प्रबळे । नमस्कारे गुरुदेव वोळे । साधकांवरी 1891 निशेष करितां नमस्कार । नासती दोषांचे गिरिवर । आणी मुख्य परमेश्वर । कृपा करी । १८। नमस्कारें पतित पावन । नमस्कारें संतांसी शरण। नमस्कारें जन्ममरण । दुरी दुन्हावे 1881

परम अन्याय करूनि आला । आणी साष्टांग नमस्कार घातला । तरी तो अन्याये क्ष्मा केला । पाहिजे श्रेष्ठीं 1201 याकारणें नमस्कारापरतें । आणीक नाहीं अनुसरतें । नमस्कारें प्राणीयातें । सद्घद्धि लागे 1281 नमस्कारास वेचावें नलगे । नमस्कारास कष्टावें नलगे। नमस्कारास कांहींच नलगे । उपकर्ण सामग्री । २२। नमस्काराऐसें नाहीं सोपें । नमस्कार करावा अनन्यरूपें । नाना साधनीं साक्ष्पें । कासया सिणावें 1231 साधक भावें नमस्कार घाली । त्याची चिंता साधूस लागली । सुगम पंथें नेऊन घाली । जेथील तेथें 1881 याकारणें नमस्कार श्रेष्ठ । नमस्कारें वोळती वरिष्ठ । येथे सांगितली पष्ट । साहावी भक्ती 1241

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'वंदनभक्तिनाम' समास सहावा समाप्त.



॥ श्रीराम ॥

मागां जालें निरूपण । साहवें भक्तीचें लक्षण । आतां ऐका सावधान । सातवी भक्ती । १ । सातवें भजन तें दास्य जाणावें । पडिलें कार्य तितुकें करावें । सदा सन्निधिच असावें । देवद्वारीं

| देवांचे वैभव सांभाळावें । न्यूनपूर्ण पडोंचि नेदावें । |
|---|
| चढतें वाढतें वाढवावें । भजन देवाचें । ३ । |
| भंगलीं देवाळयें करावीं । मोडलीं सरोवरें बांधावीं । |
| सोफे धर्मशाळा चालवावीं । नूतनचि कार्यें । ४ । |
| नाना रचना जीर्ण जर्जर । त्यांचे करावे जीर्णोद्धार । |
| पडिलें कार्य तें सत्वर । चालवित जावें । ५ । |
| गज रथ तुरंग सिंहासनें । चौकिया सिबिका सुखासनें । |
| मंचक डोल्हारे विमानें । नूतन चि करावीं । ६ । |
| मेघडंब्रे छत्रें चामरें । सूर्यापानें निशाणें अपारें । |
| नित्य नूतन अत्यादरें । सांभाळित जावीं । ७ । |
| नाना प्रकारीचीं यानें। बैसावयाची उत्तम स्थानें। |
| बहुविध सुवर्णासनें । येलें करीत जावीं । ८ । |
| भुवनें कोठड्या पेट्या मांदुसा । रांझण कोहळीं घागरी बहुवसा । |
| संपूर्ण द्रव्यांश ऐसा । अति येलें करावा । ९ । |
| भुयेरीं तळघरें आणी विवरें । नाना स्थळें गुप्त द्वारें। |
| अनर्घ्ये वस्तूंचीं भांडारें। येत्नें करीत जावीं ।१०। |
| आळंकार भूषणें दिव्यांबरें । नाना रत्नें मनोहरें । |
| नाना धातु सुवर्णपात्रें। येत्नें करीत जावीं ।११। |
| पुष्पवाटिका नाना वनें। नाना तरुवरांची बनें। |
| पावतीं करावीं जीवनें । तया वृक्षांसी । १२। |
| नाना पशूंचिया शाळा। नाना पक्षी चित्रशाळा। |
| नाना वाद्यें नाट्यशाळा । गुणी गायेक बहुसाल । १३। |
| स्वयंपाकगृहें भोजनशाळा । सामग्रीगृहें धर्मशाळा । |
| निद्धिस्तांकारणें पडशाळा । विशाळ स्थळें ।१४। |

| नाना परिमळद्रव्यांची स्थळें । नाना खाद्यफळांचीं स्थळें । |
|---|
| नाना रसांचीं नाना स्थळें। येलें करीत जावीं ।१५। |
| नाना वस्तांची नाना स्थानें । भंगलीं करावीं नूतनें । |
| देवाचें वैभव वचनें । किती म्हणौनि बोलावें । १६। |
| सर्वां ठाईं अति सादर। आणी दास्यत्वास हि तत्पर। |
| कार्यभागाचा विसर। पडणार नाहीं । १७। |
| जयंत्या पर्वे मोहोत्साव । असंभाव्य चालवी वैभव । |
| जें देखतां स्वर्गींचे देव । तटस्त होती ।१८। |
| ऐसें वैभव चालवावें । आणी नीच दास्यत्विह करावें । |
| पडिले प्रसंगीं सावध असावें । सर्वकाळ । १९। |
| जें जें कांहीं पाहिजे। तें तें तत्काळिच देजे। |
| अत्यंत आवडीं कीजे। सकळ सेवा ।२०। |
| चरण क्षाळणें स्नानें आच्मनें । गंधाक्षतें वसनें भूषणें। आसनें जीवनें नाना सुमनें । धूप दीप नैवेद्य । २१। |
| शयेनाकारणें उत्तम स्थळें । जळें ठेवावीं सुसीतळें। |
| तांबोल गायनें रसाळें। रागरंगें करावीं । २२। |
| परिमळद्रव्यें आणी फुलेलें। नाना सुगंधेल तेलें। |
| खाद्य फळें बहुसालें। सन्निधिच असावीं ।२३। |
| सडे संमार्जनें करावीं । उदकपात्रें उदकें भरावीं । |
| वसनें प्रक्षालून आणावीं । उत्तमोत्तमें । २४। |
| सकळांचें करावें पारपत्य । आलयाचें करावें आतित्य । |
| ऐसी हे जाणावी सत्य। सातवी भक्ती ।२५। |
| वचनें बोलावीं करुणेचीं । नाना प्रकारें स्तुतीचीं । |
| अंतरें निवती सकळांचीं । ऐसें वदावें । २६। |

ऐसी हे सातवी भक्ती। निरोपिली येथामती। प्रत्यक्ष न घडे तरी चित्तीं। मानसपूजा करावी ।२७। ऐसें दास्य करावें देवाचें। येणेंचि प्रकारें सद्गुरूचें। प्रत्यक्ष न घडे तरी मानसपूजेचें। करित जावें ।२८।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'दास्यभक्तिनाम' समास सातवा समाप्त.

दशक ४: समास ८

॥ श्रीराम ॥

मागां जालें निरूपण । सातवे भक्तीचें लक्षण ।
आतां ऐका सावधान । आठवी भक्ती । १ ।
देवासी परम सख्य करावें । प्रेम प्रीतीनें बांधावें ।
आठवें भक्तीचें जाणावें । लक्षण ऐसें । २ ।
देवास जयाची अत्यंत प्रीती । आपण वर्तावें तेणें रीतीं ।
येणें करितां भगवंतीं । सख्य घडे नेमस्त । ३ ।
भिक्त भाव आणी भजन । निरूपण आणी कथाकीर्तन ।
प्रेमळ भक्तांचें गायन । आवडे देवा । ४ ।
आपण तैसेंचि वर्तावें । आपणासि तेंच आवडावें ।
मनासारिखें होतां स्वभावें । सख्य घडे नेमस्त । ५ ।
देवाच्या सख्यत्वाकारणें । आपलें सौख्य सोडून देणें ।
अनन्यभावें जीवें प्राणें । शरीर तेंहि वेंचावें । ६ ।

सांडून आपली संसारवेथा । करित जावी देवाची चिंता । निरूपण कीर्तन कथा वार्ता । देवाच्याचि सांगाव्या । ७ । देवाच्या सख्यत्वासाठी । पडाव्या जिवलगांसी तुटी । सर्व अर्पावें सेवटीं । प्राण तोहि वेचावा । ८ । आपुले आवधेंचि जावें। परी देवासी सख्य रहावें। ऐसी प्रीती जिवें भावें । भगवंतीं लागावी । ९ । देव म्हणिजे आपुला प्राण । प्राणासी न करावें निर्वाण । परम प्रीतीचें लक्षण। तें हें ऐसे असें । १०। ऐसें परम सख्य धरितां । देवास लागे भक्ताची चिंता । पांडव लाखाजोहरीं जळतां । विवरद्वारें काढिले । ११। देव सख्यत्वें राहे आपणांसी । तें तों वर्म आपणाचि पासीं । आपण वचनें बोलावीं जैसीं । तैसीं येती पडसादें । १२। आपण असतां अनन्यभावें । देव तत्काळचि पावे । आपण त्रास घेतां जीवें । देवहि त्रासे 1831 ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। जैसें जयाचें भजन। तैसाचि देवहि आपण। म्हणौन हें आवधें जाण । आपणाचि पासीं । १४। आपुल्या मनासारिखें न घडे । तेणें गुणें निष्ठा मोडे । तरी गोष्टी आपणांकडे । सहजचि आली 1841 मेघ चातकावरी वोळेना । तरी चातक पालटेना । चंद्र वेळेसि उगवेना । तन्ही चकोर अनन्य । १६। ऐसें असावें सख्यत्व । विवेकें धरावें सत्व । भगवंतावरील ममत्व । सांडूचि नये 1991

| सखा मानावा भगवंत । माता पिता गण गोत । |
|--|
| विद्या लक्ष्मी धन वित्त । सकळ परमात्मा । १८। |
| देवावेगळें कोणी नाहीं । ऐसें बोलती सर्विह । |
| परंतु त्यांची निष्ठा कांहीं । तैसीच नसे ।१९। |
| म्हणौनि ऐसें न करावें । सख्य तरी खरेंचि करावें । |
| अंतरीं सुदृढ धरावें । परमेश्वरासी ।२०। |
| आपुलिया मनोगताकारणें । देवावरी क्रोधास येणें। |
| ऐसीं नव्हेत किं लक्षणें। सख्यभक्तीचीं ।२१। |
| देवाचें जें मनोगत । तेंचि आपुलें उचित । |
| इच्छेसाठीं भगवंत । अंतरूं नये कीं ।२२। |
| देवाचे इच्छेनें वर्तावें। देव करील तें मानावें। |
| मग सहजिच स्वभावें । कृपाळु देव । २३। |
| पाहतां देवाचे कृपेसी। मातेची कृपा कायेसी। |
| माता वधी बाळकासी । विपत्तिकाळीं । २४। |
| देवें भक्त कोण विधला। कधीं देखिला ना ऐकिला। |
| शरणागतांस देव जाला। वज्रपंजरु ।२५। |
| देव भक्तांचा कैवारी । देव पतितांसी तारी । |
| देव होये साहाकारी । अनाथांचा । २६। |
| देव अनाथांचा कैपक्षी । नाना संकटांपासन रक्षी । |
| धांवित्रला अंतरसाक्षी। गजेंद्राकारणें ।२७। |
| देव कृपेचा सागरु । देव करुपोचा जलशरू । |
| देवासि भक्तांचा विसरु । पडणार नाहीं ।२८। |
| दव प्रति राखों जाणे । देवासी करावें गाव्यों । |
| जिवलगें आवधीं पिसुणें । कामा न येती । २९। |
| |

सख्य देवाचें तुटेना । प्रीति देवाची विटेना । देव कदा पालटेना । शरणागतांसी ।३०। म्हणौनि सख्य देवासी करावें । हितगुज तयासी सांगावें । आठवे भक्तीचें जाणावें । लक्षण ऐसें ।३१। जैसा देव तैसा गुरु । शास्त्रीं बोलिला हा विचारु । म्हणौन सख्यत्वाचा प्रकारु । सद्गुरुसीं असावा ।३२।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सख्यभिकतनाम' समास आठवा समाप्त.

दशक ४ : समास ९

आत्मनिवेदनभक्ती

॥ श्रीराम ॥

मागां जालें निरूपण । आठवे भक्तीचें लक्षण । आतां ऐका सावधान । भिक्त नवमी । १ । नवमी निवेदन जाणावें । आत्मिनिवेदन करावें । तेहि सांगिजेल स्वभावें । प्रांजळ करूनि । २ । ऐका निवेदनाचें लक्षण । देवासि वाहावें आपण । करावें तत्त्विवरण । म्हणिजे कळे । ३ । मी भक्त ऐसें म्हणावें । आणी विभक्तपणेंचि भजावें । हें आवधेंचि जाणावें । विलक्षण । ज्ञान असोन अज्ञान । भक्त असोन विलक्षण । ज्ञान असोन अज्ञान । भक्त असोन विभक्तपण । तें हें ऐसें । ५ ।

| भक्त म्हणिजे विभक्त नव्हे । आणि विभक्त म्हणिजे भक्त नव्हे | ŧ | | |
|---|---|-----|---|
| विचारेंविण कांहींच नव्हे । समाधान | 1 | Ę | 1 |
| तस्मात् विचार करावा । देव कोण तो वोळखावा | I | | |
| आपला आपण शोध घ्यावा । अंतर्यामीं | 1 | 9 | 1 |
| मी कोण ऐसा निवाडा । पाहों जातां तत्वझाडा | | | |
| विचार करितां उघडा । आपण नाहीं | l | 6 | 1 |
| तत्वें तत्व जेव्हां सरे। तेव्हां आपण कैंचा उरे | | | |
| आत्मनिवेदन येणें प्रकारें। सहजचि जालें | l | 9 | 1 |
| तत्त्वरूप सकळ भासे। विवेक पाहातां निरसे | | | |
| प्रकृतिनिरासें आत्मा असे। आपण कैंचा | | १० | 1 |
| येक मुख्य परमेश्वरु । दुसरी प्रकृति जगदाकारु | | | |
| तिसरा आपण कैंचा चोरु । आणिला मधें | | ११ | 1 |
| ऐसें हें सिद्धिच असतां । नाथिली लागे देहअहंता परंतु विचारें पाहों जातां । कांहींच नसे | | | |
| | | १२ | 1 |
| पाहाता तत्विववंचना । पिंडब्रह्मांडतत्वरचना विश्वाकारें वेक्ती नाना । तत्वें विस्तारलीं | 1 | 9 7 | 1 |
| तत्वें साक्षत्वें वोसरतीं। साक्षत्व नुरे आत्मप्रचिती | | 1 4 | • |
| आत्मा असे आदिअंतीं । आपण कैंचा | | १४ | 1 |
| आत्मा एक स्वानंदघन । आणी अहमात्मा हे वचन | | • | |
| तरी मग आपण कैंचा भिन्न । उरला तेथें | | १५ | ŧ |
| सोहं हंसा हें उत्तर । याचें पहावें अर्थांतर | 1 | | |
| पाहतां आत्मयाचा विचार । आपण कैंचा तेथें | 1 | १६ | 1 |
| आत्मा निर्गुण निरंजन । तयासी असावें अनन्य | | | |
| अनन्य म्हणिजे नाहीं अन्य । आपण कैंचा तेथें | 1 | १७ | |

| आत्मा म्हणिजे तो अद्वैत । जेथें नाहीं द्वैताद्वैत । |
|--|
| तेथें मीपणाचा हेत । उरेल कैंचा । १८। |
| आत्मा पूर्णत्वें परिपूर्ण । जेथें नाहीं गुणागुण । |
| निखळ निर्गुणीं आपण । कोण कैंचा ।१९। |
| त्वंपद तत्पद असिपद । निरसुनि सकळ भेदाभेद । |
| वस्तु ठाईंची अभेद । आपण कैंचा ।२०। |
| निरसितां जीवशिवउपाधी । जीवशिवचि कैंचे आधीं । |
| स्वरूपीं होतां दृढबुद्धी । आपण कैंचा । २१। |
| आपण मिथ्या साच देव । देव भक्त अनन्यभाव । |
| या वचनाचा अभिप्राव । अनुभवी जाणती । २२। |
| या नांव आत्मनिवेदन । ज्ञानियांचे समाधान । |
| नवमे भक्तीचें लक्षण । निरोपिलें । २३। |
| पंचभूतांमध्यें आकाश । सकळ देवांमध्यें जगदीश । |
| नवविधा भक्तीमध्यें विशेष । भक्ति नवमी । २४। |
| नवमी भक्ती आत्मनिवेदन । न होतां न चुके जन्ममरण । |
| हें वचन सत्य प्रमाण। अन्यथा नव्हे । २५। |
| ऐसी हे नवविधा भक्ती । केल्यां पाविजे सायोज्यमुक्ती । |
| सायोज्यमुक्तीस कल्पांती । चळण नाहीं । २६। |
| तिहीं मुक्तींस आहे चळण । सायोज्यमुक्ती अचळ जाण । |
| त्रैलोक्यास होतां निर्वाण । सायोज्यमुक्ती चळेना । २७। |
| आवधीया चत्वार मुक्ती । वेदशास्त्रें बोलती । |
| तयामध्ये की कार्य । भूक ५ क |
| |
| पहिली मुक्ती ते स्वलोकता । दुसरी ते समीपता । तिसरी ते स्वरूपता । चौथी सायोज्यमुक्ती । २९। |
| । २१। |

ऐसिया चत्वार मुक्ती । भगवद्भजनें प्राणी पावती । हेंचि निरूपण प्रांजळ श्रोतीं । सावध पुढें परिसावें ।३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आत्मनिवेदनभक्तिनाम' समास नववा समाप्त.

दशक ४: समास १० मुक्तिचतुष्टय

।। श्रीराम ॥

मुळी ब्रह्म निराकार । तेथें स्फूर्तिरूप अहंकार । तो पंचभूतांचा विचार । ज्ञानदशकीं बोलिला तो अहंकार वायोरूप । तयावरी तेजाचें स्वरूप । तया तेजाच्या आधारें आप । आवर्णोदक दाटलें । २ । तया आवर्णोदकाच्या आधारें । घरा धरिली फणिवरें। वरती छपन्न कोटी विस्तारें । वसुंधरा हे इयेवरी परिघ सप्त सागर । मध्य मेरु माहां थोर । अष्ट दिग्पाळ तो परिवार । अंतरें वेष्टित राहिला । ४ । तो सुवर्णांचा माहां मेरु । पृथ्वीस तयाचा आधारु । चौऱ्यांसी सहस्र विस्तारु । रुंदी तयाची उंच तरी मयदिवेगळा । भूमीमधें सहस्र सोळा । तया भोवता वेष्टित पाळा । लोकालोक पर्वताचा तया ऐलिकडे हिमाचळ । जेथें पांडव गळाले सकळ। धर्म आणि तमाळनीळ । पुढें गेले जेथें जावया मार्ग नाहीं। मार्गी पसरले माहा अही। सितसुखें सुखावले तें हि । पर्वतरूप भासती । ८ ।

| तया ऐलिकडे सेवटीं जाण । बद्रिकाश्रम बद्रिनारायण । तेथें माहां तापसी निर्वाण । देहत्यागार्थ जाती । १ । तया ऐलिकडे बद्रिकेदार । पाहोन येती लाहानथोर । ऐसा हा अवधा विस्तार । मेरुपर्वताचा ।१०। तया मेरुपर्वतापाठारीं । तीन शृंगें विषमहारी । परिवारें राहिले तयावरी । ब्रह्मा विष्णु महेश ।११। ब्रह्मशृंग तो पर्वताचा । विष्णुशृंग तो मर्गजाचा । शिवशृंग तो स्फिटकाचा । कैळास नाम त्याचें ।१२। वैकुंठ नाम विष्णुशृंगाचें । सत्यलोक नाम ब्रह्मशृंगाचें । अमरावती इंद्राचें । स्थळ खालतें ।१३। तेथें गण गंधर्व लोकपाळ । तेतिसकोटी देव सकळ । चौदा लोक सुवर्णाचळ । वेष्टित राहिले ।१४। तेथें कामधेनूचीं खिलारें । कल्पतरूचीं बनें अपारें । अमृताचीं सरोवरें । ठाईं ठाईं उचंबळतीं ।१५। तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथे अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
|--|
| तया ऐलिकडे बद्रिकेदार । पाहोन येती लाहानथोर । ऐसा हा अवघा विस्तार । मेरुपर्वताचा ।१०। तया मेरुपर्वतापाठारीं । तीन शृंगें विषमहारी । परिवारें राहिले तयावरी । ब्रह्मा विष्णु महेश्रा ।११। ब्रह्मशृंग तो पर्वताचा । विष्णुशृंग तो मर्गजाचा । शिवशृंग तो स्फटिकाचा । कैळास नाम त्याचें ।१२। वैकुंठ नाम विष्णुशृंगाचें । सत्यलोक नाम ब्रह्मशृंगाचें । अमरावती इंद्राचें । स्थळ खालतें ।१३। तेथें गण गंधर्व लोकपाळ । तेतिसकोटी देव सकळ । चौदा लोक सुवर्णाचळ । वेष्टित राहिले ।१४। तेथें कामधेनूचीं खिलारें । कल्पतरूचीं बनें अपारें । अमृताचीं सरोवरें । ठाईं ठाईं उचंबळतीं ।१५। तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणसिळा । तेथे अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिळ्य गंधें दिळ्य सुमनें । |
| ऐसा हा अवघा विस्तार । मेरुपर्वताचा ।१०। तया मेरुपर्वतापाठारीं । तीन शृंगें विषमहारी । परिवारें राहिले तयावरी । ब्रह्मा विष्णु महेश ।११। ब्रह्मशृंग तो पर्वताचा । विष्णुशृंग तो मर्गजाचा । शिवशृंग तो स्फिटकाचा । कैळास नाम त्याचें ।१२। वैकुंठ नाम विष्णुशृंगाचें । सत्यलोक नाम ब्रह्मशृंगाचें । अमरावती इंद्राचें । स्थळ खालतें ।१३। तेथें गण गंधर्व लोकपाळ । तेतिसकोटी देव सकळ । चौदा लोक सुवर्णाचळ । वेष्टित राहिले ।१४। तेथें कामधेनूचीं खिलारें । कल्पतरूचीं बनें अपारें । अमृताचीं सरोवरें । ठाईं ठाईं उचंबळतीं ।१५। तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथें अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिळ्य गंधें दिळ्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| परिवारें राहिले तयावरी । ब्रह्मा विष्णु महेश ।११। ब्रह्मशृंग तो पर्वताचा । विष्णुशृंग तो मर्गजाचा । शिवशृंग तो स्फिटिकाचा । कैळास नाम त्याचें ।१२। वैकुंठ नाम विष्णुशृंगाचें । सत्यलोक नाम ब्रह्मशृंगाचें । अमरावती इंद्राचें । स्थळ खालतें ।१३। तेथें गण गंधर्व लोकपाळ । तेतिसकोटी देव सकळ । चौदा लोक सुवर्णाचळ । वेष्टित राहिले ।१४। तेथें कामधेनूचीं खिलारें । कल्पतरूचीं बनें अपारें । अमृताचीं सरोवरें । ठाईं ठाईं उचंबळतीं ।१५। तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथे अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| ब्रह्मशृंग तो पर्वताचा । विष्णुशृंग तो मर्गजाचा । शिवशृंग तो स्फिटिकाचा । कैळास नाम त्याचें । १२। वैकुंठ नाम विष्णुशृंगाचें । सत्यलोक नाम ब्रह्मशृंगाचें । अमरावती इंद्राचें । स्थळ खालतें ।१३। तेथें गण गंधर्व लोकपाळ । तेतिसकोटी देव सकळ । चौदा लोक सुवर्णाचळ । वेष्टित राहिले ।१४। तेथें कामधेनूचीं खिलारें । कल्पतरूचीं बनें अपारें । अमृताचीं सरोवरें । ठाईं ठाईं उचंबळतीं ।१५। तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथे अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें। अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| शिवशृंग तो स्फिटिकाचा । कैळास नाम त्याचें । १२। वैकुंठ नाम विष्णुशृंगाचें । सत्यलोक नाम ब्रह्मशृंगाचें । अमरावती इंद्राचें । स्थळ खालतें ।१३। तेथें गण गंधर्व लोकपाळ । तेतिसकोटी देव सकळ । चौदा लोक सुवर्णाचळ । वेष्टित राहिले ।१४। तेथें कामधेनूचीं खिलारें । कल्पतरूचीं बनें अपारें । अमृताचीं सरोवरें । ठाईं ठाईं उचंबळतीं ।१५। तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथें अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| वैकुंठ नाम विष्णुशृंगाचें । सत्यलोक नाम ब्रह्मशृंगाचें । अमरावती इंद्राचें । स्थळ खालतें ।१३। तेथें गण गंधर्व लोकपाळ । तेतिसकोटी देव सकळ । चौदा लोक सुवर्णाचळ । वेष्टित राहिले ।१४। तेथें कामधेनूचीं खिलारें । कल्पतरूचीं बनें अपारें । अमृताचीं सरोवरें । ठाईं ठाईं उचंबळतीं ।१५। तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथें अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| अमरावती इंद्राचें । स्थळ खालतें ।१३। तेथें गण गंधर्व लोकपाळ । तेतिसकोटी देव सकळ । चौदा लोक सुवर्णाचळ । वेष्टित राहिले ।१४। तेथें कामधेनूचीं खिलारें । कल्पतरूचीं बनें अपारें । अमृताचीं सरोवरें । ठाईं ठाईं उचंबळतीं ।१५। तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथें अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| तेथें गण गंधर्व लोकपाळ । तेतिसकोटी देव सकळ । चौदा लोक सुवर्णाचळ । वेष्टित राहिले ।१४। तेथें कामधेनूचीं खिलारें । कल्पतरूचीं बनें अपारें । अमृताचीं सरोवरें । ठाईं ठाईं उचंबळतीं ।१५। तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथे अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| वौदा लोक सुवर्णाचळ । वेष्टित राहिले । १४। तेथें कामधेनूचीं खिलारें । कल्पतरूचीं बनें अपारें । अमृताचीं सरोवरें । ठाईं ठाईं उचंबळतीं ।१५। तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथे अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| तेथें कामधेनूचीं खिलारें । कल्पतरूचीं बनें अपारें । अमृताचीं सरोवरें । ठाईं ठाईं उचंबळतीं ।१५। तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथे अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| अमृताचीं सरोवरें । ठाईं ठाईं उचंबळतीं ।१५। तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथे अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| तेथें उदंड चिंतामणी । हिरे परिसांचियां खाणी । तेथें सुवर्णमये धरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथे अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| तेथें सुवर्णमये घरणी । लखलखायमान ।१६। परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथे अखंड हरुषवेळा । आनंदमये ।१७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| परम रमणीये फांकती किळा । नवरत्नाचिया पाषाणिसळा । तेथे अखंड हरुषवेळा । आनंदमये । १७। तेथे अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर । १८। |
| तेथे अखंड हरुषवेळा । आनंदमये । १७। तेथें अमृताचीं भोजनें । दिव्य गंधें दिव्य सुमनें । अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर । १८। |
| तेथें अमृताचीं भोजनें। दिव्य गंधें दिव्य सुमनें। अष्ट नायका गंधर्वगायनें। निरंतर ।१८। |
| अष्ट नायका गंधर्वगायनें । निरंतर ।१८। |
| |
| |
| तेथें तारुण्य वोसरेना । रोगव्याधीहि असेना । वृधाप्य आणी मरण येना । कदाकाळीं ।१९। |
| |
| तेथें येकाहूनि येक सुंदर । तेथें येकाहूनि येक चतुर । धीर उदार आणी शूर । मर्यादेवेगळे ।२०। |
| तेथें दिव्यदेह ज्योतिरूपें । विद्युल्यतेसारिखीं स्वरूपें । |
| तेथें येश कीर्ति प्रतापें। सिमा सांडिली ।२१। |

ऐसें तें स्वर्गभुवन । सकळ देवांचें वस्तें स्थान । तयां स्थळाचें महिमान । बोलिजे तितुकें थोडें ।२२। येथें ज्या देवाचें भजन करावें । तेथें ते देवलोकीं राहावें । स्वलोकता मुक्तीचें जाणावें । लक्षण ऐसें 1531 लोकीं राहावें ते स्वलोकता । समीप असावें ते समीपता । स्वरूपचि व्हावें ते स्वरूपता । तिसरी मुक्ती 1881 देवस्वरूप जाला देही । श्रीवत्स कौस्तुभ लक्ष्मी नाहीं । स्वरूपतेचे लक्षण पाहीं। ऐसें असे 1241 सुकृत आहे तों भोगिती । सुकृत सरतांच ढकलून देती। आपण देव ते असती । जैसे तैसे 1251 म्हणोनि तिनी मुक्ति नासिवंत । सायोज्यमुक्ति ते शाश्वत । तेंहि निरोपिजेल सावचित्त । ऐक आतां 1291 ब्रह्मांड नासेल कल्पांतीं । पर्वतासहित जळेल क्षिती । तेव्हां अवघेच देव जाती । मां मुक्ति कैंच्या तेथें ।२८। तेव्हां निर्गुण परमात्मा निश्चळ । निर्गुण भक्ति तेहि अचळ । सायोज्यमुक्ती ते केवळ । जाणिजे ऐसी निर्गुणीं अनन्य असतां । तेणें होये सायोज्यता । सायोज्यता म्हणिजे स्वरूपता । निर्गुण भक्ती ।३०। सगुण भक्ति ते चळे। निर्गुण भक्ति ते न चळे। हें अवधें प्रांजळ कळे। सद्गुरु केलियां 1361

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'मुक्तिचतुष्टयनाम' समास दहावा समाप्त.

दशक चौथा समाप्त

दशक पाचवा : मंत्रांचा

दशक ५ : समास १

॥ श्रीराम ॥

| जय जय जी सद्गुरु पूर्णकामा । परमपुरुषा आत्मयारामा | 1 | | |
|---|---|----|---|
| अनुर्वाच्य तुमचा महिमा। वर्णिला नवचे | 1 | 8 | 1 |
| जें वेदांस सांकडें। जें शब्दांसि कानडें | 1 | | |
| तें सित्शिष्यास रोकडें। अलभ्य लाभे | l | 2 | 1 |
| जें योगियांचें निजवर्म। जें शंकराचें निजधाम | 1 | | |
| जें विश्रांतीचें निजविश्राम । परम गुह्य अगाध | l | 3 | l |
| तें ब्रह्म तुमचेनि योगें। स्वयें आपणचि होईजे आंगें | | | |
| दुर्घट संसाराचेनि पांगें । पांगिजेना सर्वथा | | 8 | 1 |
| आतां स्वामिचेनि लडिवाळपणें । गुरुशिष्यांचीं लक्षणें | ı | | |
| सांगिजेती तेणें प्रमाणें । मुमुक्षें शरण जावें | l | ų | ı |
| गुरु तों सकळांसी ब्राह्मण। जन्हीं तो जाला क्रियाहीन | | | |
| तरी तयासीच शरण । अनन्यभावें असावें | 1 | Ę | 1 |
| अहो या ब्राह्मणाकारणें। आवतार घेतला नारायेणें | 1 | | |
| विष्णूने श्रीवत्स मिरवणें । तेथें इतर ते किती | | 19 | 1 |
| ब्राह्मणवचनें प्रमाण । होती शूद्रांचे ब्राह्मण | ł | | |
| धातुपाषाणीं देवपण । ब्राह्मणाचेनि मंत्रें | | 6 | 1 |
| मुंजीबंधनेंविरहित । तो शूद्रचि निभ्रांत | ı | | |
| द्विजन्मी म्हणोनि सतंत । द्विज ऐसे नाम त्याचें | 1 | 9 | l |
| | | | |

| सकळांसि पूज्य ब्राह्मण । हे मुख्य वेदाज्ञा प्रमाण | |
|---|------|
| वेदविरहित तें अप्रमाण । अप्रिये भगवंता | 1601 |
| ब्राह्मणीं योग याग व्रतें दानें । ब्राह्मणीं सकळ तीर्थाटणें | t |
| कर्ममार्ग ब्राह्मणाविणें । होणार नाहीं | 1881 |
| ब्राह्मण वेद मूर्तिमंत । ब्राह्मण तोचि भगवंत | |
| पूर्ण होती मनोरथ । विप्रवाक्येंकरूनी | 1651 |
| ब्राह्मणपूजनें शुद्ध वृत्ती । होऊन, जडे भगवंतीं | 1 |
| ब्राह्मणतीर्थे उत्तम गती । पावती प्राणी | |
| लक्षभोजनीं पूज्य ब्राह्मण । आन यातिसी पुसे कोण | 1 |
| तरी भगवंतासि भाव प्रमाण । येरा चाड नाहीं | |
| असो ब्राह्मणा सुरवर वंदिती । तेथें मानव बापुडें किती | l |
| जरी ब्राह्मण मूढमती । तरी तो जगद्वंद्य | |
| अंत्येज शब्दज्ञाता बरवा । परी तो नेऊन काये करावा | |
| ब्राह्मणासन्निध पुजावा । हें तों न घडे कीं | |
| जें जनावेगळें केलें। ते वेदें अव्हेरिले | |
| म्हणोनि तयासी नाम ठेविलें । पाषांडमत | 1881 |
| असो जे हरिहरदास । तयास ब्राह्मणीं विस्वास | |
| ब्राह्मणभजनें बहुतांस । पावन केलें | 1881 |
| ब्राह्मणें पाविजे देवाधिदेवा । तरी किमर्थ सद्गुरु करावा | |
| ऐसें म्हणाल तरी निजठेवा । सद्गुरुविण नाहीं | |
| स्वधर्मकर्मी पूज्य ब्राह्मण । परी ज्ञान नव्हे सद्गुरुविण | |
| ब्रह्मज्ञान नस्तां सीण । जन्ममृत्य चुकेना | |
| सद्गुरुविण ज्ञान कांहीं। सर्वथा होणार नाहीं | |
| अज्ञान प्राणी प्रवाहीं । वाहातचि गेले | 1561 |

| ज्ञानविरहित जें जें केलें। तें तें जन्मासि मूळ जालें। |
|--|
| म्हणौनि सद्गुरूचीं पाऊलें । सुदृढ धरावीं । २२। |
| जयास वाटे देव पाहावा । तेणें सत्संग धरावा । |
| सत्संगेविण देवाधिदेवा । पाविजेत नाहीं । २३। |
| नाना साधनें बापुडीं । सद्गुरुविण करिती वेडीं । |
| गुरुकृपेविण कुडकुडीं। वेर्थीच होती । २४। |
| कार्तिकस्नानें माघस्नानें । व्रतें उद्यापनें दानें । |
| गोरांजनें धूप्रपानें । साधिती पंचाग्नी । २५। |
| हरिकथा पुराणश्रवण । आदरें करिती निरूपण । |
| सर्व तीर्थे परम कठिण । फिरती प्राणी ।२६। |
| झळफळित देवताचीनं । स्नानें संध्या दर्भासनें । |
| टिळे माळा गोपीचंदने । ठसे श्रीमुद्रांचे । २७। |
| अर्घ्यपात्रें संपुष्ट गोकर्णे । मंत्रयंत्रांची तांब्रपर्णे । |
| नाना प्रकारींचीं उपकर्णें । साहित्यशोभा । २८। |
| घंटा घणाघणा वाजती । स्तोत्रें स्तवनें आणि स्तुती । |
| आसनें मुद्रा ध्यानें करिती । प्रदक्ष्णा नमस्कार ।२९। |
| पंचायेल पूजा केली । मृत्तिकेचीं लिंगें लाखोली । |
| बेले नारिकेळें भरिली। संपूर्ण सांग पूजा ।३०। |
| उपोषणें निष्ठा नेम । परम सायासी केलें कर्म । |
| फळिच पावती, वर्म। चुकले प्राणी ।३१। |
| येज्ञादिकें कर्में केलीं। हृदई फळाशा कल्पिली। |
| आपले इछेनें घेतली । सूति जन्मांची ।३२। |
| करूनि नाना सायास । केला चौदा विद्यांचा अभ्यास । |
| रिद्धिसिद्धि सावकास । वोळल्या जरी । ३३। |

| तरी सद्गुरुकृपेविरहित । सर्वथा न घडे स्वहित। |
|---|
| येमपुरीचा अनर्थ। चुकेना येणें ।३४। |
| जंव नाहीं ज्ञानप्राप्ती । तंव चुकेना यातायाती । |
| गुरुकृपेविण अधोगती । गर्भवास चुकेना । ३५। |
| ध्यान धारणा मुद्रा आसन । भक्ती भाव आणी भजन। |
| सकळिह फोल, ब्रह्मज्ञान । जंव तें प्राप्त नाहीं ।३६। |
| सद्गुरुकृपा न जोडे । आणी भलतीच कडे वावडे । |
| जैसें आंधळें चाचरोन पडे । गारीं आणि गडधरा ।३७। |
| जैसें नेत्रीं घालितां अंजन । पडे दृष्टीस निघान । |
| तैसें सद्गुरुवचनें ज्ञान- । प्रकाश होये ।३८। |
| सद्गुरुविण जन्म निर्फळ । सद्गुरुविण दुःख सकळ। |
| सद्गुरुविण तळमळ । जाणार नाहीं ।३९। |
| सद्गुरुचेनि अभयंकरें। प्रगट होईजे ईश्वरें। |
| संसारदुःखें अपारें। नासोन जाती ।४०। |
| मागें जाले थोर थोर। संत महंत मुनेश्वर। |
| तयांसिंह ज्ञानविज्ञानविचार । सद्गुरुचेनी ।४१। |
| श्रीरामकृष्ण आदिकरूनी । अतितत्पर गुरुभजनीं । |
| सिद्ध साधु आणी संतजनीं । गुरुदास्य केलें ।४२। |
| सकळ सृष्टीचे चाळक । हरिहरब्रह्मादिक |
| ताह सद्गुरुपदीं रंक। महत्त्वा न चढेती ।४३। |
| असी जयासि मोक्ष व्हावा । तेणें सदग्रह करावा । |
| भूगुरावण माक्ष पावावा । हें कल्पांती न घडे । ४४। |
| आता सदगर ते केने । नेने । |
| जयांचे कृपेनें प्रकाशे। शुद्ध ज्ञान |

aa

त्या सद्गुरूची वोळखण। पुढिले समासीं निरूपण। बोलिलें असे श्रोतीं श्रवण। अनुक्रमें करावें ।४६।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'गुरुनिश्चयनाम' समास पहिला समाप्त.

दशक ५ : समास २ गुरुलक्षण ॥ श्रीराम ॥

जे करामती दाखविती। ते हि गुरु म्हणिजेती। परंतु सद्गुरु नव्हेती । मोक्षदाते 181 सभामोहन भुररीं चेटकें। साबरमंत्र कौटालें अनेकें। नाना चमत्कार कौतुकें । असंभाव्य सांगती सांगती औषधीप्रयोग । कां सुवर्णधातूचा मार्ग । दृष्टिबंधनें लागवेग । अभिळाषाचा साहित संगीत रागज्ञान । गीत नृत्य तान मान । नाना वाद्यें सिकविती जन । तेहि येक गुरु । ४। विद्या सिकविती पंचाक्षरी । ताडेतोडे नानापरी । कां पोट भरे जयावरी । ते विद्या सिकविती । ५ । यातीचा जो व्यापार । सिकविती भरावया उदर । तेहि गुरु परी साचार । सद्गुरु नव्हेती 1 6 1 आपली माता आणी पिता । तेहि गुरुचि तत्वतां । परी पैलपार पावविता । तो सद्गुरु वेगळा

गाईत्रीमंत्राचा उचारु । सांगे तो साचार कुळगुरु । परी ज्ञानेंविण पैलपारु । पाविजेत नाहीं । ८ । जो ब्रह्मज्ञान उपदेसी । अज्ञानअंधारें निरसी । जीवात्मयां परमात्मयांसी । ऐक्यता करी । ९ । विघडले देव आणी भक्त । जीवशिवपणें द्वैत । तया देवभक्तां येकांत । करी तो सद्गुरु । १०। भवव्याघ्रें घालूनि उडी । गोवत्सास तडातोडी । केली देखोनि सीघ्र सोडी । तो सद्गुरु जाणावा । ११। प्राणी मायाजाळीं पडिलें। संसारदुःखें दुःखवलें। ऐसें जेणें मुक्त केलें। तो सद्गुरु जाणावा ।१२। वासनानदीमाहांपुरीं । प्राणी बुडतां ग्लांती करी। तेथें उडीं घालूनि तारी। तो सद्गुरु जाणावा ।१३। गर्भवास अति सांकडी । इछाबंधनाची बेडी । ज्ञान देऊन सीघ्र सोडी । तो सद्गुरु स्वामी ।१४। फोडूनि शब्दाचें अंतर । वस्तु दाखवि निजसार । तोचि गुरु माहेर । अनाथांचें 1941 जीव येकदेसी बापुडें। तयास ब्रह्मचि करी रोकडें। फेडी संसारसांकडें । वचनमात्रें । १६। जें वेदांचे अभ्यांतरीं । तें काढून अपत्यापरी । शिष्य श्रवणीं कवळ भरी । उद्गारवचनें ।१७। वेद शास्त्र माहानुभाव । पाहातां येकचि अनुभव। तोचि येक गुरुराव । ऐक्यरूपें 1१८। संदेह नि:शोष जाळी । स्वधर्म आदरें प्रतिपाळी । वेदविरहित 1881 टवाळी । करूंच नेणे

| जें जें मन आंगिकारी। तें तें स्वयें मुक्त करी। |
|--|
| तो गुरु नव्हे भिकारी। झडे आला ।२०। |
| शिष्यास न लविती साधन। न करविती इंद्रियेंदमन। |
| ऐसे गुरु आडक्याचे तीन । मिळाले तरी त्यजावे । २१। |
| जो कोणी ज्ञान बोधी । समळ अविद्या छेटी । |
| इद्रियदमन प्रतिपादी । तो सद्गुरु जाणावा ।२२। |
| येक द्रव्याचे विकिले। येक शिष्याचे आखिले। |
| आत दुराशेनें केले। दीनरूप ।२३। |
| जें जें रुचे शिष्यामनीं। तैसीच करी मनधरणी। |
| एसा कामना पापिणी। पडली गळां । २४। |
| जो गुरु भीडसारु । तो अन्द्रमाहन अन्द्रम लोक । |
| चारटा मैद पामरु । द्रव्यभोंदु । २५। |
| जैसा वैद्य दुराचारी। केली सर्वस्वें बोहरी। |
| आणी सेखी भीड करी। घातघेणा ।२६। |
| तैसा गुरु नसावा । जेणें अंतर पडे देवा । |
| भीड करूनियां गोवा । घाली बंधनाचा । २७। |
| जेथें शुद्ध ब्रह्मज्ञान । आणी स्थूळ क्रियेचें साधन । |
| ताचि सद्गुरु निधान । दाखवी डोळां । २८। |
| देखणें दाखिवती आदरें। मंत्र फुंकती कर्णद्वारें। |
| इतुकेंच ज्ञान तें पामरें । अंतरलीं भगवंता । २९। |
| बाणे तिहींची खूण। तोचि गुरु सुलक्षण। |
| तिथेचि रिघावें शरण। अत्यादरें मुमुक्षें ।३०। |
| अद्वैत निरूपणें अगाध वक्ता । परी विषई लोलंगता । |
| ऐसिया गुरूचेनि सार्थकता । होणार नाहीं ।३१। |

जैसा निरूपणसमयो । तैसेंचि मनहि करी वायो । कृतबुद्धीचा जयो । जालाच नाहीं । ३२। निरूपणीं सामर्थ्य सिद्धी । श्रवण होतां दुराशा बाधी । नाना चमत्कारें बुद्धी । दंडळूं लागे ।३३। पूर्वी ज्ञाते विरक्त भक्त । तयांसि सादृश्य भगवंत । आणि सामर्थ्यहि अद्भृत । सिद्धीचेनि योगें ।३४। ऐसें तयांचें सामर्थ्य । आमुचें ज्ञानचि नुसदें वेर्थ । ऐसा सामर्थ्याचा स्वार्थ। अंतरीं वसे ।३५। निशेष दुराशा तुटे। तरीच भगवंत भेटे। दुराशा धरिती ते वोखटे। शब्दज्ञाते कामिक ।३६। बहुत ज्ञातीं नागवलीं । कामनेनें वेडीं केलीं । कामना इच्छितांच मेलीं । बापुडीं मूर्खें ।३७। निशेष कामनारहित । ऐसा तो विरुळा संत । अवध्यां वेगळें मत । अक्षै ज्याचें ।३८। अक्षै ठेवा सकळांचा । परी पांगडा फिटेना शरीराचा । तेणें मार्ग ईश्वराचा । चुकोनि जाती । ३९। सिद्धि आणि सामर्थ्य जालें । सामर्थ्यं देहास महत्त्व आलें । तेणें बेंचाड बळकावलें । देहबुद्धीचें ।४०। सांडूनि अक्षे सुख । सामर्थ्य इछिती ते मूर्ख । कामनेसारिखें दुःख । आणीक कांहींच नाहीं ।४१। ईश्वरेंविण जे कामना । तेणेंचि गुणें नाना यातना । पावती होती पतना । वरपडे प्राणी ।४२। होतां शरीरासी अंत । सामर्थ्यिह निघोन जात । सेखीं अंतरला भगवंत । कामनागुणें ।४३।

| म्हणोनि निःकामताविचारु । दृढबुद्धीचा निर्धारु | 1 |
|--|------|
| तोचि सद्गुरु पैलपारु । पाववी भवाचा | 1881 |
| मुख्य सद्गुरूचें लक्षण । आधीं पाहिजे विमळ ज्ञान | 1 |
| निश्चयाचें समाधान । स्वरूपस्थिती | १४५। |
| याहिवरी वैराग्य प्रबळ । वृत्ति उदास केवळ | 1 |
| विशेष आचारें निर्मळ । स्वधर्मविषईं | 1861 |
| याहिवरी अध्यात्मश्रवण । हरिकथानिरूपण | l |
| जेथे परमार्थविवरण । निरंतर | ।४७। |
| जेथें सारासारविचार । तेथें होये जगोद्धार | 1 |
| नवविद्या भक्तीचा आधार । बहुत जनासी | 1881 |
| म्हणोनि नवविधा भजन। जेथें प्रतिष्ठलें साधन | 1 |
| हें सद्गुरूचें लक्षण । श्रोतीं वोळखावें | 1881 |
| अंतरीं शुद्ध ब्रह्मज्ञान । बाह्य निष्ठेचें भजन | 1 |
| तेथें बहु भक्त जन। विश्रांति पावती | 1401 |
| नाहीं उपासनेचा आधार । तो परमार्थ निराधार | 1 |
| कर्मेविण अनाचार । भ्रष्ट होती | 1481 |
| म्हणोनि ज्ञान वैराग्य आणि भजन । स्वधर्मकर्म आणि साधन | 1 |
| कथा निरूपण श्रवण मनन । नीति न्याये मर्यादा | 1421 |
| यामधें येक उणें असे । तेणें तें विलक्षण दिसे | 1 |
| म्हणौन सर्व हि विलसे । सद्गुरुपासीं | 1431 |
| तो बहुतांचें पाळणकर्ता । त्यास बहुतांची असे चिंता | 1 |
| नाना साधनें समर्था । सद्गुरुपासीं | १५४। |
| साधनेंविण परमार्थ प्रतिष्ठे । तो मागुतां सवेंच भ्रष्टे | 1 |
| याकारणें दुरीद्रष्टे । माहानुभाव | 1441 |

| आचार उपासना सोडिती । ते भ्रष्ट अभक्त दिसती | 1 |
|---|---------|
| जळो तयांची महंती । कोण पुसे | ।५६। |
| कर्म उपासनेचा अभाव । तेथें भकाधेसि जाला ठाव | 1 |
| तो कानकोंडा समुदाव । प्रपंची हांसती | ।५७। |
| नीच यातीचा गुरु । तोहि कानकोंडा विचारु | 1 |
| ब्रह्मसभेस जैसा चोरु । तैसा दडे | 1461 |
| ब्रह्मसभे देखतां । त्याचे तीर्थ नये घेतां | |
| अथवा प्रसाद सेवितां । प्राश्चित पडे | |
| तीर्थप्रसादाची सांडी केली। तेथें नीचता दिसोन आली | |
| गुरुभक्ति ते सटवली । येकायेकी | |
| गुरूची मर्यादा राखतां । ब्राह्मण क्षोभती तत्वतां | l . |
| तेथें ब्राह्मण्य रक्षूं जाता । गुरुक्षोभ घडे | |
| ऐसीं सांकडीं दोहींकडे । तेथें प्रस्तावा घडे | |
| नीच यातीस गुरुत्व न घडे । याकारणें | 1 ६ २ । |
| तथापि आवडी घेतली जीवें । तरी आपणचि भ्रष्टावें | |
| बहुत जनांसी भ्रष्टवावें । हें तों दूषणचि कीं | |
| आतां असो हा विचारु । स्वयातीचा पाहिजे गुरु | |
| नाहीं तरी भ्रष्टाकारु । नेमस्त घडे | ।६४। |
| जे जे कांहीं उत्तम गुण । तें तें सद्गुरूचें लक्षण | |
| तथापि सांगों वोळखण। होये जेणें | 1841 |
| येक गुरु येक मंत्रगुरु । येक यंत्रगुरु येक तांत्रगुरु | |
| येक वस्तादगुरु येक राजगुरु । म्हणती जनीं | ६६ |
| येक कुळगुरु येक मानिला गुरु । येक विद्यागुरु येक कुविद्यागुरु | |
| येक असद्गुरु येक यातिगुरु । दंडकर्ते | ।६७। |

येक मातागुरु येक पितागुरु । येक राजागुरु येक देवगुरु ।

येक बोलिजे जगद्गुरु । सकळकळा ।६८।

ऐसे हे सत्रा गुरु । याहिवेगळे आणीक गुरु ।

ऐक तयांचा विचारु । सांगिजेल ।६९।

येक स्वप्नगुरु येक दीक्षागुरु । येक म्हणती प्रतिमागुरु ।

येक म्हणती स्वयें गुरु । आपला आपण ।७०।

जे जे यातीचा जो व्यापारु । ते ते त्याचे तितुके गुरु ।

याचा पाहातां विचारु । उदंड आहे ।७१।

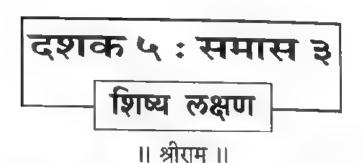
असो ऐसे उदंड गुरु । नाना मतांचा विचारु ।

परी जो मोक्षदाता सद्गुरु । तो वेगळाचि असे ।७२।

नाना सद्विद्येचे गुण । याहिवरी कृपाळूपण ।

हें सद्गुरूचें लक्षण । जाणिजे श्रोतीं ।७३।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'गुरुलक्षणनाम' समास दुसरा समाप्त.



मागां सद्गुरूचें लक्षण । विशद केलें निरूपण । आतां सिच्छिष्याची वोळखण । सावध ऐका । १ । सद्गुरुविण सिच्छिष्य । तो वायां जाय निशेष । कां सिच्छिष्येंविण विशेष । सद्गुरु सिणे । २ ।

| उत्तम भूमि शोधिली शुद्ध । तेथें बीज पेरिलें किडखाद कां तें उत्तम बीज परि संमंघ । खडकेंसि पडिला | | th. | 1 |
|---|------|-----|-----|
| तैसा सच्छिष्य तें सत्पात्र । परंतु गुरु सांगे मंत्र तंत्र तेथें अरत्र ना परत्र । कांहींच नाहीं | l | | |
| अथवा गुरु पूर्ण कृपा करी । परी शिष्य अनाधिकारी भाग्यपुरुषाचा भिकारी । पुत्र जैसा | | ų | ı |
| तैसें येकाविण येक । होत असे निरार्थक परलोकीचें सार्थक । तें दुन्हावे | ı | | |
| म्हणौनि सद्गुरु आणी सिच्छिष्य । तेथें न लगती सायास त्यां उभयतांचा हव्यास । पुरे येकसरा | l | | |
| सुभूमि आणी उत्तम कण । उगवेना प्रजन्येविण | ı | ٤ | |
| सेत पेरिलें आणी उगवलें । परंतु निगेविण गेलें | | 9 | 1 |
| जंबरी पीक आपणास भोगे । तंबरी अवर्धेचि करणें लागे पीक आलियां हि उगें । राहोचि नये | | १० | 1 |
| तैसें आत्मज्ञान जालें। परी साधन पाहिजे केलें येक वेळ उदंड जेविलें। तन्हीं सामग्री पाहिजे | l | | |
| म्हणौन साधन अभ्यास आणी सद्गुरु । सच्छिष्य आणी सच्छास्त्रविचारु | 1 | १२ | |
| सदुपासना सत्कर्म । सित्क्रया आणी स्वधर्म | l | १३ | 1 |
| ऐसें हें अवधेंचि मिळे। तरी च विमळ ज्ञान निवळे नाहीं तरी पाषांड संचरे बळें। समुदाई | | १४ | : 1 |

| येथे शब्द नाहीं शिष्यासी । हें अवघें सद्गुरुपासीं। |
|---|
| सद्गुरु पालटी अवगुणासी । नाना येत्नेकरूनी । १५। |
| सद्गुरुचेनि असच्छिष्य पालटे । परंतु सच्छिष्यें असद्गुरु न पालटे । |
| कां जें थोरपण तुटे। म्हणौनिया । १६। |
| याकारणें सद्गुरु पाहिजे । तरीच सन्मार्ग लाहिजे । |
| नाहीं तरी होईजे । पाषांडा वरपडे । १७। |
| येथें सद्गुरुचि कारण। येर सर्व निःकारण। |
| तथापि सांगों वोळखण। सिच्छिष्याची ।१८। |
| मुख्य सच्छिष्याचें लक्षण । सद्गुरुवचनीं विश्वास पूर्ण । |
| अनन्यभावें शरण । त्या नांव सच्छिष्य ।१९। |
| शिष्य पाहिजे निर्मळ । शिष्य पाहिजे आचारसीळ । |
| शिष्य पाहिजे केवळ । विरक्त अनुतापी ।२०। |
| शिष्य पाहिजे निष्ठावंत । शिष्य पाहिजे सुचिष्मंत । |
| शिष्य पाहिजे नेमस्त । सर्वप्रकारीं ।२१। |
| शिष्य पाहिजे साक्षपी विशेष । शिष्य पाहिजे परम दक्ष । |
| शिष्य पाहिजे अलक्ष । लक्षी ऐसा । २२। |
| शिष्य पाहिजे अति धीर । शिष्य पाहिजे अति उदार । |
| शिष्य पाहिजे अति तत्पर । परमार्थविषईं ।२३। |
| शिष्य पाहिजे परोपकारी । शिष्य पाहिजे निर्मत्सरी । |
| शिष्य पाहिजे अर्थांतरीं । प्रवेशकर्ता । २४। |
| शिष्य पाहिजे परम शुद्ध । शिष्य पाहिजे परम सावध । |
| शिष्य पाहिजे अगाध । उत्तम गुणाचा । २५। |
| शिष्य पाहिजे प्रज्ञावंत । शिष्य पाहिजे प्रेमळ भक्त । |
| शिष्य पाहिजे नीतिवंत । मयदिचा । २६। |

| शिष्य पाहिजे युक्तिवंत । शिष्य पाहिजे बुद्धिवंत । |
|--|
| शिष्य पाहिजे संतासंत । विचार घेता । २७। |
| शिष्य पाहिजे धारिष्टाचा । शिष्य पाहिजे दृढ व्रताचा । |
| शिष्य पाहिजे उत्तम कुळीचा । पुण्यसीळ । २८। |
| शिष्य असावा सात्विक। शिष्य असावा भजक। |
| शिष्य असावा साधक । साधनकर्ता । २९। |
| शिष्य असावा विश्वासी । शिष्य असावा कायाक्लेशी । |
| शिष्य असावा परमार्थासी । वाढऊं जाणे ।३०। |
| शिष्य असावा स्वतंत्र । शिष्य असावा जगमित्र । |
| शिष्य असावा सत्पात्र । सर्व गुणें ।३१। |
| शिष्य असावा सद्विद्येचा । शिष्य असावा सद्भावाचा । |
| शिष्य असावा अंतरींचा । परम शुद्ध । ३२। |
| शिष्य नसावा अविवेकी । शिष्य नसावा गर्भसुखी । |
| शिष्य असावा संसारदुःखी । संतप्तदेही । ३३। |
| जो संसारदुःखे दुःखावला । जो त्रिविधतापें पोळला । |
| तोचि अधिकारी जाला । परमार्थाविषीं । ३४। |
| बहु दुःख भोगिलें जेणें । तयासीच परमार्थ बाणे। |
| संसारदुःखाचेनि गुणें । वैराग्य उपजे । ३५। |
| जया संसाराचा त्रास । तयासीच उपजे विश्वास । |
| विस्वासबळें दृढ कास । धरिली सद्गुरुची ।३६। |
| अविस्वासें कास सोडिली । ऐंसी बहुतेक भवीं बुडालीं । |
| नाना जळचरीं तोडिलीं । मध्येंचि सुखदुःखें ।३७। |
| याकारणें दृढ विस्वास । तोचि जाणावा सच्छिष्य । |
| मोक्षाधिकारी विशेष । आव्रगण्यु । ३८। |

| जो सद्गुरुवचर्ने निवाला । तो सायोज्यतेचा आंखिला । |
|---|
| संसारपांगें पांगिला । न वचे कदा । ३९। |
| सद्गुरुहून देव मोठा। जयास वाटे तो करंटा। |
| सुटला वैभवाचा फांटा। सामर्थ्यपिसें ।४०। |
| सद्गुरुस्वरूप तें संत । आणी देवांस मांडेल कल्पान्त । |
| तेथे कैंचे उरेल सामर्थ्य । हरिहरांचें ।४१। |
| म्हणौन सद्गुरुसामर्थ्य आधीक । जेथें आटती ब्रह्मादिक । |
| अल्पबुद्धी मानवी रंक । तयांसि हें कळेना ।४२। |
| गुरुदेवास बराबरी । करी तो शिष्य दुराचारी । |
| भ्राति बैसली अभ्यांतरीं । सिन्दांत नेणवे ।४३। |
| देव मनुषीं भाविला । मंत्रीं देवपणासी आला । |
| सद्गुरु न वचे कल्पिला। ईश्वराचेनि ।४४। |
| म्हणोनि सद्गुरु पूर्णपूर्णे । देवाहून आधीक कोविताले । |
| जयासि वर्णितां भांडणें । वेदशास्त्रीं लागलीं ।४५। |
| असो सद्गुरुपदापुढें । दुजें कांहींच न चढे । |
| दवसामध्य ते केवढें । मायाजनित । ४६ । |
| अही सद्गुरुकृपा जयासी । सामर्थ्य न चले त्यापारी |
| रानबळ वैभवासी । तृणतुछ केलें । ४७ । |
| सद्गुरुकृपेचेनि बळें । अपरोक्षज्ञानाचेनि उसाळें । |
| नायसाहत ब्रह्मांड संगळें । दष्टीस न ये |
| एस सच्छिष्याचे तैशक । मनगरकारी — |
| ाण गुण देवराव । स्वरोचि होती |
| अतरा अनतापें तापले । नेपों अंतर |
| पुढें सद्गुरुवचनें निवाले । सच्छिष्य ऐसे ।५०। |

लागतां सद्गुरुवचनपंथें । जालें ब्रह्मांड पालथें । तरी जयाच्या शुद्ध भावार्थे । पालट न घरिजे ।५१। शरण सद्गुरूस गेले । सच्छिष्य ऐसे निवडले । क्रियापालटें जाले । पावन ईश्वरीं ।५२। ऐसा सद्भाव अंतरीं। तेचि मुक्तीचे वाटेकरी। येर माईक वेषधारी । असच्छिष्य । ५३। वाटे विषयांचें सुख । परमार्थ संपादणें लौकिक । देखोवेखीं पढतमूर्ख । शरण गेले । ५४। जाली विषईं वृत्ति अनावर । दृढ धरिला संसार । परमार्थचर्चेचा विचार । मळिण जाला ।५५। मोड घेतला परमार्थाचा । हव्यास धरिला प्रपंचाचा । भार वाहिला कुटुंबाचा । काबाडी जाला । ५६। मानिला प्रपंचीं आनंद। केला परमार्थे विनोद। भ्रांत मूढ मतिमंद । लोघला कामीं ।५७। सूकर पूजिलें विलेपनें। म्हैसा मर्दिला चंदनें। तैसा विषई ब्रह्मज्ञानें । विवेकें बोधिला । ५८। रासभ उकरडां लोळे । तयासि परिमळसोहळे । उलुक अंधारीं पळे। तया केवी हंसपंगती ।५९। तैसा विषयदारींचा बराडी । घाली अधः पतनीं उडी । तयास भगवंत आवडी । सत्संग कैंचा ।६०। वर्ती करून दांताळीं । स्वानपुत्र हाडें चगळी । तैसा विषई तळमळी । विषयसुखाकारणें । ६१। तया स्वानमुखीं परमान्न । कीं मर्कटास सिंहासन । तैसें विषयशक्तां ज्ञान । जिरेल कैचें ।६२।

| रासभें राखतां जन्म गेला । तो पंडितांमध्ये प्रतिष्ठिला । |
|--|
| न वचे तैसा आशक्ताला । परमार्थ नाहीं ।६३। |
| मिळाला राजहंसांचा मेळा। तेथें आला डोंबकावळा। |
| लक्षून विष्ठेचा गोळा । हंस म्हणवी । ६४। |
| तैसे सज्जनांचे संगती । विषई सज्जन म्हणविती । |
| विषय आमेद्य चित्तीं । गोळा लक्षिला ।६५। |
| काखे घेऊनियां दारा । म्हणे मज संन्यासी करा । |
| तैसा विषई सैरावैरा । ज्ञान बडबडी ।६६। |
| असो ऐसे पढतमूर्ख । ते काय जाणती अद्वैतसुख । |
| नारकी प्राणी नर्क। भोगती स्वइच्छा ।६७। |
| वैषेची करील सेवा। तो कैसा मंत्री म्हणावा। |
| तैसा विषयदास मानावा। भक्तराज केवी ।६८। |
| तैसे विषई बापुडे। त्यांस ज्ञान कोणीकडे। |
| वाचाळ शाब्दिक बडबडे । वरपडे जाले ।६९। |
| ऐसे शिष्य परमनष्ट । कनिष्ठांमध्यें कनिष्ठ । |
| हीन अविवेकी आणी दृष्ट । खळ खोटे दुर्जन ।७०। |
| ऐसे जे पापरूप। दीर्घदोषी वज्रलेप। |
| तयांस प्राश्चीत अनुताप । उद्भवतां आहे ।७१। |
| तेहि पुन्हां शरण जावें । सद्गुरूस संतोषवावें। |
| कृपादृष्टी जालियां व्हावें । पुन्हां शुद्ध . ।७२। |
| स्वामीद्रोह जया घडे। तो यावश्चंद्र नरकीं पडे। |
| तयास उपावचि न घडे। स्वामी तुष्टल्यावांचुनी ।७३। |
| स्मशानवैराग्य आलें । म्हणोन लोटांगण घातलें । तेणें गुणें उपतिष्ठलें । नाहीं ज्ञान । ७४। |
| अप गुण उपतिष्ठले । नाही ज्ञान । ७४। |

भाव आणिला जायाचा । मंत्र घेतला गुरूचा । शिष्य जाला दो दिसांचा। मंत्राकारणें ।७५। ऐसे केले गुरु उदंड । शब्द सिकला पाषांड । जाला तोंडाळ तर्मुंड। माहापाषांडी । ७६। घडी येक रडे आणी पडे । घडी येक वैराग्य चढे । घडी येक अहंभाव जडे । ज्ञातेपणाचा ।७७। घडी येक विस्वास धरी । सवेंच घडी येक गुर्गुरी। ऐसे नाना छंद करी। पिसाट जैसा ।७८। काम क्रोध मद मत्सर । लोभ मोह नाना विकार। अभिमान कापट्य तिरस्कार । हृदईं नांदती । ७९। अहंकार आणी देहपांग । अनाचार आणी विषयसंग । संसार प्रपंच उद्वेग। अंतरीं वसे ।८०। दीर्घसूत्री कृतघ्न पापी । कुकर्मी कुतर्की विकल्पी । अभक्त अभाव सीघ्रकोपी । निष्ठुर परघातक ।८१। हृदयेंसुन्य आणी आळसी । अविवेकी आणी अविस्वासी । अधीर अविचार संदेहासी । दृढ धर्ता । ८२। आशा ममता तृष्णा कल्पना । कुबुद्धी दुर्वृत्ति दुर्वासना । अल्पबुद्धि विषयकामना । हृदई वसे 1631 ईषणा असूया तिरस्कारें । निंदेस प्रवर्ते आदरें । देहाभिमानें हुंबरे । जाणपणें ।८४। क्षुधा तृष्णा आवरेना । निद्रा सहसा धरेना । कुटुंबचिंता वोसरेना । भ्रांति पडिली । ८ 1641 शाब्दिक बोले उदंड वाचा । लेश नाहीं वैराग्याचा । अनुताप धारिष्ट साधनाचा । मार्ग न धरी

| भक्ति विरक्ति ना शांती । सद्वृत्ति लीनता ना दांती । | |
|---|---|
| कृपा दया ना तृप्ती । सुबुद्धि असेच ना ।८७। | |
| कायाक्लेसीं शेरीरहीन । धर्मविषईं परम कृपण । | |
| क्रिया पालटेना कठिण । हृदय जयाचें ।८८। | |
| आर्जव नाहीं जनासी । जो अप्रिये सज्जनासी । | |
| जयाचे जिवीं आहिणेंसीं । परन्यून वसे ।८९। | |
| सदा सर्वकाळ लटिका। बोले माईक लापणिका। | |
| क्रिया विचार पाहातां येका । वचनीं सत्य नाहीं । १०। | |
| परपीडेविषईं तत्पर । जैसें विंचु आणि विखार । | |
| तैसा कुशब्दें जिव्हार । भेदी सकळांचें । ९१। | |
| आपले झांकी अवगुण । पुढिलांस बोले कठिण। | |
| मिथ्या गुणदोषेविण । गुणदोष लावी । १२। | |
| स्वयें पापात्मा अंतरीं । पुढिलांचि कणव न करी । | |
| जैसा हिंसक दुराचारी । परदुःखें शिणेना । ९३। | |
| दुःख पराव्याचे नेणती । दुर्जन गांजिलेची गांजिती । | |
| श्रम पावतां आनंदती । आपुले मनीं । ९४। | |
| स्वदुःखें झुरे अंतरीं । आणी परदुःखें हास्य करी । | |
| तयास प्राप्त येमपुरी । राजदूत ताडिती । १५। | 1 |
| असो ऐसें मदांघ बापुडें । तयांसि भगवंत कैंचा जोडे । | |
| जयास सुबुद्धि नावडे । पूर्वपातकेंकरूनी । १६ | 1 |
| तयास देहाचा अंतीं। गात्रें क्षीणता पावती। | |
| जिवलगें वोसंडिती । जाणवेल तेव्हां । १७ | 1 |
| असी ऐसे गुणावेगळे। ते सच्छिष्य आगळे। | |
| दृढ भावार्थे सोहळे। भोगिती स्वानंदाचे । १८। | |
| | |

जये स्थळीं विकल्प जागे । कुळाभिमान पाठीं लागे ।
ते प्राणी प्रपंचसंगें । हिंपुटी होती । १९।
जेणेंकरितां दु:ख जालें । तेंचि मनीं दृढ धरिलें ।
तेणें गुणें प्राप्त जालें । पुन्हां दु:ख ।१००।
संसारसंगें सुख जालें । ऐसें देखिलें ना ऐकिलें ।
ऐसें जाणोन अनिहत केलें । ते दु:खी होती स्वयें ।१०१।
संसारीं सुख मानिती । ते प्राणी मूढमती ।
जाणोन डोळे झांकिती । पढतमूर्ख ।१०२।
प्रपंच सुखें करावा । परी कांहीं परमार्थ वाढवावा ।
परमार्थ अवधाचि बुडवावा । हें विहित नव्हे ।१०३।
मागां जालें निरूपण । गुरुशिष्यांची वोळखण ।
आतां उपदेशाचें लक्षण । सांगिजेल ।१०४।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'शिष्यलक्षणनाम' समास तिसरा समाप्त.

दशक ५ : समास ४

॥ श्रीराम ॥

ऐका उपदेशाचीं लक्षणें। बहुविधें कोण कोणें। सांगतां तें असाधारणें। परी कांही येक सांगों। १। बहुत मंत्र उपदेशिती। कोणी नाम मात्र सांगती। येक ते जप करविती। वोंकाराचा। २।

| शिवमंत्र भवानीमंत्र । विष्णुमंत्र माहालक्ष्मीमंत्र । |
|---|
| अवधूतमंत्र गणेशमंत्र । मार्तंडमंत्र सांगती । ३ । |
| मछकूर्मवन्हावमंत्र । नृसिंहमंत्र वामनमंत्र । |
| भार्गवमंत्र रघुनाथमंत्र । कृष्णमंत्र सांगती । ४ । |
| भैरवमंत्र मल्लारिमंत्र । हनुमंतमंत्र येक्षिणीमंत्र । |
| नारायेणमंत्र पांडुरंगमंत्र । अघोरमंत्र सांगती । ५ । |
| शेषमंत्र गरुडमंत्र । वायोमंत्र वेताळमंत्र । |
| झोटिंगमंत्र बहुधा मंत्र । किती म्हणौनि सांगावे । ६ । |
| बाळामंत्र बगुळामंत्र । काळिमंत्र कंकाळिमंत्र । |
| बदुकमंत्र नाना मंत्र । नाना शक्तींचे । ७ । |
| पृथकाकारें स्वतंत्र । जितुके देव तितुके मंत्र । |
| सोपे अवधड विचित्र । खेचर दारुण बीजाचे । ८ । |
| पाहों जातां पृथ्वीवरी । देवांची गणना कोण करी । |
| तितुके मंत्र वैखरी । किती म्हणौन वदवावी । ९ । |
| असंख्यात मंत्रमाळा । येकाहूनि येक आगळा । |
| विचित्र मार्थची कळा। कोण जाणे ।१०। |
| कित्येक मंत्रीं भूतें जाती । कित्येक मंत्रीं वेशा नामती । |
| कित्यक मंत्री उतरती । सितें विंचू विखार । ११। |
| एसे नाना परीचे मंत्री । उपदेशिती कर्णाणवीं । |
| जप ध्यान पूजा यंत्री । विधानयुक्त सांगती । १२। |
| येक शिव शिव सांगती । येक हरि हरि म्हणविनी । |
| यक उपदेशिती । विठल विठल म्हणोनि । १३। |
| येक सांगती कृष्ण कृष्ण । येक सांगती विष्ण विष्ण । |
| येक नारायण । महणौन उपदेशिती । १४। |

| येक म्हणती अच्युत अच्युत । येक म्हणती अनंत अनंत | 1 |
|---|--------|
| येक सांगती दत्त दत्त। म्हणत जावें | 1841 |
| येक सांगती राम राम। येक सांगती ॐ ॐ म | I |
| येक म्हणती मेघशाम । बहुतां नामीं स्मरावा | 1 १६। |
| येक सांगती गुरु गुरु । येक म्हणती परमेश्वरु | 1 |
| येक म्हणती विघ्नहरु । चिंतीत जावा | 1 १७ । |
| येक सांगती शामराज । येक सांगती गरुडध्वज | 1 |
| येक सांगती अधोक्षज । म्हणत जावें | ।१८। |
| येक सांगती देव देव । येक म्हणती केशव केशव | |
| येक म्हणती भार्गव भार्गव । म्हणत जावें | 1881 |
| येक विश्वनाथ म्हणविती । येक मल्लारि सांगती | |
| येक ते जप करविती । तुकाई तुकाई म्हणौनी | |
| हें किती म्हणौनि सांगावें । शिवशक्तीचीं अनंत नांवें | |
| इछेसारिखीं स्वभावें । उपदेशिती | |
| येक सांगती मुद्रा च्यारी । खेचरी भूचरी चाचरी अगोचरी | |
| येक आसनें परोपरी । उपदेशिती | |
| येक दाखिवती देखणी। येक अनुहातध्वनी | 1 |
| येक गुरु पिंडज्ञानी । पिंडज्ञान सांगती | |
| येक सांगती कर्ममार्ग। येक उपासना मार्ग | |
| येक सांगती अष्टांग योग । नाना चक्रें | |
| येक तपें सांगती । येक अजपा निरोपिती | |
| येक तत्वें विस्तारिती । तत्वज्ञानी | 1241 |

येक सांगती सगुण। येक निरोपिती निर्गुण। येक उपदेशिती तीर्थाटण । फिरावें म्हणूनी । २६। वेक माहावाक्यें सांगती । त्यांचा जप करावा म्हणती । येक उपदेश करिती । सर्व ब्रह्म म्हणोनी । २७। येक शाक्तमार्ग सांगती । येक मुक्तमार्ग प्रतिष्ठिती । येक इंद्रियें पूजन करविती । येका भावें 1261 येक सांगती वशीकर्ण । स्तंबन मोहन उच्चाटण । नाना चेटकें आपण । स्वयें निरोपिती । २९। ऐसी उपदेशांची स्थिती। पुरे आतां सांगों किती। ऐसे हे उपदेश असती । असंख्यात 1301 ऐसे उपदेश अनेक । परी ज्ञानेंविण निरार्थक । येविषईं असे येक । भगवद्वचन ।३१। नानाशास्त्रं पठेल्लोको नानादैवतपूजनम्। आत्मज्ञानं विना पार्थ सर्वकर्म निरर्थकम् ॥ शैवशाक्तागमाद्या ये अन्ये च बहवो मता:। अपभ्रंशसमास्तेऽपि जीवानां भ्रांतचेतसाम्।। न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिदमुत्तमम्। याकारणें ज्ञानासमान । पवित्र उत्तम न दिसे अन्य । म्हणौन आधीं आत्मज्ञान । साधिलें पाहिजे ।३२। सकळ उपदेशीं विशेष । आत्मज्ञानाचा उपदेश । येविषईं जगदीश । बहुतां ठाईं बोलिला । ३३।

यस्य कस्य च वर्णस्य ज्ञानं देहे प्रतिष्ठितम्। तस्य दासस्य दासोऽहं भवे जन्मनि जन्मनि ॥

आत्मज्ञानाचा महिमा। नेणे चतुर्मुख ब्रह्मा। प्राणी बापुडा जीवात्मा । काये जाणे 1381 सकळ तीर्थांची संगती। स्नानदानाची फळश्रुती।

त्याहूनि ज्ञानाची स्थिती । विशेष कोटिगुणें ।३५।

पृथिव्यां यानि तीर्थानि स्नानदानेषु यत्फलम्। तत्फलं कोटिगुणितं ब्रह्मज्ञानसमोपमम्।।

म्हणौनि जें आत्मज्ञान। तें गहनाहूनि गहन। ऐक तयाचें लक्षण । सांगिजेल 1351

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'उपदेशलक्षणनाम' समास चौथा समाप्त.

> > दशक ५ : समास ५ बहुधाज्ञान

॥ श्रीराम ॥

जंव तें ज्ञान नाहीं प्रांजळ । तंव सर्व कांहीं निर्फळ । ज्ञानरहित तळमळ । जाणार नाहीं । १ । ज्ञान म्हणतां वाटे भरम । काये रे बा असेल वर्म। म्हणोनि हा अनुक्रम । सांगिजेल आतां । २ । भूत भविष्य वर्तमान । ठाउकें आहे परिछिन्न । यासीहि म्हणिजेत ज्ञान । परी तें ज्ञान नव्हे । ३ ।

| बहुत | केलें विह | ग्रापठण | । संगीतशास्त्र रागज्ञान । |
|-------|------------|---------|----------------------------|
| वैदिक | शास्त्र | वेदाधेन | । हेंहि ज्ञान नव्हे । ४। |
| नाना | वेवसायाचें | ज्ञान | । नाना दीक्षेचें ज्ञान । |
| नाना | | | । हें ज्ञान नव्हे । ५ । |
| नाना | वनितांची | परीक्षा | । नाना मनुष्यांची परीक्षा। |
| नाना | नरांची | परीक्षा | । हें ज्ञान नव्हे । ६ । |
| नाना | अश्वांची | परीक्षा | । नाना गजांची परीक्षा । |
| नाना | स्वापदांची | परीक्षा | । हें ज्ञान नव्हे । ७ । |
| नाना | पशूंची | परीक्षा | । नाना पक्षांची परीक्षा। |
| नाना | भूतांची | परीक्षा | । हें ज्ञान नव्हे । ८। |
| नाना | यानांची | परीक्षा | । नाना वस्त्रांची परीक्षा। |
| नाना | शस्त्रांची | परीक्षा | । हें ज्ञान नव्हे । ९। |
| नाना | धातूंची | परीक्षा | । नाना नाण्यांची परीक्षा। |
| नाना | रलांची | | । हें ज्ञान नव्हे । १०। |
| नाना | पाषाण | परीक्षा | । नाना काष्ठांची परीक्षा। |
| नाना | वाद्यांची | | । हें ज्ञान नव्हे । ११। |
| नाना | भूमींची | परीक्षा | । नाना जळांची परीक्षा। |
| नाना | सतेज | | । हें ज्ञान नव्हे । १२। |
| नाना | रसांची | परीक्षा | । नाना बीजांची परीक्षा। |
| नाना | अंकु | | । हें ज्ञान नव्हे । १३। |
| नाना | पुष्पांची | | । नाना फळांची परीक्षा। |
| नाना | वल्लींची | | । हें ज्ञान नव्हे । १४। |
| नाना | | | । नाना रोगांची परीक्षा। |
| नाना | विन्हांची | | । हें ज्ञान नव्हे । १५। |

| नाना | मंत्रांची | परीक्षा । नाना यंत्रांची परीक्षा । |
|---------|------------|-------------------------------------|
| नाना | मूर्तींची | परीक्षा । हें ज्ञान नव्हे । १६। |
| नाना | क्षत्रांची | परीक्षा । नाना गृहांची परीक्षा । |
| नाना | पात्रांची | परीक्षा । हें ज्ञान नव्हे । १७। |
| नाना | होणार | परीक्षा । नाना समयांची परीक्षा । |
| नाना | तकाँची | परीक्षा । हें ज्ञान नव्हे । १८। |
| नाना | अनुमान | परीक्षा । नाना नेमस्त परीक्षा । |
| नाना | प्रकार | परीक्षा । हें ज्ञान नव्हे । १९। |
| नाना | विद्येची | परीक्षा । नाना कळेची परीक्षा । |
| नाना | चात् | र्विपरीक्षा । हें ज्ञान नव्हे । २०। |
| नाना | शब्दांची | परीक्षा। नाना अर्थांची परीक्षा। |
| नाना | भाषांची | परीक्षा । हें ज्ञान नव्हे । २१। |
| नाना | स्वरांची | परीक्षा । नाना वर्णांची परीक्षा । |
| नाना | लेख | वनपरीक्षा। हें ज्ञान नव्हे। २२। |
| नाना | मतांची | परीक्षा। नाना ज्ञानांची परीक्षा। |
| नाना | वृत्तींची | परीक्षा । हें ज्ञान नव्हे । २३। |
| नाना | रूपांची | परीक्षा । नाना रसनेची परीक्षा । |
| नाना | सु | गंधपरीक्षा । हें ज्ञान नव्हे । २४। |
| नाना | सृष्टींची | परीक्षा । नाना विस्तारपरीक्षा । |
| नाना | पद | ार्थपरीक्षा । हें ज्ञान नव्हे । २५। |
| नेमक | चि | बोलणें । तत्काळचि प्रतिवचन देणें । |
| सीघ्रवि | व कवित्व | करणें । हें ज्ञान नव्हे । २६। |

| नेत्रपालवी | नादकळा । | करपालवी भेदकळा | |
|------------------|-----------------|--------------------------------|-------|
| स्वरपालवी | | 2' | |
| | | | 1991 |
| | | गीत प्रबंद नृत्यकळा | Į. |
| | शब्दकळा । | | 1261 |
| वाग्विळास | मोहनकळा । | रम्य रसाळ गायनकळा | Į |
| हास्य विनोद | कामकळा । | हें ज्ञान नव्हे | 1561 |
| नाना लाघवें | चित्रकळा । | नाना वाहों संगीतकळा | 1 |
| नाना प्रकारें वि | चित्र कळा । | 7. — - / | |
| आदिकरूनि चौ | सिष्ट कला । | याहिवेगळ्या नाना कळा | 1901 |
| चौदा विद्या सि | व्ह सक्ता । | चाहवगळ्या नाना कळा | |
| थायो मन्त्र | | ह सान नव्ह | 1361 |
| असो सकळ व | कळाप्रवाण । | विद्यामात्र परिपूर्ण | l |
| | | म्हणों चि नये | 1351 |
| हें ज्ञान होये | सें भासे। | परंतु मुख्य ज्ञान तें अनारिसें | |
| जथ प्रकृती | वें पिसें। | समूळ वाव | 1331 |
| जाणावे दुसऱ्या | चें जीवीचें । | हें जान वाटे माने | |
| परंतु हें 3 | गत्पज्ञानाचें । | 750000 | ।३४। |
| माहानभाव | महाधका । | मानसपूजा करितां चुकला | 1961 |
| कोणी येकें | पान्यविका । | ऐसें नव्हे म्हणोनी | l |
| गेमी ज्याने | | एस नव्ह म्हणाना | 1 ३५। |
| पांत ने-भ | अंतरास्थता । | तयासि परम ज्ञाता म्हणती | l |
| ्रं जण | माक्षप्राप्ती । | तें हें ज्ञान नव्हे | 1३६। |
| बहुत प्रकारीं | वीं ज्ञानें । | सांगों जातां असाधारणें | l |
| सायाज्यप्राप्ती | होये जेणें । | तें ज्ञान वेगळें | 1391 |
| तरा तें कैसें | आहे नाउ । | मागशासाचे जलक | • |
| ऐसें हें विश | द करून । | - C 1 1. | |
| 170. | 4 40/01/ | 1411111111111 | 1261 |

ऐसें शुद्ध ज्ञान पुसिलें। तें पुढिले समासीं निरोपिलें। श्रोतां अवधान दिधलें। पाहिजे पुढें। ३९।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'बहुधाज्ञाननाम' समास पाचवा समाप्त.

> > दशक ५: समास ६
> >
> > शुद्धज्ञान
> > ॥ श्रीराम ॥

ऐक ज्ञानाचें लक्षण । ज्ञान म्हणिजे आत्मज्ञान ।
पाहावें आपणासि आपण । या नांव ज्ञान । १ ।
मुख्य देवास जाणावें । सत्य स्वरूप वोळखावें ।
नित्यानित्य विचारावें । या नांव ज्ञान । २ ।
जेथें दृश्य प्रकृति सरे । पंचभूतिक वोसरे ।
समूळ द्वैत निवारे । या नांव ज्ञान । ३ ।
मनबुद्धि अगोचर । न चले तर्काचा विचार ।
उल्लेख परेहूनि पर । या नांव ज्ञान । ४ ।
जेथें नाही दृश्यभान । जेथें जाणीव हें अज्ञान ।
विमळ शुद्ध स्वरूपज्ञान । यासि बोलिजे । ५ ।
सर्वसाक्षी अवस्ता तुर्या । ज्ञान ऐसें म्हणती तया ।
परी तें जाणिजे वायां । पदार्थज्ञान ॥ ६ ।
दृश्य पदार्थ जाणिजे । त्यास पदार्थज्ञान बोलिजे ।
शुद्ध स्वरूप जाणिजे । या नांव स्वरूपज्ञान ॥ ७ ।

| जेथें सर्विच नाहीं ठाईंचें । तेथें सर्वसाक्षत्व कैंचें। |
|---|
| म्हणौनि शुद्ध ज्ञान तुर्येचें। मानूंचि नये । ८। |
| ज्ञान म्हणिजे अद्वैत । तुर्या प्रत्यक्ष द्वैत । म्हणौनि शुद्ध ज्ञान ते सतंत । वेगळेंचि असे । ९ । |
| |
| ऐक शुद्ध ज्ञानाचें लक्षण। शुद्ध स्वरूपचि आपण। |
| या नांव शुद्ध स्वरूपज्ञान। जाणिजे श्रोतीं ।१०। |
| माहावाक्य उपदेश भला । परी त्याचा जप नाहीं बोलिला । |
| तेथीचा तो विचारचि केला । पाहिजे साधकें । ११। |
| माहावाक्यउपदेश सार । परी घेतला पाहिजे विचार । |
| त्याच्या जपें अंधकार । न फिटे भ्रांतीचा । १२। |
| |
| माहावाक्याचा अर्थ घेतां। आपण वस्तुचि तत्वतां। |
| त्याचा जप करितां वृथा । सीणचि होये । १३। |
| माहावाक्याचें विवरण । हें मुख्य ज्ञानाचें लक्षण । |
| शुद्ध लक्ष्यांशें आपण । वस्तुच आहे । १४। |
| आपला आपणासि लाभ । हें ज्ञान परम दुल्लभ । |
| जें आदिअंतीं स्वयंभ । स्वरूपचि स्वयं ।१५। |
| |
| जेथून हें सर्वही प्रगटे । आणी सकळही जेथें आटे । |
| तें ज्ञान जालियां फिटे। भ्रांति बंधनाची ।१६। |
| मतें आणी मतांतरें। जेथें होतीं निर्विकारें। |
| अतिसूक्ष्म विचारें । पाहातां ऐक्य । १७। |
| |
| जें या चराचराचें मूळ । शुद्ध स्वरूप निर्मळ । |
| या नांव ज्ञान केवळ । वेदांतमतें ।१८। |
| |
| शोधितां आपलें मूळ स्थान । सहजचि उडे अज्ञान । या नांव म्हणिजे ब्रह्मज्ञान । मोक्षदायेक ।१९। |

| आपणासि वोळखों जातां । आंगीं बाणे सर्वज्ञता । |
|--|
| तेणें येकदेसी वार्ता। निशेष उडे ।२०। |
| मी कोण ऐसा हेत । धरून पाहातां देहातीत । |
| आवलोकितां नेमस्त । स्वरूपचि होये ।२१। |
| असो पूर्वी थोर थोर । जेणें ज्ञानें पैलपार । |
| पावले ते साचार । ऐक आतां । २२। |
| व्यास वसिष्ठ माहामुनी । शुक नारद समाधानी । |
| जनकादिक माहांज्ञानी । येणोंचि ज्ञानें । २३। |
| वामदेवादिक योगेश्वर । वाल्मीक अत्रि ऋषेश्वर । |
| शोनिकादि अध्यात्मसार । वेदांतमतें । २४। |
| सनकादिक मुख्यकरूनी । आदिनाथ मीन गोरक्षमुनी । |
| आणीक बोलतां वचनी । अगाध असती । २५। |
| सिद्ध मुनी माहानुभाव । सकळांचा जो अंतर्भाव । |
| जेणें सुखें माहादेव । डुल्लत सदा । २६। |
| जें वेदशास्त्रांचे सार । सिद्धांत घादांत विचार । |
| ज्याची प्राप्ती भाग्यानुसार । भाविकांस होये । २७। |
| साधु संत आणी सज्जन । भूत भविष्य वर्तमान । |
| सर्वत्रांचें गुह्य ज्ञान । तें सांगिजेल आतां । २८। |
| तीर्थें व्रतें तपें दानें। जें न जोडे धूप्रपानें। |
| पंचाग्नी गोरांजनें । जें प्राप्त नव्हे । २९। |
| सकळ साधनाचें फळ। ज्ञानाची सिगचि केवळ। |
| जेणें संशयाचें मूळ । निशेष तुटे ।३०। |
| छपन्न भाषा तितुके ग्रन्थ । आदिकरून वेदांत । |
| या इतुकियांचा गहनार्थ। येकचि आहे ।३१। |

| जें नेणवे पुराणीं । जेथे सिणल्या वेदवाणी । | |
|--|---|
| तेंचि आतां येचि क्षणीं । बोधीन गुरुकृपें ।३२। | l |
| पाहिलें नस्तां संस्कृतीं। रीग नाहीं मऱ्हाष्ट ग्रन्थीं। | |
| हृदई वसल्या कृपामूर्ती । सद्गुरुस्वामी । ३३। | |
| आतां नलगे संस्कृत । अथवा ग्रंथ प्राकृत । | |
| माझा स्वामी कृपेसहित। हृदई वसे । ३४। | 1 |
| न करितां वेदाभ्यास । अथवा श्रवणसायास । | |
| प्रेत्नेविण सौरस । सद्गुरुकृपा । ३५। | 1 |
| ग्रन्थ मात्र मन्हाष्ट्र। त्याहून संस्कृत श्रेष्ठ। | |
| त्या संस्कृतामधें पष्ट । थोर तो वेदांत । ३६। | l |
| त्या वेदांतापरतें कांहीं । सर्वथा श्रेष्ठ नाहीं । जेथें वेदगर्भ सर्वही । प्रगट जाला । ३७। | |
| जेथे वेदगर्भ सर्वही। प्रगट जाला । ३७। असो ऐसा जो वेदांत। त्या वेदांचाहि मिथतार्थ। | 1 |
| अतिगहन जो परमार्थ । तो तूं ऐक आतां ।३८। | 1 |
| अरे गहनाचेंही गहन । तें तूं जाण सद्गुरुवचन । | • |
| सद्गुरुवचनें समाधान । नेमस्त आहे । ३९ | ı |
| सद्गुरुवचन तोचि वेदांत । सद्गुरुवचन तोचि सिद्धांत । | • |
| सद्गुरुवचन तोचि धादांत । सप्रचीत आतां ।४० | 1 |
| जें अत्यंत गहन । माझ्या स्वामीचें वचन । | |
| जेणें माझें समाधान । अत्यंत जालें ।४१ | l |
| तें हें माझें जीवीचें गुज । मी सांगैन म्हणतों तुज । | |
| जरी अवधान देसी मज । तरी आतां येच क्षणीं ।४२ | l |
| शिष्य म्लान्वदनें बोले । धरिले सदृढ पाउले । | |
| मग बोलों आरंभिलें । गुरुदेवें । ४३ | 1 |

| अहं ब्रह्मास्मि माहांवाक्य | 1 | येथीचा अर्थ अतर्क्य। |
|----------------------------|---|-------------------------------|
| तो ही सांगतो ऐक्य | ı | गुरुशिष्य जेथें ।४४। |
| ऐक शिष्या येथीचें वर्म | 1 | स्वयें तूंचि आहेसि ब्रह्म। |
| ये विषईं संदेह भ्रम | ı | धरूंचि नको ।४५। |
| नवविधा प्रकारें भजन | į | त्यांत मुख्य तें आत्मनिवेदन । |
| तें समग्र प्रकारें कथन | Į | कीजेल आतां । ४६। |
| निर्माण पंचभूतें यीयें | ı | कल्पांतीं नासतीं येथान्वयें। |
| प्रकृति पुरुष जीयें | l | तेही ब्रह्म होती । ४७। |
| दृश्य पदार्थ आटतां | ı | आपणहि नुरे तत्वतां। |
| ऐक्यरूपें ऐक्यता | 1 | मुळींच आहे । ४८। |
| सृष्टीची नाहीं वार्ता | | |
| पिंड ब्रह्मांड पाहों जातां | | |
| ज्ञानवन्ही प्रगटे | | |
| तदाकारें मूळ तुटे | I | भिन्नत्वाचें ।५०। |
| मिथ्यत्वें वृत्ति फिरे | | |
| सहजचि येणें प्रकारें | | |
| असो गुरूचे ठाईं अनन्यता | | |
| वेगळेपणें अभक्ता | 1 | उरोंचि नको । ५२। |
| आता हेचि दृढीकर्ण | | |
| सद्गुरुभजनें समाधान | | नेमस्त आहे । ५३। |
| या नांव शिष्या आत्मज्ञान | • | येणें पाविजे समाधान। |
| | | समूळ मिथ्या । ५४। |
| | | तो जाणावा आत्महत्यारा । |
| देहाभिमानें येरझारा | l | भोगिल्याच भोगी । ५५ । |

| असो चहुं देहावेगळा। जन्मकर्मासी निराळा। |
|---|
| सकळ आबाळगोबळा । सबाह्य तू । ५६। |
| कोणासीच नाहीं बंधन । भ्रांतिस्तव भुलले जन । |
| दृढ घेतला देहाभिमान । म्हणौनियां । ५७। |
| शिष्या येकांतीं बैसावें । स्वरूपीं विश्रांतीस जावें । |
| तेणें गुणें दृढावें । परमार्थ हा ।५८। |
| अखंड घडे श्रवण मनन । तरीच पाविजे समाधान । |
| पूर्ण जालियां ब्रह्मज्ञान । वैराग्य भरे आंगीं । ५९। |
| शिष्या मुक्तपणें अनर्गळ । करिसी इंद्रियें बाष्कळ। |
| तेणें तुझी तळमळ । जाणार नाहीं ।६०। |
| विषईं वैराग्य उपजलें । तयासीच पूर्ण ज्ञान जालें। |
| मणी टाकितांचि लाधले । राज्य जेवीं ।६१। |
| मणी होता सीगटाचा । लोभ धरूनिया तयाचा । |
| मूर्खपणें राज्याचा । अव्हेर केला ।६२। |
| ऐक शिष्या सावधान । आतां भविष्य मी सांगेन । |
| जया पुरुषास जें ध्यान । तयासि तेंचि प्राप्त ।६३। |
| म्हणोनी जे अविद्या- । सांडून, धरावी सुविद्या । तेणें गुणें जगद्वंद्या । पाविजे सीघ्र । ६४। |
| तण गुण जगद्वद्या । पाविज सीघ्र । ६४। सन्यपाताचेनि दुःखें । भयानक दृष्टीस देखे । |
| - |
| तसें अज्ञानसन्यपातें । मिथ्या दृष्टीस दिसतें । |
| ज्ञानऔषध घेतां तें । मुळींच नाहीं । ६६। |
| मिथ्या स्वप्ने वोसणाला । तो जागृतीस आणिला । |
| तेणें पूर्वदशा पावला । निर्भय जे । ६७। |
| मिथ्याच परी सत्य वाटलें। तेणें गुणें दुःख जालें। |
| मिथ्या आणी निरसलें। हें तों घडेना । ६८। |

मिथ्या आहे जागृतासी । परी वेढा लाविलें निद्रिस्तांसी । जागा जालियां तयासी । भर्येचि नाहीं । ६९। परी अविद्याझोंप येते भरें । भरे सर्वांगीं काविरें । पूर्ण जागृती श्रवणद्वारें । मननें करावी 1901 जागृतीची वोळखण। ऐक तथाचें लक्षण। जो विषईं विरक्त पूर्ण । अंतरापासुनी । ७१। जेणें विरक्तीस न यावें । तो साधक ऐसें जाणावें । तेणें साधन करावें। थोरीव सांडुनी ।७२। साधन न मने जयाला । तो सिद्धपणें बद्ध जाला । त्याहूनि मुमुक्षु भला। ज्ञानाधिकारी ।७३। तंव शिष्यें केला प्रश्न । कैसें बद्धमुसुक्षाचें लक्षण । साधक सिद्ध वोळखण । कैसी जाणावी । ७४। याचें उत्तर श्रोतयांसी । दिघलें पुढिलीये समासी । सावध श्रोतीं कथेसी । अवधान द्यावें । ७५।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'शुद्धज्ञाननाम' समास सहावा समाप्त.

दशक ५ : समास ७

॥ श्रीराम ॥

सृष्टी जे कां चराचर । जीव दाटले अपार । परी ते अवघे चत्वार । बोलिजेती । १ ।

| ऐक तयांचें लक्षण । चत्वार ते कोण कोण | ì | | |
|--|---|-----|-----|
| बद्ध मुमुक्ष साधक जाण । चौथा सिद्ध | 1 | 2 | l |
| या चौघांविरहित कांहीं । सचराचरीं पांचवा नाहीं | ł | | |
| आतां असो हें सर्वही । विशद करूं | | 3 | 1 |
| बद्ध म्हणिजे तो कोण । कैसें मुमुक्षाचें लक्षण | l | | |
| साधक सिद्ध वोळखण । कैसी जाणावी | | ጸ | 1 |
| श्रोतीं व्हावें सावध । प्रस्तुत ऐका बद्ध | | | |
| मुमुक्ष साधक आणि सिद्ध । पुढें निरोपिलें | | eq | 1 |
| आतां बद्ध तो जाणिजे ऐसा । अंधारींचा अंध जैसा | l | | |
| चक्षुविण दाही दिशा। सुन्याकार | | Ę | l |
| भक्त ज्ञाते तापसी । योगी वीतरागी संन्यासी | | | |
| पुढें देखतां दृष्टीसी । येणार नाहीं | | 9 | ı |
| न दिसे नेणे कर्माकर्म । न दिसे नेणे धर्माधर्म न दिसे नेणे सुगम । परमार्थपंथ | | 6 | ļ |
| तयास न दिसे सच्छास्त्र । सत्संगति सत्पात्र | | 6 | |
| सन्मार्ग जो कां पवित्र । तोही न दिसे | | 9 | ļ |
| न कळे सारासार विचार । न कळे स्वधर्म आचार | | • | • |
| न कळे कैसा परोपकार । दान पुण्य | | 80 | 1 |
| नाहीं पोटीं भूतदया । नाहीं सुचिष्मंत काया | | • | |
| नाहीं जनासि निववावया । वचन मृद | | ११ | 1 |
| न कळे भक्ति न कळे ज्ञान । न कळे वैराग्य न कळे ध्यान | - | | |
| न कळे मोक्ष न कळे साधन । या नांव बद्ध | l | १२ | 1 ! |
| न कळे देव निश्चयात्मक । न कळे संतांचा विवेक | l | | |
| न कळे मायेचें कौतुक । या नांव बद्ध | ı | £ 9 | |

| न कळे परमार्थाची खूण। न कळे अध्यात्मनिरूपण | 1 |
|--|------|
| न कळे आपणासि आपण । या नांव बद्ध | |
| न कळे जीवाचें जन्ममूळ । न कळे साधनाचें फळ | 1 |
| न कळे तत्वतां केवळ । या नांव बद्ध | |
| न कळे कैसें तें बंधन । न कळे मुक्तीचें लक्षण | 1 |
| न कळे वस्तु विलक्षण। या नांव बद्ध | |
| न कळे शास्त्रार्थ बोलिला । न कळे निजस्वार्थ आपुला | |
| न कळे संकल्पें बांधला । या नाव बद्ध | |
| जयासि नाहीं आत्मज्ञान । हें मुख्य बद्धाचें लक्षण | 1 |
| तीर्थ व्रत दान पुण्य । कांहींच नाहीं | |
| दया नाहीं करुणा नाहीं । आर्जव नाहीं मित्रि नाहीं | |
| शांति नाहीं क्ष्मा नाहीं । या नांव बद्ध | |
| जे ज्ञानविशिं उणें । तेथें कैचीं ज्ञानाचीं लक्षणें | |
| बहुसाल कुलक्षणें। या नांव बद्ध | 1201 |
| नाना प्रकारीचे दोष । करितां वाटे परम संतोष | |
| बाष्कळपणाचा हव्यास । या नांव बद्ध | |
| बहु काम बहु क्रोध। बहु गर्व बहु मद | 1 |
| बहु द्वंद बहु खेद। या नांव बद्ध | 1221 |
| बहु दर्प बहु दंभ । बहु विषये बहु लोभ | 1 |
| बहु कर्कश बहु अशुभ । या नांव बद्ध | 1531 |
| बहु ग्रामणी बहु मत्सर । बहु असूया तिरस्कार | . 1 |
| बहु पापी बहु विकार । या नांव बद्ध | 1581 |
| बहु अभिमान बहु ताठा । बहु अहंकार बहु फांटा | 1 |
| बहु कुकर्माचा सांठा। या नांव बद्ध | 1241 |

| बहु कापट्य वादवेवाद। बहु कुतर्क भेदाभेद। | |
|--|------------|
| बहु क्रूर कृपामंद । या नांव बद्ध । २ | ĘI |
| बहु निंदा बहु द्वेष । बहु अधर्म बहु अभिळाष । | |
| बहु प्रकारीचे दोष । या नांव बद्ध । २ | 91 |
| बहु भ्रष्ट अनाचार । बहु नष्ट येकंकार । | |
| बहु आनित्य अविचार । या नांव बद्ध । २ | 61 |
| बहु निष्ठुर बहु घातकी । बहु हत्यारा बहु पातकी । | |
| तपीळ कुविद्या अनेकी । या नांव बद्ध । २ | १। |
| बहु दुराशा बहु स्वार्थी । बहु कळह बहु अनर्थी । | |
| बहु डाईक दुर्मती । या नांव बद्ध ।३ | 0 |
| बहु कल्पना बहु कामना । बहु तृष्णा बहु वासना । | |
| बहु ममता बहु भावना। या नांव बद्ध । ३ | 81 |
| बहु विकल्पी बहु विषादी । बहु मूर्ख बहु समंधी । | |
| बहु प्रपंची बहु उपाधी। या नांव बद्ध । ३ | ۲۱ |
| बहु वाचाळ बहु पाषांडी । बहु दुर्जन बहु थोतांडी । | |
| बहु पैशून्य बहु खोडी। या नांव बद्ध । ३ | 3 I |
| बहु अभाव बहु भ्रम । बहु भ्रांति बहु तम । | |
| बहु विक्षेप बहु विराम । या नांव बद्ध । ३ | 81 |
| बहु कृपण बहु खंदस्ती । बहु आदखणा बहु मस्ती। | |
| बहु असित्क्रिया व्यस्ती । या नांव बद्ध । ३ | 41 |
| परमार्थविषई अज्ञान । प्रपंचाचें उदंड ज्ञान । | |
| नेणे स्वयें समाधान । या नांव बद्ध ।३ | ६। |
| परमार्थाचा अनादर । प्रपंचाचा अत्यादर । | |
| संसारभार जोजार । या नांव बद्ध । ३ | 91 |

| सत्संगाची नाहीं गोडी । संतिनंदेची आवडी । |
|---|
| देहेबुद्धीची घातली बेडी । या नांव बद्ध ।३८। |
| हातीं द्रव्याची जपमाळ । कांताध्यान सर्वकाळ । |
| सत्संगाचा दुष्काळ । या नांव बद्ध ।३९। |
| नेत्रीं द्रव्य दारा पहावी । श्रवणीं द्रव्य दारा ऐकावी । |
| चिंतनीं द्रव्य दारा चिंतावी । या नांव बद्ध ।४०। |
| काया वाचा आणि मन । चित्त वित्त जीव प्राण। |
| द्रव्यदारेचें करी भजन । या नांव बद्ध ।४१। |
| इन्द्रियें करून निश्चळ । चंचळ होऊं नेदी पळ । |
| द्रव्यदारेसि लावी सकळ । या नांव बद्ध ।४२। |
| द्रव्य दारा तेंचि तीर्थ । द्रव्य दारा तोचि परमार्थ । |
| द्रव्य दारा सकळ स्वार्थ। म्हणे तो बद्ध ।४३। |
| वेर्थ जाऊं नेदी काळ। संसारचिंता सर्वकाळ। |
| कथा वार्ता तेंचि सकळ । या नांव बद्ध ।४४। |
| नाना चिंता नाना उद्वेग । नाना दुःखाचे संसर्ग । |
| करी परमार्थाचा त्याग । या नांव बद्ध ।४५। |
| घटिका पळ निमिष्यभरी । दुश्चीत नव्हतां अंतरीं । |
| सर्वकाळ ध्यान करी । द्रव्यदाराप्रपंचाचें ।४६। |
| तीर्थ यात्रा दान पुण्य । भक्ति कथा निरूपण । |
| मंत्र पूजा जप ध्यान । सर्वही द्रव्यदारा ।४७। |
| जागृति स्वप्न रात्रि दिवस । ऐसा लागला विषयेध्यास । |
| नाहीं क्षणाचा अवकाश। या नांव बद्ध ।४८। |

ऐसें बद्धाचें लक्षण । मुमुक्षपणीं पालटे जाण । ऐक तेही वोळखण । पुढिलीये समासीं ।४९।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'बद्धलक्षणनाम' समास सातवा समाप्त.

> > दशक ५ : समास ८ मुमुक्षुलक्षण

॥ श्रीराम ॥

संसारमदाचेनि गुणें। नाना हीनें कुलक्षणें। जयाचेनि मुखावलोकनें । दोषचि लागे ऐसा प्राणी जो कां बद्ध । संसारीं वर्ततां अबद्ध । तयास प्राप्त जाला खेद । काळांतरीं 151 संसारदुःखें दुखवला । त्रिविधतापें पोळला । प्रस्तावला । अंतर्यामीं निरूपणे 131 जाला प्रपंचीं उदास। मनें घेतला विषयत्रास। म्हणे आतां पुरे सोस । संसारींचा प्रपंच जाईल सकळ । येथील श्रम तों निर्फळ । आतां कांहीं आपुला काळ । सार्थक करूं ऐसी बुद्धि प्रस्तावली। पोटीं आवस्ता लागली। म्हणे माझी वयेसा गेली । वेर्थीच आवधी । ६ । पूर्वी नाना दोष केले। ते अवघेचि आठवले। पुढें येऊनि उभे ठेले। अंतर्यामीं 191

| आठवे येमाची यातना । तेणें भयेचि वाटे मन | ΠI |
|--|------|
| नाहीं पापासि गणना । म्हणौनियां | 161 |
| नाहीं पुण्याचा विचार । जाले पापाचे डोंग | र । |
| आतां दुस्तर हा संसार । कैसा तरों | 181 |
| आपले दोष आछ्यादिले । भल्यास गुणदोष लावित | |
| देवा म्यां वेर्थीच निंदिले । संत साधु सज्जन | 1801 |
| निंदेऐसे नाहीं दोष । ते मज घडले कीं विशे | ष । |
| माझे अवगुणीं आकाश । बुडों पाहे | 1881 |
| नाहीं वोळिखले संत । नाहीं अर्चिला भगवं | त । |
| नाहीं अतित अभ्यागत । संतुष्ट केले | 1851 |
| पूर्व पाप वोढवलें। मज कांहींच नाहीं घड | |
| मन अव्हाटीं पडिलें। सर्वकाळ | 1831 |
| नाहीं कष्टविलें शेरीर । नाहीं केला परोपक | र । |
| नाहीं रक्षिला आचार । काममदें | |
| भक्तिमाता हे बुडिवली। शांति विश्रांति मोडित | |
| मूर्खपणें म्यां विघडिली । सद्बुद्धी सद्वासना | |
| आतां कैसें घडे सार्थक । दोष केले निरार्थ | |
| पाहों जातां विवेक । उरला नाहीं | 1861 |
| कोण उपाये करावा । कैसा परलोक पावा | |
| कोण्या गुणें देवाधिदेवा । पाविजेल | |
| नाहीं सद्भाव उपजला । अवधा लोकिक संपादि | |
| दंभ वरपंगें केला । खटाटोप कर्माचा | |
| कीर्तन केलें पोटासाठीं । देव मांडिले हाटव | |
| आहा देवा बुद्धि खोटी । माझी मीच जाणें | 1881 |

| पोटीं धरूनि अभिमान । शब्दीं बोलें निराभिमान । |
|--|
| अंतरीं वांछूनियां घन । ध्यानस्त जालों ।२०। |
| वित्पत्तीनें लोक भोंदिले । पोटासाठीं संत निंदिले । |
| माझे पोटीं दोष भरले । नाना प्रकारीचें । २१। |
| सत्य तेंचि उछिदेलें। मिथ्य तेंचि प्रतिपादिलें। |
| ऐसें नाना कर्म केलें । उदरंभराकारणें ।२२। |
| ऐसा पोटीं प्रस्तावला । निरूपणें पालटला । |
| तोचि मुमुक्ष बोलिला । ग्रन्थांतरीं । २३। |
| पुण्यमार्ग पोटीं धरी । सत्संगाची वांछा करी । |
| विरक्त जाला संसारीं। या नांव मुमुक्ष । २४। |
| गेले राजे चक्रवर्ती । माझें वैभव तें किती । |
| म्हणे धरूं सत्संगती । या नांव मुमुक्ष । २५। |
| आपुले अवगुण देखे। विरक्तिबळें वोळखे। |
| आपणासि निंदी दुःखें । या नांव मुमुक्ष । २६। |
| म्हणे मी काये अनोपकारी । म्हणे मी काय दंभघारी । |
| म्हणे मी काये अनाचारी । या नांव मुमुक्ष । २७। |
| म्हणे मी पतित चांडाळ । म्हणे मी दुराचारी खळ । |
| म्हणे मी पापी केवळ । या नांव मुमुक्ष ।२८। |
| म्हणे मी अभक्त दुर्जन । म्हणे मी हीनाहूनि हीन । |
| म्हणे मी जन्मलों पाषाण । या नांव मुमुक्ष । २९। |
| म्हणे मी दुराभिमानी। म्हणे मी तपीळ जनीं। |
| म्हणे मी नाना वेसनी। या नांव मुमुक्ष ।३०। |
| म्हणे मी आळसी आंगचोर । म्हणे मी कपटी कातर। |
| म्हणे मी मूर्ख अविचार । या नांव मुमुक्ष ।३१। |

| म्हणे मी निकामी वाचाळ । म्हणे मी पाषांडी तोंडाळ । | |
|--|---------|
| म्हणे मी कुबुद्धि कुटिळ । या नांव मुमुक्ष । | ३२। |
| म्हणे मी कांहींच नेणे। म्हणे मी सकळाहूनि उणें। | |
| आपलीं वर्णीं कुलक्षणें। या नांव मुमुक्ष | 1 \$ \$ |
| म्हणे मी अनाधिकारी । म्हणे मी कुश्चिळ अघोरी । | |
| म्हणे मी नीच नानापरी । या नांव मुमुक्ष । | 186 |
| म्हणे मी काये आपस्वार्थी । म्हणे मी काये अनर्थी। | |
| म्हणे मी नव्हे परमार्थी । या नांव मुमुक्ष । | ३५। |
| म्हणे मी अवगुणाची रासी । म्हणे मी वेर्थ आलों जन्मासी । | |
| म्हणे मी भार जालों भूमीसी । या नांव मुमुक्ष | ३६। |
| आपणास निंदी सावकास । पोटीं संसाराचा त्रास । | |
| धरी सत्संगाचा हव्यास । या नांव मुमुक्ष । | १७१ |
| नाना तीर्थे धुंडाळिलीं। शमदमादि साधनें केलीं। | |
| | ३८। |
| तेणें नव्हे समाधान । वाटे अवधाच अनुमान । | |
| म्हणे रिघों संतांस शरण। या नांव मुमुक्ष | 391 |
| देहाभिमान कुळाभिमान । द्रव्याभिमान नानाभिमान । | |
| सांडूनि संतचरणीं अनन्य। या नांव मुमुक्ष । | 801 |
| अहंता सांडूनि दूरी। आपणास निंदी नानापरी। | |
| | ४१। |
| ज्याचें थोरपण लाजे । जो परमार्थकारणें झिजे । | |
| संतापाईं विश्वास उपजे । या नांव मुमुक्ष । | |
| स्वार्थ सांडून प्रपंचाचा । हव्यास धरिला परमार्थाचा । अंकित होईन सज्जनाचा । म्हणे तो मुमुक्ष । | ४३। |
| आकत हाइन संज्ञानाचा । म्हण ता मुमुद् | 041 |

ऐसा मुमुक्ष जाणिजे । संकेतचिन्हें वोळखिजे । पुढें श्रोतीं अवधान दीजे । साधकलक्षणीं ।४४।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'मुमुक्षुलक्षणनाम' समास आठवा समाप्त.

> > दशक ५ : समास ९

॥ श्रीराम ॥

मागां मुमुक्षाचें लक्षण । संकेतें केलें कथन ।
आतां परिसा सावधान । साधक तो कैसा । १ ।
अवगुणाचा करूनि त्याग । जेणें धरिला संतसंग ।
तयासि बोलिजे मग । साधक ऐसा । २ ।
जो संतांसि शरण गेला । संतजनीं आश्वासिला ।
मग तो साधक बोलिला । ग्रंथांतरीं । ३ ।
उपदेशिलें आत्मज्ञान । तुटलें संसारबंधन ।
दृढतेकारणें करी साधन । या नांव साधक । ४ ।
धरी श्रवणाची आवडी । अद्वैतिनिरूपणाची गोडी ।
मननें अर्थांतर काढी । या नांव साधक । ५ ।
होता सारासारविचार । ऐके होऊनि तत्पर ।
संदेह छेदूनि दृढोत्तर । आत्मज्ञान पाहे । ६ ।
नाना संदेहनिवृत्ती । व्हावया धरी सत्संगती ।
आत्मशास्त्रगुरुप्रचीती । ऐक्यतेसि आणी । ७ ।

| देहबुद्धि विवेकें वारी । आत्मबुद्धि सदृढ धरी | i | | |
|---|-----|-----|---|
| श्रवण मनन केलेंचि करी। या नांव साधक | ı | 2 | ı |
| विसंचूनि दृश्यभान । दृढ घरी आत्मज्ञान | ı | | |
| विचारें राखें समाधान । या नांव साधक | t | 9 | 1 |
| तोडूनि द्वैताची उपाधी । अद्वैत वस्तु साधनें साधी | | | |
| लावी ऐक्यतेची समाधी । या नांव साधक | 19 | 0 | 1 |
| आत्मज्ञान जीर्ण जर्जर । त्याचा करी जीर्णोब्हार | | | |
| विवेकें पावे पैलपार । या नांव साधक | 1 8 | १ | l |
| उत्तमें साधूचीं लक्षणें। आंगिकारी निरूपणें | | | |
| बळेंचि स्वरूपाकार होणें। या नांव साधक | | ? ? | l |
| असिक्किया ते सोडिली। आणी सिक्किया ते वाढिवली | | | |
| स्वरूपस्थिती बळावली । या नांव साधक | | ₹ 3 | 1 |
| अवगुण त्यागी दिवसेंदिवस । करी उत्तम गुणाचा अभ्यास | | | |
| स्वरूपीं लावी निजध्यास । या नांव साधक | | 8 | ١ |
| दृढ निश्चयाचेनि बळें। दृश्य असतांच नाडळे | | | |
| सदा स्वरूपीं मिसळे। या नांव साधक | | १५ | 1 |
| प्रत्यक्ष माया अलक्ष करी । अलक्ष वस्तु लक्षी अंतरीं | | | |
| आत्मस्थितीची धारणा धरी । या नांव साधक | | १६ | 1 |
| जें या जनासि चोरलें। मनास न वचे अनुमानलें | | | |
| तेंचि जेणें दृढ केलें । या नांव साधक | | १७ | 1 |
| जें बोलतांचि वाचा धरी । जें पाहातांचि अंध करी | | . 4 | |
| तें साधी नाना परी। या नांव साधक | | 3 2 | • |
| जें साधूं जातां साधवेना । जें लक्षूं जातां लक्षवेना तेंचि अनुभवें आणी मना । या नांव साधक | | h @ | |
| ताय अनुभव आणा भना । या नाव साधक | 1 3 | 17 | 1 |

| जेथें मनचि मावळे । जेथें तर्कचि पांगुळे । |
|--|
| तेंचि अनुभवा आणी बळें। या नांव साघक ।२०। |
| स्वानुभवाचेनि योगें। वस्तु साधी लागवेगें। |
| तेंचि वस्तु होये आंगें । या नांव साधक ।२१। |
| अनुभवाचीं आंगें जाणें। योगियांचे खुणे बाणे। |
| कांहींच नहोन असणें । या नांव साधक ।२२। |
| परती सारून उपाधी । असाध्य वस्तु साधनें साधी । |
| स्वरूपीं करी दृढ बुद्धी । या नांव साधक ।२३। |
| देवाभक्ताचें मूळ। शोधून पाहे सकळ। |
| साध्याचे हाय तत्काळ । या नांव साधक । २४। |
| विवेकबळें गुप्त जाला । आपेंआप मावळला । |
| दिसतो परी देखिला। नाहींच कोणी । २५। |
| मीपण मागें सांडिलें । स्वयें आपणास धुंडिलें । |
| तुर्येसिह वोलांडिलें। या नांव साधक । २६। |
| पुढें उन्मनीचा सेवटीं । आपली आपण अखंड भेटी । |
| अखंड अनुभवीं ज्याची दृष्टी । या नांव साधक ।२७। |
| देतीं अपनेति क्लिक का कार्य मासाचा भास मोडिला। |
| देहीं असोनि विदेह जाला । या नांव साधक । २८। |
| जयास अखंड स्वरूपस्थिती । नाहीं देहाची अहंकृती । |
| सकळ संदेहनिवृत्ती । या नांव साधक । २९। |
| पंचभूतांचा विस्तार । जयासि वाटे स्वप्नाकार । |
| निर्गुणीं जयाचा निर्धार । या नांव साधक ।३०। |
| स्वप्नीं भये जें वाटलें । तें जागृतीस नाहीं आलें। सकळ मिथ्या निर्धारिलें । या नांव साधक |
| ान्या नियारल । या नाव साधक । ३१। |

| मायेचें जें प्रत्यक्षपण । जनास वाटे हें प्रमाण । | |
|---|-------------------|
| स्वानुभवें अप्रमाण । साधकें केलें । | 3 7 1 |
| निद्रा सांडूनि चेइरा जाला । तो स्वप्नभयापासून सुटला। | |
| | 331 |
| ऐसी अंतरस्थिती बाणली । बाह्य निस्पृहता अवलंबिली । | |
| | 381 |
| कामापासून सुटला । क्रोधापासूनि पळाला । | |
| | 341 |
| कुळाभिमानासी सांडिलें । लोकलाजेस लाजविलें । | |
| 2 2 2 2 | 361 |
| अविद्येपासून फडकला । प्रपंचापासून निष्टला । | |
| _1 _1 0: | ३७। |
| थोरपणासि पाडिलें । वैभवासि लिथाडिलें । | |
| यारपणास पाडिल । वभवास ।लथाडिल । | |
| - c c ; c c ; | १८६ |
| महत्त्वासि झिंजाडिलें। विरक्तिबळें। | ।ऽह |
| - c c ; c c ; | |
| महत्त्वासि झिंजाडिलें । विरक्तिबळें । भेदाचा मडघा मोडिला । अहंकार सोडून पाडिला । पाईं धरून आपटिला । संदेहशत्रु | |
| महत्त्वासि झिंजाडिलें । विरक्तिबळें । भेदाचा मडधा मोडिला । अहंकार सोडून पाडिला । | ३९। |
| महत्त्वासि झिंजाडिलें । विरक्तिबळें । भेदाचा मडघा मोडिला । अहंकार सोडून पाडिला । पाईं धरून आपटिला । संदेहशत्रु । विकल्पाचा केला वधु । थापें मारिला भवसिंधू । | ३९। |
| महत्त्वासि झिंजाडिलें । विरक्तिबळें । भेदाचा मडधा मोडिला । अहंकार सोडून पाडिला । पाई धरून आपटिला । संदेहशत्रु । विकल्पाचा केला वधु । थापें मारिला भवसिंधू । सकळ भूतांचा विरोधु । तोडून टाकिला । भवभयासी भडकाविलें । काळाचें टांगें मोडिलें। | ३९। |
| महत्त्वासि झिंजाडिलें । विरक्तिबळें । भेदाचा मडधा मोडिला । अहंकार सोडून पाडिला । पाईं धरून आपटिला । संदेहशत्रु । विकल्पाचा केला वधु । थापें मारिला भवसिंधू । सकळ भूतांचा विरोधु । तोडून टाकिला । भवभयासी भडकाविलें । काळाचें टांगें मोडिलें। | ३९। ४०। ४१। |
| महत्त्वासि झिंजाडिलें । विरक्तिबळें । भेदाचा मडधा मोडिला । अहंकार सोडून पाडिला । पाईं धरून आपटिला । संदेहशतु । विकल्पाचा केला वधु । थापें मारिला भवसिंधू । सकळ भूतांचा विरोधु । तोडून टाकिला । भवभयासी भडकाविलें । काळाचें टांगें मोडिलें । मस्तक हाणोनि फोडिलें । जन्ममृत्याचें । देहसमंधावरी लोटला । संकल्पावरी उठवला । | 391 801 |
| महत्त्वासि झिंजाडिलें । विरक्तिबळें । भेदाचा मडधा मोडिला । अहंकार सोडून पाडिला । पाईं धरून आपटिला । संदेहशतु । विकल्पाचा केला वधु । थापें मारिला भवसिंधू । सकळ भूतांचा विरोधु । तोडून टाकिला । भवभयासी भडकाविलें । काळाचें टांगें मोडिलें । मस्तक हाणोनि फोडिलें । जन्ममृत्याचें । देहसमंधावरी लोटला । संकल्पावरी उठवला । | 391 801 891 |

| गर्वावरी गर्व केला। स्वार्थ अनर्थी घातला। |
|---|
| अनर्थ तोहि निर्दाळिला । नीतिन्यायें ।४४। |
| मोहासी मधेंचि तोडिलें । दुःखासि दुःघडचि केलें। |
| शोकास खंडून सांडिलें । येकिकडे । ४५। |
| द्वेष केला देशघडी । अभावाची घेतली नरडी । |
| धाकें उदर तडाडी । कुतकिचें । ४६। |
| ज्ञानें विवेक माजला । तेणें निश्चयो बळावला । |
| अवगुणाचा संव्हार केला । वैराग्यबळें ।४७। |
| अधर्मास स्वधर्में लुटिलें। कुकर्मासि सत्कर्में झुगटिलें। |
| लांदून वाटा लाविलें । विचारें अविचारासी ।४८। |
| तिरस्कार तो चिरडिला। द्वेष खिरडूनि सांडिला। |
| विषाद अविषादें घातला। पायांतळीं ।४९। |
| कोपावरी घालणें घातलें । कापट्य अंतरी कुटिलें। |
| सख्य आपुलें मानिलें। विश्वजनीं ।५०। |
| प्रवृत्तीचा केला त्याग । सुहृदाचा सोडिला संग । |
| निवृत्तिपथें ज्ञानयोग । साधिता जाला । ५१। |
| विषयेमैंदास सिंतरिलें। कुविद्येसि वेढा लाविलें। |
| आपणास सोडविलें। आप्ततश्करापासुनी ।५२। |
| पराधेनतेवरी कोपला। ममतेवरी संतापला। दुराशेचा त्याग केला। येकायेकी । ५३। |
| |
| स्वरूपीं घातलें मना । यातनेसि केली यातना । साक्षेप आणि प्रेत्ना । प्रतिष्ठिलें । ५४। |
| अभ्यासाचा संग धरिला । साक्षपासरिसा निचाला । |
| प्रेल सांगाती भला। साधनपंथें । ५५। |
| 1771 |

सावध दक्ष तो साधक । पाहे नित्यानित्यविवेक । संग त्यागूनि येक । सत्संग घरी । ५६। बर्ळेचि सारिला संसार। विवेकें टाकिला जोजार। शुद्धाचारें अनाचार । भ्रष्टविला 1491 विसरास विसरला। आळसाचा आळस केला। सावध नाहीं दुश्चित्त जाला। दुश्चित्तपणासी ।५८। आतां असो हें बोलणें। अवगुण सांडी निरूपणें। तो साधक ऐसा येणें प्रमाणें । बुझावा 1491 बळेंचि अवघा त्याग कीजे । म्हणौनि साधक बोलिजे। आतां सिद्ध तो जाणिजे । पुढिले समासीं ।६०। येथें संशय उठिला । निस्पृह तोचि साधक जाला । त्याग न घडे संसारिकाला । तरी तो साधक नव्हे कीं । ६१। ऐसें श्रोतयांचें उत्तर । याचें कैसें प्रत्योत्तर । पुढिले समासीं तत्पर । होऊन ऐका 1531

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'साधकलक्षणनाम' समास नववा समाप्त.

> > दशक ५ : समास १०

॥ श्रीराम ॥

मार्गे बोलिला संसारिक । त्यार्गेविण नव्हे कीं साधक । ऐका हो याचा विवेक । ऐसा असे । १

| सन्मार्ग तो जीवीं धरणें । अनमार्गाचा त्याग करणें । संसारिकां त्याग येणें । प्रकारें ऐसा । २ । |
|--|
| कुबुद्धित्यागेंविण कांहीं । सुबुद्धि लागणार नाहीं । संसारिकां त्याग पाहीं । ऐसा असे । ३ । |
| प्रपंचीं वीट मानिला । मनें विषयेत्याग केला । तरीच पुढें आवलंबिला । परमार्थमार्ग । ४ । |
| तराच पुढ आवलाबला । परमाथमार्ग । ४। त्याग घडे संशयाचा । |
| त्याग घडे अज्ञानाचा । शनै शनै । ५ । |
| ऐसा सूक्ष्म अंतर्त्याग । उभयांस घडे सांग । निस्पृहास बाह्यत्याग । विशेष आहे । ६ । |
| संसारिकां ठाईं ठाईं। बाह्यत्याग घडे कांहीं। |
| नित्यनेम श्रवण नाहीं। त्यागेंविण । ७। |
| फिटली आशंका स्वभावें । त्यागेंविण साधक नव्हे । पुढें कथेचा अन्वये । सावध ऐका । ८ । |
| मागां जालें निरूपण । साधकाची वोळखण । आतां सांगिजेल खूण । सिद्धलक्षणाची । ९ । |
| साधु वस्तु होऊन ठेला । संशय ब्रह्मांडाबाहेरि गेला । निश्चये चळेना ऐसा जाला । या नांव सिद्ध ।१०। |
| बद्धपणाचें अवगुण । मुमुक्षपणीं नाहीं जाण । |
| मुमुक्षपणाचें लक्षण । साधकपणीं नाहीं ।११। |
| साधकासि संदेहवृत्ती । पुढें होतसे निवृत्ती । याकारणें निःसंदेह श्रोतीं । साधु वोळखावा । १२। |
| संशयरहित ज्ञान । तेंचि साधूचें लक्षण । |
| सिद्धाआंगीं संशय हीन । लागेल कैसा । १३। |

| कर्ममार्ग संशयें भरला । साधनीं संशयें कालवला । |
|--|
| सर्वांमधें संशयें भरला । साधु तो निःसंदेह ।१४। |
| संशयाचें ज्ञान खोटें। संशयाचें वैराग्य पोरटें। |
| संशयाचें भजन वोखटें। निर्फळ होये ।१५। |
| वेर्थ संशयाचा देव। वेर्थ संशयाचा भाव। |
| वेर्थ संशयाचा स्वभाव । सर्व कांहीं । १६। |
| वेर्थ संशयाचें व्रत । वेर्थ संशयाचें तीर्थ । |
| वेर्थ संशयाचा परमार्थ । निश्चयेविण । १७। |
| वेर्थ संशयाची भक्ती । वेर्थ संशयाची प्रीती । |
| वेर्थ संशयाची संगती । संशयो वाढवी । १८। |
| वेर्थ संशयाचें जिणें। वेर्थ संशयाचें घरणें। |
| वेर्थ संशयाचें करणें। सर्व कांहीं 1९९। |
| वेर्थ संशयाची पोथी। वेर्थ संशयाची वित्पत्ती। |
| वेर्थ संशयाची गती। निश्चयेंविण ।२०। |
| वेर्थ संशयाचा दक्ष । वेर्थ संशयाचा पक्ष । |
| वेर्थ संशयाचा मोक्ष। होणार नाहीं ।२१। |
| वेर्थ संशयाचा संत । वेर्थ संशयाचा पंडित । |
| वेर्थ संशयाचा बहुश्रुत । निश्चयेंविण ।२२। |
| वेर्थ संशयाची श्रेष्ठता । वेर्थ संशयाची वित्पन्नता । |
| वेर्थ संशयाचा ज्ञाता । निश्चयेंविण । २३। |
| निश्चयेंविण सर्व काहीं । अणुमात्र तें प्रमाण नाहीं । |
| वेर्थीच पडिलें प्रवाहीं । संदेहाचे । २४। |
| निश्चयेंविण जें बोलणें । तें अवधेंचि कंटाळवाणें। |
| बाष्कळ बोलिजे वाचाळपणें । निरार्थक । २५। |

| असो निश्चर्येविण जे वल्गना । ते अवधीच विटंबना । |
|--|
| संशयें कांहीं समाधाना । उरी नाहीं । २६। |
| म्हणोनि संदेहरहित ज्ञान । निश्चयाचें समाधान । |
| तेंचि सिद्धांचें लक्षण । निश्चयेंसीं । २७। |
| तंव श्रोता करी प्रश्न । निश्चय करावा कवण । |
| मुख्य निश्चयाचें लक्षण । मज निरोपावें । २८। |
| ऐक निश्चय तो ऐसा। मुख्य देव आहे कैसा। |
| नाना देवाचा वळसा । करूंचि नये । २९। |
| जेणें निर्मिलें सचराचर । त्याचा करावा विचार । |
| शुद्ध विवेकें परमेश्वर । वोळखावा ।३०। |
| मुख्य देव तो कवण। भक्ताचें कैसें लक्षण। |
| असत्य सांडून वोळखण । सत्याची धरावी ।३१। |
| आपल्या देवास वोळखावें । मग मी कोण हें पाहावें । |
| संग त्यागून राहावें । वस्तुरूप ।३२। |
| तोडावा बंघनाचा संशयो । करावा मोक्षाचा निश्चयो । |
| पाहावा भूतांचा अन्वयो । वितिरेकेंसीं । ३३। |
| पूर्वपक्षेंसिं सिद्धांत । पाहावा प्रकृतीचा अंत । |
| मग पावावा निवांत । निश्चय देवाचा ।३४। |
| देहाचेनि योगें संशयो । करी समाधानाचा क्षयो । |
| चळों नेदावा निश्चयो । आत्मत्वाचा । ३५। |
| सिद्ध असतां आत्मज्ञान । संदेह वाढवी देहाभिमान । |
| याकारणें समाधान । आत्मनिश्चयें राखावें । ३६। |
| आठवतां देहबुद्धी । उडे विवेकाची शुद्धी । |
| याकारणें आत्मबुद्धि । सद्ढ करावी । ३७। |

/ w

आत्मबुद्धि निश्चयाची । तेचि दशा मोक्षश्रीची । अहमात्मा हें कधींचि । विसरों नये । ३८। निरोपिलें निश्चयाचें लक्षण । परी हें न कळे सत्संगेंविण । संतांसि गेलियां शरण। संशये तुटती ।३९। आतां असो हें बोलणें। ऐका सिद्धांचीं लक्षणें। मुख्य निःसंदेहपणें । सिद्ध बोलिजे ।४०। सिद्धस्वरूपीं नाहीं देहो । तेथें कैंचा हो संदेहो । याकारणें सिद्ध पाहो । निःसंदेही । ४१। देहसमंघाचेनि गुणें। लक्ष्णासि काये उणें। देहातीताची लक्षणें । काये म्हणोनि सांगावी ।४२। जें लक्षवेना चक्षूसी । त्याचीं लक्षणें सांगावीं कैसीं । निर्मळ वस्तु सिद्ध त्यासी । लक्षणें कैसीं । ४३। लक्षणें म्हणिजे केवळ गुण । वस्तु ठाईची निर्गुण । तेंचि सिद्धांचें लक्षण । वस्तुरूप । ४४। तथापि ज्ञानदशकीं बोलिलें । म्हणौनि वग्तृत्व आटोपिलें। न्यूनपूर्ण क्ष्मा केलें। पाहिजे श्रोतीं ।४५।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सिद्धलक्षणनाम' समास दहावा समाप्त.

> > दशक पाचवा समाप्त

दशक सहावा : देवशोधन

दशक ६ : समास १

॥ श्रीराम ॥

| चित्त सुचित करावें | । बोलिलें तें जीवीं धरावें। |
|------------------------------|-------------------------------|
| सावध होऊन बैसावें | । निमिष्य येक । १ । |
| कोणी येके ग्रामीं अथवा देसीं | । राहाणें आहे आपणासी । |
| न भेटतां तेथिल्या प्रभूसी | |
| म्हणोनि ज्यास जेथें राहाणों | 2 1 10 40 1 |
| म्हणिजे होये श्लाघ्यवाणें | । सर्व कांहीं । ३। |
| प्रभुची भेटी न घेतां | । तेथें कैंची मान्यता। |
| आपुलें महत्व जाता | । वेळ नाहीं । ४ । |
| म्हणौनि रायापासूनि रंक | । कोणी तरी येक नायेक। |
| त्यास भेटणें हा विवेक | । विवेकी जाणती । ५ । |
| त्यास न भेटतां त्याचे नगरीं | । राहतां धरितील बेगारी। |
| तेथें न करितां चोरी | । आंगीं लागे । ६ । |
| याकारणें जो शाहाणा | । तेणें प्रथमी भेटातें जाता । |
| ऐसें न करितां दैन्यवाणा | । संसार त्याचा |
| ग्रामीं थोर ग्रामाधिपती | । त्याहनि शोर टेप्राफ्रियकी |
| परागवपताहूान नृपती | । थोर जाणावा |
| राष्ट्राचा प्रभु तो राजा | । बहराष्ट्र तो माहासका |
| माहाराजांचाहि राजा | । तो चक्रवती । ९। |

| येक नरपति येक गजपती । येक हयपति येक भूपती | 1 |
|---|-----------|
| सकळांमध्ये चक्रवती । थोर राजा | 1901 |
| असो ऐसियां समस्तां। येक ब्रह्मा निर्माणकर्ता | 1 |
| त्या ब्रह्मयासिह निर्मिता । कोण आहे | 1881 |
| ब्रह्मा विष्णु आणि हर । त्यांसी निर्मिता तोचि थोर | 1 |
| तो वोळखावा परमेश्वर । नाना येत्नें | 1881 |
| तो देव ठाईं पडेना । तरी येमयातना चुकेना | 1 |
| ब्रह्मांडनायेक चोजवेना । हें बरें नव्हे | 1831 |
| जेणें संसारीं घातलें । आवधें ब्रह्मांड निर्माण केलें | 1 |
| त्यासी नाहीं वोळिखलें। तोचि पतित | 1881 |
| म्हणोनि देव वोळखावा । जन्म सार्थकचि करावा | 1 |
| न कळे तरी सत्संग धरावा । म्हणिजे कळे | |
| जो जाणेल भगवंत । तया नांव बोलिजे संत | 1 |
| जो शाश्वत आणि अशाश्वत । निवाडा करी | 1881 |
| चळेना ढळेना देव। ऐसा ज्याचा अंतर्भाव | 1 |
| तोचि जाणिजे माहानुभाव । संत साधु | |
| जो जनामधें वागे । परि जनांवेगळी गोष्ट सांगे | 1 |
| ज्याचे अंतरीं ज्ञान जागे । तोचि साधु | |
| जाणिजे परमात्मा निर्गुण । त्यासीच म्हणावें ज्ञान त्यावेगळें तें अज्ञान । सर्वकांहीं | 1 |
| | |
| पोट भराव्याकारणें । नाना विद्या अभ्यास करणें त्यासीं ज्ञान म्हणती परी तेणें । सार्थक नव्हे | 1001 |
| देव वोळखावा येक । तेंचि ज्ञान तें सार्थक | |
| येर आवर्धेचि निरार्थक । पोटविद्या | । ।२१। |
| | 1441 |

जन्मवरी पोट भरिलें। देहाचें संरक्षण केलें। पढें अवधेंचि वेर्थ गेलें । अंतकाळीं 1231 चेवं पोट भराव्याची विद्या । तयेसी म्हणों नये सद्विद्या । सर्वव्यापक वस्तु सद्या । पाविजे तें ज्ञान । २३। ऐसें जयापासीं ज्ञान । तोचि जाणावा सज्जन । तयापासीं समाधान । पुसिलें पाहिजे । २४। अज्ञानास भेटतां अज्ञान । तेथें कैंचें सांपडेल ज्ञान । करंट्यास करंट्याचें दर्शन । होतां भाग्य कैंचें । २५। रोग्यापासीं रोगी गेला । तेथें कैंचें आरोग्य त्याला । निर्बळापासीं निर्बळाला । पाठी कैंची । २६। पिशाच्यापासीं पिशाच्य गेलें । तेथें कोण सार्थक जालें । उन्मत्तास उन्मत्त भेटलें । त्यास उमजवी कवणु । २७। भिकाऱ्यापासीं मागतां भिक्षा । दीक्षाहीनापासीं दीक्षा । उजेड पाहातां कृष्णपक्षा । पाविजे कैंचा । २८। अबद्धापासीं गेला अबद्ध । तो कैसेनि होईल सुबद्ध । बद्धास भेटतां बद्ध । सिद्ध नव्हे । २९। देहापासीं गेला देही। तो कैसेनि होईल विदेही। म्हणौनि ज्ञात्यावांचून नाहीं । ज्ञानमार्ग ।३०। याकारणें ज्ञाता पाहावा। त्याचा अनुप्रह घ्यावा। सारासारविचारें जीवा । मोक्ष प्राप्त 1381

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'देवशोधननाम' समास पहिला समाप्त.

दशक ६: समास २

ब्रह्मपावननिरूपण

| एका उपदेशाचीं लक्षणें । सायोज्यप्राप्ती होय जेणें | 1 | | |
|---|---|-----|---|
| नाना मतांचें पेखणें । कामा नये सर्वथा | ł | 8 | 1 |
| ब्रह्मज्ञानेंविण उपदेश । तो म्हणों नये विशेष | 1 | | |
| धान्येविण जैसें भूंस । खातां नये | ı | 2 | ł |
| नाना कबाड बडविलें। नातरी तक्रचि गुसळिलें | ŀ | | |
| अथवा थुणचि सेविलें । सावकास | | ş | ı |
| नाना साली भक्षिल्या । अथवा चोइट्या चोखिल्या | 1 | | |
| खोबरें सांडून खादल्या । नरोट्या जैशा | | 8 | ı |
| तैसें ब्रह्मज्ञानेंविण । नाना उपदेशाचा सिण | ı | | |
| सार सांडून असार कोण । शाहाणा सेवी | | 4 | l |
| आतां ब्रह्म जें कां निर्गुण । तेंचि केलें निरूपण | ı | | |
| सुचित करावें अंतःकर्ण । श्रोतेजनीं | | 8 | ı |
| सकळ सृष्टीची रचना । ते हे पंचभूतिक जाणा | ı | | |
| परंतु हे तगेना । सर्वकाळ | 1 | 9 | ١ |
| आदिअंतीं ब्रह्म निर्गुण । तेचि शाश्वताची खूण | 1 | | |
| येर पंचभूतिक जाण। नासिवंत | | 6 | 1 |
| येऱ्हवीं हें पाहातां भूतें । देव कैसें म्हणावें त्यातें | 1 | | |
| भूत म्हणतां मनुष्यातें । विषाद वाटे | l | 8 | 1 |
| मां तो जगज्जनक परमात्मा । त्यास आणि भूतउपमा | 1 | | |
| ज्याची कळेना महिमां । ब्रह्मदिकांसी | | 9 0 | 1 |

भूतां ऐसा जगदीश । म्हणतां उत्पन्न होतो दोष । याकारणें माहापुरुष । सर्व जाणती । ११। पृथ्वी आप तेज वायो आकाश । यां सबाह्य जगदीश । पंचभूतांसी आहे नाश । आत्मा अविनाशरूपी । १२। जें जें रूप आणी नाम । तो तो आवघाचि भ्रम। नामरूपातीत वर्म । अनुभवें जाणावें । १३। पंचभूतें आणी त्रिगुण । ऐशी अष्टद्या प्रकृति जाण । अष्टघाप्रकृतीस नामाभिघान । दृश्य ऐसें ।१४। तें हें दृश्य नासिवंत । ऐसें वेद श्रुति बोलत । निर्गुण ब्रह्म शाश्वत । जाणती ज्ञानी । १५। जें शस्त्रें तोडितां तुटेना । जें पावकें जाळितां जळेना । कालवितां कालवेना । आपेंकरूनी । १६। जें वायोचेनि उडेना । जें पडेना ना झडेना । जें घडेना ना दडेना । परब्रह्म तें । १७। ज्यासी वर्णीच नसे । जें सर्वाहृति अनारिसें । परंतु असतचि असे । सर्वकाळ ।१८। दिसेना तरी काये जालें । परंतु तें सर्वत्र संचलें। सूक्ष्मचि कोंदाटलें । जेथें तेथें 1881 दृष्टीस लागली सवे । जें दिसेल तेंचि पाहावें । परंतु गुज तें जाणावें। गोप्य आहे ।२०। प्रगट तें जाणावें असार । आणी गुप्त तें जाणावें सार । गुरुमुखें हा विचार । उमजों लागे । २१। जें उमजेना तें उमजावें । जें दिसेना तें पाहावें। जें कळेना तें जाणावें । विवेकबळें ।२२।

| 200 |
|---|
| गुप्त तेंचि प्रगटवावें। असाध्य तेंचि साधावें। |
| कानडेंचि अभ्यासार्वे । सर्विकास । २३। |
| वेद विरंची आणि शेष । जेथें सिणले निशेष । |
| तेंचि साघावें विशेष । परब्रह्म तें । २४। |
| तरीं तें कोणेपरी साधावें। तेंचि बोलिलें स्वभावें। |
| अध्यात्मश्रवणें पावावें । परब्रह्म तें । २५। |
| पृथ्वी नव्हे आप नव्हे । तेज नव्हे वायु नव्हे । |
| वर्णवेक्त ऐसें नव्हे। अव्यक्त तें । २६। |
| तयास म्हणावें देव । वरकड लोकांचा स्वभाव । |
| जितुके गांव तितुके देव । जनाकारणें । २७। |
| ऐसा देवाचा निश्चयो जाला । देव निर्गुण प्रत्यया आला । |
| आतां आपणचि आपला । शोध घ्यावा । २८। |
| माझें शरीर ऐसें म्हणतो । तरी तो जाण देहावेगळाचि तो । |
| मन माझें ऐसें जाणतो । तरी तो मनिह नव्हे ।२९। |
| पाहातां देहाचा विचार । अवघा तत्वांचा विस्तार । |
| |
| |
| आपणासी ठावचि नाहीं । येथें पाहाणें नलगे कांहीं । |
| तत्वें ठाईंचा ठाईं। विभागून गेलीं ।३१। |
| बांधली आहे तों गांठोडी। जो कोणी विचारें सोडी। |
| विचार पाहातां ही गांठोडी । आडळेना ।३२। |
| तत्वांचें गांठोडें शरीर । याचा पाहातां विचार । |
| येक आत्मा निरंतर । आपण नाहीं ।३३। |
| आपणासी ठावचि नाहीं । जन्ममृत्यु कैंचें काई। |
| पाहातां वस्तुचा ठाईं। पापपुण्य नसे ।३४। |
| पापपण्य नेन्न ने ६ ६ १ नेन्ता |
| पापपुण्य येमयातना । हे निर्गुणीं तों असेना । आपण तोचि तरी जन्ममरणा । ठाव कैंचा |
| ार जन्ममरणा । ठाव केचा |

| Vi. v. | | |
|--------------------------------|---|-----------------------------|
| ने देखे थी। प | | तो विवेकें मोकळा केला। |
| देहातीत होतां पावला | ١ | मोक्षपद । ३६। |
| जालें जन्माचें सार्थक | 1 | निर्गुण आत्मा आपण येक । |
| परंतु हा विवेक | l | पाहिलाच पाहावा । ३७। |
| जागें होतां स्वप्न सरे | 1 | विवेक पाहातां दृश्य वोसरे । |
| स्वरूपानुसंधानें तरे | 1 | प्राणीमात्र । ३८। |
| आपणास निवेदावें | ı | आपण विवेकें नुरावें। |
| आत्मनिवेदन जाणावें | 1 | याचें नांव ।३९। |
| आधीं अध्यात्मश्रवण | ì | मग सद्गुरुपादसेवन। |
| पुढें आत्मनिवेदन | ı | सद्गुरुप्रसादें ।४०। |
| | ı | निखळ वस्तु निरंतरी। |
| आपण आत्मा अंतरीं | | बोघ जाला ।४१। |
| त्या ब्रह्मबोधें ब्रह्मचि जाला | 1 | संसारखेद तो उडाला। |
| देहो प्रारब्धीं टाकिला | I | सावकास ।४२। |
| यासी म्हणिजे आत्मज्ञान | 1 | येणें पाविजे समाधान। |
| परब्रह्मीं अभिन्न | - | भक्तचि जाला ।४३। |
| आतां होणार तें होयेना कां | ı | आणि जाणार तें जायेना कां। |
| तुटली मनांतील आशंका | | जन्ममृत्याची ।४४। |
| संसारीं पुंडावें चुकलें | 1 | देवां भक्तां ऐक्य जालें। |
| मुख्य देवास वोळखिलें | 1 | सत्संगेंकरूनी । ४५। |
| | | जंदारे 'त्रहापावननिरूपणनाम' |

दशक ६: समास ३

मायोद्धव

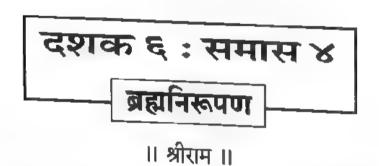
| निर्गुण आत्मा तो निर्मळ । जैसें आकाश अंतराळ | l | | |
|---|---|---|----|
| घनदाट निर्मळ निश्चळ । सदोदित | l | 8 | ı |
| जें खंडलेंचि नाहीं अखंड । जें उदंडाहूनि उदंड | l | | |
| जें गगनाहूनि वाड । आणि सूक्ष्म | l | ? | i |
| जें दिसेना ना भासेना। जें उपजेना ना नासेना | | | |
| जें येयना ना जायना । परब्रह्म तें | | ş | 1 |
| जें चळेना ना ढळेना । जें तुटेना ना फुटेना | l | | |
| जें रचेना ना खचेना । परब्रह्म तें | | 8 | Į. |
| जें सन्मुखचि सर्वकाळ । जें नि:कळंक आणि निखळ | l | | |
| सर्वांतर आकाशपाताळ । व्यापूनि असे | | 4 | 1 |
| अविनाश तें ब्रह्म निर्गुण । नासे ते माया सगुण | | | |
| सगुण आणि निर्गुण । कालवलें | | Ę | 1 |
| या कर्दमाचा विचार । करूं जाणती योगेश्वर | 1 | | |
| जैसें क्षीर आणि नीर । राजहंस निवडिती | | 9 | 1 |
| जड सबळ पंचभूतिक । त्यामध्यें आत्मा व्यापक | 1 | | |
| तो नित्यानित्यविवेक । पाहातां कळे | | 6 | 1 |
| उसांमध्यें घेईजे रस । येर तें सांडिजे बाकस | | | |
| तैसा जगामध्यें जगदीश । विवेकें वोळखावा | | 8 | - |
| रस नासिवंत पातळ । आत्मा शाश्वत निश्चळ | | | |
| रस अपूर्ण आत्मा केवळ । परिपूर्ण जाणावा | - | 8 |) |

| आत्म्यासारिखें येक असावें । मां तें दृष्टांतासि द्यावें। |
|---|
| दृष्टांतिमसें समजावें। कैसें तरी ।११। |
| ऐसी आत्मस्थिती संचली । तेथें माया कैसी जाली। |
| जैसी आकाशीं वाहिली। झुळुक वायोची ।१२। |
| वायोपासूनि तेज जालें । तेजापासूनि आप निपजलें । |
| आपापासूनि आकारलें। भूमंडळ । १३। |
| भूमंडळापासूनि उत्पत्ती । जीव नेणों जाले किती । |
| परंतु ब्रह्म आदिअंतीं । व्यापूनि आहे । १४। |
| जें जें काहीं निर्माण जालें। तें तें अवधेंचि नासलें। |
| परी मुळीं ब्रह्म तें संचलें । जैसें तैसें । १५। |
| घटापूर्वी आकाश असे । घटामधें आकाश भासे। |
| घट फुटतां न नासे । आकाश जैसें । १६। |
| तैसें परब्रह्म केवळ । अचळ आणि अढळ । |
| मधें होत जात सकळ । सचराचर ।१७। |
| जें जें कांहीं निर्माण जालें । तें तें आधींच ब्रह्में व्यापिलें । |
| सर्व नाशतां उरलें । अविनाश ब्रह्म । १८। |
| ऐसें ब्रह्म अविनाश । तेंचि सेविती ज्ञाते पुरुष । |
| तत्वनिश्निं आपणास । आपण लाभे ।१९। |
| तत्वें तत्व मेळविलें। त्यासी देह हें नाम ठेविलें। |
| तें जाणते पुरुषीं शोधिलें । तत्वें तत्व ।२०। |
| तत्वझाडा निशेष होतां । तेथें निमाली देहअहंता । |
| निर्गुण ब्रह्मीं ऐक्यता । विवेकें जाली । २१। |
| विवेकें देहाकडे पाहिलें। तों तत्वें तत्व वोसरलें। |
| आपण कांहीं नाहीं आलें। प्रत्ययासी ।२२। |

| आपला आपण शोध घेतां। | आपली तों माईक वार्ता। |
|---------------------------|--|
| तत्वांतीं उरलें तत्वता। | निर्गुण ब्रह्म । २३। |
| आपणाविण निर्गुण ब्रह्म । | |
| तत्वासरिसा गेला भ्रम । | |
| मी पाहातां आडळेना । | निर्गुण ब्रह्म तें चळेना। |
| आपण तेंचि परी कळेना। | |
| सारासार अवधें शोधिलें। | तों असार तें निघोन गेलें। |
| | निर्गुण ब्रह्म । २६। |
| आधीं ब्रह्म निरोपिलें। | |
| | उरलें तें केवळ ब्रह्म । २७। |
| होतां विवेकें संव्हार । | |
| आपला आपणासि विचार । | |
| आपण कल्पिलें मीपण। | |
| मीपण गेलियां निर्गुण। | |
| जालियां तत्वाचें निर्शन । | निर्गुण आत्मा तोचि आपण। |
| कां दाखवावें मीपण। | |
| तत्वांमध्यें मीपण गेलें। | तरी निर्गुण सहजचि उरलें। |
| सोहंभावें प्रत्यया आलें। | |
| आत्मनिवेदन होतां। | देवाभक्तांसी ऐक्यता। |
| साचार भक्त विभक्तता । | The state of the s |
| निर्गुणासी नाहीं जन्ममरण। | — |
| | मुक्त जाला । ३३। |
| तत्वीं वेटाळून घेतला । | |
| आपणासी आपण भुलला। | कोहं म्हणे । ३४। |

तत्वीं गुंतला म्हणे कोहं । विवेक पाहातां म्हणे सोहं । अनन्य होतां अहं सोहं । मावळलीं ।३५। याउपरी उर्वरित । तेंचि स्वरूप संत । देहीं असोनि देहातीत । जाणिजे ऐसा ।३६। संदेहवृत्ति ते न भंगे । म्हणोनि बोलिलेंचि बोलावें लागे । आम्हासी हें घडलें प्रसंगें । श्रोतीं क्ष्मा करावें ।३७।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'मायोद्भवनाम' समास तिसरा समाप्त.



कृतायुग सत्रा लक्ष अठाविस सहस्र । त्रेतायुग बारा लक्ष शाहाणी सहस्र । द्वापार आठ लक्ष चौसष्टी सहस्र । आतां कलयुग ऐका । १ । कलयुग च्यारि लक्ष बतीस सहस्र । च्यतुर्युगें त्रेताळिस लक्ष वीस सहस्र । ऐसीं च्यतुर्युगें सहस्र । तो ब्रह्मयाचा येक दिवस । २ । ऐसे ब्रह्मे सहस्र देखा । तेव्हां विष्णूची येक घटिका । विष्णु सहस्र होतां ऐका । पळ येक ईश्वराचें । ३ । ईश्वर जाये सहस्र वेळ । तें शक्तीचें अर्ध पळ । ऐसी संख्या बोलिली सकळ । शास्त्रांतरीं । ४ । चतुर्युगसहस्राणि दिनमेकं पितामहम् । पितामहसहस्राणि विष्णोघीटिकमेव च ।।

| महेश्वरसहस्राणि शक्तेरर्धं पलं भवेत्।। | | | |
|--|---|-----|------------|
| ऐशा अनंत शक्ती होती । अनंत रचना होति जाती तरी अखंड खंडेना स्थिती । परब्रह्माची | | ų | ı |
| परब्रह्मासी कैंची स्थिती। परी हे बोलावयाची रिती वेदश्रुती नेति नेति। परब्रह्मीं | | 8 | , |
| च्यारि सहस्र सातसें साठीं । इतुकी कलयुगाची राहाटी | 1 | | |
| उरल्या कलयुगाची गोष्टी। ऐसी असे च्यारि लक्ष सत्ताविस सहस्र। दोनिसें चाळीस संवछर | l | 9 | ı |
| पुढें अन्योविण्य वर्णसंकर । होणार आहे ऐसें रचलें सचराचर । येथें येकाहृनि येक थोर | | ۷ | 1 |
| पाहतां येथीचा विचार । अंत न लगे येक म्हणती विष्णु थोर । येक म्हणती रुद्र थोर | ١ | 9 | ı |
| येक म्हणती शक्ति थोर। सकळांमध्यें | 1 | १० |) |
| ऐसें आपुलालेपरी बोलती। परंतु अवधेंचि नासेल कल्पांतीं यदृष्टं तं नष्टं हे श्रुती। बोलतसे | | ११ | १। |
| आपुलाली उपासना । अभिमान लागला जना याचा निश्चयो निवडेना । साधुविण | 1 | 9 : | 9 1 |
| साधु निश्चय करिती येक । आत्मा सर्वत्र व्यापक येर हें अवधेंचि माईक । सचराचर | 1 | | |
| चित्रीं लिहिली सेना । त्यांत कोण थोर कोण साना | | १ | |
| हें तुम्ही विचाराना । आयुले ठाईं स्वप्नीं उदंड देखिलें । लहानथोरहि कल्पिलें | | | ४। |
| परंतु जागें जालियां जालें । कैसें पाहा | 1 | 9 (| 4 I |

| पाहातां जागृतीचा विचार । कोण लाहान कोण थोर । |
|---|
| जाला अवघाचि विस्तार । स्वपरचनेचा ।१६। |
| अवघाचि माईक विचार। कैंचें लाहान कैंचें थोर। |
| लाहानथोराचा निर्धार । जाणती ज्ञानी । १७। |
| जो जन्मासी येऊन गेला । तो मी थोर म्हणतांच मेला । |
| परी याचा विचार पाहिला। पाहिजे श्रेष्ठीं ।१८। |
| जयांसि जालें आत्मज्ञान । तेचि थोर माहाजन । |
| वेद शास्त्रें पुराण । साधु संत बोलिले ।१९। |
| एवं सकळांमध्यें थोर । तो येकची परमेश्वर । |
| तयामधे चित्रक 🕒 |
| हारहर । हाति जाता ।२०। |
| तो निर्गुण निराकार । तेथें नाहीं उत्पत्ती विस्तार । |
| स्थानमानाचा विचार। ऐलिकडे |
| नावरूप स्थानमान । हा तो आवरणि रू |
| तथाप। हाइल निटान । बहातकर्व |
| ब्रह्म प्रळयावेगळें । ब्रह्म नावरूपानिराळें । |
| श्रह्म काणा यकाकाळ । जैसे हैसे |
| 1 4 3 1 |
| अलगरान्या जाणती बहा संपार्ता |
| गर्भाय श्राह्मण । ब्रह्मावद |
| इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'ब्रह्मनिरूपणनाम' |
| समास चौथा समाप्त. |
| ** IF \[\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ |

दशक ६: समास ५

मायाब्रह्मनिरूपण

| श्रोते पुसती ऐसें। माया ब्रह्म तें कै | सें । | | |
|--|-------|-----|-----|
| श्रोत्यां वक्तयांच्या मिसें । निरूपण ऐका | -1 | 8 | 1 |
| ब्रह्म निर्गुण निराकार । माया सगुण साका | र । | | |
| ब्रह्मासि नाहीं पारावार । मायेसि आहे | | 2 | ı |
| ब्रह्म निर्मळ निश्चळ । माया चंचळ चपर | ळ । | | |
| ब्रह्म निरोपाधी केवळ । माया उपाधिरूपी | | - | ı |
| माया दिसे ब्रह्म दिसेना । माया भासे ब्रह्म भासेन | नाः । | | |
| माया नासे ब्रह्म नासेना । कल्पांतकाळीं | | | 1 |
| माया रचे ब्रह्म रचेना। माया खचे ब्रह्म खचे | ना । | | |
| माया रुचे ब्रह्म रुचेना । अज्ञानासी | | 4 | ١ |
| माया उपजे ब्रह्म उपजेना । माया मरे ब्रह्म मरे | ना । | | |
| माया धरे ब्रह्म धरेना । धारणेसी | | Ę | 1 |
| माया फुटे ब्रह्म फुटेना । माया तुटे ब्रह्म तुटे | ना । | | |
| माया विटे ब्रह्म विटेना । अविनाश तें | | | I |
| माया विकारी ब्रह्म निर्विकारी । माया सर्व करी ब्रह्म कांहींच न व | हरी । | | |
| माया नाना रूपें धरी। ब्रह्म तें अरूप | | 6 | 1 |
| माया पंचभूतिक अनेक। ब्रह्म तें शाश्वत ये | क | | |
| मायाब्रह्मांचा विवेक । विवेकी जाणती | | | 1 |
| माया लाहान ब्रह्म थोर । माया असार ब्रह्म स | ार । | | |
| माया अर्ति पार । ब्रह्मासी नाहीं | | 180 |) [|

| सकळ माया विस्तारली। | ब्रह्मस्थिति अछ्यादिली | 1 |
|---|-------------------------------------|-------|
| | साधुजनीं | 1881 |
| गोंडाळ सांडून नीर घेइजे । | नीर सांडूनि क्षीर सेविजे | 1 |
| माया सांडूनि अनुभविजे । | ब्रह्म तैसें | 1881 |
| ब्रह्म आकाशाऐसें निवळ। | माया वसुंधरा डहुळ | 1 |
| ब्रह्म सूक्ष्म केवळ । | माया स्थूळरूपी | 1831 |
| ब्रह्म तें अप्रत्यक्ष असे । | माया ते प्रत्यक्ष दिसे | l |
| ब्रह्म तें समचि असे । | | |
| माया लक्ष ब्रह्म अलक्ष । | माया साक्ष ब्रह्म असाक्ष | 1 |
| मायेमध्यें दोनि पक्ष । | | |
| माया पूर्वपक्ष ब्रह्म सिन्द्रांत । | माया असंत ब्रह्म संत | l |
| ब्रह्मासि नाहीं करणें हेत। | | 1 १६। |
| ब्रह्म अखंड घनदाट। | माया पंचभूतिक पोचट | l |
| ब्रह्म तें निरंतर निघोट । | | _ |
| माया घडे ब्रह्म घडेना । | माया पडे ब्रह्म पडेना | 1 |
| माया विघडे ब्रह्म विघडेना। | | |
| ब्रह्म असतचि असे । | माया निरसितांच निरसे | 1 |
| ब्रह्मास कल्पांत नसे । | मायास आहे | 1881 |
| माया कठिण ब्रह्म कोमळ। | माया अल्प ब्रह्म विशाळ | 1 |
| माया नासे सर्वकाळ। | श्रह्माच अस | 1501 |
| वस्तु नव्हे बोलिजे ऐसी । काळ पावेना वस्तुसी। | माया जसा बालिजे तैसी | 1 |
| नाना रूप नाना रंग। | निका क्राडपा | 1561 |
| माया भंगे ब्रह्म अभंग । | ाततुका मायचा प्रस्ता जैसें तैसें | |
| | -1(1) (1(4) | 1551 |

आतां असो हा विस्तार । चालत जातें सचराचर ।
तितुकी माया परमेश्वर । सबाह्यअभ्यंतरीं ।२३।
सकळ उपाधीवेगळा । तो परमात्मा निराळा ।
जळीं असोनि नातळे जळा । आकाश जैसें ।२४।
मायाब्रह्माचें विवरण । करितां चुके जन्ममरण ।
संतांस गेलियां शरण । मोक्ष लाभे ।२५।
अरे या संतांचा महिमा । बोलावया नाहीं सीमा ।
जयांचेनि जगदात्मा । अंतरिच होये ।२६।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'मायाब्रह्मनिरूपणनाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक ६: समास ६ मृष्टिकथन

॥ श्रीराम ॥

सृष्टीपूर्वी ब्रह्म असे । तेथें सृष्टि मुळींच नसे । आतां सृष्टि दिसत असे । तें सत्य किं मिथ्या । १ । तुम्ही सर्वज्ञ गोसांवी । माझी आशंका फेडावी । ऐसा श्रोता विनवी । वक्तयासी । २ । आतां ऐका प्रत्योत्तर । कथेसि व्हावें तत्पर । वक्ता सर्वज्ञ उदार । बोलता जाला । ३ । जीवभूतः सनातन । ऐसें गीतेचें वचन । येणे वाक्यें सत्यपण । सृष्टीस आलें । ४ ।

| |
|--|
| यद्दृष्टं तन्नष्टं येणें। वाक्य सृष्टी मिथ्यापणें। |
| सत्य मिथ्या ऐसें कोणें। निवडावें । ५। |
| सत्य म्हणों तरी नासे । मिथ्या म्हणों तरी दिसे । |
| अस्य क्ष्मा तरा नास । मध्या म्हणा तरा दिस । |
| आतां जैसें आहे तैसें। बोलिजेल । ६। |
| सृष्टीमध्यें बहुजन । अज्ञान आणी सज्ञान । |
| स्थितिका सम्बद्धाः । १ |
| |
| ऐका अज्ञानाचें मत । सृष्टि आहे ते शाश्वत । |
| देव धर्म तीर्थ व्रत । सत्यचि आहे । ८ । |
| बोले सर्वज्ञाचा राजा। मूर्खस्य प्रतिमापूजा। |
| बहापळयाच्या केना चं |
| ब्रह्मप्रळयाच्या पैजा । घालूं पाहे । ९। |
| तंव बोले तो अज्ञान । तरी कां करिसी संध्यास्नान । |
| गुरुभजन तीर्थाटण । कासया फिरावें ।१०। |
| तीर्थे तीर्थे निर्मलं बटाइंड डंगे डंगे - ० |
| तीर्थे तीर्थे निर्मलं ब्रह्मवृंदं वृंदे वृंदे तत्त्वचितानुवादः। |
| वादे वादे जायते तत्त्वबोधः बोधे बोधे भासते चंद्रचूडः ॥ |
| चंद्रचुंडाचे वच्च । गुरुवान् रे |
| TIE THE STATE OF T |
| न नार्याक्ष हर् |
| गुरूसि कैसें भजावें। आधीं तयासि वोळखावें। |
| रनाय समाधान ध्यावे । विवेतें उत्तरें |
| ब्रह्मानंदं परक्रमावनं नेन्नं - ल |
| ब्रह्मानंदं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति |
| द्वंद्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्। |
| रण गर्प विमलमचल सर्वधीसाक्षिभतं |
| भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥ |
| उ गला तप्रुष त नमामि ॥ |

गुरुगीतेचें वचन । ऐसें सद्गुरूचें ध्यान । तेथें सृष्टिमिध्याभान । उरेल कैंचें । १३। ऐसा सज्ञान बोलिला। सद्गुरु तो वोळखिला। सृष्टि मिथ्या ऐसा केला । निश्चितार्थ । १४। श्रोता ऐसें न मनी कदा । आधीक उठिला वेवादा । म्हणे कैसा रे गोविंदा । अज्ञान म्हणतोसी । १५। जीवभूतः सनातनः । ऐसें गीतेचें वचन । तयासि तूं अज्ञान । म्हणतोसि कैसा । १६। ऐसा श्रोता आक्षेप करी । विषाद मानिला अंतरीं। याचें प्रत्योत्तर चतुरीं । सावध परिसावें ।१७। गीतेस बोलिला गोविंद। त्याचा न कळे तुज भेद। म्हणौनियां वेर्थ खेद । वाहातोसी ।१८। अश्वत्यः सर्ववृक्षाणां । माझी विभृति पिंपळ । म्हणौनि बोलिला गोपाळ । वृक्ष तोडितां तत्काळ । तुटत आहे । १९। नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक:। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ शस्त्रांचेनि तुटेना । अग्निचेनि जळेना । उदकामध्यें कालवेना । स्वरूप माझें । २०। पिंपळ तुटे शस्त्रानें । पिंपळ जळे पावकानें । पिंपळ कालवे उदकानें । नाशिवंत । २१। तुटे जळे बुडे उडे । आतां ऐक्य कैसें घडे । म्हणोनि हें उजेडे । सद्गुरुमुखें । २२।

| इंद्रियाणां मनश्चास्मि । कृष्ण म्हणे मन तो मी । |
|---|
| तरी कां आवरावी उर्मी । चंचळ मनाची । २३। |
| ऐसें कृष्ण कां बोलिला । साधनमार्ग दाखविला । |
| खडे मांडूनि सिकविला । वोनामा जेवी । २४। |
| ऐसा आहे वाक्यभेद। सर्व जाणे तो गोविंद। |
| देहबुद्धीचा वेवाद । कामा नये । २५। |
| वेद शास्त्र श्रुति स्मृती । तेथे वाक्यभेद पडती । |
| ते सर्वहि निवडती । सद्गुरूचेनि वचनें । २६। |
| वेदशास्त्रांचें भांडण । शस्त्रें तोडी ऐसा कोण । |
| हें निवडेना साधुविण। कदा कल्पांतीं । २७। |
| पूर्वपक्ष आणि सिद्धांत । शास्त्रीं बोलिला संकेत । |
| याचा होये निश्चितार्थ। साधुमुखें । २८। |
| येरवीं वादाचीं उत्तरें। येकाहूनि येक थोरें। |
| बोलों जातां अपारें। वेदशास्त्रीं ।२१। |
| म्हणोनि वादवेवाद । सांडून कीजे संवाद । |
| तेणें होये ब्रह्मानंद । स्वानुभवें ।३०। |
| येके कल्पनेचे पोटीं । होति जाती अनंत सृष्टी । |
| तया सृष्टीची गोष्टी । साच केवी ।३१। |
| कल्पनेचा केला देव। तेथें जाला दृढभाव। |
| देवालागीं येतां खेव । भक्त दुःखें दुःखवला ।३२। |
| पाषाणाचा देव केला। येके दिवसीं भंगोन गेला। |
| तेणें भक्त दुखवला । रडे पडे आक्रंदे । ३३। |

| देव हारपला घरीं। येक देव नेला चोरीं। |
|--|
| येक देव दुराचारीं। फोडिला बळें ।३४। |
| येक देव जापाणिला । एक देव उदकीं टाकिला । |
| येक देव नेऊनि घातला। पायातळीं ।३५। |
| काय सांगों तीर्थमहिमा । मोडूनि गेला दुरात्मा । |
| थोर सत्व होतें तें मा। काय जालें कळेना ।३६। |
| देव घडिला सोनारीं। देव वोतिला वोतारीं। |
| येक देव घडिला पाथरीं । पाषाणाचा ।३७। |
| नर्बदागंडिकातीरीं । देव पडिले लक्षवरी। |
| त्यांची संख्या कोण करी। असंख्यात गोटे ।३८। |
| चक्रतीर्थी चक्रांकित । देव असती असंख्यात । |
| नाहीं मनीं निश्चितार्थ । येक देव । ३९। |
| बाण तांदळे तांब्रनाणें । स्फटिक देव्हारीं पूजणें । |
| ऐसे देव कोण जाणें। खरे किं खोटे 1४०। |
| देव रेसिमाचा केला । तोहि तुटोनियां गेला । |
| आतां नवा नेम धरिला । मृत्तिकेचा ।४१। |
| आमचा देव बहु सत्य । आम्हां आकांतीं पावत । |
| पूर्ण करी मनोरथ । सर्वकाळ ।४२। |
| आतां याचें सत्व गेलें। प्राप्त होतें तें जालें। |
| प्राप्त न वचे पालटिलें । ईश्वराचेनी ।४३। |
| धातु पाषाण मृत्तिका । चित्रलेप काष्ठ देखा । |
| तेथें देव कैंचा मूर्खा । भ्रांति पडिली । ४४। |
| हे आपुली कल्पना। प्राप्तांऐसीं फळें जाणा। |
| परी त्या देवाचिया खुणा । वेगळ्याचि ।४५। |

| म्हणौनि हें मायाभ्रमणें । सृष्टि मिथ्या कोटिगुणें। |
|---|
| वेद शास्त्रें पुराणें। ऐसींच बोलती ।४६। |
| साधुसंत मानुभाव । त्यांचा ऐसाचि अनुभव । |
| पंचभूतातीत देव। सृष्टि मिथ्या ।४७। |
| सृष्टीपूर्वी सृष्टि चालतां । सृष्टि अवधी संव्हारतां । |
| शाश्वत देव तत्वतां । आदिअंतीं । ४८। |
| ऐसा सर्वांचा निश्चयो । येदर्थी नाहीं संशयो । |
| वीतरेक आणि अन्वयो । कल्पनारूप । ४९। |
| येके कल्पनेचे पोटीं । बोलजेती अष्ट सृष्टि । |
| तया सृष्टीची गोष्टी । सावध ऐका ।५०। |
| येकी कल्पनेची सृष्टी। दुजी शाब्दिक सृष्टी। |
| तिजी प्रत्यक्ष सृष्टी। जाणती सर्व ।५१। |
| चौथी चित्रलेपसृष्टी । पांचवी स्वप्नसृष्टी । |
| साहावी गंधर्वसृष्टी । ज्वरसृष्टी सातवी । ५२। |
| आठवी दृष्टिबंधन। ऐशा अष्ट सृष्टि जाण। |
| यामधें श्रेष्ठ कोण । सत्य मानावी । ५३। |
| म्हणोनि सृष्टी नासिवंत । जाणती संत महंत । |
| सगुणीं भजावें निश्चित । निश्चयालागीं ।५४। |
| सगुणाचेनि आधारें । निर्गुण पाविजे निधरिं । |
| सारासारविचारें । संतसंगें । ५५। |
| आतां असो हें बहुत । संतसंगें कळे नेमस्त । |
| येन्हवीं चित्त दुश्चित। संशई पडे ।५६। |
| तव शिष्यें आक्षेपिलें। सृष्टी मिथ्या ऐसें कळलें। |
| परी हें अवधें नाथिलें। तरी दिसतें कां ।५७। |

दृश्य प्रत्यक्ष दिसतें । म्हणोन सत्यिच वाटतें । यासि काय करावें तें । सांगा स्वामी । ५८। याचें प्रत्योत्तर भलें । पुढिलें समासीं बोलिलें । श्रोतां श्रवण केलें । पाहिजे पुढें । ५९। एवं सृष्टी मिथ्या जाण। जाणोनि रक्षावें सगुण। ऐसी हे अनुभवाची खूण। अनुभवी जाणती ।६०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सृष्टिकथननाम' समास सहावा समाप्त.

> > दशक ६ : समास ७

सगुणभजन

॥ श्रीराम ॥

ज्ञानें दृश्य मिथ्या जालें । तरी कां पाहिजे भजन केलें ।
तेणें काये प्राप्त जालें । हें मज निरोपावें । १ ।
ज्ञानाहूनि श्रेष्ठ असेना । तरी कां पाहिजे उपासना ।
उपासनेनें जना । काये प्राप्त । २ ।
मुख्य सार तें निर्गुण । तेथें दिसेचिना सगुण ।
भजन केलियाचा गुण । मज निरोपावा । ३ ।
जें समस्त नासिवंत । त्यासि भजावें किंनिमित्य ।
सत्य सांडून असत्य । कोणें भजावें । ४ ।
असत्याचा प्रत्यये आला । तरी मग नेम कां लागला ।
सत्य सांडून गल्बला । कासया करावा । ५ ।

| निर्गुणानें मोक्ष होतो । प्रत्यक्ष प्रत्यया येतो । |
|---|
| सगुण काये देऊं पाहातो । सांगा स्वामी । ६ । |
| सगुण नासिवंत ऐसें सांगतां । पुन्हा भजन करावें म्हणतां । |
| तरी काशासाठीं आतां । भजन करूं । ७ । |
| स्वामीचे भिडेनें बोलवेना । येन्हवीं हें कांहींच मानेना । |
| साध्यचि जालियां साधना । कां प्रवर्तावें । ८। |
| ऐसें श्रोतयाचें बोलणें। शब्द बोले निर्बुजलेपणें। याचें उत्तर ऐकणें। म्हणे वक्ता । ९। |
| याचे उत्तर ऐकणें । म्हणे वक्ता । ९ । गुरुचें वचन प्रतिपाळण । हें मुख्य परमार्थाचें लक्षण । |
| वचनभंग करितां विलक्षण । सहजेंचि जालें । १०। |
| म्हणोनि आज्ञेसी वंदावे । सगुणभजन मानावें । |
| श्रोता म्हणे हें देवें । कां प्रयोजिलें । ११। |
| काय मानिला उपकार । कोण जाला साक्षात्कार। |
| किंवा प्रारब्धाचें अक्षर । पुसिलें देवें । १२। |
| होणार हें तों पालटेना । भजनें काय करावें जना । |
| हें तों पाहातां अनुमाना । कांहींच नये । १३। |
| स्वामीची आज्ञा प्रमाण । कोण करील अप्रमाण । परंतु याचा काय गुण । मज निरोपावा । १४। |
| वक्ता म्हणे सावधपणें। सांग ज्ञानाचीं लक्षणें। |
| तुज कांहीं लागे करणें। किंवा नाहीं ।१५। |
| करणें लागे भोजन । करणें लागे उदकप्राशन । |
| मळमूत्रत्यागलक्षण । तेंहि सुटेना । १६। |
| जनाचें समाधान राहावें । आपुलें पारिखें वोळखावें । |
| आणि भजनचि मोडावें । हें कोण ज्ञान । १७। |

| ज्ञानविवेकें मिथ्या जालें । परंतु अवधें नाहीं टाकिलें | 1 | | |
|--|---|------------|------------|
| तरी मग भजनेंचि काय केलें । सांग बापा | l | १ | 61 |
| साहेबास लोटांगणीं जावें । नीचासारिखें व्हावें | 1 | | |
| आणी देवास न मनावें। हें कोण ज्ञान | 1 | १ | १। |
| हरीहर ब्रह्मादिक । हे जयाचे आज्ञाधारक | | | |
| तूं येक मानवी रंक। भजेसिना तरी काय गेलें | ı | २ (|) |
| आमुचे कुळीं रघुनाथ । रघुनाथें आमुचा परमार्थ | l | | |
| जो समर्थाचाहि समर्थ। देवां सोडविता | | २१ | 8 1 |
| त्याचे आम्ही सेवकजन। सेवेकरितां जालें ज्ञान | 1 | | |
| तेथें अभाव धरितां पतन । पाविजेल कीं | | ? : | ? I |
| गुरु सांगती सारासार । त्यास कैसें म्हणावें असार | | | |
| तुज काय सांगणें विचार। शाहाणे जाणती | | ? ? | } 1 |
| समर्थाचे मनीचें तुटे। तेंचि जाणावें अदृष्ट खोटें | l | | |
| राज्यपदापासून करंटें। चेवलें जैसें | | २३ | 6 1 |
| मी थोर वाटे मनीं। तो नव्हे ब्रह्मज्ञानी | ì | | |
| विचार पाहातां देहाभिमानी । प्रत्यक्ष दिसे | | २८ | ςĪ |
| वस्तुभजन करीना । ना न करीं ऐसेंही म्हणेना | l | | |
| तरी हे जाणावी कल्पना । दडोन राहिली | | २६ | į l |
| ना तें ज्ञान ना तें भजन । उगाचि आला देहाभिमान येथें नाहीं किं अनुमान । प्रत्यय तुझा | | | _ |
| | | २७ | 9 |
| तरी आतां ऐसें न करावें । रघुनाथभजनीं लागावें तेणेंचि ज्ञान बोलावें । चळेना ऐसें | | ₹ 6 | |
| free property of the second section of the second section of the second section sectin | | 76 | |

| करी दुर्जनाचा संव्हार । भक्तजनासी आधार । | |
|--|------|
| ऐसा हा तों चमत्कार। रोकडा चाले । २ | १। |
| मनीं धरावें तें होतें । विघ्न अवधेंचि नासोन जातें । | |
| कृपा केलियां रघुनाथें । प्रचित येते । ३ | 01 |
| रघुनाथभजनें ज्ञान जालें। रघुनाथभजनें महत्त्व वाढलें। | |
| म्हणौनियां तुवां केलें। पाहिजे आधीं । ३ | १। |
| हें तों आहे सप्रचित । आणी तुज वाटेना प्रचित । | |
| साक्षात्कारें नेमस्त । प्रत्ययो करावा । ३ | ٦1 |
| रघुनाथ स्मरोनि कार्य करावें । तें तत्काळचि सिद्धि पावे । | |
| कर्ता राम हें असावें । अभ्यांतरीं । ३ | ३। |
| कर्ता राम मी नव्हे आपण । ऐसें सगुणनिवेदन । | |
| निर्गुणीं तें अनन्य । निर्गुणचि होईजे । ३ | ४। |
| मी कर्ता ऐसें म्हणतां । कांहींच घडेना सर्वथा। | |
| प्रचित पाहासी तरी आतां । सीघ्रचि पाहें । ३ | 41 |
| मी कर्ता ऐसें म्हणसी । तेणें तूं कष्टी होसी । | |
| राम कर्ता म्हणतां पावसी । येश कीर्ती प्रताप । ३ | ६। |
| येके भावनेसाठीं। देवासीं पडे तुटी। | |
| कां ते होये कृपादृष्टी। देव कर्ता भावितां। | । छ। |
| आपण आहे दों दिसांचा । आणी देव बहुतां काळांचा । | |
| आपण थोडे वोळिखचा । देवासि त्रैलोक्य जाणे । ३ | 15 |
| याकारणें रघुनाथभजन । त्यासी मानिती बहुत जन। | |
| ब्रह्मादिक आदिकरून । रामभजनीं तत्पर । र | 196 |

ज्ञानबळें उपासना । आम्ही भक्त जरी मानूं ना ।
तरी या दोषाच्या पतना । पावों अभक्तपणें ।४०।
देव उपेक्षी थोरपणें । तरी मग त्याचें तो जाणे ।
अप्रमाण तें श्लाघ्यवाणें । नव्हे कि श्रेष्ठा ।४१।
देहास लागली उपासना । आपण विवेकें उरेना ।
ऐसी स्थिति सज्जना । अंतरींची ।४२।
सकळ मिथ्या होऊन जातें । हे रामभजनें कळों येतें ।
दृश्य ज्ञानियांचेनि मतें । स्वप्न जैसें ।४३।
मिथ्या स्वप्नविवंचना । तैसी सृष्टीची रचना ।
दृश्य मिथ्या साधुजना । कळों आलें ।४४।
आक्षेप जाला श्रोतयांसी । मिथ्या तरी कां दिसतें आम्हांसी ।
याचें उत्तर पुढीले समासीं । बोलिलें असे ।४५।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सगुणभजननाम' समास सातवा समाप्त.

दशक ६ : समास ८

॥ श्रीराम ॥

मागां श्रोतीं पुसिलें होतें । दृश्य मिथ्या तरी कां दिसतें । याचें उत्तर बोलिजेल तें । सावध ऐका । १ । देखिलें तें सत्यचि मानावें । हें ज्ञात्याचें देखणें नव्हे । जड मूढ अज्ञान जीवें । हें सत्य मानिजे । २ ।

| येक्या देखिल्यासाठीं | | |
|---------------------------|--------------------------------|-------|
| संतांमहंतांच्या गोष्टी | । त्याहि मिथ्या मानाव्या | 1 3 1 |
| माझें दिसतें हेंचि खरें | । येथें चालेना दुसरें | ı |
| ऐशिया संशयाच्या भरें | । भरोंचि नये | 181 |
| मृगें देखिलें मृगजळ | । तेथें धावतें बरळ | t |
| जळ नव्हे मिथ्या सकळ | त्या पशूस कोणें म्हणावें | 141 |
| रात्रौ स्वप देखिलें | । बहुत द्रव्य सांपडलें | ı |
| बहुत जनांसी वेव्हारिलें | । तें खरें कैसेनि मानावें | 1 & 1 |
| कुशळ चितारी विचित्र | । तेणें निर्माण केलें चित्र | 1 |
| देखतां उठे प्रीति मात्र | । परंतु तेथें मृत्तिका | 191 |
| नाना वनिता हस्ति घोडे | । रात्रौ देखतां मन बुडे | 1 |
| दिवसां पाहातां कातडें | कंटाळवाणें | 161 |
| काष्ठी पाषाणी पुतळ्या | । नाना ठकारें निर्मिल्या | 1 |
| परम सुंदर वाटल्या | । परंतु तेथें पाषाण | 1 9 1 |
| नाना गोपुरीं पुतळ्या असती | । वक्रांगें वक्रत्यों प्रानानी | |
| लाधव दखता भरे वृत्ती | । परंतु तेथें त्रिभाग | 10.01 |
| खळता नेटके दशावतारी | । तेथें गेनी गंग — | |
| गत्र नाडिता कळाकुसरी | परंतु अवघे घटिंगण | 1001 |
| पृष्टा बहुरगा असत्य | बहरूणचें ने | |
| युग पाट दृश्य सत्य | । परी हे जाण अविद्या | 1021 |
| ानव्या साचासाारखं देखिलें | परि तें प्राक्तिने किन्मिन | 1 |
| दृष्टी तरळतां भासलें | तें साच कैसें मानावें | 1831 |

| वरी पाहातां पालथें आकाश । उदकीं पाहातां उताणें आकाश । |
|--|
| मध्यें चांदिण्याहि प्रकाश । परी तें अवधें मिथ्या । १४। |
| नृपतीनें चितारी आणिले । ज्याचे त्याऐसे पुतळे केले । |
| पाहातां तेचि ऐसे गमले । परी अवधे माईक । १५। |
| नेत्रीं कांहीं बाहोलि नसे । जेव्हां जें पाहावें तेव्हां तें भासे । |
| डोळां प्रतिबिंब दिसे । तें साच कैसेनी । १६। |
| जितुके बुडबुडे उठती । तितुक्यांमध्यें रूपें दिसती । |
| क्ष्णामध्यें फुटोन जाती। रूपें मिथ्या ।१७। |
| लघुदर्पणें दोनि च्यारी हातीं । तितुकीं मुखें प्रतिबिंबती । |
| परी तें मिथ्या आदिअंतीं । येकचि मुख । १८। |
| नदीतीरें भार जातां । दुसरा भार दिसे पालथा । |
| कां पडसादाचा अवचिता । गजर उठे ।१९। |
| वापीसरोवराचें तीर । तेथें पशु पक्षी नर वानर । |
| नाना पात्रें वृक्षविस्तार । दिसे दोहि सवा ।२०। |
| येक शस्त्र झाडूं जातां । दोनि दिसती तत्वतां । |
| नाना तंतु टणत्कारितां । द्विधा भासती । २१। |
| कां तें दर्पणाचे मंदिरीं । बैसली सभा दिसे दुसरी । |
| बहुत दीपांचिये हारीं । बहुत छ्याया दिसती । २२। |
| ऐसें हें बहुविध असे। साचासारिखेंचि दिसे। |
| परि हें सत्य म्हणौनि कैसें । विश्वासावें । २३। |
| माया मिथ्या बाजीगरी। दिसे साचाचिये परी। |
| परी हे जाणत्यानें खरी । मानूंचि नये कीं । २४। |

| लटिकें साचाऐसें भावावें । तरी पारखी कासया असावें । |
|--|
| येवं ये अविद्येचे यावे । ऐसेचि असती । २५। |
| मनुष्यांची बाजीगरी । बहुत जनास वाटे खरी । |
| सेवट पाहातां निर्धारीं । मिथ्या होये । २६। |
| तैसीच माव राक्षेसांची । देवांसिंह वाटे साची । |
| पंचविंकिसि मृगाची । पाठी घेतली रामें । २७। |
| पूर्वकाया पालटिती । येकाचेचि बहुत होती । |
| रक्तबिंदींच जन्मती । रजनीचर । २८। |
| नाना पदार्थ फळेंचि जाले। द्वारकेमधें प्रवेशले। |
| कृष्णें दैत्य किती विधले। कपटरूपी ।२९। |
| कैसें कपट रावणाचें। सिर केलें मावेचें। |
| काळनेमीच्या आश्रमाचें । अपूर्व कैसें ।३०। |
| नाना दैत्य कपटमती। जे देवांसिह नाटोपती। |
| मग निर्माण होऊन शक्ती। संव्हार केला ।३१। |
| ऐसी राक्षेसांची माव। जाणों न सकती देव। |
| कपटिवद्येचें लाघव । अघटित ज्यांचें । ३२। |
| मनुष्यांची बाजीगरी । राक्षसांची वोडंबरी । |
| भगवंताची नाना परी। विचित्र माया ।३३। |
| हे साचासारिखीच दिसे। विचारितांच नसे। |
| मिथ्याचि आभासे । निरंतर पाहातां । ३४। |
| साच म्हणावी तरी हे नासे । मिथ्या म्हणावी तरी हे दिसे । |
| दोहीं पदार्थीं अविश्वासे । सांगतां मन । ३५। |

| परंतु हें नव्हे साचार । मायेचा मिथ्या विचार । | |
|--|---|
| दिसतें हें स्वप्नाकार । जाण बापा । ३६। तथापि असो तुजला । भासचि सत्य वाटला । | I |
| तरी येथें चुका पडिला। ऐक बापा । ३७। | |
| दृश्यभास अविद्यात्मक । तुझाहि देहो तदात्मक । | |
| म्हणौनि हा अविवेक। तेथें संचरला ।३८। | |
| दृष्टीनें दृश्य देखिलें । मन भासावरी बैसलें। | |
| तरी तें लिंगदेह जालें। अविद्यात्मक ।३९। | |
| अविद्येनें अविद्या देखिली । म्हणोनि गोष्टि विश्वासली । तुझी काया अवधी संचली । अविद्येची ।४०। | |
| तेचि काया मी आपण। हें देहबुद्धीचें लक्षण। | |
| येणें करितां जालें प्रमाण । दृश्य आवधें ।४१। | |
| इकडे सत्य मानिला देहो । तिकडे दृश्य सत्य हा निर्वाहो । | |
| दोहींमधें माहां संदेहो । पैसावला बळें ।४२। | |
| देहबुद्धी केली बळकट । आणि ब्रह्म पाहों गेला धीट । तों दृश्यानें रुधिली वाट । परब्रह्माची ।४३। | |
| ता दृश्यान राघला वाट । परब्रह्माचा ।४३। तेथें साच मानी दृश्याला । निश्चयचि बाणोनि गेला। | |
| पाहा हो केवढा चुका पडिला। अकस्मात । ४४। | 1 |
| आतां असो हें बोलणें। ब्रह्म न पविजे मीपणें। | |
| देहबुद्धीचीं लक्षणें । दृश्य भाविती ।४५। | l |
| अस्तिचा देहीं मांषाचा डोळा । पाहेन म्हणे ब्रह्माचा गोळा । | |
| तो ज्ञाता नव्हे आंधळा। केवळ मूर्ख ।४६। | |

दृष्टीसि दिसे मनासि भासे । तितुकें काळांतरीं नासे ।

प्रवानि दृश्यातीत असे । परब्रह्म तें ।४७।

परब्रह्म तें शाश्वत । माया तेचि अशाश्वत ।

ऐसा बोलिला निश्चितार्थ । नाना शास्त्रीं ।४८।

आतां पुढें निरूपण । देहबुधीचें लक्षण ।

चुका पडिला तो मी कोण । बोलिलें असे ।४९।

मी कोण हें जाणावें । मीपण त्यागूनि अनन्य व्हावें ।

मग समाधान तें स्वभावें । आंगीं बाणें ।५०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'दृष्यनिर्शननाम' समास आठवा समाप्त.

दशक ६ : समास ९

॥ श्रीराम ॥

गुप्त आहे उदंड धन । काये जाणती सेवक जन ।
तयांस आहे तें ज्ञान । बाह्याकाराचें । १ ।
गुप्त ठेविलें उदंड अर्थ । आणी प्रगट दिसती पदार्थ ।
शाहाणे शोधिती स्वार्थ । अंतरीं असे । २ ।
तैसें दृश्य हें माईक । पाहात असती सकळ लोक ।
परी जयांस ठाउका विवेक । ते तदनंतर जाणती । ३ ।
प्रव्य ठेऊन जळ सोडिलें । लोक म्हणती सरोवर भरलें ।
तयाचें अभ्यांतर कळलें । समर्थ जनासी । ४ ।

| तैसे ज्ञाते ते समर्थ। तेंहिं वोळखिला परमार्थ | ı | |
|--|-------|--|
| इतर ते करिती स्वार्थ । दृश्य पदार्थाचा | 141 | |
| काबाडी वाहाती काबाड। श्रेष्ठ भोगिती रत्नें जाड | 1 | |
| हें जयाचें तयास गोड । कर्मयोगें | । ६ । | |
| येक काष्ठस्वार्थ करिती। येक शुभा येकवाटिती | | |
| तैसे नव्हेत कीं नृपति । सारभोक्ते | 191 | |
| जयांस आहे विचार । ते सुकासनीं जाले स्वार | | |
| इतर जवळील भार । वाहातचि मेले | | |
| येक दिव्यात्रें भक्षिती । येक विष्ठा सावडिती | 1 | |
| आपण वर्तल्याचा घेती । साभिमान | 1 9 1 | |
| सार सेविजे श्रेष्ठीं । असार घेयिजे वृथापृष्ठीं | | |
| | | |
| गुप्त परीस चिंतामणी । प्रगट खडे कांचमणी | | |
| गुप्त हेमरत्नखाणी । प्रगट पाषाण मृत्तिका | | |
| अव्हाशंख अव्हावेल । गुप्त वनस्पति अमोल | | |
| येरंड धोत्रे बहुसाल । प्रगट सिंपी | 1851 | |
| कोठे दिसेना कल्पतरु । उदंड सेरांचा विस्तारु | | |
| पाहातां नाहीं मळियागरु । बोरि बाभळा उदंडी | | |
| कामधेनु जाणिजे इंद्रें । सृष्टींत उदंड खिल्लारें | | |
| महद्भाग्य भोगिजे नृपवरें । इतर कर्मानुसार | | |
| नाना व्यापार करिती जन । आवधेचि म्हणती सकांचन | | |
| परंतु कुबेराचें महिमान । कोणासीचि न ये | 1841 | |

| तैसा ज्ञानी योगेश्वर । गुप्तार्थलाभाचा ईश्वर । |
|---|
| इतर ते पोटाचे किंकर । नाना मतें धुंडिती ।१६। |
| तस्मात सार तें दिसेना । आणी असार तें दिसे जना । |
| सारासारविवंचना । साधु जाणती । १७। |
| इतरांस हें काये सांगणें । खरें खोटें कोण जाणे। |
| साधुसंतांचिये खुणे । साधुसंत जाणती ।१८। |
| दिसेना जें गुप्त धन । तयासि करणें लागे अंजन । |
| गुप्त परमात्मा सज्जन—। संगतीं शोधावा ।१९। |
| रायाचे सन्निध होतां। सहजचि लाभे श्रीमंतता। |
| तैसा हा सत्संग धरितां। सद्वस्तु लाभे ।२०। |
| सद्वस्तूस लाभे सद्वस्तु । अव्यावेस्तास अव्यावेस्तु । |
| पाहातां प्रशस्तास प्रशस्तु । विचार लाभे ।२१। |
| म्हणौनि हें दृश्यजात । आवधेचि आहे अशाश्वत । |
| परमात्मा अच्युत अनंत । तो या दृश्यावेगळा ।२२। |
| दृश्यावेगळा दृश्याअंतरीं। सर्वात्मा तो सचराचरीं। |
| विचार पाहातां अंतरीं । निश्चये बाणे ।२३। |
| संसारत्याग न करितां । प्रपंचउपाधी न सांडितां । |
| जनामध्यें सार्थकता । विचारेचि होये । २४। |
| हें प्रचितीचें बोलणें। विवेकें प्रचित पाहाणें। |
| प्रचित पाहे तें शाहाणे। अन्यथा नव्हे ।२५। |
| सप्रचित आणि अनुमान । उधार आणी रोकडें धन । मानसपूजा प्रत्यक्ष दर्शन । यांस महदांतर |
| नानलपूजा प्रत्यक्ष दशन। यास महदातर । २६। |

पुढें जन्मांतरी होणार । हा तों अवघाच उधार । तैसा नव्हे सारासार। तत्काळ लाभे। २७। तत्काळिच लाभ होतो । प्राणी संसारी सुटतो । संशय अवघाचि तुटतो । जन्ममरणाचा 1261 याचि जन्में येणेंचि काळें । संसारीं होइजे निराळें। मोक्ष पाविजे निश्चळें । स्वरूपाकारें । २९। ये गोष्टीस करी अनुमान । तो सिद्धचि पावेल पतन । मिथ्या वदे त्यास आण । उपासनेची 1301 हें येथार्थिच आहे बोलणें। विवेकें सीघ्रचि मुक्त होणें। असोनी कांहींच नसणें। जनामधें ।३१। देवपद आहे निर्गुण । देवपदीं अनन्यपण । हाचि अर्थ पाहातां पूर्ण । समाधान बाणे ।३२। देहींच विदेह होणें। करून कांहींच न करणें। जीवनमुक्तांचीं लक्षणें । जीवन्मुक्त जाणे । ३३। येरवीं हें खरें न वटे । अनुमानेंचि संदेह वाटे । संदेहाचें मूळ तुटे। सद्गुरुवचनें । ३४।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सारशोधननाम' समास नववा समाप्त.

दशक ६ : समास १०

अनुर्वाच्य

| समाधान पुसतां कांहीं । म्हणती बोलिजे ऐसे नाहीं | Ĺ | | |
|---|---|----|---|
| तरी तें कैसें आहे सर्वही । निरोपावें | ı | 8 | Į |
| मुक्यानें गूळ खादला । गोडी न स्ये सांगाव्याला | ł | | |
| याचा अभिप्राव मजला । निरोपण कीजे | ı | 7 | ١ |
| अनुभवहि पुसों जातां। म्हणती न ये किं सांगतां | ı | | |
| | | 3 | I |
| जे ते अगम्य सांगती । न ये माझिये प्रचिती | i | | |
| विचार बैसे माझे चित्तीं। ऐसें करावें | | 8 | 1 |
| ऐसें श्रोत्यांचें उत्तर । याचें कैसें प्रत्योत्तर | | | |
| निरोपिजेल तत्पर । होऊन ऐका | | ų | ١ |
| जें समाधानाचें स्थळ । किं तो अनुभवचि केवळ | l | | |
| तें स्वरूप प्रांजळ । बोलोन दाऊं | | Ę | ł |
| जें बोलास आकळेना। बोलिल्याविणहि कळेना | l | | |
| जयासी कल्पितां कल्पना । हिंपुटी होये | | 9 | Į |
| तें जाणावें परब्रह्म । जें वेदांचें गुह्य परम | l | | |
| धरितां संतसमागम । सर्विह कळे | | 6 | Į |
| तेंचि आतां सांगिजेल। जें समाधान सखोल | 1 | | |
| ऐक अनुभवाचे बोल । अनुर्वाच्य वस्तु | | 9 | l |
| सांगतां न ये तें सांगणें। गोडी कळाया गूळ देणें | ı | | |
| ऐसें हें सद्गुरुविणें। होणार नाहीं | ì | १० | ł |

| सद्गुरुकृपा कळे त्यासी । जो शोधील आपणासी । |
|--|
| पुढें कळे अनुभवासी । आपेंआप वस्तु । ११। |
| दृढ करूनियां बुद्धि । आधीं घ्यावी आपशुद्धी । |
| तेणें लागे समाधी । अकस्मात । १२। |
| आपलें मूळ बरें शोधिता । आपली तों माईक वार्ता । |
| पुढें वस्तुच तत्वतां। समाधान ।१३। |
| आत्मा आहे सर्वसाक्षी। हें बोलिजे पूर्वपक्षीं। |
| जो कोणी सिद्धांत लक्षी। तोचि सिद्ध ।१४। |
| सिद्धांतवस्तु लक्षूं जातां। सर्वसाक्षी ते अवस्ता। |
| आत्मा तीहून पर्ता । अवस्तातीत । १५। |
| पदार्थज्ञान जेव्हां सरे। द्रष्टा द्रष्टेपणें नुरे। |
| ते समई उतरे। फुंज मीपणाचा ।१६। |
| जेथे मुरालें मीपण । तेंचि अनुभवाची खूण । अनुर्वाच्य समाधान । या कारणें बोलिजे ।१७। |
| • |
| अत्यंत विचाराचे बोल । तरी ते माईक फोल । शब्द सबाह्य सखोल । अर्थीच अवधा । १८। |
| शब्द सबाह्य सखाल । अथाच अवघा । १८। शब्दाकरितां कळे अर्थ । अर्थ पाहातां शब्द वेर्थ । |
| शब्द सांगे तें येथार्थ। परी आपण मिथ्या । १९। |
| शब्दाकरितां वस्तु भासे। वस्तु पाहातां शब्द नासे। |
| शब्द फोल अर्थ असे । घनवटपणें ।२०। |
| भुंसाकरितां धान्य निपजे । धान्ये घेऊन भूंस टाकिजे । |
| तैसें शब्द भूंस जाणिजे । अर्थ धान्य ।२१। |
| |

| पोचटामधें घनवट । घनवटीं उडे पोचट | 1 |
|--|--------|
| तैसा शब्द हा फलगट। परब्रह्मीं | 1221 |
| शब्द बोलोनि राहे । अर्थ शब्दापूर्वींच आहे | l |
| या कारणें न साहे । उपमा तया अर्थासी | 1231 |
| भूंस सांडून कण घ्यावा । तैसा वाच्यांश त्यजावा | 1 |
| कण लक्ष्यांश लक्षावा । शुद्ध स्वानुभवें | ।२४। |
| दृश्यावेगळें बोलिजे । त्यासी वाच्यांश म्हणिजे | 1 |
| त्याचा अर्थ तो जाणिजे । शुद्ध लक्ष्यांश | 1 २५ । |
| ऐसा जो शुद्ध लक्ष्यांश । तोचि जाणावा पूर्वपक्ष | |
| स्वानुभव तो अलक्ष । लक्षिला नवचे | |
| जेथें गाळून सांडिलें नभा । जो अनुभवाचा गाभा | |
| ऐसा तोहि उभा। कल्पित केला | |
| मिथ्या कल्पनेपासूनि जाला । खरेंपण कैंचें असेल त्याला | 1 |
| म्हणौनि तेथें अनुभवाला । ठावचि नाहीं | 1281 |
| दुजेविण अनुभव । हें बोलणेंचि तों वाव | 1 |
| याकारणें नाहीं ठाव । अनुभवासी | 1561 |
| अनुभवें त्रिपुटी उपजे । अद्वैतीं द्वैतचि लाजे | |
| म्हणौनि बोलणें साजे । अनुर्वाच्य | |
| दिवसरजनीचें परिमत्य । करावया मूळ आदित्य | |
| तो आदित्य गेलियां उर्वरित । त्यासी काये म्हणावें | |
| शब्दमौन्याचा विचार । व्हावया मूळ वोंकार | 1 |
| तो वोंकार गेलिया उच्चार । कैसा करावा | 1351 |

अनुभव आणि अनुभविता । सकळ ये मायेचि करितां। ते माया मुळीं नस्तां । त्यासीं काये म्हणावें ।३३। वस्तु येक आपण येक । ऐसी अस्ती वेगळिक। तरि अनुभवाचा विवेक । बोलों येता सुखें ।३४। वेगळेपणाची माता । ते लटिके वंधेची सुता । म्हणोनियां अभिन्नता । मुळींच आहे । ३५। अजन्मा होता निजेला । तेणें स्वप्नीं स्वप्न देखिला । सद्गुरूस शरण गेला । संसारदुःखें ।३६। सद्गुरुकृपेस्तव । जाला संसार वाव। ज्ञान जालियां ठाव । पुसे अज्ञानाचा । ३७। आहे तितुकें नाहीं जालें । नाहीं नाहींपणें निमालें। आहे नाहीं जाऊन उरलें । नसोन कांहीं । ३८। सुन्यत्वातीत शुन्द्रज्ञान । तेणें जालें समाधान । ऐक्यरूपें अभिन्न । सहजस्थिती । ३९। अद्वैतनिरूपण होतां । निमाली द्वैताची वार्ता । ज्ञानचर्चा बोलो जातां। जागृती आली ।४०। श्रोता व्हावें सावधान । अर्थीं घालावें मन । खुणे पावतां समाधान । अंतरीं कळे ।४१। तेणें जितुकें ज्ञान कथिलें । तितुकें स्वप्नावारीं गेलें। अनुर्वाच्य सुख उरलें । शब्दातीत ।४२। तेथें शब्देंविण ऐक्यता । अनुभव ना अनुभविता । ऐसा निवांत तो मागुतां । जागृती आला ।४३।

| तेणें स्वप्नीं स्वप्न देखिला । जागा होऊनि जागृती आला । |
|--|
| तेथें शब्द कुंठित जाला । अंत नलगे ।४४। |
| या निरूपणाचें मूळ । केलेंचि करूं प्रांजळ । |
| तेणें अंतरीं निवळ । समाधान कळे ।४५। |
| तंव शिष्यें विनविलें । जी हें आतां निरोपिलें । |
| तें पाहिजे बोलिलें । मागुतें स्वामी ।४६। |
| मज कळाया कारण । केलेंचि करावें निरूपण । |
| येथील जे कां निजखूण । ते मज अनुभवावी ।४७। |
| अजन्मा तो सांग कवण । तेणें देखिला कैसा स्वप्न । |
| तेथें कैसें निरूपण । बोलिलें आहे । ४८। |
| जाणोनी शिष्याचा आदर । स्वामी देती प्रत्योत्तर । |
| तेंचि आतां अति तत्पर । श्रोतीं येथें परिसावें ।४९। |
| ऐक शिष्या सावधान । अजन्मा तो तूंच जाण । |
| तुवां देखिला स्वप्नीं स्वप्न । तोहि आतां सांगतों ।५०। |
| स्वप्नीं स्वप्नाचा विचार । तो तूं जाण हा संसार । |
| येथें तुवां सारासार । विचार केला । ५१। |
| रिघोनी सद्गुरूस शरण । काढून शुद्ध निरूपण । |
| याची करिसी ऊणखूण । प्रत्यक्ष आतां । ५२। |
| याचाचि घेतां अनुभव । बोलणें तितुकें होतें वाव । |
| निवांत विश्रांतीचा ठाव । ते तूं जाण जागृती । ५३। |
| ज्ञानगोष्टीचा गल्बला। सरोन अर्थ प्रगटला। |
| याचा विचार घेतां आला। अंतरीं अनुभव ।५४। |

तुज वाटे हे जागृती । मज जाली अनुभवप्राप्ती । या नांव केवळ भ्रांती । फिटलीच नाहीं 1441 अनुभव अनुभवीं विराला । अनुभवेविण अनुभव आला । हाहि स्वप्नींचा चेईला । नाहींस बापा । ५६। जागा जालियां स्वप्नडर्मी । स्वपीं म्हणसी अजन्मा तो मी । जागेपणें स्वप्नउर्मी । गेलीच नाहीं 1491 स्वप्नीं वाटे जागेपण । तैसी अनुभवाची खूण । आली परी तें सत्य स्वप्न । भ्रमरूप 1461 जागृती या पैलिकडे। तें सांगणें केवि घडे। जेथें धारणाचि मोडे । विवेकाची 1491 म्हणोनि तें समाधान । बोलतांचि न ये ऐसें जाण । निशब्दाची ऐसी खूण । वोळखावी 1601 ऐसें आहे समाधान । बोलतांच न ये जाण । इतुकेन बाणली खूण । निशब्दाची 1581 इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'अनुर्वाच्यनाम'

दशक सहावा समाप्त

समास दहावा समाप्त.

दशक सातवा : चौदा ब्रह्मांचा

दशक ७: समास १ मंगलाचरण ॥ श्रीराम ॥

| विद्यावंताचां | पूर्वजु । मत्ताननु | येकद्विजु । |
|-------------------|-------------------------|------------------|
| त्रिनयेन | चतुर्भुजु । फरशपाणी | 181 |
| कुबेरापासूनि | अर्थ । वेदापासून | परमार्थ । |
| लक्ष्मीपासून | समर्थ । भाग्यासि ३ | आले । २ । |
| तैसी मंगळमूर्ती | अद्या । पासनि जाल | या ग्रुकल विद्या |
| तण कवा लाघत | व गद्या । सत्पात्रें जा | ले । ३ । |
| जैसी समर्थाचीं | लेंकुरें। नाना आ | ळंकारीं संदरें। |
| मूळ पुरुषाचेनि | द्वारें। तैसे कवी | 1 8 1 |
| नमूं ऐसिया | गणेंद्रा । विद्याप्रकाः | शें पर्णाचंदा । |
| जयाचेनि बो | धिसमुद्रा । भरितें दाटे | बळें । ५। |
| जो कर्तुत्वास | आरंभ । मूळपुरुष | मलाउंका |
| 4/11/4/ | स्वयंभ । आदिअंतीं | 1 & 1 |
| तयापासून | प्रमदा। इछा कु | मारी जाउटा |
| आदित्यापासून | गोदा । मृगजळ व | ा हे |
| ज मिथ्या म्हणतांच | त्र गोवी । माईकपणे | लाघवी । |
| वक्तयास वेढा | लावी । वेगळेपणें | 1 4 |
| 1700 - | | 101 |

दशक सातवा : चौदा ब्रह्मांचा

दशक ७ : समास १

मंगलाचरण ॥ श्रीराम ॥ विद्यावंताचां येकद्विजु । पूर्वजु । मत्ताननु त्रिनयेन चतुर्भुजु । फरशपाणी कुबेरापासूनि अर्थ । वेदापासून परमार्थ । लक्ष्मीपासून समर्थ । भाग्यासि आले । तैसी मंगळमूर्ती अद्या । पासूनि जाल्या सकळ विद्या । तेणें कवी लाघव गद्या । सत्पात्रें जाले जैसी समर्थाचीं लेंकुरें। नाना आळंकारीं सुंदरें। मूळ पुरुषाचेनि द्वारें। तैसे कवी 181 नम्ं ऐसिया गणेंद्रा । विद्याप्रकाशें पूर्णचंद्रा । जयाचेनि बोधसमुद्रा । भरितें दाटे बळें 141 जो कर्तुत्वास आरंभ। मूळपुरुष मुळारंभ। जो परात्पर स्वयंभ । आदिअंतीं 1 8 1 तयापासून प्रमदा । इछा कुमारी शारदा । आदित्यापासून गोदा । मृगजळ वाहे 191 जे मिथ्या म्हणतांच गोवी । माईकपणें लाघवी ।

वक्तयास वेढा लावी । वेगळेपणें

| जे द्वैताची जननी । किं ते अद्वैताची खाणी । |
|--|
| मूळमाया गवसणी । अनंत ब्रह्मांडांची । ९ । |
| किं ते अवदंबरी वल्ली । अनंत ब्रह्मांडीं लगडली। |
| मूळपुरुषाची माउली । दुहितारूपें ।१०। |
| वंदूं ऐसी वेदमाता । आदिपुरुषाची जे सत्ता । |
| आतां आठवीन समर्था। सद्गुरूसी ।११। |
| जयाचेनि कृपादृष्टी । होये आनंदाची वृष्टी । |
| तेणें सुखें सर्व सृष्टी । आनंदमये । १२। |
| किं तो आनंदाचा जनक । सायोज्यमुक्तीचा नायेक। |
| कैवल्यपददायक । अनाथबंधु । १३। |
| मुमुक्ष चातकीं सुस्वर । करुणा पाहिजे अंबर । |
| वोळे कृपेचा जळधर। साधकांवरी । १४। |
| किं तें भवार्णवींचें तारूं। बोधें पाववी पैलपारः। |
| माहां आवर्तीं आधारु । भाविकांसी ।१५। किं तो काळाचा नियंता । नांतरी संकटीं सोडविता । |
| कि ते भाविकांची माता । परम स्नेहाळु ।१६। |
| किं जो परत्रींचा आधार । किं ते विश्रांतीची थार । |
| नांतरी सुखाचें माहेर । सुखस्वरूप । १७। |
| ऐसा सद्गुरू पूर्णपणी। तुटे भेदाची कडसणी। |
| देहविण लोटांगणी । तया प्रभूसी ।१८। |
| साधु संत आणी सज्जन । वंदूनियां श्रोतेजन । |
| आतां कथानुसंघान । सावघ ऐका ।१९। |
| संसार हाचि दीर्घ स्वप्न । लोभें वोसणाती जन। |
| माझी कांता माझें धन । कन्या पुत्र माझे ।२०। |

| ज्ञानसूर्य मावळला । तेणें प्रकाश लोपला । |
|---|
| अंधकारें पूर्ण जाला । ब्रह्मगोळा आवधा । २१। |
| नाहीं सत्वाचें चांदिणें। कांहीं मार्ग दिसे जेणें। |
| सर्व भ्रांतीचेनि गुणें। आपेंआप न दिसे । २२। |
| देहबुद्धिअहंकारें । निजेले घोरती घोरें। |
| दुःखें आक्रंदती थोरें। विषयसुखाकारणें ।२३। |
| निजेले असतांच मेले। पुन्हा उपजतांच निजेले। |
| ऐसे आले आणी गेले । बहुत लोक । २४। |
| निदसुरेपणेंचि सैरा । बहुतीं केल्या येरझारा । |
| नेणोनियां परमेश्वरा । भोगिले कष्ट । २५। |
| तया कष्टाचें निर्शन । व्हावया पाहिजे आत्मज्ञान । |
| म्हणोनि हें निरूपण । अध्यात्मग्रंथ । २६। |
| सकळ विद्येमध्यें सार । अध्यात्मविद्येचा विचार । |
| दशमोध्याईं सारंगधर । भगवद्गीतेसि बोलिला । २७। |
| अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् । |
| याकारणें अद्वैतग्रंथ । अध्यात्मविद्येचा परमार्थ । |
| पाहावया तोचि समर्थ। जो सर्वांगें श्रोता ।२८। |
| जयाचें चंचल हृदये । तेणें ग्रंथ सोडूंचि नये। |
| सोडितां अलभ्य होये । अर्थ येथीचा । २९। |
| जयास जोडला परमार्थ। तेणें पाहावा हा ग्रंथ। |
| अर्थ शोधितां परमार्थ । निश्चयें बाणे ।३०। |
| जयासि नाहीं परमार्थ । तयासि न कळे येथीचा अर्थ । |
| नेत्रेंविण निधानस्वार्थ । अंधास कळेना । ३१। |
| |

येक म्हणती मऱ्हाटें काये । हें तों भल्यांसि ऐकों नये । तीं मूर्खें नेणती सोये । अर्थान्वयाची ।३२। लोहाची मांदुस केली । नाना रत्नें साठविलीं । ते अभाग्यानें त्यागिली । लोखंड म्हणौनी । ३३। तैसी भाषा प्राकृत । अर्थ वेदांत आणि सिन्द्रांत । नेणोनि त्यागी भ्रांत । मंदबुद्धिस्तव ।३४। आहाच सांपडतां धन । त्याग करणें मूर्खपण । द्रव्य घ्यावें सांठवण । पाहोंचि नये ।३५। परिस देखिला आंगणीं। मार्गी पडिला चिंतामणी। आव्हावेल माहांगुणी । कूपांमधें । ३६। तैसें प्राकृतीं अद्वैत । सुगम आणी सप्रचित । अध्यात्म लाभे अकस्मात । तरी अवश्य घ्यावें । ३७। न करितां वित्पत्तीचा श्रम । सकळ शास्त्रार्थ होये सुगम । सत्समागमाचें वर्म । तें हें ऐसें असे ।३८। जें वित्पत्तीनें न कळे। तें सत्समागमें कळे। सकळ शास्त्रार्थ आकळे । स्वानुभवासी ।३९। म्हणौनि कारण सत्समागम । तेथें नलगे वित्पत्तीश्रम । जन्मसार्थकाचें वर्म । वेगळेंचि आहे ।४०। भाषाभेदाश्च वर्तन्ते ह्यर्थ एको न संशय:। पात्रद्वये यथा खाद्यं स्वादभेदो न विद्यते॥ भाषापालटें कांहीं । अर्थ वायां जात नाहीं । कार्यसिद्धि ते सर्वही । अर्थाचपासीं 1881

तथापी प्राकृताकरितां । संस्कृताची सार्थकता । येन्हवीं त्या गुप्तार्था । कोण जाणे ।४२। आतां असो हें बोलणें। भाषा त्यागूनि अर्थ घेणें। उत्तम घेऊन त्याग करणें। सालीटरफलांचा ।४३। अर्थ सार भाषा पोचट । अभिमानें करावी खटपट । नाना अहंतेनें वाट । रुधिली मोक्षाची ।४४। शोध घेतां लक्ष्यांशाचा । तेथें आधीं वाच्यांश कैंचा । अगाध महिमा भगवंताचा । कळला पाहिजे ।४५। मुकेपणाचें बोलणें। हें जयाचें तोचि जाणे। स्वानुभवाचिये खुणे । स्वानुभवी पाहिजे ।४६। अर्थ जाणे अध्यात्माचा । ऐसा श्रोता मिळेल कैंचा । जयासि बोलतां वाचेचा । हव्यासचि पुरे ।४७। परीक्षवंतांपुढें रत्न । ठेवितां होये समाधान । तैसें ज्ञानियांपुढें ज्ञान । बोलावें वाटे 1881 मायाजाळें दुश्चीत होये। तें निरूपणीं कामा न ये। सांसारिकां कळे काये। अर्थ येथीचा ।४९। व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनंदन। बहुशाखा ह्यनंताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ॥ वेवसाईं जो मळिण । त्यासि न कळे निरूपण । येथें पाहिजे सावधपण । अतिशयेंसीं ।५०। नाना रत्नें नाना नाणीं। दुश्चीतपणें घेतां हानी। परीक्षा नेणतां प्राणी । ठकला तेथें ।५१।

तैसें निरूपणीं जाणा । आहाच पाहातां कळेना । मन्हार्टेचि उमजेना । कांहीं केल्यां ।५२। जेथें निरूपणाचे बोल । आणि अनुभवाची वोल । तें संस्कृतापरीस खोल । अध्यात्मश्रवण । ५३। मायाब्रह्म वोळखावें । तयास अध्यात्म म्हणावें । तरी तें मायेचें जाणावें । स्वरूप आधीं । ५४। माया सगुण साकार । माया सर्वस्व विकार । माया जाणिजे विस्तार । पंचभूतांचा ।५५। माया दृश्य दृष्टीस दिसे। माया भास मनासि भासे। माया क्षणभंगुर नासे । विवेकें पाहातां । ५६। माया अनेक विश्वरूप । माया विष्णूचें स्वरूप । मायेची सीमा अमूप । बोलिजे तितुकी । ५७। माया बहुरूपी बहुरंग । माया ईश्वराचा संग । माया पाहातां अभंग । अखिळ वाटे । ५८। माया सृष्टीची रचना । माया आपुली कल्पना । माया तोडितां तुटेना । ज्ञानेंविण ।५९। ऐसी माया निरोपिली । स्वल्प संकेतें बोलिली । पुढें वृत्ति सावध केली । पाहिजे श्रोतीं ।६०। पुढें ब्रह्मनिरोपण । निरोपिलें ब्रह्मज्ञान । जेणें तुटे मायाभान । येकसरें ।६१।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'मंगलाचरणनाम' समास पहिला समाप्त.

दशक ७ : समास २

ब्रह्मनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

| ब्रह्म निर्गुण निराकार । ब्रह्म निःसंग निर्विकार | l | | |
|---|---|---|---|
| ब्रह्मासि नाहीं पारावार । बोलती साधु | 1 | 8 | 1 |
| ब्रह्म सर्वांस व्यापक । ब्रह्म अनेकीं येक | 1 | | |
| ब्रह्म शाश्वत हा विवेक । बोलिला शास्त्रीं | t | ? | ١ |
| ब्रह्म अच्युत अनंत । ब्रह्म सदोदित संत | ı | | |
| ब्रह्म कल्पनेरहित । निर्विकल्प | | 3 | ١ |
| ब्रह्म या दृश्यावेगळें । ब्रह्म सुन्यत्वास निराळें | 1 | | |
| ब्रह्म इंद्रियांच्या मेळें । चोजवेना | | 8 | 1 |
| ब्रह्म दृष्टीस दिसेना । ब्रह्म मूर्खासी असेना | t | | |
| ब्रह्म साधुविण येना । अनुभवासी | | ų | ı |
| ब्रह्म सकळांहूनि थोर । ब्रह्मा ऐसें नाहीं सार | l | | |
| ब्रह्म सूक्ष्म अगोचर । ब्रह्मादिकांसी | | É | Į |
| ब्रह्म शब्दीं ऐसें तैसें । बोलिजे त्याहूनि अनारिसें | l | | |
| परी तें श्रवणअभ्यासें । पाविजे ब्रह्म | | 9 | ١ |
| ब्रह्मास नामें अनंत । परी तें ब्रह्म नामातीत | 1 | | |
| | | ۵ | ١ |
| ब्रह्मासारिखें दुसरें। पाहातां काय आहे खरें | 1 | | |
| ब्रह्म दृष्टांत उत्तरें । कदा न साहे | 1 | 9 | 1 |
| यतो वाचो निवर्तते अप्राप्य मनसा सह । | | | |

| जेथें वाचा निवर्तती । मनासी नाहीं ब्रह्मप्राप्ती । |
|--|
| ऐसी बोलिली श्रुती । सिन्दांतवचन । १०। |
| कल्पनारूप मन पाहीं । ब्रह्मीं कल्पनाचि नाहीं । |
| म्हणौनि वाक्य कांहीं । अन्यथा नव्हे । ११। |
| आतां मनासि जें अप्राप्त । तें कैसें होईल प्राप्त । |
| ऐसें म्हणाल तरी कृत्य । सद्गुरुविण नाहीं । १२। |
| भांडारगृहें भरलीं । परी असती आडकिलीं। |
| हातास न येतां किली । सर्वही अप्राप्त । १३। |
| तरी ते किली ते कवण। मज करावी निरूपण। |
| ऐसा श्रोता पुसे खूण । वक्तयासी ।१४। |
| सद्गुरुकृपा तेचि किली । जेणें बुद्धि प्रकाशली । |
| द्वैतकपार्टं उघडलीं । येकसरीं । १५। |
| तेथें सुख असे वाड । नाहीं मनास पवाड । |
| मनेविण कैवाड । साधनाचा । १६। |
| त्याची मनेविण प्राप्ती । किं वासनेविण तृप्ती । |
| तेथें न चले वित्पत्ती । कल्पनेची ।१७। |
| तें परेहूनि पर । मनबुद्धीअगोचर । |
| संग सोडितां सत्वर । पाविजेतें । १८। |
| संग सोडावा आपुला । मग पाहावें तयाला । |
| अनुभवी तो या बोला। सुखावेल गा ।१९। |
| आपण म्हणिजे मीपण । मीपण म्हणिजे जीवपण । |
| जीवपण म्हणिजे अज्ञान । संग जडला ।२०। |
| सोडितां तया संगासी। ऐक्य होये निःसंगासी। |
| कल्पनेविण प्राप्तीसी । अधिकार ऐसा । २१। |

| मी कोण ऐसें नेणिजे । | तया नांव अज्ञान बोलिजे | 1 |
|----------------------------------|-----------------------------|------|
| अज्ञान गेलियां पाविजे । | परब्रह्म तें | 1221 |
| देहबुद्धीचें थोरपण। | परब्रह्मीं न चले जाण | 1 |
| तेथें होतसे निर्वाण । | अहंभावासी | 1231 |
| उंचनीच नाहीं परी। | राया रंका येकचि सरी | l |
| जाला पुरुष अथवा नारी। | येकचि पद | 1881 |
| ब्राह्मणाचें ब्रह्म तें सोंवळें। | शूद्राचें ब्रह्म तें वोवळें | l |
| एस वंगळ आगळें। | तेथें असेचिना | 1241 |
| उंच ब्रह्म तें रायासी। | नीच ब्रह्म तें परिवारासी | 1 |
| ऐसा भेद तयापासीं। | मुळींच नाहीं | ।२६। |
| सकळांसि मिळोन ब्रह्म येक । | तेथें नाहीं हे अनेक | l |
| रंक अथवा ब्रह्मादिक । | | |
| स्वर्ग मृत्य आणि पाताळ । | तिहीं लोकींचे ज्ञाते सकळ | 1 |
| सकळांसि मिळोन येकचि स्थळ । | | 1581 |
| गुरुशिष्या येकचि पद। | तेथें नाहीं भेदाभेद | 1 |
| परी या देहाचा समंघ। | | |
| देहबुद्धीचा अंतीं। | सकळांसि येकचि प्राप्ती | I |
| येक ब्रह्म द्वितीयं नास्ति । | | _ |
| साधु दिसती वेगळाले। | | |
| अवये मिळोन येकचि जाले। | | |
| ब्रह्म नाहीं नवें जुनें। | | |
| उणें भाविल तें सुणें। | | 1351 |
| देहबुद्धीचा संशयो। | करी समाधानाचा क्षयो | |
| चुके समाधानसमयो। | दहबुद्धायाग | 1331 |

| देहाचें जें थोरपण। तेंचि देहबुद्धीचें लक्षण। |
|---|
| मिथ्या जाणोनि विचक्षण । निंदिती देहो । ३४। |
| देह पावे जंवरी मरण। तंवरी धरी देहाभिमान। |
| पुन्हा दाखवी पुनरागमन । देहबुद्धि मागुती । ३५। |
| देहाचेनि थोरपणें। समाधानासी आलें उणें। |
| देहो पडेल कोण्या गुणें। हेंहि कळेना ।३६। |
| हित आहे देहातीत । म्हणौनि निरोपिती संत । |
| देहबुद्धीने अन्हित । होंचि लागे । ३७। |
| सामर्थ्यबळें देहबुद्धी । योगियांसि तेहि बाधी । |
| देहबुद्धीची उपाधी । पैसावों लागे ।३८। |
| म्हणौनि देहबुद्धि हे झडे। तरीच परमार्थ घडे। |
| देहबुद्धीनें विघडे। ऐक्यता ब्रह्मीची ।३९। |
| विवेक वस्तूकडे ओढी। देहबुद्धि तेथूनि पाडी। |
| अहंता लाऊन निवडी। वेगळेपणें १४०। |
| विचक्षणें याकारणें । देहबुद्धि त्यजावी श्रवणें । सत्यब्रह्मीं साचारपणें । मिळोन जावें ।४१। |
| • |
| सत्यब्रह्म तें कवण। ऐसा श्रोता करी प्रश्न। प्रत्योत्तर दे आपण। वक्ता श्रोतयासी ।४२। |
| प्रत्यात्तर दे आपण । वक्ता श्रातयासी ।४२। म्हणे ब्रह्म येकचि असे । परी तें बहुविध भासे । |
| अनुभव देहीं अनारिसें। नाना मतीं । ४३। |
| जें जें जया अनुभवलें । तेंचि तयासि मानलें । |
| तेथेंचि त्याचें विस्वासलें । अंतःकर्ण । ४४। |
| ब्रह्म नामरूपातीत । असोनि नामें बहुत । |
| निर्मळ निश्चळ निवांत । निजानंद ।४५। |

| अरूप अलक्ष अगोचर । अच्युत अनंत अपरांपर । |
|---|
| अदृश्य अतर्क्ये अपार । ऐसीं नामें ।४६। |
| नादरूप ज्योतिरूप । चैतन्यरूप सत्तारूप । |
| साक्षरूप सस्वरूप । ऐसीं नामें ।४७। |
| सुन्य आणी सनातन । सर्वेश्वर आणी सर्वज्ञ । |
| सर्वात्मा जगजीवन । ऐसीं नामें ।४८। |
| सहज आणी सदोदित । शुद्ध बुद्ध सर्वातीत । |
| शाश्वत आणी शब्दातीत । ऐसीं नामें 18९। |
| विशाळ विस्तीर्ण विश्वंभर । विमळ वस्तु व्योमाकार । |
| आत्मा परमात्मा परमेश्वर । ऐसीं नामें ।५०। |
| परमात्मा ज्ञानघन । येकरूप पुरातन । |
| चिद्रूप चिन्मात्र जाण । नामें अनाम्याचीं ।५१। |
| ऐसीं नामें असंख्यात । परी तो परेश नामातीत । |
| त्याचा करावा निश्चितार्थ । ठेविलीं नामें ।५२। |
| तो विश्रांतीचा विश्राम । आदिपुरुष आत्माराम । |
| तें येकचि परब्रह्म । दुसरें नाहीं । ५३। |
| तेंचि कळायाकारणें । चौदा ब्रह्मांचीं लक्षणें। |
| सांगिजेती तेणें श्रवणें । निश्चयो बाणे । ५४। |
| खोटें निवडितां येकसरें। उरलें तें जाणिजे खरें। |
| चौदा ब्रह्में शास्त्राधारें। बोलिजेती । ५५। |
| |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'ब्रह्मनिरूपणनाम' समास दुसरा समाप्त.

दशक ७ : समास ३

चतुर्दशब्रह्मनिरूपण

।। श्रीराम ।।

| श्रोतां व्हावें सावधान । | आतां सांगतो ब्रह्मज्ञान। | | |
|--------------------------|----------------------------|------------|---|
| जेणें होये समाधान । | साधकाचें । | १। | |
| रत्नें साधायाकारणें। | मृत्तिका लागे येकवटणें। | | |
| चौदा ब्रह्मांची लक्षणें। | जाणिजे तैसीं | २ । | |
| पदार्थीवण संकेत। | • | | |
| पूर्वपक्षेविण सिद्धांत | । बोलतांचि न ये | 3 ! | |
| आधीं मिथ्या उभारावें | । मग तें वोळखोन सांडावें । | | |
| पुढें सत्य तें स्वभावें | । अंतरीं बाणे | 8 | Į |
| • | । बोलिला कळाया सिद्धांत । | | |
| | । क्षण येक असावें । | فر | |
| | । दुजें मीतिकाक्षरब्रह्म । | | |
| | 9 | E | Į |
| | । पांचवें चैतन्यब्रह्म । | | |
| | | 9 | Ì |
| _ | । नवें निर्गुणब्रह्म। | | |
| | | 6 | |
| - | । आनंदब्रह्म तें बारावें। | | |
| | । चौदावें अनुर्वाच्य । | 3 | |
| | । यांची निरोपिलीं नामें। | | |
| आतां स्वरूपाचीं वर्में | । सकत दाऊ । | 80 | |

| | ा नांव शब्दब्रह्म। |
|-----------------------------|-------------------------------------|
| आतां मीतिकाक्षरब्रह्म । तें | येकाक्षर । ११। |
| खंशब्दें आकाशब्रह्म । म | हदाकाश व्यापकधर्म। |
| आतां बोलिलें सूक्ष्म । स | र्वब्रह्म । १२। |
| पंचभूतांचें कुवाडें। जे | ं जें तत्व दृष्टी पडे। |
| तें तें ब्रह्मचि चोखडें। बं | ोलिजेत आहे । १३। |
| या नांव सर्वब्रह्म। श्रु | तिआश्रयाचें वर्म। |
| आतां चैतन्यब्रह्म । ब | ोलिजेल । १४। |
| पंचभूतादि मायेतें। चै | |
| म्हणौनि त्या चैतन्यातें। चै | तन्यब्रह्म बोलिजे । १५। |
| चैतन्यास ज्याची सत्ता। ते | सत्ताब्रह्म तत्वता। |
| तये सत्तेस जाणता । य | ा नाव साक्ष ब्रह्म । १६। |
| साक्षत्व जयापासुनी । ते | हि आकळिलें गुणीं। |
| सगुणब्रह्म हे वाणी। त | यासि वदे । १७। |
| जेथें नाहीं गुणवार्ता । ते | |
| वाच्यब्रह्म तें हि आतां। बं | 1,01 |
| जें वाचें बोलतां आलें। ते | |
| अनुभवासि कथिलें । न | वचे सर्वथा ।१९। |
| या नांव अनुभव ब्रह्म । 3 | |
| परंतु याचेंहि वर्म। ब | ोलिजेल ।२०। |
| ऐसें हें ब्रह्म आनंद। त | |
| अनुर्वाचीं संवाद । तु | टोन गेला । २१। |
| ऐसीं हे चौदा ब्रह्में। | |
| साधकें पाहातां भ्रमें। ब | ाधिजेना ।२२। |

| ब्रह्म जाणावें शाश्वत । माया तेचि अशाश्वत । |
|--|
| चौदा ब्रह्मांचा सिद्धांत । होईल आतां । २३। |
| शब्दब्रह्म तें शाब्दिक । अनुभवेंविण माईक । |
| शाश्वताचा विवेक । तेथें नाहीं । २४। |
| जें क्षर ना अक्षर । तेथें कैंचें मीतिकाक्षर । |
| शाश्वताचा विचार । तेथेंहि न दिसे । २५। |
| खंब्रह्म ऐसें वचन । तरी सुन्यातें नासी ज्ञान । |
| शाश्वताचें अधिष्ठान । तेथेहि न दिसे । २६। |
| सर्वत्रास आहे अंत । सर्वब्रह्म नासिवंत । |
| प्रळये बोलिला निश्चित । वेदांतशास्त्रीं । २७। |
| ब्रह्मप्रळये मांडेल जेथें। भूतान्वय कैचा तेथें। |
| म्हणौनियां सर्वब्रह्मातें । नाश आहे । २८। |
| अचळासि आणी चळण । निर्गुणास लावितां गुण । |
| आकारास विचक्षण । मानीतना । २९। |
| जें निर्माण पंचभूत । तें प्रत्यक्ष नासिवंत । |
| सर्वब्रह्म हे मात । घडे केवी ।३०। |
| असो आतां हें बहुत । सर्वब्रह्म नासिवंत । वेगळेपणास अंत । पाहाणें कैचें ।३१। |
| वगळपणास अत । पाहाण केचे । ३१। आतां जयास चेतवावें । तेंचि माईक स्वभावें । |
| तेथें चैतन्याच्या नावें। नास आला ।३२। |
| परिवारेविण सत्ता । ते सत्ता नव्हे तत्वता । |
| पदार्थेविण साक्षता । तेहि मिथ्या ।३३। |

| सगुणास नाश आहे । प्रत्यक्षास प्रमाण काये । |
|---|
| सगुणब्रह्म निश्चयें । नासिवंत । ३४। |
| निर्गुण ऐसें जें नाव । त्या नांवास कैचा ठाव । |
| गुणेंविण गौरव। येईल कैंचें ।३५। |
| माया जैसें मृगजळ। ऐसें बोलती सकळ। |
| की ते कल्पनेसे आकार । न्यानिक |
| गामी जानिक क्या -ी |
| प्रामो नास्ति कुतः सीमा । जन्मेंविण जीवात्मा । अद्वैतासी उपमा । हैवानी |
| 1361 |
| मायेविरहित सत्ता । पदार्थेविण जाणता । |
| आवद्यावण चैतन्यता । कोणास आली । ३८। |
| सत्ता चैतन्यता साक्षी । सर्विह गणान्यापनी । |
| ाइव निगुण त्यासी । गण क्षेत्र े |
| गेमें 🛨 —— |
| तीचि जाणावा अशाश्रत । निश्योंगी |
| निर्मण बहामि मंदेने । करें २०० |
| तें वाच्यब्रह्म त्यातें। नाश आहे |
| 1041 |
| ु प्राचाच भाव। |
| ाद ४। विशिष्ट मार्ग प्रदेश । |
| अनुवाच्य याकारणें। संकेत तनीच्या |
| सकतास उण । निवृत्तीने आणिले |
| अनुवन्ति ते निवनी । वेकि कार्य |
| विश्राति । योगियांची |
| 1881 |

वस्तु जे कां निरोपाधी। तेचि सहज समाधी। जेणें तुटे आदिव्याधी । भवदुखाची । ४५। जो उपाधीचा अंत । तोचि जाणावा सिद्धांत । सिद्धांत आणी वेदांत । धादांत आत्मा ।४६। असो ऐसे जे शाश्वत ब्रह्म। जेथें नाहीं मायाभ्रम। अनुभवी जाणे वर्म । स्वानुभवें । ४७। आपुलेन अनुभवें । कल्पनेसि मोडावें । मग सुकाळी पडावें। अनुभवाचे ।४८। निर्विकल्पास कल्पावें । कल्पना मोडे स्वभावें । मग नसोनि असावें । कल्पकोटी । ४९। कल्पनेचें येक बरें। मोहरितांच मोहरे। स्वरूपीं घालिता भरे। निर्विकल्पीं 1401 निर्विकल्पासि कल्पितां । कल्पनेचि नुरे वार्ता । निःसंगास भेटों जातां । निःसंग होइजे । ५१। पदार्थाऐसें ब्रह्म नव्हे। मा तें हातीं धरून द्यावें। असो हें अनुभवावें । सद्गुरुमुखें । ५२। पुढें कथेचा अन्वये। केलाचि करूं निश्चये। जेणें अनुभवासि ये। केवळब्रह्म ।५३।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'चतुर्दशब्रह्मनिरूपणनाम' समास तिसरा समाप्त.

दशक ७ : समास ४

विमलब्रह्मनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

| वहा नभाहून निमळ । पाहाता तसीच पाकळ । | |
|---|----------|
| अरूप आणी विशाळ । मर्यादेवेगळें । १ | 1 |
| येकविस स्वर्गें सप्त पाताळ । मिळोन एक ब्रह्मगोळ। | |
| ऐसीं अनंत तें निर्मळ । व्यापून असे | 1 \$ |
| अनंत ब्रह्मांडांखालतें । अनंत ब्रह्मांडांवरुतें । | |
| तेणेंविण स्थळ रितें । अणुमात्र नाहीं । ३ | 1 |
| जळीं स्थळीं काष्ठीं पाषाणीं । ऐसी वदे लोकवाणी । | |
| तेणेंविण रिता प्राणी। येकहि नाहीं । ४ | 1 |
| जळचरांस जैसें जळ । बाह्याभ्यांतरीं निखळ । | |
| तैसें ब्रह्म हें केवळ । जीवमात्रासी | 1 |
| जळावेगळा ठाव आहे । ब्रह्माबाहेरी जातां नये। | |
| म्हणौनि उपमा न साहे । जळाची तथा । ह | i |
| आकाशाबाहेरी पळों जातां । पुढें आकाशचि तत्वता । | |
| तैसें तया अनंता। अंतचि नाहीं । ए | 9 |
| परी जे अखंड भेटलें। सर्वांगास लिगटलें। | |
| अति निकट परी चोरलें । सकळांसि जें | . 1 |
| तयामधेंचि असिजे। परी तयास नेणिजे। | |
| उमजे भास नुमजे। परब्रह्म तें | <u> </u> |
| आकाशामधें आभाळ । तेणें आकाश वाटे डहुळ । | |
| परी तें मिथ्या निवळ। आकाशचि असे ।१ | 0 |

| नेहार देतां आकाशीं । चक्रें दिसती डोळ्यांसी । तैसें दृश्य ज्ञानियांसी । मिथ्यारूप । ११। | |
|---|---|
| मिथ्याचि परी आभासे । निद्रिस्तांस स्वप्न जैसें। जागा जालियां अपैसें। बुझों लागे ।१२। | |
| तैसें आपुलेन अनुभवें । ज्ञानें जागृतीसि यावें । मग माईक स्वभावें । कळों लागे । १३। | |
| आतां असो हें कुवाडें। जे ब्रह्मांडापैलिकडे। तेंचि आता निवाडें। उमजोन दाऊं । १४। | |
| ब्रह्म ब्रह्मांडीं कालवलें । पदार्थासी व्यापून ठेलें। | |
| सर्वांमधें विस्तारलें । अंशमात्रें । १५। ब्रह्मामधें सृष्टी भासे । सृष्टीमध्यें ब्रह्म असे । | |
| अनुभव घेतां आभासे । अंशमात्रें । १६। अंशमात्रें सृष्टीभीतरीं । बाहेरी मर्यादा कोण करी । | |
| सगळें ब्रह्म ब्रह्मांडोदरीं । माईल कैसें । १७। | l |
| अमृतीमधें आकाश । सगळें सांठवतां प्रयास । म्हणौन तयाचा अंश । बोलिजेतो । १८ | l |
| ब्रह्म तैसें कालवलें । परी तें नाहीं हालवलें । सर्वामधें परी संचलें । संचलेपणें । १९ | 1 |
| पंचभूतीं असे मिश्रित । परंतु तें पंचभूतातीत । पंकीं आकाश अलिप्त । असोनि जैसें ।२० | 1 |
| ब्रह्मास दृष्टांत न घडे । बुझावया देणें घडे । परी दृष्टांतीं साहित्य पडे । विचारितां आकाश । २१ | 1 |
| खंब्रह्म ऐसी श्रुती । गगनसदृशं हे स्मृती । म्हणौनि ब्रह्मास दृष्टांतीं । आकाश घडे । २२ | |

| काळिमा नस्तां पितळ । मग तें सोनेंचि केवळ । |
|--|
| सुन्यत्व नस्तां निवळ । आकाश ब्रह्म । २३। |
| म्हणौनि ब्रह्म जैसें गगन । आणि माया जैसा पवन । |
| आडळे परी दर्शन । नव्हे त्याचें । २४। |
| शब्दसृष्टीची रचना । होत जात क्षणक्षणा । |
| परंतु ते स्थिरावेना । वायुच ऐसी ।२५। |
| असो ऐसी माया माईक । शाश्वत तें बहा येक । |
| पाहों जातां अनेक । व्यापून आहे । २६। |
| पृथ्वीसी भेदून आहे । परी तें बहा कठीण उन्हे |
| दुजी उपमा न साहे। तया मृदत्वासी ।२७। |
| पृथ्वीहूनि मृद जळ । जळाहूनि तो अनळ। |
| अनळाहान कोमळ । त्यारो जगान |
| वायोहन हें गाए । अनं |
| गगनाहन मह पार्षि सन जन्म |
| वज्रास असे भेदिलें। परी मृदत्व नाहीं गेलें। |
| उपमेरहित संचलें। कठिण ना मृद ।३०। |
| सम्बद्धाः नामुद्धाः ।३०। |
| पृथ्वीमधें व्यापून असे । पृथ्वी नासे तें न नासे । जळ शोषे तें न शोषे । जळीं असोनी |
| तेजी असे 🗝 भाषा जळा असाना ।३१। |
| तेजीं असे परी जळेना। पवनीं असे परी चळेना। |
| अस परा कळना । परब्रह्म तें |
| शेरीर अवधें व्यापलें। परी तें नाहीं आडळलें। |
| दुरावल । नवल कैसे |
| तम्बाच चहंत्रहे । क्यामधे क्यामधे |
| बाह्याभ्यांतरी रोकडें। सिद्धचि आहे । ३४। |
| . 4 0 1 |

| तयामधेचि आपण । आपणा सबाह्य तें जाण । |
|---|
| दृश्यावेगळी खूण। गगनासारिखी ।३५। |
| कांहीं नाहींसें वाटलें। तेथेंचि तें कोंदाटलें। |
| जैसें न दिसे आपलें । आपणासि धन ।३६। |
| जो जो पदार्थ दृष्टी पडे। तें त्या पदार्था ऐलिकडे। |
| 313013 3 7. |
| मार्गे पुढें आकाश । पदार्थीविण जो पैस । |
| गुरुविधार १५०० । |
| 1,401 |
| जें जें रूप आणी नाम । तो तो नाथिलाच भ्रम। |
| नामरूपातीत वर्म । अनुभवी जाणे ।३९। |
| नभीं धूम्राचे डोंगर। उचलती थोर थोर। |
| तैसें दावी वोडंबर । मायादेवी ।४०। |
| ऐसी माया अशाश्वत । ब्रह्म जाणावें शाश्वत । |
| सर्वा ठाईं सदोदित । भरलें असे ।४१। |
| पोथी वार्चू जातां पाहे । मातृकांमधेंचि आहे । |
| नेत्रीं निघोनि राहे । मृदपणें ।४२। |
| श्रवणें शब्द ऐकतां। मनें विचार पाहतां। |
| मना सबाह्य तत्वतां । परब्रह्म तें ।४३। |
| चरणें चालतां मार्गी । जें आडळे सर्वांगीं । |
| करें घेतां वस्तुलागीं । आडवें ब्रह्म । ४४। |
| असो इंद्रियेंसमुदाव । तयामधें वर्ते सर्व । |
| जाणों जातां मोडे हांव । इंद्रियांची ।४५। |
| तें जवळिच असे । पाहों जातां न दिसे । |
| न दिसोन वसे। कांहीं येक ।४६। |
| |

जें अनुभवेंचि जाणावें । सृष्टीचेनि अभावें ।
आपुलेन स्वानुभवें । पाविजे ब्रह्म ।४७।
ज्ञानदृष्टीचें देखणें । चर्मदृष्टी पाहों नेणे ।
अंतरवृत्तीचिये खुणे । अंतरवृत्ति साक्ष ।४८।
जाणे ब्रह्म जाणे माया । जाणे अनुभवाच्या ठाया ।
ते येक जाणावी तुर्या । सर्वसाक्षिणी ।४९।
साक्षत्व वृत्तीचें कारण । उन्मनी ते निवृत्ति जाण ।
जेथें विरे जाणपण । विज्ञान तें ।५०।
जेथें अज्ञान सरे । ज्ञान तेंहि नुरे ।
विज्ञानवृत्ति मुरे । परब्रह्मीं ।५१।
ऐसें ब्रह्म शाश्वत । जेथें कल्पनेसी अंत ।
योगी जना येकांत । अनुभवें जाणावा ।५२।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'विमलब्रह्मनिरूपणनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक ७ : समास ५

॥ श्रीराम ॥

केवळ ब्रह्म जें बोलिलें । तें अनुभवास आलें। आणी मायेचेंहि लागलें । अनुसंधान । १। ब्रह्म अंतरीं प्रकाशे । आणी मायाहि प्रत्यक्ष दिसे। आतां हें द्वैत निरसे । कवणेपरी हो । २।

| तरी आतां सावधान । येकाप्र करूनियां मन । |
|---|
| माया ब्रह्म हें कवण । जाणताहे । ३। |
| सत्य ब्रह्माचा संकल्प । मिथ्या मायेचा विकल्प । |
| ऐसिया द्वैताचा जल्प। मनचि करी । ४। |
| जाणे ब्रह्म जाणे माया। ते येक जाणावी तुर्या। |
| सर्व जाणे म्हणोनिया । सर्वसाक्षिणी । ५ । |
| ऐक तुर्येचें लक्षण। जेथें सर्व जाणपण। |
| सर्वीच नाहीं कवण । जाणेल गा |
| संकल्पविकल्पाची सृष्टी । जाली मनाचिये पोटीं । |
| तें मनचि मिथ्या सेवटीं । साक्षी कवणु । ७। |
| साक्षत्व चैतन्यत्व सत्ता । हे गुण ब्रह्माचिया माथां । |
| आरोपले जाण वृथा। मायागुणें । ८। |
| घटमठाचेनि गुणें । त्रिविधा आकाश बोलणें । |
| मायेचेनि खरेंपणें। गुण ब्रह्मीं । १। |
| जंव खरेंपण मायेसी । तंवचि साक्षत्व ब्रह्मासी । |
| मायेअविद्येचे निरासीं। द्वैत कैचें ।१०। |
| म्हणोनि सर्वसाक्षी मन । तेंचि जालिया उन्मन । |
| मग तुर्यारूप ज्ञान । तें मावळोन गेलें ।११। |
| जयास द्वैत भासलें। ते मन उन्मन जालें। |
| द्वैताअद्वैताचें तुटलें। अनुसंघान । १२। |
| येवं द्वैत आणी अद्वैत । होये वृत्तीचा संकेत । |
| वृत्ति जालिया निवृत्त । द्वैत कैंचें । १३। |
| |
| वृत्तिरहित जें ज्ञान । तेंचि पूर्ण समाधान । जेथें तुटे अनुसंधान । मायाब्रह्मीचें । १४। |
| ाप गुज जनुत्तवाम । भाषाब्रह्माच । १०। |

| मायाब्रह्म ऐसा हेत । मनें कल्पिला संकेत । |
|---|
| ब्रह्म कल्पनेरहित । जाणती ज्ञानी ।१५। |
| जें मनबुद्धिअगोचर । जें कल्पनेहन पर । |
| तें अनुभवितां साचार । द्वैत कैंचें ।१६। |
| द्वैत पाहातां ब्रह्म नसें। ब्रह्म पाहातां द्वैत नासे। |
| द्वैताद्वैत भासे । कल्पनेसी । १७। |
| कल्पना माया निवारी । कल्पना बहा शावरी । |
| संशय धरी आणी वारी । तेहि कल्पना । १८। |
| कल्पना करी बंधन । कल्पना दे समाधान । |
| ब्रह्मा लावा अनुसंधान । तेहि कल्पना । १९। |
| कल्पना द्वैताची माता। कल्पना जेप्ती तत्वता। |
| बद्धता आणी मुक्तता । कल्पनागुणें ।२०। |
| कल्पना अंतरीं सबळ । नस्ते दावी बहागोळ । |
| क्षणा यकात निर्मळ । स्वरूप कल्पी |
| क्षणा येका धोका वाहे । क्षणा येका स्थिर राहे। |
| क्णा यका पाहे । विस्मित होउनी |
| क्षणा येकातें उमजे । श्राण रोकानें कर |
| नामा विकार करिजे । ते कल्पना जाणावी । २२। |
| कल्पना जन्माचे मळ । कल्पना भक्तीचे एक |
| भाष्यना ताच केवळ । मोक्षदाती |
| असा ऐसी हे कल्पना । साधनें दे समाधाना । |
| र्व पतना । मूळच कीं ।२५। |
| भ्रणान सर्वांचें गल । ने ने नक्तान के |
| इवें केलियां निर्मूळ । ब्रह्मप्राप्ती । २६। |

| श्रवण आणी मनन । निजध्यासें समाधान । |
|---|
| मिथ्या कल्पनेचें भान । उड़ोन जाये । २७। |
| शुद्ध ब्रह्माचा निश्चयो । करी कल्पनेचा जयो। |
| निश्चितार्थें संशयो । तुटोन गेला । २८। |
| मिथ्या कल्पनेचें कोडें । कैसें राहे साचापुढें। |
| जैसें सूर्याचेनि उजेडें । नासे तम । २९। |
| तैसें ज्ञानाचेनि प्रकाशें । मिथ्या कल्पना हे नासे । |
| मग हें तुटे अपैसें । द्वैतानुसंधान ।३०। |
| कल्पनेनें कल्पना उडे । जैसा मृगें मृग सांपडे । |
| कां शरें शर आतुडे । आकाशमार्गी । ३१। |
| शुद्ध कल्पनेचें बळ । जालियां नासे सबळ। |
| हेंचि वचन प्रांजळ। सावध ऐका ।३२। |
| शुद्ध कल्पनेची खूण। स्वयें कल्पिजे निर्गुण। |
| सस्वरूपीं विस्मरण । पडोंचि नेदी । ३३। |
| सदा स्वरूपानुसंघान । करी द्वैताचें निर्शन । |
| अद्वयनिश्चयाचें ज्ञान । तेचि शुद्ध कल्पना । ३४। |
| अद्वैत कल्पी ते शुद्ध। द्वैत कल्पी ते अशुद्ध। |
| अशुद्ध तेचि प्रसिद्ध । सबळ जाणावी ।३५। |
| शुद्ध कल्पनेचा अर्थ। अद्वैताचा निश्चितार्थ। |
| आणी सबळ वेर्थ। द्वैत कल्पी ।३६। |
| अद्वैतकल्पना प्रकाशे। तेचि क्षणीं द्वैत नासे। |
| द्वैतासरिसी निरसे। सबळ कल्पना ।३७। |
| कल्पनेनें कल्पना सरे। ऐसी जाणावी चतुरें। |
| सबळ गेलियां नंतरें। शुद्ध उरली ।३८। |

शृद्ध कल्पनेचें रूप । तेचि जें कल्पी स्वरूप । स्वरूप कल्पितां तद्रुप । होये आपण 1381 कल्पनेसी मिथ्यत्व आलें । सहजचि तद्रूप जालें । आत्मनिश्चयें नासिलें । कल्पनेसी 1801 जेचि क्षणीं निश्चये चळे । तेचि क्षणीं द्वैत उफाळे। जैसा अस्तमानीं प्रबळे । अंघकार 1881 तैसें ज्ञान होतां मळिण। अज्ञान प्रबळे जाण। याकारणें श्रवण । अखंड असावें 1881 आतां असो हें बोलणें जालें । आशंका फेडूं येका बोलें । जयास द्वैत भासलें । तें तूं नव्हेसी सर्वथा ।४३। मागील आशंका फिटली । इतुकेन हे कथा संपली। पुढें वृत्ति सावध केली । पाहिजे श्रोतीं 1881

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'द्वैतकल्पनानिरसननाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक ७ : समास ६

॥ श्रीराम ॥

अद्वैत ब्रह्म निरोपिलें । जें कल्पनेरहित संचलें । क्षणयेक तदाकार केलें । मज या निरूपणें । १। परी म्यां तदाकार व्हावें । ब्रह्मचि होऊन असावें । पुन्हा संसारास न यावें । चंचळपणें सर्वथा । १।

| कल्पनारहित जें सुख । तेथें नाहीं संसारदुःख | 1 | |
|---|----------|------------|
| म्हणोनि तेचि येक । होऊन असावें | 1 3 | } |
| ब्रह्मचि होईजे श्रवणें। पन्हा वत्तीवरी लागे येणें | 1 | |
| एस सदा येणें जाणें। चुकेना कीं | ۱ ۷ | ١ ١ |
| मनें अंतरिक्ष जावें । क्षणयेक ब्रह्मचि व्हावें | ı | |
| पुन्हा तेथून कोंसळावें । वृत्तीवरी मागुतें | <u> </u> | 1 |
| प्रत्यावृत्ती सैरावैरा । किती करूं येरझारा | 1 | |
| पाईं लाउनियां दोरा । कीटक जैसा | 1 6 | 1 |
| उपदेशकाळीं तदाकार । होतां पडे हें शरीर | l | |
| अथवा नेणे आपपर । ऐसें जालें पाहिजे | 1 9 | 1 |
| ऐसें नस्तां जें बोलणें। तेंचि वाटे लाजिरवाणें | l | |
| ब्रह्म होऊन संसार करणें। हेंहि विपरीत दिसे | | ı |
| जो स्वयं ब्रह्मचि जाला। तो मागुता कैसा आला | 1 | |
| | 1 9 | 1 |
| ब्रह्मचि होऊन जावें। कां तें संसारींच असावें | 1 | |
| दोहींकडे भरंगळावें। किती म्हणूनी | |) |
| निरूपणीं ज्ञान प्रबळे। उठोन जातां तें मावळे। | | |
| | ११ | } 1 |
| ऐसा कैसा ब्रह्म जाला। दोहींकडे अंतरला। वोडगस्तपर्णोचि गेला। संसार त्याचा | | |
| घेतां ब्रह्मसुखाची गोडी । संसारिक मागें वोडी | ११३ | (1 |
| संसार करितां आवडी । ब्रह्मीं उपजे मागुती | 197 | a I |
| ब्रह्मसुख नेलें संसारें । संसार गेला ज्ञानद्वारें | | r • |
| -10 | ' १४ | S 1 |

| याकारणें माझें चित्त । चंचळ जालें दुश्चीत । |
|--|
| काये करणें निश्चीत । येकहि नाहीं ।१५। |
| ऐसा श्रोता करी विनती । आतां राहावें कोणे रीतीं। |
| म्हणे अखंड माझी मती । ब्रह्माकार नाहीं ।१६। |
| आतां याचें प्रत्योत्तर । वक्ता देईल संदर । |
| श्रोतीं व्हावें निरोत्तर । क्षणयेक आतां ।१७। |
| ब्रह्मचि होऊन जे पडिले । तेचि मुक्तपदास गेले । |
| येर ते काये बुडाले । व्यासादिक ।१८। |
| श्रोता विनती करी पुढती । शुको मुक्तो वामदेवो वा हे श्रुती । |
| दोघेचि मुक्त आदिअंतीं । बोलतसे ।१९। |
| वेदें बद्ध केले सर्व । मुक्त शुक वामदेव । |
| वेदवचनीं अभाव । कैसा धरावा ।२०। |
| ऐसा श्रोता वेदाधारें । देता झाला प्रत्योत्तरें । |
| दोघेचि मुक्त अत्यादरें । प्रतिपाद्य केलें ।२१। |
| वक्ता बोले याउपरी । दोघेचि मुक्त सृष्टीवरी । |
| ऐसें बोलतां उरी । कोणास आहे । २२। |
| बहु ऋषि बहु मुनी । सिब्ह योगी आत्मज्ञानी । |
| जाले पुरुष समाधानी । असंख्यात । २३। |
| प्रह्लादनारदपराशरपुंडरीकव्यासांबरीषशुकशौनकभीष्मदालभ्यान्। |
| रुक्मांगदार्जुनवसिष्ठिबभीषणादीन् पुण्यानिमान्परमभागवतान्समरामि । |
| कविर्हिरिरंतिरिक्षः प्रबुद्धः पिप्पलायनः। |
| आविर्होत्रोऽथ द्रुमिलश्चमसः करभाजनः।। |

| याहि वेगळे थोर थोर । ब्रह्माविष्णुमहेश्वर | 1 |
|---|-------|
| आदिकरून दिगंबर । विदेहादिक | 1881 |
| शुक वामदेव मुक्त जाले । येर हे अवधेचि बडाले | |
| या वचना विश्वासले। ते पढतमूर्ख | 1241 |
| तरी वेद कैसें बोलिला । तो काये तुम्ही मिथ्या केला ऐकोन वक्ता देता जाला । प्रत्योत्तर | |
| | 1 7 8 |
| वेद बोलिला पूर्वपक्ष । मूर्ख तेथेंचि लावी लक्ष साधु आणी वित्पन्न दक्ष । त्यांस हें न मने | 1501 |
| तथापी हें जरी मानलें। तरी वेदसामर्थ्य बडालें | 1 |
| वदाचीन उद्धरिलें । न वचे कोणा | 1261 |
| वेदाआंगी सामर्थ्य नसे । तरी या वेदास कोण पुसे | 1 |
| म्हणौनि वेदीं सामर्थ्य असे । जन उधरावया | |
| वेदाक्षर घडे ज्यासी। तो बोलिजे पुण्यरासी | 1 |
| म्हणौन वेदीं सामर्थ्यासी। काये उणें | 1301 |
| वेदशास्त्रपुराण । भाग्यें जालियां श्रवण | 1 |
| तेणें होईजे पावन । हें बोलती साधु | 1381 |
| श्लोक अथवा श्लोकार्घ। नाहीं तरी श्लोकपाद श्रवण होतां येक शब्द। नाना दोष जाती | 1 |
| वेदशास्त्रीं पुराणीं । ऐशा वाक्याच्या आईणी | |
| अगाध महिमा व्यासवाणी । वदोन गेली | 1331 |
| येकाक्षर होतां श्रवण । तत्काळचि होईजे पावन | |
| ऐसें ग्रंथाचें महिमान । ठाईं ठाईं बोलिलें | 1381 |
| दोहीवेगळा तिजा नुधरे । तरी महिमा कैंचा उरे | 1 |
| असो हें जाणिजे चतुरें । येरां गयागोवी | 1341 |

| वेदशास्त्रें पुराणें। कैसीं होतीं अप्रमाणें। |
|---|
| दोघांवांचून तिसरा कोणें। उद्धरावा ।३६। |
| म्हणसी काष्ठीं लागोन पडला। तोचि येक मुक्त जाला। |
| शुक तोहि अनुवादला । नाना निरूपणें ।३७। |
| शुक मुक्त ऐसें वचन । वेद बोलिला हें प्रमाण। |
| परी तो नव्हता अचेतन । ब्रह्माकार ।३८। |
| अचेतन ब्रह्माकार । असता शुक योगेश्वर । |
| तरी सारासारविचार। बोलणें न घडे ।३९। |
| जो ब्रह्माकार जाला। तो काष्ठ होऊन पडिला। |
| शुक भागवत बोलिला । परीक्षितीपुढें ।४०। |
| निरूपण हें सारासार । बोलिला पाहिजे विचार । |
| धांडोळावें सचराचर । दृष्टांताकारणें ।४१। |
| क्षण येक ब्रह्मचि व्हावें । क्षण येक दृश्य धांडोळावें । |
| नाना दृष्टांतीं संपादावें। वगतृत्वासी ।४२। |
| असो भागवतनिरूपण । शुक बोलिला आपण। |
| तया आंगीं बद्धपण। लाऊं नये कीं १४३। |
| म्हणोनी बोलतां चालतां। निचेष्टित पडिलें नस्तां। |
| मुक्ति लाभे सायोज्यता । सद्गुरुबोधें । ४४। |
| येक मुक्त येक नित्यमुक्त । येक जाणावे जीवन्मुक्त । |
| येक योगी विदेहमुक्त । समाधानी ।४५। |
| सचेतन ते जीवन्मुक्त। अचेतन ते विदेहमुक्त। |
| दोहिवेगळे नित्यमुक्त । योगेश्वर जाणावे ।४६। |
| स्वरूपबोधें स्तब्धता । ते जाणावी ताटस्तता । |
| ताटस्तता आणी स्तब्धता । हा देहसमंधु ।४७। |

येथें अनुभवासी कारण । येर सर्व निःकारण। तृप्ती पावावी आपण । आपुल्या स्वानुभवें ।४८। कंठमर्याद जेविला । त्यास म्हणती भुकेला । तेणें शब्दें जाजावला । हें तों घडेना ।४९। स्वरूपीं नाहीं देहो। तेथें काईसा संदेहो। बद्ध मुक्त ऐसा भावो । देहाचकडे 1401 देहबुद्धि धरून चिंती । मुक्त ब्रह्मादिक नव्हेती । तेथें शुकाची कोण गती। मुक्तपणाची ।५१। मुक्तपण हेंचि बद्ध। मुक्त बद्ध हें अबद्ध। सस्वरूप स्वतसिद्ध । बद्ध ना मुक्त । ५२। मुक्तपणाची पोटीं शिळा । बांधतां जाईजे पाताळा । देहबुद्धीचा आगळा । स्वरूपीं न संटे । ५३। मीपणापासून सुटला । तोचि येक मुक्त जाला । मुका अथवा बोलिला। तरी तो मुक्त । ५४। जयास बाधावें तें वाव । तेथें कैंचा मुक्तभाव। पाहों जातां सकळ वाव । गुणवार्ता । ५५। बद्धो मुक्त इति व्याख्या गुणतो मे न वस्तुत: । गुणस्य मायामूलत्वान्न मे मोक्षो न बंधनम्।। तत्वज्ञाता परमशुद्ध । तयासी नाहीं मुक्त बद्ध । मुक्त बद्ध हा विनोद । मायागुणें । ५६। जेथें नामरूप हें सरे । तेथें मुक्तपण कैंचें उरे । मुक्त बद्ध हें विसरे । विसरलेपणेंसीं ।५७।

बद्ध मुक्त जाला कोण । तो तरी नव्हे कीं आपण । बधक जाणावें मीपण । धर्त्यास बाधी । ५८। एवं हा अवघा भ्रम। अहंतेचा जाला श्रम। मायातीत जों विश्राम । सेविला नाहीं 1491 असो बद्धता आणी मुक्तता । आली कल्पनेच्या माथां। ते कल्पना तरी तत्वता । साच आहे ।६०। म्हणौनि हें मृगजळ । माया नाथिलें आभाळ । स्वप्न मिथ्या तत्काळ । जागृतीसी होये ।६१। स्वप्नीं बद्ध मुक्त जाला । तो जागृतीस नाहीं आला । कैंचा कोण काये जाला । कांहीं कळेना ।६२। म्हणोनि मुक्त विश्वजन । जयास जालें आत्मज्ञान । शुद्धज्ञानें मुक्तपण । समूळ वाव ।६३। बद्ध मुक्त हा संदेहो । धरी कल्पनेचा देहो । साधु सदा निःसंदेहो । देहातीत वस्तु १६४। आतां असो हें पुढती। पुढें रहावें कोणे रिती। तेंचि निरूपण श्रोतीं । सावध परिसावें 1841

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'बद्धमुक्तनिरूपण' नाम समास सहावा समाप्त.

00

दशक ७: समास ७

साधनप्रतिष्ठानिरूपण

॥ श्रीराम ॥

| वस्तूसि जरी कल्पावें। तरी ते निर्विकल्प स्वभावें | ı | | |
|--|---|---|---|
| तेथें कल्पनेच्या नांवें । सुन्याकार | ı | 8 | l |
| तथापि कल्पूं जातां। न ये कल्पनेच्या हातां | 1 | | |
| वोळखी ठाईं न पडे चित्ता । भ्रंश पडे | | 2 | 1 |
| कांहीं दृष्टीसचि न दिसे। मनास तेंहि न भासे | 1 | | |
| न भासे न दिसे कैसें। वोळखावें | ı | 3 | ì |
| पाहों जातां निराकार । मनासि पडे सुन्याकार | 1 | | |
| कल्पूं जातां अंघकार । भरला वाटे | ι | 8 | 1 |
| कल्पूं जातां वाटे काळें । ब्रह्म काळें ना पिवळें | 1 | | |
| आरक्त निळें ना धवळें । वर्णरहित | l | ų | ŀ |
| जया वर्णवेक्ती नसे । भासाहून अनारिसें | 1 | | |
| रूपचि नाहीं कैसें । वोळखावें | l | Ę | ١ |
| न दिसतां वोळखण । किती धरावी आपण | 1 | | |
| हें तों श्रमासीच कारण । होतसे | l | 9 | I |
| जो निर्गुण गुणातीत । जो अदृश्य अवेक्त | 1 | | |
| जो अचिंत्य चिंतनातीत । परम पुरुष | ı | 6 | I |
| अचित्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। | | | |
| समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥ | | | |

| अचिंत्य तेंचि चिंतावें । अव्यक्तास आठवावें । |
|--|
| निर्गुणास वोळखावें । कोणेपरी । ९। |
| जें दृष्टीसचि न पडे । जें मनासिह नातुडे । |
| तया कैसें पाहाणें घडे । निर्गुणासी । १०। |
| असंगाचा संग धरणें। निरावलंबीं वास करणें। |
| निशब्दासी अनुवादणें। कोणेपरी ।११। |
| अचिंत्यासी चिंतूं जातां । निर्विकल्पासी कल्पितां । |
| अद्वैताचें ध्यान करितां । द्वैतचि उठे ।१२। |
| आतां ध्यानचि सोडावें । अनुसंधान तें मोडावें । |
| तरी मागुतें पडावें । माहां संशाईं । १३। |
| द्वैताच्या भेणें अंतरी। वस्तु न पाहिजे तरी। |
| तेणें समाधाना उरी । कदा असेचिना । १४। |
| सवे लावितां सवे पडे। सवे पडतां वस्तु आतुडे। |
| नित्यानित्यविचारें घडे । समाधान । १५। |
| वस्तु चिंतितां द्वैत उपजे । सोडी करितां कांहींच नुमजे । |
| |
| सुन्यत्वसदहा पाडज । विवक्तविण । १६। म्हणोनि विवेक धरावा । ज्ञानें प्रपंच सारावा । |
| |
| |
| परब्रह्म तें अद्वैत । कल्पितांच उठे द्वैत । |
| तेथें हेत आणी दृष्टांत । कांहींच न चले ।१८। |
| तें आठवितां विसरिजे । कां तें विसरोनि आठविजे । |
| जाणोनियां नेणिजे । परब्रह्म तें ।१९। |
| त्यास न भेटतां होये भेटी । भेटों जातां पडे तुटी । |
| . ऐसी हे नवल गोष्टी । मुकेपणाची । २०। |

| तें साधूं जातां साधवेना । नांतरी सोडितां सुटेना | |
|---|--------------|
| लागला समंध तुटेना । निरंतर | । ।२१। |
| तें असतचि सदां असे । नांतरी पाहातां दुरासे | |
| | । ।२२। |
| जेथें उपाये तोचि अपाये । आणी अपाये तोचि उपाये | |
| F 31707-16-00 1 1: 1: | 1731 |
| तें नुमजतांच उमजे। उमजोन कांहींच नुमजे | 1441 |
| तें वृत्तीविण पाविजे । निवृत्तिपद | I D X I I |
| तें ध्यानीं धरितां नये । चिंतनीं चिंतावें तें काये | 1 7 0 1 |
| मनामधें न समाये। परब्रह्म तें | । १२५१ |
| त्यास उपमे द्यावें जळ । तरी तें निर्मळ निश्चळ | |
| विश्व बुडालें सकळ । तरी तें कोरडेंचि असे | ।२६। |
| नव्हे प्रकाशासारिखें । अथवा नव्हे काळोखें | |
| आतां तें कासयासारिखें। सांगावें हो | 1291 |
| ऐसें ब्रह्म निरंजन । कदा नव्हे दृश्यमान | ı |
| लावावें तें अनुसंधान । कोणेपरी | 1281 |
| अनुसंघान लाऊं जातां। कांहीं नाहीं वाटे आतां | |
| तेणें मनाचिया माथां । संदेह वाजे | |
| लटिकेंचि काये पाहावें। कोठें जाऊन राहावें | 1 |
| अभाव घेतला जीवें। सत्य स्वरूपाचा | |
| अभावचि म्हणों सत्य । तरी वेदशास्त्र कैसें मिथ्य | |
| | 1381 |
| म्हणोनि मिथ्या म्हणतां नये । बहुत ज्ञानाचे उपाये बहुतीं निर्मिलें तें काये । मिथ्या म्हणावें | |
| <u> अहुता । नामल त काय । । मध्या म्हणाव</u> | 1351 |

| अद्वैतज्ञानाचा उपदेश । गुरुगीता तो महेश । सांगता होये पार्वतीश । पार्वतीप्रती । ३३। |
|---|
| अवधूतगीता केली । गोरक्षीस निरोपिली । ते अवधूतगीता बोलिली । ज्ञानमार्ग ।३४। |
| विष्णु होऊन राजहंस। विधीस केला उपदेश। ते हंसगीता जगदीश। बोलिला स्वमुखें ।३५। |
| ब्रह्मा नारदा उपदेशित । चतुश्लोकी भागवत । पुढें व्यासमुखें बहुत । विस्तारलें ।३६। |
| वसिष्ठसार वसिष्ठऋषी । सांगता जाला रघुनाथासी । कृष्ण सांगे अर्जुनासी । सप्तश्लोकी गीता । ३७। |
| ऐसें सांगावें तें किती। बहुत ऋषी बोलिले बहुतीं। अद्वैत ज्ञान आदिअंतीं। सत्यचि असे ।३८। |
| म्हणोनि मिथ्या आत्मज्ञान । म्हणतां पाविजे पतन । प्रज्ञेरहित जे जन । तयांसी हें कळेना । ३९। |
| जेंथे शेषाची प्रज्ञा मंदली । श्रुतीस मौन्यमुद्रा पडिली । जाणपणें न वचे वदली । स्वरूपस्थिती । ४०। |
| आपणास नुमजे बरवें । म्हणोनि मिथ्या कैसें करावें । नातरी सदृढ धरावें । सद्गुरुमुखे ।४१। |
| मिथ्य तेंचि सत्य जालें । सत्य असोन मिथ्य केलें। संदेहसागरी बुडालें । अकस्मात मन ।४२। |
| मनास कल्पायाची सबे। मनें कल्पिले तें नव्हे। तेणो गुणें संदेह धावे। मीपणाचेनि पंथे ।४३। |
| तरी तो पथचि मोडावा । मग परमात्मा जोडावा । समूळ संदेह तोडावा । साधुचेनि संगतीं । ४४। |

| मीपण | शस्त्रें | तुटेना | 1 | मीपण फोडितां | फ़टेना । |
|---------|----------|-----------|---|-------------------|----------|
| मीपण | | _ | | कांहीं केल्यां | |
| मीपणें | | | | मीपणें भक्ति | |
| मीपणें | शक्ति | गळे | 1 | वैराग्याची | 1881 |
| मीपणें | प्रपंच न | घडे | 1 | मीपणें परमार्थ | बुडे । |
| मीपणें | सकळिह | उडे | ì | येशकीर्तिप्रताप | 1891 |
| मीपणें | मीत्री | तुटे | 1 | मीपणें प्रीति | आटे । |
| मीपणें | | | | अभिमान आंगीं | |
| मीपणें | विकल्प | उठे | 1 | मीपणें कळह | सुटे । |
| मीपणें | संमोह | फुटे | ı | ऐक्यतेचा | 1881 |
| मीपण | कोणासिच | न साहे | 1 | तें भगवंती कैसेनि | । साहे। |
| म्हणौनि | मीपण सां | डून राहे | ı | तोचि समाधानी | 1401 |
| मीपण | कैसें | त्यागावें | 1 | ब्रह्म कैसें अनु | भवावें । |
| समाधा | न कैंसे | पावावे | i | कोणा प्रकारें | 1481 |
| मीपण | जाणोनि | त्यागावें | Į | ब्रह्म होऊन अनु | भवावें । |
| समाधा | न तें | पावावें | ŀ | निः संगपणे | 1421 |
| | | | | मीपणेंविण | साधन । |
| करूं | जाणे तो | व धन्य | 1 | समाधानी | ।५३। |
| | | | | साधन कोण करीत | |
| · | | | | कल्पनाचि उठे | |
| _ | | | | तेचि तेथें उभी | |
| तयेसि | शोधून | पाहे | | तोचि साधु | ધ,ધ, |

| निर्विकल्पासी कल्पावें। परी कल्पिते आपण न व्हावें। |
|--|
| मीपणासि त्यागावें । येणें रिती । ५६। |
| या ब्रह्मविद्येच्या लपणी। कांहींच नसावें असोनी। |
| दक्ष आणी समाद्यानी। तोचि हें जाणे ।५७। |
| जयासी आपण कल्पावें । तेंचि आपण स्वभावें । |
| येथें कल्पनेच्या नांवें । सुन्य आलें । ५८। |
| पदीहून चळों नये । करावें साधन उपाये । |
| तरीच सांपडे सोये। अलिप्तपणाची ।५९। |
| राजा राजपदीं असतां । उगीच चाले सर्व सत्ता । |
| साध्यचि होऊन तत्वतां । साधन करावें ।६०। |
| साघन आलें देहाच्या माथां । आपण देह नव्हे सर्वथा । |
| ऐसा करूनि अकर्ता। सहजचि जाला ।६१। |
| देह आपण ऐसें कल्पावें । तरीच साधन त्यागावें। |
| देहातीत अस्तां स्वभावें। देह कैचां ।६२। |
| ना तें साधन ना तें देह । आपला आपण निःसंदेह । |
| देहींच असोन विदेह । स्थिति ऐसी ।६३। |
| साधर्नेविण ब्रह्म होतां । लागों पाहे देहममता । |
| आळस प्रबळे तत्वतां । ब्रह्मज्ञानमिसें ।६४। |
| परमार्थिमसें अर्थ जागे । ध्यानिमसें निद्रा लागे । |
| मुक्तिमिसें दोष भोगे। अनर्गळता ।६५। |
| निरूपणिमसें निंदा घडे । संवादिमसें वेवाद घडे । |
| उपाधीमिसे येऊन जडे । अभिमान आंगीं ।६६। |
| तैसा ब्रह्मज्ञानिमसें । आळस अंतरीं प्रवेशे । |
| म्हणे साधनाचें पिसें । काये करावें 18.91 |

किं करोमि क्व गच्छामि किं गृह्णामि त्यजामि किम्। आत्मना पूरितं सर्वं महाकल्पांबुना यथा॥ वचन आधारीं लाविलें । जैसें शस्त्र फिराविलें । स्वता हाणोन घेतलें । जयापरी ।६८। तैसा उपायाचा अपाये । विपरीतपणें स्वहित जाये । साधन सोडितां होये । मुक्तपणें बद्ध ।६९। साधन करितां च सिद्धपण । हातींचें जाईल निघोन। तेणें गुणें साधन । करूंच नावडे ।७०। लोक म्हणती हा साधक। हेचि लज्या वाटे येक। साधन करिती ब्रह्मादिक। हें ठाउकें नाहीं ।७१। आतां असो हे अविद्या । अभ्याससारणी विद्या । अभ्यासें पाविजे अद्या । पूर्ण ब्रह्म । ७२। अभ्यास करावा कवण। ऐसा श्रोता करी प्रश्न। परमार्थाचें साधन । बोलिलें पाहिजे । ७३। याचें उत्तर श्रोतयांसी । दिघलें पुढिले समासीं । निरोपिलें साधनासी । परमार्थाच्या । ७४।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'साधनाप्रतिष्ठानाम' समास सातवा समाप्त.

दशक ७ : समास ८

श्रवणनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

| ऐका प | गरमाथ चिं | साधन | l | जेणें होये समाधान। | |
|-----------|------------------|--------|---|-------------------------|---|
| तें तूं ज | ाण गा | श्रवण | l | निश्चयेंसीं । १ । | |
| श्रवणें | आतुडे | भक्ती | l | श्रवणें उद्भवे विरक्ती। | |
| श्रवणें | तुटे अ | ासक्ती | ı | विषयांची । २ । | |
| | | _ | | श्रवणें होये दृढबुद्धी। | |
| श्रवणें | तुटे | उपाधी | ١ | अभिमानाची । ३ । | |
| श्रवणें | निश्चयो | घडे | ı | श्रवणें ममता मोडे। | |
| श्रवणें | | | | समाधान । ४। | |
| श्रवणें | आशंका | फिटे | ı | श्रवणें संशय तुटे। | |
| श्रवण | होतां | पालटे | 1 | पूर्वगुण आपुला । ५ । | |
| श्रवणें | आवरे | मन | I | श्रवणें घडे समाधान। | |
| श्रवणें | तुटे | बंघन | 1 | देहबुद्धीचें । ६ | l |
| | | | | श्रवणें धोका न ये। | |
| श्रवणें | नाना | अपाये | ŀ | भस्म होती । ७ | l |
| | | | | श्रवणें लागे समाधी। | |
| | | | | समाधानासी । ८ | 1 |
| | | | | तेणें कळे निरूपण। | |
| | | | | तदाकार । ९ | ı |
| | | | | श्रवणें प्रज्ञा चढे। | |
| श्रवणें | विषयांचे | वोढे | 1 | तुटोन जाती । १० | ı |

| श्रवणें विचार कळे । श्रवणें ज्ञान हें प्रबळे । |
|--|
| श्रवणें वस्तु निवळे । साधकासी ।११। |
| श्रवणें सद्बुद्धि लागे। श्रवणें विवेक जागे। |
| श्रवणें मन हे मागे। भगवंतासी ।१२। |
| श्रवणें कुसंग तुटे। श्रवणें काम वोहटे। |
| श्रवणें धोका आटे। येकसरां । १३। |
| श्रवणें मोह नासे । श्रवणें स्फूर्ति प्रकाशे । |
| श्रवणें सद्वस्तु भासे । निश्चयात्मक । १४। |
| श्रवणें होय उत्तम गती । श्रवणें आतुडे शांती । |
| श्रवणें पाविजे निवृत्ती । अचळ पद ।१५। |
| श्रवणा ऐसें सार नाहीं । श्रवणें घडे सर्व कांहीं। |
| भवनदीचा प्रवाहीं । तरणोपाव श्रवणें । १६। |
| श्रवण भजनाचा आरंभ। श्रवण सर्वी सर्वारंभ। |
| श्रवणें होये स्वयंभ । सर्व कांहीं । १७। |
| प्रवृत्ती अथवा निवृत्ती । श्रवणेंविण न घडे प्राप्ती । हे तों सकळांस प्रचिती । प्रत्यक्ष आहे । १८। |
| · |
| ऐकिल्याविण कळेना । हें ठाउकें आहे जना । याकारणें मूळ प्रेत्ना । श्रवण आधीं । १९। |
| याकारण मूळ प्रत्ना । श्रवण आधी । १९। जें जन्मीं ऐकिलेंचि नाहीं । तेथें पडिजे संदेहीं । |
| म्हणोनियां दुजें कांहीं । साम्यता न घडे ।२०। |
| बहुत साधनें पाहातां । श्रवणास न घडे साम्यता । |
| श्रवणेविण तत्वतां । कार्य न चले । २१। |
| न देखतां दिनकर । पडे अवघा अंधकार । |
| श्रवणेविण प्रकार । तैसा होये । २२। |

| कैसी नवविधा भक्ती । कैसी चतुर्विधा मुक्ती । कैसी आहे सहजस्थिती । हें श्रवणेंविण न कळे । २३। |
|--|
| न कळे शड्कर्माचरण। न कळे कैसें पुरश्चरण। न कळे कैसें उपासन। विधियुक्त । २४। |
| नाना व्रतें नाना दानें। नाना तपें नाना साधनें। नाना योग तीर्थाटणें। श्रवणेंविण न कळती ।२५। |
| नाना विद्या पिंडज्ञान । नाना तत्त्वांचे शोधन। नाना कळा ब्रह्मज्ञान । श्रवणेविण न कळे । २६। |
| आठराभार वनस्पती । येका जळें प्रबळती । येका रसें उत्पत्ती । सकळ जीवांची । २७। |
| सकळ जीवां येक पृथ्वी । सकळ जीवां येक रवी । सकळ जीवां वर्तवी । येक वायो । २८। |
| सकळ जीवां येक पैस । जयास बोलिजे आकाश । सकळ जीवांचा वास । येका परब्रह्मीं । २९। |
| तैसें सकळ जीवांस मिळोन । सार येकचि साधन। तें हें जाण श्रवण । प्राणीमात्रांसी ।३०। |
| नाना देश भाषा मतें । भूमंडळीं असंख्यातें । सर्वांस श्रवणापरतें । साधनचि नाहीं । ३१। |
| श्रवणें घडे उपरती । बन्दाचे मुमुक्ष होती । मुमुक्षाचे साधक अती । नेमेंसिं चालती । ३२। |
| साधकाचे होती सिद्ध । आंगीं बाणतां प्रबोध । हें तों आहे प्रसिद्ध । सकळांस ठाउकें ।३३। |
| ठाईंचे खळ चांडाळ । तेचि होती पुण्यसिळ । ऐसा गुण तत्काळ । श्रवणाचा । ३४। |

| जो दुर्बुद्धि दुरात्मा । तोचि होये पुण्यात्मा । |
|--|
| अगाध श्रवणाचा महिमा । बोलिला न वचे ।३५। |
| तीर्थांव्रतांची फळश्रुती । पुढें होणार सांगती । |
| तैसें नव्हे हातीचा हातीं । सप्रचित श्रवण ।३६। |
| नाना रोग नाना व्याधी। तत्काळ तोडिजे औषधी। |
| तैसी आहे श्रवणसिद्धी । अनुभवी जाणती । ३७। |
| श्रवणाचा विचार कळे। तरीच भाग्यश्री प्रगटे बळें। |
| मुख्य परमात्माच आकळे । स्वानुभवासी ।३८। |
| या नाव जाणावें मनन । अर्थालागीं सावधान । |
| निजध्यासें समाधान । होत असे । ३९। |
| बोलिल्याचा अर्थ कळे । तरीच समाघान निवळे । |
| अकस्मात अंतरीं वोळे । निःसंदेहता ।४०। |
| |
| संदेह जन्माचें मूळ । तें श्रवणें होये निर्मूळ । |
| |
| संदेह जन्माचें मूळ। तें श्रवणें होये निर्मूळ। |
| संदेह जन्माचें मूळ । तें श्रवणें होये निर्मूळ । पुढें सहजचि प्रांजळ । समाधान ।४१। |
| संदेह जन्माचें मूळ । तें श्रवणें होये निर्मूळ । पुढें सहजचि प्रांजळ । समाधान । १४१। जेथें नाहीं श्रवण मनन । तेथें कैचें समाधान । मुक्तपणाचें बंधन । जडलें पाईं ।४२। मुमुक्ष साधक अथवा सिद्ध । श्रवणेंविण तो अबद्ध । |
| संदेह जन्माचें मूळ । तें श्रवणें होये निर्मूळ । पुढें सहजचि प्रांजळ । समाधान । ४१। जेथें नाहीं श्रवण मनन । तेथें कैचें समाधान । मुक्तपणाचें बंधन । जडलें पाईं ।४२। |
| संदेह जन्माचें मूळ । तें श्रवणें होये निर्मूळ । पुढें सहजचि प्रांजळ । समाधान । ४१। जेथें नाहीं श्रवण मनन । तेथें कैचें समाधान । मुक्तपणाचें बंधन । जडलें पाईं ।४२। मुमुक्ष साधक अथवा सिद्ध । श्रवणेंविण तो अबद्ध । श्रवणमननें शुद्ध । चित्तवृत्ति होये ।४३। जेथें नाहीं नित्य श्रवण । तें जाणावें विलक्षण। |
| संदेह जन्माचें मूळ। तें श्रवणें होये निर्मूळ। पुढें सहजचि प्रांजळ। समाधान । ४१। जेथें नाहीं श्रवण मनन। तेथें कैचें समाधान। मुक्तपणाचें बंधन। जडलें पाईं ।४२। मुमुक्ष साधक अथवा सिद्ध। श्रवणेंविण तो अबद्ध। श्रवणमननें शुद्ध। चित्तवृत्ति होये ।४३। |
| संदेह जन्माचें मूळ । तें श्रवणें होये निर्मूळ । पुढें सहजिच प्रांजळ । समाधान । ४१। जेथें नाहीं श्रवण मनन । तेथें कैचें समाधान । मुक्तपणाचें बंधन । जडलें पाईं ।४२। मुमुक्ष साधक अथवा सिद्ध । श्रवणेंविण तो अबद्ध । श्रवणमननें शुद्ध । चित्तवृत्ति होये ।४३। जेथें नाहीं नित्य श्रवण । तें जाणावें विलक्षण । तेथें साधकें येक क्षण । क्रमूं नये सर्वथा ।४४। जेथें नाहीं श्रवणस्वार्थ । तेथें कैंचा हो परमार्थ । |
| संदेह जन्माचें मूळ। तें श्रवणें होये निर्मूळ। पुढें सहजिच प्रांजळ। समाधान । ४१। जेथें नाहीं श्रवण मनन । तेथें कैचें समाधान। मुक्तपणाचें बंधन। जडलें पाईं ।४२। मुमुक्ष साधक अथवा सिद्ध। श्रवणेंविण तो अबद्ध। श्रवणमननें शुद्ध। चित्तवृत्ति होये ।४३। जेथें नाहीं नित्य श्रवण। तें जाणावें विलक्षण। तेथें साधकें येक क्षण। क्रमूं नये सर्वथा ।४४। |
| संदेह जन्माचें मूळ । तें श्रवणें होये निर्मूळ । पुढें सहजिच प्रांजळ । समाधान । ४१। जेथें नाहीं श्रवण मनन । तेथें कैचें समाधान । मुक्तपणाचें बंधन । जडलें पाईं ।४२। मुमुक्ष साधक अथवा सिद्ध । श्रवणेंविण तो अबद्ध । श्रवणमननें शुद्ध । चित्तवृत्ति होये ।४३। जेथें नाहीं नित्य श्रवण । तें जाणावें विलक्षण । तेथें साधकें येक क्षण । क्रमूं नये सर्वथा ।४४। जेथें नाहीं श्रवणस्वार्थ । तेथें कैंचा हो परमार्थ । |

सेविलेंच सेवावें अन्न । घेतलेंचि घ्यावें जीवन ।
तैसें श्रवणमनन । केलेंचि करावें ।४७।
श्रवणाचा अनादर । आळसें करी जो नर ।
त्याचा होय अपहार । स्विहतिविषईं ।४८।
आळसाचें संरक्षण । परमार्थाची बुडवण ।
याकारणें श्रवण । केलेंचि पाहिजे ।४९।
आतां श्रवण कैसें करावें । कोण्या पंथास पाहावें ।
पुढिले समासीं आघवें । सांगिजेल ।५०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'श्रवणनिरूपणनाम' समास आठवा समाप्त.

दशक ७ : समास ९

॥ श्रीराम ॥

आतां श्रवण कैसें करावें । तेंहि सांगिजेल अघवें । श्रीतां अवधान द्यावें । येकचित्तें । १। येक वगतृत्व श्रवणीं पडे । तेणें जालें समाधान मोडे । केला निश्चय विघडे । अकस्मात । २। तें वगतृत्व त्यागावें । जें माईक स्वभावें । जेथें निश्चयाचा नांवें । सुन्याकार । ३। येक्या प्रथें निश्चय केला । तो दुजयानें उडविला । तेणें संशयोचि वाढला । जन्मवरी । ४।

| जेथें संशय तुटती । होये आशंकानिवृत्ती । |
|---|
| अद्वेत ग्रंथ परमार्थी । श्रवण करावे । ५ । |
| जो मोक्षाचा अधिकारी। तो परमार्थपंथ धरी। |
| प्रीति लागली अंतरीं । अद्वैतग्रंथाची । ६ । |
| जेणें सांडिला इहलोक । जो परलोकींचा साधक । |
| तेणें पाहावा विवेक । अद्वैतशास्त्रीं । ७ । |
| जयास पाहिजे अद्वैत । तयापुढें ठेवितां द्वैत । |
| तेणें क्षोभलें उठे चित्त । तया श्रोतयाचें । ८। |
| आवडीसारिखें मिळे। तेणें सुखचि उचंबळे। |
| नाहीं तरी कंटाळे। मानस ऐकतां । १। |
| ज्याची उपासना जैसी । त्यासी प्रीति वाटे तैसी । तेथें वर्णितां दजयासी । प्रशस्त न वटे । १०। |
| 3 |
| प्रीतीचें लक्षण ऐसें । अंतरीं उठे अनायासें । |
| पाणी पाणवाटें जैसें । आपणचि द्यांवे । ११। |
| तैसा जो आत्मज्ञानी नर । तयास नावडे इतर। |
| तेथें पाहिजे सारासार । विचारणा ते । १२। |
| जेथें कुळदेव्या भगवती । तेथें पाहिजे सप्तशती । |
| इतर देवांची स्तुती । कामा न ये सर्वथा । १३। |
| घेतां अनंताच्या व्रता । तेथें नलगे भगवद्गीता । |
| साधुजनासी वार्ता । फळाशेची नाहीं । १४। |
| वीरकंकण घालितां नाकीं । परीं तें शोभा पावेना कीं । |
| जेथील तेथें आणिकीं । कामा न ये सर्वथा । १५। |
| नाना माहात्में बोलिलीं । जेथील तेथें वंद्य जालीं । |
| विपरीत करून वाचिलीं । तरी तें विलक्षण । १६। |
| मलारमाहात्म द्वारकेसी । द्वारकामाहात्म नेलें कासीं। |
| कासीमाहात्म वेंकटसीं । शोभा न पवे । १७। |

| ऐसें सांगतां असे वाड । परी जेथील तेथेंचि गोड । |
|---|
| तैसी ज्ञानीयांस चाड । अद्वैत ग्रंथाची । १८। |
| योगीयांपुढें राहाण । परीक्षवंतांपुढें पाषाण । |
| पंडितांपुढें डफगाण । शोभा न पवे ।१९। |
| वेदज्ञापुढें जती । निस्पृहापुढें फळश्रुती । |
| ज्ञानीयांपुढें पोथी । कोकशास्त्राची ।२०। |
| ब्रह्मचर्यापुढें नाचणी । रासक्रीडा निरूपणीं । |
| राजहंसापुढें पाणी । ठेविलें जैसें । २१। |
| तैसें अंतर्निष्ठांपुढें। ठेविलें शृंघारिक टिपडें। |
| तेणें त्याचें कैसें घडे। समाधान ।२२। |
| रायास रंकाची आशा। तक्र सांगणें पीयूषा। |
| संन्याशासी वोवसा। उचिष्ट चांडाळी ।२३। |
| कर्मनिष्ठां वशीकर्ण। पंचाक्षरी निरूपण। |
| तेथें भंगे अंतःकर्ण। सहजचि त्याचें ।२४। |
| तैसे परमार्थिक जन। तयांस नस्तां आत्मज्ञान। |
| यंथ वाचितां समाधान । होणार नाहीं ।२५। |
| आतां असो हें बोलणें। जयासि स्वहित करणें। |
| तेणें सदा विचरणें। अद्वैतग्रंथीं । २६। |
| आत्मज्ञानी येकचित्त । तेणें पाहाणें अद्वैत । येकांत स्थळीं निवांत । समाधान । २७। |
| बहुत प्रकारें पाहातां । ग्रंथ नाहीं अद्वैतापरता । |
| |
| इतर जे प्रपंचिक । हास्य विनोद नवरसिक । |
| हित नव्हे तें पुस्तक । परमार्थासी । २९। |
| जेणें परमार्थ वाढे। आंगीं अनुताप चढे। |
| भक्तीसाधन आवडे । त्या नांव प्रंथ ।३०। |
| |

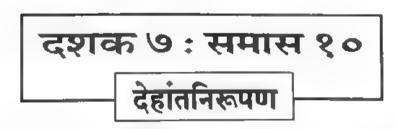
| जो ऐकतांच गर्व गळे । कां ते भ्रांतीच मावळे। |
|--|
| नातरी येकसरें वोळे। मन भगवंतीं ।३१। |
| जेणें होये उपरती । अवगुण पालटती । |
| जेणें चुके अधोगती। त्या नांव ग्रंथ ।३२। |
| जेणें धारिष्ट चढे। जेणें परोपकार घडे। |
| जेणें विषयवासना मोडे। त्या नांव ग्रंथ ।३३। |
| जेणें परत्रसाधन । जेणें ग्रंथें होये ज्ञान । |
| जेणें होईजे पावन। या नांव ग्रंथ ।३४। |
| प्रथ बहुत असती। नाना विधानें फळश्रुती। |
| जेथें नुपजे विरक्ती भक्ती। तो ग्रंथचि नव्हे ।३५। |
| मोक्षेंविण फळश्रुती । ते दुराशेची पोथी । |
| ऐकतां ऐकतां पुढती । दुराशाचि वाढे । ३६। |
| श्रवणीं लोभ उपजेल जेथें। विवेक कैंचा असेल तेथें। |
| बैसलीं दुराशेचीं भूतें। तया अधोगती । ३७। |
| ऐकोनिच फळश्रुती । पढें तरि पावोन म्हणती । |
| तयां जन्म अधोगती । सहजचि जाली ।३८। |
| नाना फळें पक्षी खाती। तेणेंचि तयां होये तप्ति। |
| परी त्या चकोराचे चित्तीं। अमृत वसे । ३९। |
| तैसें संसारी मनुष्य । पाहे संसाराची वास । |
| परा ते भगवताचे अंश । भगवंतचि इछिती ।४०। |
| ज्ञानियास पाहिजे ज्ञान । भजकास पाहिजे भजन । |
| साधकास पाहिजे साधन । इछेसारिखें ।४१। |
| परमार्थ्यास परमार्थ । स्वार्थ्यास पाहिजे स्वार्थ । |
| कृपणास पाहिजे अर्थ। मनापासुनी १४२। |
| योगियांस पाहिजे योग । भोगियांस पाहिजे भोग । |
| रोगियांस पाहिजे रोग-। हर्ति मात्रा ।४३। |

i

| कवीस पाहिजे प्रबंद । | तार्किकांस तर्कवाद। |
|-----------------------------|---------------------------|
| भाविकांस संवाद । | गोड वाटे ।४४। |
| पंडितांस पाहिजे वित्पत्ती । | विद्वांसास अधेनप्रीती । |
| कळावंतां आवडती । | नाना कळा |
| हरिदासा आवडे कीर्तन । | सुचिस्मंतां संध्यास्नान । |
| कर्मनिष्ठां विधिविधान । | पाहिजे तें । ४६। |
| प्रेमळांस पाहिजे करुणा । | दक्षता पाहिजे विचक्षणां। |
| चातुर्य पाहे शाहाणा । | आदरेंसीं । ४७। |
| भक्त पाहे मूर्तिध्यान । | संगीत पाहे ताळज्ञान। |
| रागज्ञानी तानमान । | मूर्छना पाहे । ४८। |
| योगाभ्यासी पिंडज्ञान । | तत्वज्ञासि तत्वज्ञान । |
| नाडिज्ञानी मात्राज्ञान । | पाहातुसे । ४९। |
| कामिक पाहे कोकशास्त्र । | |
| यंत्री पाहे नाना यंत्र । | आदरेंसीं । ५०। |
| टवाळां आवडे विनोद । | उन्मत्तास नाना छंद। |
| तामसास अप्रमाद । | गोड वाटे ।५१। |
| मूर्ख होये नादलुब्धी । | निंदक पाहे उणी संधी। |
| पापी पाहे पापबुद्धि । | लाऊन आंगीं । ५२। |
| येकां पाहिजे रसाळ | येकां पाहिजे पाल्हाळ। |
| येकां पाहिजे केवळ । | साबडी भक्ती ।५३। |
| आगमी पाहे आगम। | शूर पाहे संत्राम। |
| येक पाहाती नाना धर्म । | इछेसारिखे । ५४। |
| मुक्त पाहे मुक्तलीळा । | सर्व पाहे सर्व कळा। |
| जोतिषी भविष्य पिंगळा। | वर्णू पाहे ।५५। |

ऐसें सांगावें तें किती। आवडीसारिखें ऐकती।
नाना पुस्तकें वाचिती। सर्वकाळ ।५६।
परी परत्र साधनेंविण। म्हणों नये तें श्रवण।
जेथें नाहीं आत्मज्ञान। तया नांव कर्मणा ।५७।
गोडीविण गोडपण। नाकेंविण सुलक्षण।
ज्ञानेंविण निरूपण। बोलोंचि नये ।५८।
आतां असो हें बहुत। ऐकावा परमार्थग्रंथ।
परमार्थग्रंथेंविण वेर्थ। गथागोवी ।५९।
म्हणोनि नित्यानित्यविचार। जेथें बोलिला सारासार।
तोचि ग्रंथ पैलपार। पाववी विवेवें ।६०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'श्रवणनिरूपणनाम' समास नववा समाप्त.



।। श्रीराम ॥

मिथ्या तेंचि जालें सत्य । सत्य तेंचि जालें असत्य ।
मायाविभ्रमाचें कृत्य । ऐसें असे पाहातां । १ ।
सत्य कळाया कारणें । बोलिलीं नाना निरूपणें ।
तरी उठेना घरणें । असत्याचें । २ ।
असत्य अंतरीं बिंबलें । न सांगतां तें दृढ जालें ।
सत्य असोन हारपलें । जेथील तेथें । ३ ।
वेदशास्त्रें पुराणें सांगती । सत्याचा निश्चय करिती ।
तरी नये आत्मप्रचिती । सत्यस्वरूप

| सत्य असोन आछ्यादलें । मिथ्या नसोन सत्य जालें | 1 | | |
|---|---|-----|----------|
| ऐसें विपरीत वर्तलें । देखत देखतां | | 4 | 1 |
| ऐसी मायेची करणी। कळों आली तत्क्षणीं | | | |
| संतसंगें निरूपणीं । विचार घेतां | I | Ę | 1 |
| मागां जालें निरूपण । देखिलें आपणासि आपण | 1 | | |
| तेणें बाणली खूण । परमार्थाची | l | 9 | 1 |
| तेणें समाधान जालें। चित्त चैतंनीं मिळालें | | | |
| निजस्वरूपें वोळखिलें । निजवस्तुसी | l | 6 | 1 |
| प्रारब्धीं टाकिला देहो । बोधें फिटला संदेहो | | | |
| आतांचि पडो अथवा राहो । मिथ्या कळीवर | l | 9 | 1 |
| ज्ञानियांचें जें शेरीर । तें मिथ्यत्वें निर्विकार | | | |
| जेथें पडे तेचि सार । पुण्यभूमी | | १० |) [|
| साधुदर्शनें पावन तीर्थ। पुरती त्यांचे मनोरथ | | | |
| साधु न येतां जिणें वेर्थ । तयां पुण्यक्षेत्रांचे | | ११ | 1 |
| पुण्यनदीचें जें तीर । तेथें पडावें शरीर | | | |
| हा इतर जनाचा विचार । साधु नित्यमुक्त | | १३ | 15 |
| उत्तरायेण तें उत्तम । दक्षणायेन तें अधम | | | |
| हा संदेहीं वसे भ्रम । साधु तो निः संदेह | | 83 | } |
| शुक्लपक्ष उत्तरायेण । गृहीं दीप दिवा मरण | | | |
| अंतीं राहावें स्मरण । गतीकारणें | | 8 5 | 51 |
| इतुकें नलगे योगियांसी । तो जीतिच मुक्त पुण्यरासी | | | |
| तिळांजुळी पापपुण्यासी । दिधली तेणें | | १५ | ţ l |
| देहाचा अंत बरा आला । देह सुखरूप गैला त्यासी म्हणती घन्य जाला । अज्ञान जन | | • | |
| त्वासा कृषता वन्य जात्य । अभाग जन | | 5 8 | k F |

| जनाचें विपरीत मत । अंतीं भेटतो भगवंत । |
|---|
| ऐसें कल्पून घात । करिती आपुला स्वयें । १७। |
| जितां सार्थक नाहीं केलें। वेर्थ आयुष्य निघोन गेलें। |
| मुळीं धान्येचि नाहीं पेरिलें। तें उगवेल कैंचें ।१८। |
| जरी केलें ईश्वरभजन । तरीच होईजे पावन । |
| जैसें वेव्हारितां धन । रासि माथां लाभे ।१९। |
| दिधल्याविण पाविजेना । पेरल्याविण उगवेना । |
| ऐसें हें वाक्य जना । ठाउकेंचि आहे ।२०। |
| न करितां सेवेच्या व्यापारा । स्वामीस म्हणे कोठें मुशारा । |
| तैसें अंतीं अभक्त नरां। स्वहित न घडे ।२१। |
| जितां नाहीं भगवद्भक्ती । मेल्यां कैंची होईल मुक्ती । |
| असो जे जैसें करिती । ते ते पावती तैसें ।२२। |
| एवं न करितां भगवद्भजन । अंतीं नव्हीजे पावन । |
| जरी आलें बरें मरण। तरी भक्तीविण अधोगति। २३। |
| म्हणौन साधूनें आपलें । जीत अस्ताच सार्थक केलें। |
| शरीर कारणीं लागलें । धन्य त्याचें । २४। |
| जे कां जीवन्मुक्त ज्ञानी । त्यांचें शरीर पड़ो रानीं। |
| अथवा पडो स्मशानीं। तरी धन्य जालें ।२५। |
| साधूचा देह खितपला । अथवा श्वानादिकीं भक्षिला । |
| ह प्रशस्त न वटे जनाला । मंदबद्धीस्तव । २६। |
| अंत बरा नव्हेचि म्हणोन । कष्टी होती इतर जन। |
| नरा बायुड अज्ञान । नेणती वर्म । २७। |
| जा जन्मलाच नाहीं ठाईंचा । लाग कर के कि |
| विवेकबळें जन्ममृत्याचा । घोट भरिला जेणें । २८। |

| स्वरूपानुसंधानबळें । सगळी मायाच नाडळे। |
|--|
| तयाचा पार न कळे । ब्रह्मादिकासी ।२९। |
| तो जीतिच असतां मेला । मरणास मारून ज्याला । |
| जन्ममृत्य न स्मरे त्याला । विवेकबळें ।३०। |
| जो जनीं दिसतो परी वेगळा । वर्ततां भासे निराळा । |
| दृश्यपदार्थ त्या निर्मळा । स्पर्शलाचि नाहीं । ३१। |
| असो ऐसे साधुजन । त्यांचें घडलियां भजन । |
| तेणें भजनें पावन । इतर जन होती । ३२। |
| सद्गुरूचा जो अंकित साधक । तेणें केलाचि करावा विवेक । |
| विवेक केलियां तर्क। फुटे निरूपणीं ।३३। |
| हेंचि साधकासी निरवणें। अद्वैत प्रांजळ निरूपणें। |
| तुमचेंहि समाधान बाणे । साधूच ऐसें ।३४। |
| जो संतांस शरण गेला । तो संतचि होऊन ठेला । इतर जनास उपेगा आला । कृपाळूपणें । ३५। |
| 11 |
| Harring - C |
| गुरुभजनाचेंनि आधारें। निरूपणाचेनि विचारें। |
| क्रियाशुद्ध निधरिं। पाविजे पद ।३७। |
| परमार्थाचें जन्मस्थान । तेंचि सद्गुरूचें भजन । |
| सद्गुरुभजनें समाधान । अकस्मात बाणे ।३८। |
| देह मिथ्या जाणोनि जीवें । याचें सार्थकचि करातें। |
| भजनभाव तोषवावें । चित्त सद्गुरूचें । ३०। |
| शरणांगतांची बाहे चिंता । तो येक सदराक वाक |
| नसंबाळक वाढवा माता । नाना येत्ने करूनी । ४०। |
| म्हणान सद्गुरूचें भजन । जयासि घडे तोचि घन्य । |
| सद्गुरुविण समाधान । आणीक नाहीं ।४१। |

| सरली शब्दाची खटपट । आला ग्रंथाचा सेवट । |
|---|
| येथें सांगितलें पष्ट । सद्गुरुभजन ।४२। |
| सद्गुरुभजनापरतें कांहीं । मोक्षदायेक दुसरें नाहीं । |
| जयास न मने तेंहीं । अवलोकावी गुरुगीता ।४३। |
| तेथें निरोपिलें बरवें । पार्वतीप्रति सदाशिवें । |
| याकारणें सद्भावें । सद्गुरुचरण सेवावे ।४४। |
| जो ये ग्रंथींचा विवेक । विवंचूनि पाहे साधक । |
| तयास सापडे येक । निश्चय ज्ञानाचा । ४५। |
| जें ग्रंथीं बोलिलें अद्वैत । तो म्हणों नये प्राकृत । |
| सत्य जाणावा वेदांत । अर्थविषईं ।४६। |
| प्राकृतें वेदांत कळे । सकळ शास्त्रीं पाहातां मिळे । आणी समाधान निवळे । अंतर्यामीं |
| |
| तें प्राकृत म्हणों नये । जेथें ज्ञानाचे उपाये । मूर्खांसि हें कळे काये । मर्कटा नारिकेळ जैसें ।४८। |
| आतां असो हें बोलणें। अधिकारपरत्वें घेणें। |
| शिपामधाल पतन नार्षे । नार्षे - |
| जेथे नेति नेति श्रुती । तेथें न चले भाषावित्पत्ती । |
| परब्रह्म आदिअंतीं । अनुर्वाच्य । ५०। |
| इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'देहान्तनिरूपणनाम' |
| समास दहाता सामन |

दशक सातवा समाप्त

समास दहावा समाप्त.

दशक आठवा : मायोद्धव अथवा ज्ञानदशक

दशक ८ : समास १

॥ श्रीराम ॥

| श्रोतीं व्हावें सावध । | |
|-----------------------------|------------------------|
| गुरुशिष्यांचा संवाद। | अति सुगम परियेसा । १ । |
| नाना शास्त्रें घांडोळितां । | आयुष्य पुरेना सर्वथा। |
| अंतरीं संशयाची वेथा । | वाढोंचि लागे । २। |
| नाना तीर्थें थोरथोरें। | |
| सुगमें दुर्गमें दुष्करें। | पुण्यदायकें । ३। |
| ऐसी तीर्थें सर्वहि करी । | |
| फिरों जातां जन्मवरी। | आयुष्य पुरेना । ४ । |
| नाना तपें नाना दानें । | नाना योग नाना साधनें। |
| हें सर्वहि देवाकारणें। | करिजेत आहे । ५। |
| पावावया देवाधिदेवा । | बहुविध श्रम करावा। |
| तेणें देव ठाईं पाडावा। | हें सर्वमत । ६ । |
| पावावया भगवंतातें । | नाना पंथ नाना मतें। |
| तया देवाचें स्वरूप तें । | कैसें आहे । ७ । |
| बहुत देव सृष्टीवरी । | त्यांची गणणा कोण करी। |
| येक देव कोणेपरी । | ठाईं पडेना । ८ । |

| बहुविध उपासना । ज्याची जेथें पुरे कामना । |
|--|
| तो तेथेंचि राहिला मना । सदृढ करूनि । ९ । |
| बहु देव बहु भक्त। इछ्या जाले आसक्त। |
| बहु ऋषी बहु मत । वेगळालें । १०। |
| बहु निवडितां निवडेना । येक निश्चय घडेना । |
| शास्त्रें भांडती पडेना । निश्चय ठाईं । ११। |
| बहुत शास्त्रीं बहुत भेद । मतांमतांस विरोध । |
| ऐसा करितां वेवाद। बहुत गेले । १२। |
| सहस्रामधें कोणी येक । पाहे देवाचा विवेक । |
| परी त्या देवाचें कौतुक । ठाईं न पडे ।१३। |
| ठाईं न पड़े कैसें म्हणतां। तेथें लागली अहंता। |
| देव राहिला परता । अहंतागुणें । १४। |
| आतां असों हे बोलणें। नाना योग ज्याकारणें। |
| तो देव कोण्या गुणें। ठाईं पडे ।१५। |
| देव कोणासी म्हणावें । कैसें तयासी जाणावें । |
| तेंचि बोलणें स्वभावें । बोलिजेल । १६। |
| जेणें केलें चराचर । केले सृष्ट्यादि व्यापार । |
| सर्वकर्ता निरंतर । नाम ज्याचें ।१७। |
| तेणें केल्या मेघमाळा । चंद्रबिंबीं अमृतकळा । |
| तेज दिघलें रविमंडळा। जया देवें ।१८। |
| ज्याची मर्यादा सागरा । जेणें स्थापिलें फणिवरा । |
| जयाचेनि गुणें तारा । अंतरिक्ष ।१९। |
| च्यारी खाणी च्यारी वाणी । चौऱ्यासि लक्ष जीवयोनी। |
| जेणें निर्मिले लोक तिनी । तया नांव देव ।२०। |

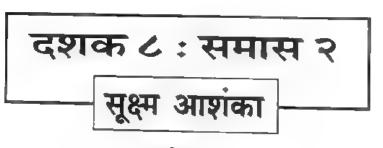
| ब्रह्मा विष्णु आणी हर | । हे जयाचे अवतार। |
|--------------------------|----------------------------------|
| तोचि देव हा निर्धार | । निश्चयेंसीं । २१। |
| देव्हाराचा उठोनि देव | । करूं नेणे सर्व जीव। |
| तयाचेनि ब्रह्मकटाव | । निर्मिला न वचे । २२। |
| ठाईं ठाईं देव असती | |
| चंद्र सूर्य तारा जीमूती | । तयांचेनि नव्हे । २३। |
| सर्वकर्ता तोचि देव | । पाहों जातां निरावेव । |
| ज्याची कळा लीळा लाघव | |
| येथें आशंका उठिली | । ते पुढीलीये समासीं फिटली । |
| | । पाहिजे श्रोतीं । २५। |
| पैस अवकाश आकाश | । कांहींच नाहीं जें भकास। |
| तये निर्मळीं वायोस | 1741 |
| वायोपासून जाला वन्ही | । वन्हीपासुनी जालें पाणी। |
| | । अघटित घडली । २७। |
| उदकापासून सृष्टि जाली | । स्तंभेविण उभारली। |
| ऐसी विचित्र कळा केली | , , 9 |
| देवें निर्मिली हे क्षिती | । तिचे पोटीं पाषाण होती । |
| तयासचि देव म्हणती | |
| जो सृष्टिनिर्माणकर्ता | । तो ये सृष्टीपूर्वी होता। |
| मग हे तयाची सत्ता | |
| कुल्लाळ पात्रापूर्वी आहे | । पात्रें कांहीं कुल्लाळ नव्हे । |
| तैसा देव पूर्वींच आहे | |
| मृत्तिकेचें शैन्य केलें | । कर्ते वेगळे राहिले। |
| कार्यकारण येक केलें | । तरी होणार नाहीं । ३२। |

| तथापि होईल पंचभूतिक । निर्गुण नव्हे कांहीं येक । कार्यकारणाचा विवेक । भूतांपरता नाहीं ।३३। |
|--|
| अञ्चल र र प्राप्त । जुलाबरता नाहा । ३३। |
| अवधी सृष्टि जो कर्ता। तो ते सृष्टीहूनि पर्ता। तेथें संशयाची वार्ता। काढूंचि नये ।३४। |
| निक्रिक् |
| जाबसूत्राचा बहली । जेगों गान्से नार्न |
| भारता है बाला । घड कवा |
| छायामडपीची सेना । सहीयातिकीच |
| सूत्रें चाळी परी तो नाना । वेक्ति नव्हे ।३६। |
| तैसा सृष्टिकर्ता देव। परी तो नव्हे सृष्टिभाव। |
| जेगों केले जान जी परा ता नव्ह सृष्टिभाव। |
| जेणें केले नाना जीव। तो जीव कैसेनी । ३७। |
| ज ज जया करणें पड़े। तें तें तो नें के के |
| म्हणोनि वायांचि बापुडे। संदेहीं पडती ।३८। |
| सृष्टि ऐसेंचि स्वभावें। गोपुर निर्मिलें बरवें। |
| परी तो सोगर कर्ज करें करें |
| परी तो गोपुर कर्ता नव्हे । निश्चयेंसीं ।३१। |
| तस जग निर्मिलें जेणें। तो वेगळा पर्णाणां। |
| येक म्हणती मूर्खपणें। जग तोचि जगदीश ।४०। |
| एवं जगदीश तो वेगळा । जग निर्माण त्याची कळा । |
| ती सवामध्य गरी निकास १००० ०० |
| " रायानव परा निराळा । असान सर्वा ।४१। |
| म्हणोनि भूतांचा कर्दमु । यासी अलिप्त आत्मारामु । |
| अविद्यागुणें मायाभ्रमु । सत्यचि वाटे ।४२। |
| मायोपाधी जगडंबर। आहे सर्विह साचार। |
| ऐसा हा विकास के निर्मा के निर्म के निर्मा के न |
| ऐसा हा विपरीत विचार । कोठेंचि नाहीं ।४३। |
| म्हणोनि जग मिथ्या साच आत्मा । सर्वांपर जो परमात्मा । |
| अंतर्बाह्य अंतरात्मा । व्यापूनि असे ।४४। |
| 6 |

तयास म्हणावें देव । येर हें अवधेंचि वाव । ऐसा आहे अंतर्भाव । वेदांतीचा । ४५। पदार्थवस्तु नासिवंत । हें तों अनुभवास येत । याकारणें भगवंत । पदार्थावेगळा ।४६। देव विमळ आणी अचळ । शास्त्रें बोलती सकळ। तया निश्चळास चंचळ । म्हणों नये सर्वथा । ४७। देव आला देव गेला। देव उपजला देव मेला। ऐसें बोलतां दुरिताला । काये उणें ।४८। जन्ममरणाची वार्ता । देवास लागेना सर्वथा । देव अमर ज्याची सत्ता । त्यासी मृत्य कैसेनी ।४९। उपजणें आणी मरणें । येणें जाणें दुःख भोगणें । हें त्या देवाचें करणें। तो कारण वेगळा ।५०। अंतःकरण पंचप्राण । बहुतत्वीं पिंडज्ञान । यां सर्वांस आहे चळण । म्हणोनि देव नव्हेती । ५१। येवं कल्पनेरहित । तया नाव भगवंत । देवपणाची मात । तेथें नाहीं ।५२। तंव शिष्यें आक्षेपिलें। तरी कैसें ब्रह्मांड केलें। कर्तेपणें कारण पडिलें। कार्यामधें ।५३। द्रष्टेपणें द्रष्टा दृश्यीं । जैसा पडे अनायासीं । कर्तेपणें निर्गुणासी । गुण तैसे । ५४। ब्रह्मांडकर्ता कवण । कैसी त्याची वोळखण। देव सगुण किं निर्गुण । मज निरोपावा । ५५। येक म्हणती त्या ब्रह्मातें । इछ्यामात्रें सृष्टिकर्ते । सृष्टिकर्ते त्यापर्ते । कोण आहे । ५६।

आतां असो हे बहु बोली । सकळ माया कोठून जाली ।
ते हे आतां निरोपिली । पाहिजे स्वामी । ५७।
ऐसें ऐकोनि वचन । वक्ता म्हणे सावधान ।
पुढिले समासीं निरूपण । सांगिजेल । ५८।
ब्रह्मीं माया कैसी जाली । पुढें असे निरोपिली ।
श्रोतीं वृत्ति सावध केली । पाहिजे आतां । ५९।
पुढें हेंचि निरूपण । विशद केलें श्रवण ।
जेणें होये समाधान । साधकांचें ।६०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'देवदर्शननाम' समास पहिला समाप्त.



॥ श्रीराम ॥

मागां श्रोतीं आक्षेपिलें । तें पाहिजे निरोपिलें ।
निरावेवीं कैसें जालें । चराचर । १।
याचें ऐसें प्रतिवचन । ब्रह्म जें कां सनातन ।
तेथें माया मिथ्याभान । विवर्तरूप भासे । २।
आदि येक परब्रह्म । नित्यमुक्त अक्रिय परम ।
तेथें अव्याकृत सृक्ष्म । जाली मूळमाया । ३।
आद्यमेकं परब्रह्म नित्यमुक्तमिविक्रियम् ।
तस्य मायासमावेशो जीवमव्याकृतात्मकम् ॥

आशंका ।

| येक ब्रह्म निराकार । मुक्त अक्रिये निर्विकार । तेथें माया वोडंबर । कोठून जाली । ४ । |
|---|
| ब्रह्म अखंड निर्गुण । तेथें इच्छा धरी कोण । निर्गुणीं सगुणेविण । इछा नाहीं । ५ । |
| मुळीं असेचिना सगुण। ह्मणोनि नामें निर्गुण। तेथें जालें सगुण। कोणेपरी । ६। |
| निर्गुणिचि गुणा आलें । ऐसें जरी अनुवादलें। लागों पाहे येणें बोलें । मूर्खपण । ७ । येक म्हणती निरावेव । करून अकर्ता तो देव । |
| त्याची लीळा बापुडे जीव । काये जाणती |
| प्राणी बापुडा जीवात्मा । काये जाणे । १ । उगाच महिमा सांगती । शास्त्रार्थ अवसा कोणि |
| बळेंचि निर्गुणास म्हणती । करूनि अकर्ता । १०। मुळीं नाहीं कर्तव्यता । कोण काल |
| जे ठाईंचें निर्माण । समूळ मिथ्या । ११। |
| इछा परमेश्वराची । ग्रेमी सकती -) : |
| परी त्या निर्गुणास इछा कैंची । हैं कळेना । १३। तरी हैं इतुकें कोणें केलें । किंवा आपणिच जालें। देवेंविण उभारलें। कोणेपरी |
| देवेंविण जालें सर्व । मग देवास कैंचा ठाव । येथें देवाचा अभाव । दिसोन आका |
| 1841 |

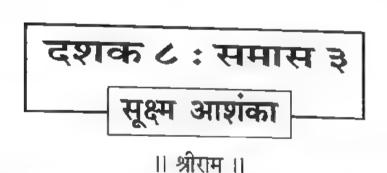
देव म्हणों सृष्टिकर्ता । तरीं येवं पाहे सगुणता । निर्गुणपणाची वार्ता । देवाची बुडाली । १६। देव ठाईंचा निर्गुण । तरी सृष्टिकर्ता कोण । कर्तेपणाचें सगुण । नासिवंत । १७। येथें पडिले विचार । कैसें जालें सचराचर । माया म्हणों स्वतंतर । तरी हेंहि विपरीत दिसे ।१८। माया कोणीं नाहीं केली । हे आपणचि विस्तारली। ऐसें बोलतां बुडाली । देवाची वार्ता । १९। देव निर्गुण स्वतिसन्द्र । त्यासी मायेसि काये समंध । ऐसें बोलतां विरुद्ध । दिसोन आलें ।२०। सकळ कांहीं कर्तव्यता । आली मायेच्याचि माथां । तरी भक्तांस उद्धरिता । देव नाहीं कीं । २१। देवेंविण नुस्ती माया। कोण नेईल विलया। आम्हां भक्तां सांभाळाया । कोणीच नाहीं ।२२। म्हणोनि माया स्वतंतर । ऐसा न घडे कीं विचार । मायेस निर्मिता सर्वेश्वर । तो येकचि आहे । २३। तरी तो कैसा आहे ईश्वर। मायेचा कैसा विचार। तरी हें आतां सविस्तर । बोलिलें पाहिजे । २४। श्रोतां व्हावें सावधान । येकात्र करूनियां मन । आतां कथानुसंघान । सावध ऐका 1241 येके आशंकेचा भाव । जनीं वेगळाले अनुभव। तेहि बोलिजेती सर्व। येथानुक्रमें 1281 येक म्हणती देवें केली । म्हणोनि हे विस्तारली। देवास इछ्या नस्ती जाली । तरी हे माया कैंची 1291

| येक म्हणती देव निर्गुण । तेथें इछा करी कोण। |
|---|
| माया मिथ्या हे आपण । जालीच नाहीं । २८। |
| येक म्हणती प्रत्यक्ष दिसे । तयेसी नाहीं म्हणतां कैसें । |
| माया हे अनादि असे । शक्ती ईश्वराची । २९। |
| येक म्हणती साच असे । तरी हे जानें कैसी निरमे ! |
| साचासारखांच दिसे। परी हे मिथ्या । ३०। |
| येक म्हणती मिथ्या स्वभावें । तरी साधन कासया करावें । |
| भक्तिसाधन बोलिलें देवें । मायात्यागाकारणें ।३१। |
| येक म्हणती मिथ्या दिसतें । भयें अज्ञानसन्येपातें। साधन औषधही घेईजेतें । परी तें दृश्य मिथ्या । ३२। |
| अनत साधने बोलिलीं । नाना मतें शांकाकरी |
| तरा माया नवचे त्यागिली । मिथ्या कैसी म्हणावी |
| भिथ्या बाल योगवाणी । मिथ्या तेत्रणानी कर् |
| ानव्या नाना निरूपणा । बोलिली माया |
| माया मिथ्या म्हणतां गेली । हे वार्ता नाहीं ऐकिली। मिथ्या म्हणतांच लागली । समागमें |
| 1341 |
| तयास मायामिथ्याभान । यत्यनि कार्ने |
| जेणें जैसा निश्चये केला । तयासी तैसाचि गाउँ |
| नार ताचि दिस बिबला । तैसी माया |
| यक म्हणता माया केची । आहे तें सर्व बहाचि । |
| निवासिक । एक्यता न मोहे |
| थिजलें आणी विद्युरलें । हें स्वरूपीं नाहीं बोलिलें । साहित्य भंगलें येणें बोलें । म्हणती येक |
| 1381 |

येक म्हणती सर्व ब्रह्म । हें न कळे जयास वर्म । तयाचे अंतरींचा भ्रम। गेलाच नाहीं येक म्हणती येकचि देव । तेथें कैंचें आणिलें सर्व। सर्व ब्रह्म हें अपूर्व । आश्चियं वाटे ।४१। येक म्हणती येकचि खरें । आनुहि नाहीं दुसरें । सर्व ब्रह्म येणें प्रकारें । सहजचि जालें ।४२। सर्व मिथ्या येकसरें । उरलें तेंचि ब्रह्म खरें। ऐसीं वाक्यें शास्त्राधारें । बोलती येक । ४३। आळंकार आणी सुवर्ण । तेथें नाहीं भिन्नपण । आटाआटी वेर्थ सीण । म्हणती येक । ४४। हीन उपमा येकदेसी । कैसी साहेल वस्तूसी । वर्णवेक्ती अव्यक्तासी । साम्यता न घडे ।४५। सुवर्णीं दृष्टी घालितां । मुळींच आहे वेक्तता । आळंकार सोने पाहातां । सोनेंचि असे ।४६। मुळीं सोनेंचि हें वेक्त । जड येकदेसी पीत । पूर्णास अपूर्णाचा दृष्टांत । केवीं घडे । ४७। दृष्टांत तितुका येकदेसी । देणें घडे कळायासी । सिंधु आणी लहरीसी । भिन्नत्व कैंचें 1861 उत्तम मधेम कनिष्ठ । येका दृष्टांतें कळे पष्ट । येका दृष्टांतें नष्ट । संदेह वाढे ।४९। कैंचा सिंधु कैंची लहरी । अचळास चळाची सरी। साचाऐसी वोडंबरी । मानूंच नये ।५०। वोडंबरी हे कल्पना। नाना भास दाखवी जना। येरवी हे जाणा । ब्रह्मचि असे ।५१।

ऐसा वाद येकमेकां । लागतां राहिली आशंका ।
तेचि आतां पुढें ऐका । सावध होउनि ।५२।
माया मिथ्या कळों आली । परी ते ब्रह्मीं कैसी जाली ।
म्हणावी ते निर्गुणें केली । तरी ते मुळींच मिथ्या ।५३।
मिथ्या शब्दीं कांहींच नाहीं । तेथें केलें कोणें काई ।
करणें निर्गुणाचा ठाईं । हेंहि अघटित ।५४।
कर्ता ठाईंचा अरूप । केलें तेंहि मिथ्यारूप ।
तथापी फेडूं आक्षेप । श्रोतयांचा ।५५।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सूक्ष्मआशंकानिरूपणनाम' समास दुसरा समाप्त.



अरे जे जालेंचि नाहीं। त्याची वार्ता पुससी काई।
तथापि सांगों जेणें कांहीं। संशय नुरे । १।
दोरीकरितां भुजंग। जळाकरितां तरंग।
मार्तंडाकरितां चांग। मृगजळ वाहे । २।
कल्पनेकरितां स्वप्न दिसे। सिंपीकरितां रूपें भासे।
जळाकरितां गार वसे। निमिष्य येक । ३।
मातीकरितां भिंती जाली। सिंधुकरितां लहरी आली।
तिळाकरितां पुतळी। दिसों लागे । ४।

सोन्याकरितां आळंकार । तंतुकरितां जालें चीर । कासवाकरितां विस्तार । हातापायांचा । ५ । तूप होतें तरी थिजलें । तरीकरितां मीठ जालें । बिंबाकरितां बिंबलें । प्रतिबिंब । ६ । पृथ्वीकरितां जालें झाड । झाडाकरितां छ्याया वाड । घातुकरितां पवाड । उंच नीच वर्णाचा । ७ । आतां असो हा दृष्टांत । अद्वैतास कैंचें द्वैत । द्वैतेविण अद्वैत । बोलतांच न ये । ८ । भासाकरितां भास भासे । दृश्याकरितां अदृश्य दिसे । अदृश्यास उपमा नसे । म्हणोनि निरोपम । ९ । कल्पनेविरहित हेत । दृश्यावेगळा दृष्टांत । द्वैतावेगळें द्वैत । कैसें जालें । १०। विचित्र भगवंताची करणी । वर्णवेना सहस्रफणी। तेणें केली उभवणी । अनंत ब्रह्मांडाची ।११। परमात्मा परमेश्वरु । सर्वकर्ता जो ईश्वरु । तयापासूनि विस्तारु । सकळ जाला । १२। ऐसीं अनंत नामें धरी । अनंत शक्ती निर्माण करी । 1631 तोचि जाणावा चतुरीं । मूळपुरुष त्या मूळपुरुषाची वोळखण । ते मूळमायाचि आपण । सकळ कांहीं कर्तेपण । तेथेंचि आलें ।१४। कार्यकारणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते । हें उघड बोलतां नये । मोडों पाहातो उपाये ! 1841 येरवीं हें पाहातां काये । साच आहे

| देवापासून सकळ जालें | । हें सर्वांस मानलें | |
|--------------------------|------------------------------|---------|
| परी त्या देवास वोळिखलें | | |
| सिद्धाचे जे निरूपण | । तें साधकांस न मने जाण | i . |
| पक्व नाहीं अंत:कर्ण | | |
| अविद्यागुणें बोलिजे जीव | । मायागुणें बोलिजे शिव | 1 |
| मूळमायागुणें देव | । बोलिजेतो | 1281 |
| म्हणौनि कारण मूळमाया | । अनंत शक्ती धरावया | l |
| तेथीचा अर्थ जाणावया | । अनुभवी पाहिजे | 1881 |
| मूळमाया तोचि मूळपुरुष | । तोचि सर्वांचा ईश | 1 |
| अनंतनामी जगदीश | । तयासीचि बोलिजे | 1201 |
| अवघी माया विस्तारली | । परी हे निशेष नाथिली | ı |
| ऐसिया वचनाची खोली | | 1 २ १ । |
| ऐसें अनुर्वाच्य बोलिजे | । परी हें स्वानुभवें जाणिजे | ł |
| संतसंगेविण नुमजे | 0 - 1 | 1221 |
| माया तोचि मूळपुरुष | । साधकां न मने हें निशेष | 1 |
| परी अनंतनामी जगदीश | । कोणास म्हणावें | 1831 |
| नामरूप माये लागलें | । तरी हें बोलणें नीटचि जालें | ı |
| येथें श्रोतीं अनुमानिलें | । कासयासी | 1881 |
| आता असो हे सकळ बोली | । मागील आशंका राहिली | 1 |
| निराकारीं कैसी जाली | । मूळमाया | 1241 |
| दृष्टीबंधन मिथ्या सकळ | । परी तो कैसा जाला खेळ | |
| हेंचि आतां अवघें निवळ | । करून दाऊं | । २६। |
| आकाश असतां निश्चळ | । मधें वायो जाला चंचळ। | • |
| तैसी जाणावी केवळ | | । २७। |
| | | |

| रूप वायोचें जालें। तेणें आकाश भंगलें। |
|---|
| ऐसें हें सत्य मानलें। नवचे किं कदा । २८। |
| तैसी मूळमाया जाली । आणी निर्गुणता संचली । |
| थण हवाड चन्नी |
| वायु नव्हता पुरातन । तैसी मूळमाया जाण। |
| भाष विद्याता प्रका क्षेत्र । -2-2 |
| वायो रूपें कैसा आहे। तैसी मूळमाया पाहें। |
| HIM UT 7 7 200 1 |
| वायो सहा कार्य 🖚 । ३१। |
| वायो सत्य म्हणों जातां । परी तो न ये दाखवितां। तयाकडे पाहों जातां । धूळीच दिसे |
| 9 9 |
| तैसी मूळमाया भासे । भासे परी ते न दिसे । |
| पुढें विस्तारली असे । माया अविद्या ।३३। |
| जैसें वायोचेनि योगें। दृश्य उडे गगनमार्गे। |
| मूळमायेच्या संयोगें । तैसें जग ।३४। |
| गगनीं अभाळ नाथिलें । अकस्मात उद्भवलें । |
| मायेचेनि गुणें जालें । तैसें जग ।३५। |
| नाथिलेंचि गगन नव्हतें। अकस्मात आलें तेथें। |
| तैसें दृश्य जालें येथें । तैसियापरी ।३६। |
| परी त्या अभाळाकरितां । गगनाची गेली निश्चळता । |
| वाटे परी ते तत्वता । तैसीच आहे ।३७। |
| तैसें मायेकरितां निर्गुण । वाटे जालें सगुण । |
| परी तें पाहतां संपूर्ण । जैसें तैसें ।३८। |
| आभाळ आलें आणि गेलें । तरी गगन तें संचलें। |
| तैसें गुणा नाहीं आलें। निर्गुण ब्रह्म ।३९। |

| नम मार्था कार्य क्रिके । - २ २ २ २ १ १ १ १ |
|---|
| नम मार्था लागलें दिसे । परी तें जैसें तैसें असे । |
| तैसें जाणावें विश्वासें। निर्गुण ब्रह्म ।४०। |
| <u>कर्घ पाहातां आकाश । निळिमा दिसे सावकास ।</u> |
| परी तो जाणिजे मिथ्या भास । भासलासे ।४१। |
| आकाश पालथें घातलें । चहूंकडे आटोपलें । |
| वाट विश्वास कोडिलें । परी तें मोकळेंचि असे ।४२। |
| पर्वतीं निळा रंग दिसे । परी तो तया लगाला उसे । |
| आलप्त जाणार्व तैसे । निर्गुण ब्रह्म । ४३। |
| रथ धावता पृथ्वी चंचळ । वाटे परी ते असे विश्वक । |
| तैसें परब्रहा केवळ । निर्गुण जाणावें ।४४। |
| अभाळाकरितां मयंक । वाटे धावतो निशंक । |
| परा त अवधे मार्टक । अवस्त |
| झळे अथवा अग्निज्वाळ । तेणें कंपित दिसे अंत्राळ । |
| वाट परा ते विश्वक । जैने के |
| तैसें स्वरूप हें संचलें। असतां वाटे गुणा आलें। |
| एस कल्पनाम गाम्ले । गाँ ने दिल्ल |
| टिक्टिंग कर के किन् |
| दृष्टिबंधनाचा खेळ। तैसी माया हे चंचळ। |
| वस्तु शाश्वत निश्चळ । जैसी तैसी । ४८। |
| ऐसी वस्तु निरावेव । माया दाखवी अवेव । |
| ^{इचा} एसाच स्वभाव । नाथिलीच हे |
| माया पाहाता मळींच नसे । परी हे सालागेकी |
| व्यव आणि निरसे । अभाळ जैसें |
| एसा माया उद्भवली । वस्त निर्गाण संस्कृत |
| अहं ऐसी स्फूर्ति जाली । तेचि माया ।५१। |
| 1441 |

गुणमायेचे पवाडे । निर्गुणीं हें काहींच न घडे । परी हें घडे आणी मोडे । सस्वरूपीं ।५२। जैसी दृष्टी तरळली । तेणें सेनाच भासली । पाहातां आकाशींच जाली । परी ते मिथ्या ।५३। मिथ्या मायेचा खेळ । उद्भव बोलिला सकळ। नाना तत्वांचा पाल्हाळ । सांडूनियां ।५४। तत्वें मुळींच आहेती । वोंकार वायोची गती । तेथीचा अर्थ जाणती । दक्ष ज्ञानी । ५४। मूळमायेचें चळण । तेंचि वायोचें लक्षण । सूक्ष्म तत्त्वें तेंचि जाण । जडत्वा पावलीं । ५६। ऐसीं पंचमाहांभूतें । पूर्वी होतीं अवेक्तें । पुढें जालीं वेक्तें । सृष्टिरचनेसी । ५७। मूळमायेचें लक्षण । तेंचि पंचभूतिक जाण । त्याची पाहें वोळखण। सूक्ष्म दृष्टी ।५८। आकाश वायोविण । इछ्याशब्द करी कोण। इच्छाशक्ति तेचि जाण । तेजस्वरूप । ५९। मृदपण तेंचि जळ। जडत्व पृथ्वी केवळ। ऐसी मूळमाया सकळ। पंचभूतिक जाणावी ।६०। येक येक भूतांपोटीं । पंचभूतांची राहाटी । सर्व कळे सूक्ष्मदृष्टी । घालून पाहातां ।६१। पुढें जडत्वास आलीं। तरी असतीं कालवलीं। 1831 ऐसी माया विस्तारली । पंचभूतिक

मूळमाया पाहातां मुळीं । अथवा अविद्या भूमंडळीं । स्वर्ग मृत्य पाताळीं । पांचचि भूतें ।६३।

> स्वर्गे मृत्यौ पाताले वा यत्किचित्सचराचरम्। सर्वं पंचभूतकं राम षष्ठं किंचित्र दृश्यते॥

सत्य स्वरूप आदिअंतीं । मध्यें पंचभूतें वर्तती । पंचभूतिक जाणिजे श्रोतीं । मूळमाया ।६४।

येथें उठिली आशंका । सावध होऊन ऐका।

पंचभूतें जालीं येका । तमोगुणापासुनी । ६५।

मूळमाया गुणापरती । तेथें भूतें कैंचीं होती ।

ऐसी आशंका हे श्रोतीं । घेतली मागां । ६६।

ऐसें श्रोतीं आक्षेपिलें । संशयास उभें केलें।

याचें उत्तर दिघलें । पुढिले समासीं । ६७।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सूक्ष्मआशंकानाम' समास तिसरा समाप्त.

दशक ८ : समास ४ सूक्ष्मपंचभूतेनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

मागील आशंकेचें मूळ । आतां होईल प्रांजळ। वृत्ति करावी निवळ । निमिष्य येक । १ । ब्रह्मीं मूळमाया जाली । तिच्या पोटा माया आली । मंग ते गुणा प्रसवली । म्हणौनि गुणक्षोभिणी । २ ।

| पुढें तिजपासाव कोण । सत्वरजतमोगुण । |
|---|
| तमोगुणापासून निर्माण । जालीं पंचभूतें । ३ । |
| ऐसीं भूतें उद्भवलीं। पुढें तत्वें विस्तारलीं। |
| |
| |
| मूळमाया गुणापरती । तेथें भूतें कैंचीं होतीं। |
| ऐसी आशंका हे श्रोतीं । घेतली मागां । ५। |
| आणीक येकयेके भूतीं। पंचभूतें असतीं। |
| तेहि आतां कैसी स्थिती । प्रांजळ करू । ६ । |
| सूक्ष्मदृष्टीचें कौतुक । मूळमाया पंचभूतिक । |
| श्रोतीं विमळ विवेक । केला पाहिजे । ७ । |
| आधीं भूतें तीं जाणावीं । रूपें कैसीं वोळखावीं । |
| मग ते शोधून पाहावीं । सूक्ष्मदृष्टी । ८। |
| वोळखी नाहीं अंतरीं । ते वोळखावी कोणेपरी । |
| म्हणोनि भूतांची वोळखी चतुरीं । नावेक परिसावी । ९। |
| जें जें जड आणी कठिण । तें तें पृथ्वीचें लक्षण। |
| मृद आणी वोलेपण । तितुकें आप ।१०। |
| जें जें उष्ण आणी सतेज । तें तें जाणावें पैं तेज । |
| आतां वायोहि सहज । निरोपिजेल । ११। |
| चैतन्य आणी चंचळ । तो हा वायोचि केवळ। |
| सुन्य अवकाश निश्चळ । आकाश जाणावें ।१२। |
| ऐसीं पंचमाहांभूतें । वोळखी धरावी संकेतें । |
| आतां येकीं पांच भूतें । सावध ऐका |
| जें त्रिगुणाह्नि पर । त्याचा सूक्ष्म विचार । |
| यालागीं अति तत्पर । होऊन ऐका |
| |

| सूक्ष्म आकाशीं कैसी पृथ्वी । तेचि आधीं निरोपावी । |
|--|
| येथें धारणा धरावी । श्रोतेजनीं । १५। |
| आकाश म्हणजे अवकाश सुन्य । सुन्य म्हणिजे तें अज्ञान । |
| अज्ञान म्हणिजे जडत्व जाण । तेचि पृथ्वी ।१६। |
| आकाश स्वयें आहे मृद । तेंचि आप स्वतसिन्द । |
| आतां तेज तेंहि विशद । करून दाऊं ।१७। |
| अज्ञानें भासला भास । तोचि तेजाचा प्रकाश । |
| आतां वायो सावकाश । साकल्य सांगों । १८। |
| वायु आकाशा नाहीं भेद । आकाशाइतुका असे स्तब्ध । |
| तथापी आकाशीं जो निरोध । तोचि वायो । १९। |
| आकाशीं आकाश मिसळलें । हें तों नलगे किं बोलिलें। |
| येणें प्रकारें निरोपिलें । आकाश पंचभूत ।२०। |
| वायोमध्यें पंचभूतें । तेहिं ऐका येकचित्तें । |
| बोलिजेती ते समस्तें । येथान्वयें । २१। |
| हळु फूल तरी जड। हळु वारा तरी निबिड। |
| |
| वायो लागतां कडाड । मोडती झाडें । २२। |
| तोलेंविण झाड मोडे। ऐसें हें कहींच न घडे। |
| तोलेंविण झाड मोडे। ऐसें हें कहींच न घडे। तोल तोचि तये जडे। पृथ्वीचा अंश । २३। |
| तोलेंविण झाड मोडे। ऐसें हें कहींच न घडे। तोल तोचि तये जडे। पृथ्वीचा अंश । २३। येथें श्रोते आशंका घेती। तेथें कैंचीं झाडें होतीं। |
| तोलेंविण झाड मोडे। ऐसें हें कहींच न घडे। तोल तोचि तये जडे। पृथ्वीचा अंश ।२३। येथें श्रोते आशंका घेती। तेथें कैंचीं झाडें होतीं। झाडें नव्हतीं तरी शक्ती। कठिणरूप आहे ।२४। |
| तोलेंविण झाड मोडे। ऐसें हें कहींच न घडे। तोल तोचि तये जडे। पृथ्वीचा अंश ।२३। येथें श्रोते आशंका घेती। तेथें कैंचीं झाडें होतीं। झाडें नव्हतीं तरी शक्ती। कठिणरूप आहे ।२४। वन्हीस्फुलिंग लाहान। कांहीं तन्ही असे उच्चा |
| तोलंविण झाड मोडे। ऐसें हें कहींच न घडे। तोल तोचि तये जडे। पृथ्वीचा अंश ।२३। येथें श्रोते आशंका घेती। तेथें कैंचीं झाडें होतीं। झाडें नव्हतीं तरी शक्ती। कठिणरूप आहे ।२४। वन्हीस्फुलिंग लाहान। कांहीं तन्ही असे उष्ण। तैसें सूक्ष्मीं जडपण। सूक्ष्मरूपें ।२५। |
| तोलेंविण झाड मोडे। ऐसें हें कहींच न घडे। तोल तोचि तये जडे। पृथ्वीचा अंश ।२३। येथें श्रोते आशंका घेती। तेथें कैंचीं झाडें होतीं। झाडें नव्हतीं तरी शक्ती। कठिणरूप आहे ।२४। वन्हीस्फुलिंग लाहान। कांहीं तन्ही असे उष्ण। |

| सकळांस मिळोन आकाश | । सहजिव आहे अवकाश । |
|---------------------|-----------------------------|
| पंचभूतांचे अंश | । वायोमधें निरोपिले । २७। |
| आतां तेजाचें लक्षण | । भासलेंपण तें कठिण। |
| तेजीं ऐसी वोळखण | । पृथ्वीयेची । २८। |
| भासला भास वाटे मृद | । तेजीं आप तेंचि प्रसिद्ध । |
| तेजीं तेज स्वतसिद्ध | । सांगणेंचि नलगे । २९। |
| | । तेजीं आकाश निश्चळ। |
| तेजी पंचभूतें सकळ | । निरोपिलीं । ३०। |
| - | । आप तेंचि जें मृदपण। |
| मृदपण तें कठिण | । तेचि पृथ्वी । ३१। |
| | । तेज मृदपणें भासे। |
| | । मृदत्वाआंगी । ३२। |
| | । तें व्यापकचि स्वभावें। |
| | । सूक्ष्म निरोपिलीं । ३३। |
| | । कठिण पृथ्वी आपण। |
| कठिणत्वीं मृदपण | |
| कठिणत्वाचा जो भास | । तोचि तेजाचा प्रकाश। |
| कठिणत्वीं निरोधांश | |
| आकाश सकळांस व्यापक | । हा तो प्रगटचि विवेक। |
| आकाशींच कांहीं येक | । भास भासे । ३६। |
| आकाश तोडितां तुटेना | । आकाश फोडितां फुटेना । |
| आकाश परतें होयेना | । तिळमात्र । ३७। |
| येक धनी न | । दाविला भूतांचा संकेत। |
| येक भूतीं पंचभूत | । तेहि निरोपिलें ।३८। |

| परी हें आहाच पाहातां नातुडे । बळेंचि पोटीं संदेह पडे । |
|---|
| भ्रांतिरूपें अहंता चढे । अकस्मात । ३९। |
| सूक्ष्मदृष्टीनें पाहातां । वायोचि वाटे तत्वतां । |
| सूक्ष्म वायो शोधूं जातां । पंचभूतें दिसती ।४०। |
| एवं पंचभूतिक पवन । तेचि मूळमाया जाण। |
| माया आणी सूक्ष्म त्रिगुण । तेहि पंचभूतिक ।४१। |
| भूतें गुण मेळविजे । त्यासी अष्टधा बोलिजे । |
| पंचभूतिक जाणिजे । अष्टधा प्रकृती ।४२। |
| शोधून पाहिल्यावीण । संदेह धरणें मूर्खपण । |
| याची पाहावी वोळखण। सूक्ष्मदृष्टी ।४३। |
| गुणापासुनी भूतें । पावलीं पष्ट दशेतें । |
| जडत्वा येऊन समस्तें । तत्वें जालीं ।४४। |
| पुढें तत्वविवंचना । पिंडब्रह्मांड तत्वरचना । |
| बोलिली असे ते जना । प्रगटिच आहे ।४५। |
| हा भूतकर्दम बोलिला। सूक्ष्म संकेतें दाविला। |
| ब्रह्मगोळ उभारला । तत्पूर्वी ।४६। |
| या ब्रह्मांडापैलिकडिल गोष्टी । जैं जाली नव्हती सृष्टी । |
| मूळमाया सूक्ष्मदृष्टी । वोळखावी ।४७। |
| सप्तकंचुक प्रचंड । जालें नव्हतें ब्रह्मांड । |
| मायेअविद्येचें बंड । ऐलिकडे । ४८। |
| ब्रह्मा विष्णु महेश्वर । हा ऐलिकडिल विचार । |
| |
| पृथ्वी मेरु सप्त सागर । ऐलिकडे ।४९। |
| पृथ्वा मरु सप्त सागर । एलिकड । ४९। नाना लोक नाना स्थानें । चंद्र सूर्य तारांगणें। सप्त द्वीपें चौदा भुवनें । ऐलिकडे । ५०। |

शेष कूर्म सप्त पाताळ। येकविस स्वर्गे अष्ट दिग्पाळ। तेतिस कोटी देव सकळ। ऐलिकडे बारा आदित्य अक्रा रुद्र । नव नाग सप्त ऋषेश्वर । नाना देवांचे अवतार । ऐलिकडे ।५२। मेघ मनु चक्रवती । नाना जीवांची उत्पत्ती । आतां असो सांगों किती । विस्तार हा सकळ विस्ताराचें मूळ । ते मूळमायाच केवळ । मागां निरोपिली सकळ । पंचभूतिक । ५४। सूक्ष्मभूतें जे बोलिलीं । तेचि पुढें जडत्वा आलीं । ते सकळिह बोलिलीं । पुढिले समासीं । ५५। पंचभूतें पृथकाकारें । पुढें निरोपिलीं विस्तारें । वोळखीकारणें अत्यादरें। श्रोतीं श्रवण करावीं । ५६। पंचभूतिक ब्रह्मगोळ । जेणें कळे हा प्रांजळ । दृश्य सांडून केवळ । वस्तुच पाविजे ।५७। माहाद्वार वोलांडावें । मग देवदर्शन घ्यावें । तैसें दृश्य हें सांडावें । जाणोनियां 1461 म्हणोनि दृश्याचा पोटीं । आहे पंचभूतांची दाटी । येकपणें पडिली मिठी। दृश्य पंचभूतां ।५९। एवं पंचभूतांचेंचि दृश्य। सृष्टी रचली सावकास। श्रोतीं करून अवकाश । श्रवण करावें ।६०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सूक्ष्मपंचभूतेनिरूपणनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक ८: समास ५

स्थूळ पंचमहाभूते स्वरूपाकाशभेद

॥ श्रीराम ॥

| केवळ मूर्ख तें नेणे । ह्यणौन घडलें सांगणें | ı | | |
|--|----|----|---|
| पंचभूतांचीं लक्षणें । विशद करूनि | ı | 8 | l |
| पंचभूतांचा कर्दम जाला । आतां नवचे वेगळा केला | ì | | |
| परंतु कांहीं येक वेगळाला । करून दाऊं | l | 7 | l |
| पर्वत पाषाण शिळा शिखरें । नाना वर्णे लाहान थोरें | ŧ | | |
| खडे गुंडे बहु प्रकारें। जाणिजे पृथ्वी | | 3 | 1 |
| नाना रंगांची मृत्तिका । नाना स्थळोस्थळीं जे कां | ı | | |
| वाळुकें वाळु अनेका । मिळोन पृथ्वी | | ४ | l |
| पुरें पट्टणें मनोहरें। नाना मंदिरें दामोदरें | ı | | |
| नाना देवाळयें शिखरें । मिळोन पृथ्वी | | ц | I |
| सप्त द्वीपावती पृथ्वी । काये ह्मणोनि सांगावी | ŧ | | |
| नव खंडें मिळोन जाणावी । वसुंधरा | | Ę | l |
| नाना देव नाना नृपती। नाना भाषा नाना रिती | ı | | |
| लक्ष चौऱ्यासी उत्पत्ती । मिळोन पृथ्वी | | 9 | l |
| नाना उद्वसें जें वनें। नाना तरुवरांचीं बनें | ı | | |
| गिरीकंदरें नाना स्थानें। मिळोन पृथ्वी | | 6 | l |
| नाना रचना केली देवीं । जे जे निर्मिली मानवीं | 1 | | |
| सकळ मिळोन पृथ्वी । जाणिजे श्रोतीं | | 8 | ١ |
| नाना धातु सुवर्णादिक । नाना रत्नें जे अनेक | | | |
| नाना काष्ठवृक्षादिक । मिळोन पृथ्वी | 13 | 80 | ì |

आतां असो हें बहुवस । जडांश आणी कठिणांश । सकळ पृथ्वी हा विश्वास । मानिला पाहिजे ।११। बोलिलें पृथ्वीचें रूप । आतां सांगिजेल आप । श्रोतीं वोळखावें रूप । सावध होऊनी ।१२। वापी कूप सरोवर । नाना सरितांचें जें नीर । मेघ आणी सप्त सागर । मिळोन आप । १३। क्षारक्षीरसुरासर्पिर्दधि इक्षुर्जलं तथा। क्षारसमुद्र दिसताहे । सकळ जन दृष्टीस पाहे । जेथें लवण होताहे । तोचि क्षारसिंधु । १४। येक दुधाचा सागर। त्या नांव क्षीरसागर। देवें दिधला निरंतर । उपमन्यासी । १५। येक समुद्र मद्याचा । येक जाणावा घृताचा । येक निखळ दह्याचा । समुद्र असे ।१६। येक उसाच्या रसाचा। येक तो शुद्ध जळाचा। ऐसा सातां समुद्रांचा । वेढा पृथ्वीयेसी । १७। एवं भूमंडळीचें जळ । नाना स्थळींचें सकळ। मिळोन अवधें केवळ । आप जाणावें ।१८। पृथ्वीगर्भी कितियेक । पृथ्वीतळीं आवर्णोदक । तिहीं लोकींचें उदक । मिळोन आप ।१९। नाना वल्ली बहुवस । नाना तरुवरांचे रस । मध पारा अमृत विष । मिळोन आप ।२०। नाना रस स्नेहादिक । याहि वेगळे अनेक । जळावेगळें अवश्यक । आप बोलिजे । २१।

| सारद्र आणी सीतळ । जळासारिखें पातळ । |
|---|
| शुक्लीत श्रोणीत मूत्र लाळ । आप बोलिजे । २२। |
| आप संकेतें जाणावें । पातळ वोलें वोळखावें । |
| मृद सीतळ स्वभावें । आप बोलिजे । २३। |
| जाला आपाचा संकेत । पातळ मृद गुळगुळित । |
| स्वेद श्लेष्मा अश्रु समस्त । आप जाणावें । २४। |
| तेज ऐका सावधपणें। चंद्र सूर्य तारांगणें। |
| दिव्य देह सतेजपणें। तेज बोलिजे । २५। |
| वन्ही मेघीं विद्युल्यता । वन्ही सृष्टी संव्हारिता । |
| वन्ही सागरा जाळिता। वडवानळु ।२६। |
| वन्ही शंकराचे नेत्रींचा । वन्ही काळाचे क्षुधेचा । |
| वन्ही परीघ भूगोळाचा । तेज बोलिजे । २७। |
| जें प्रकाशरूप। तें तें तेजाचें स्वरूप। शोषक उष्णादि आरोप। तेज जाणावें 12८। |
| , |
| वायो जाणावा चंचळ । चैतन्य चेतवी केवळ । बोलणें चालणें सकळ । वायोमुळें । २९। |
| हाले डोले तितुका पवन । कांहीं न चले पवनेंविण । |
| सृष्टी चाळाया कारण । मूळ तो वायो ।३०। |
| चळण वळण आणी प्रासारण । निरोध आणी अकोचन । |
| सकळ जाणावा पवन । चंचळरूपी । ३१। |
| प्राण अपान आणी व्यान । चौथा उदान आणी समान । |
| नाग कूर्म कर्कश जाण । देवदत्त धनंजये ।३२। |
| जितुकें कांहीं होतें चळण । तितुकें वायोचें लक्षण । |
| चंद्र सूर्य तारांगण । वायोचि धर्ता ।३३। |

| आकाश जाणावें पोकळ। निर्मळ आणी निश्चळ। |
|--|
| अवकाशरूप सकळ । आकाश जाणावें । ३४। |
| आकाश सकळांस व्यापक । आकाश अनेकीं येक । |
| आकाशामध्यें कौतुक । चहूं भूतांचें । ३५। |
| आकाशाऐसें नाहीं सार । आकाश सकळांहन थोर । |
| पाहाता आकाशाचा विचार । स्वरूपासारिखा । ३६। |
| तंव शिष्यें केला आक्षेप । दोहींचें सारखेंचि रूप । |
| तरा आकाशाचि स्वरूप । कां म्हणों नये । ३७। |
| आकाश स्वरूपा कोण भेद । पाहातां दिसती अभेट । |
| आकाश वस्तुच स्वतसिद्ध। कां न म्हणावी ।३८। |
| वस्तु अचळ अढळ । वस्तु निर्मळ निश्चल । |
| तसचि आकाश केवळ । वस्तुसारिखें । ३९। |
| ऐकोनि वक्ता बोले वचन । वस्तु निर्गण प्रसातन । |
| आकाशाआगी सप्त गुण । शास्त्रीं निरोपिले ।४०। |
| काम क्रोध शोक मोहो । भय अज्ञान सुन्यत्व पाहो । |
| एसा सप्तविध स्वभाव । आकाशाचा ।४१। |
| ऐसें शास्त्राकारें बोलिलें। हाणीनि आकाश भूत जालें। |
| स्वरूप निर्विकार संचलें । उपमेरहित ।४२। |
| काचबंदि आणी जळ । सारिखेंच वाटे सकळ। |
| परी येक काच येक जळ। शाहाणे जाणती ।४३। |
| रुवामध्यें स्फटिक पडिला। लोकीं तद्रूप देखिला। |
| तेणें कपाळमोक्ष जाला । कापुस न करी ।४४। |
| तंदुलामधें श्वेत खडे। तंदुलासारिखेच वांकुडे। |
| चाऊं जातां दांत पडे। तेव्हां कळे ।४५। |

त्रिभागामधें खडा असे । त्रिभागासारिखाच भासे । शोधं जातां वेगळा दिसे । कठिणपणें ।४६। गुळासारिखा गुळदगड । परी तो कठिण निचाड । नागकांडी आणी वेखंड। येक म्हणों नये ।४७। सोनें आणी सोनपितळ । येकचि वाटती केवळ। परी पितळेसी मिळतां ज्वाळ । काळिमा चढे ।४८। असो हे हीन दृष्टांत । आकाश म्हणिजे केवळ भूत । तें भूत आणि अनंत । येक कैसे ।४९। वस्तुसी वर्णीच नसे । आकाश शामवर्ण असे । दोहींस साम्यता कैसे । करिती विचक्षण ।५०। श्रोते म्हणती कैंचें रूप । आकाश ठाईंचें अरूप। आकाश वस्तुच तद्रूप । भेद नाहीं ।५१। चहुं भूतांस नाश आहे । आकाश कैसें नासताहे। आकाशास न साहे । वर्ण वेक्ती विकार ।५२। आकाश अचळ दिसतें । त्याचें काये नासों पाहातें। पाहातां आमुचेनि मतें । आकाश शाश्वत । ५३। ऐसें ऐकोन वचन। वक्ता बोले प्रतिवचन। ऐका आतां लक्षण । आकाशाचें । ५४। आकाश तमापासून जालें । म्हणौन कामक्रोधें वेष्टिलें। अज्ञान सुन्यत्व बोलिलें । नाम तयाचें । ५५। अज्ञानें कामक्रोधादिक । मोहो भये आणी शोक । हा अज्ञानाचा विवेक । आकाशागुणें । ५६।

| नास्तिक नकारवचन । तेंचि सुन्याचें लक्षण। |
|--|
| तयास म्हणती ह्रदयसुन्य । अज्ञान प्राणी |
| आकाश स्तब्धपणें सुन्य । सन्य म्हणिजे तें अज्ञान । |
| अज्ञान म्हणिजे कठिण । रूप तयाचें ।५८। |
| कठिण सुन्य विकारवंत । तयास कैसें म्हणावें संत । |
| मनास वाट हे तद्वत । आहाच दृष्टी । ५२। |
| अज्ञान कालवलें आकाशीं । तया कर्दमा जान नामी । |
| म्हणोनियां आकाशासी । नाश आहे ।६०। |
| तैसें आकाश आणि स्वरूप । पाहातां वाटती येकरूप। |
| परा दाहामधे विक्षेप । सुन्यत्वाचा ।६१। |
| आहाच पाहातां कल्पनेसी । सारिखेंच वाटे निश्चयेंसीं । |
| परी आकाश स्वरूपासी । भेद आहे ।६२। |
| उन्मनी आणि सुषुप्ति अवस्ता । सारिखेंच वाटे तत्वता । |
| परी विवंचून पाहों जातां। भेद आहे ।६३। |
| खोटें खऱ्यासारिखें भाविती । परी परीक्षवंत निवडिती । |
| कां कुरंगें देखोन भुलती । मृगजळासी । ६४। |
| आतां असो हा दृष्टांत । बोलिला कळाया संकेत । |
| प्रमाणित क्षत्र अस्ति क्षत्र के निवास |
| |
| आकाश वेगळेपणें पाहावें । स्वरूपीं स्वरूपचि व्हावें । |
| वस्तुचें पाहाणें स्वभावें । ऐसें असे ।६६। |
| येथें आशंका फिटली। संदेहवृत्ती मावळली। |
| भिन्नपणें नवचे अनुभवली । स्वरूपस्थिती । ६७। |
| आकाश अनुभवा येतें । स्वरूप अनुभवापरतें । |
| म्हणोनिया आकाशातें । साम्यता न घडे ।६८। |

दुग्धासारिखा जळांश । निवडूं जाणती राजहंस । तैसें स्वरूप आणी आकाश । संत जाणती । ६९। सकळ माया गथागोवी । संतसंगे हे उगवावी । पाविजे मोक्षाची पदवी । सत्समागमें ।७०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'स्थूळपंचमहाभूतेंस्वरूपाकाश-भेदोनाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक ८ : समास ६

॥ श्रीराम ॥

श्रोता विनवी वक्तयासी । सत्संगाची महिमा कैसी । मोक्ष लाभे कितां दिवसीं । हें मज निरोपावें 181 थरितां साधूची संगती । कितां दिवसां होते मुक्ती । हा निश्चय कृपामूर्ती । मज दीनास करावा । २ । मुक्ती लाभे तत्क्षणीं । विश्वासतां निरूपणीं । दुश्चीतपणें हानी । होतसे 131 सुचितपणें दुश्चीत । मन होतें अकस्मात । त्यास करावें निवांत । कोणे परीं मनाच्या तोडून वोढी । श्रवणीं बैसावें आवडी । सावधपणें घडीनें घडी । काळ सार्थक करावा । ५। अर्थप्रमेय ग्रंथांतरीं । शोधून घ्यावें अभ्यांतरीं। दुश्चीतपण आलें तरी । पुन्हां श्रवण करावें । ६ ।

| अर्थांतर पाहिल्यावीण । उगेंचि करी जो श्रवण। |
|--|
| तो श्रोता चल्हे प्राच्या । |
| तो श्रोता नव्हे पाषाण । मनुष्यवेषें । ७। |
| येथें श्रोते मानितील सीण । आम्हांस केलें पाषाण। |
| तरी पाषाणाचें लक्षण। सावध ऐका |
| वांकुडा तिकडा फोडिला । पाषाण घडून नीट केला । |
| उर्गर पळला पाहिला । तरी तो तैसान्ति असे |
| टाकान खपली फोडिली । ते माग्रती उपनी उपनी |
| मनुष्याची कुबुद्धि झाडिली । तरी ते पुन्हा लागे ।१०। |
| सांगतां अवगुण गेला। पुन्हा मागुता जडला। |
| WIND THE PROPERTY OF THE PROPE |
| ज्याचा अवगण नानेन |
| ज्याचा अवगुण झडेना । तो पाषाणाहून उणा । पाषाण आगळा जाणा । कोटिगुणें ।१२। |
| कोटियमें केरम |
| कोटिगुणें कैसा पाषाण । त्याचेंहि ऐका लक्षण। |
| श्रोतीं करावें श्रवण । सावध होउनी । १३। |
| माणीक मोतीं प्रवाळ। पाचि वैडूर्य वज्रनीळ। |
| गोमेदमणी परिस केवळ । पाषाण बोलिजे ।१४। |
| याहिवगळे बहुत । सूर्यकांत सोक्टरं |
| नाना माहर सप्राचत । औषधाकारणें । १६। |
| थाहवगळ पाषाण भले। नाना नीर्जी 👈 —— |
| वापा कूप संख्वा जाले । हरिहरमर्ती । १६। |
| थाचा पाहाता विचार । पाषाणानेने |
| मधुन्य त कार्य पामर । पाषाणाचळें १०७। |
| तरी तो ऐसा नव्हे पाषाण । जो आफिर के |
| तयासारिखा देह जाण । दुश्चीत अभक्तांचा ।१८। |
| १ ५७ ता अभक्ताचा । १८। |

| आतां असो हें बोलणें। | घात होतो दुश्चीतपणें। |
|----------------------------|---------------------------|
| | प्रपंच ना परमार्थ । १९। |
| दुश्रीतपणें कार्य नासे। | दुश्चीतपणें चिंता वसे। |
| दुश्रीतपणें स्मरण नसे । | क्षण येक पाहातां ।२०। |
| दुश्चीतपणें शत्रुजिणें। | दुश्चीतपणें जन्ममरणें। |
| दुश्चीतपणाचेनि गुणें। | हानी होये । २१। |
| दुश्रीतपणें नव्हे साधन | दुश्चीतपणें न घडे भजन। |
| दुश्चीतपणे नव्हे ज्ञान | साधकांसी । २२। |
| दुश्चीतपणें नव्हे निश्चयो। | दुश्चीतपणें न घडे जयो। |
| दुश्रीतपणें होये क्षयो | आपुल्या स्वहिताचा । २३। |
| दुश्चीतपणें न घडे श्रवण | दुश्रीतपणें न घडे विवरण। |
| | हातीचें जाये । २४। |
| दुश्रीत बैसलाचि दिसे | परी तो असतचि नसे। |
| चंचळ चक्रीं पडिलें असे | मानस तयाचें । २५। |
| वेडें पिशाच्य निरंतर | । अंध मुके आणी बधिर। |
| तसा जाणावा संसार | दुश्चीत प्राणियांचा । २६। |
| सावध असोन उमजेना | श्रवण असोन ऐकेना। |
| शान असोन कळेना | सारासारविचार । २७। |
| ऐसा जो दुश्चीत आळसी | । परलोक कैंचा त्यासी। |
| जयाचे जिवीं अहर्निशीं | आळस वसे । २८। |
| दुश्चीतपणापासूनि सुटला | तरी तो सर्वेच आळस आला । |
| अळिसाहातीं प्राणीयांला | उसंतचि नाहीं । २९। |
| आळसें राहिला विचार | । आळसें बडाला आचार । |
| आळसें नव्हे पाठांतर | । कांहीं केल्यां ।३०। |

| आळसें घडेना श्रवण । आळसें नव्हे निरूपण। | |
|---|--------------------------|
| आळसें परमार्थाची खूण । मळिण जाली | 381 |
| आळसें नित्यनेम राहिला । आळसें अभ्यास बडाला । | |
| 3119411 | 3 7 1 |
| आळसें गेली धारणा धृती । आळसें मळिण जाली वत्ती । | |
| आळसें विवेकाची गती। मंद जाली | 331 |
| आळसें निद्रा वाढली । आळसें वासना विस्तारली । | |
| आळसें सुन्याकार जाली । सद्बुद्धि निश्चयाची | 381 |
| दुश्चीतपणासवें आळस । आळसें निद्राविळास । | |
| Carlagani da | 341 |
| निद्रा आळस दुश्चीतपण । हेंचि मूर्खांचें लक्षण । | |
| | |
| यणकरिता निरूपण । उमजेचिना | 381 |
| हें तिन्हीं लक्षणें जेथें। विवेक कैंचा असेल तेथें। | - |
| हें तिन्हीं लक्षणें जेथें। विवेक कैंचा असेल तेथें। | - |
| हें तिन्हीं लक्षणें जेथें। विवेक कैंचा असेल तेथें। अज्ञानास यापरतें। सुखचि नाहीं। क्षुघा लागतांच जेविला। जेऊन उठतां आळस आला। | 301 |
| हें तिन्हीं लक्षणें जेथें। विवेक कैंचा असेल तेथें। अज्ञानास यापरतें। सुखचि नाहीं। शुधा लागतांच जेविला। जेऊन उठतां आळस आला। | 301 |
| हें तिन्हीं लक्षणें जेथें। विवेक कैंचा असेल तेथें। अज्ञानास यापरतें। सुखचि नाहीं। शुधा लागतांच जेविला। जेऊन उठतां आळस आला। आळस येतां निजेला। सावकास। निजोन उठतांच दुश्चीत। कदा नाहीं सावचित। | 301 301 |
| हें तिन्हीं लक्षणें जेथें। विवेक कैंचा असेल तेथें। अज्ञानास यापरतें। सुखचि नाहीं । क्षुघा लागतांच जेविला। जेऊन उठतां आळस आला। आळस येतां निजेला। सावकास । निजोन उठतांच दुश्चीत। कदा नाहीं सावचित। | 301 301 |
| हें तिन्हीं लक्षणें जेथें। विवेक कैंचा असेल तेथें। अज्ञानास यापरतें। सुखिच नाहीं। श्रुधा लागतांच जेविला। जेऊन उठतां आळस आला। आळस येतां निजेला। सावकास । निजोन उठतांच दुश्चीत। कदा नाहीं सावचित। तेथें कैचें आत्मिहत। निरूपणीं। मर्कटापासीं दिल्हें रत्न। पिशाच्याहातीं निधान। | 301 301 |
| हें तिन्हीं लक्षणें जेथें। विवेक कैंचा असेल तेथें। अज्ञानास यापरतें। सुखचि नाहीं । श्रुष्टा लागतांच जेविला। जेऊन उठतां आळस आला। आळस येतां निजेला। सावकास । निजोन उठतांच दुश्चीत। कदा नाहीं सावचित। तेथें कैचें आत्महित। निरूपणीं | 301 301 |
| हें तिन्हीं लक्षणें जेथें। विवेक कैंचा असेल तेथें। अज्ञानास यापरतें। सुखिच नाहीं । क्षुष्या लागतांच जेविला। जेऊन उठतां आळस आला। आळस येतां निजेला। सावकास । निजोन उठतांच दुश्चीत। कदा नाहीं साविचत। तेथें कैचें आत्मिहत। निरूपणीं । मर्कटापासीं दिल्हें रत्न। पिशाच्याहातीं निधान। दुश्चीतापुढें निरूपण। तयापरी होये । आशंकेची कोण गती। | 391 301 301 |
| हें तिन्हीं लक्षणें जेथें। विवेक कैंचा असेल तेथें। अज्ञानास यापरतें। सुखिच नाहीं श्रुधा लागतांच जेविला। जेऊन उठतां आळस आला। आळस येतां निजेला। सावकास निजोन उठतांच दुश्चीत। कदा नाहीं सावचित। तेथें कैचें आत्महित। निरूपणीं मर्कटापासीं दिल्हें रत्न। पिशाच्याहातीं निधान। दुश्चीतापुढें निरूपण। तयापरी होये आतां असो हे उपपत्ती। आशंकेची कोण गती। कितां दिवसां होते मुक्ती। सज्जनाचेनि संगें | 391 301 301 301 |
| हें तिन्हीं लक्षणें जेथें। विवेक कैंचा असेल तेथें। अज्ञानास यापरतें। सुखिच नाहीं शुधा लागतांच जेविला। जेऊन उठतां आळस आला। आळस येतां निजेला। सावकास निजोन उठतांच दुश्चीत। कदा नाहीं साविचत। तेथें कैचें आत्महित। निरूपणीं मर्कटापासीं दिल्हें रत्न। पिशाच्याहातीं निधान। दुश्चीतापुढें निरूपण। तयापरी होये आतां असो हे उपपत्ती। आशंकेची कोण गती। कितां दिवसां होते मुक्ती। सज्जनाचेनि संगें ऐका याचें प्रत्योत्तर। कथेसि व्हावें निरोत्तर। | 391 301 301 301 |

| लोहो परीसेसीं लागला । थेंबुटा सागरीं मिळाला । |
|--|
| गंगे सरिते संगम जाला । तत्क्षणीं ।४३। |
| सावध साक्षपी आणी दक्ष । तयास तत्काळचि मोक्ष । |
| इतरांस तें अलक्ष । लक्षिलें नवचे । ४४। |
| येथें शिष्यप्रज्ञाच केवळ । प्रज्ञावंतां नलगे वेळ । |
| अनन्यास तत्काळ । मोक्ष लाभे ।४५। |
| प्रज्ञावंत आणी अनन्य । तयास नलगे येक क्षण । |
| अनन्य भावार्थेविण । प्रज्ञा खोटी ।४६। |
| प्रज्ञेविण अर्थ न कळे । विश्वासेविण वस्तु ना कळे । |
| प्रज्ञाविश्वासें गळे । देहाभिमान । ४७। |
| देहाभिमानाचे अंतीं । सहजचि वस्तुप्राप्ती । |
| सत्संगें सद्गती । विलंबचि नाहीं । ४८। |
| सावध साक्षपी विशेष । प्रज्ञावंत आणी विश्वास । |
| तयास साधनीं सायास । करणेंचि नलगे ।४९। |
| इतर भाविक साबडे । तयांसिह साधनें मोक्ष जोडे । |
| साधुसंगें तत्काळ, उडे । विवेकदृष्टी ।५०। |
| परी तें साधन मोडूं नये । निरूपणाचा उपाये । |
| निरूपणें लागे सोये । सर्वत्रांसी । ५१। |
| आतां मोक्ष आहे कैसा । कैसी स्वरूपाची दशा। |
| त्याचे प्राप्तीचा भर्वसा । सत्संगें केवी ।५२। |
| ऐसें निरूपण प्रांजळ । पढें बोलिलें असे सकळ । |
| श्रोतीं होऊनियां निश्चळ । अवधान द्यावें ।५३। |

अवगुण त्यागावयाकारणें । न्यायनिष्ठुर लागे बोलणें। श्रोतीं कोप न धरणें । ऐसिया वचनाचा । ५४।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'दुश्चीतनिरूपणनाम' समास सहावा समाप्त.

> दशक ८ : समास ७ मोक्षलक्षण

> > ॥ श्रीराम ॥

मागां श्रोतयांचा पक्ष । कितां दिवसां होतो मोक्ष । तेचि कथा श्रोते दक्ष । होऊन ऐका । १। मोक्षास कैसें जाणावें । मोक्ष कोणास हाणावें । संतसंगें पावावें । मोक्षास कैसें । २ । तरी बद्ध म्हणिजे बांधला । आणी मोक्ष म्हणिजे मोकळा जाला । तो संतसंगें कैसा लाधला । तेंहि ऐका 131 प्राणी संकल्पें बांधला । जीवपणें बद्ध जाला । तो विवेकें मुक्त केला । साधुजनीं 181 मी जीव ऐसा संकल्प। दृढ धरितां गेले कल्प। तेणें प्राणी जाला अल्प । देहबुद्धीचा 141 मी जीव मज बंधन । मज आहे जन्ममरण । केल्या कर्माचें फळ आपण । भोगीन आतां । ६ । पापाचें फळ तें दुख । आणी पुण्याचें फळ तें सुख । पापपुण्य अवश्यक । भोगणे लागे । ७ ।

| पापपुण्यभोग सुटेना । आणी गर्भवासहि तुटेना । |
|---|
| ऐसी जयाची कल्पना। दृढ जाली । ८। |
| तया नांव बांधला । जीवपणें बद्ध जाला । |
| जैसा स्वयें बांधोन कोसला । मृत्य पावे । ९ । |
| तैसा प्राणी तो अज्ञान । नेणें भगवंताचें ज्ञान । |
| ह्मणे माझें जन्ममरण। सुटेचिना ।१०। |
| आतां कांहीं दान करूं । पुढिल्या जन्मास आधारु । |
| तेणें सुखरूप संसारु । होईल माझा । ११। |
| पूर्वीं दान नाहीं केलें। ह्यणोन दिरद्र प्राप्त जालें। |
| आतां तरी कांहीं केलें । पाहिजे कीं ।१२। |
| म्हणौनी दिलें वस्त्र जुनें । आणी येक तांब्र नाणें। |
| म्हणे आतां कोटिगुणें । पावेन पुढें । १३। |
| कुशावर्ती कुरुक्षेत्रीं । महिमा ऐकोन दान करी । |
| आशा धरिली अभ्यांतरीं । कोटिगुणांची ।१४। |
| रुका आडका दान केला। अतितास दुकडा घातला। |
| ह्मणे माझा ढीग जाला । कोटि टुकड्यांचा ।१५। |
| तो मी खाईन पुढिलिये जन्मीं । ऐसें कल्पी अंतर्यामीं । |
| वासना गुंतली जन्मकर्मी । प्राणीयांची ।१६। |
| आतां मी जें देईन । तें पुढिले जन्मीं पावेन । |
| ऐसें कल्पी तो अज्ञान । बद्ध जाणावा । १७। |
| बहुतां जन्मांचे अंतीं । होये नरदेहाची प्राप्ती । |
| येथें न होतां ज्ञानें सद्गती । गर्भवास चुकेना । १८। |
| गर्भवास नरदेहीं घड़े। ऐसें हें सर्वथा न घड़े। |
| अकस्मात भोगणें पड़े। पुन्हा नीच योनी |

ऐसा निश्चयो शास्त्रांतरीं । बहुतीं केला बहुतांपरीं। नरदेह संसारीं । परम दुल्लभ असे ।२०। पापपुण्य समता घडे । तरीच नरदेह जोडे । येरवीं हा जन्म न घडे । हें व्यासवचन भागवतीं । २१। नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम्। मयानुकूलेन नभस्वतेरितं पुमान्भवाब्धि न तरेत्स आत्महा ॥ नरदेह दुल्लभ । अल्प संकल्पाचा लाभ । गुरु कर्णधारी स्वयंभ । सुख पाववी । २२। देव अनुकूळ नव्हे जया । स्वयें पापी तो प्राणीया। भवाब्धी न तरवे तया । आत्महत्यारा बोलिजे । २३। ज्ञानेंविण प्राणीयांसी । जन्ममृत्य लक्ष चौऱ्यासी । तितुक्या आत्महत्या त्यासी । ह्यणौन आत्महत्यारा । २४। नरदेहीं ज्ञानेंविण । कदा न चुके जन्ममरण । भोगणें लागती दारुण । नाना नीच योनी । २५। रीस मर्कट श्वान सूकर । अश्व वृषभ हौसा खर। काक कुर्कुट जंबुक मार्जर । सरड बेडुक मक्षिका । २६। इत्यादिक नीच योनी । ज्ञान नस्तां भोगणें जनीं । आशा धरी मूर्ख प्राणी । पुढिलिया जन्माची । २७। हा नरदेह पडतां । तोचि पाविजे मागुतां । ऐसा विश्वास धरितां । लाज नाहीं । २८। कोण पुण्याचा संग्रहो । जे पुन्हां पाविजे नरदेहो । दुराशा धरिली पाहो । पुढिलिया जन्माची । २९।

| ऐसे मूर्ख अज्ञान जन। केलें संकल्पें बंधन। |
|---|
| शत्रू आपणासि आपण । होऊन ठेला ।३०। |
| आत्मैव ह्यात्मनो बंधुरात्मैव रिपुरात्मन: । |
| ऐसें संकल्पाचे बंधन । संतसंगे तुटे जाण। |
| ऐक तयाचें लक्षण । सांगिजेल ।३१। |
| पांचा भूतांचें शरीर । निर्माण जालें सचराचर । |
| प्रकृतिस्वभावें जगदाकार। वर्तीं लागे ।३२। |
| देह अवस्ता अभिमान । स्थानें भोग मात्रा रागा । |
| शक्ती आदिकरून लक्षण । चौपुटी तत्वांचें । ३३। |
| ऐसी पिंड ब्रह्मांड रचना । विस्तारें वाढली कलाना । |
| निर्धारितां तत्वज्ञाना । मतें भांबावलीं । ३४। |
| नाना मतीं नाना भेद । भेदें वाढती वेवाट । |
| परी तो ऐक्यतेचा संवाद। साधु जाणती |
| तया संवादाचें लक्षण । पंचभूतिक देह जाण । |
| त्या देहामध्यें कारण। आत्मा वोळखावा । ३६। |
| देह अंती नासीन जाये। त्यास आत्मा ह्यणों नये। |
| नाना तत्वांचा समुदाये । देहामध्यें आला |
| अतःकर्ण प्राणादिक । विषये इंद्रियें त्याक । |
| हा सूक्ष्माचा विवेक । बोलिला शास्त्रीं |
| यता सूक्ष्माची शुद्धी । भिन्न अंत:करण मन बन्दी । |
| नाना तत्वाचे उपाधी । वेगळा आत्मा । ३०। |
| स्थूळ सूक्ष्म कारण । माहाकारण विराट हिराएर । |
| अव्याकृत मूळप्रकृति जाण । ऐसे अष्टदेह ।४०। |

| च्यारी पिंडी च्यारी बह्यांडी | । ऐसी अष्टदेहाची प्रौढी। |
|------------------------------|-------------------------------|
| प्रकृतिपुरुषांची वाढी | 100 |
| ऐसें तत्वांनें क्या | । दशदेह बोलिजे । ४१। |
| कार्य कर्ना | । आत्मा साक्षी विलक्षण। |
| कारण कारण | । दृश्य तयाचें । ४३। |
| जावाशव पड ब्रह्मांड | । मारोशिक्वीने 🛨 |
| र सागता अस उदंड | । परी आत्मा तो वेगळा |
| पाहा जाता आत्मे च्यारी | । त्यांने ळणण अन्य |
| हें जाणोनि अभ्यांतरीं | । सदढ धरावें |
| यक जीवात्मा दसरा शिवात्मा | । विस्तार परम्म - 🔾 С |
| चौथा जाणिजे निर्मलात्मा | । ऐसे च्यारी आत्मे । ४५। |
| भेट उंच जीन क्या | । एस च्यारा आत्म । ४५। |
| येविषीं दृष्टांतसंमती | । परी च्यारी येकचि असती । |
| | । सावध ऐका ।४६। |
| धटाकाश मठाकाश | । महदाकाश चिदाकाश। |
| अवघे मिळोन आकाश | |
| तैसा जीवात्मा आणी शिवात्मा | । परमात्मा आणी निर्मळात्मा । |
| अवघा मिळोन आत्मा | । येकचि असे ।४८। |
| घटीं व्यापक जें आकाश | । तया नांव घटाकाश । |
| पिंडीं व्यापक ब्रह्मांश | । त्यास जीवात्मा बोलिजे ।४९। |
| मठीं व्यापक जें आकाण | । तया नांव मठाकाश । |
| तैसा बहांडी जो अलांक | । तथा नाव मठाकाश। |
| | । त्यास शिवात्मा बोलिजे ।५०। |
| मठाबाहेरील आकाश | । तया नांव महदाकाश । |
| म्लाडाबाहराल ब्रह्माश | । त्यास परमात्मा बोलिजे । ५१। |
| उपाधावगळ आकाण | । तया जांस कियाना |
| तैसा निर्मळात्मा परेश | । तो उपाधीवेगळा । ५२। |

| | ं आकाश अभिन्न। असे ।५३। |
|--|------------------------------------|
| त्याची वर्णावया थोरी । शेष स | त्मा निरंतरीं। मर्थ नव्हे । ५४। |
| उपाधी शोधितां, अभिन्न । मुळींच | ii नाहीं जीवपण। आहे ।५५। |
| जीवपणें येकदेसी । अहंक विवेक पाहातां प्राणीयांसी । जन्म वै | र्मचा ।५६। |
| जन्ममृत्यापासून सुटला । या नांव तत्वें शोधितां पावला । तत्वतां | वस्तु । ६ ७ । |
| तेचि वस्तु ते आपण । हें मा साधु करिती निरूपण । आपुले | न मखें । १८८१ |
| जेचि क्षणीं अनुप्रह केला । तेचि बंधन कांहीं आत्मयाला । बोलीं आतां आणंका फिरकी । चेने | चे नये |
| आतां आशंका फिटली । संदेहत् संतसंगें तत्काळ जाली । मोक्षप स्वप्नामधें जो बांधला । तो जा | दवी । ६० । |
| अज्ञाननिसीचा अंती प्रांकर | ाप्ती ।६१। |
| तोडावया स्वप्नबंधन । नलगे | ज्ञ मोक्षाची ।६२। |
| तैसा संकल्धे बांशका की | च नये ।६३। |
| विवेक पाहातां वाव । बंधन | होये । ६४। |

विवेक पाहित्याविण । जो जो उपाव तो तो सीण । विवेक पाहातां आपण । आत्माच असे ।६५। आत्मयाचा ठाईं कांहीं । बद्ध मोक्ष दोनी नाहीं। जन्ममृत्य हें सर्विहि । आत्मत्वीं न घडे ।६६।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'मोक्षलक्षणनाम' समास सातवा समाप्त.

दशक ८ : समास ८ आत्मदर्शन

॥ श्रीराम ॥

मागां जालें निरूपण । परमात्मा तो तूंचि जाण ।
तया परमात्मयाचें लक्षण । तें हें ऐसें असे । १ ।
जन्म नाहीं मृत्य नाहीं । येणें नाहीं जाणें नाही ।
बद्ध मोक्ष दोनी नाहीं । परमात्मयासी । १ ।
परमात्मा निर्गुण निराकार । परमात्मा अनंत अपार ।
परमात्मा नित्य निरंतर । जैसा तैसा । ३ ।
परमात्मा सर्वांस व्यापक । परमात्मा अनेकीं येक ।
परमात्मा सर्वांस व्यापक । परमात्मा अनेकीं येक ।
परमात्मयाचा विवेक । अतक्र्य आहे । ४ ।
ऐसी परमात्मयाची स्थिती । बोलताती वेद श्रुती ।
परमात्मा पाविजे भक्तीं । येथें संशय नाहीं । ५ ।
तये भक्तीचें लक्षण । भक्ती नविवधा भजन ।
नविवधा भजनें पावन । बहु भक्त जाले । ६ ।

| तया नवविद्यामध्यें सार । आत्मनिवेदन थोर । |
|---|
| तयेचा करावा विचार । स्वानुभवें स्वयें । ७ । |
| आपुलिया स्वानुभवें । आपणास निवेदावें । |
| आत्मनिवेदन जाणावें । ऐसें असे । ८। |
| महत्यूजेचा अंतीं । देवास मस्तक वाहाती । |
| तैसी आहे निकट भक्ती । आत्मनिवेदनाची । ९ । |
| आपणांस निवेदिती । ऐसे भक्त थोडे असती । |
| तयांस परमात्मा मुक्ती । तत्काळ देतो ।१०। |
| आपणास कैसें निवेदावें । कोठें जाऊन पडावें। |
| किंवा मस्तक तोडावें । देवापुढें । ११। |
| ऐसें ऐकोन बोलणें। वक्ता वदे सर्वज्ञपणें। |
| श्रोतां सावधान होणें । येकात्र चित्तें ।१२। |
| आत्मनिवेदनाचें लक्षण । आधीं पाहावें मी कोण । |
| मग परमात्मा निर्गुण । तो वोळखावा । १३। |
| देवाभक्ताचें शोधन । करितां होतें आत्मनिवेदन । |
| देव आहे पुरातन । भक्त पाहे । १४। |
| देवास वोळखों जातां । तेथें जाली तद्रुपता । |
| देवभक्तविभक्तता । मुळींच नाहीं ।१५। |
| विभक्त नाहीं म्हणोन भक्त । बंद्धन नाहीं म्हणोनि मुक्त । |
| अयुक्त नाहीं बोलणें युक्त । शास्त्राधारें । १६। |
| देवाभक्ताचें पाहातां मूळ । होये भेदाचें निर्मूळ । |
| येक परमात्मा सकळ। दृश्यावेगळा । १७। |
| तथासि होतां मिळणी । उरी नाहीं दुजेपणीं । |
| देव भक्त हे कडसणी । निरसोन गेली । १८। |

| आत्मनिवेदनाचे अंतीं । जें कां घडली अभेद भक्ती । |
|---|
| "प पाव सायाज्यमुक्ती । सत्य जाणावी |
| मा सतास शरण गेला । अदैत्रविकाणों चोशका |
| पर वर्गका कला । तरी होणार नाहीं । ३०। |
| नदी मिळाली सागरीं। ते निवडावी कोणेपरी। |
| लोहो सोनें होतां माघारी । काळिमा न ये ।२१। |
| तैसा भगवंतीं मिळाला । तो नवचे वेगळा केला । |
| देव भक्त आपण जाला । विभक्त नव्हे ।२२। |
| देव भक्त दोनी येक । ज्यासी कळला विवेक । साधुजनीं मोक्षदायेक । तोचि जाणावा । २३। |
| आतां असो हें बोलणें । देव पाहावा भक्तपणें। |
| तेणें त्याचें ऐश्चर्य बाणे । तत्काळ आंगीं । २४। |
| देहिच होऊन राहिजे। तेणें देहदुःख साहिजे। |
| देहातीत होतां पाविजे । परब्रह्म तें । २५। |
| देहातीत कैसें होणें। कैसें परबहा पाठातें। |
| एश्वयाचीं लक्षणें । कवण सांगिजे । २६। |
| ऐसें श्रोतां आक्षेपिलें । याचें उत्तर कार्य बोलिलें । |
| तीच आतां निरोपिलें । सावध ऐका । २७। |
| देहातीत वस्तु आहे। तें तं प्रत्वहा एउटे। |
| दहसग हा न साहे । तुज विदेहासी । २८। |
| ज्याची बुद्धी होये ऐसी । वेद वर्णिती तयासी । |
| 1 1 49 013 |
| ऐश्चर्य ऐसें तत्वतां। बाणे देहबुद्धि सोडितां। देह मी ऐसें भावितां। अद्योगती ।३०। |
| पर मा एस भावता । अद्योगती ।३०। |

| याकारणें साधुवचन । मानूं नये अप्रमाण । |
|---|
| मिथ्या मानितां दूषण । लागों पाहे ।३१। |
| साधुवचन तें कैसें। काये धरावें विश्वासें। |
| येक वेळ स्वामी ऐसें । मज निरोपावें । ३२। |
| सोहं आत्मा स्वानंदघन । अजन्मा तो तूंचि जाण। |
| हेंचि साधूचें वचन । सदृढ धरावें । ३३। |
| महावाक्याचें अंतर । तूंचि ब्रह्म निरंतर । |
| ऐसिया वचनाचा विसर। पडोंचि नये , ।३४। |
| देहासि होईल अंत । मग मी पावेन अनंत । |
| ऐसें बोलणें निभ्रांत । मानूंचि नये ।३५। |
| येक मूर्ख ऐसें म्हणती । माया नासेल कल्पांतीं। |
| मग आम्हांस ब्रह्मप्राप्ती । येरवीं नाहीं । ३६। |
| मायेसी होईल कल्पांत । अथवा देहासी येईल अंत । |
| तेव्हां पावेन निवांत । परब्रह्म मी ।३७। |
| हें बोलणें अप्रमाण । ऐसें नव्हे समाधान । समाधानाचें लक्षण । वेगळेंचि असे । ३८। |
| |
| शैन्य अवधेचि मरावें। मग राज्यपद प्राप्त व्हावें। |
| शैन्य अस्तांचि राज्य करावें । हें कळेना । ३९। |
| भाया असोनिच नाहीं। देह असतांच विदेही। |
| ऐसें समाधान कांहीं । वोळखावें ।४०। |
| परिवारा टेक्टरां राज्य केलें। |
| परिवारा देखतां राज्य गेलें । हें तों घडेना ।४१। |
| प्राप्त जालियां आत्मज्ञान । तैसें दृश्य देहभान । दृष्टीं पडतां समाधान । जाणार नाहीं ।४२। |
| पडता समाधान । जाणार नाही ।४२। |

¹⁷⁸⁰ Dasbodh (Marathi)_Section_12_1_Front

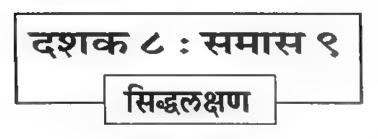
| मार्गी मुळी सर्पाकार । देखतां भये आलें थोर । |
|--|
| कळता तथीचा विचार । मग मारणें काये । ४३। |
| तैसी माया भयानक । विचार पाहातां माईक । |
| मग तयेचा धाक । कासया धरावा । ४४। |
| देखतां मृगजळाचे पर । म्हणे कैसा पातों गैलागर । |
| कळता तथाचा विचार । सांकडें कैंचें ।४५। |
| देखतां स्वप्न भयानक । स्वप्नीं वादे परम धाक । |
| जागृता आलीयां साशंक । कासया व्हावें ।४६। |
| तथापी माया कल्पनेसी दिसे । आपण कल्पनेतीत असे । |
| तथ उद्वेग काईसे । निर्विकल्पासी ।४७। |
| अंतीं मती तेचि गती। ऐसें सर्वत्र बोलती। |
| तुझा अंतीं तुझी प्राप्ती । सहजचि जाली ।४८। |
| चौदेहांचा अंत । आणी जन्म मुळाचा प्रांत । |
| अंतांप्रांतासी अलिप्त । तो तूं आत्मा ।४९। |
| जयासी ऐसी आहे मती । तयास ज्ञानें आत्मगती। |
| _ ^ _ |
| गती आणी अवगती। वेगळाचि तो ।५०। |
| मित खुंटली वेदांची । तेथें गती आणी अवगती कैंची । |
| मित खुंटली वेदांची । तेथें गती आणी अवगती कैंची । आत्मशास्त्रगुरुप्रचितीची । ऐक्यता आली । ५१। |
| मित खुंटली वेदांची । तेथें गती आणी अवगती कैंची । आत्मशास्त्रगुरुप्रचितीची । ऐक्यता आली । ५१। जीवपणाची फिटली भ्रांती । वस्तु आली आत्मप्रचिती । |
| मित खुंटली वेदांची । तेथें गती आणी अवगती कैंची । आत्मशास्त्रगुरुप्रचितीची । ऐक्यता आली । ५१। जीवपणाची फिटली भ्रांती । वस्तु आली आत्मप्रचिती । प्राणी पावला उत्तम गती । सद्गुरुबोधें ।५२। |
| मित खुंटली वेदांची । तेथें गती आणी अवगती कैंची । आत्मशास्त्रगुरुप्रचितीची । ऐक्यता आली । ५१। जीवपणाची फिटली भ्रांती । वस्तु आली आत्मप्रचिती । प्राणी पावला उत्तम गती । सद्गुरुबोधें ।५२। सद्गुरुबोध जेव्हां जाला । चौदेहांस अंत आला । |
| मित खुंटली वेदांची । तेथें गती आणी अवगती कैंची । आत्मशास्त्रगुरुप्रचितीची । ऐक्यता आली । ५१। जीवपणाची फिटली भ्रांती । वस्तु आली आत्मप्रचिती । प्राणी पावला उत्तम गती । सद्गुरुबोधें ।५२। सद्गुरुबोध जेव्हां जाला । चौंदेहांस अंत आला । तेणें निजध्यास लागला । सस्वरूपीं ।५३। |
| मित खुंटली वेदांची । तेथें गती आणी अवगती कैंची । आत्मशास्त्रगुरुप्रचितीची । ऐक्यता आली । ५१। जीवपणाची फिटली भ्रांती । वस्तु आली आत्मप्रचिती । प्राणी पावला उत्तम गती । सद्गुरुबोधें ।५२। सद्गुरुबोध जेव्हां जाला । चौदेहांस अंत आला । |

दृश्य पदार्थ वोसरतां । आवघा आत्माचि तत्वतां । नेहदून विचारें पाहातां । दृश्य मुळींच नाहीं ।५५। मिथ्या मिथ्यत्वें पाहिलें । मिथ्यापणें अनुभवा आलें । श्रोतीं पाहिजे ऐकिलें। या नांव मोक्ष ।५६। सद्गुरुवचन हृदईं धरी। तोचि मोक्षाचा अधिकारी। श्रवण मनन केलेंचि करी । अत्यादरें 1491 जेथें आटती दोनी पक्ष । तेथें लक्ष ना अलक्ष । या नांव जाणिजे मोक्ष । नेमस्त आत्मा ।५८। जेथें ध्यान धारणा सरे। कल्पना निर्विकल्पीं मुरे। केवळ ज्ञेप्तिमात्र उरे । सूक्ष्म ब्रह्म । ५९। भवमृगजळ आटलें । लटिकें बंघन सुटलें । अजन्यास मुक्त केलें । जन्मदुःखापासुनी ।६०। निःसंगाची संगव्याधी । विदेहाची देहबुद्धी । विवेकें तोडिली उपाधी । निः प्रपंचाची । ६ १ । अद्वैताचें तोडिलें द्वैत । येकांतास दिला येकांत । अनंतास दिला अंत । अनंताचा 1६२। जागृतीस चेवविलें । चेईऱ्यास सावध केलें । निजबोधास प्रबोधिलें । आत्मज्ञान 1631 अमृतास केलें अमर । मोक्षास मुक्तीचें घर । संयोगास निरंतर । योग केला ।६४। निर्गुणास निर्गुण केलें । सार्थकाचे सार्थक जालें। बहुतां दिवसां भेटलें । आपणासि आपण । ६ ५ । तुटला द्वैताचा पडदा। अभेदें तोडिलें भेदा। भूतपंचकाची बाधा । निरसोन गेली । ६६।

¹⁷⁸⁰ Dasbodh (Marathi)_Section_12_2_Front

जालें साधनाचें फळ । निश्चळास केलें निश्चळ ।
निर्मळाचा गेला मळ । विवेकबळें ।६७।
होतें सन्निध चुकलें । ज्याचें त्यास प्राप्त जालें ।
आपणा देखतां फिटलें । जन्मदुःख ।६८।
दुष्ट स्वप्नें जाजावला । ब्राह्मण नीच याती पावला ।
आपणासि आपण सांपडला । जागेपणें ।६९।
ऐसें जयास जालें ज्ञान । तथा पुरुषाचें लक्षण ।
पुढिले समासीं निरूपण । बोलिलें असे ।७०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आत्मदर्शननाम' समास आठवा समाप्त.



॥ श्रीराम ॥

अंतरीं गेलियां अमृत । बाह्य काया लखलखित । अंतरस्थिति बाणतां संत— । लक्षणें कैसीं । १ । जालें आत्मज्ञान बरवें । हे कैसेनि पां जाणावें । म्हणोनि बोलिलीं स्वभावें । साधुलक्षणें । २ । ऐक सिद्धांचें लक्षण । सिद्ध म्हणिजे स्वरूप जाण । तेथें पाहातां वेगळेपण । मुळींच नाहीं । ३ । स्वरूप होऊन राहिजे । तथा नांव सिद्ध बोलिजे । सिद्धस्वरूपींच साजे । सिद्धपण । ४ ।

| वेदशास्त्रीं जें प्रसिद्ध । सस्वरूप स्वतसिद्ध । |
|--|
| तयासिच बोलिजे सिद्ध । अन्यथा न घडे । ५ । |
| तथापी बोलों कांहीं येक । साधकास कळाया विवेक । |
| सिद्धलक्षणाचें कौतुक । तें हें ऐसें असे । ६ । |
| अंतरस्थित स्वरूप जाली । पुढें काया कैसी वर्तली । |
| जैसी स्वप्नींची नाथिली। स्वप्नरचना । ७। |
| तथापी सिद्धांचें लक्षण । कांहीं करूं निरूपण । |
| जेणें बाणे अंतर्खूण । परमार्थाची । ८ । |
| सदा स्वरूपानुसंधान । हें मुख्य साधूचें लक्षण। |
| जनीं असोन आपण । जनावेगळा । ९ । |
| स्वरूपीं दृष्टी पडतां । तुटोन गेली संसारचिंता । |
| पुढें लागली ममता। निरूपणाची ।१०। |
| हें साधकाचें लक्षण । परी सिद्धाआंगीं असे जाण । |
| सिद्धलक्षण साधकेंविण । बोलोंच नये ।११। |
| बाह्य साधकाचे परी । आणि स्वरूपाकार अंतरीं । |
| सिद्धलक्षण तें चतुरीं। जाणिजे ऐसें 1१२। |
| संदेहरहित साधन। तेंचि सिद्धांचें लक्षण। |
| अंतर्बाह्य समाधान । चळेना ऐसें ।१३। |
| अचळ जाली अंतरस्थिती । तेथें चळणास कैंची गती। |
| स्वरूपीं लागतां वृत्ती । स्वरूपिंच जाली ।१४। |
| मग तो चळतांच अचळ । चंचळपणें निश्चळ। |
| निश्चळ असोन चंचळ । देह त्याचा ।१५। |
| स्वरूपीं स्वरूपचि जाला । मग तो पडोनिच राहिला। |
| अथवा उठोनि पळाला । तरी चळेना ।१६। |

| येथें कारण अंतरस्थिती । अंतरींच पाहिजे निवृत्ती । |
|--|
| अंतर लागलें भगवंतीं । तोचि साधु । १७। |
| बाह्य भलतैसें असावें । परी अंतर स्वरूपीं लागावें। |
| लक्षणें दिसती स्वभावें। साधुआंगीं ।१८। |
| राजीं बैसतां अवलिळा । आंगीं बाणे राजकळा । |
| स्वरूपीं लागतां जिव्हाळा । लक्षणें बाणती ।१९। |
| येरव्हीं अभ्यास करितां । हातां न चढती सर्वथा। |
| स्वरूपीं राहावें तत्वतां । स्वरूप होऊनी ।२०। |
| अभ्यासाचा मुगुटमणी। वृत्ती राहावी निर्गुणीं। |
| संतसंगें निरूपणीं । स्थिती बाणे । २१। |
| ऐसीं लक्षणें बरवीं । स्वरूपाकारें अभ्यासावीं। |
| स्वरूप सोडितां गोसावी । भांबावती । २२। |
| आतां असो हें बोलणें । ऐका साधूचीं लक्षणें। |
| जेणें समाधान बाणे । साधकाआंगीं १२३। |
| स्वरूपीं भरतां कल्पना। तेथें कैची उरेल कामना। |
| म्हणौनियां साधुजना । कामचि नाहीं । २४। |
| किल्पला विषयो हातींचा जावा । तेणें गुणें क्रोध यावा। |
| साधुजनाचा अक्षै ठेवा । जाणार नाहीं ।२५। |
| म्हणोनि ते क्रोधरहित । जाणती स्वरूप संत । |
| नासिवंत हे पदार्थ । सांडुनियां । २६। |
| जेथें नाहीं दुसरी परी । क्रोध यावा कोणावरी । |
| क्रोधरहित सचराचरीं । साधुजन वर्तती । २७। |
| आपुला आपण स्वानंद । कोणावरी करावा मद । |
| याकारणें वादवेवाद । तुटोन गेला । २८। |

| साधु स्वरूप निर्विकार | 1 | तेथें कैंचा तिरस्कार | 1 |
|---------------------------|---|------------------------|------|
| आपला आपण मत्सर | I | काणावरा करावा | 1561 |
| साधु वस्तु अनायासें | | याकारणें मत्सर नसे | |
| मदमत्सराचें पिसें | 1 | साधुसी नाहीं | 1901 |
| साधु स्वरूप स्वयंभ | | तेथें कैंचा असेल दंभ | |
| जेथें द्वैताचा आरंभ | l | जालाच नाहीं | 1381 |
| जेणें दृश्य केलें विसंच | | तयास कैंचा हो प्रपंच | 1 |
| याकारणें नि:प्रपंच | 1 | साधु जाणावा | 1351 |
| अवघे ब्रह्मांड त्याचें घर | | | |
| मिथ्या जाणोन सत्वर | l | त्याग केला | 1331 |
| याकारणें लोभ नसे | | साधु सदा निर्लोभ असे | |
| जयाची वासना समरसे | 1 | शुद्धस्वरूपीं | 1381 |
| आपुला आपण आघवा | | | |
| म्हणोनि साधु तो जाणावा | 1 | शोकरहित | 1341 |
| दृश्य सांडून नासिवंत | | | |
| याकारणें शोकरहित | | | |
| शोकें दुखवावी वृत्ती | 1 | तरी ते जाहाली निवृत्ती | 1 |
| ह्मणौनि साधु आदिअंतीं | l | शोकरहित | 1391 |
| मोहें झळंबावें मन | 1 | तरी तें जाहालें उन्मन | 1 |
| याकारणें साधुजन | 1 | मोहातीत | 1361 |
| साधु वस्तु अद्वये | ī | तेथें कैंचें वाटेल भये | l |
| परब्रह्म तें निर्भये | 1 | तोचि साधु | 1381 |
| थाकारणें भयातीत | | साधु निर्भय निवांत | |
| | | ग्राध अनंतरुपी | |

| Hammer's |
|---|
| सत्यस्वरूपें अमर जाला । भये कैंचें वाटेल त्याला । |
| याकारणें साधुजनाला । भयेचि नाहीं ।४१। |
| जय नाहीं द्वंद्वभेद । आपला आपण अधेट । |
| तेथे कैंचा उठेल खेद । देहबुद्धीचा ।४२। |
| बुद्धीनें नेमिलें निर्गुणा। त्यास कोणीच नेईना। |
| थाकारण |
| आपण येकला ठाईंचा । स्वार्थ करावा कोणाचा । |
| देश्य नम्ता स्थालां । ——————— |
| साध अस्ति ने रेस अ |
| साधु आपणचि येक । तेथें कैंचा दुःखशोक। |
| दुजेविण अविवेक । येणार नाहीं ।४५। |
| आशा धरितां परमार्थाची । दुराशा तुटली स्वार्थाची । |
| म्हणान नराशता साधूची । वोळखण ।४६। |
| मृदपणें जैसें गगन । तैसें साधूचें लक्षण । |
| याकारणें साधुवचन । कठीण नाहीं ।४७। |
| स्वरूपाचा संयोगीं । स्वरूपचि जाला योगी। |
| याकारणें वीतरागी । निरंतर ।४८। |
| स्थिती बाणतां स्वरूपाची । चिंता सोडिली देहाची । |
| याकारणें होणाराची । चिंता नसे ।४९। |
| |
| स्वरूपीं लागतां बुद्धी । तुटे अवघी उपाधी । याकारणें निरोपाधी । साधुजन ।५०। |
| |
| साधु स्वरूपींच राहे। तेथें संगचि न साहे। |
| म्हणोनि साधु तो न पाहे। मानापमान ।५१। |
| अलक्षास लावी लक्ष । म्हणोन साधु परम दक्ष । |
| वोढूं जाणती कैपक्ष । परमार्थाचा । ५२। |
| |

| स्वरूपीं न साहे मळ । ह्यणौन साधु तो निर्मळ । |
|---|
| साधु स्वरूपचि केवळ । म्हणोनियां । ५३। |
| सकळ धर्मांमधें धर्म । स्वरूपीं राहाणें हा स्वधर्म । |
| हीच जाणिजे मुख्य वर्म । साधुलक्षणाचें । ५ ४ । |
| धरितां साधूची संगती । आपषाच कामे स्वाकारिक रे |
| स्वरूपस्थितीनें बाणती । लक्षणें आंगीं । ५५। |
| ऐसी साधूचीं लक्षणें । आंगीं लागानी कि |
| राष्ट्र स्वरूपा राहाणे । निरंतर |
| निरंतर स्वरूपीं राहातां । स्वरूपि -) ६२ |
| मग लक्षणें आंगीं बाणतां । वेळ नाहीं |
| स्वरूपीं गहिलां - |
| स्वरूपीं राहिल्यां मती । अवगुण अवधेचि सांडती । परंतु यासी सत्यंगनी । |
| William reserve |
| त्रकळ सृष्टीचा ठाउँ। |
| |
| कोणें स्थितीनें राहाती । कैसा अनुभव पाहाती। |
| रामदास राहाता । कैसा अनुभव घाटानी । |
| ं जववान हात |
| इति श्रीदासबोधे ग्रामणियाः |
| इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सिद्धलक्षणनाम' समास नववा गणा |
| समास नववा समाप्त. |

दशक ८: समास १०

सुन्यत्वनिर्शन

॥ श्रीराम ॥

| जनाचे अनुभव पुसतां । कळहो उठिला अवचिता | | | |
|---|---|----|---|
| हा कथाकल्लोळ श्रोतां । कौतुकें ऐकावा | ١ | 8 | I |
| येक म्हणती हा संसारु । करितां पाविजे पैलपारु | 1 | | |
| आपला नव्हे कीं जोजारु । जीव देवाचे | ı | 7 | 1 |
| येक म्हणती हें न घडे । लोभ येऊन आंगीं जडे | | | |
| पोटस्तें करणें घडे । सेवा कुटुंबाची | | Ę | ١ |
| येक म्हणती स्वभावें । संसार करावा सुखें नावें | | | |
| कांहीं दानपुण्य करावें । सद्गतीकारणें | | 8 | 1 |
| येक म्हणती संसार खोटा । वैराग्यें घ्यावा देशवटा | | | |
| येणें स्वर्गलोकींच्या वाटा । मोकळ्या होती | ł | 4 | 1 |
| येक म्हणती कोठें जावें । वेर्थची कासया हिंडावें | | | |
| आपुले आश्रमीं असावें । आश्रमधर्म करूनी | l | ह् | ١ |
| येक म्हणती कैंचा धर्म। अवघा होतसे अधर्म | | | |
| ये संसारीं नाना कर्म । करणें लागे | l | 9 | l |
| येक म्हणती बहुतांपरी । वासना असावी बरी | 1 | | |
| येणेंचि तरिजे संसारीं । अनायासें | | 6 | 1 |
| येक म्हणती कारण भाव । भावेंचि पाविजे देव | | | |
| येर हें अवधेंचि वाव । गथागोवी | | 8 | I |
| येक म्हणती विडिलें जीवीं । अवधीं देवचि मानावीं | | | |
| मायेबापें पूजित जावीं । येकाभावें | 1 | 90 | ŧ |

| येक म्हणती देवब्राह्मण । त्यांचें करावें पूजन । |
|---|
| मायेबाप नारायेण । विश्वजनाचा । ११। |
| येक म्हणती शास्त्र पाहावें । तेथें निरोपिलें देवें। |
| तेणें प्रमाणेंचि जावें । परलोकासी ।१२। |
| येक म्हणती अहो जना । शास्त्र पाहातां पुरवेना। |
| याकारणें साधुजना । शरण जावें । १३। |
| येक म्हणती सांडा गोठी । वायांचि करितां चाउटी । |
| सर्वांस कारण पोटीं । भूतदया असावी । १४। |
| येक म्हणती येकचि बरवें । आपुल्या आचारें असावें। |
| अंतकाळीं नाम घ्यावें । सर्वोत्तमाचें । १५। |
| येक म्हणती पुण्य असेल । तरीच नाम येईल । |
| नाहीं तरी भुली पडेल । अंतकाळीं । १६। |
| येक म्हणती जीत असावें । तंवचि सार्थक करावें। |
| येक म्हणती फिरावें । तीर्थाटण । १७। |
| येक म्हणती हें अटाटी । पाणीपाषाणाची भेटी। |
| चुबकुळ्या मारितां हिंपुटी । कासाविस व्हावें । १८। |
| येक म्हणती सांडी वाचाळी । अगाध महिमा भूमंडळीं। |
| दर्शनमात्रें होये होळी । माहापातकाची । १९। |
| येक म्हणती तीर्थ स्वभावें । कारण मन अवरावें। |
| येक म्हणती कीर्तन करावें । सावकास ।२०। |
| येक म्हणती योग बरवा । मख्य तोचि आधीं साधावा । |
| पहा अमरचि करावा । अकस्मात । २१। |
| थेक म्हणती ऐसे कार्य । काळवंचना करूं नये । |
| येक म्हणती घरावी सोये । भक्तिमार्गाची । २२। |

| येक म्हणती ज्ञान बरवें । येक म्हणती साधन करावें। |
|--|
| ACO SECULATION SAME AND A CONTRACT OF A CONT |
| रोक रूपा मुक्त असाव । निरंतर |
| येक म्हणती अनर्गळा । घरीं पापाचा कंटाळा । |
| वक म्हणता र मिकळा । मार्ग आमुचा । ३४। |
| थक म्हणतीं हें विशेष । कर्रुं नरी चिंदर केर |
| येक म्हणती सावकास । दुष्टसंग त्यागावा ।२५। |
| येक स्थानी कार्ने के |
| येक म्हणती ज्याचें खावें । त्या सन्मुखचि मरावें। |
| पावाव । मोक्षपद |
| थक म्हणता साडा गोठी । आधीं प्राहित्ने ने जेन्द्रे |
| पर्व कर्वा चाउटी । मान्य क |
| येक म्हणती पाउस असावा । मग सकळ योग बरवा। |
| कारण दुष्काळ न पडावा । म्हणिजे बरें । १८। |
| गेक कार्य - २०० |
| येक म्हणती तपोनिधी- । होतां, वोळती सकळ सिद्धी । |
| निया क्रिया र आधा । इद्रपद साधावें |
| वक म्हणता आगम पाहावा । वेवाल गाउँ |
| " dilan zar i tari o |
| येक म्हणती अधीरांच के अ |
| येक म्हणती अघोरमंत्र । तेणें होईजे स्वतंत्र । |
| गर्भ अवचा कळत्र । तिच वोळे |
| ता लागल सर्वे धर्म । नेकें अप |
| क्षाता कुकमे । तिच्या प्रते |
| नियं पर्वाता थक साधा |
| |
| येक म्हणती कर के |
| येक म्हणती बदु भैरव । तेणें पाविजे वैभव। |
| येक म्हणती झोटिंग सर्व । पुर्वितसे । ३४। |
| |

| येक म्हणती काळी कंकाळी। येक म्हणती भद्रकाळी। |
|--|
| येक म्हणती उचिष्ट चांडाळी । साहें करावी । ३५। |
| येक म्हणती विघ्नहर । येक म्हणती भोळा शंकर । |
| येक म्हणती सत्वर । पावे भगवती । ३६। |
| येक म्हणती मल्लारी। सत्वरचि सभाग्य करी। |
| येक म्हणती माहा बरी । भक्ति वेंकटेशाची ।३७। |
| येक म्हणती पूर्व ठेवा । येक म्हणती प्रेत्न करावा । |
| येक म्हणती भार घालावा । देवाचवरी ।३८। |
| येक म्हणती देव कैंचा । अंतचि पाहातो भल्यांचा । |
| येक म्हणती हा युगाचा । युगधर्म ।३९। |
| येक आश्चीर्य मानिती। येक विस्मयो करिती। |
| येक कंटाळोन म्हणती। काये होईल तें पाहावें १४०। |
| ऐसे प्रपंचिक जन। लक्षणें सांगतां गहन। |
| परंतु कांहींयेक चिन्ह। अल्पमात्र बोलिलें ।४१। |
| आतां असो हा स्वभाव । ज्ञात्यांचा कैसा अनुभव । |
| तोहि सांगिजेल सर्व। सावध ऐका ।४२। |
| येक म्हणती करावी भक्ती । श्रीहरी देईल सद्गती। येक म्हणती ब्रह्मप्राप्ती । कर्मीच होये । ४३। |
| |
| येक म्हणती भोग सुटेना । जन्ममरण हें तुटेना । येक म्हणती उर्मी नाना । अज्ञानाच्या ।४४। |
| येक म्हणती सर्व ब्रह्म । तेथें कैंचे क्रियाकर्म। |
| येक म्हणती हा अधर्म । बोलोचि नये ।४५। |
| येक म्हणती सर्व नासे । उरलें तेंचि ब्रह्म असे। |
| येक म्हणती ऐसें नसे । समाधान ।४६। |

| सर्व ब्रह्म केवळ ब्रह्म। दोनी पूर्वपक्षाचे भ्रम। |
|--|
| अनुभवाचें वेगळें वर्म । म्हणती येक । ४७। |
| येक म्हणती हैं न घड़े । अनर्वाच्य वस्त घड़े । |
| जें बोलतां मोन्य पडे । वेदशास्त्रांसी ।४८। |
| तंव श्रोता अनुवादला । म्हणे निश्चये कोण केला । |
| Medialia Stronger . — D. S. D. |
| अनुभवाला । उस कचा ।४१। |
| अनुभव देहीं वेगळाले । हें पूर्वींच बोलिलें। |
| आतां कांहीं येक केलें। नवचे कीं ।५०। |
| येक साक्षत्वें वर्तती । साक्षी वेगळाची म्हणती । |
| आपण द्रष्टा ऐसी स्थिती । स्वानुभवाची |
| दृश्यापासून द्रष्टा वेगळा । ऐसी अलिप्याणाची कर्या । |
| आपण साक्षत्वें निराळा। स्वानुभवें ।५२। |
| सकळ पदार्थ जाणतां । तो प्रदार्शान्य रूप |
| |
| येक ग्रेमें उत्पारकों । सहजीन जाली । ५३। |
| येक ऐसें स्वानुभवें। म्हणती साक्षत्वें वर्तावें। दृश्य असोनि वेगळें व्हावें। द्रष्टेपणें ।५४। |
| रेप असाम वर्गळ वहाव । द्रष्टपण |
| येक म्हणती नाहीं भेद । वस्तु ठाईंची अभेद । |
| ाप कचा मातमद । द्रष्टा आणिला । ५६। |
| अवधा साकरचि स्वधावें । वेशे कर उत्तर कि |
| रुप पाया स्वानुभव । अवधेचि बहा । । ६। |
| प्रपंच परब्रह्म अभेद । भेदवादी मानिती भेद । |
| |
| विधरलें वार किया विधरलें |
| विधुरलें तुप थिजलें तैसें निर्गुणचि गुणा आलें। तेथें कार्य लेगलें केने |
| नाज केल । देखामा |
| म्हणौनि द्रष्टा आणि दृश्य । अवधा येकचि जगदीश । द्रष्टेपणाचे |
| प्रष्टपणाच सायास । कासयासी ।५९। |
| The second secon |

| ब्रह्मचि आकारलें सर्व । ऐसा येकांचा अनुभव। |
|---|
| ऐसे हे दोनी स्वभाव । निरोपिले ।६०। |
| अवधा आत्मा आकारला । आपण भिन्न कैंचा उरला। |
| दुसरा अनुभव बोलिला । ऐसियापरी ।६१। |
| ऐक तिसरा अनभव । प्रयंच सारुजियां रार्ज । |
| काही नाहीं तोचि देव । ऐसें म्हणती ।६२। |
| दृश्य अवधें वेगळें केलें । केवळ अदृश्यनि उरलें। |
| ताच ब्रह्म अनुभविलें । म्हणती येक । ६३। |
| परी ते ब्रह्म म्हणों नये । उपायास्मानिका आपने । |
| सुन्यत्वास ब्रह्म काये। म्हणों येईल । ६४। |
| दृश्य अवधें वोलांडिलें । अदृश्य मुस्ति प्रार्थिकें । |
| ब्रह्म म्हणानि मुरडलें । तेथनिच मार्गे |
| इकडे दृश्य तिकडे देव । मध्यें मन्यत्याचा उपन |
| तयास मंद बुद्धीस्तव । प्राणी ब्रह्म ह्मणे ।६६। |
| रायास नाहीं वोळखिलें । मेतकाम मक्तें - |
| परी तें अवधें वेर्थ गेलें । गाना नेक्नां |
| तिसं सन्यत्व क्रिक्टिं जन । —)' |
| सुन्यत्वाचा अवधा भग । तदोन गेकर |
| |
| परा हा सूक्ष्म आडताळा । वारी विवेकें वेगळा । जैसें दुग्ध घेऊन जळा । राजहंस सांडी । ६ ९ । |
| आधीं दुष्य सोदिनें । उन्ह नाम निर्मा |
| आधीं दृश्य सोडिलें । मग सुन्यत्व वोलांडिलें । भूळमायेपरतें देखिलें । परब्रह्म |
| 7 |
| 4161 |
| भिन्नपर्णे । सुन्यत्वाचा । ७१। |
| भित्रपणें अनुभविलें । तयास सुन्य ऐसें बोलिलें । वस्तु लक्षितां अभिन्न जालें । पानिने अपनें |
| वस्तु लिक्षतां अभिन्न जालें । पाहिजे आधीं । ७२। |
| |

| वस्तु आपणचि होणें। ऐसें वस्तूचें पाहाणें। |
|---|
| भित्रपण । सन्यत्व लाधे |
| थाकारण सन्य कांद्री । गरवटा चेगार —े |
| र एकिन पहि। स्वानभव |
| आपण वस्तु सिद्धचि आहे । मन मी ऐसें कल्पूं नये। |
| ें अपया तीच आत्मा । । । । । । । । । । । । । । । । । । । |
| मन मी ऐसें नाथिलें। संतीं नाहीं निरोपिलें। मानावें कोगान्या कोनें। |
| मानावें कोणाच्या बोलें। मन मी ऐसें । ७६। संतवचनीं देवियां अपन कोण |
| संतवचनीं ठेवितां भाव । तोचि शुद्ध स्वानुभव । मनाचा तैसाच स्वभाव । आपण वस्त |
| |
| अपुला घेती अनुभव । तोचि आपण निरावेव । आपुला घेती अनुभव । विश्वजन |
| लाभा धन साधं गेले । वंद ने चेल्टे - ० |
| गर्य नाम्बर्धश्रेषा भागित्य । मानस्तान |
| तसे देहब्बि सोदितां । माध्यस्य - १ |
| अनुभवाची मुख्य वार्ता । ते ने केन्से |
| आपण वस्तु मळीं येक । ऐसा च्या ६० |
| यथून हा ज्ञानदशक । संपार्ण ज्यान |
| आत्मज्ञान निरोपिलें । येथामनीनें ने |
| भूगपूर्ण क्ष्मा केलें। प्रा टिन्ने कोनी |
| १८२। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सुन्यत्वनिर्शननाम' समास दहावा समाप्त.

दशक आठवा समाप्त

दशक नववा: गुणरूप

दशक ९ : समास १

॥ श्रीराम ॥

| | | | निराधार म्हणिजे काये। | | |
|----------------|--------------|-----------|--------------------------------|---|---|
| निर्विकल्प | म्हणिजे | काये । | मज निरोपावें । | १ | ı |
| | | | निराधार म्हणिजे आधार नाहीं। | | |
| निर्विकल्प म्ह | णिजे कल्पन | । नाहीं । | परब्रह्मासी | ? | 1 |
| निरामय | म्हणिजे | काये। | निराभास म्हणिजे काये। | | |
| निरावेव | म्हणिजे | काये । | मज निरोपावें। | 3 | 1 |
| | | | निराभास म्हणिजे भासचि नाहीं। | | |
| निरावेव म्ह | णिजे अवेव | नाहीं । | परब्रह्मासी । | 8 | 1 |
| निः प्रपंच | म्हणिजे | काये । | निःकळंक म्हणिजे काये। | | |
| निरोपाधी | म्हणिजे | काये । | मज निरोपावें | ų | l |
| | | | नि:कळंक म्हणिजे कळंक नाही । | | |
| निरोपाधी म | हणिजे उपार्ध | ी नाहीं । | परब्रह्मासी । | Ę | 1 |
| निरोपम्य | म्हणिजे | काये । | निरालंब म्हणिजे काये। | | |
| निरापेक्षा | म्हणिजे | काये । | मज निरोपावें । | 9 | 1 |
| निरोपम्य म् | रणिजे उपमा | नाहीं । | निरालंब म्हणिजे अवलंबन नाहीं । | | |
| निरापेक्षा म् | णिजे अपेक्ष | ा नाहीं । | • | 6 | 1 |
| निरंजन | म्हणिजे | कार्ये । | निरंतर म्हणिजे कार्ये। | | |
| निगुण | म्हणिजे | काये । | मज निरोपावें । | 9 | 1 |

| निरंजन म्हणिजे जनचि नाहीं । निरंतर म्हणिजे अंतर नाहीं । |
|--|
| रनगुण म्हाणज गुणचि नाहीं । परब्रह्मासी |
| निःसग म्हणिजे काये। निर्मल म्हणिजे कर्ये |
| महाणाज कार्य । मज निरोधातें । १०० |
| निः सग म्हणिजे संगचि नाहीं । विर्मल क्लिप्टे कर्क —ी |
| र राज्य कार्गज चळण नाही । परब्रह्मासी |
| निशब्द म्हणिजे काये। निर्होष प्रतिके |
| भारता महाणाज कार्य। मज निरोपातें ।००० |
| निशब्द म्हणिजे शब्दचि नाहीं । निर्दोष म्हणिजे दोषचि नाहीं । |
| निवृत्ती म्हणिजे वृत्तिच नाहीं । परब्रह्मासी । १४। |
| नि:काम म्हणिजे काये। निर्लेप म्हणिजे काये। नि:कर्म म्हणिजे काये। मज निरोपावें ।१५। |
| निःकाम म्हणिजे कामचि नाहीं । निलेंप म्हणिजे लेपचि नाहीं । |
| निःकर्म म्हणिजे कर्मचि नाहीं। परब्रह्मासी ।१६। |
| अनाम्य म्हणिजे काये । अजन्मा म्हणिजे कारो । |
| अत्रत्यक्ष म्हाणज कार्य । मज निरोपावें । १७। |
| अनाम्य म्हणिजे नामचि नाहीं । अजन्म स्ट्रिकि स्ट्रिके |
| अत्रत्यक्ष महाणाज प्रत्यक्ष नाहीं । परब्रह्म तें ।१८। |
| अगणीत म्हणिजे काये। अकर्तव्य म्हणिजे काये। अक्षै म्हणिजे काये। मज निरोपावें ।१९। |
| अगणीत म्हणिजे गणीत नाहीं । अकर्तव्य म्हणिजे कर्तव्यता नाहीं । अक्षे म्हणिजे कर्तव्यता नाहीं । |
| अक्षे म्हणिजे क्षयचि नाहीं । परब्रह्मासी ।२०। |
| अरूप म्हणिजे काये। अलक्ष म्हणिजे कारे। |
| अनंत म्हणिजे काये। मज निरोपावें । २१। |

| अरूप म्हणिजे रूपचि नाहीं । अलक्ष म्हणिजे लक्षत नाहीं । |
|---|
| अनंत म्हणिजे अंतचि नाहीं । परब्रह्मासी ।२२। |
| अपार म्हणिजे काये। अढळ म्हणिजे काये। अतक्यें म्हणिजे काये। मज निरोपावें । २३। |
| 1 / 4 / |
| अपार म्हणिजे पारचि नाहीं । अढळ म्हणिजे ढळचि नाहीं । |
| अतर्क्ये म्हणिजे तर्कत नाहीं । परब्रह्म तें । २४। |
| अद्वैत म्हणिजे काये। अदृश्य म्हणिजे काये। अच्युत म्हणिजे काये। मज निरोपावें । २५। |
| 1241 |
| अद्वैत म्हणिजे द्वैतचि नाहीं । अदृश्य म्हणिजे दृश्यचि नाहीं । अच्युत म्हणिजे चेवत नाहीं । परब्रह्म तें |
| |
| अछद म्हणिजे काये। अदाह्य म्हणिजे काये। |
| |
| अछेद म्हणिजे छेदेना । अदाह्य म्हणिजे जळेना । अक्लेद म्हणिजे कालवेना । परब्रह्म तें |
| परबद्धा विकास कालवना । परब्रह्म ते ।२८। |
| ्रेंत्रल म्हाणीज सकळापरते । तयास मानानां अस्तर्याः |
| है कळे अनुभवमतें । सद्गुरु केलियां । २९। |
| इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आशंकानाम' |
| समास पहिला समाप्त. |
| |

दशक ९: समास २

ब्रह्मनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

| जें जें कांहीं साकार दिसे । तें तें कल्पांतीं नासे । | | |
|--|-----|---|
| स्वरूप ते असतचि असे । सर्वकाळ | 8 | 1 |
| जे सकळांमध्यें सार । मिथ्या नत्हे तें सानार । | • | |
| ज का नित्य निरंतर । संचलें असे | 2 | 1 |
| ते भगवंताचे निजरूप । त्यासि बोलिजे स्वक्ता | • | • |
| थाहि वेगळी अमूप । नामें तयाचीं | 3 | 1 |
| त्यास नामाचा संकेत । कळावया हा ह्यांत । | · | |
| परा त स्वरूप नामातीत । असतिच असे । | ४ | ı |
| दृश्यासबाह्य संचलें। परी तें विश्वास चोरकें। | | |
| जवाळच नाहींसे जालें। असतिच कैसें। | Ų | ı |
| एसा ऐकोनियां देव । उठे ट्रांचा भारत । | | |
| नाहा जाता दिस सर्व । दृश्यचि आवधें । | Ę | į |
| दृष्टाचा विषयो दुश्य । तोचि जाकियां राज्यस । | | |
| राज दृष्टा पाव सतीष । परी तें देखणें नक । | 9 | I |
| दृष्टास दिस तें नासे। येतदिष्ठर्दं शक्ति असे। | | |
| ए जान ज दृष्टास दिसे । ते स्वरूप नक्ते । | 6 | I |
| स्वरूप तें निराभास । आणी दृश्य भासलें साभास । | | |
| भासास बोलिला नास । वेदांतशास्त्रीं । | 9 | 1 |
| आणी पाहातां दृश्यचि भासे । वस्तु दृश्यावेगळी असे । स्वानुभवें पाहातां दिसे । दृश्यासबाह्य | 0.4 | |
| "एस द्रियासबाह्य | 80 | 1 |

| जें निराभास निर्गुण । त्याची काये सांगावी खूण । | |
|---|-------|
| परी तें स्वरूप जाण। सन्निधिच असे | ११। |
| जैसा आकाशीं भासला भास । आणि सकळांमधें आकाश । | |
| तसा जााणज जगदीश । सबाह्य अभ्यांतरीं । १ | 271 |
| उदकामध परी भिजेना । पथ्वीमधें एसी विक्रेस । | |
| वन्हामध परा सिजना । स्वरूप देवाचें । १ | 15 |
| तें रेंद्यामध्यें परी बड़ेना । तें वायोगशें परी उनेक । | 7 ' |
| सुवणा अस परा घडेना । सुवर्णासारिखें | १४। |
| एस जे संचलें सर्वदा । परी तें आकलेना करा । | , 01 |
| अभूदामाजी ताह्यी भेक । 22 | 41 |
| तिच्या स्वरूपाची खूण। सांगों कांहीं वोळखण। | , 71 |
| अहतचे निरुपाम । सम्बद्ध नेवन | ६। |
| जे स्वरूपाकडे पावे । अनुभवासवें झेंपावे । | , 41 |
| अन्भवाने पाट्य भाषाने । जो के | ७। |
| म्हणे आतां मीच स्वरूप। तेंचि अहंतेचें रूप। | , 91 |
| निराकारीं अपरेशमा । जेन्स्य - | 128 |
| स्वयें मीच आहे ब्रह्म। ऐसा अहंतेचा भ्रम। | (01 |
| एसिरो उपक्रमीं उपक | 291 |
| कल्पना आकळी हेत । वस्तु कल्पनातीत । | (|
| महणीय च्या विकास के | ? o I |
| अन्वये आणी वीतरेक । हा शब्दभेद कोणीयेक । | (01 |
| नियास्त्राच्य | ११। |
| आधीं घेईजे वाच्यांश । मग वोळखिजे लक्ष्यांश । | (|
| (Selfail) | १२। |
| राजा नाज्यासा । जातार नाजा | 171 |

| सर्वबहा आणी हिल्ला |
|--|
| सर्वब्रह्म आणी विमळब्रह्म । हा वाच्यांशाचा अनुक्रम । |
| शोधितां लक्ष्यांशाचें वर्म । वाच्यांश नसे । २३। |
| सव विमळ दोनी पक्ष । वाच्यांशी आहती प्रकार । |
| लक्याशा लावता लक्ष । पक्षपात घडे |
| हें लक्ष्यांशें अनुभवणें । येथें नाहीं वाच्यांश बोलणें। |
| मुख्य अनुभवाचे खुणे । वाचारंभ कैंचा |
| 1241 |
| परा पश्यंती मधेमां वैखरी । जेथें वोसरती च्यारी। |
| तथ शब्दकळाकुंसरी । कोण काज |
| शब्द बोलतां सर्वेच नासे । तेथें शाश्वतता कोठें असे । |
| प्रतिक्षाम प्रमाण क्ले |
| |
| शब्द प्रत्यक्ष नासिवंत । म्हणोन घडे पक्षपात । |
| सर्व विमळ ऐसा हेत । अनुभवीं नाहीं । २८। |
| ऐक अनुभवाचें लक्षण । अनुभव म्हणिजे अनन्य जाण । |
| ऐक अनन्याचें लक्षण । ऐसें असे । २९। |
| अनन्य म्हणिजे अन्य नसे । आत्मिनवेदन जैसें। |
| Tilliant single and |
| संगमग असताच अस । आत्मा आत्मपणे ।३०। |
| आत्म्यास नाहीं आत्मपण । हेंचि निःसंगाचें लक्षण। |
| हें वाच्यांशें बोलिलें जाण । कळावया कारणें ।३१। |
| येरवीं लक्ष्यांश तो वाच्यांशें। सांगिजेल हें घडे कैसें। |
| वाक्यविवरणें अपैसें। कळों लागे ।३२। |
| करावें तत्विववरण। शोधावें ब्रह्म निर्गुण। |
| पाहावें आपणास आपण । म्हणिजे कळे ।३३। |
| हैं न बोलतांच किक्कि के कि |
| हें न बोलतांच विवरिजे । विवरीन विरोन राहिजे। मग अबोलपोंचि साले । पानपारणी |
| मग अबोलणेंचि साजे । माहापुरुषीं ।३४। |
| |

शब्दिच निशब्द होती । श्रुति नेति नेति ह्यणती । हें तों आलें आत्मप्रचिती । प्रत्यक्ष आतां 1341 प्रवित आलियां अनुमान । हा तों प्रत्यक्ष दुराभिमान । तरी आतां मी अज्ञान । मज कांहींच न कळे 1३६। मी लटिका माझें बोलणें लटिकें । मी लटिका माझें चालणें लटिकें । मी माझें अवधेंचि लटिकें । कल्पनिक 1391 मज मुळींच नाहीं ठाव । माझें बोलणें अवधेंचि वाव । हा प्रकृतीचा स्वभाव। प्रकृती लटिकी ।३८। प्रकृति आणी पुरुष । यां दोहींस जेथें निरास । तेथें मीपण विशेष । हें केंवि घडे 1381 जेथें सर्वही अशेष जालें । तेथें विशेष कैंचें आलें। मी मौनी म्हणतां भंगलें । मौन्य जैसें 1801 आता मौन्य न भंगावें । करून कांहींच न करावें । असोन निशेष नसावें । विवेकबळें 1881

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'ब्रह्मनिरूपणनाम' समास दुसरा समाप्त.

दशक ९ : समास ३ निःसंदेह निरूपण

॥ श्रीराम ॥

श्रोतीं केला अनुमान । ऐसें कैसें ब्रह्मज्ञान । काहींच नाहीं असोन । हें केंवि घडे । १ । सकळ करून अकर्ता । सकळ भोगून अभोक्ता । सकळांमधें अलिप्तता । येईल कैसी । २ ।

| तथापी तुम्ही म्हणतां। योगी भोगून अभोक्ता। |
|---|
| स्वर्गनर्किहि आतां । येणें न्यायें । ३ । |
| जन्म मृत्य भोगीलेच भोगी । परी तो भोगून अभोक्ता योगी । |
| यातनाहि तयालागीं । येणेंचि पार्डें । ४ । |
| कुटून नाहीं कुटिला। रडोन नाहीं रडला। |
| कुंथोन नाहीं कुंथिला। योगेश्वर । ५। |
| जन्म नसोन घातला । पतित नसोन जाला । |
| यातना नसोन पावला। नानापरी । ६। |
| ऐसा श्रोतयांचा अनुमान । श्रोतीं घेतलें आडरान । |
| आतां याचें समाधान । केलें पाहिजे । ७। |
| वक्ता म्हणे सावध व्हावें । तुम्ही बोलतां बरवें । |
| परी हें तुमच्याच अनुभवें । तुम्हास घडे । ८। |
| ज्याचा अनुभव जैसा। तो तो बोलतो तैसा। |
| संपदेविण जो धिवसा। तो निरार्थक । ९। |
| नाहीं ज्ञानाची संपदा । अज्ञानदारिद्रें आपदा । |
| भोगिल्याच भोगी सदा। शब्दज्ञानें ।१०। |
| योगी वोळखावा योगेश्वरें । ज्ञानी वोळखावा ज्ञानेश्वरें । |
| माहाचतुर तो चतुरें। वोळखावा ।११। |
| अनुभवी अनुभवियास कळे । अलिप्त अलिप्तपणें निवळे । |
| विदेहाचा देहभाव गळे। विदेही देखतां ।१२। |
| बद्धासारिखा सिद्ध । आणी सिद्धासारिखा बद्ध । |
| येक भावील तो अबद्ध । म्हणावाच नलगे ।१३। |
| |
| झडपला तो देहधारी। आणी देहधारक पंचाक्षरी। |
| परंतु दोघां येकसरी । कैसी द्यावी ।१४। |

| तैसा | अज्ञान | पतित | Ł | आणी ज्ञानी जीवन्मुक्त | 1 | | |
|----------|------------|-----------|---|--------------------------|---|------------|-----|
| दोघे सा | मान मानील | तो युक्त | 1 | कैसा म्हणावा | ı | १९ | ۹ ۱ |
| | | | | प्रचित बोलों कांहीं हेत | | | |
| येथें | श्रोतीं | सावचित्त | 1 | क्षणयेक व्हावें | l | १६ | į |
| | | | | जो विवेकें विराला | | | |
| | | 1. | | नाहींच कांहीं | | 9 6 | 1 6 |
| तयास | कैसें | गवसावें | 1 | शोधूं जातां तोचि व्हावें | ı | | |
| | | | | नलगे कांहीं | | १८ | . 1 |
| | | | | तत्त्वें शोधितां भासेना | | | |
| ब्रह्म | आहे | निवडेना- | 1 | कांहीं केल्यां | ŀ | १९ | 1 5 |
| | | | | परी कांहींच नाहीं अंतरीं | | | |
| तयास | पाहातां | वरिवरी | 1 | कळेल कैसा | 1 | ? c |) |
| | | | | तंव तो नित्य निरंतर | | | |
| | _ | | | निर्विकार होती | | 5 8 | 1 5 |
| | | | | तयास नाहीं मायामळ | | | |
| | | | | जालाच नाहीं | | ? : | 51 |
| ऐसा उ | नो कां | योगीराज | ı | तो आत्मा सहजीं सहज | ı | | |
| | | | | देहाकारें कळेना | | ? ? | Į į |
| देह भ | गवितां देह | वि दिसे | ı | परी अंतर अनारिसें असे | ı | | |
| तयास | शोधित | तां नसे | ı | जन्ममरण | 1 | 27 | R 1 |
| जयास | जन्मम्रा | ग व्हावें | ı | तें तो नव्हेचि स्वभावें | 1 | | |
| गहाच | तें | आणावें | 1 | कोठन कैंचें | 1 | 26 | ٩l |
| निर्मुणा | स जन्म | कल्पिला | 1 | अथवा निर्गण उडविला | 1 | | |
| तरा उत | डिला आर्मा | - | | अण्या आण्ण | 1 | 3 8 | 1 |

| माध्यानीं थुंकितां सूर्यावरी । तो थुंका पडेल आपणाच वर्र | ti |
|---|------|
| दुसऱ्यास चिंतितां अंतरीं । आपणास घडे | |
| समर्थ रायाचें महिमान । जाणतां होतें समाधान | 1 |
| परंतु भुंकों लागलें स्वान । तरी तें स्वानचि आहे | 1261 |
| ज्ञानी तो सत्यस्वरूप। अज्ञान देखे मनुष्यरूप | 1 |
| भावासारिखा फळद्रूप । देव तैसा | 1881 |
| देव निराकार निर्गुण । लोक भाविती पाषाण | |
| पाषाण फुटतो निर्गुण । फुटेल कैसा | 1301 |
| देव सदोदित संचला। लोकीं बहुविध केला | |
| परंतु बहुविध जाला । हें तो घडेना | 1381 |
| तैसा साधु आत्मज्ञानी। बोधें पूर्ण समाधानी | 1 |
| विवेकें आत्मनिवेदनी । आत्मरूपी | 1351 |
| जळोन काष्ठाचा आकार । अग्नि दिसे काष्ठाकार | |
| परी काष्ठ होईल हा विचार। बोलोंच नये | 1331 |
| कर्पूर असे तो जळतां दिसे । तैसा ज्ञानीदेह भासे | 1 |
| तयास जन्मवितां कैसें । कर्दळीउदरीं | 1381 |
| बीज भाजलें उगवेना । वस्त्र जळालें उकलेना | 1 |
| वीघ निवडितां निवडेना । गंगेमधें | 1341 |
| वोघ गंगेमागें दिसे । गंगा येकदेसी असे | 1 |
| साधु काहाच न भासे । आणी आत्मा सर्वगत | 1361 |
| सुवर्ण नव्हे लोखंड । साध्य जन्म शोवांट | |
| जर्मान प्राणा जडमूढ । तयास हें उमजेचिना | 1391 |
| अधास काहींच न दिसे । तरी ते लोक आंधले कैसे | |
| सन्नपातें बरळतसे । सन्नपाती | 1361 |

जो स्वप्नामधें भ्याला । तो स्वप्नभयें वोसणाला । तें भये जागत्याला । केवि लागे 1361 मळी सर्पाकार देखिली । येक भ्याला येकें वोळखिली । दोघांची अवस्ता लेखिली । सारिखीच कैसी ।४०। हातीं धरितांहि डसेना । हें येकास भासेना । तरी ते त्याची कल्पना । तयासीच बाधी ।४१। विंचु सर्प डसला। तेणें तोचि जाकळला। तयाचेनि लोक जाला । कासावीस कैसा ।४२। आतां तुटला अनुमान। ज्ञानियांस कळे ज्ञान। अज्ञानास जन्ममरण । चुकेचिना ।४३। येका जाणण्यासाठीं । लोक पडिले अटाटी । नेणपणें हिंपुटी होती । जन्ममृत्यें 1881 तेंचि कथानुसंधान । पुढें केलें परिछिन्न । सावधान । म्हणे वक्ता । ४५।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'नि:संदेहनिरूपणनाम' समास तिसरा समाप्त.

दशक ९: समास ४ जाणपणनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

पृथ्वीमधें लोक सकळ । येक संपन्न येक दुर्बळ । येक निर्मळ येक वोंगळ । काय निमित्य । १। कित्येक राजे नांदती । कित्येक दिरद्र भोगिती । कितीयेकांची उत्तम स्थिती । कित्येक अधमोद्धम । २।

| ऐसें काय निमित्य जालें। हें मज पाहिजे निरोपिलें | 1 | | |
|---|---|------|---|
| याचें उत्तर ऐकिलें। पाहिजे श्रोतीं | | 3 | 1 |
| हे सकळ गुणापासी गती । सगुण भाग्यश्री भोगिती | | 7 | |
| अवगुणास दरिद्रप्राप्ती । येदर्थीं संदेह नाहीं | I | × | 1 |
| जो जो जेथें उपजला। तो ते वेवसाई उमजला | | | • |
| दिसार जोन क्ली (| | ų | ı |
| जाणता तो कार्य करी । नेणता कांहींच न करी | | ` | • |
| जाणता तो पोट भरी । नेणता भीक मागे | | Ę | ŀ |
| हें तों प्रगटचि असे । जनीं पाहातां प्रत्यक्ष दिसे | | Ì | |
| विद्येवीण करंटा वसे । विद्या तो भाग्यवंत | l | 9 | 1 |
| आपुली विद्या न सिकसी । तरी काये भीक मागसी | | | |
| जेथें तेथें बुद्धी ऐसी । वडिलें सांगती | | ሪ | l |
| विंडल आहे करंटा। आणी समर्थ होये धाकुटा | | | |
| कां जे विद्येनें मोठा । म्हणोनियां | | 9 | ١ |
| विद्या नाहीं बुद्धि नाहीं। विवेक नाहीं साक्षेप नाहीं | | | |
| कुशळता नाहीं व्याप नाहीं । म्हणौन प्राणी करंटा | | 0 | l |
| इतुकेंहि जेथें वसे । तेथें वैभवास उणें नसे | | | |
| वैभव सांडितां अपैसें । पाठीं लागे | | 8 | |
| विडल समर्थ घाकुटा भिकारी । ऐका याची कैसी परी विडलाऐसा व्याप न करी । म्हणोनियां | | १२ | ı |
| जैसी विद्या तैसी हांव । जैसा व्याप तैसें वैभव | | , , | • |
| तोलासारिखा हावभाव । लोक करिती | | ₹ \$ | ı |
| विद्या नसे वैभव नसे । तेथें निर्मळ कैंचा असे | l | | |
| करंटपणें वोखटा दिसे । वोंगळ आणी विकारी | | 8 | 1 |

| पशु पक्षी गुणवंत । त्यास कृपा करी समर्थ । |
|---|
| गुण नस्तां जिणें वेर्थ । प्राणीमात्रांचें ।१५। |
| गुण नाहीं गौरव नाहीं । सामर्थ्य नाहीं महत्त्व नाहीं । |
| कुशळता नाहीं तर्क नाहीं । प्राणीमात्रांसी । १६। |
| याकारणें उत्तम गुण । तेंचि भाग्याचें लक्षण । |
| लक्षणेंविण अवलक्षण। सहजचि जालें ।१७। |
| जनामधें जो जाणता । त्यास आहे मान्यता । |
| कोणी येक विद्या असतां । महत्व पावे ।१८। |
| प्रपंच अथवा परमार्थ । जाणता तोचि समर्थ । नेणता जाणिजे वेर्थ । निःकारण । १९। |
| नेणतां विंचु सर्प डसे । नेणतां जीवघात असे । |
| नेणतां कार्य नासे । कोणी येक ।२०। |
| नेणतां प्राणी सिंतरे । नेणपणें तन्हे अपे । |
| नणपण ठके विसरे । पदार्थ कांहीं । २२। |
| नेणतां वैरी जिंकिती। नेणतां अपार्द पहली। |
| नणता सव्हारती, घडती- । जीव नास |
| आपुलें स्वहित न कळे जना । तेणें भोगिती यातना । |
| ज्ञान नेणतां अज्ञाना । अद्योगती । २३। भायाबद्या जीविक |
| मायाब्रह्म जीविशिव । सारासार भावाभाव । जाटिल्यासाठीं होतें वाव । जन्ममरण । २४। |
| काण कर्ता निश्चरोंसी । बाद मोशा के के |
| भागता प्राणियासी । सटिका घडे |
| भावाजी देव जिसीय । ज्यानिको की के |
| जाणिजे अनन्यलक्षण । म्हणिजे मुक्त । २६। |

| जितुकें जाणोन सांडिलें। तितुकें दृश्य वोलांडिलें। |
|---|
| जाणत्यास जाणतां तुटलें । मूळ मीपणाचें । २७। |
| न जाणतां कोटीवरी । साधनें केलीं परोपरीं । |
| तरी मोक्षास अधिकारी । होणार नाहीं । २८। |
| मायाब्रह्म वोळखावें । आपणास आपण जाणावें । |
| इतुक्यासाठीं स्वभावें । चुके जन्म । २९। |
| 1561 |
| जाणतां समर्थांचें अंतर । प्रसंगें वर्ते तदनंतर । |
| भाग्य वैभव अपार । तेणोंचि पावे ।३०। |
| म्हणौन जाणणें नव्हे सामान्य । जाणतां होईजे सर्वागान्य । |
| कांहींच नेणतां अमान्य । सर्वत्र करिती ।३१। |
| पदार्थ देखोन भूत भावी । नेणतें झडपोन प्राण ठेवी । |
| क्षिण वजा पूर्व माया । मणत झडपान प्राण ठवा । |
| मिथ्या आहे उठाठेवी । जाणते जाणती ।३२। |
| जाणत्यास कळे वर्म । नेणत्याचें खोटें कर्म । |
| सकळ कांहीं धर्माधर्म । जाणतां कळे ।३३। |
| नेणत्यास येमयातना । जाणत्यास कांहींच लागेना । |
| मकल जालेर किंग |
| सकळ जाणोन, विवंचना । करी तो मुक्त । ३४। |
| नेणतां कांहीं राजकारण । अपमान करून घेती प्राण । |
| पर्णता कठाण वर्तमान । समस्तांस होये ।३५। |
| म्हणानिया नेणणं खोटें। नेणले क्ला रे - ' |
| |
| म्हणोन अलश्र कार्च को । जन्ममरण |
| |
| म्हणोन अलक्ष करूं नये । जाणणें हाचि उपाये । |
| भाषा साथ । परलोकाची |
| जाणणें सकळांस प्रमाण । रूर्णकाची ।३७। |
| जाणतां सांपडे सोये। परलोकाची ।३७। जाणणे सकळांस प्रमाण । मूर्खास वाटे अप्रमाण। परंतु अलिप्तपणाची खूण । जाणतां कळे ।३८। |

येक जाणणें करून परतें । कोण सोडी प्राणीयांतें ।
कोणी येक कार्य जें तें । जाटिल्याविण न कळे ।३९।
जाणणें म्हणिजे स्मरण । नेणणें म्हणिजे विस्मरण ।
दोहींमधें कोण प्रमाण । शाहाणे जाणती ।४०।
जाणते लोक शाहाणे । नेणते वेडे दैन्यवाणे ।
विज्ञान तेंहि जाणपणें । कळों आलें ।४१।
जेथें जाणपण खुंटलें । तेथें बोलणेंही तुटलें ।
हेतुरहित जालें । समाधान ।४२।
श्रोते म्हणती हें प्रमाण । जालें परम समाधान ।
परी पिंडब्रह्मांडऐक्यलक्षण । मज निरोपावें ।४३।
ब्रह्मांडीं तेचि पिंडीं असे । बहुत बोलती ऐसें ।
परंतु याचा प्रत्यय विलसे । ऐसें केलें पाहिजे ।४४।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'जाणपणनिरूपणनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक ९ : समास ५ अनुमाननिर्शन

॥ श्रीराम ॥

पिंडासारिखी ब्रह्मांडरचना । नये आमुच्या अनुमाना । प्रचित पाहातां नाना । मतें भांबावती । १ । जें पिंडीं तेंचि ब्रह्मांडीं । ऐसी बोलावयाची प्रौढी । हैं वचन घडीनें घडी । तत्वज्ञ बोलती । २ । पिंड ब्रह्मांड येक राहाटी । ऐसी लोकांची लोकधाटी । परी प्रत्ययाचे परीपाटीं । तगों न सके । ३ ।

| THE TAX - | |
|---|---|
| स्थूळ सूक्ष्म कारण माहाकारण | |
| विराट हिरण्य अव्याकृत मूळप्रकृती हे खूण | । ब्रह्मांडींची । ४। |
| हे शास्त्रधाटी जाणावी | । परी प्रचित कैसी आणावी । |
| प्रचित पाहातां गथागोवी | । होत आहे । ५ । |
| पिंडीं आहे अंतः करण | । तरी ब्रह्मांडीं विष्णु जाण । |
| पिंडीं बोलिजेतें मन | । तरी ब्रह्मांडीं चंद्रमा । ६ । |
| पिंडीं बुद्धी ऐसें बोलिजे | । तरी ब्रह्मांडीं ब्रह्मा ऐसें जाणिजे । |
| पिंडीं चित्त ब्रह्मांडीं वोळिखजे | । तरा श्रह्मांडा श्रह्मा एस जााणज । |
| | |
| ापडा बालिज अहकार | । ब्रह्मांडीं रुद्र हा निर्धार । |
| ऐसा बोलिला विचार | । शास्त्रांतरीं । ८। |
| तरी कोण विष्णूचें अंतः कर्ण | । चंद्राचें कैसें मन। |
| ब्रह्मयाचें बुद्धिलक्षण | |
| नारायेणाचें कैसें चित्त | । रुद्रअहंकाराचा हेत । |
| हा विचार पाहोन नेमस्त | । मज निरोपावा । १०। |
| प्रचितनिश्चयापुढें अनुमान | । जैसें सिंहापुढें आलें स्वान । |
| खऱ्यापुढें खोटें प्रमाण | । होईल कैसें । ११। |
| परी यास पारखी पाहिजे | । पारखीनें निश्चय लाहिजे। |
| | । अनुमानसंशाई । १२। |
| | । नारायेण आणी रुद्रनामा । |
| यां पाचांचीं अंत:कर्णपंचकें आम्हा | । स्वामी निरोपावी । १३। |
| येथें प्रचित हें प्रमाण | |
| | । प्रत्ययो आणावा ।१४। |
| | । तें अवधेंचि कंटाळवाणें। |
| | । रडोन गेलें ।१५। |

| तेथें काये हो ऐकावें । आणी काये शोधून पा | हावें । |
|---|-------------------|
| जेथें प्रत्ययाच्या नांवें । सुन्याकार | 1 १ द । |
| आवधे आंधळेचि मिळाले । तेथें डोळसाचें काय च | |
| अनुभवाचे नेत्र गेले । तेथें अंधकार | 1891 |
| नाहीं दुग्ध नाहीं पाणी। केली विष्ठेची सार | _ |
| तेथें निवडायाचे धनी । ते एक डोंबकावळे | 1861 |
| आपुले इछेनें बोलिलें । पिंडाऐसें ब्रह्मांड कलि | ालें । |
| परी तें प्रचितीस आलें। कोण्या प्रकारें | 1861 |
| म्हणोन हा अवघाच अनुमान । अवघें कल्पनेचें र | ਜ਼ਿ। |
| भलीं न घ्यावें आडरान । तश्करीं घ्यावें | 1201 |
| कल्पून निर्मिले मंत्र । देव ते कल्पनाम | Ter I |
| देव नाहीं स्वतंत्र । मंत्राधेन | 1281 |
| येथें न बोलतां जाणावें । बोलपों विवेका आप | - 5. ' |
| आंधळें पाउलीं वोळखावें । विचक्षणें | |
| जयास जैसे भासलें। तेणें तैसें कवित्व के | 1551 |
| परी हें पाहिजे निवडिलें । प्रचितीनें | |
| ब्रह्मयानें सकळ निर्मिलें । ब्रह्मसम्प्र कोर्ने क | 1531 |
| विष्णूनें विश्व पाळिलें । विष्णूस पाळिता कवणु | ल । |
| "र विश्वस्कारकता । गरी क्लेक | |
| कोण काळाचा नियंता । कळला पाहिजे | |
| नाया कळना विचार । जो | 1241 |
| सारासार । विचार कार्ने | |
| मलाड स्वभाविति जाते । | 1 २६ । |
| किल्पलें परी प्रत्यया आलें । नाहीं कदा | लें। |
| 1780 Dashodh a c | 1501 |

| पाहातां ब्रह्मांडाची प्रचिती । कित्येक संशय उठती । | |
|---|-----|
| हें काल्पनिक श्रोतीं । नेमस्त जाणावें । २ | 158 |
| पिंडासारिखी ब्रह्मांडरचना । कोण आणितो अनुमाना । | |
| ब्रह्मांडीं पदार्थ नाना । ते पिंडीं कैंचे । र | 199 |
| औटकोटी भूतावळी । औटकोटी तीर्थावळी । | |
| औटकोटी मंत्रावळी । पिंडीं कोठें । ३ | 10 |
| तेतीस कोटी सुरवर । अठ्यासि सहस्र ऋषेश्वर । | |
| नवकोटी कात्यायेणीचा विचार । पिंडीं कोठें | ३१। |
| च्यामुंडा छपन्न कोटी । कित्येक जीव कोट्यानुकोटी । | |
| चौऱ्यासी लक्ष योनींची दाटी । पिंडी कोठें | ३२। |
| ब्रह्मांडीं पदार्थ निर्माण जाले । पृथकाकारें वेगळाले । | |
| तेहि तितुके निरोपिले । पाहिजेत पिंडीं । | ३३। |
| जितुक्या औषधी तितुकीं फळे । नाना प्रकारीं रसाळें। | |
| नाना बीजें धान्यें सकळें । पिंडीं निरोपावीं | ३४। |
| हें सांगतां पुरवेना । तरी उगेंचि बोलावेना । | |
| बोलिलें न येतां अनुमाना । लाजिरवाणें । | ३५। |
| तरी हें निरोपिलें नवचे । फुकट बोलतां काय वेचे। | |
| याकारणें अनुमानाचें । कार्य नाहीं । | ३६। |
| पांच भूतें ते ब्रह्मांडीं । आणी पांचिच वर्तती पिंडीं । | |
| | 301 |
| पांचा भूतांचें ब्रह्मांड । आणी पंचभूतिक हें पिंड । | |
| | 126 |
| जितुकें अनुमानाचें बोलणें । तितुकें वमनप्राये त्यागणें। | |
| | 361 |

जेंचि पिंडीं तेंचि ब्रह्मांडीं । प्रचित नाहीं कीं रोकडी । पंचभूतांची तांतडी । दोहीकडे ।४०। म्हणोनि देहींचे थानमान । हा तों अवघाचि अनुमान । आतां येक समाधान । मुख्य तें कैसें ।४१।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'अनुमाननिर्शननाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक ९: समास ६ गुणरूपनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

आकाश जैसें निराकार । तैसा ब्रह्माचा विचार ।
तेथें वायोचा विकार । तैसी मूळमाया । १ ।
हें दासबोधीं असे बोलिलें । ज्ञानदशकीं प्रांजळ केलें ।
मूळमायेंत दाखविलें । पंचभूतिक । २ ।
तेथें जाणीव तो सत्वगुण । मध्य तो रजोगुण ।
नेणीव तमोगुण । जाणिजे श्रोतीं । ३ ।
पहणाल तेथें कैंची जाणीव । तरी ऐका याचा अभिप्राव ।
पिंडीं माहाकारण देहीं सर्व— । साक्षिणी अवस्था । ४ ।
तैसी मूळप्रकृती ती ब्रह्मांडींचें । देह माहाकारण साचें ।
पहणोन तेथें जाणीवेचें । अधिष्ठान आलें । ५ ।
असो मूळमायेभीतरीं । गुप्त त्रिगुण वास करी ।
पष्ट होती संधी चतुरीं । जाणावी गुणक्षोिभणी । ६ ।

1780 Dasbodh (Marathi)_Section_13_2_Front

| जैसा त्णाचा पोटराकळा । पुढें | उकलोन होये मोकळा। | |
|--|--------------------------------------|----------------|
| तैसी मुळ्याया अवलीळा । गुण | ॥ प्रसवली | 9 |
| पुळ्याया वायोस्वरूप । ऐक | | |
| गुणविकार होतांचि अल्प। गुण | क्षोभिणी बोलिजे । त | 1 2 |
| पुढें जाणीव मध्यस्त नेणीव । मिर्ग | | |
| तेथें पात्कास ठाव । शब | | 1 8 |
| तों शब्दगुण आकाशींचा । ऐस | | |
| शब्देंचि वेदशास्त्रांचा । आ | · · | 01 |
| पंचभूतें त्रिगुणाकार । अव | | |
| जाणीवनेणीवेचा विचार । वार | | 81 |
| वायो नस्तां कैंची जाणीव। जा | | |
| जाणीवनेणीवेस ठाव । वार | _ | 21 |
| जेथें मुळींच नाहीं चळण। तेथे | | |
| म्हणोनि वायोचा गुण । नेम | | 3 I |
| येकापासून येक जालें । हें र | | |
| स्वरुप मुळींच भासलें। त्रिग् | | 81 |
| ऐसा हा मुळींचा कर्दम् । पुढें | | |
| सांगतां वेकापासून वेक उगमु । हेरि | | 41 |
| वायोचा कर्दम बोलिला। तय | | e I |
| तोहि पाहातां देखिला । कर | | & I |
| अग्नीपासून जार्ले आप । तेति आपापासून पृथ्वीचें रूप । तेति | | 91 |
| | | • |
| येथे आशंका उठिली । भूत तरी भूतांत जाणीव हे ऐकिली । नार | ास जाणाव काठ दाखला । शिकार्का । १ | 13 |
| क रिकार आजात है दीकारम । जीर | भ्राचाता | |

| जाणीव म्हणिजे जाणतें चळण । तेंचि वायोचें लक्षण । |
|---|
| वायोआंगीं सकळ गुण । मागां निरोपिले । १९। |
| म्हणोन जाणीवनेणीवमिश्रीत । अवधें चालिलें पंचभूत । |
| म्हणोनियां भूतांत । जाणीव असे ।२०। |
| कोठें दिसे कोठें न दिसे । परी ते भूतीं व्यापून असे । |
| विश्वपा बार्क कार्या भारत |
| पंचयतें अपनारता मास । स्थूळ सूक्ष्म ।२१। |
| पंचभूतें आकारलीं । भूतीं भूतें कालवलीं । |
| तरी पाहातां भासलीं । येक स्थूळ येक सूक्ष्में ।२२। |
| निराधवाया न भासे । तैसी जाणीव न किरो |
| न दिस परा ते असे। भूतरूपें |
| काष्ठा अग्नी दिसेना । निरोधनायो 💮 |
| जाणाव तैसी लक्षेना । येकायेकी |
| भूतें वेगळालीं दिसती । पाहातां येकचि भासती । |
| बहुत धूर्तपणें प्रचिती । वोळखावी |
| विकास |
| गणमाया । पूळमायपासून गुणमाया । |
| तथा । गुणास जन्म |
| |
| श्रामधा रूप समस्ते । विशेषिकी |
| अकाश गुणापासन जाले । रे — |
| शब्दगुणास कल्पिलें। आकाश वायां |
| येक सांगतां येकचि भावी । उगीच करी - |
| तया वेड्याची उग्रती करा गथागोवी। |
| सिकविल्यांकि । २०। |
| दृष्टांतेहि न्या । उमजविल्यांहि उमजेना । |
| तकना । मंदरूप |
| 1901 |

| भूतांहून भूत थोर । हाहि दाविला विचार | ı |
|--|-----------|
| परी भूतांवडिल स्वतंत्र । कोण आहे | 1381 |
| जेथें मूळमाया पंचभूतिक । तेथें काये राहिला विवेक | 1 |
| मूळमायेपरतें येक । निर्गुणब्रह्म | 1381 |
| ब्रह्मीं मूळमाया जाली । तिची लीळा परीक्षिली | |
| तंव ते निखळ वोतली। भूतें त्रिगुणांची | |
| भूतें विकारवंत चत्वार । आकाश पाहातां निर्विकार | l |
| | 1381 |
| पिंडीं व्यापक म्हणोन जीव । ब्रह्मांडीं व्यापक म्हणोन शिव | |
| तैसाच हाहि अभिप्राव । आकाशाचा | 1341 |
| उपाधीमधें सापडलें । सूक्ष्म पाहातां भासलें इतुक्यासाठीं आकाश जालें । भूतरूप | । ।३६। |
| आकाश अवकाश तो भकास । परब्रह्म तें निराभास | • |
| उपाधी नस्तां जें आकाश । तेंचि ब्रह्म | 1391 |
| जाणीव नेणीव मध्यमान । हेंचि गुणांचें प्रमाण | * |
| येथें निरोपिलें त्रिगुण। रूपेंसहित | 1861 |
| प्रकृती पावली विस्तारातें । पुढें येकाचें येकचि होतें | l . |
| विकारवंतचि तयातें । नेम कैंचा | |
| काळें पांढरें मेळिवतां । पारवें होतें तत्वतां | |
| काळें पिवळें मेळिवतां । हिरवें होये | 1801 |
| ऐसे रंग नानापरी । मेळवितां पालट धरी तैसें दृश्य हें विकारी । विकारवंत | 1881 |
| येका जीवनें नाना रंग। उमटों लागती तरंग | |
| पालटाचा लागवेग । किती म्हणोन पाहावा | 1851 |

येका उदकाचे विकार। पाहातां दिसती अपार। पांचा भूतांचे विस्तार । चौऱ्यासी लक्ष योनी ।४३। नाना देहाचें बीज उदक । उदकापासून सकळ लोक । किडा मुंगी स्वापदादिक । उदकेंचि होयें । ४४। शुक्लीत श्रोणीत हाणिजे नीर । त्या नीराचें हें शरीर । नखें दंत अस्तिमात्र । उदकाच्या होती ।४५। मुळ्यांचे बारीक पागोरे। तेणें पंथें उदक भरे। त्या उदकेंचि विस्तारे । वृक्षमात्र 1881 अंब्रवृक्ष मोहरा आले । अवधे उदकाकरितां जाले । फळीं फुलीं लगडलें। सावकास ।४७। खोड फोडून अंबे पाहतां। तेथें दिसेना सर्वथा। खांद्या फोडून फळें पाहातां । वोलीं सालें 1861 मुळापासून सेवटवरी। फळ नाहीं तदनंतरीं। जळरूप फळ चतुरीं । विवेकें जाणावें ।४९। तेंचि जळ सेंड्या चढे। तेव्हां वृक्षमात्र लगडे। येकाचें येकचि घडे । येणें प्रकारें ।५०। पत्रें पुष्पें फळें भेद । किती करावा अनुवाद । सूक्ष्म दृष्टीनें विशद । होत आहे 1481 भूतांचे विकार सांगों किती । क्षणक्षणा पालटती । येकाचे येकचि होती। नाना वर्ण त्रिगुणभूतांची लटपट । पाहों जातां हे खटपट । 1421 बहुरूप बहु पालट । किती म्हणोन सांगावा । ५३।

ये प्रकृतीचा निरास । विवेकें वारावा सावकास । मग परमात्मा परेश । अनन्यभावें भजावा । ५४।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'गुणरूपनिरूपणनाम' समास सहावा समाप्त.

> > दशक ९: समास ७ विकल्पनिर्शन

आधीं स्थूळ आहे येक । तरी मग अंतःकर्णपंचक । जाणतेपणाचा विवेक । स्थूळाकरितां 181 तैसेंचि ब्रह्मांडेंवीण कांहीं । मूळमायेसि जाणीव नाहीं। स्थूळाच्या आधारें सर्वहि । कार्य चाले 1 7 1 तें स्थूळिच नस्तां निर्माण । कोठें राहेल अंतःकर्ण। ऐसा श्रोतीं केला प्रश्न । याचें उत्तर ऐका 1 3 1 कोसले अथवा कांटेघरें। नाना पृष्ठिभागीं चालती घरें। जीव करिती लहानथोरें। शक्तीनुसार शंख सिंपी घुला कवडे । आधीं त्यांचें घर घडे। किंवा आधीं निर्माण किडे । हें विचारावें आधीं प्राणी ते होती । मग घरें निर्माण करिती । हे तों प्रत्यक्ष प्रचिती । सांगणें नलगे । ६। तैसें आधीं सूक्ष्म जाण । मग स्थूळ होतें निर्माण । येणें दृष्टांतें प्रश्न । फिटला श्रोतयांचा 191

| _ | | जी आठवलें कांहीं येक | 1 |
|------------------------------|---|---|---------|
| | | मज निरोपावा | 101 |
| | | आणी मागुता कोण जन्म घेतें | 1 |
| हें प्रत्यया कैसें येतें | | • | 1 9 1 |
| ब्रह्मा जन्मास घालितो | ١ | विष्णु प्रतिपाळ करितो | 1 |
| | | ऐसें बोलती | |
| तरी हें प्रवृत्तीचें बोलणें | ١ | प्रत्ययास आणी उणें | 1 |
| प्रत्यय पाहातां श्लाघ्यवाणें | | | 1 १ १ । |
| ब्रह्यास कोणें जन्मास घातलें | I | विष्णूस कोणें प्रतिपाळिलें | 1 |
| रुद्रास कोणे संव्हारिलें | 1 | माहाप्रळईं | 1881 |
| म्हणानि हा सृष्टीभाव | 1 | अवघा मायेचा स्वभाव | 1 |
| कता म्हणा निगुण देव | 1 | तरी तो निर्विकारी | 1931 |
| म्हणावें माया जन्मास घाली | 1 | तरी हे आपणचि विस्तारली | 1 |
| जाणा विचारिता थारली | | हेहि घडेना | 10 V 1 |
| आता जन्मतो तो कोण | 1 | कैसी त्याची वोळखण | 1 |
| भावताच लक्षण | 1 | तेंहि निरोपावें | 101 |
| यादि कैसे रूप | 1 | आणी पापाचें कैसें स्वरूप | 1 |
| राष्ट्राचा आश्रम | | कोण कर्ज | |
| ए काहाच न ये अञ्चल | | 0 | 1 |
| | | | |
| " WIND STORE | | | 1 |
| एशा अनंत वृत्ती जाणा | 1 | अंत:कर्णपंचकाच्या | 1041 |
| त्या स्थापन | 1 | अतः कर्णपंचकाच्या जाणीव म्हणिजे स्मरणमात्र कैसे लग्ने | 1861 |
| त्या स्मरणास जन्मसूत्र | 1 | कैसें लागे | |
| | | | 1881 |

| देहो निर्माण पांचा भूतांचा । वायो चाळक तयाचा । |
|--|
| जाणणें हा मनाचा । मनोभाव । २०। |
| ऐसें हें सहजचि घडलें । तत्वांचें गुंथाडें जालें। |
| कोणास कोणें जन्मविलें । कोण्या प्रकारें । २१। |
| तरी हें पाहातां दिसेना। म्हणोन जन्मचि असेना। |
| उपजला प्राणी येना । मागुतां जन्मा । २२। |
| कोणासीच जन्म नाहीं । तरी संतसंगें केलें काई । |
| ऐसा अभिप्राव सर्विहि । श्रोतयांचा । २३। |
| पूर्वी स्मरण ना विस्मरण । मधेंचि हें जालें स्मरण । |
| अंतर्यामीं अंतःकर्ण। जाणती कळा । २४। |
| सावध आहे तों स्मरण । विकळ होतां विस्मरण । |
| विस्मरण पडतां मरण । पावती प्राणी । २५। |
| स्मरण विस्मरण राहिलें । मग देहास मरण आलें। |
| पुढें जन्मास घातलें । कोणास कोणें । २६। |
| म्हणोनि जन्मचि असेना । आणी यातनाहि दिसेना । |
| अवघी वेर्थिच कल्पना । बळावली । २७। |
| म्हणौन जन्मचि नाहीं कोणासी । श्रोतयांची आशंका ऐसी । |
| मरोन गेलें तें जन्मासी । मागुतें न ये । २८। |
| वाळलें काष्ठ हिरवळेना । पडिलें फळ तें पुन्हां लागेना । |
| तस पोडले शरीर येना । जन्मास मागुतें । २९। |
| मडकें अवचितें फटलें । फटलें तें फटोविन गेलें। |
| तसाच पुन्हा जन्मलें । नाहीं मनुष्य । ३०। |
| येथें अज्ञान आणी सज्ञान । सारिखेच जालें समान । |
| ऐसा बळावला अनुमान । श्रोतयांसी ।३१। |

| वक्ता म्हणे हो ऐका । अवधें पाषां | ड करू नका। |
|--|------------------------|
| अनुमान असेल तरी विवेका । अवलोकावें | 1351 |
| प्रेलेंबीण कार्य जालें । जेविल्यावीए | ग पोट भरलें। |
| ज्ञानेंवीण मुक्त जालें । हें तों घडेना | 1331 |
| स्वयें आपण जेविला । त्यास वाटे | |
| परंतु हें समस्तांला । घडलें पाहिज | ने ।३४। |
| पोहणें सिकला तो तरेल । पोहणें नेण | |
| येथेंहि अनुमान करील । ऐसा कवणु | 1341 |
| तैसें जयांस ज्ञान जालें । ते ते ति | तकेच तरले। |
| ज्याचें बंधनचि तुटलें । तोचि मुक्त | 1381 |
| मोकळा म्हणे नाही बंधन । आणी प्रत्यक्ष | बंदीं पहिले जन |
| त्याच कस समाधान । तें तुम्ही पह | 1.210.1 |
| नेणे दुसऱ्याची तळमळ । तें मनष्य ए | रदःख्योत्यः। |
| "राज हाह केवळ । अनुभव जाए | |
| जयास आत्मज्ञान जालें । तत्वें तत्व | ावा ।३८। विवंचिलें। |
| खुनता पावताच बाणल । समाधान | |
| ज्ञानें चुके जन्ममरण । सगट बोल वेदशास्त्र आणी प्रसार । | में आप्ता । ३९। |
| THE PROPERTY OF THE PROPERTY O | यासी |
| अविविधिकाला | वासा ।४०। वी मंडळी। |
| प्रमुख्ळा लोक सकळी । हें मानीतना | |
| होता अ | । ४१। काय प्रमाण। |
| म्हणोन जेथें आत्मज्ञान । तोचि मुक्त अवधेच मुक्त | नगप प्रमाण् । |
| शानेविका नर । हाहि जाना | चा उच्च |
| ती उद्धार । होणार नाहीं | |
| | 1831 |

| आत्मज्ञान कळों आलें । म्हणोन दृश्य मिथ्या जालें | l |
|---|--------------|
| परंतु वेढा लाविलें । सकळांस येणें | 1881 |
| आतां प्रश्न हा फिटला । ज्ञानी ज्ञानें मुक्त जाला | 1 |
| अज्ञान तो बांघला । आपले कल्पनेनें | १४५। |
| विज्ञानासारिखें अज्ञान । आणी मुक्तासारिखें बंधन | l |
| | 1881 |
| बंधन म्हणिजे कांहींच नाहीं । परी वेढा लाविलें सर्व हि | l |
| 9 | ।४७। |
| कांहींच नाहीं आणी बाधी । हेंचि नवल पाहा आधीं | |
| मिथ्या जाणिजेना बद्धि । म्हणोन बद्ध | 1881 |
| भोळा भाव सिद्धी जाव । हा उधाराचा उपाव | |
| रोकडा मोक्षाचा अभिप्राव । विवेकें जाणावा | |
| प्राणी व्हावया मोकळा । आधीं पाहिजे जाणीवकळा | |
| सकळ जाणतां निराळा । सहजचि होये | ।५०। |
| कांहींच नेणिजे तें अज्ञान । सकळ जाणिजे तें ज्ञान | |
| जाणीव राहातां विज्ञान । स्वयंचि आत्मा | ।५१। |
| अमृत सेऊन अमर जाला । तो म्हणे मृत्य कैसा येतो जनाला | |
| तैसा विवेकी म्हणे बद्धाला । जन्म तो कैसा | ।५२। |
| जाणता म्हणे जनातें । तुम्हांस भूत कैसें झडपितें | |
| तुम्हांस वीष कैसें चढतें । निर्विष म्हणे | ।५३। |
| आधीं बद्धासारिखें व्हावें । मग हें नलगेचि पुसावें विवेक दुरी ठेऊन पाहावें । लक्षण बद्धाचें | |
| 6) | ।५४। |
| निजल्यास चेईला तो । म्हणे हा कां रे वोसणातो अनुभव पाहाणेंचि आहे तो । तरी मग निजोन पाहावा | լ կ կ l |
| उ र विश्वास आहि ।। तर् भग निजान पहिला | 4 7 7 |

ज्ञात्याची उगवली वृत्ती । बद्धऐसी न पडे गुंती । भुकेल्याची अनुभवप्राप्ती । घाल्यास नाहीं 1481 इतुकेन आशंका तुटली। ज्ञानें मोक्षप्राप्ती जाली। विवेक पाहातां बाणली । अंतरस्थिती 1491

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'विकल्पनिर्शननाम' सातवा समास समाप्त.

दशक ९ : समास ८

॥ श्रीराम् ॥

| ज्ञाता सुटला ज्ञानमतें। परंतु जन्म कैसा बद्धातें। बद्धाचें काये जन्मतें। अंतकाळीं | १ | , |
|---|----|---|
| बद्ध प्राणी मरोन गेले । तेथें कांहींच नाहीं उरलें। जाणीवेचें विस्मरण जालें । मराणार्जी | | |
| एसी घेतली आएंटर | 5 | l |
| जाता दुश्चात होऊं नका । म्हणे वक्ता | 3 | , |
| पचप्राण स्थळें सोदिती । गणाप्तर | 9 | • |
| गर्मा अणि जाता । देह सोद्रियां | 8 | l |
| वायोसिरिसी वासना गेली । ते वायोरूपेंचि राहिली। पुन्हां जन्म घेऊन आली । हेतुपरत्वें | | |
| ापक प्राणा नि-शोष गान्ति | فو | 1 |
| हकलून दिल्हें तेणें दुखवती । हस्तपादादिक | Ę | ı |

| सर्पदृष्टी जालियांवरी । तीं दिवसां उठवी धन्वंतरी । |
|--|
| तेव्हां ते माघारी । वासना येते कीं । ७ । |
| कित्येक सेवें होऊन पडती । कित्येक तयांस उठविती। |
| येमलोकींहून आणिती । माघारे प्राणी । ८ । |
| कित्येक पूर्वीं श्रापिले । ते शापें देह पावले । |
| उश्रापकाळीं पुन्हां आले । पूर्वदेहीं । १। |
| कित्येकीं बहु जन्म घेतले । कित्येक परकाया प्रवेशले । |
| ऐसे आले आणी गेले। बहुत लोक ।१०। |
| फुंकिल्यासरिसा वायो गेला । तेथें वायोसुत निर्माण जाला । |
| म्हणोन वायोरूप वासनेला । जन्म आहे ।११। |
| मनाच्या वृत्ती नाना। त्यांत जन्म घेते वासना। |
| वासना पाहतां दिसेना। परंतु आहे ।१२। |
| वासना जाणिजे जाणीवहेत । जाणीव मुळींचा मूळतंत । |
| मूळमायेंत असे मिश्रित । कारणरूपें 1१३। |
| कारणरूप आहे ब्रह्मांडीं । कार्यरूपें वर्ते पिंडीं । |
| अनुमानितां तांतडीं । अनुमानेना । १४। |
| परंतु आहे सूक्ष्मरूप । जैसें वायोचें स्वरूप । |
| सकळ देव वायोरूप। आणी भूतसृष्टि ।१५। |
| वायोमधें विकार नाना । वायो तरी पाहातां दिसेना । तैसी जाणीववासना । अति सूक्ष्म । १६। |
| त्रिगुण आणी पंचभूतें । हे वायोमध्यें मिश्रिते । |
| अनुमानेना म्हणोन त्यातें । मिथ्या म्हणों नये । १७। |

सहज वायो चाले । तरी सुगंघ दुर्गंघ कळों आले । उष्ण सीतळ तप्त निवाले । प्रत्यक्ष प्राणी ।१८। वायोचेनि मेघ वोळती । वायोचेनि नक्षत्रें चालती । सकळ सृष्टीची वर्तती गती । सकळ तो वायो ।१९। वायोरूपें देवतें भूतें । आंगीं भरती अकस्मातें । वीघ केलियां प्रेतें । सावघ होतीं ।२०। वारें निराळें न बोले । देहामधें भरोन डोले । आळी घेऊन जन्मा आले । कित्येक प्राणी । २१। राहाणें ब्राह्मणसमंध जाती। राहाणें ठेवणीं सांपडतीं। नाना गुंतले उगवती । प्रत्यक्ष राहाणें । २२। ऐसा वायोचा विकार। येवंचे कळेना विस्तार। सकळ कांहीं चराचर । वायोमुळें ।२३। वायो स्तब्धरूपें सृष्टीधर्ता । वायो चंचळरूपें सृष्टीकर्ता । न कळे तरी विचारीं प्रवर्ता । म्हणिजे कळे । २४। मुळापासून सेवटवरी । वायोचि सकळ कांहीं करी । वायोवेगळें कर्तृत्व चतुरीं । मज निरोपावें । २५। जाणीवरूप मूळमाया । जाणीव जाते आपल्या ठाया । गुप्त प्रगट होऊनियां । विश्वीं वर्ते । २६। कोठें गुप्त कोठें प्रगटे । जैसें जीवन उफाळे आटे। पुढें मागुता वोघ लोटे। भूमंडळीं ।२७। तैसाच वायोमधें जाणीवप्रकार । उमटे आटे निरंतर । कोठें विकारे कोठें समीर । उगाच वाजें 1251

वारी आंगावरून जाती। तेणें हातपाये वाळती। वारा वाजतां करपती । आलीं पिकें । २९। नाना रोगांचीं नाना वारीं । पीडा करिती पृथ्वीवरी । वीज कडाडी अंबरीं । वायोमुळें 1301 वायोकरितां रागोद्धार । कळे वोळखीचा निर्धार । दीप लागे मेघ पडे हा चमत्कार । रागोद्धारीं । ३१। वायो फुंकितां भुली पडती । वायो फुंकितां खांडकें करपती । वायोकरितां चालती । नाना मंत्र 1321 मंत्रें देव प्रगटती। मंत्रें भूतें अखरिकती। बाजीगरी वोडंबरी करिती। मंत्रसामर्थ्ये ।३३। राक्षसांची मावरचना । ते हे देवांदिकां कळेना । विचित्र सामर्थ्यं नाना । स्तंबनमोहनादिकें । ३४। धडचि पिसें करावें । पिसेंच उमजवावें । नाना विकार सांगावे । किती म्हणोनी । ३५। मंत्रीं संप्राम देवांचा । मंत्रीं साभिमान ऋषींचा । महिमा मंत्रसामर्थ्याचा । कोण जाणे ।३६। मंत्रीं पक्षी आटोपिती । मूशकें स्वापदें बांधती । मंत्रीं माहांसर्प खिळिती । आणी धनलाभ । ३७। आतां असो हा प्रश्न जाला । बद्धाचा जन्म प्रत्यया आला । मागील प्रश्न फिटला । श्रोतयाचा ।३८।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'देहांतिनरूपणनाम' समास आठवा समाप्त.

दशक ९: समास ९

संदेहवारण

| ब्रह्म वारितां वारेना । ब्रह्म सारितां सरेना । |
|---|
| ब्रह्म कांहीं वोसरेना । येकीकडे । १। |
| ब्रह्म भेदितां भेदेना । ब्रह्म छेदितां छेदेना । |
| ब्रह्म परतें होयेना । केलें तरी । २ । |
| ब्रह्म खंडेना अखंड । ब्रह्मीं नाहीं दुसरें बंड । |
| तरी कैसें हें ब्रह्मांड । सिरकलें मधें । ३। |
| पर्वत पाषाण सिळा सिखरें । नाना स्थळें स्थळांतरें। |
| भगाळरच्या त्रनेपासा ग्रह्माचे । ——> |
| भगोल आने जन्मा । जाला परब्रह्मा । ४। |
| भूगोळ आहे ब्रह्मामधें । ब्रह्म आहे भूगोळामधें। |
| पाहातां येक येकामधें । प्रत्यक्ष दिसे । ५। |
| ब्रह्मीं भूगोळें पैस केला । आणी भूगोळिह ब्रह्में भेदिला। |
| े प्रत्यय आला । प्रत्यक्ष आतां । ६ । |
| अल ब्रह्मांड थोटिक्टें । ने ने ना नाना न |
| " महाडि भटिते । हे विकास |
| भारति महणावें । तमी बनी बनां र रूप |
| स्थापाल अञ्चलको । हिन्स |
| तरी हैं आतां कैसें जालें। जिल्ला कि |
| तरी हैं आतां कैसें जालें। विचारून पाहिजे बोलिलें। ऐसें श्रोतीं आक्षेपिलें। आक्षेपवचन |
| आतां गर्भाः । आक्षपवचन |
| थेथें पडिले की विचार । संदेहाचे । १०। |
| गापचार । सदेहाचे |

| ब्रह्मांड नाहीं म्हणों तरी दिसे। आणी दिसे म्हणों तरी नासे। | |
|--|------------|
| आतां हें समजती कैसें । श्रोतेजन । १ | १। |
| तंव श्रोते जाले उद्दित । आहों म्हणती सावचित । | |
| प्रसंगें बोलों उचित । प्रत्योत्तर । १ | ۲۱ |
| आकाशीं दीपास लाविलें । दीपें आकाश परतें केलें। | |
| हें तों घडेना पाहिलें । पाहिजे श्रोतीं । १ | ₹ I |
| आप तेज अथवा पवन । सारूं न सकती गगन। | |
| गगन पाहातां सघन । चळेल कैसें । १३ | द्र । |
| अथवा कठीण जाली मेदिनी । तरी गगनें केली चाळणी । | |
| पृथ्वीचें सर्वांग भेदुनी । राहिलें गगन । ११ | 41 |
| याची प्रचित ऐसी असे । जें जडत्वा आलें तितुकें नासे । | |
| आकाश जैसें तैसें असे । चळणार नाहीं । १६ | ξl |
| वेगळेपणें पाहावें । तयास आकाश म्हणावें । | |
| अभिन्न होतां स्वभावें । आकाश ब्रह्म । १५ | 9 I |
| तस्मात आकाश चळेना। भेद गगनाचा कळेना। | |
| भासलें ब्रह्म तयास जाणा । आकाश म्हणावें । १८ | 51 |
| निर्गुण ब्रह्मसें भासलें । कल्पूं जातां अनुमानलें । | |
| म्हणोन आकाश बोलिलें । कल्पनेसाठीं । १९ | ξ Ι |
| कल्पनेसि भासे भास । तितुकें जाणावें आकाश । | |
| परब्रह्म निराभास । निर्विकल्प ।२० | i e |
| पंचभूतांमधें वास । म्हणौन बोलिजे आकाश । | |
| भूतांतरीं जो ब्रह्मांश । तेंचि गगन । २१ | 1 5 |

| प्रत्यक्ष होतें जातें । अचळ कैसें म्हणावें त्यातें । |
|--|
| म्हणोनियां गगनातें । भेदिलें नाहीं । २२। |
| पृथ्वी विरोन उरे जीवन । जीवन नस्तां उरे अग्न । |
| अग्न विझतां उरे पवन । तोहि नासे । १३३। |
| मिथ्या आलें आणी गेलें। तेणें खरें तें भंगलें। |
| ऐसें हें प्रचितीस आलें। कोणेंपरी ।२४। |
| भ्रमें प्रत्यक्ष दिसतें । विचार पाहातां काये तेथें । |
| भ्रममूळ या जगातें। खरें कैसें म्हणावें । २५। |
| भ्रम शोधितां कांहींच नाहीं । तेथें भेदिलें कोणें कार्द । |
| भ्रमें भेदिलें म्हणतां ठाईं । भ्रमचि मिथ्या । २६। |
| भ्रमाचें रूप मिथ्या जालें। मग सखें म्हणावें भेटिलें। |
| मुळीं लटिकें त्यानें केलें। तेंहि तैसें । २७। |
| लटिक्यानें उदंड केलें। तरी आमनें कारो मेनें। |
| कल म्हणताच नाथिले । शाहाणे जाणती |
| सागरामधें खसखस । तैसें परब्रह्मीं दृश्य । |
| गतासारखा भातप्रकाण । अंतर्भ कर् |
| मती करितां विशाळ । कवळो लागे अंतराळ । |
| गर्गाता भास ब्रह्मगोळ । कतीन के |
| वृत्ति त्याहून विशाल । करिया कर् |
| शता केवळ । कारोंच गती |
| आपण विवेकें विशालका । मार्गिके |
| मग ब्रह्मगोळ देखिला । वटबीजन्यायें |
| 1३२। |

होतां त्याहून विस्तीर्ण । वटबीज कोटिप्रमाण । आपण होतां परिपूर्ण । कांहींच नाहीं ।३३। आपण भ्रमें लाहानाळला । केवळ देहधारी जाला । तरी मग ब्रह्मांड त्याला । कवळेल कैसें ।३४। वृत्ति ऐसी वाढवावी । पसरून नाहींच करावी । पूर्णब्रह्मास पुरवावी । चहूंकडे ।३५। जंव येक सुवर्ण आणितां । तेणें ब्रह्मांड मढवितां । कैसें होईल तें तत्वतां। बरें पाहा 13६1 वस्तु वृत्तीस कवळे। तेणें वृत्ति फाटोन वितुळे। निर्गुण आत्माच निवळे । जैसा तैसा ।३७। येथें फिटली आशंका । श्रोते हो संदेह धरूं नका । अनुमान असेल तरी विवेका । अवलोकावें । ३८। विवेकें तुटे अनुमान । विवेकें होये समाधान । विवेकें आत्मनिवेदन । मोक्ष लाभे ।३९। केली मोक्षाची उपेक्षा । विवेकें सारिलें पूर्वपक्षा । सिद्धांत आत्मा प्रत्यक्षा । प्रमाण नलगे ।४०। हे प्रचितीचीं उत्तरें। कळती सारासारविचारें। मननध्यासें साक्षात्कारें । पावन होईजे ।४१।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'संदेहवारणनाम' समास नववा समाप्त.

दशक ९: समास १०

स्थितिनिरूपण

| देउळामधें जगन्नायेक । आणी देउळावरी बैसल | |
|---|----------|
| परी तो देवाहून अधिक । म्हणों नये कीं | 181 |
| सभा बैसली राजद्वारीं । आणी मर्कट गेलें स्तं | |
| परी तें सभेहून श्रेष्ठ चतुरीं । कैसें मानावें | 171 |
| ब्राह्मण स्नान करून गेले । आणी बक तैसेचि | बैसले। |
| परी ते ब्राह्मणापरीस भले । कैसे मानावे | 131 |
| ब्राह्मणामधें कोणी नेमस्त । कोणी जाले अव्य | गवेस्त । |
| आणी स्वान सदा ध्यानस्त । परी तें उत्तम नव्हे | 181 |
| ब्राह्मण लक्षमुद्रा नेणे । मार्जर लक्षविषईं श | गहाणें । |
| परा ब्राह्मणापरास विशेष कोणें । म्हणावें तथासी | 161 |
| ब्राह्मण पाहे भेदाभेद । मक्षिका सर्वांस | अभेद । |
| परा तास जाला ज्ञानबोध । हें तों न घड़े कीं | 1.0 |
| उंच वस्नें नीच ल्याला । आणि समर्थ उघडाच | बैसला । |
| भा आह परााक्षला । परीक्षवंती | N 10 |
| बाह्याकार केला अधीक । परी तो अवधा लो | किक। |
| भारण मुख्य यक । अंतरिकता | |
| लोकिक बरा संपादिला। परी अंतरीं सावध नाही मुख्यदेवास चकला। तो अस्तरीं सावध नाही | जाला । |
| अवार्ष्ण विषय अपन | 2 |
| भजता दवलाक । पित्रांस भजता पित्र | लोक । |
| भूतास भजतां भूतलोक । पाविजेतो | 1901 |

| जेणें जयास भजावें | । तेणें त्या लोकासी जावें | 1 |
|---------------------------|-----------------------------|--------|
| निर्गुणीं भजतां व्हावें | । निर्गुणचि स्वयें | 1881 |
| निर्गुणाचें कैसें भजन | । निर्गुणीं असावें अनन्य | |
| अनन्य होतां होईजे धन्य | । निश्चयेंसीं | 1851 |
| सकळ केलियाचें सार्थक | । देव वोळखावा येक | ı |
| आपण कोण हा विवेक | । पाहिला पाहिजे | 1831 |
| देव पाहातां निराकार | । आपला तों माईक विचार | 1 |
| सोहं आत्मा हा निर्घार | । बाणोन गेला | 1881 |
| आतां अनुमान तो काई | । वस्तु आहे वस्तुचा ठाईं | 1 |
| देहभाव कांहींच नाहीं | । धांडोळितां | ११५। |
| सिद्धास आणी साधन | । हा तों अवघाच अनुमान | 1 |
| मुक्तास आणी बंधन | । आडळेना | 1 १६ । |
| साधनें जें कांहीं साधावें | । तें तों आपणचि स्वभावें | 1 |
| आतां साधकाच्या नांवें | । सुन्याकार | ११७। |
| कुल्लाळ पावला राजपदवी | । आतां रासभें कासया राखावीं | l |
| कुल्लाळपणाची उठाठेवी | । कासया पाहिजे | १८१ |
| | । नाना साधनाचा उपाव | l |
| साध्य जालियां कैंचा ठाव | । साधनासी | 1881 |
| | । नेमें काये फळ घ्यावें | 1 |
| आपण वस्तु भरंगळावें | । कासयासी | 1501 |
| | । जीव तरी अंश ब्रह्मींचा | |
| परमात्मा तरी अनन्याचा | । ठाव पाहा | 1561 |

| उगेंचि पाहातां मीपण दिसे । शोध घेतां कांहींच नसे । |
|---|
| तत्वें तत्व निरसें । पुढें निखळ आत्मा । २२। |
| आत्मा आहे आत्मपणें। जीव आहे जीवपणें। |
| माया आहे मायापणें। विस्तारली । २३। |
| ऐसें अवधेंचि आहे । आणी आपणिह कोणीयेक आहे । |
| हें सकळ शोधून पाहे । तोचि ज्ञानी । २४। |
| शोधूं जाणे सकळांसी । परी पाहों नेणे आपणासी । |
| ऐसा ज्ञानी येकदेसी । वृत्तिरूपें । २५। |
| तें वृत्तिरूप जरी पाहिलें । तरी मग कांहींच नाहीं राहिलें। |
| प्रकृतिनगर्भे अत्रोंनि गेर्से । जिल्ला |
| उरलें ते निखळ निर्गुण । विवंचितां तेंचि आपण। |
| एसा हे परमार्थाकी उत्पार । १०००००० |
| फळ येक आणा येक । के - १ |
| फळ येक आपण येक । ऐसा नाहीं हा विवेक । फळांचे फळ कोणीयेक । स्वयेंचि होईजे । २८। |
| रंक होतां राज्य काणायक । स्वयाच होईजे ।२८। |
| रंक होतां राजा जाला। बरें पाहातां प्रत्यये आला। |
| रंकपणाचा गल्बला। रंकीं करावा । २९। |
| वेद शास्त्रें पुराणें। नाना साधनें निरूपणें। |
| साथु ज्याकारण । नाना सायास करिकी |
| प श्रह्मरूप आपणचि आंगे । मानामानिक ः |
| मार्थ में करण वाउंगे । काहींच जानीं |
| रके राजआज्ञेसि भ्यालें। वेंनि क्ये |
| मग तें भयेचि उडालें। रंकपणासिरसें । ३२। |
| 1571 |

वेदें वेदाज्ञेनें चालावें । सच्छास्त्रें शास्त्र अभ्यासावें । तीर्थं तीर्थास जावें । कोण्याप्रकारें 1331 अमृतें सेवावें अमृत । अनंतें पाहावा अनंत । भगवंतें लक्षावा भगवंत । कोण्या प्रकारें 1381 संतें असंत त्यागावे । निर्गुणें निर्गुणासी भंगावें । स्वरूपें स्वरूपीं रंगावें । कोण्याप्रकारें 1341 अंजनें ल्यावें अंजन । धनें साधावें धन । निरंजनें निरंजन । कैसें अनुभवावें ।३६। साध्य करावें साधनासी । ध्येये धरावें ध्यानासी । उन्मनें आवरावें मनासी । कोण्याप्रकारें 1391

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'स्थितिनिरूपणनाम' समास दहावा समाप्त.

> > दशक नववा समाप्त

दशक दहावा: जगज्ज्योती

दशक १०: समास १ अंतःकर्ण येक

| सकळांचे अंत:करण येक । किंवा येक नव्हे अनेक। |
|---|
| ऐसें हें निश्चयात्मक । मज निरोपावें । १ । |
| ऐसें श्रोतयानें पुसिलें । अंतः करण येक किं वेगळालें । |
| याचें उत्तर ऐकिलें । पाहिजे श्रोतीं । २ । |
| समस्तांचें अंतः कर्ण येक । निश्चयो जाणावा नेमक । |
| हा प्रत्ययाचा विवेक । तुज निरोपिला । ३ । |
| श्रोता म्हणे वक्तयासी । अंतः कर्ण येक समस्तांसी । |
| तरी मिळेना येकयेकासी । काये निमित्य । ४ । |
| येक जेवितां अवधे धाले । येक निवतां अवधे निवाले । |
| येक मरतां अवघे मेले । पाहिजेत कीं । ५ । |
| येक सुखी येक दुःखी। ऐसें वर्ततें लोकिकीं। |
| येका अंतःकरणाची वोळखी । कैसी जाणावी । ६ । |
| जनीं वेगळाली भावना । कोणास कोणीच मिळेना । |
| म्हणीन हें अनुमाना । येत नाहीं |
| अंतः कर्ण येक असतें। तरी येकाचें येकास कळों येतें। |
| काहा चारिताच न येतें । गौप्य गह्य |
| याकारणें अनुमानेना । अंतकर्ण रोक ने |
| विरोध लागला जना। काये निमित्य । १। |

| सर्प डसाया येतो । प्राणी भेऊन पळतो । येक अंतःकरण तरी तो । विरोध नसावा ।१०। |
|--|
| एसा श्रोतयाची आशंका । वक्ता म्हणे चळों नका । सावध होऊन ऐका । निरूपण ।११। अंत:कर्ण ह्मणिजे जाणीव । जाणीव जाणता स्वभाव । देहरक्षणाचा उपाव । जाणती कळा ।१२। |
| सप जाणोन डंखूं आला । प्राणी जाणोन पळाला। दोहींकडे जाणीवेला । बरें पाहा ।१३। दोहींकडे जाणीवेसी पाहिलें । तरी अंतःकर्ण येकचि जालें। विचारितां प्रत्यया आलें । जाणीन कें |
| जाणीवरूपें अंतःकर्ण। सकळांचें येक हें प्रमाण। जीवमात्रांस जाणपण। येकचि असे ।१५। येके दृष्टीचें देखणें। येके जिल्लेनें |
| पशु पक्षी किडा मुंगी । जीवमात्र निर्माण जगीं। जाणीवकळा सर्वांलागीं । येकचि आहे |
| सर्वांस जळ तें सीतळ। सर्वांस अग्नि तेजाळ। सर्वांस अंत:कर्ण केवळ। जाणती कळा ।१८। आवडे नावडे ऐसें जालें। तरी हें देहस्वभावावरी गेलें। परंतु हें कळों आलें। अंत:कर्णयोगें ।१९। |
| सर्वांचें अंतःकर्ण येक । ऐसा निश्चयो निश्चयात्मक । जाणती याचें कौतुक । चहुंकडे ।२०। इतुकेन फिटली आशंका । आतां अनुमान करूं नका । जाणणें तितुकें येका । अंतःकर्णाचें ।२१। |
| |

| जाणोन जीव चारा घेती । जाणोन भिती लपती । जाणोनियां पळोन जाती । प्राणीमात्र । २२। |
|--|
| किडामुंगीपासून ब्रह्मादिक । समस्तांस अंतःकर्ण येक । |
| यो गोवाँ - |
| थोर लाहाच कातुक । प्रत्यं जाणावें ।२३। |
| थोर लाहान तरी अग्नी । थोडें बहु तरी पाणी । |
| न्यून पूर्ण तरी प्राणी । अंतःकर्णं जाणती । २४। |
| कोठें उणें कोठें अधीक । परंतु जिनसमासला येक । |
| जंगम प्राणी कोणीयेक । जाटिल्याविण नाहीं । २५। |
| जाणीव हाणिजे अंतःकर्ण । अंतःकर्ण विष्णूचा अंश जाण । |
| विष्णू करितो पाळण । येणें प्रकारें ।२६। |
| नेणतां प्राणी संव्हारतो । नेणीव तमोगुण बोलिजेतो । |
| तमोगुणें रुद्र संव्हारितो । येणें प्रकारें । २७। |
| कांहीं जाणीव कांहीं नेणीव । हा रजोगुणाचा स्वभाव। |
| जागता नणता जाव । जन्मास येती |
| जाणीवेनें होतें सुख । नेणीवेनें होतें दुःख। |
| सुखदुः ख अवश्यक । उत्पत्तिगृणें |
| जाणण्यानणण्याची बद्धि । तोचि देवीं जाणक किरी |
| ्रें पर्वा ब्रह्मा त्रिशुन्द्धि । उत्पत्तिकर्ता |
| एसा उत्पात्त स्थिति संव्हार । प्रसंगें बोलिला विचार । |
| परंतु याचा निर्धार । प्रत्ये पाहावा । ३१। |
| दित शीवारकोष — |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'अंत:कर्ण येकनाम' समास पहिला समाप्त.

दशक १०: समास २

| स्वामीनें विचार दाखिवला । येथें विष्णूचा अभाव दिसोन आला | 1 | |
|---|-----|----------|
| ब्रह्मा विष्णु महेशाला । उरी नाहीं | 1 8 |) |
| उत्पत्ति स्थिती संव्हार । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर | l | |
| याचा पाहातां विचार । प्रत्ययो नाहीं | 1 3 |) |
| ब्रह्मा उत्पत्तिकर्ता चौमुखांचा । येथें प्रत्ययो नाहीं त्याचा | | |
| पाळणकर्ता विष्णु चौभुजांचा । तोही ऐकोन जाणों | 1 3 | ì |
| महेश संव्हार करितो । हाही प्रत्ययो कैसा येतो । | | |
| लिंगमहिमा पुराणीं तो । विपरीत बोलिला | R | ١ |
| मूळमायेस कोणें केलें। हें तों पाहिजे कळलें। | | |
| तिही देवांचे रूप जालें। ऐलिकडे | । ५ | 1 |
| मूळमाया लोकजननी । तयेपासून गुणक्षोभिणी । | | |
| गुणक्षोभिणीपासून त्रिगुणी । जन्म देवां | Ę | 1 |
| ऐसें बोलती शास्त्रकारक। आणि प्रवृत्तीचेहि लोक। | | |
| प्रत्यये पुसतां कित्येक । अकांत करिती । | 9 | 1 |
| म्हणोन त्यास पुसावेना । त्यांचेन प्रत्ययो आणवेना । | | |
| | 6 | 1 |
| प्रचितीवीण वैद्य म्हणवी । उगीच करी उठाठेवी । | | |
| | 9 | 1 |
| तैसाच हाहि विचार । प्रत्ययें करावा निर्धार । | | |
| प्रत्ययें नस्तां अंधकार । गुरुशिष्यांसी । | १० | 1 |

| बरें लोकांस काये म्हणावें । लोक म्हणती तेंचि बरवें । |
|---|
| परंतु स्वामीनें सांगावें । विशद करूनी । ११। |
| म्हणों देवीं माया केली । तरी देवांचीं रूपें मायेंत आली। |
| जरी म्हामों मारोजें मारम केटरी केटरी कारा कारा कारा कारा कारा कारा कारा का |
| जरी म्हणों मायेनें माया केली । तरी दुसरी नाहीं । १२। |
| जरी म्हणों भूतीं केली । तरी ते भूतांचीच वळली । |
| म्हणावें जरी परब्रह्में केली । तरी ब्रह्मीं कर्तृत्व नाहीं ।१३। |
| आणी माया खरी असावी । तरी ब्रह्मीं कर्तुत्वाची गोवी । |
| माया मिथ्या ऐसी जाणावी । तरी कर्तृत्व कैंचें ।१४। |
| आतां हें अवधेंचि उगवे । आणी मनास प्रत्यये फावे । |
| गेसें केलें पालिने जेनें । ——————————————————————————————————— |
| ऐसें केलें पाहिजे देवें । कृपाळुपणें । १५। |
| वेद मातृकावीण नाहीं। मातृका देहावीण नाहीं। |
| देह निर्माण होत नाहीं। देहावेगळा । १६। |
| तया देहामधें नरदेहो । त्या नरदेहांत ब्राह्मणदेहो । |
| पथा श्राह्मणदहास पारो । अलिएन ३.२ |
| असो तेट कोटा को के |
| असो वेद कोठून जाले। देह कासयाचे केले। |
| अगटल । काण्या प्रकार |
| एसा बळावला अनुमान । केलें गारिको |
| पत्या महण सविधान । होते अपने |
| प्रत्यये पाहातां सांकडी । अवधी होते विघडाविघडी । |
| अनुमानितां घटीने घटी । जवधा हात विघडाविघडी । |
| अनुमानितां घडीनें घडी । काळ जातो ।२०। |
| रमस्यादा भारतानपारी । मेर्के |
| जारामा यक प्रत्यय । यागार ना |
| जाता शास्त्राचा भाइ धगती । उसे उसे |
| गथागोवी हे उगवावी । तरी शास्त्रभेद दिसे । २२। |
| । २२। |

शास्त्र रक्षून प्रत्यये आणिला । पूर्वपक्ष त्यागून सिद्धांत पाहिला । शाहाणा मूर्ख समजाविला । येका वचनें ।२३। शास्त्रींच पूर्वपक्ष बोलिला । पूर्वपक्ष म्हणावें लटक्याला। विचार पाहातां आम्हांला । शब्द नाहीं ।२४। तथापि बोलों कांहींयेक । शास्त्र रक्षून कौतुक । श्रोतीं सादर विवेक । केला पाहिजे ।२५।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'देहआशंकानाम' समास दुसरा समाप्त.

दशक १०: समास ३

॥ श्रीराम ॥

उपाधीविण जें आकाश । तेंचि ब्रह्म निराभास ।
तें निराभासीं मूळमायेस । जन्म जाला । १ ।
तें मूळमायेचें लक्षण । वायोस्वरूपचि जाण ।
पंचभूतें आणि त्रिगुण । वायोआंगीं । २ ।
आकाशापासून वायो जाला । तो वायोदेव बोलिला ।
वायोपासून अग्नी जाला । तो अग्निदेव । ३ ।
अग्नीपासून जालें आप । तें नारायेणाचें स्वरूप ।
आपापासून पृथ्वीचें रूप । तें बीजाकारें । ४ ।
ते पृथ्वीचे पोटीं पाषाण । बहु देवांचें लक्षण ।
नाना प्रचित प्रमाण । पाषाणदेवीं । ५ ।

| नाना वृक्ष मृत्तिका । प्रचित रोकडी विश्वलोकां | 1 | | |
|--|---|----|-----|
| समस्त देवांचा थारा येका । वायोमध्यें | ١ | Ę | l |
| देव यक्षिणी कात्यायेणी । चामुंडा जिखणी मानविणी | 1 | | |
| नाना शक्ति नाना स्थानीं । देशपरत्वें | ١ | 9 | 1 |
| पुरुषनामें कित्येक । देव असती अनेक | 1 | | |
| भूतें देवतें नपुषक । नामें बोलिजेती | ١ | 6 | l |
| देव देवता देवतें भूतें । पृथ्वीमध्यें असंख्यातें | 1 | | |
| परंतु या समस्तांतें । वायोस्वरूप बोलिजे | | 9 | 1 |
| वायोस्वरूप सदा असणें । प्रसंगें नाना देह धरणें | | | |
| गुप्त प्रगट होणें जाणें । समस्तांसी | | १० | 1 |
| वायोस्वरूपें विचरती । वायोमध्यें जगज्जोती | 1 | | |
| जाणतीकळा वासना वृत्ति । नाना भेदें | | ११ | , 1 |
| आकाशापासून वायो जाला । तो दों प्रकारें विभागला | | | |
| सावधपणें विचार केला । पाहिजे श्रोतीं | | १२ | } |
| येक वारा सकळ जाणती । येक वायोमधील जगज्जोती | | | |
| जगज्जोतीच्या अनंत मूर्ती । देवदेवतांच्या | | 83 | } |
| वायो बहुत विकारला । परंतु दों प्रकारें विभागला | | | |
| आतां विचार ऐकिला । पाहिजे तेजाचा | | 88 | 1 1 |
| वायोपासून तेज जालें। उष्ण सीतळ प्रकाशलें | ì | | |
| द्विविध रूप ऐकिलें । पाहिजे तेजाचें | 1 | १५ | l į |
| उष्णापासून जाला भानु। प्रकाशरूप दैदीप्यमानु | | | |
| सर्वभक्षक हुताशनु । आणी विद्युल्यता | | १६ | 11 |
| सीतळापासून आप अमृत । चंद्र तारा आणी सीत | 1 | | |
| आतां परिसा सावचित्त । होऊन श्रोते | 1 | 86 | 1 |

तेज बहुत विकारलें । परंतु द्विविधाच बोलिलें ।
आपिह द्विविधाच निरोपिलें । आप आणी अमृत । १८।
ऐकें पृथ्वीचा विचार । पाषाण मृत्तिका निरंतर ।
आणीक दुसरा प्रकार । सुवर्ण परीस नाना रत्नें ।१९।
बहुरत्ना वसुंधरा । कोण खोटा कोण खरा ।
अवधें कळे विचारा- । रूढ होतां ।२०।
मनुष्यें कोठून जालीं । हे मुख्य आशंका राहिली ।
पुढें वृत्ति सावध केली । पाहिजे श्रोतीं ।२१।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'देहआशंकाशोधननाम' समास तिसरा समाप्त.

> दशक १०: समास ४ बीजलक्षण

आतां पाहों जातां उत्पत्ती । मनुष्यांपासून मनुष्यें होती ।
पशुपासून पशु निपजती । प्रत्यक्ष आतां । १ ।
खेचरें आणी भूचरें । वनचरें आणी जळचरें ।
नाना प्रकारीचीं शरीरें । शेरीरांपासून होती । २ ।
प्रत्यक्षास आणी प्रमाण । निश्चयास आणि अनुमान ।
मार्ग देखोन आडरान । घेऊंच नये । ३ ।
विपरीतापासून विपरीतें होती । परी शरीरेंच बोलिजेती ।
शरीरावांचून उत्पत्ती । होणार नाहीं । ४ ।

| तरी हे उत्पत्ति कैसी जाली । कासयाची कोणें केली जेणें केली त्याची निर्मिली । काया कोणें | | ų | 1 |
|--|--------|------|----|
| ऐसें पाहातां उदंड लांबलें। परी मुळीं शेरीर कैसें जालें कासयाचें उभारिलें। कोणें कैसें | | Ę | ı |
| ऐसी हे मागील आशंका । राहात गेली ते ऐका कदापी जाजु घेऊं नका । प्रत्ययो आलियानें | 1 | • | |
| प्रत्ययोचि आहे प्रमाण । मूर्खास वाटे अप्रमाण पिंडें प्रचितशब्दें जाण । विश्वासासी | 1 | G | ı |
| ब्रह्मीं मूळमाया जाली । तेचि अष्ट्रधा प्रकृति बोलिकी | | ٥ | 1 |
| भूतीं त्रिगुणीं कालवली। मूळमाया ते मूळमाया वायोस्वरूप। वायोमध्यें जाणीवेचें रुप | l l | 9 | l |
| ताच इच्छा परी आरोप । ब्रह्मीं न घडे तथापि ब्रह्मीं कल्पिला । तरी तो शब्द तायां मेकर | 1.5 | 9 0 | l |
| आत्मा निर्गुण संचला । शब्दातीत | 1 5 | ११ | |
| र रमान्य सम्म । तरा ती लागामार जानी | | १२ | 1 |
| तथापि आग्रहें लाविला । जरी घोंडा मारिला आकाशाला आकाशावरी कुंथिला । तरी तें तुटेना | | £ \$ | 1 |
| तैसें ब्रह्म निर्विकार । निर्विकारीं लाविती विकार विकार नासे निर्विकार । जैसें तैसें | ŧ | १४ | |
| तरीच पाविजे जयो । आस्त्राचा निश्चयो | ı | | |
| मायाब्रह्मीं जो समीर । त्यांत जाणता तो ईश्वर ईश्वर आणि सर्वेश्वर । तयासीच बोलिजे | 1 | १५ | 1 |
| 1780 Dashodh () 4 | 1 | १६ | il |

| 10 0 |
|--|
| तोचि ईश्वर गुणासी आला । त्याचा त्रिगुणभेद जाला। |
| ब्रह्मा विष्णु महेश उपजला । तये ठाई । १७। |
| सत्व रज आणि तम । हे त्रिगण उन्होन्य । |
| यांच्या स्वरूपाचा अनुक्रम । मागां निरोपिला ।१८। |
| जाणता विष्णु भगवान । जाणतानेणता स्वयास्य |
| नणता महश पचानन । अत्यंत भोळा । १९१ |
| त्रिगुण त्रिगुणीं कालवले । कैसे होती वेगकारे । |
| परी विशेष न्यून भासले। ते बोलावे लागती ।२०। |
| वायोमध्यें विष्णु होता । तो वायोस्वरूपचि तत्वतां। |
| पुढें जाला देहधर्ता। चतुर्भुजु ।२१। |
| तैसाच ब्रह्मा आणि महेश । देह धरिती सावकास। |
| गार्ट प्राप्त बोब्रा उन्हें र 🚣 — 🕥 |
| अपनं नेन्त्र तथास । वळ नाहा । २२। |
| आतां रोकडी प्रचिती। मनुष्यें गुप्त प्रगटती। |
| मां त्या देवांच्याच मूर्ती । सामर्थ्यवंत । २३। |
| देव देवता भूतें देवतें । चढतें सामर्थ्य आहे तेथें। |
| येणेंचि न्यायें राक्षसांतें । सामर्थ्यकळा ।२४। |
| झोटिंग वायोस्वरूप असती । सर्वेच खुळखुळां चालती । |
| खाबरी खारिका टाकून देती । अकस्मात । २५। |
| अवधेंचि न्याल अभावें । तरी हें बहतेकांस ठावें । |
| आपुलाल्या अनुभवें । विश्वलोक जाणती । २६। |
| मनुष्ये धरिती शरीरवेष । नाना परकायाप्रवेश । |
| मां तो परमात्मा जगदीश । कैसा न धरी । २७। |
| म्हणोनि वायोखकपें देह धरिले । ब्रह्मा विष्णु महेश जाले । |
| पुढें तेचि विस्तारले । पुत्रपौत्रीं । २८। |
| |

| अंतरींच स्त्रिया कल्पिल्या । तों त्या कल्पितांच निर्माण जाल्या । |
|--|
| परी तयापासून प्रजा निर्मिल्या । नाहींत कदा । २९। |
| इछून पुत्र कल्पिले । ते ते प्रसंगीं निर्माण जाले । |
| येणें प्रकारें वर्तले । हरिहरादिक । ३०। |
| पुढें ब्रह्मयानें सृष्टी कल्पिली । इछेसरिसी सृष्टी जाली। |
| जीवसृष्टि निर्माण केली । ब्रह्मदेवें ।३१। |
| नाना प्रकारीचे प्राणी कल्पिले । इछेसरिसे निर्माण जाले । |
| अवघे जोडेचि उदेले । अंडजजारजादिक । ३२। |
| येक जळस्वेदापासून जाले । ते प्राणी स्वेदज बोलिले । |
| येक वायोकरितां जाले । अकस्मात उद्विज । ३३। |
| मनुष्यांची गौडविद्या । राक्षसांची वोडंबरीविद्या । |
| ब्रह्मयाची सृष्टिविद्या । येणें प्रकारें । ३४। |
| कांहींयेक मनुष्यांची । त्याहून विशेष राक्षेसांची । |
| त्याहून विशेष ब्रह्मयाची । सृष्टिविद्या ।३५। |
| |
| जाणते नेणते प्राणी निर्मिले । वेद वदोन मार्ग लाविले । |
| ब्रह्मयानें निर्माण केले । येणें प्रकारें ।३६। |
| ब्रह्मयानें निर्माण केले । येणें प्रकारें । ३६। मग शरीरांपासून शरीरें । सृष्टि वाढली विकारें। |
| ब्रह्मयानें निर्माण केले । येणें प्रकारें । ३६। मग शरीरांपासून शरीरें । सृष्टि वाढली विकारें। सकळ शरीरे येणें प्रकारें । निर्माण जालीं । ३७। |
| ब्रह्मयानें निर्माण केले । येणें प्रकारें । ३६। मग शरीरांपासून शरीरें । सृष्टि वाढली विकारें। सकळ शरीरे येणें प्रकारें । निर्माण जालीं ।३७। येथें आशंका फिटली । सकळ सृष्टी विस्तारली। |
| ब्रह्मयानें निर्माण केले । येणें प्रकारें । ३६। मग शरीरांपासून शरीरें । सृष्टि वाढली विकारें। सकळ शरीरे येणें प्रकारें । निर्माण जालीं ।३७। येथें आशंका फिटली । सकळ सृष्टी विस्तारली। विचार पाहातां प्रत्यया आली । येथान्वयें ।३८। |
| ब्रह्मयानें निर्माण केले । येणें प्रकारें । ३६। पग शरीरांपासून शरीरें । सृष्टि वाढली विकारें । सकळ शरीरे येणें प्रकारें । निर्माण जालों ।३७। येथें आशंका फिटली । सकळ सृष्टी विस्तारली । विचार पाहातां प्रत्यया आली । येथान्वयें ।३८। ऐसी सृष्टि निर्माण केली । पुढें विष्णूनें कैसी प्रतिपाळिली । |
| ब्रह्मयानें निर्माण केले । येणें प्रकारें । ३६। मग शरीरांपासून शरीरें । सृष्टि वाढली विकारें। सकळ शरीरे येणें प्रकारें । निर्माण जालीं । ३७। येथें आशंका फिटली । सकळ सृष्टी विस्तारली। विचार पाहातां प्रत्यया आली । येथान्वयें ।३८। ऐसी सृष्टि निर्माण केली । पुढें विष्णूनें कैसी प्रतिपाळिली। हेहि विवंचना पाहिली । पाहिजे श्रोतीं । ३९। |
| ब्रह्मयानें निर्माण केले । येणें प्रकारें । ३६। मग शरीरांपासून शरीरें । सृष्टि वाढली विकारें। सकळ शरीरे येणें प्रकारें । निर्माण जालीं । ३७। येथें आशंका फिटली । सकळ सृष्टी विस्तारली। विचार पाहातां प्रत्यया आली । येथान्वयें ।३८। ऐसी सृष्टि निर्माण केली । पुढें विष्णूनें कैसी प्रतिपाळिली। |

नाना अवतार धरणें । दुष्टांचा संव्हार करणें। स्थापायाकारणें । विष्णूस जन्म ।४१। म्हणोन धर्मस्थापनेचे नर । तेहिं विष्णूचे अवतार । अभक्त दुर्जन रजनीचर । सहजचि जाले 1851 आतां प्राणी जे जन्मले। ते नेणोन संव्हारले। मूळरुपें संव्हारिले । येणें प्रकारें 1831 शरीरें रुद्र खवळेल । तैं जीवसृष्टि संव्हारेल । अवधें ब्रह्मांडचि जळेल । संव्हारकाळीं 1881 एवं उत्पत्ती स्थिती संव्हार । याचा ऐसा आहे विचार । श्रोतीं होऊन तत्पर । अवधान द्यावें 1841 कल्पांतीं संव्हार घडेल । तोचि पुढें सांगिजेल । पंचप्रळय वोळखेल । तोचि ज्ञानी 1861

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'बीजलक्षणनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक १०: समास ५

॥ श्रीराम ॥

ऐका प्रळयाचें लक्षण । पिंडीं दोनी प्रळये जाण । येक निद्रा येक मरण । देहांतकाळ । १ । देहधारक तिनी मूर्ती । निद्रा जेव्हां संपादिती । तो निद्राप्रळय श्रोतीं । ब्रह्मांडींचा जाणावा । २ । तिनी मूर्तीस होईल अंत । ब्रह्मांडास मांडेल कल्पांत । तेव्हां जाणावा नेमस्त । ब्रह्मप्रळये जाला । ३ ।

| दोनी पिंडीं दोनी ब्रह्मांडीं । च्यारी प्रळय नवखंडीं । |
|---|
| पांचवा प्रळय उदंडी । जाणिजे विवेकाचा । ४ । |
| ऐसे हे पांचहि प्रळये। सांगितले येथान्वयें। |
| आतां हे अनुभवास ये । ऐसें करूं । ५। |
| निद्रा जेव्हा संचरे । तेव्हां जागृतीव्यापार सरे । |
| सुषुप्ति अथवा स्वप्न भरे । अकस्मात आंगीं । ६ । |
| या नांव निद्राप्रळये । जागृतीचा होये क्षये । |
| आतां ऐका देहांतसमये । म्हणिजे मृत्यप्रळये । ७ । |
| देहीं रोग बळावती । अथवा कठीण प्रसंग पडती । |
| तेणे पंचप्राण जाती । व्यापार सांडुनी । ८ । |
| तिकडे गेला मनपवनु । इकडे राहिली नुस्ती तनु । |
| दुसरा प्रळये अनुमानु । असेचिना । १। |
| तिसरा ब्रह्मा निजेला । तों हा मृत्यलोक गोळा जाला । |
| अवघा व्यापार खुंटला । प्राणीमात्रांचा ।१०। |
| तेव्हां प्राणीयांचे सूक्ष्मांश । वायोचक्रीं करिती वास । |
| कित्येक काळ जातां ब्रह्मयास । जागृती घडे ।११। |
| पुन्हा मागुती सृष्टि रची । विसंचिले जीव मागुतें संची। |
| सीमा होतां आयुष्याची । ब्रह्मप्रळय मांडे ।१२। |
| शत वरुषें मेघ जाती। तेणें प्राणी मृत्य पावती। |
| असंभाव्य तर्के क्षिती । मर्यादेवेगळी ।१३। |
| सूर्य तपे बाराकळी । तेणें पृथ्वीची होय होळी । |
| अग्नि पावतां पाताळीं । शेष विष वमी ।१४। |
| आकाशीं सूर्यांच्या ज्वाळा । पाताळीं शेष विष वमी गरळा । |
| दोहिकडून जळतां भूगोळा । उरी कैंची ।१५। |

| सूर्यास खडतरता चढे। हलकालोळ चहुंकडे। |
|---|
| कोंसळती मेरुचे कडे। घडघडायमान ।१६। |
| अमरावती सत्यलोक । वैकंठ कैलामाहिक । |
| याहिवेगळे नाना लोक। भस्मोन जाती ।१७। |
| मेरू अवधाचि घसरे । तेथील महिमान तोमरे । |
| दवसमुदाव वावरे । वायोचक्रीं । १८। |
| भस्म जालियां धरत्री । प्रजन्य पद्धे शंहाशारी । |
| मही विरे जळांतरीं । निमिष्यमात्रें । १९। |
| पुढें नुस्तें उरेल जळ । तयास शोषील अन्ल । |
| पुढे येकवटती ज्वाळ । मयदिवेगळे ।२०। |
| समुद्रींचा वडवानळ । शिवनेत्रींचा नेत्रानळ । |
| सप्तकंचुकींचा आवर्णानळ । सूर्य आणि विद्युल्यता ।२१। |
| ऐसे ज्वाळ येकवटती । तेणें देव देह सोडिती। |
| पूर्वरूपें मिळोन जाती । प्रभंजनीं ।२२। |
| तो वारा झडपी वैश्वानरा। वन्ही विझेल येकसरा। |
| वायो धांवे सैरावैरा । परब्रह्मीं ।२३। |
| धूम्र वितुळे आकाशीं । तैसें होईल समीरासी । |
| बहुतांमध्यें थोडियासी । नाश बोलिला । २४। |
| वायो वितुळतांच जाण । सूक्ष्म भूतें आणी त्रिगुण । |
| ईश्वर सांडी अधिष्ठान । निर्विकल्पीं ।२५। |
| तेथें जाणीव राहिली । आणी जगज्जोती निमाली । |
| शुद्ध सारांश उरली । स्वरूपस्थिती । २६। |
| जितुकीं कांहीं नामाभिधानें । तये प्रकृतीचेनि गुणें । प्रकृती नस्तां बोलणें । कैसें बोलावें । २७। |
| महाता बालण किस बालाव । रजा |

प्रकृती अस्तां विवेक कीजे । त्यास विवेकप्रळये बोलिजे। पांचिह प्रळय वोजें । तुज निरोपिले । २८।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'पंचप्रळयनिरूपणनाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक १०: समास ६ भ्रमनिरूपण

।। श्रीराम ॥

उत्पत्ती स्थिति संव्हार । याचा निरोपिला वेव्हार । परमात्मा निर्गुण निराकार । जैसा तैसा । १ । होतें वर्ततें आणी जातें । याचा समंध नाहीं तेथें। आद्य मध्य अवसाने तें। संचलेंचि आहे । २। परब्रह्म असतचि असे । मध्येंचि हा भ्रम भासे । भासे परंतु अवघा नासे । काळांतरीं 131 उत्पत्तीस्थितीसंव्हारत । मध्येंहि अखंड होत जात । पुढे सेवटीं कल्पांत । सकळांस आहे । ४ । यामधें ज्यास विवेक आहे । तो आधींच जाणताहे। सारासार विचारें पाहें । म्हणोनियां बहुत भ्रमिष्ट मिळाले । त्यांत उमजल्याचें काय चाले । सृष्टीमधें उमजले। ऐसे थोडे । ६। त्या उमजल्यांचे लक्षण। कांहीं करूं निरूपण। भ्रमाहून विलक्षण । माहापुरुष

| ध्रम हा नसेल जयासी । मनीं वोळखावें तयासी । |
|---|
| ऐक आतां भ्रमासी । निरोपिजेल । ८ । |
| येक परब्रह्म संचलें । कदापी नाहीं विकारलें। |
| त्यावेगळें भासलें । ते भ्रमरूप । ९। |
| जयासी बोलिला कल्पांत । त्रिगुण आणि पंचथत । |
| हें अवधेचि समस्त । भ्रमरूप । १०। |
| मी तूं हा भ्रम । उपासनाहि भ्रम । |
| ईश्वरभाव हाहि भ्रम । निश्चयेंसी । ११। |
| भ्रमेणाहं भ्रमेण त्वं भ्रमेणोपासका जनाः। |
| भ्रमेणेश्वरभावत्वं भ्रममूलिमदं जगत्।। |
| याकारणें सृष्टि भासत । परंतु भ्रमचि हा समस्त । |
| यामध्यें जे विचारवंत । तेचि धन्य ।१२। |
| आतां भ्रमाचा विचारु । अत्यंतचि प्रांजळ करूं। |
| दृष्टांतद्वारें विवरूं । श्रोतयांसी । १३। |
| भ्रमण करितां दुरी देसीं । दिशाभूलि आपणासी । |
| कां वोळखी मोडे जीवलगांसी । या नांव भ्रम ।१४। |
| कां उन्मत्त द्रव्य सेविलें । तेणें अनेक भासों लागलें । |
| नाना वेथां कां झडपिलें । भूतें तो भ्रम ।१५। |
| दशावतारीं वाटती नारी । कां ते मांडली बाजीगरी। |
| उगाच संदेह अंतरीं । या नांव भ्रम ।१६। |
| |
| ठेविला ठाव तो विसरला । कां मार्गी जातां मार्ग चुकला । पट्टणामधें भांबावला । या नांव भ्रम । १७। |

| वस्तु आपणापासीं असतां । गेली म्ह | हणोनि होये दुचिता । |
|---|---------------------------|
| आपले आपण विसरतां। या नांव | भ्रम ।१८। |
| कांहीं पदार्थ विसरोन गेला । कां जें। | सिकला तें विसरला। |
| स्वपदुःखं घाबिरा जाला । या नांव | भ्रम । १९। |
| दुश्चिन्हें अथवा अपशकुन । मिथ्या | वार्तेनें धंरो मन । |
| वचक पदार्थ देखोन । या ना | विभ्रम ।२०। |
| वृक्ष काष्ठ देखिलें। मनांत | वाटे भन आलें। |
| काहाच नस्ता हडबडिलें। या नांव | भ्रम ।२१। |
| काच म्हणोन उदकांत पडे । कां सभा | । देखोन दर्पणीं प्रवाहे । |
| द्वार चुकान भलतीकडे । जाणें र | ग नांव भ्रम । २२। |
| येक अस्तां येक वाटे । येक स | गांगतां येक निवटे । |
| येक दिसतां येक उठे । या नांव | । भ्रम । २३। |
| आतां जें जें देइजेतें । तें तें | पुढें पाविजेतें। |
| मल माणुस भोजना येते । या नांव | ध्रम ।२४। |
| ये जन्मींचें पुढिले जन्मीं । कांहीं | येक पावेन मी। |
| प्रीती गुंतली मनुष्याचे नामीं । या नांव | |
| मेलें मनुष्य स्वप्ना आलें । तेणें | कांहीं मागितलें। |
| मनीं अखंड बैसलें। या नांव | . , , 4 , |
| अवधें मिथ्या म्हणौन बोले । आणि र | रामर्थ्यावर मन चाले। |
| ज्ञाते वैभवें दपटले। या नांव | |
| | ातेपणें बळें भ्रष्टे। |
| कोणीयेक सीमा फिटे । या नांव | भ्रम ।२८। |
| देहाभिमान कर्माभिमान । ज्यात्या | भमान कुळाभिमान । |
| ज्ञानाभिमान मोक्षाभिमान । या नांव | भ्रम । २९। |

| कैसा न्याय तो न कळे। केला अन्याये तो नाडळे | l |
|---|------|
| उगाच अभिमानें खवळे। या नांव भ्रम | - |
| मागील कांहीं आठवेना । पुढील विचार सुचेना | 1 |
| अखंड आरूढ अनुमाना । या नांव भ्रम | 1381 |
| प्रचीतिविण औषध घेणें। प्रचित नस्तां पथ्य करणें | 1 |
| प्रचीतीवीण ज्ञान सांगणें । या नांव भ्रम | 1321 |
| फळश्रुतीवीण प्रयोग । जानेंविण नस्ता योग | ı |
| उगाच शरीरें भोगिजे भोग । या नांव भ्रम | 1331 |
| वहा लिहितो अदृष्टीं । आणि वाचून जाते सटी | 1 |
| | 1881 |
| उदंड भ्रम विस्तारला । अज्ञानजनीं पैसावला | l |
| अल्प संकेतें बोलिला । कळावयाकारणें | 1३५1 |
| भ्रमरूप विश्व स्वभावें । तेथें काये म्हणोन सांगावें | 1 |
| निर्गुण ब्रह्मावेगळें अवधें । भ्रमरूप | 1361 |
| ज्ञात्यास नाही संसार। ऐसें बोलती अपार | l . |
| गत ज्ञात्याचे चमत्कार । या नांव भ्रम | 1391 |
| येथें आशंका उठिली । ज्ञात्याची समाधी पूजिली | 1 |
| तेथें कांही प्रचित आली । किंवा नाहीं | 1361 |
| तैसेचि अवतारी संपले । त्यांचेंहि सामर्थ्य उदंड चाले | 1 |
| तरी ते काये गुंतले । वासना धरूनि | |
| ऐसी आशंका उद्धवली । समर्थे पाहिजे निरिसली | 1 |
| इतुकेन हे समाप्त जाली । कथा भ्रमाची | 1801 |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'भ्रमनिरूपणनाम' समास सहावा समाप्त.

दशक १०: समास ७

सगुणभजन निरूपण

| अवतारादिक ज्ञानी संत । सारासारविचारें मुक्त | 1 | | |
|--|-----|----|-----|
| त्यांचें सामर्थ्य चालत । कोण्या प्रकारें | l | 8 | 1 |
| हे श्रोतयांची आशंका । पाहातां प्रश्न केला निका | 1 | | |
| सावध होऊन ऐका । म्हणे वक्ता | l | 7 | ł |
| ज्ञानी मुक्त होऊन गेले । मार्गे त्यांचें सामर्थ्य चाले | | | |
| परंतु ते नाहीं आले। वासना धरूनी | ŀ | 3 | l |
| लोकांस होतो चमत्कार । लोक मानिती साचार | 1 | | |
| परंतु याचा विचार । पाहिला पाहिजे | | 8 | 1 |
| जीत अस्तां नेणों किती । जनामधें चमत्कार होती | 1 | | |
| ऐसियाची सद्यप्रचिती । रोकडी पाहाची | 1 | eq | 1 |
| तो तरी आपण नाहीं गेला । लोकीं प्रत्यक्ष देखिला | ı | | |
| एसा हा चमत्कार जाला। यास काय म्हणावें | 1 | Ę | 1 |
| तरी हा लोकांचा भावार्थ । भाविकां देव केल्प्स | 1 | ` | • |
| अन्त्र कल्पना वेथे । कुतकचि | | 9 | 1 |
| आवडे तें स्वप्नीं देखिलें। तरी काय तेथून आलें | | | |
| रियाल ताज आठावल । तरी द्रव्य कां निमे | | 1. | ı |
| ९५ अप्रिला कल्पना । स्वानी नेन | | | |
| पर प्रवाय चालताना । अथवा आतुर जानी | | ę | 1 |
| अधिका अधिका । सामाप | 1 | • | • |
| उमजेना तरी विवेका। बरें पाहा | | 90 | ı |
| | - 1 | _ | 100 |

| ज्ञानी मुक्त होऊन गेले । | |
|---|--|
| कां जे पुण्यमार्गे चालिले । | म्हणोनियां । ११। |
| याकारणें पुण्यमार्गे चालावें । | भजन देवाचें वाढवावें। |
| न्याये सांडून न जावें । | अन्यायमार्गं । १२। |
| नाना पुरश्चरणें करावीं । | नाना तीर्थाटणें फिरावीं। |
| | वैराग्यबळें । १३। |
| निश्चयें बैसे वस्तूकडे। | तरी ज्ञानमार्गेहि सामर्थ्य चढे। |
| कोणीयेक येकांत मोडे । | ऐसें न करावें । १४। |
| येक गुरु येक देव। | |
| भावार्थ नस्तां वाव । | |
| निर्गुणीं ज्ञान जालें। | म्हणोन सगुण अलक्ष केलें। |
| | दोहिंकडे । १६। |
| नाहीं भक्ति नाहीं ज्ञान । | |
| | सांडूंच नये ।१७। |
| सांडील सगुणभजनासी । | तरी तो चाता प्रती आपेगी । |
| | तरा ता शाता वरा अवसा । |
| म्हणौनियां सगुणभजनासी । | सांडूंचि नये ।१८। |
| निःकाम बुद्धीचिया भजना। | सांडूंचि नये । १८। त्रैलोकीं नाहीं तुळणा। |
| निःकाम बुद्धीचिया भजना । सामर्थीवण घडेना । | सांडूंचि नये ।१८। त्रैलोकीं नाहीं तुळणा। नि:काम भजन ।१९। |
| निःकाम बुद्धीचिया भजना । सामर्थीवण घडेना । कामनेनें फळ घडे । | सांडूंचि नये । १८। त्रैलोकीं नाहीं तुळणा। निःकाम भजनं । १९। निःकाम भजनं भगवंत जोडे। |
| निःकाम बुद्धीचिया भजना। सामर्थीवण घडेना। कामनेनें फळ घडे। फळ भगवंता कोणीकडे। | सांडूंचि नये । १८। त्रैलोकीं नाहीं तुळणा। निःकाम भजन । १९। निःकाम भजनें भगवंत जोडे। महदांतर । २०। |
| निःकाम बुद्धीचिया भजना । सामर्थेविण घडेना । कामनेनें फळ घडे । फळ भगवंता कोणीकडे । नाना फळें देवापासी । | सांडूंचि नये । १८। त्रैलोकीं नाहीं तुळणा। निःकाम भजन । १९। निःकाम भजनें भगवंत जोडे। महदांतर । २०। आणी फळ अंतरी भगवंतासी। |
| निःकाम बुद्धीचिया भजना। सामर्थेविण घडेना। कामनेनें फळ घडे। फळ भगवंता कोणीकडे। नाना फळें देवापासी। याकारणें परमेश्वरासी। | सांडूंचि नये । १८। त्रैलोकीं नाहीं तुळणा। निःकाम भजन । १९। निःकाम भजनें भगवंत जोडे। महदांतर ।२०। आणी फळ अंतरी भगवंतासी। निःकाम भजावें ।२१। |
| निःकाम बुद्धीचिया भजना। सामर्थेविण घडेना। कामनेनें फळ घडे। फळ भगवंता कोणीकडे। नाना फळें देवापासी। याकारणें परमेश्वरासी। | सांडूंचि नये ।१८। त्रैलोकीं नाहीं तुळणा। निःकाम भजन ।१९। निःकाम भजनें भगवंत जोडे। महदांतर ।२०। आणी फळ अंतरी भगवंतासी। निःकाम भजावें ।२१। सामर्थ्य चढे मर्यादेवेगळें। |

| भक्तें जे मनीं धरावें। तें देवें आपणिच करावें। तेथें वेगळें भावावें। नलगे कदा । २३। |
|--|
| दोनी सामर्थ्ये येक होतां । काळास नाटोपे सर्वथा । |
| तेथें इतरांची कोण कथा। कीटकन्यायें ।२४। |
| म्हणोनि निःकाम भजन। वरी विशेष ब्रह्मज्ञान। |
| तयास तुळितां त्रिभुवन । उणें वाटे । २५। |
| येथें बुद्धीचा प्रकाश । आणीक न चढे विशेष । |
| प्रताप कति आणि येश । निरंतर । २६। |
| निरूपणाचा विचार । आणी हरिकथेचा गजर। |
| तेथें होती तत्पर। प्राणीमात्र । २७। |
| जेथें भ्रष्टाकार घडेना। तो परमार्थिह दडेना। |
| समाधान विघडेना । निश्चयाचें । २८। |
| सारासारविचार करणें । न्यायेअन्याये अखंड पाहातीं । |
| बुद्धि भगवंताचें देणें। पालटेना ।२९। |
| भक्त भगवंतीं अनन्य । त्यासी बुद्धि देतो आपण । |
| यद्या भगवद्वचन । सावध ऐका ।३०। |
| ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयांति ते। |
| म्हणीन सगुण भजन। वरी विशेष बहानाः |
| मधान । दल्लभ जमी |
| इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सगुणभजन |
| निरूपणनाम' समास सातवा समाप्त |

दशक १०: समास ८

प्रचितनिरूपण

| ऐका प्रचितीचीं लक्षणें। प्रचित पाहेल तें शाहाणें। | | | |
|---|---|-----|---|
| गर वेंद्रे केंद्रकार केंद्र | | 8 | l |
| नाना रत्नें नाना नाणीं । परीक्षन न घेतां हानी | 1 | Ĭ | 7 |
| प्रचित न येतां निरूपणीं । बैसोंच नये | l | 7 | ì |
| तुरंग शस्त्र दमून पाहिलें । बरें पाहातां प्रचितीस आले | l | | |
| | | ş | ١ |
| बीज उगवेलसें पाहावें । तरी मग द्रव्य घालून घ्यावें | l | | |
| | | 8 | ۱ |
| देहीं आरोग्यता जाली। ऐसी जना प्रचित आली | ł | | |
| | | ધ | ı |
| प्रचितीविण औषध घेणें। तरी मग घडचि विधडणें | ı | | |
| · · | | Ę | 1 |
| प्रचितीस नाहीं आलें। आणी सुवर्ण करविलें | ١ | | |
| तरी मग जाणावें ठिकलें । देखतदेखतां | | 9 | 1 |
| शोधून पाहिल्याविण । कांहींतरी येक कारण | 1 | | |
| होणार नाहीं निर्वाण । प्राणास घडे | | 6 | 1 |
| म्हणोनी अनुमानाचें कार्ये । भल्यांनी कदापि करूं नये | | | |
| उपाय पाहातां अपाये । नेमस्त घडे | | 8 | 1 |
| पाण्यांतील महैसीची साटी। करणें हें बुद्धिच खोटी शोधिल्याविण हिंपुटी। होणें घडे | | 0 - | |
| ाल्युटा । हाण धड | 1 | १० | |

| विश्वासें घर घेतलें। ऐसें किती नाहीं ऐकिलें। | |
|--|---|
| मैदें मैदावें केलें। तरी तें शोधिलें पाहिजे । ११ | I |
| शोधल्याविण अन्नवस्त्र घेणें । तेणें प्राणास मुकणें। | |
| लटिक्याचा विश्वास घरणें । हेंचि मूर्खपण । १२ | 1 |
| संगती चोराची धरितां। घात होईल तत्वतां। | |
| ठकु सिंतरु शोधितां । ठाई पडे । १३ | 1 |
| गैरसाळ तामगिरी । कोणी नवी मुद्रा करी । | |
| नाना कपट परोपरीं। शोधून पाहावें । १४ | l |
| दिवाळखोराचा मांड । पाहातां वैभव दिसे उदंड । | |
| परी तें अवधें थोतांड। भंड पुढें ।१५ | l |
| तैसें प्रचितीवीण ज्ञान । तेथें नाहीं समाधान । करून बहतांचा अनुमान । अन्हीत जानें | |
| विश्व अधिकार अस्ति वास्ति । विश्व | l |
| जैसें बांकन मारिनें। उपलब्ध | |
| वैद्य पाहिला परी कच्चा। तरी प्राण गेला पोराचा। | |
| वर्ष उपयि दस्याचा । कारो करो | |
| दुःखं अंतरीं दिन्ने । अण्णी केन | 1 |
| अत्यहत्यारेणा | |
| जाणत्यावरा गर्व केला । वसी नेपान | 1 |
| माना जात जाला । बर माना | |
| पापाची खंडणा जाली । जन्म | ı |
| रेण स्वयं प्राचत आसी । रचिक्ते - रे | |
| CICALIZACE I STATE IN THE STATE | • |
| | 1 |
| ब्रह्मांड कोणें केलें। कासयाचें उभारलें। मुख्य कर्त्यास वोळखिलें। म्हणिजे बरें | • |
| ।२३ | ı |

| 23. |
|---|
| येथें अनुमान राहिला । तरी परमार्थ केला तो वायां गेला । |
| प्राणा सशई बुडाला । प्रचितीविण । २४। |
| हें परमार्थाचें वर्म । लटिकें बोले तो अध्या । |
| लटिकें मानी तो अधमोद्धम । येथार्थ जाणावा । २५। |
| येथें बोलण्याची जाली सीमा। नेणतां न कळे परमात्मा। |
| असत्य बाही सर्वोक्ता 👈 🛶 |
| माझे उपासनेचा बडिवार । ज्ञान सांगावें साचार। |
| प्रिक्रमा सोक्स्म |
| नियारि कालता उत्तर । प्रभूस लाग ।२७। |
| म्हणोनि सत्यचि बोलिलें । कर्त्यास पाहिजे वोळिखलें । |
| मायोद्भवाचें शोधिलें। पाहिजे मूळ । २८। |
| तेचि पुढें निरूपण । बोलिलेंचि बोलिलें प्रमाण । |
| श्रोतीं सावध अंतःकर्ण। घातलेंचि घालावें ।२९। |
| सूक्ष्म निरूपण लागलें । तेथे बोलिलेंचि मागुतें बोलिलें। |
| श्रोत्यांस पाहिजे उमजलें । म्हणौनियां ।३०। |
| प्रचित पाहातां निकट। उडोन जाती परिपाठ। |
| |
| महणानि ह खटपट । करणे लागे ।३१। |
| परिपार्ठेचि जरी बोलिलें । तरी प्रचितसमाधान बुडालें । |
| प्रचितसमाधान राखिलें। तरी परिपाठ उडे ।३२। |
| ऐसी सांकडी दोहींकडे। म्हणौन बोलिलेंचि बोलणें घडे। |
| दोनी राखोनियां कोडें । उकलून दाऊं । ३३। |
| परिपाठ आणी प्रचित प्रमाण । दोनी राखोन निरूपण । |
| श्रोते परम विचक्षण । विवरोत पुढें । ३४। |
| 3 |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'प्रचितनिरूपणनाम' समास आठवा समाप्त.

दशक १० : समास ९

पुरुषप्रकृति

| आकाशीं वायो जाला निर्माण । तैसी ब्रह्मीं मूळमाया जाण । | | | |
|--|-----|---|-----|
| त्या वायोमधें त्रिगुण । आणी पंचभूतें | | | 1 |
| वटबीजीं असे वाड । फोडून पाहातां न दिसे झाड । | | | |
| नाना वृक्षांचे जुंबाड । बीजापासून होती | 1 | 5 | l |
| तैसी बीजरूप मूळमाया। विस्तार जाला तेथूनियां। | Ì | | |
| 3 | 1 3 | ş | 1 |
| तेथें दोनी भेद दिसती। विवेकें पाहावी प्रचिती | ١ | | |
| | 1 | ጸ | 1 |
| तयामधें जाणीवकळा । जगज्जोतीचा जिव्हाळा | l | | |
| वायो जाणीव मिळोन मेळा । मूळमाया बोलिजे | i | ų | ŧ |
| सरिता म्हणतां बायको भासे। तेथें पाहातां पाणीच असे | ı | | |
| विवेकी हो समजा तैसें । मूळमायेसी | 1 | Ę | 1 |
| वायो जाणीव जगज्जोती । तयास मूळमाया म्हणती | ١ | | |
| पुरुष आणी प्रकृती । याचेंच नांव | 1 | 9 | ι |
| वायोस म्हणती प्रकृती । आणि पुरुष म्हणती जगज्जोती | | | ` |
| पुरुषप्रकृता । श्वशक्ती । याचेंच नांव | | 1 | . |
| वायोमधें जाणीव विशेष । तोचि पक्तीमधें पक्त | Ì | • | 1 |
| न गाष्टाचा विश्वास । धरिला पाहिजे | | • | |
| वायो शक्ति जाणीव ईश्वर । अर्धनारीन्त्रेयर | ١ | 4 | 1 |
| लोक म्हणती निरंतर । येणें प्रकारें | l | | |
| Aldok Let | | 8 | 0 1 |

| वायोमध्यें जाणीव गुण । तेंचि ईश्वराचें लक्षण । |
|--|
| तयापासून त्रिगुण । पुढें जालें ।११। |
| तया गुणांमधें सत्वगुण । निखळ जाणीवलक्षण । |
| त्याचा देहधारी आपण । विष्णु जाणा । १२। |
| त्याच्या अंशें जग चाले। ऐसें भगवद्गीता बोले। |
| गुतले तेचि उगवले। विचार पाहातां । १३। |
| येक जाणीव वांटली । प्राणीमात्रांस विभागली । |
| जाणजाणों वांचिवली । सर्वत्र काया । १४। |
| तयेचें नांव जगज्जोती । प्राणीमात्र तिचेन जिती । |
| याची रोकडी प्रचिती। प्रत्यक्ष पाहावी ।१५। |
| पक्षी श्वापद किडा मुंगी । कोणीयेक प्राणी जगीं। |
| जाणीव खेळे त्याचा आंगी । निरंतर ।१६। |
| जाणोनी काया पळिवती । तेणें गुणें वांचती । |
| दडती आणी लपती । जाणजाणों ।१७। |
| आवध्या जगास वांचिवती । म्हणोनि नामें जगज्जोती । |
| ते गेलियां प्राणी मरती । जेथील तेथें ।१८। |
| मुळींचे जाणीवेचा विकार । पुढें जाला विस्तार । |
| जैसे उदकाचे तुषार । अनंत रेणु ।१९। |
| तैसे देव देवता देवतें भूतें। मिथ्या म्हणों नये त्यांतें। |
| आपलाल्या सामर्थ्यं ते । सृष्टीमधें फिरती ।२०। |
| सदा विचरती वायोस्वरूपें। स्वइच्छा पालटिती रूपें। |
| अज्ञानप्राणी भ्रमें संकल्पें । त्यास बाधिती ।२१। |
| ज्ञात्यास संकल्पचि असेना । म्हणोन त्यांचेच बाधवेना । |
| याकारणें आत्मज्ञाना । अभ्यासावें । २२। |

| अभ्यासिलीयां आत्मज्ञान । सर्वकर्मास होये खंडण । |
|---|
| हे रोकडी प्रचित प्रमाण । संदेह नाहीं । २३। |
| ज्ञानेविण कर्म विघडे। हें तों कदापि न घडे। |
| सद्गुरुवीण ज्ञान जोडे । हेंहि अघटीत । २४। |
| म्हणोन सद्गुरु करावा। सत्संग शोधून धरावा। |
| तत्वावचार विवरावा । अंतर्यामीं । २५। |
| तत्वें तत्व निरसोन जातां । आपला आपणचि तत्वता । |
| अनन्यभावे सार्थकता । सहजचि जाली । २६। |
| विचार न करितां जें केलें। तें तें वाउगें वेर्थ गेलें। |
| म्हणोनि विचारीं प्रवर्तलें । पाहिजे आधीं । २७। |
| विचार पाहेल तो पुरुषु । विचार न पाहे तो पशु। |
| ऐसी वचनें सर्वेशु । ठाईं ठाईं बोलिला । २८। |
| सिद्धांत साधायाकारणें। पूर्वपक्ष लागे उडवणें। |
| परंतु साधका निरूपणे । साक्षात्कार |
| श्रवण मनन निजध्यास । प्रचितीनें बाणतां विश्वास । |
| राजडा साक्षात्कार सायास । करणेंचि नलगे ।३०। |
| इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'पुरुषप्रकृतिनाम' |
| समास नवता उपायन |

समास नववा समाप्त.

दशक १०: समास १०

चळाचळनिरूपण

| गगनासारिखें ब्रह्म पोकळ । उदंड उंच अंतराळ | 5 1 | | |
|---|-----|---|---|
| निर्गुण निर्मळ निश्चळ । सदोदित | 1 | 8 | l |
| त्यास परमात्मा म्हणती । आणिक नामें नेणों किती | 1 | | |
| परी तें जाणिजे आदिअंतीं । जैसें तैसें | 1 | ? | ı |
| विस्तीर्ण पसरला पैस । भोंवता दाटला अवकाश | | | |
| भासचि नाहीं निराभास । जैसें तैसें | 1 | 3 | 1 |
| चहूंकडे पाताळतळीं । अंतचि नाहीं अंतराळीं | | | |
| कल्पांतकाळीं सर्वकाळीं । संचलेंचि असे | 1 | 8 | 1 |
| ऐसें कांहीं एक अचंचळ। तें अचंचळीं भासे चंचळ | | | |
| त्यास नामेंहि पुष्कळ । त्रिविधा प्रकारें | | 4 | 1 |
| न दिसतां नांव ठेवणें । न देखतां खूण सांगणें | 1 | | |
| असो हें जाणायाकारणें। नामाभिघानें | | Ę | 1 |
| मूळमाया मूळप्रकृति । मुळपुरुष ऐसें ह्याणती | ł | | |
| शिवशक्ति नामें किती । नाना प्रकारें | 1 | 9 | 1 |
| परी जें नाम ठेविलें जया । आधीं वोळखावें तया प्रचितीवीण कासया । वलगना करावी | | | |
| 1111111 1 417 111 417 141 | _ | 6 | I |
| रूपाचि न धरितां सोये । नामासरिसें भरंगळों नये प्रत्ययाविण गळंगा होये । अनुमानज्ञानें | | 9 | 1 |
| निश्चळ गगनीं चंचळ वारा । वाजों लागला भरारां | | , | 1 |
| परी त्या गगना आणि समीरा । भेद आहे | | 0 | l |

| तैसें निश्चळ परब्रह्म । चंचळ माया भासला भ्रम । |
|---|
| त्या भ्रमाचा संभ्रम। करून दाऊं ।११। |
| जैसा गगनीं चालिला पवन । तैसें निश्चळीं जालें चळण । |
| इछा स्फूर्तिलक्षण । स्फूर्णरूप । १२। |
| अहंपणें जाणीव जाली । तेचि मूळप्रकृति बोलिली । |
| माहाकारणकाया रचली । ब्रह्मांडीची । १३। |
| महामाया मूळप्रकृती । कारण ते अव्याकृती । |
| सूक्ष्म हिरण्यगर्भ म्हणती । विराट ते स्थूळ ।१४। |
| ऐसें पंचीकर्ण शास्त्रप्रमये । ईश्वरतनुचतुष्टये । |
| ह्मणोन हें बोलणें होये । जाणीव मूळमाया ।१५। |
| परमात्मा परमेश्वर । परेश ज्ञानधन ईश्वरु । |
| जगदीश जगदात्मा जगदेश्वरु । पुरुषनामें । १६। |
| सत्तारूप ज्ञानस्वरूप । प्रकाशरूप जोतिरूप। |
| कारणरूप चिद्रूप । शुद्ध सूक्ष्म अलिप्त । १७। |
| आत्मा अंतरात्मा विश्वात्मा । द्रष्टा साक्षी सर्वात्मा । |
| क्षेत्रज्ञ शिवात्मा जीवात्मा । देही कूटस्त बोलिजे ।१८। |
| इंद्रात्मा ब्रह्मात्मा हरिहरात्मा । येमात्मा धर्मात्मा नैरुत्यात्मा । |
| वरुणवायोकुबेरात्मा । ऋषीदेवमुनिधर्ता । १९। |
| गण गंधर्व विद्याधर । येक्ष किन्नर नारद तुंबर । |
| सर्व लोकांचे अंतर । तो सर्वांतरात्मा बोलिजे । २०। |
| चंद्र सूर्य तारामंडळें । भूमंडळें मेघमंडळें। |
| येकवीस स्वर्गे सप्त पाताळें। अंतरात्माच वर्तवी ।२१। |

| गुप्त वल्ली पाल्हाळली। | तिचीं पुरुषनामें घेतलीं। |
|---|--------------------------------|
| आतां स्त्रीनामें ऐकिलीं। | पाहिजे श्रोतीं ।२२। |
| मूळमाया जगदेश्वरी । प | परमेश्वरी। |
| विश्ववंद्या विश्वेश्वरी। है | त्रैलोक्यजननी । २३। |
| अंतर्हेतु अंतर्कळा । म | मौन्यगर्भ जाणीवकळा । |
| चपळ जगज्जोती जीवनकळा। | |
| युक्ति बुद्धि मति धारणा । स | प्तावधानता नाना चाळणा । |
| भूत भविष्य वर्तमाना । उ | उकलून दावी । २५। |
| जागृति स्वप्न सुषुप्ती जाणे । त् | र्या ताटस्ता अवस्ता जाणे । |
| सुख दुःख सकळ जाणे। | |
| ते परम कठीण कृपाळु । ते | ते परम कोमळ स्नेहाळु। |
| ते परम क्रोधी लोभाळु । म | |
| शांती क्ष्मा विरक्ती भक्ती। उ | अध्यात्मविद्या सायोज्यमुक्ति । |
| विचारणा सहजस्थिती। उ | • |
| पूर्वी पुरुषनामें बोलिलीं । उ | उपरी स्त्रीनामें निरोपिलीं। |
| आतां नपुषकनामें ऐकिलीं। प | |
| जाणणें अंतःकर्ण चित्त । श | प्रवण मनन चैतन्य जीवित । |
| येतें जातें सुचीत । ह | |
| मीपण तूंपण जाणपण । इ जीवपण शिवपण ईश्वरपण । 3 | |
| ऐसीं नामें उदंड असती । प | |
| विचारवंत ते जाणती । स | पर्वांतरात्मा । ३२। |
| | |

आत्मा जगज्जोती सर्वज्ञपण । तीनी मिळोन येकचि जाण । अंतःकर्णीच प्रमाण । ज्ञेप्तीमात्र 1331 ढींग जाले पदार्थाचे । पुरुष स्त्री नपुंसक नामाचे । परंतु सृष्टीरचनेचें । किती ह्यणोन सांगावे । ३४। सकळ चाळिता येक । अंतरात्मा वर्तवी अनेक । मुंगीपासून ब्रह्मादिक । तेणेंचि चालती । ३५। तो अंतरात्मा आहे कैसा । प्रस्तुत वोळखावा आमासा । नाना प्रकारींचा तमासा । येथेंचि आहे 13६1 तो कळतो परी दिसेना । प्रचित येते परी भासेना। शरीरीं असे परी वसेना । येके ठाईं 1391 तीक्षणपणें गगनीं भरे। सरोवर देखतांच पसरे। पदार्थ लक्षून उरे । चहुंकडे 1361 जैसा पदार्थ दृष्टीस दिसतो । तो त्यासारिखाच होतो। वायोहूनि विशेष तो । चंचळविषईं 1361 कित्येक दृष्टीनें देखे । कितीयेक रसनेनें चाखे । कितीयेक ते वोळखे। मनेंकरूनि 1801 श्रोत्रीं बैसोन शब्द ऐकतो । घ्राणेंद्रियें वास घेतो । त्वचेइंद्रियें जाणतो । सीतोष्णादिक 1881 ऐशा जाणे अंतर्कळा। सकळामधें परी निराळा। पाहातां त्याची अगाघ लीळा । तोचि जाणे 1851 तो पुरुष ना सुंदरी । बाळ तारुण्य ना कुमारी । नपुंसकाचा देहधारी । परी नपुंसक नव्हे 1831

तो चालवी सकळ देहासी । करून अकर्ता म्हणती त्यासी । तो क्षेत्रज्ञ क्षेत्रवासी । देही कूटस्त बोलिजे । ४४। द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च। क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।। दोनी पुरुष लोकीं असती । क्षराक्षर बोलिजेती । सर्व भूतें क्षर म्हणती । अक्षर कूटस्त बोलिजे ।४५। उत्तम पुरुष तो आणीक । निःप्रपंच निःकळंक । निरंजन परमात्मा येक । निर्विकारी । ४६। च्यारी देह निरसावे। साधकें देहातीत व्हावें। देहातीत होतां जाणावें । अनन्य भक्त । ४७। देहमात्र निरसुनी गेला । तेथें अंतरात्मा कैसा उरला । निर्विकारीं विकाराला । ठाव नाहीं 1881 निश्चळ परब्रह्म येक । चंचळ जाणावें माईक । ऐसा प्रत्यय निश्चयात्मक । विवेकें पाहावा ।४९। येथें बहुत नलगे खळखळ । येक चंचळ येक निश्चळ। शाश्वत कोणतें केवळ । ज्ञानें वोळखावें ।५०। असार त्यागून घेईजे सार । म्हणोन सारासारविचार । नित्यानित्य निरंतर । पाहाती ज्ञानी । ५१। जेथे ज्ञानचि होतें विज्ञान । जेथें मनचि होतें उन्मन । तेथें कैंचें चंचळपण । आत्मयासी 1421 सांगणोवांगणीचें काम नव्हे । आपुल्या अनुभवें जाणावें। प्रत्ययाविण सिणावें । तेंचि पाप 1431

| सत्यायेवढें सुकृत नाहीं । असत्यायेवढें पाप नाहीं। |
|--|
| प्रचितीविण कोठेंचि नाहीं । समाधान ।५४। |
| सत्य म्हणिजे स्वरूप जाण । असत्य माया हें प्रमाण। |
| येथें निरोपिलें पापपुण्य । रूपेंसहित । ५५। |
| दृश्य पाप वोसरलें। पुण्य परब्रह्म उरलें। |
| अनन्य होतांच जालें । नामातीत । ५६। |
| आपण वस्तु स्वतसिद्ध । तेथें नाहीं देहसमंध्र । |
| पापरासी होती दग्ध । येणें प्रकारें । ५७। |
| येरवीं ब्रह्मज्ञानेंवीण । जें जें साधन तो तो सीण । |
| नाना दोषांचें क्षाळण । होईल कैसें ।५८। |
| पापाचें वळलें शरीर । पापचि घटे ववांकर । |
| अतरा राग वरविरी उपचार । काय करी |
| नाना क्षेत्री हें मुंडिलें । नाना तीर्थी हें स्टू |
| भाग निम्रहा खाडल । ठाईं ठाई |
| नाना मृत्तिकेनें घांसिलें । अथवा वाकानेने 🗝 😯 |
| गरा ह वरावरा तासिल । तरी शब्द नव्हे |
| सणाच गोळे गिळिले । गोमबाचे गोरो 👈 |
| राष्ट्रां धातल । काष्ट्रमणी |
| वर्ष वरीवरी केला। परी अंतरी के |
| पाया दहनाला । आत्मजान पाहित्ने |
| नाना व्रतं नाना दानें । नाना क्येक न्या प्र |
| काटागुण । महिमा भारतान |
| विश्वा |

आत्मज्ञान पाहे सदा । त्याच्या पुण्यास नाहीं मर्यादा । दुष्ट पातकाची बाघा । निरसोन गेली ।६५। वेदशास्त्रीं सत्यस्वरूप । तेंचि ज्ञानियांचे रूप । पुण्या जालें अमूप । सुकृतें सीमा सांडिली ।६६। या प्रचितीच्या गोष्टी । प्रचित पाहावी आत्मदृष्टी । प्रचितवेगळे कष्टी । होऊंच नये ।६७। आगा ये प्रचितीचे लोक हो । प्रचित नस्तां अवघा शोक हो । रघुनाथकृपेनें राहो । प्रत्यय निश्चयाचा ।६८।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'चळाचळनिरूपणनाम' समास दहावा समाप्त.

दशक दहावा समाप्त

दशक अकरावा : भीमदशक

दशक ११: समास १

सिद्धांतनिरूपण

| आकाशापासून वायो होतो । हा तों प्रत्यये येतो | ł | | |
|---|---|---|---|
| वायोपासून अग्नी जो तो । सावध ऐका | ı | १ | 1 |
| वायोची कठिण घिसणी । तेथें निर्माण जाला वन्ही | | | |
| मंद वायो सीतळ पाणी । तेथुनि जालें | l | 7 | 1 |
| आपापासून जाली पृथ्वी । ते नाना बीजरूप जाणावी | | | |
| बीजापासून उत्पत्ति व्हावी । हा स्वभावचि आहे | ı | 3 | l |
| मुळीं सृष्टी कल्पनेची। कल्पना आहे मुळींची | ŧ | | |
| जयेपासून देवत्रयाची । काया जाली | l | 8 | 1 |
| निश्चळामधें चंचळ । तेचि कल्पना केवळ | Į | | |
| अष्टधा प्रकृतीचें मूळ । कल्पनारूप | 1 | ų | 1 |
| कल्पना तेचि अष्टधा प्रकृति । अष्टधा तेचि कल्पनामूर्ती | ī | | |
| मुळाग्रापासून उत्पत्ति । अष्टधा जाणावी | | Ę | I |
| पांच भूतें तीन गुण । आठ जालीं दोनी मिळोन | 1 | | |
| म्हणौनि अष्टघा प्रकृति जाण । बोलिजेते | | 9 | 1 |
| मुळीं कल्पनारूप जाली। पुढें तेचि फांपावली | ı | | |
| केवळ जडत्वास आली। सृष्टिरूपें | | 6 | l |
| मुळीं जाली ते मूळमाया । त्रिगुण जाले ते गुणमाया | l | | |
| जडत्व पावली ते अविद्या माया । सृष्टिरूपें | t | 9 | t |

| पुढें च्यारी खाणी जाल्या । च्यारी वाणी विस्तारल्या । |
|--|
| नाना योनी प्रगटल्या । जारा नेरानी |
| नाना योनी प्रगटल्या। नाना वेक्ती ११०। |
| द्वा जाला उभारणी । अपनं नेन्न नं |
| मागील दशकीं विशद करूनि । बोलिलें असे । ११। |
| परत आतां गंगी १०० |
| परतु आतां संकळित । बोलिजेल संव्हारसंकेत । |
| श्रात वक्त यथ चित्त । देऊन ऐका |
| शत वरुषें अनावृष्टि । तेथें आटेल जीवसृष्टि । |
| ग्रेशा कल्यांताच्या स्टेर्ग । तथ आटल जावसृष्टि । |
| ऐशा कल्पांताच्या गोष्टी । शास्त्रीं निरोपिल्या ।१३। |
| बाराकळा तपे सर्व । तेणें प्रश्लीनी राज्य ने |
| भग त रक्षा विस्ति : क्यों : |
| वें जन कोनी के |
| तें जळ शोषी वैश्वानरु । वन्ही झडपी समीरु । |
| समीर वितुळे निराकारु । जैसें तैसें ।१५। |
| ऐसी सृष्टिसंव्हारणी जाली। मागां विस्तारें बोलिली। |
| Providence - C. C. |
| नानानरास उरला । स्वरूपास्थात । १६। |
| तेथें जीवशिव पिंडब्रह्मांड । आटोन गेलें थोतांड । |
| मायेअविद्येचें बंड । वितळोन गेलें । १७। |
| विवेदें कि बोक्सि करें |
| विवेकेंचि बोलिला क्षये। म्हणोनि विवेकप्रळये। |
| विवेकी जाणती काये। मूर्खास कळे ।१८। |
| सृष्टि शोधितां सकळ। येक चंचळ येक निश्रल। |
| चंचळास कर्ता चंचळ । चंचळरूपी ।१९। |
| जो राक्क करी हैं - अ |
| जो सकळ शरीरीं वर्ते । सकळ कर्तुत्वास प्रवर्ते । |
| करून अकर्ता हा वर्ते । शब्द जया ।२०। |
| राव रंक ब्रह्मादिक । सकळांमधें वर्ते येक । |
| नाना शरीरें चाळक । इंद्रियेंद्वारें । २१। |
| 1441 |

| त्यास परमात्मा बोलती । सकळ कर्ता ऐसे जाणती | 1 |
|---|------|
| परि तो नासेल प्रचिती । विवेकें पाहावी | 1251 |
| जो स्वानामधें गुरुगुरितो । जो सूकरांमधें कुरुकुरितो | 1 |
| गाढवीं भरोन भुंकतो । आटाहास्यें | 1531 |
| लोक नाना देह देखती। विवेकी देहांत पाहाती | 1 |
| पंडित समदर्शनें घेती । येणें प्रकारें | 1881 |
| विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि । | |
| शुनि चैव श्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः॥ | |
| देह पाहातां वेगळाले । परंतु अंतर येकचि जालें | 1 |
| प्राणीमात्र देखिलें । येकांतरें | 1241 |
| अनेक प्राणी निर्माण होती। परी येकचि कळा वर्तती | |
| तेथे नांव जगज्जोती । जाणती कळा | |
| श्रोत्रीं नाना शब्द जाणे । त्वचेमधे सीतोष्ण जाणे | 1 |
| चक्षुमधें पाहों जाणे । नाना पदार्थ | 1501 |
| रसनेमधें रस जाणे । घ्राणामधें वास तो जाणे | |
| कर्मइंद्रियामधें जाणे । नाना विषयस्वाद | |
| सूक्ष्म रूपें स्थूळ रक्षी । नाना सुखदुःखें परीक्षी | 1 |
| त्यास म्हणती अंतरसाक्षी । अंतरात्मा | 1281 |
| आत्मा अंतरात्मा विश्वात्मा । चैतन्य सर्वात्मा सूक्ष्मात्मा | |
| जीवात्मा शिवात्मा परमात्मा । द्रष्टा साक्षी सत्तारूप | • |
| विकारामधील विकारी। अखंड नाना विकार करी तयास वस्तु म्हणती भिकारी। परम हीन | |
| तयास वस्तु क्णता । मफारा । परम हान | 1381 |

| सर्व येकचि दिसती। अवघा येकंकार करिती। |
|---|
| ते अवधी माईक स्थिती । चंचळामध्यें ।३२। |
| चंचळ माया ते माईक । निश्चळ परब्रह्म येक । |
| नित्यानित्यविवेक । याकारणें ।३३। |
| जातो जीव तो प्राण । नेणे जीव तो अज्ञान । |
| जन्मतो जीव तो जाण । वासनात्मक ।३४। |
| ऐक्य जीव तो ब्रह्मांश । जेथें पिंडब्रह्मांडिनरास । |
| येथें सांगितले विशेष । चत्वार जीव । ३५। |
| असो हें अवधें चंचळ । चंचळ जाईल सकळ। |
| निश्चळ तें निश्चळ । आदिअंतीं ।३६। |
| आद्य मध्य अवसान । जे वस्तु समसमान । |
| निर्विकारी निर्गुण निरंजन । निःसंग निःप्रपंच ।३७। |
| उपाधिनिरासें तत्वतां । जीवशिवास ऐक्यता । |
| विवंचून पाहों जातां । उपाधि कैंची ।३८। |
| असो जाणणें तितुकें ज्ञान । परंतु होतें विज्ञान । मनें वोळखावें उन्मन । कोण्या प्रकारें ।३९। |
| |
| वृत्तीस न कळे निवृत्ति । गुणास कैंची निर्गुणप्राप्ती । गुणातीत साधक संतीं । विवेकें केलें ।४०। |
| श्रवणापरीस मनन सार। मननें कळे सारासार। |
| निजध्यासें साक्षात्कार । निःसंग वस्तु ।४१। |
| निर्गुणीं जे अनन्यता । तेचि मुक्ति सायोज्यता । |
| लक्ष्यांश वाच्यांश आतां । पुरे जाला ।४२। |
| अलक्षीं राहिलें लक्ष । सिद्धांतीं कैंचा पूर्वपक्ष । |
| अप्रत्यक्षास कैंचें प्रत्यक्ष । असोन नाहीं ।४३। |

असोन माईक उपाधी । तेचि सहजसमाधी । श्रवणें वळावी बुद्धी । निश्चयाची ।४४।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सिद्धांतिनरूपणनाम' समास पहिला समाप्त.

दशक ११: समास २

॥ श्रीराम ॥

येक निश्चळ येक चंचळ। चंचळीं गुंतलें सकळ। निश्चळ तें निश्चळ । जैसें तैसें पाहे निश्चळाचा विवेक । ऐसा लक्षांमधें येक । निश्चळाऐसा निश्चयात्मक । निश्चळिच तो । २ । या निश्चळाच्या गोष्टी सांगती । पुन्हां चंचळाकडे धांवती । चंचळचक्रीं निघोन जाती । ऐसे थोडे चंचळीं चंचळ जन्मलें। चंचळाचिमधें वाढलें। अवघें चंचळिच बिंबलें । जन्मवरी 181 पृथ्वी अवधी चंचळाकडे । करणें तितुकें चंचळीं घडे । चंचळ सांडून निश्चळीं पवाडे । ऐसा कैंचा चंचळ कांहीं निश्चळेना । निश्चळ कदापी चळेना । नित्यानित्यविवेकें जना । उमजे कांहीं । ६ । कांहीं उमजलें तरी नुमजे। कांहीं समजलें तरी न समजे। कांहीं बुझे तरी निर्बुजे। किंचित मात्र । ७। संदेह अनुमान आणि भ्रम । अवघा चंचळामधें श्रम । निश्चळीं कदा नाहीं वर्म । समजलें पाहिजे

चंचळाकरी तितुकी माया । माईक जाये विलया। लाहान थोर म्हणावया । कार्य नाहीं । ९ । सगट माया विस्तारली । अष्टधा प्रकृति फांपावली । चित्रविचित्र विकारली । नाना रूपें 1901 नाना उत्पत्ती नाना विकार । नाना प्राणी लाहान थोर । नाना पदार्थ मकार । नाना रूपें । ११। विकारवंत विकारलें। सूक्ष्म जडत्वास आलें। अमर्याद दिसों लागलें । कांहींचाबाहीं । १२। मग नाना शरीरें निर्माण जालीं । नाना नामाभिधानें ठेविलीं । भाषापरत्वें कळों आलीं । कांहीं कांहीं । १३। मग नाना रीति नाना दंडक । आचार येकाहून येक। वर्तीं लागले सकळ लोक । लोकाचारें 1881 अष्ट्या प्रकृतीचीं शरीरें। निर्माण जालीं लाहानथोरें। पुढें आपुलाल्या प्रकारें । वर्तीं लागती । १५। नाना मतें निर्माण जालीं । नाना पाषांडें वाढलीं । नाना प्रकारीचीं उठिलीं । नाना बंडें 1981 जैसा प्रवाह पडिला। तैसाच लोक चालिला। कोण वारील कोणाला। येक नाहीं ।१७। पृथ्वीचा जाला गळांठा । येकाहून येक मोठा । कोण खरा कोण खोटा । कोण जाणे ।१८। आचार बहुकचिंत पडिला । कित्येक पोटासाठीं बुडाला । अवघा वरपंगचि जाला। साभिमानें ।१९। देव जाले उदंड । देवांचें मांडलें भंड । भूतादेवतांचे थोतांड । येकचि जालें 1201

| मुख्य देव तो कळेना । काशास कांहींच मिळेना । येकास येक वळेना । अनावर । २१। |
|--|
| |
| ऐसा नासला विचार। कोण पाहातो सारासार। |
| कैंचा लहान कैंचा थोर । कळेचिना ।२२। |
| शास्त्रांचा बाजार भरला। देवांचा गल्बला जाला। |
| लोक कामनेच्या व्रताला । झोंबोन पडती । २३। |
| ऐसें अवधें नासलें। सत्यासत्य हारपलें। |
| अवधें अनायेक जालें । चहूंकडे । २४। |
| THE TRACE TO THE TABLE TO THE T |
| मतामतांचा गल्बला । कोणी पुसेना कोणाला । |
| जो जे मतीं सांपडला । तयास तेंचि थोर ।२५। |
| असत्याचा अभिमान । तेणें प्रातित्वे परस्य |
| हाणानिया जाते जन । सन्य कोलिन |
| लोक वर्तनी महत्त्व भे |
| लोक वर्तती सकळ । तें ज्ञात्यास करतळामळ। |
| जाता एका कवळ । विवेकी हो |
| लोक कोण्या पंथें जाती । आणि कोण्या देवास भजती । |
| ऐसी हे रोक्टी स्टिश काण्या दवास भजती। |
| ऐसी हे रोकडी प्रचिती । सावध ऐका । २८। |
| शृतको धात पाषाणाटिक । ग्रेनियम - |
| बहुतेक लोकांचा दंडक । प्रतिमादेवीं ।२१। |
| नाजा नेन्द्र |
| गर्मा दवीचे अत्यार । चिरे रे |
| भारतर किरिया मान्य |
| येक सकळांचा अंत्राच्या ६०० |
| येक सकळांचा अंतरात्मा । विश्वीं वर्ते जो विश्वात्मा । द्रष्टा साक्षी जागावस । क्रिकीं वर्ते जो विश्वात्मा । |
| भागाता माना के |
| पका ते निर्मात जिल्हा । |
| अनन्यभावें केवळ । वस्तुच ते |
| गयक । वस्तुच त |
| 1780 Dasbodh (Marathi) |

1780 Dasbodh (Marathi)_Section_15_1_Front

| येक नाना प्रतिमा। दुसरा अवतारमहिमा | 11 |
|---|------|
| तिसरा तो अंतरात्मा । चौथा तो निर्विकारी | 1331 |
| ऐसे हे चत्वार देव । सृष्टीमधील स्वभाव | 1 |
| यावेगळा अंतर्भाव । कोठेंचि नाहीं | 1381 |
| अवधें येकचि मानिती । ते साक्ष देव जाणती | 1 |
| परंतु अष्ट्या प्रकृति । वोळखिली पाहिजे | 1341 |
| प्रकृतीमधील देव । तो प्रकृतीचा स्वभाव | 1 |
| भावातीत माहानभाव । विवेकें जाणावा | 1361 |
| जो निर्मळास ध्याईल । तो निर्मळिच होईल | 1 |
| जो जयास भजेल । तो तद्रूप जाणावा | 1991 |
| क्षीर नीर निवडिती। ते राजहंस बोलिजेती | ı |
| सारासार जाणती । ते माहानभाव | |
| | |
| अरे जो चंचळास ध्याईल । तो सहजचि चळेल | 1 |
| जो निश्चळास भजेल । तो निश्चळिच | 1381 |
| अर जा चचळास ध्याइल । तो सहजचि चळेल जो निश्चळास भजेल । तो निश्चळचि प्रकृतीसारिखें चालावें । परी अंतरीं शाश्वत वोळखावें सत्य होऊन वर्तावें । लोकांऐसें | 1381 |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'चत्वारदेवनिरूपणनाम' समास दुसरा समाप्त.

> दशक ११: समास ३ सिकवणनिरूपण

।। श्रीराम ॥

बहुतां जन्मांचा सेवट। नरदेह सांपडे अवचट। येथें वर्तावें चोखट। नीतिन्यायें । १।

| प्रपंच करावा नेमक । पाहावा परमार्थविवेक । |
|--|
| The state of the s |
| जेणेंकरितां उभय लोक । संतुष्ट होती । २ । |
| शत वरुषें वय नेमिलें । त्यात बाळपण नेणतां गेलें । |
| तारुण्य अवधें वेचलें । विषयांकडे । ३ । |
| वृद्धपणीं नाना रोग। भोगणें लागे कर्मभोग। |
| आतां भगवंताचा योग । कोणे वेळे । ४ । |
| राजिक देविक उदेग चिंता । अन्न वस्त्र देहममता। |
| THE THINK IN THE PARTY OF THE P |
| |
| लोक मरमरों जाती। वडिलें गेलीं हे प्रचिती। |
| जाणत जाणत निश्चिती । काये मानिलें । ६ । |
| अग्र गृहासी लागला । आणि सावकास निजेला । |
| ता कैसा म्हणावा भला । आत्महत्यारा |
| पुण्यमार्ग अवधा बुडाला । पापसंग्रह उतंत ज्यान |
| पनपातनचा द्याला । तस्त्रीण कर् |
| तरी आता ऐसें न करावें। बहुत विवेकें वर्तावें। |
| इहलोक परत्र साधावें । दोहींकडे |
| आलमानें कर के |
| आळसाचें फळ रोकडें। जांभया देऊन निद्रा पडे। |
| Salar Mide Mide |
| साक्षप कारता कवती । क्लं - रे |
| |
| जाळस उदास नागलाए । |
| आळसें करंटपणाच्या खुणा । प्रगट होती |
| म्हणीन आळ्म चापण ११२। |
| म्हणीन आळस नसावा । तरीच पाविजे वैभवा । अरत्रीं परत्रीं जीता । |
| नाना । समाधान |
| 1780 Dasbodh (Marathi) Section 15 |

1780 Dasbodh (Marathi)_Section_15_2_Front

| प्रेल करावा तो कोण । हेंचि ऐका निरूपण। |
|--|
| सावध करून अंतःकरण । निमिष्य येक ।१४। |
| प्रातःकाळीं उठावें । कांहीं पाठांतर करावें । |
| येथानशक्ति आठवावें । सर्वोत्तमासी । १५। |
| मग दिशेकडे जावें। जे कोणासिच नव्हे ठावें। |
| शौच्य आच्मन करावें । निर्मळ जळें । १६। |
| मुखमार्जन प्रातः स्नान । संध्या तर्पण देवतार्चन । |
| पुढें वैश्यदेव उपासन । येथासांग । १७। |
| कांहीं फळाहार घ्यावा । मग संसारधंदा करावा । |
| सुशब्दें राजी राखावा । सकळ लोक । १८। |
| ज्या ज्याचा जो व्यापार । तेथें असावें खबर्दार । |
| दुश्चितपणें तरी पोर । वेढा लावी ।१९। |
| चुके ठके विसरे सांडी । आठवण जालियां चर्फडी । |
| दुश्चित आळसाची रोकडी । प्रचित पाहा ।२०। |
| याकारणें सावधान । येकाप्र असावें मन। |
| तरी मग जेवितां भोजन । गोड वाटे ।२१। |
| पुढें भोजन जालियांवरी । कांही वाची चर्चा करी। |
| येकांतीं जाऊन विवरी। नाना ग्रंथ ।२२। |
| तरीच प्राणी शाहाणा होतो । नाहींतरी मूर्खिच राहातो। |
| लोक खाती आपण पाहातो । दैन्यवाणा ।२३। |
| एक सदेवपणाचें लक्षण । रिकामा जाऊं नेदी येक क्षण । |
| न्यवयस्थायाच ज्ञान । बरें पाहे |
| कांहीं मेळवी मग जेवी । गुंतल्या लोकांस उगवी। |
| शरीर कारणीं लावी। कांहीं तरी । २५। |

कांहीं धर्मचर्चा पुराण । हरीकथा निरूपण । वायां जाऊं नेदी क्षण । दोहींकडे । २६। ऐसा जो सर्वसावध । त्याचा कैंचा असेल खेद । विवेकें तुटला समंध । देहबुद्धीचा । २७। आहे तितुकें देवाचें । ऐसे वर्तणें निश्चयाचें। मूळ तुटें उद्देगाचें । येणें रीतीं । २८। प्रपंचीं पाहिजे सुवर्ण । परमार्थीं पंचिकर्ण । महावाक्याचें विवरण । करितां सुटे । २९। कर्म उपासना आणि ज्ञान । येणें राहे समाधान । परमार्थांचें जें साधन । तेंचि ऐकत जावें । ३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सिकवणनिरूपणनाम' समास तिसरा समाप्त.

दशक ११: समास ४ सारविवेकनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

ब्रह्म म्हणिजे निराकार । गगनासारिखा विचार । विकार नाहीं निर्विकार । तेंचि ब्रह्म । १। ब्रह्म म्हणिजे निश्चळ । अंतरात्मा तो चंचळ । द्रष्टा साक्षी केवळ । बोलिजे तया । २। तो अंतरात्मा म्हणिजे देव । त्याचा चंचळ स्वभाव । पाळिताहे सकळ जीव । अंतरीं वसोनी । ३। त्यावेगळे जड पदार्थ । तेणेंवीण देह वेर्थ । तेणोंचि कळे परमार्थ । सकळ कांहीं । ४।

| कर्ममार्ग उपासनामार्ग । ज्ञानमार्ग सिद्धांतमार्ग । |
|--|
| प्रवृत्तिमार्ग निवृत्तिमार्ग । देवचि चालवी । ५ । |
| चंचळेंविण निश्चळ कळेना । चंचळ तरी स्थिरावेना। |
| ऐसे हे विचार नाना । बरे पाहा । ६। |
| चंचळिनश्चळाची संधी। तेथें भांबावते बुद्धि। |
| कर्ममार्गाचे जे विधी । ते मग ऐलिकडे । ७ । |
| देव या सकळांचें मूळ । देवास मूळ ना डाळ। |
| परब्रह्म तें निश्चळ । निर्विकारी । ८ । |
| निर्विकारी आणि विकारी । येक म्हणेल तो भिकारी । |
| विचाराची होते वारी। देखतदेखतां । १। |
| सकळ परमार्थास मूळ । पंचीकर्ण माहावाक्य केवळ । |
| तेंचि करावें प्रांजळ । पुनःपुन्हां ।१०। |
| पहिला देह स्थूळकाया। आठवा देह मूळमाया। |
| अष्ट देह निर्शिलयां । विकार कैंचा । ११। |
| याकारणें विकारी । साचाऐसी बाजीगरी । |
| येक समजे येक खरी। मानिताहे । १२। |
| उत्पत्ति स्थिती संव्हार । यावेगळा निर्विकार । |
| कळायासाठीं सारासार । विचार केला । १३। |
| सार असार दोनी येक । तेथें कैंचा उरला विवेक । |
| परीक्षा नेणती रंक । पापी करंटे ।१४। |
| जो येकचि विस्तारला। तो अंतरात्मा बोलिला। |
| नाना विकारीं विकारला । निर्विकारी नव्हे |

| ऐसें प्रगटिच आहे । आपुल्या प्रत्ययें पा | हें । |
|--|-------|
| काय राहे काय न राहे। हें कळेना | 1861 |
| जें अखंड होत जातें। जें सर्वदा संव्हारते | a i |
| रोकडें प्रचितीस येतें । जनामधें | |
| येक रडे येक चर्फडी । येकांची धरी नरड | डी। |
| येकमेकां झोंबती बराडी। दुकळ्ळले जैसे | |
| नाहीं न्याये नाहीं नीति । ऐसे हे लोक वर्तर्त | |
| आणि अवधेंच सार म्हणती । विवेकहीन | 1881 |
| धोंडे सांडून सोनें घ्यावें । माती सांडून अन्न खावे | |
| आणि आवधेंचि सार म्हणावें । बाष्कळपणें | 1201 |
| म्हणौनि हा विचार करावा । सत्यमार्ग तोचि धरावा | |
| लाभ जाणोन घ्यावा । विवेकाचा | 1281 |
| सारगार येकचि सरी । तेथें परीक्षेस कैंची उरी | |
| याकारणें चतुरीं । परीक्षा करावी | 1221 |
| जेथें परीक्षेचा अभाव । तेथें दे घाव घे घाव | 1441 |
| सगट सारिका स्वभाव। लौंदपणाचा | |
| धव ये तेंचि घ्यावें। घेत न में ने | 1531 |
| उंच नीच वोळखावें। त्या नांव ज्ञान | 1000 |
| त्रसारसातस आले । येक लाभें आपर — | 1581 |
| येक ते करंटे ठकले। मुदल गेलें | |
| जाणत्यानें ऐसें न करावें। सार वेंकि क्योरक | 1241 |
| र्भार त जाणान त्यागाव । वसक जैसे | |
| प वमक करी गाणा । उसे भे भ | 1761 |
| तेथें सुचिस्मंत ब्राह्मण । काय करी | |
| | 1501 |

जेहिं जैसें संचित केलें । तयास तैसेंचि घडलें । जें अभ्यासीं पडोन जडलें । तें तों सुटेना । २८। येक दिव्यात्रें भिक्षती । येक विष्ठा साविडिती । आपल्या विडलांचा घेती । साभिमान । २९। असो विवेकेंविण । बोलणें तितुका सीण। कोणीयेकें श्रवण मनन । केलेंचि करावें ।३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सारविवेकनिरूपणनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक ११: समास ५

राजकारणनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

कर्म केलेंचि करावें । ध्यान धरिलेंचि धरावें । विवरलेंचि विवरावें । पुन्हां निरूपण । १। तैसें आम्हांस घडलें । बोलिलेंचि बोलणें पिडलें । कां जें विघडलेंचि घडलें । पाहिजे समाधान । २। अनन्य राहे समुदाव । इतर जनास उपजे भाव । ऐसा आहे अभिप्राव । उपायाचा । ३। मुख्य हरिकथा निरूपण । दुसरें तें राजकारण। तिसरें तें सावधपण । सर्वविषईं । ४। चौथा अत्यंत साक्षेप । फेडावे नाना आक्षेप । अन्याये थोर अथवा अल्प । क्ष्मा करीत जावे । ५। जाणावें पराचें अंतर । उदासीनता निरंतर। नीतिन्यायासि अंतर । पडोंच नेदावें । ६।

| संकेतें लोक वेधावा । येकूनयेक बोधावा । |
|--|
| प्रपंचिं सावरावा । येथानशक्त्या । ७ । |
| प्रपंचसमयो वोळखावा । धीर बहुत असावा । संमंध पडों नेदावा । अति परी तयाचा । ८ । |
| |
| उपाधीसी विस्तारावें । उपाधींत न संपडावें । नीचत्व पहिलेंच घ्यावें । आणि मूर्खपण । ९ । |
| ार पर्याच । आणि मूखपण । १ । |
| दोष देखोन झांकावे । अवगुण अखंड न बोलावे । |
| दुर्जन सांपडोन सोडावे । परोपकार करूनी ।१०। |
| तन्हे भरोंच नये। यनाते जाग नाने |
| नव्हे तेंचि करावें कार्ये । दीर्घ प्रेत्नें । १११। |
| फंड नासाचि नेदावा । पहिला परांग रांग्य |
| अतिवाद न करावा । कोणीयेकासी |
| 1१२। |
| दुसऱ्याच अभिष्ठ जाणावें । तहवांचें चन्न |
| तरा जाव दिगातगाव ती |
| दुःख दुसऱ्याचें जाणावें । ऐकोन तरी वांटून घ्यावें । बरें वाईट सोगावें । |
| कों - अपनाय जाणाव । एकोन तरी वांटन घ्याते । |
| वासाव । समहाज्ञान |
| अपार असातें प्रातंत्र । ००० |
| असाव पाठातर । सन्निधनि असान कि |
| सदा सर्वदा तत्पर । परोपकारासी |
| |
| क्रिया करूनी करवावी । तन्हें सांडून सांडवावी। |
| क्रिया करूनी करवावी । बहुतांकरवीं |
| करणें असेल अपने विद्याकरवा |
| |
| परस्परेचि प्रत्यये । प्रचितीस आणारक |
| जो बहतांचें गोरी- |
| पहुताच सामाना । नाग |
| बहुत सोसितां उरेना । महत्व आपुलें |
| । १८। |
| |

| राजकारण बहुत करावें। परंतु कळोंच नेदावें। |
|---|
| utulean —— Y |
| लोक पारस्वर गांतरके । |
| लोक पारखून सांडावे । राजकारणें अभिमान झाडावे । |
| पुन्हा मेळवून घ्यावें। दुरील दोरें ।२०। |
| हिरवटासी दुरी धरावें । कचरटासी न बोलावें। |
| समंध पडतां सोडून जावें। येकीकडे ।२१। |
| एस असो राजकारण । सांगतां तें असाधारण । |
| सुचित अस्ता अतःकरण । राजकारण जाणे । २२। |
| वृक्षी रूढासी उचलावें । यद्धकर्त्यास दकला हात्वें । |
| कारबाराचें सांगावें । आंग कैसें । २३। |
| पाहातां तरी सांपडेना । कीर्ति करूं तरी राहेना । |
| आलें वैभव अभिळासीना । कांहीं केल्या । २४। |
| येकांची पाठी राखणें। येकांस देखो न सकणें। |
| ऐसीं नव्हेत कीं लक्षणें । चातुर्याचीं । २५। |
| न्याय बोलतांहि मानेना । हित तेंचि न ये मना। |
| येथें कांहींच चालेना । त्यागेंविण । २६। |
| श्रोतीं कळोन आक्षेपिलें । म्हणौन बोलिलेंचि बोलिलें। |
| |
| न्यूनपूर्ण क्ष्मा कल । पाहिज श्राता । २७। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'राजकारणनिरूपणनाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक ११: समास ६

महंत लक्षण

| शुद्ध नेटकें ल्याहावें । लेहोन शुद्ध शोधावें | ŧ | | |
|--|---|----|---|
| शोधून शुद्ध वाचावें । चुकों नये | ı | 8 | 1 |
| विश्कळित मात्रुका नेमस्त कराव्या । घाट्या जाणोन सदृढ घराव्या | Į | | |
| रंग राखोन भराव्या । नाना कथा | l | ? | l |
| जाणायाचें सांगतां न ये । सांगायाचें नेमस्त न ये | ı | | |
| समजल्याविण कांहींच न ये । कोणीयेक | l | 3 | Į |
| हरिकथा निरूपण। नेमस्तपणें राजकारण | 1 | | |
| वर्तायाचें लक्षण । तेंही असावें | l | 8 | 1 |
| पुसों जाणे सांगों जाणे । अर्थांतर करूं जाणे | 1 | | |
| सकळिकांचें राखों जाणे । समाधान | l | 4 | l |
| दीर्घ सूचना आधीं कळे। सावधपणें तर्क प्रबळे | 1 | | |
| जाणजाणोनि निवळे । येथायोग्य | | Ę | - |
| ऐसा जाणे जो समस्त । तोचि महंत बुद्धिवंत | l | | |
| यावेगळें अंतवंत । सकळ कांहीं | | 9 | 1 |
| ताळवेळ तानमानें । प्रबंद कविता जाड वचनें | ı | | |
| मज्यालसी नाना चिन्हें । सुचती जया | 1 | 6 | 1 |
| जो येकांतास तत्पर । आधीं करी पाठांतर | ı | | |
| अथवा शोधी अर्थांतर । ग्रंथगर्भीचें | | 9 | 1 |
| आधींच सिकोन जो सिकवी । तोचि पावे श्रेष्ठ पदवी | 1 | | |
| गुंतल्या लोकांस उगवी । विवेकबळें | | १० | ŧ |

अक्षर सुंदर वाचणें सुंदर । बोलणें सुंदर चालणें सुंदर। भक्ति ज्ञान वैराग्य सुंदर । करून दावी ।११। जयास येत्नचि आवडे । नाना प्रसंगीं पवाडे । धीटपणें प्रगटे, दडे-। ऐसा नव्हे ।१२। सांकडीमधें वर्तों जाणे । उपाधीमधें मिळों जाणे । अलिप्तपणें राखों जाणे । आपणासी । १३। आहे तरी सर्वां ठाईं। पाहों जातां कोठेंचि नाहीं। जैसा अंतरात्मा ठाईंचा ठाईं । गुप्त जाला 1881 त्यावेगळें कांहींच नसे । पाहों जातां तो न दिसे । न दिसोन वर्तवीतसे । प्राणीमात्रांसी । १५। तैसाच हाहि नानापरी । बहुत जनास शाहाणे करी । नाना विद्या त्या विवरी । स्थूळ सूक्ष्मा । १६। आपणाकरितां शाहाणे होती । ते सहजचि सोये धरिती । जाणतेपणाची महंती । ऐसी असे । १७। राखों जाणें नीतिन्याय । न करी न करवी अन्याये । कठीण प्रसंगी उपाये । करूं जाण 1861 ऐसा पुरुष धारणेचा । तोचि आधार बहुतांचा । दास म्हणे रघुनाथाचा । गुण घ्यावा 1881

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'महंतलक्षणनाम' समास सहावा समाप्त.

दशक ११: समास ७

चंचळनदीनिरूपण

| चंचळ नदी गुप्त गंगा । स्मरणें पावन करी जगा | 1 | | |
|---|-----|-----|---|
| प्रचित रोकडी पाहा गा । अन्यथा नव्हे | 1 | १ | 1 |
| केवळ अचंचळीं निर्माण जाली । अधोमुखें बळें चालिली | 1 | | |
| अखंड वाह परा देखिली । नाहींच कोणीं | 1 | 2 | 1 |
| वळणें वांकाणें भोवरे । उकळ्या तरंग झरे | l | | |
| लादा लाटा कातरे। ठाई ठाई | 1 | 3 | l |
| शुष्क जळाचे चळाळ । धारा धबाबे खळाळ | ١ | | |
| चिपळ्या चळक्या भळाळ । चपळ पाणी | ì | 8 | 1 |
| फेण फुगे हेलावे । सैरावैरा उदक धावे थेंब फर्ड मोजावे । अस्मेर ि | 1 | | |
| थेंब फुई मोजावे । अणुरेणु किती वोसाणे वाहाती उदंड । झोतावे दर्कुटे दगड | l | 4 | 1 |
| खडकें बेटें आड़ । वळसा उठे | l | | |
| मृद भूमी तटोन गोल्या । करील के | l | E | 1 |
| र अन् अपन पाहिल्या स्थामध | | | |
| थक ते वाहतिच गेले । गेन | ! | 9 | 1 |
| व्याधायम | | | |
| पक आपटआपटोंच गोनी । केन ६ ००० | | 6 | 1 |
| पा प | | 9 | ı |
| वळाच चितरके । ने ने | Ì | • | • |
| | | 9 0 | 1 |
| तेथें ब्रह्मादिकांचीं भुवनें । ब्रह्मांडदेवतांचीं स्थानें उफराटी गंगा पाहातां मिळणें । सकळांस तेथें | t | | |
| ा सक्ळास तथ | 1 8 | 9 9 | 1 |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'चंचळनदीनिरूपणनाम' समास सातवा समाप्त.

दशक ११: समास ८

अंतरात्माविवरण

| आधीं वंदूं सकळकर्ता । समस्त देवांचा जो भर्ता । |
|--|
| त्याचे भजनीं प्रवर्ता । कोणीतरी । १ । |
| तेणेंविण कार्य न चले। पडिलें पर्ण तेंहि न हाले। |
| अवधें त्रैलोक्येचि चाले । जयाचेनी । २ । |
| तो अंतरात्मा सकळांचा । देवदानवमानवांचा |
| चत्वारखाणीचत्वारवाणीचा । प्रवर्तकु |
| तो येकलाचि सकळां घटीं । करी भित्रभित्रा राहाटी । |
| सकेळ सृष्टीचा गोष्टी । किती म्हणौन मांगाती |
| एसा जो गप्तेश्वर । त्यास स्टामाने र् |
| " एक एक थार थार । जयाचेनि भोगिती |
| एसा जेण वोळखिला । तो विशंका |
| सहजास्थताला । कोण प्रसे |
| अवध त्रैलोक्य विवरावें । तेव्हां कर्म - |
| विषय । संगाव । नलगेचि कांहीं |
| पहिता ऐसा कोण आहे । जो अंतरकार |
| अल्प स्वल्प कळोन राहे । समाधानें |
| आर हैं पाहिलेंच पानातें । ि |
| वाचावें। गुलाववराव । |
| THE PART A |
| देखिल्या ऐकिल्या ऐसा । विवेक सांगे । १०। |
| 1091 |

| उदंड ऐकिलें देखिलें । अंतरात्म्यास नवचे पुरवलें । |
|---|
| प्राणी देहधारी बाउलें । काये जाणे ।११। |
| पूर्णास अपूर्ण पुरेना । कां जें अखंड विवरेना । |
| विवरता विवरतां उरेना । देवावेगळा । १२। |
| विभक्तपणें नसावें । तरीच भक्त म्हणवावें । |
| नाहीतरी वेर्थीच सिणावें । खटाटोपें । १३। |
| उगाच घर पाहोन गेला । घरधनी नाहीं वोळखिला । |
| राज्यामधूनचि आला । परी राजा नेणे । १४। |
| देहसंगें विषये भोगिले । देहसंगें प्राणी मिरवलें। |
| देहधर्त्यास चुकलें । नवल मोठें । १५। |
| ऐसे लोक अविवेकी । आणि म्हणती आम्ही विवेकी । |
| बरें ज्याची जैसी टाकी। तैसें करावें ।१६। |
| मूर्ख अंतर राखों नेणे। म्हणौन असावें शाहाणे। |
| ते शाहाणेहि दैन्यवाणे । होऊन गेले । १७। |
| अंतरीं ठेवणें चुकलें। दारोदारीं धुंडूं लागलें। |
| तैसें अज्ञानास जालें। देव न कळे । १८। |
| या देवाचें ध्यान करी । ऐसा कोण सृष्टीवरी । वृत्ती येकदेसी तर्तरी । पवाडेल कोठें ।१९। |
| |
| ब्रह्मांडीं दाटले प्राणी । बहुरूपें बहुवाणी । भूगर्भी आणि पाषाणीं । कितीयेक । २०। |
| इतुके ठाईं पुरवला । अनेकीं येकचि वर्तला। |
| गुप्त आणि प्रगटला । कितीयेक । २१। |

चंचळें न होईजे निश्चळ । प्रचित जाणावी केवळ।

चंचळ तें नव्हे निश्चळ । परब्रह्म तें ।२२।

तत्वें तत्व जेव्हां उडे । तेव्हां देहबुद्धि झडे ।

निर्मळ निश्चळ चहुंकडे । निरंजन ।२३।

आपण कोण कोठें कैंचा । ऐसा मार्ग विवेकाचा ।

प्राणी जो स्वयें काचा । त्यास हें कळेना ।२४।

भल्यानें विवेक धरावा । दुस्तर संसार तरावा ।

अवधा वंशचि उधरावा । हिरभक्ती करूनी ।२५।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'अंतरात्माविवरणनाम' समास आठवा समाप्त.

दशक ११: समास ९ उपदेश ॥ श्रीराम ॥

आधीं कर्माचा प्रसंग । कर्म केलें पाहिजे सांग । कदाचित पडिलें व्यंग । तरी प्रत्यवाय घडे । १ । म्हणौन कर्म आरंभिलें । कांहींयेक सांग घडलें । जेथजेथें अंतर पडिलें । तेथें हरिस्मरण करावें । २ । तरी तो हरी आहे कैसा । विचार पाहावा ऐसा । संधेपूर्वीं जगदीशा । चोविसां नामीं स्मरावें । ३ । चोविसनामी सहस्रनामी । अनंतनामी तो अनामी । तो कैसा आहे अंतर्यामीं । विवेकें वोळखावा । ४ ।

| तेमर्जाम तैमल | TI |
|---|-------|
| ब्राह्मण स्नानसंध्या करून आला । मग तो देवार्चनास बैसल | |
| येथासांग तो पूजिला। प्रतिमादेवो | 141 |
| नाना देवांच्या नाना प्रतिमा । लोक पूजिती धरून प्रेम | TI |
| ज्याच्या प्रतिमा तो परमात्मा । कैसा आहे | । ६ । |
| ऐसें वोळखिलें पाहिजे । वोळखोन भजन कीज | |
| जैसा साहेब नमस्कारिजे । वोळखिल्याउपरी | 101 |
| तैसा परमात्मा परमेश्वर । बरा वोळखावा पाहोन विचार | |
| तरीच पाविजे पार । भ्रमसागराचा | 101 |
| पूजा घेताती प्रतिमा । आंगा येतो अंतरात्म | ΓI |
| अवतारी तरी निजधामा। येऊन गेले | 181 |
| परी ते निजरूपें असती । तें निजरूप ते जगज्जोती | • |
| सत्वगुण तयेस म्हणती । जाणती कळा | 1901 |
| तये कळेचे पोटीं । देव असती कोट्यानुकोर्ट | |
| या अनुभवाच्या गोष्टी । प्रत्ययें पाहाव्या | 1881 |
| देहपुरामधें ईश । म्हणोन तया नांव पुरुष | T I |
| जगामधें जगदीश । तैसा वोळखावा | 1881 |
| जाणीवरूपें जगदांतरें । प्रस्तुत वर्तती शरीरे | fι |
| अंतःकरणविष्णु येणें प्रकारें । वोळखावा | 1831 |
| तो विष्णु आहे जगदांतरीं । तोचि आपले अंतरी | ř i |
| कर्ता भोक्ता चतुरीं । अंतरात्मा वोळखावा | 1881 |
| एक देखे हुंगे चाखे । जाणोन किनारे चीनारे | 1 |
| कित्येक आपुले पारिखे । जाणताहे | 1841 |

येकचि जगाचा जिव्हाळा । परी देहलोभाचा आडताळा । देहसमंधें वेगळा । अभिमान घरी । १६। उपजे वाढे मरे मारी । जैशा उचलती लहरीवरी लहरी । चंचळ सागरीं भरोवरी । त्रैलोक्य होत जातें ।१७। त्रैलोका वर्तवितो येक । म्हणौन त्रैलोक्यनायेक । ऐसा प्रत्ययाचा विवेक । पाहाना कैसा । १८। ऐसा अंतरात्मा बोलिला । परी तोहि तत्वांमधें आला । पुढें विचार पाहिजे केला । माहावाक्याचा 1881 आधीं देखिला देहधारी । मग पाहावें जगदांतरीं । तयाचेनियां उपरी । परब्रह्म पावे । २०। परब्रह्माचा विचार । होतां निवडे सारासार । चंचळ जाईल हा निर्धार । चुकेना कीं । २१। उत्पत्ति स्थिति संव्हार जाण । त्याहून वेगळा निरंजन । येथें ज्ञानाचें विज्ञान । होत आहे । २२। अष्टदेह थानमान । जाणोन जालियां निर्शन । पुढें उरे निरंजन । विमळ ब्रह्म । २३। विचारेंचि अनन्य जाला । पाहाणाराविण प्रत्यय आला । तेहि वृत्तिनिवृत्तीला । बरें पाहा 1881 येथें राहिला वाच्यांश । पाहोन सांडिला लक्ष्यांश । लक्ष्यांशासरिसा वृत्तिलेश । तोहि गेला 1241

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'उपदेशनाम' समास नववा समाप्त.

दशक ११: समास १०

निःस्पृह वर्तणूक

।। श्रीराम ।।

| मूर्ख येकदेसी होतो। चतुर सर्वत्र पाहातो | ı | | |
|---|---|----|---|
| जैसा बहुघा होऊन भोगितो । नाना सुखें | Ī | 8 | 1 |
| तोचि अंतरात्मा महंत । तो कां होईल संकोचित | ı | | |
| प्रशस्त जाणता समस्त । विख्यात योगी | | 2 | l |
| कर्ता भोक्ता तत्वतां । भूमंडळीं सर्व सत्ता | ı | | |
| त्यावेगळा त्यास ज्ञाता । पाहेसा कवणु | ı | 3 | ı |
| ऐसें महंतें असावें । सर्व सार शोधुन घ्यावें | E | | |
| पाहों जातां न संपडावें । येकायेकी | l | 8 | l |
| कीर्तिरूपें उदंड ख्यात । जाणती लाहान थोर समस्त | 1 | | |
| वेश पाहातां शाश्वत । येकही नाहीं | ١ | ų | 1 |
| प्रगट कीर्ति ते ढळेना । बहुत जनास कळेना | | | |
| पाहों जातां आडळेना । काये कैसें | ı | Ę | l |
| वेषभूषण तें दूषण । कीर्तिभूषण तें भूषण | ı | | |
| चाळणेविण येक क्षण । जाउच नेदी | ١ | 9 | l |
| त्यागी वोळखीचे जन। सर्वकाळ नित्य नूतन | | | |
| लोक शोधून पाहाती मन । परी इछा दिसेना | | 6 | ١ |
| पुर्ते कोणाकडे पाहेना । पुर्ते कोणांसि बोलेना | 1 | | |
| पुर्ते येके स्थळीं राहेना । उठोन जातो | | 8 | 1 |
| जातें स्थळ तें सांगेना । सांगितलें तेथें तरी जायेना | | | _ |
| आपुली स्थिती अनुमाना । येवोंच नेदी | 1 | 80 | 1 |

| लोकीं केलें तें चुकावी । लोकीं भाविलें तें उलथवी । |
|--|
| लोकीं तर्किलें तें दावी । निर्फळ करूनी । ११। |
| लोकांस पाह्याचा आदर । तेथें याचा अनादर। |
| लोक सर्वकाळ तत्पर । तेथें याची अनिछ्या । १२। |
| एवं किल्पतां कल्पेना। ना तर्कितांहि तर्केना। |
| कदापी भावितां भावेना । योगेश्वर । १३। |
| ऐसें अंतर सांपडेना । शरीर ठाईं पडेना । |
| क्षणयेक विशंभेना । कथाकीर्तन । १४। |
| लोक संकल्प विकल्प करिती । ते अवघेचि निर्फळ होती। |
| जनाची जना लाजवी वृत्ति । तेव्हां योगेश्वर ।१५। |
| बहुतीं शोधून पाहिलें। बहुतांच्या मनास आलें। तरी मग जाणावें साधिलें। महत्कृत्य |
| |
| अखंड येकांत सेवावा । अभ्यासचि करीत जावा । काळ सार्थकचि करावा । जनासहित |
| उत्तम गुण तितुके घ्यावे । घेऊन जनास सिकवावे । |
| उद्दे समहारो क्यांचे । सरी |
| अखंड कामाची लगबग । उपासनेस लावावें जग। |
| लाक समजोन गा । भाग नि |
| आधीं कष्ट मग फळ । कष्टिच नाहीं हें जिल्ल |
| ताक्षपावण केवळ । वृथापष्ट |
| लोक बहुत शोधावे । त्यांचे अधिकार — |
| जाणजाणीन धरावे । जवळी दुरी । २१। |

| अधिकारपरत्वें कार्य होतें | 1 | अधिकार नस्तां वेर्थ जातें। |
|---------------------------|---|--|
| आजाम शाधावा चित्ते | 1 | नाना प्रकारें । २२। |
| आधकार पाहोन कार्य सांगणे | | The state of the s |
| आयला मगज राखण | | काहींतरी । ३३। |
| हें प्रचितीचें बोलिलें | 1 | आधीं केलें मग सांगितलें। |
| मानल तरा पााहज घेतलें | I | कोणीयेकें । २४। |
| महंतें महंत करावे | 1 | युक्तिबुद्धीनें भरावे। |
| जाणते करून विखरावे | 1 | नाना देसीं ।२५। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'नि:स्पृह वर्तणूकनाम' समास दहावा समाप्त.

दशक अकरावा समाप्त

O O

दशक बारावा: विवेक वैराग्य

दशक १२: समास १

विमळलक्षण

| आधीं प्रपंच करावा नेटका । मग घ्यावें परमार्थविवेका । | | | |
|---|---|----|----------|
| येथें आळस करूं नका । विवेकी हो | 9 | १ | 1 |
| प्रपंच सांडून परमार्थ कराल । तेणें तुम्ही कष्टी व्हाल । | | | |
| | 1 | ? | l |
| प्रपंच सांडून परमार्थ केला । तरी अन्न मिळेना खायाला । | | | |
| मग तया करंट्याला । परमार्थ कैंचा | • | 3 | ı |
| परमार्थ सांडून प्रपंच करिसी । तरी तूं येमयातना भोगिसी । | | | |
| अता परम कष्टी होसी । येमयातना भोगितां | | 8 | ł |
| साहेबकामास नाहीं गेला । गृहींच सुरवाडोन बैसला। | | | • |
| तरा साहब कुटाल तयाला । पाहाती लोक | | 4 | 1 |
| तेव्हां महत्वचि गेलें । दुर्जनाचें हांसें जालें | | 1 | ' |
| पुष्प उदंड भागिले । आपुल्या जीवें | | 8 | , |
| तसिंच होणार अंतीं । म्हणीन शानाने कर्ना | 1 | 9 | 1 |
| परमार्थाची प्रचिती । रोकडी घ्यावी | 1 | | |
| | 1 | 9 | 1 |
| जाराता नुवत् । तीचि जागावा चंचन | ı | | |
| ार पुषतायुक्त । विचारणा हे | | 6 | 1 |
| अपचा जो सावधान । तो परमार्थ करीक | | 3 | ' |
| अपचा जो अप्रमाण । जो गरान्य — | | | |
| म्हणीन | - | 9 | 1 |
| ऐसें न करितां अरेक्टों। प्रपंच परमार्थ चालवणें | 1 | | |
| नगरता भागणा । जाना करके | | १० |) |

पर्णाळि पाहोन उचले । जीवसृष्टि विवेकें चाले । आणि पुरुष होऊन भ्रमले । यासी काये म्हणावें ।११। म्हणौन असावी दीर्घ सूचना । अखंड करावी चाळणा ! पुढील होणार अनुमाना । आणून सोडावें ।१२। सुखी असतो खबर्दार । दुःखी होतो बेखबर । ऐसा हा लोकिक विचार । दिसतचि आहे । १३। म्हणौन सर्वसावधान । धन्य तयाचें महिमान । जनीं राखें समाधान । तोचि येक ।१४। चाळणेचा आळस केला । तरी अवचिता पडेल घाला । ते वेळे सावरायाला । अवकाश कैंचा ।१५। म्हणौन दीर्घसूचनेचे लोक । त्यांचा पाहावा विवेक । लोकांकरितां लोक । शाहाणे होती । १६। परी ते शाहाणे वोळखावे । गुणवंताचे गुण घ्यावे। अवगुण देखोन सांडावे । जनामधें 1991 मनुष्य पारखूं राहेना । आणि कोणाचें मन तोडीना । मनुष्यमात्र अनुमाना । आणून पाहे ।१८। दिसे सकळांस सारिखा । पाहातां विवेकी नेटका । कामी निकामी लोकां । बरें पाहे ।१९। जाणोन पाहिजेत सर्व। हेंचि तयाचें अपूर्व। ज्याचें त्यापरी गौरव। राखों जाणे ।२०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'विमळलक्षणनाम' समास पहिला समाप्त.

दशक १२: समास २

प्रत्ययनिरूपण

| ऐका संसारासी आले हो । स्त्री पुरुष निस्पृह हो | 1 | | |
|--|-----|----|---|
| मुचितपणें पाहो । अर्थांतर | 1 | 8 | Ì |
| काये म्हणते वासना । काये कल्पिते कल्पना | | | |
| अंतरींचे तरंग नाना । प्रकारें उठती | l | 7 | 1 |
| बरें खावें बरें जेवावें। बरें ल्यावें बरें नेसावें | | | |
| मनासारिखें असावें । सकळ कांहीं | | 3 | I |
| ऐसें आहे मनोगत । तरी ते कांहींच न होत | ŧ | | |
| बरें करितां अकस्मात । वाईट होतें | l | 8 | ١ |
| येक सुखी येक दुःखी । प्रत्यक्ष वर्ततें लोकीं | l | | |
| कष्टी होऊनियां सेखीं । प्रारब्धावरी घालिती | 1 | ų | 1 |
| अचुक येत्न करवेना । म्हणौन केलें तें सजेना | 1 | | |
| आपला अवगुण जाणवेना । कांहीं केल्यां | l | Ę | 1 |
| जो आपला आपण नेणे । तो दुसऱ्याचें काये जाणे | i | | |
| न्यायें सांडितां दैन्यवाणे । होती लोक | ١ | 9 | 1 |
| लोकांचें मनोगत कळेना । लोकांसारिखें वर्तवेना | l | | |
| मूर्खपणें लोकीं नाना । कळह उठती | 1 | 6 | 1 |
| मग ते कळो वाढती । परस्परें कष्टी होती | 1 | | |
| प्रेल राहातां अंतीं । श्रमचि होये | ١ | 8 | 1 |
| ऐसी नव्हे वर्तणुक । परीक्षावे नाना लोक | I | | |
| समजलें पाहिजे नेमक । ज्याचें त्यापरी | 1 ' | १० | 1 |

| शब्दपरीक्षा अंतरपरीक्षा । कांहीं येक कळे दक्षा । |
|---|
| मनोगत नतद्रक्षा । काय कळे । ११। |
| दुसऱ्यास शब्द ठेवणें। आपला कैपक्ष घेणें। |
| पाहों जातां लोकिक लक्षणें । बहुतेक ऐसीं । १२। |
| लोकीं बरें म्हणायाकारणें। भल्यांस लागतें सोसणें। |
| न सोसितां भंडवाणें । सहजचि होये । १३। |
| आपणास जें मानेना । तेथें कदापि राहावेना । |
| उरी तोडून जावेना । कोणीयेकें ।१४। |
| बोलतो खरें चालतो खरें। त्यास मानिती लहानथोरें। |
| न्याये अन्याये परस्परें। सहजचि कळे ।१५। |
| लोकांस कळेना तंवरी । विवेकें क्ष्मा जो न करी । तेणेंकरितां बराबरी । होत जाते । १६। |
| जंवरी चंदन झिजेना । तंव तो सुगंध कळेना । |
| चंदन आणि वृक्ष नाना । सगट होती । १७। |
| जंव उत्तम गुण न कळे। तों या जनास काये कळे। |
| उत्तम गुण देखतां निवळे। जगदांतर ।१८। |
| जगदांतर निवळत गेलें। जगदांतरीं सख्य जालें। |
| मग जाणावें वोळले । विश्वजन ।१९। |
| जनींजनार्दन वोळला। तरी काये उणें तयाला। |
| राजी राखावें सकळांला । कठीण आहे ।२०। |
| पेरिलें तें उगवतें। उसिणें द्यावें घ्यावें लागतें। |
| वर्म काढितां भंगतें । परांतर । २१। लोकिकीं बरेंपण केलें । तेणें सौख्य वाढलें। |
| उत्तरासारिखें आलें। प्रत्योत्तर ।२२। |

हें आवधें आपणांपासीं । येथें बोल नाहीं जनासी । सिकवावें आपल्या मनासी । क्षणक्षणा ।२३। खळ दुर्जन भेटला । क्षमेचा घीर बुडाला । तरी मोनेचि स्थळत्याग केला । पाहिजे साधके । २४। लोक नाना परीक्षा जाणती । अंतरपरीक्षा नेणती । तेणें प्राणी करंटे होती । संदेह नाहीं ।२५। आपणास आहे मरण । म्हणौन राखावें बरेंपण । कठिण आहे लक्षण । विवेकाचें । २६। शोर लहान समान । आपले पारिखे सकळ जन । चढतें वाढतें सनेधान । करितां बरें । २७। बरें करितां बरें होतें। हें तों प्रत्ययास येतें। आतां पुढे सांगावें तें। कोणास काये ।२८। हरिकथानिरूपण । बरेपणें राजकारण। प्रसंग पाहिल्याविण । सकळ खोटें । २९। विद्या उदंडचि सिकला । प्रसंगमान चुकतचि गेला । तरी मग तये विद्येला । कोण पुसे ।३०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'प्रत्ययनिरूपणनाम' समास दुसरा समाप्त.

> > दशक १२: समास ३
> > भक्तिनरूपण

॥ श्रीराम ॥

पृथ्वीमधें बहुत लोक । तेहिं पाहावा विवेक । इहलोक आणि परलोक । बरा पाहावा । १ ।

| इहलोक साधायाकारणें । जाणत्याची संगती धरणें। |
|--|
| परलाक साधायाकारणें । सदगरु पाहिजे । २ । |
| सद्गुरुसा कार्य प्रसावें । वेंदि नार्ने नार्ने |
| यकभाव । दोनी गोष्ट्री प्रसाव्या । ३ । |
| दाना गाष्ट्रा त्या कोण । देव कोण अगण्य कोण । |
| ना गार्थाच जिल्लाम । नेन्य - १ |
| आधीं मुख्य देव तो कोण । मग आपण भक्त तो कोण। |
| Yalayu Historopiaa m |
| सकळ केलियाचें फळ । शाश्वत वोळखावें निश्चळ। |
| आपण काण हा केवद । गार्चिक |
| सारासार क्लिए केलं क्लं क |
| सारासार विचार घेतां । पदांस नाहीं शाश्वतता । आधी कारण भगवंता । वोळखिलें पाहिजे । ७ । |
| |
| निश्चळ चंचळ आणी जड । अवघा मायेचा पवाड । यामधें वस्तु जाड । जाणार नाहीं । ८ । |
| |
| तें परब्रह्म धुंडावें । विवेकें त्रैलोक्य हिंडावें । माईक विचारें खंडावें । परीक्षवंतीं |
| |
| खोटें सोडून खरें घ्यावें । परीक्षवंतीं परीक्षावें । |
| मायेचें अवधेंचि जाणावें । रूप माईक । १०। |
| पंचभूतिक हे माया। माईक जाये विलया। |
| पिंडब्रह्मांड अष्टकाया । नासिवंत । ११। |
| दिसेल तितुकें नासेल । उपजेल तितुकें मरेल । |
| रचेल तितुकें खचेल। रूप मायेचें ।१२। |
| वाढेल तितुकें मोडेल । येईल तितुकें जाईल । |
| भूतांस भूत खाईल । कल्पांतकाळीं । १३। |

| देहघारक तितुके नासती । हे तों रोकडी प्रचिती | 1 | | |
|---|---|------------|-------------|
| मनुष्येविण उत्पत्ति । रेत कैंचें | | 8 8 | \$ 1 |
| अन नस्तां रेत कैंचें । वोषधी नस्तां अन्न कैंचें | l | | |
| वोषधीस जीणें कैंचें। पृथ्वी नस्तां | | ę u | () |
| आप नस्तां पृथ्वी नाहीं । तेज नस्तां आप नाहीं | | | |
| वायो नस्तां तेज नाहीं । ऐसें जाणावें | | १६ | į |
| अंतरात्मा नस्तां वायो कैंचा । विकार नस्तां अंतरात्मा कैंचा | | | |
| निर्विकारीं विकार कैंचा । बरें पाहा | | 8 6 |) |
| पृथ्वी नाहीं आप नाहीं । तेज नाहीं वायो नाहीं | | | |
| अंतरात्मा विकार नाहीं । निर्विकारीं | | 3 6 | . 1 |
| निर्विकार जें निर्गुण । तेचि शाश्वताची खूण | | | |
| अष्टधा प्रकृति संपूर्ण। नासिवंत | | १९ | !! |
| नासिवंत समजोन पाहिलें । तों तें अस्तांचि नस्तें जालें | | | |
| सारासारें कळों आलें। समाधान | | २० |) |
| विवेकें पाहिला विचार । मनास आलें सारासार येणेंकरितां विचार । सदृढ जाला | | | |
| | | २१ | ! |
| शाश्वत देव तो निर्गुण । ऐसी अंतरीं बाणली खूण देव कळला मी कोण । कळलें पाहिजे | | 2 - | |
| मी कोण पाहिजे कळलें । देहतत्व तितुकें शोधिलें | | २३ | (1 |
| मनोवृत्तीचा ठाई आलें। मीतूंपण | | 5 7 | 3 1 |
| सकळ देहाचा शोध घेतां । मीपण दिसेना पाहातां | | , , | ę i |
| मीतूंपण हें तत्वतां । तत्वीं मावळलें | | २ ४ | 5 1 |
| दृश्य पदार्थीच वोसरे । तत्वें तत्व तेव्हां सरे | | | |
| मीतूंपण हें कैंचें उरे। तत्वतां वस्त | 1 | ب ا | e I |

| पंचीकर्ण तत्विववर्ण। माहावाक्यें वस्तु आपण। निसंगपणें निवेदन। केलें पाहिजे । २६। |
|--|
| देवाभक्तांचें मूळ । शोधून पाहातां सकळ। उपाधीवेगळा केवळ । निरोपाधी आत्मा । २७। |
| मीपण तें बुडालें। विवेकें वेगळेपणें गेलें। |
| विज्ञानीं राहिलें ज्ञान । ध्येये राहिलें ध्यान । सकळ कांहीं कार्याकारण । पाहोन सांडिलें । २९। |
| जन्ममरणाचें चुकलें । पाप अवधेंचि बुडालें । येमयातनेचें जालें । निसंतान । ३०। |
| निर्बंद अवघाचि तुटला । विचारें मोक्ष प्राप्त जाला । जन्म सार्थकचि वाटला । सकळ कांहीं ।३१। |
| नाना किंत निवारले । धोके अवधेचि तुटले । ज्ञानविवेकें पावन जाले । बहुत लोक । ३२। |
| पतितपावनाचे दास । तेहि पावन करिती जगास । ऐसी हे प्रचित मनास । बहुतांच्या आली । ३३। |
| इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'भक्तनिरूपणनाम' |

विवेकवैराग्य

समास तिसरा समाप्त.

॥ श्रीराम ॥

महद्भाग्य हातासी आलें । परी भोगूं नाहीं जाणितलें । तैसें वैराग्य उत्पन्न जालें । परी विवेक नाहीं । १ ।

| आदळतें आफळतें। कष्टी होतें दुःखी हं | ोतें । |
|---|---------|
| ऐकतें देखतें येतें। वैराग्य तेणें | 1 3 1 |
| नाना प्रपंचाच्या वोढी। नाना संकटें सांक | |
| संसार सांडुनी देशघडी । होये तेणें | • |
| तो चिंतेपासून सुटला । पराधेनतेपासूनि पळा | ला । |
| दुःखत्यागें मोकळा जाला । रोगी जैसा | 181 |
| परी तो होऊं नये मोकाट । नष्ट भ्रष्ट आणी च | गट । |
| सीमाच नाहीं सैराट । गुरूं जैसें | 141 |
| विवेकेंविण वैराग्ये केलें । तरी अविवेकें अनर्थीं घा | तलें । |
| अवधें वेर्थीच गेलें। दोहिंकडे | 1 & 1 |
| ना प्रपंच ना परमार्थ । अवधें जिणेंचि जालें व | वेर्थ । |
| अविवेकें अनर्थ। ऐसा केला | 191 |
| कां वेर्थिच ज्ञान बडबडिला । परी वैराग्ययोग नाहीं घड | ला । |
| जैसा कारागृहीं अडकला । पुरुषार्थ सांगे | |
| वैराग्येंविण ज्ञान । तो वेर्थिच साभिग | मान । |
| लोभदंभें घोळसून । कासाविस केला | |
| स्वान बांघलें तरी भुंके । तैसा स्वार्थमुळें शि | |
| पराधीक देखों न सके । साभिमानें | |
| हें येकेंविण येक । तेणें उगाच वाढे श | • |
| आतां वैराग्य आणि विवेक । योग ऐका | |
| विवेकें अंतरीं सुटला । वैराग्यें प्रपंच तु | |
| अंतर्बाह्य मोकळा जाला । निःसंग योगी | |
| | • |
| जैसें मुखें ज्ञान बोले । तैसीच सवें क्रिया | वाले । |
| दीक्षा देखोनी चिक्कत जाले । सुचिस्मंत | 1831 |

| आस्था नाहीं त्रैलोक्याची । स्थित बाणली वैराग्याची । येत्नविवेकधारणेची । सीमा नाहीं । १४। |
|---|
| संगीत रसाळ हरिकीर्तन । ताळबद्ध नानमान । |
| नेनळ आवंडाच भजन । अंतरापासुनी । १५। |
| तत्काळचि सन्मार्ग लागे । ऐसा अंतरी विवेक जागे । |
| वगतृत्व करितां न भंगे। साहित्य प्रत्ययाचे ।१६। |
| सन्मार्गे जगास मिळाला। म्हणिजे जगदीश वोळला। |
| प्रसंग पाहिजे कळला । कोणीयेक ।१७। |
| प्रखर वैराग्य उदासीन । प्रत्ययाचें ब्रह्मज्ञान । |
| स्नानसंध्या भगवद्भजन । पुण्यमार्ग ।१८। |
| विवेकवैराग्य तें ऐसें । नुस्तें वैराग्य हेंकाडिपसें। |
| शब्दज्ञान येळिलसें । आपणचि वाटे ।१९। |
| म्हणौन विवेक आणि वैराग्य । तेंचि जाणिजे महद्भाग्य। |
| रामदास म्हणे योग्य । साधु जाणती ।२०। |
| -C -2 22 |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'विवेकवैराग्यनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक १२: समास ५ आत्मिनवेदन

रेखेचें गुंडाळें केलें । मात्रुकाक्षरीं शब्द जाले । शब्द मेळऊन चाले । श्लोक गद्य प्रबंद । १ । वेदशास्त्रें पुराणें । नाना काव्यें निरूपणें । ग्रंथभेद अनुवादणें । किती म्हणोनि । २ ।

| नाना ऋषी नाना मतें। पाहों जातां असंख्यातें। |
|---|
| भाषा लिपी जेथ तेथें । काये उणें । ३ । |
| वर्ग ऋचा श्रुति स्मृति । अधे स्वर्ग स्तबक जाती । |
| प्रसंग मानें समास पोथी । बहुधा नामें । ४ । |
| नाना पदें नाना श्लोक । नाना बीर नाना कडक । |
| नाना साख्या दोहडे अनेक । नामाभिधानें । ५ । |
| इफगाणें माचिगाणें । दंडिगाणें कथागाणें । |
| नाना मानें नाना जसनें । नाना खेळ । ६ । |
| ध्विन घोष नाद रेखा । चहुं वाचामध्यें देखा । |
| वाचारूपेंहि ऐका । नाना भेद । ७ । |
| उत्मेष परा ध्वनि पश्यंती । नाद मध्यमा शब्द चौथी। |
| वैखरीपासून उमटती । नाना शब्दरत्नें । ८ । |
| अकार उकार मकार। अर्धमात्राचें अंतर। |
| औटमात्रा तदनंतर । बावन मात्रुका । ९ । |
| नाना भेद रागज्ञान । नृत्यभेद तानमान । |
| अर्थभेद तत्वज्ञान । विवंचना । १०। |
| तत्वांमध्यें मुख्य तत्व । तें जाणावें शुद्धसत्व । |
| अर्घमात्रा महत्तत्व । मूळमाया । ११। |
| नाना तत्वें लाहानथोरें । मिळोन अष्टहि शरीरें। |
| अष्टया प्रकृतीचें वारें। निघोन जातें ।१२। |
| वारें नस्तां जें गगन । तैसें परब्रह्म सघन । |
| अष्ट देहाचें निर्शन । करून पाहावें । १३। |
| ब्रह्मांडपिंडउभार । पिंडब्रह्मांडसंव्हार |
| दोहिवेगळें सारासार । विमळब्रह्म । १४। |

o o

| पदार्थ जड आत्मा चंचळ । विमळब्रह्म तें निश्चळ | l |
|---|------|
| विवरोन विरे तत्काळ। तद्रूप होये | 1841 |
| पदार्थ मनें काया वाचा । मी हा अवधानि देवाचा | 1 |
| जंड आत्मनिवेदनाचा । विचार ऐसा | 1881 |
| चचळ कर्ता तो जगदीश । प्राणीमात्र त्याचा अंश | 1 |
| त्याचा ताच आपणास । ठाव नाहीं | 1891 |
| चंचळ आत्मनिवेदन । याचें सांगितलें लक्षण | 1 |
| कता देव तो आपण । कोठेंचि नाहीं | 1281 |
| चंचळ चळे स्वप्नाकार । निश्चळ देव तो निराकार | 1 |
| आत्मनिवेदनाचा प्रकार । जाणिजे ऐसा | 1881 |
| ठावचि नाहीं चंचळाचा । तेथें आधीं आपण कैंचा | 1 |
| निश्चळ आत्मनिवेदनाचा । विवेक ऐसा | 1901 |
| तिहिं प्रकारें आपण । नाहीं नाहीं दुजेपण | ł |
| आपण नस्तां मीपण । नाहींच कोठें | 1881 |
| पाहातां पाहातां अनुमानलें । कळतां कळतां कळों आलें | 1 |
| पाहातां अवधेचि निवांत जालें । बोलणें आतां | 1221 |
| | |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आत्मनिवेदननाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक १२: समास ६
सृष्टिक्रमनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

ब्रह्म निर्मळ निश्चळ । शाश्चत सार अमल विमळ । अवकाश घन पोकळ । गगनाऐसें । १ ।

तयास करणें ना धरणें। तयास जन्म ना मरणें। तेथें जाणणें ना नेणणें । सुन्यातीत । २ । तें रचेना ना खचेना। तें होयेना ना जायेना। मायातीत निरंजना । पारचि नाहीं । ३ । पढें संकल्प उठिला । षडगुणेश्वर बोलिजे त्याला । अर्धनारीनटेश्वराला । बोलिजेतें । ४ । सर्वेश्वर सर्वज्ञ । साक्षी द्रष्टा ज्ञानघन । परेश परमात्मा जगजीवन । मूळपुरुष । ५ । ते मूळमाया बहुगुणी । अधोमुखें गुणक्षोभिणी । गुणत्रये तिजपासूनि । निर्माण जाले । ६ । पुढें विष्णु जाला निर्माण । जाणतीकळा सत्त्वगुण । जो करिताहे पाळण । त्रैलोक्याचें 191 पुढें जाणीवनेणीवमिश्रित । ब्रह्मा जाणावा नेमस्त । त्याच्या गुणें उत्पत्ति होत । भुवनत्रैं । ८ । पुढें रुद्र तमोगुण । सकळ संव्हाराचें कारण। सकळ कांहीं कर्तेपण । तेथेंचि आलें 191 तेथून पुढें पंचभूतें। पावलीं पष्ट दशेतें। अष्टधा प्रकृतीचें स्वरूप तें । मुळींच आहे ।१०। निश्चळीं जालें चळण। तेंचि वायोचें लक्षण। पंचभूतें आणि त्रिगुण । सूक्ष्म अष्टघा । ११। आकाश म्हणिजे अंतरात्मा । प्रत्ययें पाहावा महिमा। त्या आकाशापासून जन्मा । वायो आला 1 १ २ । तया वायोच्या दोनी झुळुका । उष्ण सीतळ ऐका । सीतळापासून तारा मयंका । जन्म जाला 1831

| उष्णापासून रवि वन्ही । विद्युल्यता आदिकरूनि | ı |
|--|-------|
| सतिळ उष्ण मिळोनि । तेज जाणावें | 1881 |
| तया तेजापासून जालें आप । आप आळोन पृथ्वीचें रूप | 1 |
| पुढे औषधी अमूप । निर्माण जाल्यां | १५। |
| औषधीपासून नाना रस । नाना बीज अन्नरस | 1 |
| चौऱ्यासि लक्ष योनीचा वास । भूमंडळीं | ११६। |
| ऐसी जाली सृष्टिरचना । विचार आणिला पाहिजे मना | ı |
| | 1 १७। |
| ऐसा जाला आकार। येणेंचि न्यायें संव्हार | 1 |
| सारासारविचार । यास बोलिजे | 1861 |
| जें जें जेथून निर्माण जालें। तें तें तेथेंचि निमालें | ı |
| येणेंचि न्यायें संव्हारलें। माहाप्रळईं | 1881 |
| आद्य मध्य अवसान । जें शाश्वत निरंजन | 1 |
| तेथें लावावें अनुसंघान । जाणते पुरुषीं | 1201 |
| होत जाते नाना रचना । परी ते कांहींच तगेना | l |
| सारासार विचारणा । याकारणें | 1881 |
| द्रष्टा साक्षी अंतरात्मा । सर्वत्र बोलती महिमा | l . |
| परी हे सर्वसाक्षिणी अवस्ता मां । प्रत्ययें पाहावी | 1251 |
| मुळापासून सेवटवरी । अवधी मायेची भरोवरी | 1 |
| नाना विद्या कळाकुंसरी । तयेमधें | 1531 |
| जो उपाधीचा सेवट पावेल । त्यास भ्रम ऐसें वाटेल | |
| जो उपाधीमध्यें आडकेल । त्यास काढिता कवण | |
| विवेकप्रत्ययाचीं कामें । कैसीं घडतील अनुमानभ्रमें | |
| सारासारविचाराचेन संभ्रमें । पाविजे ब्रह्म | 1241 |

ब्रह्मांडींचें माहाकारण । ते मूळमाया जाण ।
अपूर्णास म्हणती ब्रह्म पूर्ण । विवेकहीन ।२६।
सृष्टीमधें बहुजन । येक भोगिती नृपासन ।
येक विष्ठा टाकिती जाण । प्रत्यक्ष आतां ।२७।
ऐसे उदंड लोक असती । आपणास थोर म्हणती ।
परी ते विवेकी जाणती । सकळ कांहीं ।२८।
ऐसा आहे समाचार । कारण पाहिजे विचार ।
बहुतांच्या बोलें हा संसार । नासूं नये ।२९।
पुस्तकज्ञानें निश्चये धरणें । तरी गुरु कासया करणें।
याकारणें विवरणें। आपुल्या प्रत्ययें ।३०।
जो बहुतांच्या बोलें लागला । तो नेमस्त जाणावा बुडाला ।
येक साहेब नस्तां कोणाला । मुश्यारा मागावा ।३१।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सृष्टिक्रमनिरूपणनाम' समास सहावा समाप्त.

दशक १२: समास ७

विषयत्यागनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

न्यायें निष्ठुर बोलणें । बहुतांस वाटे कंटाळवाणें । मळमळ किरतां जेवणें । विहित नव्हे । १। बहुतीं विषय निंदिले । आणि तेचि सेवित गेले । विषयत्यागें देह चाले । हें तों घडेना । २। बोलणें येक चालणें येक । त्याचें नांव हीन विवेक । येणें किरतां सकळ लोक । हांसों लागती । ३।

| विषयत्यागेविण तों कांहीं। परलोक तो प्राप्त नाहीं। | | | |
|--|----------|----------|---|
| | X | | l |
| प्रपंची खाती जेविती । परमार्थी काये उपवास करिती । | | | |
| उधाराम सार्वित क्लिक क | <u>ا</u> | t | |
| देह चालतां विषय त्यागी । ऐसा कोण आहे जगीं। | | | |
| याचा निर्वाह मजलागीं । देवें निरोपावा | E | , , | l |
| विषय अवघा त्यागावा । तरीच परमार्थ करावा । | | | |
| ऐसें पाहातां गोवा । दिसतो किं | la | . 1 | ì |
| ऐसा श्रोता अनुवादला । वक्ता उत्तर देता जाला । | 9 | | 1 |
| THESE STATES OF STATES | | | |
| | 6 | ١ | |
| वैराग्यें करावा त्याग । तरीच परमार्थयोग । | | | |
| प्रपंचत्यागें सर्व सांग । परमार्थ घडे | 9 | ١ | ı |
| मागें ज्ञानी होऊन गेले । तेंहिं बहुत कष्ट केले। | | | |
| तरी मग विख्यात जाले । भूमंडळीं | १ | 0 | |
| येर मत्सर करितांच गेलीं । अन्न अन्न म्हणतां मेलीं । | | | |
| • • • • • • • • • • • • • • • • • • • | 8 | १। | |
| वैराग्य मुळींहून नाहीं । ज्ञान प्रत्ययाचें नाहीं । | | | |
| <u> </u> | 8 | ۲ ا | |
| ऐसे प्रकारीचे जन । आपणास म्हणती सज्जन । | • | • | |
| पाहों जातां अनुमान । अवघाच दिसे । | 9 ' | 3 | |
| जयास नाहीं अनुताप । हेंचि येक पूर्वपाप । | | , | |
| | 8, | ا ک | |
| मज नाहीं तुज साजेना । हें तों अवधें ठाउकें आहे जना । | • | _ * | |
| 34 5 54 5 | १ | ųΙ | |

| भाग्यपुरुष थोर थोर । त्यास निंदिती डीवाळखोर । |
|--|
| सावास देखतां चोर । चर्फडी जैसा । १६। |
| |
| |
| |
| प्रत्ययेज्ञानी वीतरागी। विवेकबळें सकळ त्यागी। |
| ते जाणीजे माहांयोगी । ईश्वरी पुरुष । १८। |
| अष्टमासिन्द्रीची उपेक्षा । करून घेतली योगदीक्षा । |
| घरोघरीं मागे भिक्षा । माहादेव । १९। |
| ईश्वराची बराबरी । कैसा करील वेषधारी । |
| म्हणोनियां सगट सरी । होत नाहीं ।२०। |
| उदास आणी विवेक । त्यास शोधिती सकळ लोक । |
| जस लालची मरवे एक । तें तैनावालें |
| जे विचारापासून चेवले । जे आचारापासून भ्रष्टले । |
| विवेक करूं विसरले। विषयलोभी ।२२। |
| भूजन नरी क्यां |
| भजन तरी आवडेना । पुरश्चर्ण कदापि घडेना । |
| भल्यांस त्यांस पडेना । येतन्निमत्य ।२३। |
| वराग्य करून भूष्ट्रेना । जान शाना |
| वाद धना । ऐसा थोडा |
| कष्ट करिता सेत पिके । उंच तस्त उत्सार की |
| भागाया लाकाच्या कातुक । उड्या पडती |
| पर त अवधेचि मंदले । त्यापोने कोने |
| THE STATE OF THE S |
| प्रवर्ध त्यामार्ग । मान |
| Would September 2.0 |
| ।२७। |

सकळ कांहीं कर्ता देव । नाहीं प्रकृतीचा ठाव।
विवेकाचा अभिप्राव । विवेकी जाणती । २८।
शूरत्विषर्ई खडतर । त्यास मानिती लाहानथोर ।
कामगार आणि आंगचोर । येक कैसा । २९।
त्यागात्याग तार्किक जाणे । बोलाऐसें चालों जाणे ।
पिंडब्रह्मांड सकळ जाणे । येथायोग्य । ३०।
ऐसा जो सर्वजाणता । उत्तमलक्षणी पुरुता ।
तयाचेनि सार्थकता । सहजिच होये । ३१।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'विषयत्यागनिरूपणनाम' समास सातवा समाप्त.

दशक १२: समास ८ काळरूप

मूळमाया जगदेश्वर । पुढें अष्टधेचा विस्तार ।

सृष्टिक्रमें आकार । आकारला । १ ।

हें अवधेच नस्तां निर्मळ । जैसें गगन अंतराळ ।

निराकारीं काळवेळ । कांहींच नाहीं । २ ।

उपाधीचा विस्तार जाला । तेथें काळ दिसोन आला ।

येरवीं पाहातां काळाला । ठावचि नाहीं । ३ ।

येक चंचळ येक निश्चळ । यावेगळा कोठें काळ ।

चंचळ आहे तावत्काळ । काळ म्हणावें । ४ ।

| आकाश म्हणिजे अवकाश । अवकाश बोलिले विलंबास । |
|--|
| त्या विलंबरूप काळास । जाणोनि घ्यावें । ५ । |
| सूर्याकरितां विलंब कळे । गणना सकळांची आकळे । |
| पळापासून निवळे । युगपरियंत । ६ । |
| पळ घटिका प्रहर दिवस । अहोरात्र पक्ष मास । |
| शड्मास वरि युगास । ठाव जाला । ७ । |
| क्रेत त्रेत द्वापार कळी। संख्या चालिली भूमंडळीं। |
| देवांचीं आयुष्यें आगळीं । शास्त्रीं निरोपिलीं । ८ । |
| ते देवत्रयाची खटपट । सूक्ष्मरूपें विलगट । |
| दंडक सांडितां चटपट । लोकांस होते । ९ । |
| मिश्रित त्रिगुण निवडेना । तेणें आद्यंत सृष्टिरचना । |
| कोण थोर कोण साना । कैसा म्हणावा ।१०। |
| असो हीं जाणत्याचीं कामें । नेणता उगाच गुंते भ्रमें। |
| प्रत्यये जाणजाणों वर्में । ठाईं पाडावीं । ११। |
| उत्पनकाळ सृष्टिकाळ । स्थितिकाळ संव्हारकाळ। |
| आद्यंत अवघा काळ । विलंबरूपी ।१२। |
| जें जें जये प्रसंगीं जालें। तेथें काळाचें नांव पडिलें। |
| बरें नसेल अनुमानलें । तरी पुढें ऐका । १३। |
| प्रजन्यकाळ शीतकाळ । उष्णकाळ संतोषकाळ । |
| सुखदुःखआनंदकाळ । प्रत्यये येतो । १४। |
| 1 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 |
| प्रातःकाळ माध्यानकाळ। सायंकाळ वसंतकाळ। |
| प्रातःकाळ माध्यानकाळ। सायंकाळ वसंतकाळ। पर्वकाळ कठिणकाळ। जाणिजे लोकीं ।१५। |
| प्रातःकाळ माध्यानकाळ। सायंकाळ वसंतकाळ। |

| सुकाळ आणि दुष्काळ । प्रदोषकाळ पुण्यकाळ । | |
|--|-------|
| सकेळा वळा मिळोन काळ । तयास म्हणावें | 991 |
| असतें येक वाटतें येक । त्याचें नांव हीन विवेक । | |
| राग गवनीने - | १८। |
| प्रवृत्ति चाले अधोमुखें। निवृत्ति धावे ऊर्धमुखें। | , • 1 |
| ऊर्धमुखें नाना सुखें। विवेकी जाणती | 991 |
| ब्रह्मांडरचना जेथून जाली । तेथें विवेकी दृष्टि घाली। | 111 |
| विवरतां विवरतां लाधली । पूर्वापार स्थिति । | 5 - 1 |
| प्रपंचीं असोन परमार्थ पाहे । तोहि ये स्थितीतें लाहे। | 401 |
| manning | |
| | 561 |
| सकळांचें येकचि मूळ । येक जाणते येक बाष्कळ । | |
| विवेकें करून तत्काळ । परलोक साधावा | 221 |
| तरीच जन्माचें सार्थक । भले पाहाती उभये लोक । | |
| कारण मुळींचा विवेक । पाहिला पाहिजे | २३। |
| विवेकहीन जे जन। ते जाणावे पशुसमान। | |
| त्यांचें ऐकतां भाषण । परलोक कैंचा | २४। |
| बरें आमचें काये गेलें। जें केलें तें फळास आलें। | |
| पेरिलें तें उगवलें । भोगिती आतां । | २५। |
| पुढेंहि करी तो पावे । भक्तियोगें भगवंत फावें । | |
| देव भक्त मिळतां दुणावें । समाधान | २६। |
| कीर्ति करून नाहीं मेले । ते उगेच आले आणि गेले । | |
| शाहाणे होऊन भुलले । काये सांगावें । | २७। |
| येथील येथें अवधेंचि राहातें । ऐसें प्रत्ययास येतें । | |
| कोण काये घेऊन जातें । सांगाना कां | 135 |

पदार्थी असावें उदास । विवेक पाहावा सावकास । येणेंकरितां जगदीश । अलभ्य लाभे 1261 जगदीशापरता लाभ नाहीं । कार्याकारण सर्व कांहीं । संसार करित असतांहि । समाधान 1301 मागां होते जनकादिक । राज्य करितांहि अनेक। तैसेचि आतां पुण्यश्लोक । कित्येक असती । ३१। राजा असतां मृत्य आला । लक्ष कोटी कबुल जाला । तरी सोडिना तयाला । मृत्य कांहीं 1351 ऐसें हें पराधेन जिणें। यामधें दुखणें बाहाणें। नाना उद्वेग चिंता करणें । किती म्हणोनि 1331 हाट भरला संसाराचा । नफा पाहावा देवाचा । तरीच या कष्टाचा । परियाये होतो 1381

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'काळरूपनाम' समास आठवा समाप्त.

दशक १२: समास ९

॥ श्रीराम ॥

दुर्बल नाचारी वोडगस्त । आळसी खादाड रिणगस्त ।
पूर्खपणें अवधें वेस्त । कांहींच नाहीं । १ ।
खाया नाहीं जेवाया नाहीं । लेया नाहीं नेसाया नाहीं ।
अंथराया नाहीं पांघराया नाहीं । कोंपट नाहीं अभागी । २ ।
सोयेरे नाहीं धायेरे नाहीं । इष्ट नाहीं मित्र नाहीं ।
पाहातां कोठें वोळखी नाहीं । आश्रयेविण परदेसी । ३ ।

| तेणें कैसें करावें । काये जीवेसीं धरावें । |
|---|
| वाचावें किं मरावें । कोण्याप्रकारें । ४ । |
| ऐसें कोणीयेकें पुसिलें। कोणीयेकें उत्तर दिधलें। |
| श्रोतीं सावध ऐकिलें। पाहिजे आतां । ५। |
| लाहानथोर काम कांहीं। केल्यावेगळें होत नाहीं। |
| करंट्या सावध पाहीं। सदेव होसी । ६। |
| अंतरीं नाहीं सावधानता । येल ठाकेना पुरता । |
| सुखसंतोषाची वार्ता। तेथें कैंची । ७। |
| म्हणोन आळस सोडावा । येत्न साक्षेपें जोडावा । दुश्चितपणाचा मोडावा । थारा बळें । ८ । |
| प्रातःकाळीं उठत जावें। प्रातःस्मरामि करावें। |
| नित्य नेमें स्मरावें । पाठांतर । ९ । |
| मागील उजळणी पुढें पाठ । नेम धरावा निकट । |
| बाष्कळपणाची वटवट । करूंच नये ।१०। |
| दिशेकडे दुरी जावें। सुचिस्मंत होऊन यावें। |
| येतां कांहीं तरी आणावें। रितें खोटें ।११। |
| धूतवस्त्रें घालावीं पिळून । करावें चरणक्षाळण । |
| देवदर्शन देवार्चन । येथासांग । १२। |
| कांहीं फळाहार घ्यावा। पुढें वेवसाये करावा। |
| लोक आपला परावा। म्हणत जावा । १३। |
| सुंदर अक्षर ल्याहावें । पष्ट नेमस्त वाचावें । |
| विवरविवरों जाणावें। अर्थांतर ।१४। |
| नेमस्त नेटकें पुसावें । विशद करून सांगावें । प्रत्ययेंविण बोलावें । तेंचि पाप । १५ । |
| नाजान जालाव । ताच पाप |

| सावधानता असावी । नीतिमर्यादा राखावी । |
|--|
| जनास माने ऐसी करावी । क्रियासिन्द्र । १६। |
| आलियाचें समाधान । हरिकथा निरूपण । |
| सर्वदा प्रसंग पाहोन । वर्तत जावें ।१७। |
| ताळ धाटी मुद्रा शुद्ध । अर्थ प्रमये अन्वये शुद्ध । |
| गद्यपद्यें दृष्टांत शुद्ध । अन्वयाचे । १८। |
| गाणें वाजविणें नाचणें । हस्तन्यास दाखवणें । |
| सभारंजकें वचनें । आडकथा छंदबंद । १९। |
| बहुतांचें समाधान राखावें । बहुतांस मानेल तें बोलावें। |
| विलग पडों नेदावें । कथेमधें ।२०। |
| लोकांस उदंड वाजी आणूं नये । लोकांचें उकलावें हृदये। |
| तरी मग स्वभावें होये । नामघोष । २१। |
| भक्ति ज्ञान वैराग्य योग । नाना साधनाचे प्रयोग । |
| जेणें तुटे भवरोग । मननमात्रें । १२२। |
| जैसें बोलणें बोलावें । तैसेंचि चालणें चालावें । मग महंतलीळा स्वभावें । आंगीं बाणे । २३। |
| युक्तिवीण साजिरा योग । तो दुराशेचा रोग। |
| संगतीच्या लोकांचा भोग । उभा ठेला । २४। |
| ऐसें न करावें सर्वथा। जनास पावऊं नये वेथा। |
| हृदईं चिंतावें समर्था । रघुनाथजीसी । २५। |
| उदासवृत्तीस मानवे जन । विशेष कथानिरूपण । |
| रामकथा ब्रह्मांड भेदून । पैलाड न्यावी ।२६। |
| सांग महंती संगीत गाणें। तेथें वैभवास काय उणें। नभामाजी तारांगणें। तैसे लोक ।२७। |
| नमामाजा तारागण। तस लाक ।२७। |

आकलबंद नाहीं जेथें । अवधेंचि विश्कळित तेथें । येकें आकलेविण तें । काये आहे । १८। घालून अकलेचा पवाड । व्हावें ब्रह्मांडाहून जाड । तेथें कैचें आणिलें द्वाड । करंटपण । १९। येथें आशंका फिटली । बुद्धि येलीं प्रवेशली । कांहींयेक आशा वाढली । अंतःकर्णी । ३०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'येत्नसिकवणनाम' समास नववा समाप्त.

दशक १२: समास १० उत्तमपुरुषनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

आपण येथेष्ट जेवणें । उरलें तें अन्न वाटणें।

परंतु वाया दवडणें । हा धर्म नव्हे । १।
तैसें ज्ञानें तृप्त व्हावें । तेंचि ज्ञान जनास सांगावें।

तरतेन बुडों नेदावें । बुडतयासी । १।

उत्तम गुण स्वयें घ्यावे । ते बहुतांस सांगावे।

वर्तल्याविण बोलावे । ते शब्द मिथ्या । ३।

स्नान संध्या देवार्चन । येकाप्र करावें जपध्यान ।

हरिकथा निरूपण । केलें पाहिजे । ४।

शारीर परोपकारीं लावावें । बहुतांच्या कार्यास यावें।

उणें पडों नेदावें । कोणियेकाचें । ५।

| आडलें जाकसलें जाणावें । यथानशक्ति कामास यावें। |
|--|
| मृदवचनें बोलत जावें । कोणीयेकासी । ६ । |
| दुसऱ्याच्या दुःखें दुःखवावें । परसंतोषें सुखी व्हावें। |
| प्राणीमात्रास मेळऊन घ्यावें । बऱ्या शब्दें । ७ । |
| बहुतांचे अन्याये क्ष्मावे । बहुतांचे कार्यभाग करावे । |
| आपल्यापरीस व्हावे । पारखे जन । ८ । |
| दुसऱ्यांचें अंतर जाणावें । तदनुसारचि वर्तावें । |
| लोकांस परीक्षित जावें । नाना प्रकारें । ९ । |
| नेमकचि बोलावें । तत्काळचि प्रतिवचन द्यावें । |
| कदापी रागास न यावें । क्ष्मारूपें । १०। |
| आलस्य अवघाच दवडावा । येल उदंडचि करावा। |
| शब्दमत्सर न करावा । कोणीयेकाचा ।११। |
| उत्तम पदार्थ दुसऱ्यास द्यावा । शब्द निवडून बोलावा । |
| सावधपणें करीत जावा। संसार आपला ।१२। |
| मरणाचें स्मरण असावें । हरिभक्तीस सादर व्हावें। |
| मरोन कीर्तीस उरवावें । येणें प्रकारें । १३। |
| नेमकेपणें वर्तीं लागला । तो बहुतांस कळों आला । |
| सर्व आर्जवी तयाला । काये उणें ।१४। |
| ऐसा उत्तम गुणी विशेष । तयास म्हणावें पुरुष । |
| जयाच्या भजनें जगदीश । तृप्त होये ।१५। |
| उदंड धि:कारून बोलती । तरी चळों नेदावी शांती। |
| दुर्जनास मिळोन जाती । धन्य ते साधु ।१६। |

उत्तम गुणी शृंघारला । ज्ञानवैराग्यें शोभला । तोचि येक जाणावा भला । भूमंडळीं ।१७। स्वयें आपण कष्टावें। बहुतांचें सोसित जावें। झिजोन कीर्तीस उरवावें । नाना प्रकारें । १८। कीर्ती पाहों जाता सुख नाहीं । सुख पाहातां कीर्ती नाहीं । विचारेंविण कोठेंचि नाहीं । समाधान ।१९। परांतरास न लावावा ढका । कदापि पडों नेदावा चुका। क्ष्मासीळ तयाच्या तुका। हानी नाहीं ।२०। आपलें अथवा परावें । कार्य अवधेंच करावें । प्रसंगीं कामास चुकवावें । हें विहित नव्हे । २१। बरें बोलतां सुख वाटतें । हें तों प्रत्यक्ष कळतें। आत्मवत परावें तें। मानीत जावें ।२२। कठिण शब्दें वाईट वाटतें । हें तों प्रत्ययास येतें। तरी मग वाईट बोलावें तें । काये निमित्य । २३। आपणास चिमोटा घेतला । तेणें कासाविस जाला। आपणावरून दुसऱ्याला । राखत जावें । २४। जे दुसऱ्यास दुःख करी । ते अपवित्र वैखरी । आपणास घात करी । कोणियेके प्रसंगीं । २५। पेरिलें ते उगवतें । बोलण्यासारिखें उत्तर येतें । तरी मग कर्कश बोलावें तें । काये निमित्य । २६। आपल्या पुरुषार्थवैभवें । बहुतांस सुखी करावें । परंतु कष्टी करावें । हे राक्षेसी क्रिया । २७।

| दंभ दर्प अभिमान । क्रोध आणी कठिण वचन । |
|---|
| हैं अज्ञानाचें लक्षण । भगवद्गीतेंत बोलिलें । २८। |
| जो उत्तम गुणें शोभला । तोचि पुरुष माहांभला। |
| कित्तेक लोक तयाला । शोधीत फिरती । २९। |
| क्रियेविण शब्दज्ञान । तेंचि स्वानाचें वमन । |
| भले तेथें अवलोकन । कदापी न करिती ।३०। |
| मनापासून भक्ति करणें । उत्तम गुण अगत्य धरणें। |
| तया माहांपुरुषाकारणें । धुंडीत येती । ३१। |
| ऐसा जो माहानुभाव । तेणें करावा समुदाव । |
| भिक्तयोगें देवाधिदेव । आपुला करावा । ३२। |
| आपण आवचितें मरोन जावें। मग भजन कोणें करावें। |
| याकारणें भजनास लावावे । बहुत लोक । ३३। |
| आमची प्रतिज्ञा ऐसी । कांहीं न मागावें शिष्यासी । |
| आपणामार्गे जगदीशासी । भजत जावें । ३४। |
| याकारणें समुदाव । जाला पाहिजे मोहोछाव । |
| हातोपातीं देवाधिदेव । वोळेसा करावा । ३५। |
| आता समुदायाकारणें । पाहिजेती दोनी लक्षणें । |
| श्रोतीं येथें सावधपणें । मन घालावें । ३६। |
| जेणें बहुतांस घडे भक्ति । ते हे रोकडी प्रबोधशक्ति । |
| बहुतांचें मनोगत हातीं । घेतलें पाहिजे । ३७। |
| भागां बोलिले उत्तम गण । तयास मानिती प्रमाण । |
| प्रबोधशक्तीचें लक्षण । पुढें चालें ।३८। |

बोलण्यासारिखें चालणें । स्वयें करून बोलणें ।
तयाचीं वचनें प्रमाणें । मानिती जनीं ।३९।
जों जों जनास मानेना । तें तें जनिह मानीना ।
आपण येकला जन नाना । सृष्टिमधें ।४०।
म्हणोन सांगाती असावे । मानत मानत शिकवावे ।
हळुहळु सेवटा न्यावे । विवेकानें ।४१।
परंतु हे विवेकाचीं कामें । विवेकी करील नेमें ।
इतर ते बापुडे भ्रमें । भांडोंच लागले ।४२।
बहुतांसी भांडतां येकला । शैन्यावांचून पुरवला ।
याकारणें बहुतांला । राजी राखावें ।४३।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'उत्तमपुरुषनिरूपणनाम' समास दहावा समाप्त.

दशक बारावा समाप्त

दशक तेरावा : नामरूप

दशक १३: समास १

आत्मानात्मविवेक

| आत्मानात्माववक करावा । करून बरा विवसवा | 1 | | |
|---|-----|-----|---|
| विवरोन सदृढ धरावा । जीवामध्यें | ı | 8 | ١ |
| आत्मा कोण अनात्मा कोण । त्याचें करावें विवरण | | | |
| तेंचि आतां निरूपण । सावध ऐका | ı | 7 | 1 |
| च्यारि खाणी च्यारि वाणी । चौऱ्यासि लक्ष जीवप्राणी | 1 | | |
| संख्या बोलिली पुराणीं । वर्तती आतां | ŧ | 3 | ı |
| नाना प्रकारीचीं शरीरें। सृष्टींत दिसती अपारें | 1 | | |
| तयामधें निधरिं । आत्मा कवणु | ŧ | ४ | l |
| दृष्टीमधें पाहातो । श्रवणामध्यें ऐकतो | 1 | | |
| रसनेमध्यें स्वाद घेतो । प्रत्यक्ष आतां | ı | ų | ļ |
| घ्राणामधें वास घेतो । सर्वांगीं तो स्पर्शतो | ı | | |
| वाचेमधें बोलवितो । जाणोनि शब्द | 1 | Ę | ŀ |
| सावधान आणि चंचळ । चहूंकडे चळवळ | 1 | | |
| एकलाचि चालवी सकळ । इंद्रियेंद्वारा | - | 9 | Į |
| पाये चालवी हात हालवी । भृकटी पालवी डोळा घालवी | 1 | | |
| संकेतखुणा बोलवी । तोचि आत्मा | | 6 | ١ |
| धिटाई लाजवी खाजवी । खोंकवी वोकवी थुंकवी | 1 | | |
| अन्न जेऊन उदक सेववी । तोचि आत्मा | | 9 | 1 |
| मळमूत्रत्याग करी । शरीरमात्र सावरी | ŀ | | |
| प्रवृत्ति निवृत्ति विवरी। तोचि आत्मा | 1 8 | 9 0 | 1 |

| ऐके देखे हुंगे चाखे । नाना प्रकारें वोळखे | 1 |
|---|------|
| संतोष पावे आणी धाके । तोचि आत्मा | 1881 |
| आनंद विनोद उदेग चिंता । काया छ्याया माया ममता | |
| जीवित्वें पावे नाना वेथा । तोचि आत्मा | |
| पदार्थाची आस्था घरी। जनीं वाईट बरें करी | |
| आपल्यां राखे पराव्यां मारी । तोचि आत्मा | - |
| युद्धे होतां दोहिंकडे । नाना शरीरीं वावडे | |
| परस्परें पाडी पडे। तोचि आत्मा | · |
| तो येतो जातो देहीं वर्ततो । हासतो रडतो प्रस्तावतो | |
| समर्थ करंटा होतो। व्यापासारिखा | |
| होतो लंडी होतो बळकट। होतो विद्यावंत होतो घट | |
| न्यायेवंत होतो उत्घट। तोचि आत्मा | |
| धीर उदार आणि कृपण। वेडा आणि विचक्षण उछक आणि सहिष्ण। तोचि आत्मा | |
| | |
| विद्या कुविद्या दोहिंकडे । आनंदरूप वावडे जेथें तेथें सर्वांकडे । तोचि आत्मा | 1861 |
| निजे उठे बैसे चाले । धावे धावडी डोले तोले | • |
| सोइरे धायेरे केले। तोचि आत्मा | 1881 |
| पोथी वाची अर्थ सांगे। ताळ धरी गाऊं लागे | |
| वादविवाद वाउगे। तोचि आत्मा | |
| आत्मा नस्तां देहांतरीं । मग तें प्रेत सचराचरीं | |
| A D.A. | |
| देहसंगें आत्मा करी । सर्व कांहीं | 1561 |
| · · | |
| दहसग आत्मा करी । सर्व कांहीं येकेंविण येक काये । कामा नये वायां जाये हाणोनि हा उपाये । देहयोगें | |

O O

| देह अनित्य आत्मा नित्य । हाचि विवेक नित्यानित्य । |
|---|
| अवधें सूक्ष्माचें कृत्य । जाणती ज्ञानी । २३। |
| पिंडीं देहधर्ता जीव । ब्रह्मांडीं देहधर्ता शिव । |
| ईश्वरतनुचतुष्टये सर्व । ईश्वर धर्ता । २४। |
| त्रिगुणापर्ता जो ईश्वर । अर्धनारीनटेश्वर । |
| सकळ सृष्टीचा विचार । तेथून जाला ।२५। |
| बरवें विचारून पाहीं। स्त्री पुरुष तेथें नाहीं। |
| चंचळरूप येतें कांहीं। प्रत्ययासी ।२६। |
| मुळीहून सेवटवरी । ब्रह्मादि पिप्लीका देहधारी । |
| नित्यानित्यविवेक चतुरीं । जाणिजे ऐसा । २७। |
| जड तितुकें अनित्य । आणि सूक्ष्म तितुकें नित्य । |
| याहमध्य नित्यानित्य । पुढें निरोपिलें । २८। |
| स्यूळ सूक्ष्म वोलांडिलें । कारण माहाकारण सांडिलें । |
| विराट हिरण्यगर्भ खंडिलें । विवेकानें । २९। |
| अव्याकृत मूळप्रकृती । तेथें जाऊन बैसली वृत्ती । |
| त वृत्ति व्हावया निवृत्ति । निरूपण ऐका । ३०। |
| आत्मानात्माविवेक बोलिला । चंचळात्मा प्रत्यया आला । |
| पुढिले समासीं निरोपिला । सारासार विचार ।३१। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आत्मानात्मविवेकनाम' समास पहिला समाप्त.

दशक १३: समास २

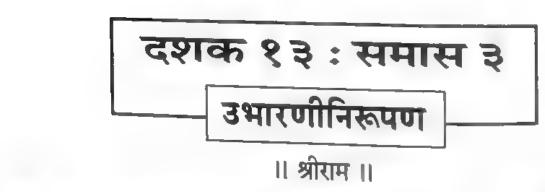
सारासारनिरूपण

| एका सारासार विचार | । उभारलें जगडंबर। |
|------------------------------|----------------------------|
| त्यांत कोण सार कोण असार | । विवेकें वोळखा |
| दिसेल तें नासेल | । आणि येईल तें जाईल । |
| जें असतचि असेल | । तेंचि सार । २। |
| मागां आत्मनात्माविवेक बोलिला | । अनात्मा वोळखोन सांडिला । |
| आत्मा जाणतां लागला | मुळींचा मूळतंतु । ३। |
| मुळीं जे राहिली वृत्ति | । जाली पाहिजे निवत्ति । |
| सारासार विचार श्रोतीं | । बरा पाहावा । ४। |
| नित्यानित्य विवेक केला | |
| निवृत्तिरूपें हेत उरला | । निराकारीं । ५ । |
| हेत म्हणिजे तो चंचळ | |
| सारासारविचारें चंचळ | । होऊन जातें । ६ । |
| चळे म्हणोनि ते चंचळ | |
| निश्चळीं उडे चंचळ | |
| ज्ञान आणि उपासना | । दोनी येकचि पाहाना । |
| | । जगोद्धार । ८। |
| द्रष्टा साक्षी जाणता | |
| ज्ञान देवचि तत्वतां | |
| त्या ज्ञानाचें विज्ञान होतें | |
| चंचळ अवधें नासतें | |

| नासिवंत नासेल किं नासेना । ऐसा अनुमानचि आहे मना । | |
|---|-------|
| तरी तो पुरुष सहसा ज्ञाना । अधिकारी नव्हे । १ | ११। |
| नित्य निश्चये केला । संदेह उरतचि गेला । | |
| तरी तो जाणावा वाहावला । माहा मृगजळीं | १२। |
| क्षयेचि नाहीं जो अक्षई । व्यापकपणें सर्वां ठाईं। | |
| तेथें हेत संदेह नाहीं । निर्विकारीं | 1 € 9 |
| जें उदंड घनदाट । आद्य मध्य सेवट । | |
| अचळ अढळ अतुट । जैसें तैसें । १ | १४। |
| पाहातां जैसें गगन । गगनाहून तें सघन । | |
| | १५। |
| चर्मचक्षु ज्ञानचक्षु । हा तों अवघाच पूर्वपक्षु । | |
| | १६। |
| संगत्यागेंविण कांहीं । परब्रह्म होणार नाहीं । | |
| | १७। |
| निर्शतां अवधेचि निर्शलें । चंचळ तितुकें निघोन गेलें । | |
| | १८। |
| आठवा देह मूळमाया । निर्शीन गेल्या अष्टकाया। | |
| साधु सांगती उपाया । कृपाळुपणें । | 441 |
| सोहं हंसा तत्वमसी । तें ब्रह्म तूं आहेसी । विचार पाहातां स्थिति ऐसी । सहजचि होते । १ | 201 |
| साधक असोन ब्रह्म उरलें । तेथें वृत्तिसुन्य जालें। | 701 |
| | २१। |
| तें तापेना ना निवेना । उजळेना ना काळवंडेना । | • • • |
| | २२। |

दिसेना ना भासेना। उपजेना ना नासेना। तें येना ना जाईना । परब्रह्म तें 1531 तें भिजेना ना वाळेना । तें विझेना ना जळेना । जयास कोणीच नेईना । परब्रह्म तें 1881 जें सन्मुख चि चहुंकडे । जेथें दृश्य भास उडे । धन्य साधु तो पवाडे । निर्विकारीं 1241 निर्विकल्पीं कल्पनातीत । तोचि वोळखावा संत । येर अवघेचि असंत । भ्रमरूप 1 २६। खोटें सांडून खरें घ्यावे । तरीच परीक्षवंत म्हणावें। असार सांडून सार घ्यावें । परब्रह्म तें 1991 जाणतां जाणतां जाणीव जाते । आपली वृत्ति तद्रूप होते । आत्मनिवेदन भक्ति ते । ऐसी आहे 1261 वाच्यांशें भक्ति मुक्ति बोलावी । लक्ष्यांशें तद्रुपता विवरावी । विवरतां हेतु नुरावी । ते तद्रूपता 1231 सद्रुप चिद्रुप आणि तद्रुप । सस्वरूप म्हणिजे आपलें रूप । आपलें रूप म्हणिजे अरूप । तत्वनिर्शनाउपरी ।३०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सारासारनिरूपणनाम' समास दुसरा समाप्त.



ब्रह्म घन आणि पोकळ । आकाशाहून विशाळ । निर्मळ आणी निश्चळ । निर्विकारी । १

| ऐसेंचि असतां कित्येक काळ । तेथें आरंभला भूगोळ | l | | |
|--|---|-----|------------|
| तया भूगोळाचें मूळ । सावध ऐका | | ? | l |
| परब्रह्म असतां निश्चळ । तेथें संकल्प उठिला चंचळ | t | | |
| तयास बोलिजे केवळ । आदिनारायेण | | 3 | 1 |
| मूळमाया जगदेश्वर । त्यासीच म्हणिजे शङ्गुणैश्वर | ŀ | | |
| अष्ट्या प्रकृतीचा विचार । तेथें पाहा | | 8 | ١ |
| ऐलिकडे गुणक्षोभिणी । तेथें जन्म घेतला त्रिगुणीं | l | | |
| मूळ वोंकाराची मांडणी। तेथून जाणावी | | ધ | ı |
| अकार उकार मकार । तिनी मिळोन वोंकार | l | | |
| पुढें पंचभूतांचा विस्तार। विस्तारला | | Ę | 1 |
| आकाश म्हणिजेतें अंतरात्म्यासी । तयापासून जन्म वायोसी | 1 | | |
| वायोपासून तेजासी । जन्म जाला | | 9 | l |
| वायोचा कातरा घसवटे। तेणें उष्णें वन्हि पेटे | | | |
| सूर्यबिंब तें प्रगटे। तये ठाई | | 6 | l |
| वारा वाजतो सीतळ । तेथें निर्माण जालें जळ | | | |
| तें जळ आळोन भूगोळ । निर्माण जाला | | 9 | 1 |
| त्या भूगोळाचे पोटीं । अनंत बीजांचिया कोटी | | | |
| पृथ्वी पाण्या होता भेटी । अंकुर निघती | | १० | 1 |
| पृथ्वी वल्ली नाना रंग । पत्रें पुष्पांचे तरंग | | | |
| नाना स्वाद ते मग। फळें जालीं | | ११ | 1 |
| पत्रें पुष्पें फळें मुळें। नाना वर्ण नाना रसाळें | | | |
| नाना घान्यें अन्नें केवळें । तेथून जालीं | | 8 3 | } I |
| अन्नापासून जाले रेत । रेतापासून प्राणी निपजत | | | |
| ऐसी हे रोकडी प्रचित । उत्पत्तीची | 1 | 83 | 1 \$ |

| अंडज जारज श्वेतज उद्वीज । पृथ्वी पाणी सकत | |
|--|------------|
| B 80 | |
| ऐसें हें नवल चोज । सृष्टिरचनेचें | 1881 |
| च्यारि चाणी च्यारि वाणी । चौऱ्यासि लक्ष | |
| निर्माण जाले लोक तिनी । पिंडब्रह्मांड | 1841 |
| मुळीं अष्ट्या प्रकृती । अवघे पाण्यापास् | न जन्मती। |
| पाणी नसतां मरती । सकळ प्राणी | 1881 |
| नव्हे अनुमानाचें बोलणें। याचा बरा प्रत | यये घेणें। |
| वेदशास्त्रें पुराणें । प्रत्ययें घ्यावीं | |
| जें आपल्या प्रत्यया येना । तें आनुमानिक | घ्यावेना । |
| प्रत्ययाविण सकळ जना । वेवसाये नाहीं | 1281 |
| वेवसाये प्रवृत्ती निवृत्ती । दोहिंकडे पाहिजे | प्रचिती । |
| प्रचितीविण अनुमानें असती । ते विवेकहीन | 1861 |
| ऐसा सृष्टिरचनेचा विचार । संकळित बोलित | ठा प्रकार। |
| आता विस्ताराचा संव्हार । तोहि ऐका | 1201 |
| मुळापासून सेवटवरी । अवघा आत्मारार | मचि करी। |
| करा आणि विवरी। येथायोग्य | 1281 |
| पुढे संव्हार निरोपिला । श्रोतीं पाहिजे | ऐकिला । |
| इतुक्याउपरी जाला । समास पूर्ण | 1221 |
| | |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'उभारणीनिरूपणनाम' समास तिसरा समाप्त.

दशक १३: समास ४

प्रलय

| पृथ्वीस होईल अंत । भूतांस मांडेल कल्पांत । ऐसा समाचार साध्यंत । शास्त्रीं निरोपिला । | 8 |
|---|------|
| | |
| शत वरुषें अनावृष्टि । तेणें जळेल हे सृष्टि । | |
| पर्वत माती ऐसी पृष्ठी । भूमीची तरके | 7 |
| बारा कळी सूर्यमंडळा । किर्णापासून निघती ज्वाळा । | |
| शत वरुषें भूगोळा । दहन होये | ا \$ |
| सिंधूरवर्ण वसुंधरा । ज्वाळा लागती फणिवरा । | |
| | ۶ I |
| त्या विषाच्या ज्वाळा निघती । तेणें पाताळें जळती । | |
| माहापावकें भस्म होती । पाताळ लोक | k 1 |
| तेथें महाभूतें खवळती । प्रळयेवात सुटती । | |
| प्रळयेपावक वाढती । चहुंकडे | 1 |
| तेथें अक्रा रुद्र खवळले । बारा सूर्य कडकडिले । | |
| · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | 9 |
| वायो विजांचे तडाखे । तेणें पृथ्वी अवधी तरखे। कठिणत्व अवधेंचि फांके । चहुंकडे | |
| काठणत्व अवधेचि फांके । चहुंकडे । व तेथें मेरूची कोण गणना । कोण सांभाळिल कोणा। | |
| | |
| पृथ्वीने विरी सांडिली । अवधी धगधगायेमान जाली । | , |
| ब्रह्मांडभटीं जळोन गेली । येकसरां । १ | 0 |

| जळोनि विरी सांडिली । विशेष माहावृष्टी जाली । तेणें पृथ्वी विराली । जळामधें । ११। |
|---|
| भाजला चुना जळीं विरे । तैसा पृथ्वीस धीर न धरे । विरी सांडूनिया त्वरें । जळीं मिळाली । १२। |
| शिष कूर्म वाऱ्हाव गेला । पृथ्वीचा आधार तुटला । सत्त्व सांडून जळाला । मिळोन गेली |
| तेथें प्रळयेमेघ उचलले। कठिण घोषें गर्जिनले। अखंड विजा कडकडिले। ध्वनि घोष ।१४। |
| पर्वतप्राये पडती गारा । पर्वत उडती ऐसा वारा । निबिंड तथा अंधकारा । उपमाचि नाहीं ।१५। |
| सिंधु नद्या एकवटल्या । नेणो नभींहून रिचवल्या । संधिच नाहीं धारा मिळाल्या । अखंड पाणी ।१६। तेथें मछ कूर्म सर्प पडती । पर्वतासारिखे दिसती । |
| गर्जना होतां मिसळती । जळात जळें । १७। सप्त सिंधु आवर्णी गेले । आवर्णवेडे मोकळे जाले। |
| अळलप जालिया खवळले । प्रळयेपावक ११८। ब्रह्मांडा ऐसा तप्तलोहो । शोधी जन्मा सम्बर्धे । |
| तेणें आटोन गेलें पाणी । असंभात्य गान्त्य करी । |
| दीपास पालव घातला । तैसा प्रळयेपावक विझाला । |
| उदंड पोकळी थोडा वारा । तेणें वितळोन गेला सारा । पंचभूतांचा पसारा । आटोपला ।२२। |
| |

महद्भूत मूळमाया । विस्मरणें वितुळे काया । पदार्थमात्र राहावया । ठाव नाहीं । २३। दृश्य हलकालोळें नेलें । जड चंचळ वितुळलें । याउपरी शाश्चत उरलें । परब्रह्म तें । २४।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'प्रलयनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक १३: समास ५ कहाणीनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

कोणी येक दोघे जण। पृथ्वी फिरती उदासीन। काळक्रमणें लागून । कथा आरंभिली । १ । श्रोता पुसे वक्तयासी । काहाणी सांगा जी बरवीसी । वक्ता म्हणे श्रोतयासी । सावध ऐकें येकें स्त्रीपुरुषें होतीं । उभयेतांमधें बहु प्रीति । येकरूपेंचि वर्तती । भिन्न नाहीं । ३ । ऐसा कांही येक काळ लोटला । तयांस येक पुत्र जाला । कार्यकर्ता आणि भला । सर्वविषीं 181 पुढें त्यासिह जाला कुमर । तो पित्याहून आतुर । कांहीं तदर्ध चतुर । व्यापकपणें ાધા तेणें व्याप उदंड केला । बहुत कन्यापुत्र व्याला । उदंड लोक संचिला । नाना प्रकारें । ६ । त्याचा पुत्र जेष्ठ । तो अज्ञान आणि रागिट । अथवा चुकतां नीट । संव्हार करी । ७।

| पिता उगाच बैसला । लेकें बहुत व्याप केला । सर्वज्ञ जाणता भला । जेष्ठ पुत्र । ८ । |
|--|
| ार नागता मला । जन्म पुत्र |
| नातु त्याचें अर्घ जाणे । पणतु तो कांहींच नेणे । |
| चुकतां संव्हारणें। माहा क्रोधी |
| लेक सकळांचें पाळण करी । नातु मेळवी वरिचावरी । |
| पणतु चुकल्यां संव्हार करी । अकस्मात । १०। |
| नेमस्तपणे वंश वाढला । विस्तार उदंदन्ति जाला । |
| ऐसा बहुत काळ गेला । आनंदरूप । ११। |
| विस्तार वाढला गणवेना । विद्यांस कोणीन गणीन |
| परस्परें किंत मना। बहुत पडिला ।१२। |
| उदंड घरकळहो लागला । तेणें कित्येक संव्हार जाला। |
| निया किया लागला । तेण कित्यक सव्हार जाला । |
| विपट पडिलें थोरथोरांला । बेबंद जालें । १३। |
| नेपाएगों करीं |
| नेणपणें भरीं भरले। मग ते अवधेच संव्हारले। |
| जस यदव निमाल । कार्यको |
| |
| बाप लेंक नातु पणतु । सकळांचा जाला निपातु । |
| |
| 70 |
| एसा काहाणा जो विवरला । तो जनगणना राज्य । |
| |
| श्राता वक्ता धन्य जाला । प्रचितीनें ।१६। |
| एसा काहाणा अपर्व जे ते । उनंत के - |
| इतुकें बोलोनी गोसावी ते । निवांत जाले । १७। |
| १९७। |
| जानवा काहाणा मने । जन्मे |
| ऐसें लोकमें |
| भारतम् ।ववरा । कोणीतरी |
| उनमा वाकत आवक्ते । — भे - १० १० १ |
| न्यनपर्ण क्या अल्ला इतुक सकाळत बालिल । |
| |
| THE CANAL TO THE C |
| दास महणे जग्गोधार । तेचि करिती । २०। |
| , रूप जग्गोधार । तेचि करिती ।२०। |
| 444 4 444 |

त्या जगोद्धाराचें लक्षण । केलें पाहिजे विवरण ।

सार निवडावें निरूपण । यास बोलिजे । २१।

निरूपणीं प्रत्ययें विवरावें । नाना तत्वकोडें उकलावें ।

समजतां समजतां व्हावें । निःसंदेह । १२।

विवरोन पाहातां अष्ट देह । पुढें सहजचि निःसंदेह ।

अखंड निरूपणें राहे । समाधान ।२३।

तत्वांचा गल्बला जेथें । निवांत कैंचें असेल तेथें ।

याकारणें गुल्लिपरतें । कोणियेकें असावें ।२४।

ऐसा सूक्ष्म संवाद । केलाचि करावा विशद ।

पुढिले समासीं लघुबोध । सावध ऐका ।२५।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'कहाणीनिरूपणनाम' समास पाचवा समाप्त.

> दशक १३: समास ६ लघुबोध ॥ श्रीराम ॥

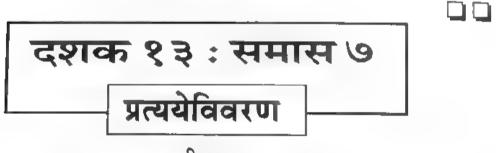
जें बोलिजेती पंचतत्वें । त्यांचीं अभ्यासाया नांवें ।
तदुपरी स्वानुभवें । रूपें जाणावीं । १ ।
यामधें शाश्वत कोण । आणी अशाश्वत कोण ।
ऐसें करावें विवरण । प्रत्ययाचें । २ ।
पंचभूतांचा विचार । नांवरूप सारासार ।
तोचि बोलिला निर्धार । सावध ऐका । ३ ।

| पृथ्वी आप तेज वायो आकाश । नावें बोलिलीं सावकास । |
|--|
| आतां रूपाचा विश्वास । श्रवणें धरावा |
| पृथ्वी म्हणिजे ते धरणी । आप म्हणिजे तें पाणी । |
| तेज म्हणिजे अग्नि तरणी । सतेजादिक |
| वायो म्हणिजे तो वारा । आकाश म्हणिजे पैस सारा । |
| आतां शाश्वत तें विचारा । आपले मनीं |
| येक शीत चांचपावें । म्हणिजे वर्म पदे ठातें। |
| तैसें थोड्या अनुभवें । बहुत जाणावें । ७। |
| पृथ्वी रचते आणि खचते । हें तों प्रत्ययास येतें। |
| नाना रचना होत जाते । सृष्टिमधें । ८। |
| म्हणौन रचतें तें खचतें। आप तेंहि आटोन जाते। |
| तजाह प्रगटोन विझतें । वारेंहि राहे । १। |
| अवकाश नाममात्र आहे। तेंहि विचारितां न राहे। |
| एव पचभूतिक राहे । हें तों घडेना ।१०। |
| ऐसा पांचा भूतांचा विस्तार । नासिवंत हा विर्धार । |
| शाश्चत आत्मा निराकार । सत्य जाणावा ।११। |
| तो आत्मा कोणास कळेना । ज्ञानेंविण आकळेना । |
| Mediliasin ———————————————————————————————————— |
| विचारिकं । विचारावें ।१२। |
| विचारितां सज्जनासी । ते म्हणती कीं अविनासी । |
| १९३ अत्मयासी । बोलोंच उसे । १३। |
| ानराकारा भासे आकार । असी |
| भागा आकार । तितेते बोळावाचा । १४। |
| भाराकार जीणावा चित्र । |
| यास बोलिजे नित्यानित्य । विचारणा ॥१५। |
| |

| सारीं भासे असार । आणि असारीं भासे सार । |
|--|
| सारासार विचार । शोधून पाहावा । १६। |
| पंचभूतिक तें माइक । परंतु भासे अनेक । |
| आणि आत्मा येक । व्यापून असे । १७। |
| चहुं भूतांमधें गगन । तैसें गगनीं असे सघन । |
| नेहटून पाहातां अभिन्न । गगन आणि वस्तु । १८। |
| उपाधीयोगेंचि आकाश । उपाधी नस्तां निराभास । |
| निराभास तें अविनाश । तैसें गगन । १९। |
| आतां असो हे विवंचना । परंतु जें पाहातां नासेना । |
| तें गे तेंचि अनुमाना । विवेकें आणावें ।२०। |
| परमात्मा तो निराकार । जाणिजे हा विचार सार । |
| आणि आपण कोण विचार । पाहिला पाहिजे । २१। |
| देहास अंत येतां । वायो जातो तत्वतां । |
| हें लिटकें म्हणाल तरी आतां । स्वासोस्वास घरावा ।२२। |
| खास कोंडतां देह पडे । देह पडतां म्हणतीं मडें। |
| मङ्यास कर्तृत्व न घडे। कदाकाळीं ।२३। |
| देहावेगळा वायो न करी । वायोवेगळा देह न करी। |
| विचार पाहातां कांहींच न करी । येकावेगळें येक । २४। |
| ^{उन्} चे पाहातां मनस्य दिसे । विचार गेवां कांटींच उसे । |
| ापमक्ताच लक्षण ऐसें । वोळखावें । २५। |
| भवा आपण मोर्स क्यान्त्रे । जी भवाने क्योगानिके जाते । |
| ""'(ध न होता प्राचार्त । अक्रोंच तात । ३६। |
| ' 11'1 (Th. 27' Man.) (C) |
| "राष लक्षण । अतिसारे न ग्रह । २७। |
| 1780 Dasbodh Od |
| 1780 Dasbodh (Marathi)_Section_17_1_Front |
| |

अविचार आणि विचार। जैसा प्रकाश अंधकार। विकार आणि निर्विकार। येक नव्हे कीं ।२८। जेथें नाहीं विवंचना। तेथें कांहींच चालेना। खरें तेंचि अनुमाना। कदान ये ।२९। प्रत्ययास बोलिजे न्याये। अप्रत्यये तो अन्याये। ज्यात्यांधास परीक्षा काये। नाना रत्नांची ।३०। म्हणोन ज्ञाता धन्य धन्य। जो निर्गुणेंसी अनन्य। आत्मनिवेदनें मान्य। परम पुरुष ।३१।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'लघुबोधनाम' समास सहावा समाप्त.



॥ श्रीराम ॥

निर्मळ निश्चळ निराभास । तयास दृष्टांत आकाश ।
आकाश म्हणिजे अवकाश । पसरला पैस । १ ।
आधीं पैस मग पदार्थ । प्रत्यये पाहतां यथार्थ ।
प्रत्ययेविण पाहातां वेर्थ । सकळ कांहीं । २ ।
ब्रह्म म्हणिजे तें निश्चळ । आत्मा म्हणिजे तो चंचळ ।
तयास दृष्टांत केवळ । वायो जाणावा । ३ ।
घटाकाश दृष्टांत ब्रह्माचा । घटबिंब दृष्टांत आत्म्याचा ।
विवरतां अर्थ दोहींचा । भिन्न आहे । ४ ।
भूत म्हणिजे जितुकें जालें । जालें तितुकें निमालें ।
चंचळ आलें आणी गेलें । ऐसें जाणावें । ५ ।

| अविद्या जड आत्मा चंचळ । जड कर्पूर आत्मा अनळ। | |
|---|---|
| दोनी जळोन तत्काळ । विझोन जाती । ६ | ł |
| ब्रह्म आकाश निश्चळ जाती । आत्मा वायो चंचळ जाती । | |
| परीक्षवंत परीक्षिती । खरें किं खोटें । ७ | l |
| जड अनेक आत्मा येक । ऐसा आत्मानात्माविवेक । | |
| जगा वर्तविता जगन्नायेक । तयास म्हणावें । ८ | l |
| जड अनात्मा चेतवी आत्मा । सर्वीं वर्ते सर्वात्मा । | |
| अवघा मिळोन चंचळात्मा । निश्चळ नव्हे । ९ । | |
| निश्चळ तें परब्रह्म । जेथें नाहीं दृश्यभ्रम । | |
| विमळ ब्रह्म तें निभ्रम । जैसें तैंसें 1१०। | 1 |
| आधीं आत्मानात्माविवेक थोर । मग सारासारविचार । | |
| सारासारविचारें संव्हार । प्रकृतीचा । ११। | |
| विचारें प्रकृति संव्हारे । दृश्य अस्तांच वोसरे । | |
| अंतरात्मा निर्गुणी संचरे । अध्यात्मश्रवणें ।१२। | |
| चढता अर्थ लागला । तरी अंतरात्मा चढतिच गेला । | |
| उतरल्या अर्थे उतरला । भूमंडळीं । १३। | |
| अर्थासारिखा आत्मा होतो । जिकडे नेला तिकडे जातो । | |
| अनुमानें संदेहीं पडतो । कांहींयेक ।१४। | |
| निसंदेह अर्थ चालिला । तरी आत्मा निसंदेहचि जाला । | |
| अनुमानअर्थे जाला । अनुमानरूपी । १५। | |
| नवरसिक अर्थ चाले । श्रोते तद्रूपचि जाले । चाटपणें होऊन गेले । चाटचि आवधे । १६। | |
| | |
| जैसा जैसा घडे संग । तैसे गुह्यराचे रंग। याकारणें उत्तम मार्ग । पाहोन धरावा । १७। | |
| 1701 | |

| 41.4 |
|---|
| उत्तम अन्नें बोलत गेले । तरी मन अन्नाकारचि जालें। |
| न्यसारा विनितेचे विणिल । तरा मन तथाय पता । १८। |
| पदार्थवर्णन अघवें। किती म्हणोन सांगावें। |
| पदाथवणन जनम । होये किं नव्हे । १९। |
| परतु अतरा समजाय । स्वयं ग्रंबरी सहद वैसकें। |
| जें जें देखिलें आणी ऐकिलें। तें अंतरीं सदृढ बैसलें। |
| हित अन्हित परीक्षिलें । परीक्षवंतीं । २०। |
| याकारणें सर्व सांडावें । येक देवास धुंडावें । |
| तरीच वर्म पडे ठावें। कांहींयेक ।२१। |
| नाना सुखें देवें केलीं। लोकें तयास चुकलीं। |
| ऐसीं चुकतांच गेलीं । जन्मवरी । २२। |
| सर्व सांडून शोधा मजला । ऐसें देवचि बोलिला। |
| लोकीं शब्द अमान्य केला । भगवंताचा । २३। |
| म्हणोन नाना दुःखें भोगिती । सर्वकाळ कष्टी होती । |
| मनीं सुखिच इछिती । परी तें कैंचें । २४। |
| उदंड सुख जया लागलें। वेडें तयास चुकलें। |
| सुख सुख फ्या लागल । यु स्वास चुनर । २५। |
| • |
| शाहाण्यानें ऐसें न करावें । सुख होये तेंचि करावें । देवासी शंहित जातें । बहाांडापरतें । २६। |
| द्वासा पुडित गाव । प्रकारात्त |
| मुख्य देवचि ठाईं पडिला । मग काये उणें तयाला। |
| लोक वेडे विवेकाला । सांडून जाती |
| विवेकाचें फळ तें सुख । अविवेकाचें फळ तें दुःख । |
| यांत मानेल तें अवश्यक । केलें पाहिजे । २८। |
| कर्तयासी वोळखावें । यास विवेक म्हणावें । |
| विवेक सांडितां व्हावें । परम दुःखी । २९। |
| |

आतां असो हें बोलणें। कर्त्यास वोळखणें। आपलें हित विचक्षणें। चुकों नये ।३०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'प्रत्ययेविवरणनाम' समास सातवा समाप्त.

दशक १३: समास ८

॥ श्रीराम् ॥

श्रोता म्हणे वक्तयासी । कोण कर्ता निश्चयेंसीं । सकळ सृष्टि ब्रह्मांडासी । कोणें केलें 181 तव बोलिले सभानायेक । जे बोलिके येकाहून येक । या बोलण्याचें कौतुक । श्रोतीं सादर ऐकावें । २ । येक म्हणती कर्ता देव । येक म्हणती कोण देव। आपुलाला अभिप्राव । बोलते जाले उत्तम मध्यम कनिष्ठ । भावार्थे बोलती पष्ट । आपुलाली उपासना श्रेष्ठ । मानिती जनीं । ४ । कोणीयेक ऐसें म्हणती । कर्ता देव मंगळमूर्ती । येक म्हणती सरस्वती । सर्व करी येक म्हणती कर्ता भैरव । येक म्हणती खंडेराव। येक म्हणती बीरेदेव । येक म्हणती भगवती । ६ । येक म्हणती नरहरी। येक म्हणती बनशंकरी। येक म्हणती सर्व करी । नारायेणु । ७ । येक म्हणती श्रीराम कर्ता । येक म्हणती श्रीकृष्ण कर्ता । येक म्हणती भगवंत कर्ता । केशवराज

| येक म्हणती पांडुरंग। येक म्हणती श्रीरंग। | |
|--|-----|
| | 9 1 |
| येक म्हणती मुंज्या कर्ता । येक म्हणती सूर्य कर्ता । | |
| येक म्हणती अग्न कर्ता। सकळ कांहीं । १ | 01 |
| येक म्हणती लक्ष्मी करी । येक म्हणती मारुती करी । | |
| येक म्हणती धरत्री करी। सर्व कांहीं । १ | 18 |
| येक म्हणती तुकाई। येक म्हणती येमाई। | |
| येक म्हणती सटवाई। सर्व करी | 21 |
| येक म्हणती भार्गव कर्ता । येक म्हणती वामन कर्ता । | |
| येक म्हणती परमात्मा कर्ता । येकचि आहे । १ | 31 |
| येक म्हणती विरणा कर्ता । येक म्हणती बस्वंणा कर्ता । | |
| येक म्हणती रेवंणा कर्ता । सर्व कांहीं । १ | ४। |
| कोणी म्हणती रवळया कर्ता । येक म्हणती स्वामी कार्तिक कर्ता । | |
| येक म्हणती वेंकटेश कर्ता । सर्व कांहीं । १ | 41 |
| येक म्हणती गुरु कर्ता । येक म्हणती दत्त कर्ता । | |
| येक म्हणती मुख्य कर्ता । वोढ्या जगन्नाथ । १ | ह्। |
| येक म्हणती ब्रह्मा कर्ता । येक म्हणती विष्णु कर्ता । | |
| येक म्हणती महेश कर्ता । निश्चयेंसीं । १ | 91 |
| येक म्हणती प्रजन्य कर्ता । येक म्हणती वायो कर्ता । | |
| येक म्हणती करून अकर्ता । निर्गुण देव । १ | 15 |
| येक म्हणती माया करी । येक म्हणती जीव करी। | |
| the second of th | 91 |
| येक म्हणती प्रेत्न करी । येक म्हणती स्वभाव करी । | ام |
| येक म्हणती कोण करी। कोण जाणे । २ | 0 |

| ऐसा कर्त्यांचा विचार । पुसतां भरला बाजार । |
|--|
| आतां कोणाचें उत्तर । खरें मानावें । २१। |
| जेहिं जो देव मानिला । कर्ता म्हणती तयाला । |
| ऐसा लोकांचा गल्बला। वोसरेना ।२२। |
| आपुलाल्या साभिमानें । निश्चयेचि केला मनें । |
| याचा विचार पाहाणें। घडेचिना ।२३। |
| बहु लोकांचा बहु विचार । अवघा राहों द्या बाजार । |
| परंतु याचा विचार । ऐसा आहे । २४। |
| श्रोतीं व्हावें सावधान । निश्चयें तोडावा अनुमान । |
| प्रत्यये मानावा प्रमाण । जाणते पुरुषीं ।२५। |
| जें जें कर्तयाने केलें। तें तें त्याउपरी जालें। |
| कर्त्यापूर्वीं आडळलें। न पाहिजे कीं । २६। |
| केलें तें पंचभूतिक। आणि पंचभूतिक ब्रह्मादिक। |
| तरी भूतांशें पंचभूतिक । केलें तें घडेना । २७। |
| पंचभूतांस वेगळें करावें । मग कर्त्यास वोळखावें । पंचभूतिक तें स्वभावें । कर्त्यांत आलें । २८। |
| |
| पंचभूतांवेगळें निर्गुण । तेथें नाहीं कर्तेपण । निर्विकारास विकार कोण । लाऊं शके । २९। |
| |
| निर्गुणास कर्तव्य न घडे । सगुण जाल्यांत सांपडे । आतां कर्तव्यता कोणेकडे । बरें पाहा ।३०। |
| · |
| लटिक्याचा कर्ता कोण । हें पुसर्णोचि अप्रमाण । म्हणोन हेंचि प्रमाण । जें स्वभावेंचि जालें ।३१। |
| येक समाप केन किर्ण : |
| येक सगुण येक निर्गुण । कोठें लाऊं कर्तेपण । या अर्थाचें विवरण । बरें पाहा । ३२। |
| अथाचे विवरण । बरें पाहा । ३२। |

सगुणें सगुण केलें । तरी तें पूर्वीच आहे जालें ।

निर्गुणास कर्तव्य लाविलें । न वचे कीं कदा ।३३।

येथें कर्ताचि दिसेना । प्रत्यये आणावा अनुमाना ।

दृश्य सत्यत्वें असेना । म्हणोनियां ।३४।

केलें तें अवधेंच लिटकें । तरी कर्ता हें बोलणेंचि फिकें ।

वक्ता महणे रे विवेकें । बरें पाहा ।३५।

बरें पाहातां प्रत्ययें आला । तरी कां करावा गल्बला ।

प्रचित आलियां आपणाला । अंतर्यामीं ।३६।

आतां असो हें बोलणें । विवेकी तोचि हें जाणें।

पूर्वपक्ष लागे उडवणें । येरवीं अनुर्वाच ।३७।

तंव श्रोता करी प्रस्न । देहीं सुखदु:खभोक्ता कोण।

पुढें हेंचि निरूपण। बोलिलें असे ।३८।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'कर्तानिरूपणनाम' समास आठवा समाप्त.

दशक १३: समास ९

॥ श्रीराम ॥

आत्मयास शरीरयोगें । उद्वेग चिंता करणें लागे । शरीरयोगें आत्मा जगे । हें तों प्रगटिच आहे । १ । देह अन्नचि खायेना । तरी आत्मा कदापी जगेना । आत्म्याविण चेतना । देहास कैंची । २ । हें येकावेगळें येक । करूं जातां निरार्थक । उभयेयोगें कोणीयेक । कार्य चाले

| देहाला नाहीं चेतन | । आत्म्यास पदार्थ उचलेना । |
|---------------------------|-------------------------------|
| स्वप्नभोजनें भरेन | । पोट कांहीं । ४। |
| आत्मा स्वप्नअवस्थेंत जाते | । परन्तु देहामध्यें हि असतो । |
| निदसुरेपणें खाजवितो | । चमत्कार पाहा । ५ । |
| अन्नरसें वाढे शरी | र । शरीरप्रमाणें विचार । |
| वृद्धपणीं तदनंत | र । दोनी लाहानाळती । ६ । |
| उन्मत द्रव्य देह खातं | । देहयोगें आत्मा भुलतो। |
| विस्मरणें शुद्धि सांडितं | । सकळ कांहीं । ७। |
| देहानें घेतलें वी | |
| वाढणें मोडणें आत्मयार | |
| वाढणें मोडणें जाणें येण | 3. 2. 46.411 3.11 |
| नाना प्रकारें भोगा | 1 / 1 |
| वारुळ म्हणिजे पोकत | छ । मुंग्यांचे मार्गचि सकळ। |
| तैसेंचि हें केवर | छ । शरीर जाणावें । १०। |
| शरीरीं नाडीचा खेर | ा । नाडीमध्यें पोकळ वाटा । |
| लाहान थोर सगट | 1,7,1 |
| प्राणी अन्नोदक घेत | ो । त्याचा अन्नरस होतो । |
| त्यास वायो प्रवर्तत | ो । स्वासोस्वासें ।१२। |
| नाडीद्वारां धांवे जीव | न । जीवनामधें खेळे पवन । |
| त्या पवनासरिसा जा | ग । आत्माहि विवरे । १३। |
| वृषेनें शोकलें शरी | र । आत्म्यास कळे हा विचार । |
| मग उठवून शर्र | र । चालवी उदकाकडे । १४। |
| उदक मागे शब्द बोल | वी । मार्ग पाहोन शरीर चालवी । |
| शरीर अवधेंच हालव | री । प्रसंगानुसार ।१५। |

| आच्यावाच्या बोलिवतो । ज्यासीं त्यासीं ।१६। बायेकांत म्हणे जालें जालें । देह सोवळें करून आणिलें । पायांत भरून चालिवलें । तांतडीं तांतडीं ।१७। त्यासी पात्रावरी बैसिवलें । नेतीं भरोन पात्र पाहिलें । हाताकरवीं आरंभिलें । आपोशन ।१८। हाताकरवीं प्राप्त उचलवी । मुखीं जाऊन मुख पसरवी । दातांकरवीं प्राप्त उचलवी । मुखीं जाऊन मुख पसरवी । दातांकरवीं चाववी । नेटें नेटें ।१९। आपण जिव्हेमधें खेळे । पाहातो परिमळसोहळे । केंस काडी खडा कळे । तत्काळ थुंकी ।२०। आळणी कळतां मीठ मागे । बायलेसि म्हणे आगे कांगे । डोळे ताऊन पाहों लागे । रागें रागें ।२१। गोडी लागतांच आनंदे । गोड नस्तां परम खेदे । वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे । आत्मयासी ।२२। नाना अन्नाची गोडी । नाना रसें स्वाद निवडी । तिखट लागतां मस्तक झाडी । आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार । कायसें करितें खापर । जिव्हेकरवीं कठिणोत्तर । बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांच्या उचिलला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश ।२५। देहीं सुखदु:खभोक्ता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत विन । जण्णां नेित अपत्मिणवी । | क्षुधा लागते ऐसें जाणतो । मग देहाला उठिवतो । |
|--|---|
| पायांत भरून चालिवलें । तांतडीं तांतडीं ।१७। त्यासी पात्रावरी बैसविलें । नेत्रीं भरोन पात्र पाहिलें । हाताकरवीं आरंभिलें । आपोशन ।१८। हाताकरवीं ग्रास उचलवी । मुखीं जाऊन मुख पसरवी । दातांकरवीं चाववी । नेटें नेटें ।१९। आपण जिव्हेमधें खेळे । पाहातो परिमळसोहळे । केंस काडी खडा कळे । तत्काळ थुंकी ।२०। आळणी कळतां मीठ मागे । बायलेसि म्हणे आगे कांगे । डोळे ताऊन पाहों लागे । रागें रागें ।२१। गोडी लागतांच आनंदे । गोड नस्तां परम खेदे । वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे । आत्मयासी ।२२। नाना अन्नाची गोडी । नाना रसें स्वाद निवडी । तिखट लागतां मस्तक झाडी । आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार । कायसें करितें खापर । जिव्हेकरवीं कठिणोत्तर । बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांब्या उचिलला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश ।२५। देहीं सुखदु:खभोकता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित् । जाएणों केंचि अपवारिश्वी । | आच्यावाच्या बोलवितो । ज्यासीं त्यासीं ।१६। |
| पायांत भरून चालिवलें । तांतडीं तांतडीं ।१७। त्यासी पात्रावरी बैसविलें । नेत्रीं भरोन पात्र पाहिलें । हाताकरवीं आरंभिलें । आपोशन ।१८। हाताकरवीं ग्रास उचलवी । मुखीं जाऊन मुख पसरवी । दातांकरवीं चाववी । नेटें नेटें ।१९। आपण जिव्हेमधें खेळे । पाहातो परिमळसोहळे । केंस काडी खडा कळे । तत्काळ थुंकी ।२०। आळणी कळतां मीठ मागे । बायलेसि म्हणे आगे कांगे । डोळे ताऊन पाहों लागे । रागें रागें ।२१। गोडी लागतांच आनंदे । गोड नस्तां परम खेदे । वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे । आत्मयासी ।२२। नाना अन्नाची गोडी । नाना रसें स्वाद निवडी । तिखट लागतां मस्तक झाडी । आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार । कायसें करितें खापर । जिव्हेकरवीं कठिणोत्तर । बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांब्या उचिलला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश ।२५। देहीं सुखदु:खभोकता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित् । जाएणों केंचि अपवारिश्वी । | बायेकांत म्हणे जालें जालें । देह सोवळें करून आणिलें । |
| हाताकरवीं आरंभिलें । आपोशन । १८। हाताकरवीं ग्रास उचलवी । मुखीं जाऊन मुख पसरवी । दातांकरवीं चाववी । नेटें नेटें ।१९। आपण जिव्हेमधें खेळे । पाहातो परिमळसोहळे । केंस काडी खडा कळे । तत्काळ थुंकी ।२०। आळणी कळतां मीठ मागे । बायलेसि म्हणे आगे कांगे । डोळे ताऊन पाहों लागे । रागें रागें ।२१। गोडी लागतांच आनंदे । गोड नस्तां परम खेदे । वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे । आत्मयासी ।२२। नाना अन्नाची गोडी । नाना रसें स्वाद निवडी । तिखट लागतां मस्तक झाडी । आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार । कायसें करितें खापर । जिव्हेकरवीं कठिणोत्तर । बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांब्या उचिलिला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश ।२५। देहीं सुखदु:खभोकता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित्ते । जगाणों नेन्दि अप्यास्थिती । | |
| हाताकरवीं ग्रास उचलवी । मुखीं जाऊन मुख पसरवी । दातांकरवीं चाववी । नेटें नेटें ।१९। आपण जिव्हेमधें खेळे । पाहातो परिमळसोहळे । केंस काडी खडा कळे । तत्काळ थुंकी ।२०। आळणी कळतां मीठ मागे । बायलेसि म्हणे आगे कांगे । डोळे ताऊन पाहों लागे । रागें रागें ।२१। गोडी लागतांच आनंदे । गोड नस्तां परम खेदे । वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे । आत्मयासी ।२२। नाना अन्नाची गोडी । नाना रसें स्वाद निवडी । तिखट लागतां मस्तक झाडी । आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार । कायसें करितें खापर । जिव्हेकरवीं कठिणोत्तर । बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांब्या उचलिला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश ।२५। देहीं सुखदुःखभोक्ता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित्त । जाएणों नेित अपवारिणवी । | त्यासी पात्रावरी बैसविलें । नेत्रीं भरोन पात्र पाहिलें। |
| दातांकरवीं चाववी । नेटें नेटें ।१९। आपण जिव्हेमधें खेळे । पाहातो परिमळसोहळे । केंस काडी खडा कळे । तत्काळ थुंकी ।२०। आळणी कळतां मीठ मागे । बायलेसि म्हणे आगे कांगे । डोळे ताऊन पाहों लागे । रागें रागें । ११। गोडी लागतांच आनंदे । गोड नस्तां परम खेदे । वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे । आत्मयासी ।२२। नाना अन्नाची गोडी । नाना रसें स्वाद निवडी । तिखट लागतां मस्तक झाडी । आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार । कायसें किरतें खापर । जिव्हेकरवीं किठणोत्तर । बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांच्या उचिलला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश ।२५। देहीं सुखदु:खभोक्ता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित्त । जाण्यों वेति अप्तारिश्वी । | हाताकरवीं आरंभिलें । आपोशन । १८। |
| आपण जिव्हेमधें खेळे । पाहातो परिमळसोहळे । केंस काडी खडा कळे । तत्काळ थुंकी ।२०। आळणी कळतां मीठ मागे । बायलेसि म्हणे आगे कांगे । डोळे ताऊन पाहों लागे । रागें रागें ।२१। गोडी लागतांच आनंदे । गोड नस्तां परम खेदे । वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे । आत्मयासी ।२२। नाना अन्नाची गोडी । नाना रसें स्वाद निवडी । तिखट लागतां मस्तक झाडी । आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार । कायसें करितें खापर । जिव्हेकरवीं कठिणोत्तर । बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांब्या उचिलला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश ।२५। देहीं सुखदु:खभोक्ता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित्त । जाएगों वेति अप्तारिश्वी । | हाताकरवीं ग्रास उचलवी । मुखीं जाऊन मुख पसरवी । |
| कंस काडी खडा कळे । तत्काळ थुंकी ।२०। आळणी कळतां मीठ मागे । बायलेसि म्हणे आगे कांगे । डोळे ताऊन पाहों लागे । रागें रागें ।२१। गोडी लागतांच आनंदे । गोड नस्तां परम खेदे । वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे । आत्मयासी ।२२। नाना अन्नाची गोडी । नाना रसें स्वाद निवडी । तिखट लागतां मस्तक झाडी । आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार । कायसें करितें खापर । जिव्हेकरवीं कठिणोत्तर । बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांब्या उचिलिला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश ।२५। देहीं सुखदुःखभोक्ता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित्त । जाणागें वेदि अप्याम्वियी । | दातांकरवीं चाववी । नेटें नेटें ।१९। |
| आळणी कळतां मीठ मागे । बायलेसि म्हणे आगे कांगे । होळे ताऊन पाहों लागे । रागें रागें । ११। गोडी लागतांच आनंदे । गोड नस्तां परम खेदे । वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे । आत्मयासी । १२। नाना अन्नाची गोडी । नाना रसें स्वाद निवडी । तिखट लागतां मस्तक झाडी । आणी खोंकी । २३। मिरपुडी घातली फार । कायसें किरतें खापर । जिव्हेकरवीं किठणोत्तर । बोलवी रागें । १४। आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांब्या उचिलला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश । १५। देहीं सुखदु:खभोक्ता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये । १६। मनाच्या अनंत वित्त । जगाणों लेकि अपनाविणवी । | आपण जिव्हेमधें खेळे । पाहातो परिमळसोहळे । |
| डोळे ताऊन पाहों लागे। रागें रागें । ११। गोडी लागतांच आनंदे। गोड नस्तां परम खेदे। वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे। आत्मयासी ।२१। नाना अन्नाची गोडी। नाना रसें स्वाद निवडी। तिखट लागतां मस्तक झाडी। आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार। कायसें करितें खापर। जिव्हेकरवीं कठिणोत्तर। बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला। सवेंच तांब्या उचिलिला। घळघळां घेऊं लागला। सावकाश ।२५। देहीं सुखदु:खभोक्ता। तो येक आत्माचि पाहातां। आत्म्याविण देह वृथा। मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित्त । जाएणों वेत्रि अपवास्थिती। | केंस काडी खडा कळे। तत्काळ थुंकी ।२०। |
| गोडी लागतांच आनंदे। गोड नस्तां परम खेदे। वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे। आत्मयासी ।२२। नाना अन्नाची गोडी। नाना रसें स्वाद निवडी। तिखट लागतां मस्तक झाडी। आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार। कायसें करितें खापर। जिव्हेकरवीं कठिणोत्तर। बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला। सवेंच तांब्या उचिलला। घळघळां घेऊं लागला। सावकाश ।२५। देहीं सुखदुःखभोक्ता। तो येक आत्माचि पाहातां। आत्म्याविण देह वृथा। मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित्ता। जाएगों वेदि अपनारिश्वी। | |
| वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे । आत्मयासी ।२२। नाना अन्नाची गोडी । नाना रसें स्वाद निवडी । तिखट लागतां मस्तक झाडी । आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार । कायसें करितें खापर । जिव्हेकरवीं कठिणोत्तर । बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांब्या उचिलला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश ।२५। देहीं सुखदु:खभोक्ता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित्त । जाण्यों वेन्द्रि अपन्यस्थिती । | डोळे ताऊन पाहों लागे। रागें रागें । २१। |
| नाना अन्नाची गोडी। नाना रसें स्वाद निवडी। तिखट लागतां मस्तक झाडी। आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार। कायसें किरतें खापर। जिव्हेकरवीं किठणोत्तर। बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला। सवेंच तांब्या उचिलला। घळघळां घेऊं लागला। सावकाश ।२५। देहीं सुखदु:खभोक्ता। तो येक आत्माचि पाहातां। आत्म्याविण देह वृथा। मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित्ति। जाणणों वेन्नि अप्तारिश्वती। | गोडी लागतांच आनंदे। गोड नस्तां परम खेदे। |
| तिखट लागतां मस्तक झाडी। आणी खोंकी ।२३। मिरपुडी घातली फार। कायसें किरतें खापर। जिव्हेकरवीं किठणोत्तर। बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला। सवेंच तांब्या उचिलला। घळघळां घेऊं लागला। सावकाश ।२५। देहीं सुखदु:खभोक्ता। तो येक आत्माचि पाहातां। आत्म्याविण देह वृथा। मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित्ता। जाणां वेन्नि आव्यस्थिती। | वांकडी गोष्टी अंतरीं भेदे । आत्मयासी । २२। |
| मिरपुडी घातली फार। कायसें करितें खापर। जिव्हेकरवीं कठिणोत्तर। बोलवी रागें ।२४। आज्य उदंड जेविला। सवेंच तांब्या उचिलला। घळघळां घेऊं लागला। सावकाश ।२५। देहीं सुखदु:खभोक्ता। तो येक आत्माचि पाहातां। आत्म्याविण देह वृथा। मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित्ति। जाणाों वेन्नि भारतिश्वी। | नाना अन्नाची गोडी। नाना रसें स्वाद निवडी। |
| जिक्हेकरवीं कठिणोत्तर । बोलवी रागें । २४। आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांब्या उचिलला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश । २५। देहीं सुखदु:खभोक्ता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये । २६। मनाच्या अनंत वित्त । जाणाों वेन्नि भावपिश्रवी । | तिखट लागतां मस्तक झाडी। आणी खोंकी । २३। |
| जिक्हेकरवीं कठिणोत्तर । बोलवी रागें । २४। आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांब्या उचिलला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश । २५। देहीं सुखदु:खभोक्ता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये । २६। मनाच्या अनंत वित्त । जाणाों वेन्नि भावपिश्रवी । | मिरपुडी घातली फार। कायसें करितें खापर। |
| आज्य उदंड जेविला । सवेंच तांब्या उचिलिला । घळघळां घेऊं लागला । सावकाश ।२५। देहीं सुखदु:खभोक्ता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये ।२६। मनाच्या अनंत वित्त । जागणों वेन्नि आकारिणती । | जिव्हेकरवीं कठिणोत्तर । बोलवी रागें । २४। |
| घळघळां घेऊं लागला । सावकाश । २५। देहीं सुखदु:खभोक्ता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये । २६। मनाच्या अनंत वित्त । जाणाों वित्त आव्याविण । | |
| देहीं सुखदु:खभोक्ता । तो येक आत्माचि पाहातां । आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये । २६। मनाच्या अनंत वित्त । जगामों वित्त आक्रास्थिती । | घळघळां घेऊं लागला । सावकाश । २५। |
| भाष्यावण देह वृथा । मडें होये । २६। मनाच्या अनंत वित्त । जाणाों वेत्रि आकारिणती । | देहीं सुखदु:खभोक्ता । तो येक आत्मान्ति पाहातां । |
| मनाच्या अनंत वृत्ति । जागागों नेन्ति आसारिशनी । | आत्म्याविण देह वृथा । मडें होये । २६। |
| त्रैलोकी जित्रकार ने ने का जाजाजा ताच आत्मास्थता | मनाच्या अनंत वृत्ति । जागागों नेन्ति आसारिशनी । |
| ा गुक्या वक्ता । तटातरी आत्मा । २७। | त्रैलोकीं जितुक्या वेक्ती । तदांतरीं आत्मा । २७। |

| जगामध्यें जगदात्मा । विश्वामधें विश्वात्मा । |
|--|
| सर्व चालवी सर्वात्मा । नाना रूपें । २८ |
| हुंगे चाखे ऐके देखे । मृद कठिण वोळखे । शीत उष्ण ठाउकें । तत्काळ होये । २९ |
| |
| सावधपणें लाघवी । बहुत करी उठाठेवी । या धूर्ताच्या उगवी । धूर्तिच करी ।३० |
| वायोसिरसा परिमळ येतो । परि तो परिमळ वितळोन जातो । वायो धुळी घेऊनी येतो । परी तेहि जाये ।३१। |
| शीत उष्ण वायोसिरसें । सुवासें अथवा कुवासें। |
| |
| वायोसिरसे रोग येती । वायोसिरसी भूतें धांवती । |
| धूर आणी धुकटें येती । वायोसवें ।३३। |
| वायोसवें कांहींच जगेना । आत्म्यासवें वायो तगेना । |
| आत्म्याची चपळता जाणा । अधिक आहे ।३४। |
| वायो कठिणास आडतो । आत्मा कठिण भेदून जातो । |
| कठिण पाहों तरी तो । छेदेहिना ॥३५। |
| वायो झडझडां वाजे । आत्मा कांहींच न वाजे । |
| मोनेंचि अंतरीं समजे । विवरोन पाहातां ।३६। |
| शरीरास बरें केलें। तें आत्मयास पावलें। |
| शरीरयोगें जालें। समाधान ।३७। |
| देहावेगळे उपाये नाना । करितां आत्मयास पावेना । |
| समाधान पावे वासना । देहाचेनि ।३८। |
| देहआत्मयाचें कौनक । पानों जानां ने अपेक । |
| देहावेगळी आडणक । आत्मयाम होये । ३९। |
| पहार्वगळी आडणुक । आत्मयास होये । ३९। |

येक असतां उदंड घडे । वेगळें पाहातां कांहींच न घडे । विवेकें त्रैलोकीं पवाडे । देहात्मयोगें ।४०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आत्मविवरणनाम' समास नववा समाप्त.

दशक १३: समास १० सिकवणनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

पालेमाळा सुमनमाळा । फळमाळा बीजमाळा । पाषाणमाळा कवडेमाळा । सूत्रें चालती । १ । स्फटिकमाळा मोहरेमाळा । काष्ठमाळा गंधमाळा । धातुमाळा रत्नमाळा । जाळ्या वोलि चांदोवे । २ । परी हें तंतूनें चालतें। तंतू नस्तां विष्कळित होतें। तैसें म्हणों आत्मयातें। तरी साहित्य न पडे । ३। तंतूस मणी वोविला । तंतूमध्येंचि राहिला । आत्मा सर्वांगीं व्यापला। पाहाना कां 181 आत्मा चपळ सहजगुणें । दोरी काये चळों जाणे। म्हणोन दृष्टांत देणें । साहित्य न घडे । ५ । नाना वल्लींत जळांश । उसांमध्ये दाटला रस । परी तो रस आणी वाकस । येक नव्हे देही आत्मा देह अनात्मा । त्याहून पर तो परमात्मा । निरंजनास उपमा । असेचिना 191 रायापासून रंकवरी । अवघ्या मनुष्यांचिया हारी । सगट समान सरी । कैसी करावी

| देव दानव मानव। नीच योनी हीन जीव। |
|---|
| पापी सुकृति अभिप्राव । उदंड आहे । ९ । |
| येकांशें जग चाले । परी सामर्थ्य वेगळालें । |
| येकासंगें मुक्त केलें। येकासंगें रवरव ।१०। |
| साकर माती पृथ्वी होये । परी ते माती खातां न ये । |
| गरळ आप नव्हे काये। परी तें खोटें ।११। |
| पुण्यात्मा आणी पापात्मा । दोहिंकडे अंतरात्मा । |
| साधु भोदु सीमा । सांडूंच नये ।१२। |
| अंतर येक तों खरें । परी सांगातें घेऊं नये तीं माहारें । |
| पंडित आणि चाटें पोरें । येक कैसीं । १३। |
| मनुष्य आणि गधडे । राजहंस आणि कोंबडें । |
| राजे आणि माकडें । येक कैसीं । १४। |
| भागीरथीचें जळ आप । मोरी संवदणी तेंहि आप। |
| कुश्चिळ उदक अल्प । सेववेना ।१५। |
| याकारणें आचारशुद्ध । त्याउपरी विचारशुद्ध । |
| वीतरागी आणि सुबुद्ध । ऐसा पाहिजे । १६। |
| शूरांहून मानिलें लंडी । तरी युद्धप्रसंगीं नरकाडी । |
| श्रीमंत सांडून बराडीं । सेवितां कैसें । १७। |
| येका उदकें सकळ जालें । परी पाहोन पाहिजे सेविलें। |
| सगट अवधेंच घेतलें । तरी तें मूर्खपण । १८। |
| जीवनाचेंच जालें अन्न । अन्नाचें जालें वमन । |
| परा वमनाचें भोजन । करितां न ये । १९। |
| तैसें निंद्य सोडन द्यावें । वंदा तें द्वदर्द ध्रगतें । |
| सत्कीर्तिनें भरावें। भूमंडळ ।२०। |

| उत्तमांसि उत्तम माने। कनिष्ठांस तें न माने | 1 |
|---|------|
| म्हणौन करंटे देवानें। करून ठेवले | 1561 |
| सांडा अवधें करंटपण। धरावें उत्तम लक्षण | 1 |
| हरिकथा पुराण श्रवण । नीति न्याये | 1551 |
| वर्तायाचा विवेक । राजी राखणें सकळ लोक | 1 |
| हळुहळु पुण्यश्लोक । करीत जावे | 1531 |
| मुलाचे चालीनें चालावें । मुलाच्या मनोगतें बोलावें | 1 |
| तैसें जनास सिकवावें । हळुहळु | 1881 |
| मुख्य मनोगत राखणें । हेंचि चातुर्याचीं लक्षणें | ı |
| चतुर तो चतुरांग जाणे । इतर तीं वेडीं | 1241 |
| वेड्यास वेडें म्हणों नये । वर्म कदापि बोलों नये | 1 |
| तरीच घडे दिग्विजये । निस्पृहासी | 1381 |
| उदंड स्थळीं उदंड प्रसंग । जाणोनि करणें येथासांग | |
| प्रााणमात्राचा अंतरंग । होऊन जावें | 1261 |
| मनोगत राखोन जातां । परम्परें होसे अनुस्य | 1 |
| मनागत ताडिता वेवस्ता । बरी नाहीं | 1271 |
| याकारणें मनोगत । राखेल तो मोदा गर्नेट | 1 |
| मनोगत राखतां समस्त । वोढोन येती | |
| साराम पाठाम चता | 1561 |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सिकंवणनिरूपणनाम' समास दहावा समाप्त.

दशक तेरावा समाप्त

दशक चौदावा : अखंड ध्यान

दशक १४: समास १

निस्पृहलक्षण

| ऐका निस्पृहाची सिकवण | युक्ति बद्धि शहाणपण। |
|---------------------------|------------------------------|
| जेणें राहे समाधान | निरंतर । १। |
| सोपा मंत्र परी नेमस्त | साधें वोषध गणवंत । |
| साधें बोलणें सप्रचीत | तैसें माझें । २। |
| तत्काळचि अवगुण जाती। | उत्तम गुणाची होये प्राप्ती । |
| शब्दवोषघ तीव्र श्रोतीं। | साक्षपें सेवावें । ३। |
| निस्पृहता धरूं नये। | धरिली तरी सोइं नये। |
| सोडिली तरी हिंडों नये। | वोळखीमधें । ४ । |
| कांता दृष्टी राखों नये। | मनास गोडी चाखऊं नये। |
| धारिष्ट चळतां दाखऊं नये । | मुख आपुलें । ५ । |
| येके स्थळीं राहों नये। | कानकोंडें साहों नये। |
| द्रव्य दारा पाहों नये। | आळकेपणें । ६ । |
| आचारभ्रष्ट होऊं नये | दिल्यां द्रव्य घेऊं नये। |
| उणा शब्द येऊं नये । | आपणावरी । ७ । |
| भिक्षेविषीं लाजों नये | बहुत भिक्षा घेऊं नये। |
| पुसताह देऊ नये | वोळखी आपली । ८ । |
| धड मळिण नेसों नये | । गोड अन्न खाऊं नये। |
| दुराब्रह करूं नये | प्रसंगें वर्तावें । १ । |
| भागीं मन असों नये | । देहदुःखें त्रासों नये। |
| पुढें आशा धरूं नये | जीवित्वाची । १०। |

विरक्ती गळों देऊं नये । धारिष्ट चळों देऊं नये । ज्ञान मळिण होऊं नये। विवेकबळें ।११। करुणाकीर्तन सोडूं नये। अंतर्ध्यान मोडूं नये। प्रेमतंतु तोडूं नये। सगुणमूर्तीचा 1881 पोटीं चिंता धरूं नये। कष्टें खेद मानूं नये। समईं धीर सांडूं नये । कांहीं केल्यां 1831 अपमानितां सिणों नये । निखंदितां कष्टों नये । धि:कारितां झुरों नये । कांहीं केल्या 1881 लोकलाज धर्रुं नये । लाजवितां लाजों नये । खिजवितां खिजों नये । विरक्त पुरुषें 1841 शुद्धमार्ग सोडूं नये । दुर्जनासीं तंडों नये । समंध पडों देऊं नये । चांडाळासी 1881 तपीळपण धरूं नये । भांडवितां भांडों नये । उडवितां उडऊं नये । निजस्थिती आपुली । १७। हांसवितां हासों नये। बोलवितां बोलों नये। चालवितां चालों नये । क्षणक्ष्णा 1861 येक वेष धरूं नये। येक साज करूं नये। येकदेसी होऊं नये । भ्रमण करावें । १९। सलगी पडों देऊं नये । प्रतिग्रह घेऊं नये । सभेमध्यें बैसों नये । सर्वकाळ 1301 नेम आंगीं लाऊं नये । भरवसा कोणास देऊं नये । अंगीकार करूं नये । नेमस्तपणाचा । २१। नित्यनेम सांडूं नये। अभ्यास बुडों देऊं नये। परतंत्र होऊं नये । कांहीं केल्या 1551

| स्वतंत्रता मोडूं | नये | । निरापेक्षा तोडूं नये। |
|--------------------|-----|---------------------------|
| परापेक्षा होऊं | नये | । क्षणक्ष्णा । २३। |
| वैभव दृष्टीं पाहों | नये | । उपाधीसुखें राहों नये। |
| येकांत मोडूं देऊं | नये | |
| अनर्गळता करूं | नये | । लोकलाज धर्कं नये। |
| कोठेंतरी होऊं | नये | । आसक्त कदा । २५। |
| परंपरा तोडूं | नये | । उपाधी मोडुं देऊं नये। |
| ज्ञानमार्ग सोडूं | नये | । कदाकाळीं । २६। |
| | | । वैराग्य मोडूं देऊं नये। |
| साधन भजन खंडूं | नये | । कदाकाळीं । २७। |
| अतिवाद करूं | नये | । अनित्य पोटीं धरूं नये। |
| रागें भरीं भरों | नये | । भलतीकडे । २८। |
| न मनी त्यास सांगों | नये | । कंटाळवाणें बोलों नये। |
| बहुसाल असों | नये | । येकेस्थळीं ।२९। |
| कांहीं उपाधी करूं | नये | । केली तरी धर्क नये। |
| धरिली तरी सांपडों | नये | । उपाधीमधें । ३०। |
| थोरपणें असों | नये | । महत्त्व धरून बैसों नये। |
| कांहीं मान इछूं | नये | । कोठेंतरी ।३१। |
| साधेपण सोडूं | नये | |
| बळात्कारें जोडूं | | |
| अधिकारेंवीण सांगों | नये | । दाटून उपदेश देऊं नये। |
| कानकोंडा करन | | |
| कठिण वैराग्य सोडूं | | |
| कठिणता धरतं | नये | । कोणेकेविशइं ।३४। |

| कठिण शब्द बोलों नये । कठिण आज्ञा करूं नये। |
|--|
| कठिण धीरत्व सोडूं नये । कांहीं केल्या । ३५। |
| आपण आसक्त होऊं नये । केल्यावीण सांगों नये। |
| बहुसाल मार्गों नये । शिष्यवर्गांसी । ३६। |
| उद्धट शब्द बोलों नये। इंद्रियें स्मरण करूं नये। |
| शाक्तमार्गे भरों नये। मुक्तपणें भरीं ।३७। |
| नीच कृतीं लाजों नये। वैभव होतां माजों नये। |
| क्रोधें भरीं भरों नये । जाणपणें ।३८। |
| थोरपणें चुकों नये । न्याये नीति सांडूं नये। |
| अप्रमाण वर्ती नये। कांहीं केल्यां ।३९। |
| कळल्यावीण बोलों नये । अनुमानें निश्चये करूं नये। |
| सांगतां दुःख धरूं नये । मूर्खपणें ।४०। |
| सावधपण सोडूं नये । व्यापकपण सांडूं नये । |
| कदा सुख मानूं नये । निसुगपणाचें ।४१। |
| विकल्प पोटीं धरूं नये । स्वार्थआज्ञा करूं नये। |
| केली तरी टाकूं नये । आपणास पुढें ।४२। |
| प्रसंगेंवीण बोलों नये। अन्वयेंवीण गाऊं नये। |
| विचारेंवीण जाऊं नये । अविचारपंथें ।४३। |
| परोपकार सांडूं नये । परपीडा करूं नये । |
| विकल्प पडों देऊं नये । कोणीयेकासी ।४४। |
| नेणपण सोडूं नये। महंतपण सांडूं नये। |
| द्रव्यासाठीं हिंडों नये । कीर्तन करीत ।४५। |
| संशयात्मक बोलों नये । बहुत निश्चये करूं नये। |
| निवहिंवीण घर्रुं नये। ग्रंथ हातीं । ४६। |

| जाणपणें पुसों नये । अहंभाव दिसों नये । |
|---|
| सांगेन ऐसें म्हणों नये। कोणीयेकासी ।४७। |
| ज्ञानगर्व धरूं नये । सहसा छळणा करूं नये । |
| कोठे वाद घालूं नये । कोणीयेकांसी ।४८। |
| स्वार्थबुद्धी जडों नये। कारबारीं पडों नये। |
| कार्येकर्ते होऊं नये । राजद्वारीं ।४९। |
| कोणास भर्वसा देऊं नये । जड भिक्षा मागों नये। |
| भिक्षेसाठी सांगों नये । परंपरा आपुली ।५०। |
| सोईरिकींत पड़ों नये। मध्यावर्ति घड़ों नये। |
| प्रपंचाची जडों नये। उपाधी आंगीं । ५१। |
| प्रपंचप्रस्तीं जाऊं नये । बाष्कळ अन्न खाऊं नये । |
| पाहुण्यासरिसं घेऊं नये । आमंत्रणें कदां । ५२। |
| श्राध पक्ष सटी सामासें । शांती फलशोबन कार्यो । |
| भोग राहाण बहुवसें । नवस व्रतें उद्यापनें । ५३। |
| तथ निस्पृहें जाऊं नये । त्याचें अन्य स्वानं उसे । |
| येळिलवाणें करूं नये। आपणासी । ५४। |
| लग्नमुहूर्ती जाऊं नये । पोटामाठीं गाउं उसे । |
| मोलें कीर्तन करूं नये । कोठेंतरी । ५५। |
| आपली भिक्षा सोडूं नये। वारें अन्न खाऊं नये। |
| निस्पृहासि घडों नये । मोलयात्रा । ५६। |
| मोलें सुकृत करूं नये। मोलपुजारी होऊं नये। |
| दिल्हा तरी घेऊं नये। इनाम निस्पृहें । ५७। |
| कोठें गर) २ ० ० ० |
| कोठें मठ करूं नये । केला तरी तो धरूं नये। मठपती होऊन बैसों नये । निस्पृह पुरुषें । ५८। |
| 14८। |

| f |
|---|
| निस्पृहें अवधेंचि करावें । परी आपण तेथें न संपडावें । |
| परस्परें उभारावें । भक्तिमार्गासी |
| प्रेत्नेंविण राहों नये । आळस दृष्टी आणूं नये । |
| दह अपना नामें ने किन |
| 1601 |
| ं जा गर्ना जनाया जागा जाडा न्या |
| 16.91 |
| बहुउपाधी करूं नये । उपाधीविण कामा नये । |
| सगुणभक्ति सोडूं नये । विभक्ति खोटी ।६२। |
| बहुसाल धावों नये। बहुसाल गर्हों को |
| बहुत केष्ट करू नये । अगर्वे कोर्ने |
| बहसाल बोलों जो । कर्ने |
| बहुत अन्न खाऊं नये। उपवास खोटा |
| बहुसाल निजों नये। बहुत किए के |
| ंग । जारा । जारा । जारा नाम |
| नय । बाश्कळ खोटें |
| षहु जना असी नये । तट आप्ता के |
| उपल पाळू नय । आत्महत्या खोटी |
| षहु सग धर्ह उसे । संस्कं |
| कार्या कार्या । जन्म |
| बहु लोकिक मांहं उसे । जनाचार खाटा ।६७। |
| बहु लोकिक सांडूं नये। लोकांधेन होऊं नये। |
| जिल्लामा निर्मा निर्मान को निर्मान |
| न्ध संशय धरू जो । |
| क साजना पड़ा नर्थ । माधानिका करें |
| ने विषय भोगूं नये। विषयनाम न निसं नरे। |
| देहलोभ धर्सं नये। बहु त्रास खोटा |
| पषु असि खाटा |

वेगळा अनुभव घेऊं नये । अनुभवेंवीण कामा नये। आत्मस्थिती बोलों नये । स्तब्धता खोटी ।७१। मन उरों देऊं नये । मनेंवीण कामा नये । अलक्ष वस्तु लक्षा नये । लक्षेंवीण खोटें ।७२। मनबुद्धीअगोचर । बुद्धीवीण अंधकार । जाणीवेचा पडो विसर । नेणीव खोटी ।७३। ज्ञातेपण धरूं नये । ज्ञानेंवीण कामा नये । अतर्क्य वस्तु तर्का नये । तर्कैवीण खोटें । ७४। दृश्यस्मरण कामा नये । विस्मरण पडों नये । कांहीं चर्चा करूं नये । केलीयावीण न चले । ७५। जगीं भेद कामा नये। वर्णसंकर करूं नये। आपला धर्म उडऊं नये । अभिमान खोटा । ७६। आशाबद्धत बोलों नये । विवेकेंवीण चालों नये । समाधान हालों नये । कांहीं केल्यां ।७७। अबद्ध पोथी लेहों नये। पोथीवीण कामा नये। अबद्ध वाचूं नये । वाचिल्यावीण खोटें ।७८। निस्पृहें वगत्रुत्व सांडूं नये । आशंका घेतां भांडों नये । श्रोतयांचा मानूं नये। वीट कदा ।७९। हे सिकवण धरितां चित्तीं । सकळ सुखें वोळगती । आंगीं बाणे महंती । अकस्मात ।८०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'निस्पृहलक्षणनाम' समास पहिला समाप्त.

दशक १४: समास २

भिक्षानिरूपण

| ब्राह्मणाची मुख्य दीक्षा । मागितली पाहिजे भिक्षा । | |
|---|--|
| वोंभवति या पक्षा। रक्षिलें पाहिजे । १। | |
| भिक्षा मागोन जो जेविला। तो निराहारी बोलिला। | |
| प्रतिप्रहावेगळा जाला । भिक्षा मागतां । २। | |
| संतासंत जे जन । तेथें कोरान्न मागोन करी भोजन । | |
| तेणें केलें अमृतप्राशन । प्रतिदिनीं । ३ । | |
| भिक्षाहारी निराहारी भिक्षा नैव प्रतिग्रह:। | |
| असंतो वापि संतो वा सोमपानं दिने दिने ॥ | |
| ऐसा भिक्षेचा महिमा। भिक्षा माने सर्वोत्तमा। | |
| ईश्वराचा अगाध महिमा। तोहि भिक्षा मागे । ४। | |
| दत्त गोरक्ष आदिकरुनी । सिद्ध भिक्षा मागती जनीं । | |
| निस्पृहता भिक्षेपासुनी । प्रगट होये । ५ । | |
| वार लाऊन बैसला। तरी तो पराधेन जाला। | |
| तैसीच नित्यावळीला । स्वतंत्रता कैंची । ६ । | |
| आठां दिवसां धान्य मेळविलें। तरी तें कंटाळवाणें जालें। | |
| प्राणी येकायेकीं चेवलें । नित्यनूतनतेपासुनी । ७ । | |
| नित्य नूतन हिंडावें । उदंड देशाटण करावें । | |
| तरीच भिक्षा मागतां बरवें । श्लाघ्यवाणें । ८। | |
| अखंड भिक्षेचा अभ्यास । तयास वाटेना परदेश । | |
| जिकडे तिकडे स्वदेश । भवनत्रैं । १ । | |

| भिक्षा मागतां किरकों नये । भिक्षा मागतां लाजों नये । भिक्षा मागतां भागों नये । परिभ्रमण करावें । | 9.01 |
|---|-------|
| भिक्षा आणि चमत्कार । च्चाकाटती लहानथोर । | 1881 |
| भिक्षा म्हणिजे कामधेनु । सदा फळ नव्हे सामान्यु । भिक्षेस करी जो अमान्यु । तो करंटा जोगी | १२। |
| | १३। |
| भिक्षा म्हणजे निर्भये स्थिती । भिक्षेनें प्रगटे महंती । स्वतंत्रता ईश्वरप्राप्ती । भिक्षागुणें | १४। |
| भिक्षेस नाहीं आडथाळा । भिक्षाहारी तो मोकळा। भिक्षेकरितां सार्थक वेळा । काळ जातो | १५। |
| भिक्षा म्हणिजे अमरवल्ली । जिकडे तिकडे लगडली। अवकाळीं फलदायेनी जाली । निर्ल्लजासी | १६। |
| पृथ्वीमधें देश नाना । फिरतां उपवासी मरेना । कोणे येके ठाईं जना । जड नव्हे | 109 |
| गोरज्य वाणिज्य कृषी । त्याहून प्रतिष्ठा भिक्षेसी। विसंभों नये झोळीसी । कदाकाळीं | 8 % 1 |
| काही किया | 991 |
| 700 | 201 |
| | ।२१। |

ऐसी भिक्षेची स्थिती। अल्प बोलिलें येथामती। भिक्षा वांचवी विपत्ती। होणार काळीं । २२।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'भिक्षानिरूपणनाम' समास दुसरा समाप्त.

दशक १४: समास ३

कवित्वकळानिरूपण

| कवित्व शब्दसुमनमाळा । अर्थ परिमळ आगळा । |
|---|
| तण सतषट्पदकुळा । आनंद होये |
| ऐसी माळा अंतःकरणीं। गुंफून पूजा रामचरणीं। |
| वाकारतत अखडपणा । खडूच नये । २ । |
| परोपकाराकारणें । कवित्व अगत्य करणें। |
| तया कावत्वाची लक्षणें । बोलिजेती |
| जेणें घडे भगवभद्कती । जेणें घडे विस्तानी |
| ए।सया कावत्वाची युक्ती । आधीं वाढवावी । ४ । |
| क्रियवणि शब्दजान । तया च मनिनी सम्बन्ध |
| प्रसन्न । अनतापे करावा । ६ । |
| द्वाचन प्रसन्नम्मों । 🚉 🚉 🛶 |
| त त अत्यत श्लाघ्यवाणे । या नांव प्रामादिक । ६ । |
| जाट पाठ प्रमादिक । नेने - |
| ए । त्रावध विवेक । बोलिजेक । ७ । |
| धीट म्हणिजे धीटपणें केलें । अअ |
| बळेंचि कवित्व रचिलें। या नांव धीट बोलिजे। |
| म ना नाय थाट बालिज |

| पाठ म्हणिजे पाठांतर । बहुत पाहिलें ग्रंथांतर । |
|--|
| तयासारिखा उतार। आपणहि केला । ९। |
| |
| सीघ्रचि कवित्व जोडिलें । दृष्टी पडिलें तें चि वर्णिलें । |
| भक्तिवांचून जें केलें। त्या नाव धीटपाठ ।१०। |
| कामिक रसिक शृंघारिक । वीर हास्य प्रस्ताविक । |
| कौतुक विनोद अनेक। या नांव घीटपाठ ।११। |
| मन जालें कामाकार । तैसेचि निघती उद्गार । |
| धीटपाठें परपार । पाविजेत नाहीं । १२। |
| व्हावया उदरशांती । करणें लागे नरस्तुती । |
| तेथें केली जे विपत्ती। त्या नांव धीटपाठ । १३। |
| कवित्व नसावें धीटपाठ। कवित्व नसावें खटपट। |
| कवित्व नसावें उद्धट । पाषांडमत । १४। |
| कवित्व नसावें वादांग । कवित्व नसावें रसभंग। |
| कवित्व नसावें रंगभंग । दृष्टांतहीन । १५। |
| कवित्व नसावें पाल्हाळ । कवित्व नसावें बाष्कळ। |
| कवित्व नसावें कुटीळ । लक्षुनियां । १६। |
| हीन कवित्व नसावें । बोलिलेंचि न बोलावें । |
| छंदभंग न करावें । मुद्राहीन । १७। |
| वित्पत्तीहीन तर्कहीन । कळाहीन शब्दहीन । |
| भिक्तज्ञानवैराग्यहीन । कवित्व नसावें । १८। |
| भिक्तहीन जें कवित्व । तेंचि जाणावें ठोंबें मत । |
| आवडीहीन जें वगत्रुत्व । कंटाळवाणें ।१९। |
| भिक्तिविण जो अनुवाद । तोचि जाणावा विनोद । |
| प्रीतीविण संवाद । घडे केंवीं ।२०। |

| असो घीट पाठ ते ऐसे । नाथिलें अहंतेचें पिसें। | |
|--|------|
| आतां प्रसादिक तें कैसें । सांगिजेल । २१ | 1 \$ |
| वैभव कांता कांचन । जयास वाटे हें वमन । | |
| अंतरीं लागलें ध्यान । सर्वोत्तमाचें । २ : | 15 |
| जयास घडीनें घडी। लागे भगवंतीं आवडी। | |
| चढती वाढती गोडी । भगवद्भजनाची । २३ | 1 { |
| जो भगवद्भजनेंवीण । जाऊं नेदी येक क्षण। | |
| सर्वकाळ अंतःकरण । भक्तिरंगें रंगलें । २४ | \$1 |
| जया अंतरीं भगवंत । अचळ राहिला निवांत । | |
| तो स्वभावें जें बोलत। तें ब्रह्मनिरूपण ।२५ | 1 |
| अंतरीं बैसला गोविंद । तेणें लागला भक्तिछंद। | |
| भक्तिविण अनुवाद । आणीक नाहीं । २६ | i |
| आवडी लागली अंतरीं। तैसीच वदे वैखरी। | |
| भावें करुणाकीर्तन करी । प्रेमभरें नाचतु । २७ | 1 |
| भगवंती लागलें मन । तेणें नाठवे देहभान । | |
| शंका लज्या पळोन । दुरी ठेली । २८ | 1 |
| तो प्रेमरंगें रंगला । तो भक्तिमदें मातला । | |
| तेणें अहंभाव घातला । पायांतळीं । २९ | } [|
| गात नाचत निशंक । तयास कैंचे दिसती लोक । | |
| दृष्टीं त्रैलोक्यनायेक । वसोन ठेला । ३० | 1 |
| ऐसा भगवंतीं रंगला । आणीक कांहीं नलगे त्याला । | |
| स्वइच्छा वर्णूं लागला । ध्यान कीर्ती प्रताप । ३१ | 1 |
| नाना ध्यानें नाना मूर्ती । नाना प्रताप नाना कीर्ती । | |
| तयापुढें नरस्तुती । त्रुणतुल्य वाटे । ३२ | } |

| असो ऐसा भगवद्भक्त । जो ये संसारीं विरक्त । |
|---|
| तयास मानिती मुक्त । साधुजन । ३३। |
| त्याचे भक्तीचें कौतुक । तया नांव प्रसादिक । |
| सहज बोलता विवेक। प्रगट होय । ३४। |
| ऐका कवित्वलक्षण । केलेंच करूं निरूपण। |
| जेणे निवे अंतःकर्ण । श्रोतयांचें । ३५। |
| कवित्व असावें निर्मळ । कवित्व असावें सरळ। |
| कवित्व असावें प्रांजळ । अन्वयाचें ।३६। |
| कवित्व असावें भक्तिबळें । कवित्व असावें अर्थागळें । |
| कवित्व असावें वेगळें । अहंतेसी । ३७। |
| कवित्व असावें कीर्तिवाड । कवित्व असावें रम्य गोड । |
| कवित्व असावें जाड । प्रतापविषीं ।३८। |
| कवित्व असावें सोपें। कवित्व असावें अल्परूपें। |
| कवित्व असावें सुल्लपें । चरणबंद । ३९। |
| मृदु मंजुळ कोमळ। भव्य अद्भुत विशाळ। |
| गौल्य माधुर्य रसाळ । भिक्तरसें ।४०। |
| अक्षरबंद पदबंद । नाना चातुर्य प्रबंद । |
| नाना कौशल्यता छंदबंद । घाटी मुद्रा अनेक ।४१। |
| नाना युक्ती नाना बुद्धी । नाना कळा नाना सिद्धी । |
| नाना अन्वये साधी । नाना कवित्व ।४२। |
| नाना साहित्य दृष्टांत । नाना तर्क धात मात । |
| Late Tenna V A |
| नाना संमती सिन्द्वांत । पूर्वपक्षेंसीं ।४३। |
| नाना समती सिद्धांत । पूर्वपक्षेंसीं ।४३। नाना गती नाना वित्पत्ती । नाना मती नाना स्फूर्ति। नाना धारणा नाना धृती । या नांव कवित्व ।४४। |

शंका आशंका प्रत्योत्तरें। नाना काव्यें शास्त्राधारें। तुटे संशये निधरिं । निर्धारितां 1841 नाना प्रसंग नाना विचार । नाना योग नाना विवर । नाना तत्त्वचर्चासार । या नांव कवित्व ।४६। नाना साधनें पुरश्चरणें । नाना तपें तीर्थाटणें । संदेह फेडणें । या नांव कवित्व नाना 1891 जेणें अनुताप उपजे । जेणें लोकिक लाजे । जेणें ज्ञान उमजे । या नांव कवित्व ।४८। जेणें ज्ञान हें प्रबळे । जेणें वृत्ती हे मावळे । जेणें भक्तिमार्ग कळे । या नांव कवित्व ।४९। जेणें देहबुद्धी तुटे। जेणें भवसिंधु आटे। जेणें भगवंत प्रगटे। या नांव कवित्व ।५०। जेणें सद्बुद्धि लागे। जेणें पाषांड भंगे। जेणें विवेक जागे । या नांव कवित्व ।५१। जेणें सद्वस्तु भासे । जेणें भास हा निरसे। जेणें भिन्नत्व नासे । या नांव कवित्व ।५२। जेणें होये समाधान । जेणें तुटे संसारबंधन । जया मानिती सज्जन । तया नांव कवित्व ।५३। ऐसें कवित्वलक्षण । सांगतां तें असाधारण। परंतु कांहींयेक निरूपण । बुझावया केलें ।५४।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'कवित्वकळानिरूपणनाम' समास तिसरा समाप्त.

दशक १४: समास ४

कीर्तनलक्षण

| कलयुगीं कीर्तन करावें। केवळ कोमळ कुशळ गावें। |
|--|
| कठीण कर्कश कुटैं सांडावें । येकीकडे । १ । |
| खटखट खुंटून टाकावी । खळखळ खळांसीं न करावी । |
| खरं खोटं खवळों नेदावी । वृत्ती आपुली । २ । |
| गर्वगाणें गाऊं नये। गातां गातां गळों नये। |
| गौप्य गुज गर्जों नये। गुण गावे । ३। |
| घष्टणी घस्मरपणें। घसर घसरूं घसा खाणें। |
| घुमघुमों चि घुमणें। योग्य नव्हे । ४। |
| नाना नामें भगवंताचीं। नाना ध्यानें सगुणाचीं। |
| नाना कीर्तनें कीर्तीचीं। अद्भुत करावीं । ५। |
| चकचक चुकावेना। चाट चावट चळावेना। |
| चरचर चुरचुर लागेना । ऐसें करावें । ६ । |
| छळछळ छळणा करूं नये । छळितां छळितां छळों नये । |
| छळणें छळणा करूं नये । कोणीयेकांची । ७। |
| जि जि जि म्हणावेना । जो जो जागे तो तो पावना । |
| जपजपों जनींजनार्दना । संतुष्ट करावें । ८। |
| झिरपे झरे पाझरे जळ । झळके दुरुनी झळाळ। |
| राष्ट्री इंग्लंकती संकळ। प्राणी तेथें । ९। |
| या या या या महणावें नलगे । या या या या उपाव नलगे । |
| या या या कांहींच नलगे । सुबुद्धासी । १०। |

| टक टक टक करूं नये। टाळाटाळी टिकों नये। |
|--|
| 04 04 04 04 04 |
| उस ठोंबस ठाकावेना । ठक ठक ठक करावेना । |
| ठाकें ठमकें ठसावेना । मूर्तिध्यान |
| डळमळ डळमळ डकों नये । डगमग डगमग कामा नये। |
| डंडळ डंडळ चुकों नये । हेंकाडपणें |
| ढिसाळ ढाला ढळती कुंचे । ढोबळा ढसकण डुले नाचे । |
| हर्लेनिया हिग्रहिगाने । कराळवाणे |
| नाना नेटक नागर। नाना नम्र समाप्तर |
| in the state of th |
| नाना नेमक मधुर । नेमस्त गाणें ।१५। |
| ताळ तंबुरे तानमाने । ताळबद्ध तंतगाणे । |
| तर्त ताकिक तर्ने मर्ने । तल्लीन सोनी |
| थर्थरां थरकती रोमांच । थै थै थै स्वरें उंच। |
| किरिक |
| थिरथिर थिरावे नाच । प्रेमळ भक्तांचा ।१७। |
| दक्ष दाक्षण्य दाटलें । बंदें प्रबंदें कोंदाटलें । |
| दमदम दुमदुमों लागलें । जगदांतर ११८। |
| धूर्त तूर्त धावोन आला । धिंगबुद्धीनें धिंग जाला। |
| शाने करें |
| थाकें धाकें घोकला । रंग अवघा । १९। |
| नाना नाटक नेटकें। नाना मानें तुकें कौतुकें। |
| नाना नेमक अनेकें। विद्यापात्रें ।२०। |
| पाप पळोन गेलें दुरी । पुण्य पुष्कळ प्रगटे वरी। |
| परतरतो परे अंतरीं । चटक लागे |
| फुकट फाकट फटवणें नाहीं। फटकळ फुगडी पिंगा नाहीं। |
| Tree-de - |
| कि फसकट फोल नाहीं । भकाध्या निंदा |
| |

| ्रे को सरों प्रदा श ती | । बाबा बाबा उदंड करिती। |
|-----------------------------------|------------------------------|
| बरें बळेंचि बळाविती | |
| • | |
| भला भला भला लोकीं | । भक्तिभावें भव्य अनेकीं। |
| भूषण भाविक लोकीं | । परोपकारें । २४। |
| मानेल तरी मानावें मनें | । मत्त न व्हावें ममतेनें। |
| मी मी मी बहुत जनें | । म्हणिजेत आहे । २५। |
| येकें टोंकत येकांपासीं | । येऊं येऊं येती झडेसी। |
| या या या असें तयासी | । म्हणावें नलगे । २६। |
| | । अंतर संगित रागें। |
| रत्नपरीक्षा रत्नामार्गे | । धांवती लोक । २७। |
| लवलवां लवती लोचन | । लकलकां लकलें मन । |
| | । आवडीनें । २८। |
| वचनें वाउगीं वदेना | । वावरेविवरे वसेना । |
| वगत्रुत्वें निववी जना | । विनित होउनी । २९। |
| सारासार समस्तांला | । सिकऊं सिकऊं जनाला। |
| साहित संगित सज्जनाला | । बरें वाटे ।३०। |
| खरेंखोटें खरें वाटलें | । खर्खर खुर्खुर खुंटलें। |
| खोटें खोटेपणें गेलें | । खोटें म्हणोनियां । ३१। |
| शाहाणे शोधितां शोधेना | । शास्त्रार्थ श्रुती बोधेना। |
| शुक शारिका शमेना | । शब्द तयाचा । ३२। |
| हरुषें हरुषें हांसिला | । हाहाहोहोनें भुलला । |
| हित होईना तयाला | । परत्रीचें । ३३। |
| लक्षावें लिक्षतां अलक्षीं | । लक्षिलें लोचनातें लक्षी । |
| लंगलें लयेतें अलक्षी | 2.0 |
| 1. 111 | 1-110 |

क्षेत्र क्षेत्रज्ञ क्षोभतो । क्षमेनें क्षमून क्ष्मवितो । क्ष्मणें क्षोभणें क्षेत्रज्ञ तो । सर्वां ठाईं ।३५।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'कीर्तनलक्षणनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक १४: समास ५

हरिकथालक्षण

॥ श्रीराम ॥

मागां हरिकथेचें लक्षण । श्रोतीं केला होता प्रस्न । सावध होऊन विचक्षण । परिसोत आतां । १ । हरिकथा कैसी करावी। रंगें कैसी भरावी। जेणें पाविजे पदवी । रघुनाथकृपेची । २ । सोनें आणि परिमळे । युक्षदंडा लागती फळें। गौल्य माधुर्य रसाळें । तरी ते अपूर्वता । ३ । तैसा हरिदास आणी विरक्त । ज्ञाता आणि प्रेमळ भक्त। वित्पन्न आणि वादरहित । तरी हेहि अपूर्वता । ४ । रागज्ञानी ताळज्ञानी । सकळकळा ब्रह्मज्ञानी । निराभिमानें वर्ते जनीं । तरी हेहि अपूर्वता । ५ । मछर नाहीं जयासी । जो अत्यंत प्रिये सज्जनासी । चतुरांग जाणे मानसीं । अंतरनिष्ठ । ६ । जयंत्यादिकें नाना पर्वें । तीर्थ क्षेत्रें जें अपूर्वें । 191 जेथें वसिजे देवाधिदेवें । सामर्थ्यरूपें तया तीर्थातें जे न मानिती । शब्दज्ञानें मिथ्या म्हणती । 161 तया पामरां श्रीपती । जोडेल कैंचा

| निर्गुण नेलें संदेहानें । सगुण नेलें ब्रह्मज्ञानें । दोहिंकडे अभिमानें । वोस केलें । ९ । |
|--|
| |
| पुढें असतां सगुणमूर्ती । निर्गुणकथा जे करिती। |
| प्रतिपादून उछेदिती । तेचि पढतमूर्ख । १०। |
| ऐसी न कीजे हरिकथा । अंतर पडे उभये पंथा। |
| |
| |
| सगुणमुर्तीपुढें भावें । करुणाकीर्तन करावें । |
| नाना ध्यानें वर्णावें । प्रतापकीर्तीतें । १२। |
| ऐसें गातां स्वभावें। रसाळ कथा वोढवे। |
| सर्वातरी नेकाने । |
| |
| कथा रचायाची खूण । सगुणीं नाणावें निर्गुण । |
| न बोलावे दोष गुण । पुढिलांचे कदा । १४। |
| दवाचे वणविं वैभव । नाना गुक्तारे |
| त्रपुणा ठेडानया भारत । चित्रका — |
| |
| |
| |
| राजम राजागणा । चिर्णक कार्ने - |
| "भाळका नृत्य वाणी । जाकोने गर्जने |
| जावा कार्ति योजन्ते । - ६६ |
| म्हणोनियां निवाडे । जेथील तेथें |
| ल्या । जयाल तथ । ११। |
| क पता सगुण । श्रवणीं बैसले साधाना |
| अक्षणानरूपण अवश्य कराते |
| ्राप्ता ना टी : |
| |
| करावें कीर्तन । प्रस्ताविक वैराग्य ।२०। |

¹⁷⁸⁰ Dasbodh (Marathi)_Section_18_1_Front

श्रुंघारिक नवरसिक । यामधें सांडावें येक । स्त्रियादिकांचें कौतुक । वणूँ नये कीं । २१। लावण्य स्त्रियांचें वर्णितां । विकार बाधिजे तत्त्वता। धारिष्टापासून श्रोता । चळे तत्काळ । २२। म्हणउन तें तजावें । जें बाधक साधकां स्वभावें । घेतां अंतरीं ठसावें । ध्यान स्त्रियांचें । २३। लावण्य स्त्रियांचें ध्यान । कामाकार जालें मन । कैचें आठवेल ध्यान । ईश्वराचें । २४। स्त्री वर्णितां सुखावला । लावण्याचे भरीं भरला । तो स्वयें जाणावा चेवला । ईश्वरापासुनी । २५। हरिकथेसी भावबळें। गेला रंग तो तुंबळे। निमिष्य येक जरी आकळे। ध्यानीं परमात्मा । २६। ध्यानीं गुंतलें मन । कैचें आठवेल जन । निशंक निर्लज कीर्तन । करितां रंग माजे । २७। रागज्ञान ताळज्ञान । स्वरज्ञानेंसीं वित्पन्न । अर्थान्वयाचें कीर्तन । करूं जाणे । २८। छपन्न भाषा नाना कळा । कंठमाधुर्य कोकिळा । परी तो भक्तिमार्ग वेगळा । भक्त जाणती । २९। भक्तांस देवाचें ध्यान । देवावांचून नेणे अन्न । कळावंतांचें जें मन । तें कळाकार जालें ।३०। श्रीहरिवीण जे कळा। तेचि जाणावी अवकळा। देवास सांडून वेगळा । प्रत्यक्ष पडिला ।३१। सर्पी वेढिलें चंदनासी । निघानाआड विवसी । नाना कळा देवासी। आड तैस्या ।३^{२।}

सांडून देव सर्वज्ञ । नादामध्यें व्हावें मग्न । तें प्रत्यक्ष विघ्न । आडवें आलें । ३३। येक मन गुंतलें स्वरीं । कोणें चिंतावा श्रीहरी। बलेंचि धरूनियां चोरीं । शिश्रूषा घेतली । ३४। करितां देवाचें दर्शन । आडवें आलें रागज्ञान । तेणें धरूनियां मन । स्वरामागें नेलें ।३५। भेटों जातां राजद्वारीं । बळेंचि धरिला बेगारी । कळावंतां तैसी परी । कळेनें केली ।३६। मन ठेऊन ईश्वरीं । जो कोणी हरिकथा करी । तोचि ये संसारीं। धन्य जाणा ।३७। जयास हरिकथेची गोडी। उठे नीच नवी आवडी। तयास जोडली जोडी। सर्वोत्तमाची ।३८। हरिकथा मांडली जेथें। सर्व सांडून धांवे तेथें। आलस्य निद्रा दवडून स्वार्थं । हरिकथेसी सादर ।३९। हरिभक्तांचिये घरीं । नीच कृत्य अंगिकारी । साहेभूत सर्वांपरी । साक्षपें होये । ४०। या नांव हरिदास। जयासि नामीं विश्वास। येथून हा समास। संपूर्ण जाला ।४१। इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'हरिकथालक्षणनाम'

समास पाचवा समाप्त.

दशक १४: समास ६

चातुर्येलक्षण

| रूप लावण्य अभ्यासितां न ये । सहजगुणास न चले उपाये | 1 | | |
|---|----|----|---|
| कांहीं तरी धरावी सोये । अगांतुक गुणाची | l | 8 | 1 |
| काळें माणुस गोरें होयेना । वनाळास येत्न चालेना | 1 | | |
| मुक्यास वाचा फुटेना । हा सहजगुण | l | ? | Ţ |
| आंधळें डोळस होयेना । बधिर तें ऐकेना | 1 | | |
| पांगुळ पाये घेइना । हा सहजगुण | I | Ę | 1 |
| कुरूपतेचीं लक्षणें। किती म्हणोनि सांगणें | ı | | |
| रूप लावण्य याकारणें। पालटेना | l | 8 | 1 |
| अवगुण सोडितां जाती । उत्तम गुण अभ्यासितां येती | | | |
| कुविद्या सांडून सिकती । शाहाणे विद्या | 1 | ų | 1 |
| मूर्खपण सांडितां जातें । शाहाणपण सिकतां येतें | | | |
| कारबार करितां उमजतें । सकळ कांहीं | ١ | Ę | Ł |
| मान्यता आवडे जीवीं। तरी कां उपेक्षा करावी | 1 | | |
| चातुर्येविण उंच पदवी । कदापी नाहीं | l | 9 | 1 |
| ऐसी प्रचित येते मना। तरी कां स्वहित कराना | | | |
| सन्मार्गे चालतां जना । सज्जना माने | | 4 | 1 |
| देहे नेटकें श्रुंघारिलें । परी चातुर्येविण नासलें | I | | |
| गुर्णोविण साजिरें केलें । बाष्कळ जैसें | | 9 | 1 |
| अंतर्कळा श्रुंघारावी नानापरी उमजवावी | 1 | | |
| संपदा मेळऊन भोगावी । सावकास | 13 | 80 | 1 |

| ब्रेल करीना सिकेना । शरीर तेंहि कष्टवीना । |
|---|
| उत्तम गुण घेईना । सदाकोपी ।११। |
| आपण दुसऱ्यास करावें । तें उसिणें सर्वेचि घ्यावें। |
| जना कष्टवितां कष्टावें । लागेल बहु । १२। |
| न्यायें वर्तेल तो शाहाणा । अन्याइ तो दैन्यवाणा । |
| नाना चातुर्याच्या खुणा । चतुर जाणे ।१३। |
| जें बहुतांस मानलें। तें बहुतीं मान्य केलें। |
| येर तें वेर्थीच गेलें । जगनिंद्य । १४। |
| लोक आपणासि वोळावे । किंवा आवधेच कोंसळावे । |
| आपणास समाधान फावे । ऐसें करावें । १५। |
| समाधानें समाधान वाढे । मित्रिनें मित्रि जोडे । |
| मोडितां क्षणमात्रें मोडे । बरेपण । १६। |
| अहो कांहो रे कांरे । जनीं ऐकिजेतें किं रे। |
| कळत असतांच कां रे। निकामीपण । १७। |
| चातुर्ये श्रुंघारे अंतर । वस्त्रें श्रुंघारे शरीर । |
| दोहिंमधें कोण थोर । बरें पाहा । १८। |
| बाह्याकार श्रुंघारिलें । तेणें लोकांच्या हातासि काये आलें । |
| चातुर्ये बहुतांसि रक्षिलें । नाना प्रकारें । १९। |
| बरें खावें बरें जेवावें । बरें ल्यावें बरें नेसावें। |
| समस्तीं बरें म्हणावें । ऐसी वासना ।२०। |
| तनें मनें झिजावें। तेणें भलें म्हणोन घ्यावें। |
| उगेंचि कल्पितां सिणावें। लागेल पुढें ।२१। |
| लोकी कार्यभाग आहे । तो कार्यभाग जेथे घटे । |
| लोक सहजचि वोढे। कामासाठीं ।२२। |

म्हणोन दुसऱ्यास सुखी करावें । तेणें आपण सुखी व्हावें । दुसऱ्यास कष्टवितां कष्टावें । लागेल स्वयें 1231 हें तों प्रगटचि आहे । पाहिल्याविण कामा नये । समजणें हा उपाये। प्राणीमात्रांसी । २४। समजले आणी वर्तले। तेचि भाग्यपुरुष जाले। यावेगळे उरले। तें करंटे पुरुष । २५। जितुका व्याप तितुकें वैभव । वैभवासारिखा हावभाव । समजलें पाहिजे उपाव । प्रगटिच आहे 1761 आळसें कार्येभाग नासतो । साक्षेप होत होत होतो । दिसते गोष्टी कळेना तो। शाहाणा कैसा । २७। मित्रि करितां होतें कृत्य । वैर करितां होतो मृत्य। बोलिलें हें सत्य किं असत्य । वोळखावें 1261 आपणास शाहाणें करूं नेणे। आपलें हित आपण नेणे। जनीं मैत्रि राखों नेणे। वैर करी 1231 ऐसे प्रकारीचे जन। त्यास म्हणावें अज्ञान। तयापासीं समाधान । कोण पावे 1301 आपण येकायेकी येकला । सृष्टींत भांडत चालिला । बहुतांमध्यें येकल्याला । येश कैंचें ।३१। बहुतांचे मुखीं उरावें । बहुतांचे अंतरीं भरावें । उत्तम गुणीं विवरावें । प्राणीमात्रांसी ।३२। शाहाणे करावें जन। पतित करावे पावन। सृष्टिमधें भगवद्भजन । वाढवावें 1331

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'चातुर्येलक्षणनाम' समास सहावा समाप्त.

दशक १४: समास ७

युगधर्मनिरूपण

| नाना वष नाना आश्रम | 1 | सर्वाचे मूळ गृहस्थाश्रम | 1 | | |
|---------------------------------|-----|-----------------------------|---|----|---|
| जेथें पावती विश्राम | ł i | त्रैलोक्यवासी | 1 | 8 | 1 |
| देव ऋषी मुनी योगी | 1 | नाना तापसी वीतरागी | 1 | | |
| पितृआदिकरून विभागी | 1 | अतीत अभ्यागत | ı | 2 | 1 |
| गृहस्थाश्रमीं निर्माण जाले | ı | आपला आश्रम टाकुन गेले | ı | | |
| परंतु गृहस्थागृहीं हिंडों लागले | 1 | कीर्तिरूपें | ı | 3 | ı |
| याकारणें गृहस्थाश्रम | 1 | सकळामधें उत्तमोत्तम | 1 | | |
| परंतु पाहिजे स्वधर्म | | आणी भूतदया | | 8 | l |
| जेथें शडकर्में चालती | 1 | विध्योक्त क्रिया आचरती | 1 | | |
| वाग्माधुर्ये बोलती | | प्राणीमात्रांसी | l | ų | l |
| सर्व प्रकारें नेमक | | शास्त्रोक्त करणें कांहींयेक | | | |
| त्याहिमध्यें अलोलिक | 1 | तो हा भक्तिमार्ग | l | Ę | l |
| पुरश्चरणी कायाक्लेसी | 1 | दृढव्रती परम सायासी | 1 | | |
| जगदीशावेगळें जयासी | | | | 9 | 1 |
| काया वाचा जीवें प्राणें | 1 | कष्टे भगवंताकारणें | l | | |
| मनें घेतलें धरणें | | | | 6 | l |
| ऐसा भगवंताचा भक्त | 1 | विशेष अंतरीं विरक्त | 1 | | |
| संसार सांडून जाला मुक्त | | | | 9 | ١ |
| अंतरापासून वैराग्य | l | तेंचि जाणावें महद्भाग्य | 1 | | |
| लोलंगतेयेवढें अभाग्य | 1 | आणीक नाहीं | l | १० | 1 |
| | | | | | |

| राजे राज्य सांडून गेले । भगवंताकारणें हिंडलें। |
|--|
| कीर्तिरूपें पावन जाले। भूमंडळीं । ११। |
| ऐसा जो कां योगेश्वर । अंतरीं प्रत्ययाचा विचार । |
| उकलूं जाणे अंतर । प्राणीमात्रांचें ।१२। |
| ऐसी वृत्ती उदासीन । त्याहिवरी विशेष आत्मज्ञान । |
| दर्शनमात्रें समाधान । पावती लोक । १३। |
| बहुतांसी करी उपाये । तो जनाच्या वाट्या न ये। |
| अखंड जयाचे हृदये । भगवद्रूप । १४। |
| जनास दिसे हा दुश्चित । परी तो आहे सावचित । |
| अखंड जयाचें चित्त । परमेश्वरीं ।१५। |
| उपासनामूर्तिध्यानीं । अथवा आत्मानुसंधानीं। |
| नाहीं तरी श्रवणमननीं । निरंतर । १६। |
| पूर्वजांच्या पुण्यकोटी । संग्रह असिल्यां गांठीं । |
| तरीच ऐसीयाची भेटी । होये जनासी ।१७। |
| प्रचीतिविण जें ज्ञान । तो आवघाचि अनुमान । |
| तेथें कैंचें परत्रसाधन । प्राणीयांसी ।१८। |
| याकारणें मुख्य प्रत्यये । प्रचीतिविण कामा नये। |
| उपायासारिखा अपाये । शाहाणे जाणती ।१९। |
| वेडें संसार सांडून गेलें । तरी तें कष्टकष्टोंचि मेलें। |
| दोहिंकडे अंतरलें । इहलोक परत्र । २०। |
| रागें रागें निघोन गेला । तरी तो भांडभांडोंचि मेला। |
| बहुत लोक कष्टी केला । आपणिह कष्टी |

| निघोन गेला परी अज्ञान । त्याचे संगती लागले जन । |
|--|
| गुरु शिष्य दोघे समान । अज्ञानरूपें ।२२। |
| आशाबद्धि अनाचारी । निघोन गेला देशांतरीं । |
| तरी तो अनाचारचि करी । जनामधें । २३। |
| गृहीं पोटेंविण कष्टती । कष्टी होऊन निघोन जाती । |
| त्यास ठाई ठाई मारिती । चोरी भरतां । २४। |
| संसार मिथ्या ऐसा कळला । ज्ञान समजोन निघोन गेला । |
| तेणें जन पावन केला । आपणाऐसा । २५। |
| येके संगतीनें तरती । येके संगतीनें बुडती । |
| याकारणें सत्संगती । बरी पाहावी । २६। |
| जेथें नाहीं विवेकपरीक्षा । तेथें कैंची असेल दीक्षा। |
| घरोघरीं मागतां भिक्षा । कोठेंहि मिळेना । २७। |
| जो दुसऱ्याचें अंतर जाणे । देश काळ प्रसंग जाणे । |
| तया पुरुषा काय उणें । भूमंडळीं । २८। |
| नीच प्राणी गुरुत्व पावला । तेथें आचारचि बुडाला। |
| वेदशास्त्रब्राह्मणाला । कोण पुसे ।२९। |
| ब्रह्मज्ञानाचा विचारू । त्याचा ब्राह्मणासीच अधिकारू । |
| वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः। ऐसें वचन ।३०। |
| ब्राह्मण बुद्धीपासून चेवले । आचारापासून भ्रष्टले । |
| गुरुत्व सांडून जाले। शिष्य शिष्यांचे ।३१। |
| कित्येक दावलमलकास जाती । कित्येक पीरास भजती। कित्येक तुरुक होती। आपले इच्छेनें ।३२। |
| विरुक्त होता । आपल इच्छन । ३२। |

ऐसा कलयुगींचा आचार । कोठें राहिला विचार । पुढें वर्णसंकर । होणार आहे 1331 गुरुत्व आलें नीचयाती । कांहींयेक वाढली महंती । शूद्र आचार बुडविती । ब्राह्मणाचा 1381 हें ब्राह्मणास कळेना । त्याची वृत्तिच वळेना । मिथ्या अभिमान गळेना । मूर्खपणाचा 1341 राज्य नेलें म्लेंचिं क्षेत्रीं । गुरुत्व नेलें कुपात्रीं । आपण अरत्रीं ना परत्रीं । कांहींच नाहीं ।३६। ब्राह्मणास ग्रामणीनें बुडविलें । विष्णूनें श्रीवत्स मिरविलें । त्याच विष्णूनें श्रापिलें । फरशरामें 1391 आम्हीहि तेचि ब्राह्मण । दुःखें बोलिलें हें वचन । वडिल गेले ग्रामणी करून । आम्हां भोंवते । ३८। आतांचे ब्राह्मणीं काये केलें । अन्न मिळेना ऐसें जालें। तुम्हा बहुतांचे प्रचितीस आलें। किंवा नाहीं 1361 बरें वडिलांस काये म्हणावें । ब्राह्मणाचें अदृष्ट जाणावें । प्रसंगें बोलिलें स्वभावें । क्ष्मा केलें पाहिजे ।४०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'युगधर्मनिरूपणनाम' समास सातवा समाप्त.

दशक १४: समास ८

अखंडध्याननिरूपण

| बरे ऐसा प्रसग जाला। जाला ता हाऊन गला। | | |
|--|----|---|
| आतां तरी ब्राह्मणीं आपणाला । शाहाणे करावें । | 8 | Į |
| देव पुजावा विमळहस्तीं । तेणें भाग्य पाविजे समस्तीं । | | |
| मूर्ख अभक्त वेस्तीं । दरिद्र भोगिजे । | 7 | 1 |
| आधीं देवास वोळखावें। मग अनन्यभावें भजावें। | | |
| अखंड ध्यानचि धरावें । सर्वोत्तमाचें । | 3 | ١ |
| सर्वांमधें जो उत्तम । तया नांव सर्वोत्तम । | | |
| आत्मानात्मविवेकवर्म । ठाई पाडावें । | 8 | 1 |
| जाणजाणों देह रक्षी । आत्म द्रष्टा अंतरसाक्षी । | | |
| | لو | |
| तो सकळ देहांमधें वर्ततो । इंद्रियेंग्राम चेष्टवितो । | | |
| | Ę | |
| प्राणीमात्रीं जगदांतरें। म्हणोनि राखावीं अंतरें। | | |
| | 9 | |
| देव वर्ततो जगदांतरीं । तोचि आपुले अंतरीं । | | |
| त्रैलोकींचे प्राणीमात्रीं । बरें पाहा | 4 | |
| मुळीं पाहाणार तो येकला । सकळां ठाईं विभागला। | | |
| देहप्रकृतीनें जाला । भिन्न भिन्न | 3 | |
| भिन्न भासे देहाकारें। प्रस्तुत येकचि अंतरें। बोलणें चालणें निधरिं। त्यासीच घडे । १ | | |
| नालग चालण निधार । त्यासाच घड । १ | 0 | |

| आपुले पारिखे सकळ लोक । पक्षी स्वापद पश्चादिक । |
|---|
| किडा मुंगी देहधारक । सकळ प्राणी । ११। |
| खेचर भूचर वनचर। नाना प्रकारें जळचर। |
| चत्वार खाणी विस्तार । किती म्हणोन सांगावा ।१२। |
| समस्त जाणीवेनें वर्तती । रोकडी पाहावी प्रचिती । |
| त्याची आपुली संगती । अखंड आहे । १३। |
| जगदांतरें वोळला धणी। किती येकवटील प्राणी। |
| परी ते वोळायाची करणी । आपणापासीं ।१४। |
| हें आपणाकडेच येतें । राजी राखिजे समस्तें । |
| देहासि बरें करावें तें । आत्मयास पावे ।१५। |
| दुर्जन प्राणी त्यांतील देव । त्याचा लाताड स्वभाव। |
| रागास आला जरी राव । तरी तंडों नये कीं ।१६। |
| प्रसंगी सांडीच करणें । पुढें विवेके विवरणें। |
| विवेक सज्जनचि होणें। सकळ लोकीं ।१७। |
| आत्मत्वीं दिसतो भेद । हा अवघाचि देहसमंध । |
| येका जीवनें नाना स्वाद । औषधीभेदें ।१८। |
| गरळ आणि अमृत जालें। परी आपपण नाहीं गेलें। |
| साक्षत्वें आत्मयास पाहिलें । पाहिजे तैसें ।१९। |
| अंतरनिष्ठ जो पुरुष । तो अंतरनिष्ठेनें विशेष । |
| जगामधें जो जगदीश । तो तयास वोळखे ।२०। |
| नयनेंचि पाहावा नयेन । मनें शोधावें मन । |
| तैसाचि हा भगवान । सकळां घटीं |

| तेणेंविण कार्यभाग आडे । सकळ कांहीं तेणेंचि घडे | | | |
|--|-----|------------|------------|
| प्राणी विवेकें पवाडे । तेणेंचि योगें | 1 | ? ? | } I |
| जागृतीस व्यापार घडतो । समंध तयासीच पडतो | ı | | |
| स्वप्नामधें घडे जो तो । येणेंचि न्यायें | | २३ | } ! |
| अखंड ध्यानाचें लक्षण । अखंड देवाचें स्मरण | 1 | | |
| याचें कळतां विवरण । सहजचि घडे | | २४ | 1 |
| सहज सांडून सायास । हाचि कोणीयेक दोष | 1 | | |
| आत्मा सांडून अनात्म्यास । ध्यानीं धरिती | | २५ | H |
| परी तें धरितांहि धरेना । ध्यानीं येती वेक्ति नाना | ı | | |
| उगेंचि कष्टती मना । कासाविस करूनी | | २६ | 1 |
| मूर्तिध्यान करितां सायासें । तेथें येकाचें येकचि दिसे | l | | |
| भासों नये तेंचि भासे । विलक्षण | | २७ | ŧ |
| ध्यान देवाचें करावें । किंवा देवाल्याचें करावें | 1 | | |
| हेंचि बरें विवरावें । आपले ठाईं | | २८ | 1 |
| देह देउळ आत्मा देव । कोठें धरूं पाहातां भाव | | | |
| देव वोळखोन जीव । तेथेंचि लावावा | | २९ | 1 |
| अंतरनिष्ठा ध्यान ऐसें । दंडकध्यान अनारिसें | | | |
| प्रत्ययेविण सकळ पिसें। अनुमानध्यान | | 9 0 | 1 |
| अनुमानें अनुमान वाढे। ध्यान धरितां सर्वेचि मोडे | 1 | | |
| उगेचि कष्टती बापुडे । स्यूळध्यानें | 1 3 | ३१ | 1 |
| देवास देहधारी कल्पिती । तेथें नाना विकल्प उठती भोगणें त्यागणें विपत्ति । देहयोगें | 1 | | |
| ्षापण विधान । तह्याग | 3 | 3 2 | 1 |

ऐसें मनीं आठवतें । विचारितां भलतेंचि होतें । दिसों नये तें दिसतें । नाना स्वप्नीं 1331 दिसतें तें सांगतां न ये । बळें भावार्थ धरितां नये। साधक कासाविस होये । अंतर्यामीं 1381 सांगोपांग घडे ध्यान । त्यास साक्ष आपुलें मन । मनामध्यें विकल्पदर्शन । होऊंच नये 1341 फुटक मन येकवटिलें। तेणें तुटक ध्यान केलें। तेथें कोण सार्थक जालें । पाहाना कां 1361 अखंड ध्यानें न घडे हित । तरी तो जाणावा पतित। हाचि अर्थ सावचित । बरा पाहावा । ३७। ध्यान धरितें तें कोण । ध्यानीं आठवतें तें कोण । दोनीमधें अनन्य लक्षण । असिलें पाहिजे । ३८। अनन्य सहजचि आहे । साधक शोधून न पाहे। ज्ञानी तो विवरोन राहे। समाधानें ।३९। ऐसीं हे प्रत्ययाची कामें । प्रत्ययेंविण बाधिजे भ्रमें। लोकदंडकसंभ्रमें । चालती प्राणी ।४०। दंडकध्यानाचें लक्षण । धरून बैसलें अवलक्षण । प्रमाण आणि अप्रमाण । बाजारी नेणती ।४१। मिथ्या समाचार उठविती । वाउग्याच बोंबा घालिती । मनास आणितां अंतीं । आवधेंचि मिथ्या ।४२। कोणीयेक ध्यानस्त बैसला । कोणीयेक सिकवी त्याला । मुकुट काढूनि माळ घाला । म्हणिजे बरें ।४३।

मनाचेथें काये दुष्काळ । जे आखुड कल्पिली माळ । सांगते ऐकते केवळ । मूर्ख जाणावे 1881 प्रत्यक्ष कष्ट करावे न लगती । दोरे फुलें गुंफावीं न लगती । कल्पनेची माळ थिटी करिती। काये निमित्य 1841 बुधीविण प्राणी सकळ । ते ते अवधेचि बाष्कळ । तया मूर्खासी खळखळ । कोणें करावी 1861 जेणें जैसा परमार्थ केला । तैसाच पृथ्वीवरी दंडक चालिला । साता पांचाचा बळावला । साभिमान 1891 प्रत्यवेविण साभिमान । रोगी मारिले झांकून । तेथें अवघाचि अनुमान । ज्ञान कैंचें 1861 सर्व साभिमान सांडावा । प्रत्ययें विवेक मांडावा । माया पूर्वपक्ष खंडावा । विवेकबळें 1881

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'अखंडध्याननिरूपणनाम' समास आठवा समाप्त.

दशक १४: समास ९

शाश्वतनिरूपण

।। श्रीराम ॥

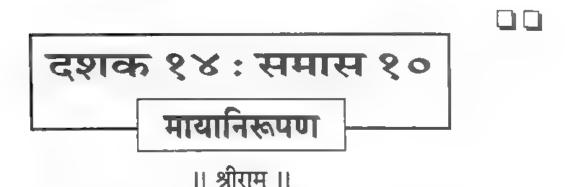
पिंडाचें पाहिलें कौतुक । शोधिला आत्मानात्माविवेक । पिंड अनात्मा आत्मा येक । सकळ कर्ता । १। आत्म्यास अनन्यता बोलिली । ते विवेकें प्रत्यया आली । आतां पाहिजे समजली । ब्रह्मांडरचना । २। आत्मानात्माविवेक पिंडीं । सारासारविचार ब्रह्मांडीं । विवर्शविवरों हे गोडी । घेतली पाहिजे । ३।

पिंड कार्य ब्रह्मांड कारण । याचें करावें विवरण । हेंचि पुढें निरूपण । बोलिलें असे । ४ । असार म्हणिजे नासिवंत । सार म्हणिजे तें शाश्वत । जयास होईल कल्पांत । तें सार नव्हे । ५। पृथ्वी जळापासून जाली । पुढें ते जळीं मिळाली । । तेजापासुनी जळाची उत्पत्ती वाढली तें जळ तेजें शोषिलें । महत्तेजें आटोन गेलें। पुढें तेजचि उरलें । सावकाश 191 तेज जालें वायोपासुनी । वायो झडपी तयालागुनी। । वायोचीच जाली । ८। तेज जाउनी दाटणी वायो गगनापासुनी जाला । मागुतां तेथेंचि विराला। ऐसा हा कल्पांत बोलिला । वेदांतशास्त्रीं 191 गुणमाया मूळमाया । परब्रह्मीं पावती लया । तें परब्रह्म विवराया । विवेक पाहिजे । १०। सर्व उपाधींचा सेवट । तेथें नाहीं दृश्य खटपट । निर्गुण ब्रह्म घनदाट । सकळां ठाई ।११। उदंड कल्पांत जाला । तरी नाश नाहीं तयाला । मायात्यागें शाश्वताला । वोळखावें 1881 देव अंतरात्मा सगुण । सगुणें पाविजे निर्गुण । निर्गुणज्ञानें विज्ञान । होत असे । १३। कल्पनेतीत जें निर्मळ । तेथें नाहीं मायामळ । मिथ्यत्वें दृश्य सकळ । होत जातें 1881 जें होतें आणि सवेंचि जातें । तें तें प्रत्ययास येतें। जेथें होणें जाणें नाहीं तें । विवेकें वोळखावें ।१५।

| येक ज्ञान येक अज्ञान । येक जाणावें विपरीत ज्ञान । |
|--|
| हे त्रिपुटी होये क्षीण । तेचि विज्ञान । १६। |
| वेदांत सिघांत धादांत । याची पाहावी प्रचित । |
| निर्विकार सदोदित । जेथें तेथें । १७। |
| तें ज्ञानदृष्टीनें पाहावें । पाहोन अनन्य राहावें । |
| मुख्य आत्मनिवेदन जाणावें । याचें नांव ।१८। |
| दृश्यास दिसतें दृश्य । मनास भासतो भास । |
| दृश्यभासातीत अविनाश । परब्रह्म तें । १९। |
| पाहों जातां दुरीच्या दुरी । परब्रह्म सबाहेअंतरीं । |
| अंतिच नाहीं अनंत सरी । कोणास द्यावी ।२०। |
| चंचळ तें स्थिरावेना । निश्चळ तें कदापी चळेना । |
| आभाळ येतें जातें गगना । चळण नाहीं ।२१। |
| जें विकारें वाढे मोडे। तेथें शाश्वतता कैंची घडे। |
| कल्पांत होतांच विघडे । सकळ कांहीं ।२२। |
| जें अंतरींच भ्रमलें। मायासंभ्रमें संभ्रमलें। |
| तयास हें कैसें उकले। आव्हाट चक्र । २३। |
| भिडेनें वेव्हार निवडेना । भिडेनें सिघांत कळेना । |
| भिडेनें देव आकळेना । अंतर्यामीं । २४। |
| वैद्याची प्रचित येईना। आणि भीडिह उलंघेना। |
| तरी मग रोगी वांचेना । ऐसें जाणावें ।२५। |
| जेणें राजा वोळिखला । तो राव म्हणेना भलत्याला । |
| जेणें देव वोळिखिला। तो देवरूपी । २६। |
| जयास माईकाची भीड । तें काये बोलेल द्वाड । |
| विचार पाहातां उघड । सकळ कांहीं । २७। |

भीड मायेऐलीकडे । परब्रह्म तें पैलीकडे । पैलीकडे । पैलीकडे । सदोदित । १८। लिटक्याची भीड धरणें । भ्रमें भलतेंचि करणें । ऐसीं नव्हती लक्षणें । विवेकाचीं । १९। खोटें आवधेंचि सांडावें । खरें प्रत्ययें वोळखावें । मायात्यागें समजावें । परब्रह्म । ३०। तें मायेचें जें लक्षण । तेंचि पुढें निरूपण। सुचितपणें विवरण । केलें पाहिजे । ३१।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'शाश्वतनिरूपणनाम' समास नववा समाप्त.



माया दिसे परी नासे । वस्तु न दिसे परी न नासे ।

माया सत्य वाटे परी मिथ्या असे । निरंतर । १ ।

करंटा पडोनी उताणा । करी नानापरी कल्पना ।

परी तें कांहींच घडेना । तैसी माया । २ ।

द्रव्यदारेचें स्वप्नवैभव । नाना विळासें हावभाव ।

क्षणीक वाटे परी माव । तैसी माया । ३ ।

गगनीं गंधर्वनगरें । दिसताती नाना प्रकारें ।

नाना रूपें नाना विकारें । तैसी माया । ४ ।

लक्षुमी रायेविनोदाची । बोलतां वाटे साची ।

मिथ्या प्रचित तेथीची । तैसी माया

| दसऱ्याचे सुवर्णाचे लाटे | । लोक म्हणती परी ते कांटे | 1 |
|---|-------------------------------|-------|
| परी सर्वत्र रहाटे | । तैसी माया | 1 & 1 |
| मेल्याचा मोहोछाव करणें | । सतीचें वैभव वाढवणे | i |
| मसणीं जाउनी रुदन करणें | । तैसी माया | 191 |
| राखेसी म्हणती लक्षुमी | । दुसरी भारदोरी लक्षुमी | 1 |
| तिसरी नाममात्र लक्षुमी | । तैसी माया | 161 |
| मुळीं बाळविधवा नारी | । तिचें नांव जन्मसावित्री | |
| कुबेर हिंडे घरोघरीं | | 191 |
| दशअवतारांतील कृष्णा | <i>C</i> | ΓI |
| नदी नामें पीयुष्णा | । तैसी माया | 1601 |
| | । ग्रामस्तांपुढें दाखवी हावभा | व। |
| कां माहांराज म्हणोनि लाघव | । तैसी माया | 1881 |
| देव्हारां असे अनपूर्णा | । आणी गृहीं अन्नचि मिळेन | |
| नामें सरस्वती सिकेना | । शुभावळु | |
| सुण्यास व्याघ्र नाम ठेविलें | । पुत्रास इंद्रनामें पाचारिले | |
| कुरूप परी आळविलें | । सुंदरा ऐसें | |
| मूर्ख नामें सकळकळा | । राशभी नामें कोकिळ | |
| नातरी डोळसेचा डोळा | । फुटका जैसा | |
| मातांगीचें नाम तुळसी | । चर्मिकीचें नाम कासं | |
| बोलती अतिशूद्रिणीसी | । भागीरथी ऐसें | 1१५1 |
| साउली आणी अंघकार | । येक होतां तेथीचा विचा | |
| उगाचि दिसे भासमात्र | । तैसी माया | 1 १६। |
| श्रवण बोटें संधी करतळ रम्य आरक्तकल्होळ | । रविरश्में दिसती इंगव | ठ । |
| TIT A | | |

। वाटे अग्नचि लागला। भगवें वस्त्र देखतां मनाला । तैसी माया 1281 विवंचितां प्रत्ये आला । आखुड लांबें किरकोळें। जळीं चरणकरांगुळें । तैसी माया विपरीत काणें दिसती जळें 1881 । कामिणीनें पिवळी जाली। भोवंडीनें पृथ्वी कलथली सन्यपातस्थां अनुभवली । तैसी माया 1201 कोणीयेक पदार्थविकार । उगाचि दिसे भासमात्र । । तैसी माया अनन्याचा अन्य प्रकार 1281

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'मायानिरूपणनाम' समास दहावा समाप्त.

> > दशक चौदावा समाप्त

दशक पंधरावा : आत्मदशक

दशक १५: समास १ चातुर्यलक्षण

| अस्तिमांशांचीं शरीरें। त्यांत राहिजे जीवेश्वरें | l | | |
|---|---|-----|------------|
| नाना विकारीं विकारें । प्रविण होईजे | l | 8 | ١ |
| घनवट पोचट स्वभावें । विवरोन जाणिजे जीवें | | | |
| व्हावें न व्हावें आघवें । जीव जाणे | 1 | ? | l |
| येकीं मागमागों घेणें । येकां न मागतांच देणें | l | | |
| प्रचीतीनें सुलक्षणें । वोळखावीं | 1 | 3 | 1 |
| जीव जीवांत घालावा । आत्मा आत्म्यांत मिसळावा | | | |
| राहराहों शोध घ्यावा । परांतरांचा | | 8 | 1 |
| जानवें हेंवडकारें जालें। ढिलेपणें हेवड आलें | | | |
| नेमस्तपणें शोभलें । दृष्टीपुढें | | 4 | 1 |
| तैसेंचि हें मनास मन । विवेकें जावें मिळोन | | | |
| ढिलेपणें अनुमान । होत आहे | | É | ١ |
| अनुमानें अनुमान वाढतो । भिडेनें कार्यभाग नासतो | | | |
| याकारणें प्रत्यये तो । आधीं पाहावा | | 9 | 1 |
| दुसऱ्याचे जीवीचें कळेना । परांतर तें जाणवेना | | | |
| वश्य होती लोक नाना । कोण्या प्रकारें | | 6 | ١ |
| आकल सांडून परती । लोक वश्यकर्ण करिती | | | |
| अपूर्णपणें हळु पडती । ठाईं ठाईं | | 9 | 1 |
| जगदीश आहे जगदांतरीं । चेटकें करावीं कोणावरी जो कोणी विवेकें विवरी । तोचि श्रेष्ठ | | 0 4 | . 1 |
| ्रा काणा विविध विवस् । ताचि अप | | 40 | <i>'</i> [|

| श्रेष्ठ कार्यें करी श्रेष्ठ । | |
|-------------------------------|------------------------------|
| कर्मानुसार प्राणी नष्ट। | अथवा भले । ११। |
| राजे जाती राजपंथें। | चोर जाती चोरपंथें। |
| वेडें ठके अल्पस्वार्थे । | मूर्खपणें ।१२। |
| मूर्खास वाटे मी शाहाणा। | परी तो वेडा दैन्यवाणा। |
| नाना चातुर्याच्या खुणा । | चतुर जाणे । १३। |
| जो जगदांतरें मिळाला । | |
| अरत्रीं परत्रीं तयाला । | काये उणें । १४। |
| बुत्यि देणें भगवंताचें । | 9 |
| राज्य सांडून फुकाचें। | भीक मागे । १५। |
| जें जें जेथें निर्माण जालें। | |
| अभिमान देऊन गोविलें । | ठाईं ठाईं । १६। |
| अवघेच म्हणती आम्ही थोर । | अवघेचि म्हणती आम्ही सुंदर । |
| अवघेचि म्हणती आम्ही चतुर । | भूमंडळीं । १७। |
| ऐसा विचार आणितां मना । | कोणीच लाहान म्हणवीना। |
| जाणते आणिती अनुमाना । | सकळ कांहीं । १८। |
| आपुलाल्या साभिमानें । | लोक चालिले अनुमानें। |
| परंतु हें विवेकानें। | पाहिलें पाहिजे । १९। |
| लटिक्याचा साभिमान घेणें । | सत्य अवधेंच सोडणें। |
| मूर्खपणाचीं लक्षणें । | ते हे ऐसीं ।२०। |
| सत्याचा जो साभिमान । | तो जाणावा निराभिमान। |
| न्याये अन्याये समान । | कदापि नव्हे । २१। |
| न्याये ह्यणिजे तो शाश्वत । | अन्याये ह्मणिजे तो अशाश्वत । |
| बाष्कळ आणि नेमस्त । | |

| येक उघड भाग्य भोगिती | । येक तश्कर पळोन जाती । |
|---------------------------|-----------------------------|
| येकांची प्रगट महंती | । येकांची कानकोंडी । २३। |
| आचारविचारेविण | । जें जें करणें तो तो सीण। |
| वूर्त आणि विचक्षण | । तेचि शोधावे । २४। |
| उदंड बाजारी मिळाले | । परी ते धूर्तीच आळिले। |
| धूर्तांपासीं कांहीं न चले | । बाजाऱ्यांचें । २५। |
| याकारणें मुख्य मुख्य | । तयांसीं करावें सख्य। |
| येणेंकरितां असंख्य | । बाजारी मिळती । २६। |
| | । धूर्त धूर्तींच पवाडे । |
| उगेचि हिंडती वेडे | । कार्येविण । २७। |
| | । तेणें मनास मन मिळालें। |
| परी हें गुप्तरूपें केलें | |
| | । तेथें येती उदंड जन। |
| | । आर्जव करिती । २९। |
| वोळखीनें वोळखी साधावी | । बुद्धीनें बुद्धि बोधावी। |
| | । पाषांडाची ।३०। |
| | । अंतरी असाव्या नाना कळा । |
| सगट लोकांचा जिव्हाळा | । मोडूं नये ।३१। |
| निस्पृह आणि नित्य नूतन | । प्रत्ययाचें ब्रह्मज्ञान । |
| प्रगट जाणता सज्जन | । दुल्लभ जगीं ।३२। |
| नाना जिनसपाठांतरे | । निवती सकळांचीं अंतरें। |
| चेंचळपणें तदनंतरें | । सकळां ठाईं ।३३। |
| यके ठाईं बैसोन राहिला | । तरी मग व्यापचि बुडाला । |
| सावधपणें ज्याला त्याला | । भेटि द्यावी ।३४। |

भेटभेटों उरी राखणें। हें चातुर्याचीं लक्षणें। मनुष्यमात्र उत्तम गुणें। समाधान पावे ।३५।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'चातुर्यलक्षणनाम' समास पहिला समाप्त.

दशक १५: समास २

नि:स्पृहव्यापलक्षण

| ॥ श्रीराम ॥ | | | |
|--|---|---|---|
| पृथ्वीमधें मानवी शरीरें । उदंड दाटलीं लाहानथोरें | l | | |
| पालटती मनोविकारें । क्षणक्षणा | | 8 | l |
| जितुक्या मूर्ती तितुक्या प्रकृती । सारिख्या नस्ती आदिअंतीं | l | | |
| नेमचि नाहीं पाहावें किती। काये म्हणोनी | 1 | 2 | ì |
| कित्येक म्लेंच होऊन गेले । कित्येक फिरंगणांत आटले | ŀ | | |
| देशभाषानें रुधिले । कितीयेक | ١ | ş | 1 |
| मन्हाष्टदेश थोडा उरला । राजकारणें लोक रुधिला | ١ | | |
| अवकाश नाहीं जेवायाला । उदंड कामें | I | 8 | 1 |
| कित्येक युद्धप्रसंगी गुंतले । तेणें गुणें उन्मत्त जाले | 1 | | |
| रात्रंदिवस करूं लागले। युद्धचर्चा | | 4 | ł |
| उदिम्यास व्यासंग लागला। अवकाश नाहींसा जाला | ı | | |
| अवधा पोटधंदाच लागला । निरंतर | l | Ę | ١ |
| शडदर्शनें नाना मतें। पाषांडें वाढलीं बहुतें | 1 | | |
| पृथ्वीमधें जेथतेथें । उपदेसिती | | 9 | 1 |
| स्मार्थी आणि वैष्णवीं । उरलीं सुरलीं नेलीं लाघवी | 1 | | |
| ऐसी पाहातां गथागोवी । उदंड जाली | 1 | 6 | - |
| | | | |

| कित्येक कामनेचे भक्त । ठाइं ठाइं जाले आसक्त । |
|---|
| युक्त अथवा अयुक्त । पाहातो कोण । ९ । |
| या गल्बल्यामध्यें गल्बला । कोणी कोणी वाढविला । |
| त्यास देखों सकेनासा जाला । वैदिक लोक । १०। |
| त्याहिमधें हरिकीर्तन । तेथें वोढले कित्येक जन। |
| प्रत्ययाचें ब्रह्मज्ञान । कोण पाहे ।११। |
| या कारणें ज्ञान दुल्लभ । पुण्यें घडे अलभ्य लाभ । |
| विचारवंतां सुल्लभ । सकळ कांहीं । १२। |
| विचार कळला सांगतां नये । उदंड येती अंतराये । |
| उपाये योजितां अपाये । आडवे येती । १३। |
| त्याहिमधें जो तिक्षण । रिकामा जाऊं नेदी क्षण । |
| धूर्त तार्किक विचक्षण । सकळां माने ।१४। |
| नाना जिनस उदंड पाठ । वदों लागला घडघडाट । |
| अव्हाटचि केली वाट । सामर्थ्यबळें ।१५। |
| प्रबोधशक्तीचीं अनंत द्वारें । जाणें सकळांची अंतरें। |
| निरूपणें तदनंतरें । चटक लागे ।१६। |
| मतें मतांतरें सगट । प्रत्यये बोलोन करी सपाट । |
| दंडक सांडून नीट । वेधी जना । १७। |
| नेमकें भेदकें वचनें । अखंड पाहे प्रसंगमानें । |
| उदास वृत्तीच्या गुमानें । उठोन जातो । १८। |
| प्रत्यये बोलोन उठोन गेला । चटक लागली लोकांला। |
| नाना मार्ग सांडून त्याला । शरण येती ।१९। |
| परी तो कोठें आडळेना । कोणे स्थळीं सांपडेना । वेष पाहातां हीनदीना । सारिखा दिसे । २०। |
| पहाता हानदाना । सारखा दस १२०। |

| उदंड करी गुप्तरूपें । भिकाऱ्यासारिखा स्वरूपें। |
|--|
| तेथें येशकीर्तिप्रतापें । सीमा सांडिली । २१। |
| ठाईं ठाईं भजन लावी । आपण तेथून चुकावी । |
| मछरमतांची गोवी । लागोंच नेदी । २२। |
| खनाळामधें जाऊन राहे। तेथें कोणीच न पाहे। |
| सर्वत्रांची चिंता वाहे । सर्वकाळ । २३। |
| अवघड स्थळीं कठीण लोक । तेथें राहाणें नेमक । |
| सृष्टीमधें सकळ लोक । धुंडीत येती |
| तेथें कोणाचें चालेना । अनमात्र अनमानेना । |
| कट्ट घालून राजकारणा । लोक लावी ।२५। |
| लोकीं लोक वाढविले। तेणें अमर्याद जाले। |
| भगदली गना नाने । ——————————————————————————————————— |
| न्यार्व नार्व नांच ना वाल । गुप्तरूप ।२६। |
| ठाईं ठाईं उदंड ताबे। मनुष्यमात्र तितुकें झोंबे। |
| चहुंकडे उदंड लांबे । परमार्थबुद्धि । २७। |
| उपासनेचा गजर । स्थळोस्थळीं थोर थोर । |
| प्रत्ययानें प्राणीमात्र । सोडविले । २८। |
| ऐसे कैवाडे उदंड जाणे । तेणें लोक होती शहाणे। |
| जियों जेलों करूरे — े |
| |
| ऐसी कीर्ति करून जावें। तरीच संसारास यावें। |
| दास म्हणे हें स्वभावें। संकेतें बोलिलें ।३०। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'नि:स्पृहव्यापलक्षणनाम' समास दुसरा समाप्त.

दशक १५: समास ३

श्रेष्ठ अंतरात्मानिरूपण

| मुळापासून | सैरावैरा | 1 | अवघा पंचीकर्ण पसारा। |
|-------------------|------------|---|----------------------------|
| त्यांत साक्षत्वाच | ा दोरा | ١ | तोहि तत्वरूप । १। |
| दुरस्ता दाटल्या | | | उंच सिंहासनीं राजा। |
| याचा विचार | समजा | ١ | अंतर्यामी । २। |
| 1 - | | | तैसेंचि जाणावें नृपतीचें। |
| मुळापासून | सृष्टीचें | ١ | तत्वरूप । ३। |
| रायाचे सत्तेनें | चालतें | 1 | परन्तु अवधीं पंचभूतें। |
| | | | अधिष्ठान आहे । ४। |
| विवेकें बहुत | पैसावले | 1 | म्हणौन अवतारी बोलिले। |
| मनु चक्रवती | जाले | 1 | येणेंचि न्यायें । ५ । |
| | | | तेचि तितुके सदेव। |
| | | | होती लोक । ६ । |
| व्याप आटोप | करिती | 1 | धके चपेटे सोसिती। |
| तेणें प्राणी स | देव होती | 1 | देखतदेखतां । ७। |
| ऐसें हें आत | ां वर्ततें | 1 | मूर्ख लोकांस कळेना तें। |
| विवेकी मनुष्य | समजतें | 1 | सकळ कांहीं |
| थोर लाहान | बुद्धीपासी | ı | सगट कळेना लोकांसी। |
| आधीं उपजलें | तयासी | ı | थोर म्हणती |
| वयें धाकटा | नुपती | 1 | वृद्ध तयास नमस्कार करिती । |
| विचित्र विवेका | ची गती | 1 | कळली पाहिजे । १०। |

| सामान्य लोकांचें ज्ञान । तो अवधाच अनुमान । दीक्षादंडकाचें लक्षण । येणेंचि पाडें । ११। |
|---|
| |
| नव्हे कोणास म्हणावें। सामान्यास काये ठावें। |
| कोणकोणास म्हणावें । किती म्हणोनी । १२। |
| धाकुटा भाग्यास चढला । तरी तुच्छ करिती तयाला । |
| याकारणें सलगीच्या लोकांला । दुरी घरावें । १३। |
| नेमस्त कळेना वचन। नेमस्त नये राजकारण। |
| उगेचि धरिती थोरपण । मूर्खपणें । १४। |
| नेमस्त कांहींच कळेना । नेमस्त कोणीच मानीना । |
| आधीं उपजलें त्या थोरपणा । कोण पुसे |
| विडलां विडलपण नाहीं । धाकट्यां धाकटपण नाहीं । |
| ऐसें बोलती त्यांस नाहीं । शाहाणपण ।१६। |
| गुणेविण विडलपण । हें तों आवधेंच अप्रमाण। |
| त्याची प्रचीत प्रमाण । श्रोरपणीं । १७। |
| तथापि विडलांस मानावें । वैडिलें विडलपण जाणावें। |
| नेणतां पुढें कष्टावें । थोरपणीं ।१८। |
| तस्मात विडल अंतरात्मा । जेथें चेतला तेथें महिमा। |
| हें तों प्रगटचि आहे आम्हां । शब्द नाहीं । १९। |
| याकारणें कोणीयेकें । शाहाणपण सिकावें विवेकें । |
| विवेक न सिकतां तुकें। तुटोन जाती ।२०। |
| तुक तुटलें म्हणिजे गेलें । जन्मा येऊन काये केलें। |
| बळेंचि सांदिस घातलें । आपणासी । २१। |
| सगट बायेका सिव्या देसी । सांदीस पडिला ऐसें म्हणती । |
| मूर्खपणाची प्राप्ती । ठाकून आली । २२। |
| |

ऐसें कोणीयेकें न करावें । सर्व सार्थकचि करावें। कळेना तरी विवरावें । ग्रंथांतरीं 1231 शाहाण्यास कोणीतरी बाहाती । मूर्खास लोक दवडून देती । जीवास आवडे संपत्ति । तरी शाहाणे व्हावें ।२४। आहो या शाहाणपणाकारणें । बहुतांचे कष्ट करणें । परंतु शाहाणपण सिकणें । हें उत्तमोत्तम । २५। जो बहुतांस मानला । तो जाणावा शाहाणा जाला । जनीं शाहाण्या मनुष्याला । काये उणें 1281 आपलें हित न करी लोकिकीं । तो जाणावा आत्मघातकी। या मूर्खायेवढा पातकी । आणिक नाहीं आपण संसारीं कष्टतो । लोकांकरवीं रागेजोन घेतो । जनामधें शाहाणा तो । ऐसें न करी । २८। साधकां सिकविलें स्वभावें । मानेल तरी सुखें घ्यावें। मानेना तरी सांडावें । येकीकडे 1561 तुम्ही श्रोते परम दक्ष। अलक्षास लावितां लक्ष। हें तों सामान्य प्रत्यक्ष । जाणतसा 1301

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'श्रेष्ठअंतरात्मानिरूपणनाम' समास तिसरा समाप्त.

दशक १५: समास ४ शाश्वतब्रह्मनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

पृथ्वीपासून जालीं झाडें । झाडापासून होती लांकडें । लांकडें भस्मोन पुढें । पृथ्वीच होये । १ ।

| पृथ्वीपासून वेल होती वाळोन कुजोन मागुती | |
|---|--|
| नाना धान्यांचीं नाना अन्नें नाना विष्ठा नाना वमनें | । मनुष्यें करिती भोजनें। |
| नाना पक्षादिकीं भक्षिलें | तरीं पुढें तैसेंचि जालें। |
| वाळोन भस्म होऊन गेलें मनुष्यें मरतांच ऐका | |
| ऐशा काया पडती अनेका नाना तृण पदार्थ कुजती | |
| नाना किडे मरोन जाती पदार्थ दाटले अपार | । पुढें पृथ्वी । ६। |
| पृथ्वीवांचून थार | । कोणास आहे । ७। |
| खात मूत भस्म मिळोन | । पशु भक्षितां होतें सेण। । पुन्हा पृथ्वी । ८। |
| उत्पत्तिस्थितिसंव्हारतें जितुकें होतें आणि जातें | । तें तें पृथ्वीस मिळोन जातें । । पुन्हा पृथ्वी । ९ । |
| नाना बीजांचिया रासी पुढें सेवटीं पृथ्वीसी | । विरढोन लागती गगनासी। । मिळोन जाती । १०। |
| लोक नाना धातु पुरिती सुवर्णपाषाणाची गती | । बहुतां दिवसां होये माती। । तैसीच आहे । ११। |
| मातीचें होतें सुवर्ण माहा अग्निसंगें भस्मोन | । आणी मृत्तिकेचे होती पाषाण । । पृथ्वीच होये । १२। |
| | । जर सेवटीं कुजोन जातें। |
| 9 | |

| पृथ्वीपासून धातु निपजती | 1 | अग्निसंगें रस होती। |
|-----------------------------|--------|-----------------------------|
| तया रसाची होये जगती | 1 | कठीणरूपें । १४। |
| नाना जळासी गंधी सुटे | l | तेथें पृथ्वीचें रूप प्रगटे। |
| दिवसेंदिवस जळ आटे | Į | पुढें पृथ्वी । १५। |
| पत्रें पुष्पें फळें येती | 1 | नाना जीव खाऊन जाती। |
| ते जीव मरतां जगती | l | नेमस्त होये । १६। |
| जितुका कांहीं जाला आकार | ı | तितुक्यास पृथ्वीचा आधार । |
| होती जाती प्राणीमात्र | ı | सेवट पृथ्वी । १७। |
| हें किती म्हणौन सांगावें | ı | विवेकें अवधेंचि जाणावें। |
| खांजणीभांजणीचें समजावें | ı | मूळ तैसें ।१८। |
| आप आळोन पृथ्वी जाली | 1 | पुन्हां आपींच विराली। |
| अग्नियोगें भस्म जाली | ı | म्हणोनियां ।१९। |
| आप जालें तेजापासुनी | 1 | पुढें तेजें घेतलें सोखनी। |
| तें तेज जालें वायोचेनी | ı | पुढें वायो झडपी ।२०। |
| वायो गगनीं निर्माण जाला | l | पुढें गगनींच विराला। |
| ऐसें खांजणीभांजणीला | l | बरें पाहा । २१। |
| जें जें जेथें निर्माण होतें | ŧ | तें तें तेथें लया जातें। |
| येणें रितीं पंचभूतें | 1 | नाश पावती । २२। |
| भूत म्हणिजे निर्माण जालें | ı | पुन्हां मागुतें निमालें। |
| पुढें शाश्वत उरलें | Ì | परब्रह्म तें ।२३। |
| तें परब्रह्म जों कलेना | 1 | तों जन्ममृत्य चुकेना। |
| चत्वार खाणी जीव नाना | t L | होणें घडे । २४। |
| जडाचे मळ तें चंचक | | |
| निश्चळासी नाहीं मूळ | | चचळाच मूळ त ानश्चळ। |
| ारा मूळ | | बर पाहा । २५। |

| पूर्वपक्ष म्हणिजे जालें | । सिद्धांत म्हणिजे निमालें। |
|-------------------------|-----------------------------------|
| पक्षातीत जें संचलें | । परब्रह्म तें । २६। |
| हें प्रचितीनें जाणावें | । विचारें खुणेसी बाणावें। |
| विचारेंविण सिणावें | । तेंचि मूर्खपणें ।२७। |
| ज्ञानी भिडेनें दडपला | । निश्चळ परब्रह्म कैंचें त्याला । |
| उगाच करितो गल्बला | । मायेमधें । २८। |
| माया निशेष नासली | |
| विचक्षणें विवरिली | । पाहिजे स्वयें । २९। |
| निशेष मायेचें निर्शन | । होतां आत्मनिवेदन । |
| वाच्यांश नाहीं विज्ञान | । कैसें जाणावें ।३०। |
| लोकांचे बोलीं जो लागला | । तो अनुमानेंच बुडाला । |
| याकारणें प्रत्ययाला | । पाहिलेंच पाहावें । ३१। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'शाश्वतब्रह्मनिरूपणनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक १५: समास ५ चंचळ लक्षण निरूपण

॥ श्रीराम ॥

दोघां ऐसीं तीन चालती । अगुणीं अष्टधा प्रकृती । अधोर्ध सांडून वर्तती । इंद्रफणी ऐसीं । १ । पणतोंडें भक्षितो पणजा । मूल बापास मारी वोजा । चुकाऱ्या गेला राजा । चौघां जणांचा । २ । देव देवाळयामधें लपाला । देऊळ पूजितां पावे त्याला । सृष्टिमधें ज्याला त्याला । ऐसेंचि आहे । ३ ।

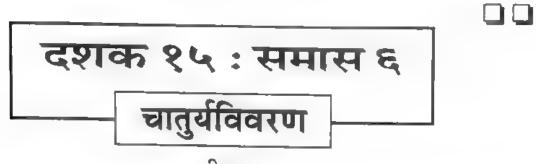
| दोनी नामें येकास पडिलीं । लोकीं नेमस्त कल्पिलीं । |
|---|
| हतेके प्रत्यय पाहिला । ता यकाच नाम । ४। |
| नाहीं पुरुष ना वनिता । लोकीं कल्पिलें तत्त्वता । |
| याचा बरा शोध घेतां । कांहींच नाहीं । ५। |
| ह्यी नदी पुरुष खळाळ । ऐसें बोलती सकळ। |
| विचार पाहातां निवळ । देह नाहीं । ६ । |
| आपण आपणास कळेना । पाहों जातां आकळेना । |
| काशास कांहींच मिळेना । उदंडपणें । ७ । |
| येकलाचि उदंड जाला । उदंडचि येकला पडिला। |
| आपणासी आपला । गल्बला सोसवेना । ८ । |
| येक असोन फुटी पडिली । फुटी असोन स्थिति येकली । विचित्र कळा पैसावली । प्राणीमात्रीं । ९ । |
| |
| वल्लीमधें जळ संचरे । कोरडेपणें हें वावरे । वोलेवांचून न थिरे । कांहीं केल्यां । १०। |
| झाडांमधें केलीं आळीं। झाडें धांवती निराळीं। |
| कित्येक झाडें अंतराळीं । उडोन जाती । ११। |
| भूमीपासून वेगळीं जालीं । परी तें नाहींत वाळलीं। |
| Turiting distant alless I all it district assessment |
| |
| निराळींच बळावलीं । जेथतेथें । १२। |
| निराळींच बळावलीं । जेथतेथें । १२। देवाकरितां चालती झाडें । देव नस्तां होती लांकडें। |
| निराळींच बळावलीं । जेथतेथें । १२। देवाकरितां चालती झाडें । देव नस्तां होती लांकडें। नीटचि आहे कुवाडें । सर्वथा नव्हे । १३। |
| निराळींच बळावलीं । जेथतेथें । १२। देवाकरितां चालती झाडें । देव नस्तां होती लांकडें। |
| निराळींच बळावलीं । जेथतेथें । १२। देवाकरितां चालती झाडें । देव नस्तां होती लांकडें । नीटिच आहे कुवाडें । सर्वथा नव्हे । १३। झाडापासून झाडें होती । तेहि अंतरीक्ष जाती । मुळानें भेदिली जगती । कदापि नाहीं । १४। झाडास झाडें खातपाणी । घालन पाळिलीं प्रतिदिनीं । |
| निराळींच बळावलीं । जेथतेथें । देव नस्तां होती लांकडें। वेविकिरतां चालती झाडें । देव नस्तां होती लांकडें। नीटिच आहे कुवाडें । सर्वथा नव्हे । १३। झाडापासून झाडें होती । तेहि अंतरीक्ष जाती। मुळानें भेदिली जगती। कदापि नाहीं ।१४। झाडास झाडें खातपाणी । घालून पाळिलीं प्रतिदिनीं। बोलकीं झाडें शब्दमथनीं । विचार घेती ।१५। |
| निराळींचे बळावलीं । जेथतेथें । १२। देवाकिरतां चालती झाडें । देव नस्तां होती लांकडें । नीटिच आहे कुवाडें । सर्वथा नव्हे । १३। झाडापासून झाडें होती । तेहि अंतरीक्ष जाती । मुळानें भेदिली जगती । कदापि नाहीं । १४। झाडास झाडें खातपाणी । घालून पाळिलीं प्रतिदिनीं । |

¹⁷⁸⁰ Dasbodh (Marathi)_Section_19_1_Front

| समजलें तरी उमजेना । उमजलें तरी समंजैना। |
|--|
| प्रत्ययेविण अनुमानेना । सकळ कांहीं । १७। |
| सर्वत्रांचा वडिल कोण । हेचि पाहावी वोळखण । |
| भेटे आपणास आपण । जगदांतरें । १८। |
| अंतरनिष्ठांची उंच कोटी । बाहेरमुऱ्याची संगती खोटी। |
| मूर्ख काये समजेल गोष्टी । शाहाणे जाणती । १९। |
| अंतरें राखतां राजी । भलत्यास भलताच नवाजी । |
| अंतरें न राखतां भाजी । मिळणार नाहीं ।२०। |
| |
| ऐसें वर्ततें प्रत्यक्ष । अलक्षीं लावावें लक्ष । |
| दक्षास भेटतां दक्ष । समाधान होतें । २१। |
| मनास मिळतां मन । पाहोन येती निरंजन । |
| चंचळचक्र उलंघून । पैलाड जाती । २२। |
| येकदा जाऊन पाहोन आले । मग तें सन्निध देखिलें। |
| |
| चर्मचक्षीं लक्षिलें। न वचे कदा । २३। |
| नाना शरीरीं चंचळ । अखंड करी चळवळ। |
| परब्रह्म तें निश्चळ । सर्वां ठाईं । २४। |
| चंचळ धांवे येकीकडे । वोस पडे दुसरेकडे । |
| चंचळ पुरे सर्वांकडे । हें तो घडेना । २५। |
| |
| चंचळ चंचळास पुरेना। आवधें चंचळ विवरेना। |
| निश्चळ अपार अनुमाना । कैसें येतें । २६। |
| गगनीं चालिली हवावी । कैसी पावेल पार पदवी । |
| जातां मधेंचि विझावी । हा स्वभावचि तिचा । २७। |
| मनोधर्म येकदेशी । कैसा आकळिल वस्तुसी । |
| निर्गुण सांडून अपेसी । सर्व ब्रह्म म्हणे । २८। |
| |
| |
| खरें सांडून खोटें पोर । नेणतें घेतें ।२९। |

ब्रह्मांडाचें माहाकारण । तेथून हें पंचीकर्ण । माहावाक्याचें विवर्ण । वेगळें असे ।३०। महत्तत्त्व महद्भूत । तोचि जाणावा भगवंत । उपासना हे समाप्त । येथून जाली ।३१। कर्म उपासना आणि ज्ञान । त्रिकांड वेद हें प्रमाण । ज्ञानाचें होतें विज्ञान । परब्रह्मीं ।३२।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'चंचळ लक्षण निरूपणनाम' समास पाचवा समाप्त.



॥ श्रीराम ॥

पीतापासून कृष्ण जालें । भूमंडळीं विस्तारलें । तेणेंविण उमजलें । हें तों घडेना आहे तरी स्वल्प लक्षण । सर्वत्रांची सांठवण । अद्धम आणी उत्तम गुण । तेथेंचि असती 7 1 महीसृत सरसाविला। सरसाऊन द्विधा केला। उभयेता मिळोन चालिला । कार्येभाग स्वेतास्वेतास गांठी पडतां । मधें कृष्ण मिश्रित होतां । इहलोकसार्थकता । होत आहे । ४। विवरतां याचा विचार । मूर्ख तोचि होये चतुर । सद्यप्रचित साक्षात्कार । परलोकींचा सकळांस जें मान्य । तेंचि होतसे सामान्य । सामान्यास अनन्य । होईजेत नाहीं । ६ ।

| उत्तम मध्यम कनिष्ठ रेखा । अदृष्टीची गुप्त रेखा । |
|---|
| चत्यार अनुभव मारिखा । होत नाहीं । ७। |
| चौटा पीकांने प्रवाहे । सांगती ते शाहाण की वेडे । |
| ऐकत्यानें घडे किं न घडे । ऐसें पाहावें । ८। |
| रेखा तितुकी पुसोन जाते । प्रत्यक्ष प्रत्यया येतें। |
| डोळेझांकणी करावी ते । कायेनिमित्य । १। |
| बहुतांचे बोलीं लागलें। तें प्राणी अनुमानीं बुडाले। |
| मुख्य निश्चये चुकलें। प्रत्ययाचा ।१०। |
| उदंडाचें उदंड ऐकावें । परी तें प्रत्ययें पाहावे। |
| खरेंखोटें निवडावें । अंतर्यामीं । ११। |
| कोणासी नव्हे म्हणों नये । समजावे अपाये उपाये । |
| प्रत्यये घ्यावा बहुत काये । बोलोनियां । १२। |
| माणुस हेंकाड आणी कच्चें। मान्य करावें तयाचें। येणें प्रकारें बहतांचें। अंतर राखावें । १३। |
| 3 |
| अंतरीं पीळ पेच वळसा । तोचि वाढवी बहुवसा। तरी मग शाहाणा कैसा । निवऊं नेणे ।१४। |
| वेडें करावें शाहाणें । तरीच जिणें श्लाघ्यवाणें। |
| उगेंच वादांग वाढविणें। हें मूर्खपण ।१५। |
| मिळोन जाऊन मेळवावें। पडी घेऊन उलथावें। |
| कांहींच कळों नेदावें । विवेकबळें ।१६। |
| दुसऱ्याचे चालणीं चालावें । दुसऱ्याचे बोलणीं बोलावें । |
| दुसऱ्याचे चालणा चालाव । दुसऱ्याच बालणा बालाव । १७। |
| जो दुसऱ्याच्या हितावरी । तो विपट कहिंच न करी । |
| मानत मानत विवरी । अंतर तयाचें |
| |
| आधीं अंतर हातीं घ्यावें । मग हळुहळु उकलावें । नाना उपायें न्यावें । परलोकासी |
| नाना उपाप न्याप । पर्राकाला |

| कळहो उठता चातुयोला | । तेथें गल्बलाचि जाला। । ठाव कैंचा ।२०। |
|---|--|
| उगीच करिती बडबड परस्थळ साधणें जड | । कठिण आहे । २१। |
| धके चपेटे सोसावे प्रस्तावोन परावे | । नीच शब्द साहात जावे। । आपले होती । २२। |
| प्रसंग जाणोनि बोलावें लीनता धरून जावें | । जाणपण कांहींच न घ्यावें । । जेथतेथें । २३। । पाहावीं घरांचीं घरें। |
| कुग्रामें अथवा नगरें भिक्षामिसें लहानथोरें बहुतीं कांहीं तरी सांपडे | । परीक्षून सोडावीं । २४। |
| उगेंच बैसतां कांहींच न घडे सावधपणें सर्व जाणावें | । फिर्णे विवरणें । २५। |
| जाऊं ये तिकडे जावें | |
| लेहोन देतां परोपकारें जैसें जयास पाहिजे | । सीमा सांडावी । २७। । तैसें तयास दीजे। |
| भूमंडळीं सकळांस मान्य | । सकळां मान्ये । २८।। तो म्हणों नये सामान्य। |
| | । तया पुरुषासी । २९। । चातुर्ये दिग्विजये करणें। । जेथतेथें । ३०। |
| ा तपात काव उपा | । अवसव |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'चातुर्यविवरणनाम' समास सहावा समाप्त.

दशक १५: समास ७

अधोर्धनिरूपण

| नाना विकाराच मूळ । त ह मूळमायाच कवळ। |
|--|
| अचंचळीं जे चंचळ । सूक्ष्मरुपें । १ |
| मूळमाया जाणीवेची । मुळींच्या मूळ संकल्पाची । |
| वोळखी शङ्गुणैश्वराची । येणेंचि न्यायें । २ |
| प्रकृतिपुरुष शिवशक्ती । आर्धनारीनटेश्वर म्हणती । |
| परी ते आवधी जगज्जोती । मूळ त्यासी । ३। |
| संकल्पाचें जें चळण । तेंचि वायोचें लक्षण। |
| वायो आणी त्रिगुण । आणी पंचभूतें । ४ । |
| पाहातां कोणीयेक वेल । त्याच्या मुळ्या असती खोल । |
| पत्रें पुष्पें फळें केवळ। मुळाचपासीं । ५। |
| याहिवेगळे नाना रंग। आकार विकार तरंग। |
| नाना स्वाद अंतरंग। मुळामध्यें । ६। |
| तेंचि मूळ फोडून पाहातां । कांहींच नाहीं वाटे आतां। |
| पुढें वाढतां । दिसों लागे । ७। |
| कड्यावरी वेल निघाला । अधोमुखें बळें चालिला । |
| फांपावोन पुढें आला । भूमंडळीं |
| तैसी मूळमाया जाण । पंचभूतें आणी त्रिगुण । |
| मुळीं आहेत हें प्रमाण । प्रत्ययें जाणावें । ९ । |
| अखंड वेल पुढें वाढला । नाना विकारीं शोभला । |
| विकारांचा विकार जाला । असंभाव्य । १०। |

| ना फडगरें फुटलीं । नाना जुंबाडें वाढलीं। |
|--|
| अनंत अत्रें चीं एउटी । सृष्टीमधें । ११। |
| कित्येक फळें तीं पडती । सर्वेचि आणीक निघती। |
| ऐसीं होती आणी जाती । सर्वकाळ ११२। |
| वेक वेलिच वाळले । पुन्हां तेथेंचि फुटले । ऐसे आले आणी गेले । कितीयेक । १३। |
| ऐसे आल आणा गल । कितायक । १३। |
| पानें झडती आणि फुटती । पुष्पें फळें तेणेंचि रीति । मध्यें जीव हे जगती । असंभाव्य । १४। |
| |
| |
| |
| मूळ खाणोन काढिलें । प्रत्ययेज्ञानें निर्मूळ केलें। तरी मग वाढणोंचि राहिलें । सकळ कांहीं । १६। |
| मुळीं बीज सेवटीं बीज । मध्यें जळरूप बीज । |
| ऐसा हा स्वभाव सहज । विस्तारला । १७। |
| · |
| मुळामधील ज्या गोष्टी । सांगताहे बीजसृष्टी । जेथील अंश तेथें कष्टी । न होतां जातो । १८। |
| |
| जातो येतो पुन्हां जातो । ऐसा प्रत्यावृत्ति करितो। पांतु आत्मज्ञानी जो तो । अन्यथान घडे ।१९। |
| |
| न घडे ऐसें जरी म्हणावें । तरी कांहींतरी लागे जाणावें। |
| अंतरींच परी ठावें। सकळांस कैंचें ।२०। |
| तेणोंसींच कार्यभाग करिती । परंतु तयास नेणती । |
| दिसेना ते काये करिती । बापुडे लोक । २१। |
| विषयभोग तेणेंचि घडे । तेणेंविण कांहींच न घडे । |
| 'र्यं सिडिन मध्यीं महत्त्वे । नेनम माहित्वे । १२२। |
| 3 minutes |
| शारीरभेदाचे विकार । वेगळाले ।२३। |
| |

| आंगोळीची आंगोळीस वेधना । येकीची येकीस कळेना | 1 |
|---|------|
| हात पाये अवेव नाना । येणेंचि न्यायें | 1881 |
| अवेवाचें अवेव नेणे । मा तो परांचें काये जाणे | |
| परांतर याकारणें । जाणवेना | 1241 |
| येकाचि उदकें सकळ वनस्पती । नाना अग्रेभेद दिसती | |
| खुडिली तितुकींच सुकती । येर ते टवटवीत | 1381 |
| येणेंचि न्यायें भेद जाला । कळेना येकाचें येकाला | |
| जाणपणें आत्मयाला । भेद नाहीं | 1201 |
| आत्मत्वीं भेद दिसे । देहप्रकृतीकरितां भागे | |
| तरी जाणतचि असे। बहुतेक | 1261 |
| देखोन ऐकोन जाणती । शाहाणे अंतर परीक्षिती | 1 |
| धूर्त ते अवधेंच समजती । गुप्तरूपें | 1281 |
| जो बहुतांचें पाळण करी । तो बहुतांचें अंतर विवरी | 1 |
| धूर्तपणें ठाऊकें करी । सकळ कांहीं | 1301 |
| आधीं मनोगत पाहाती । मग विश्वास घरिती | 1 |
| प्राणीमात्र येणें रिती । वर्तताहे | 1381 |
| स्मरणामार्गे विस्मरण । रोकडी प्रचित प्रमाण | |
| आपलें ठेवणें आपण । चुकताहे | |
| आपलेंच आपणा स्मरेना । बोलिलें तें आठवेना | |
| उठती अनंत कल्पना । ठाउक्या कैंच्या | |
| ऐसें हें चंचळ चक्र । कांहीं नीट कांहीं वक्र जाला रंक अथवा शक्र । तरी स्मरणास्मरणें | |
| | |
| स्मरण म्हणिजे देव । विस्मरण म्हणिजे दानव स्मरणविस्मरणें मानव । वर्तती आतां | |
| म्हणोनि देवी आणि दानवी । संपत्ति द्विधा जाणावी | |
| प्रचित मानसीं आणावी । विवेकेंसहित | 1361 |

| विवेकें विवेक जाणावा । आत्म्यानें आत्मा वोळखावा । | |
|--|-----|
| नेत्रें नेत्रचि पाहावा । दर्पणींचा । | १७६ |
| स्यूळें स्यूळ खाजवावें । सूक्ष्में सूक्ष्म समजावें । | |
| 17: 10 1: 00: | १८६ |
| विचारें जाणावा विचार । अंतरें जाणावें अंतर । | |
| अंतरें जाणावें परांतर । होउनियां । | 391 |
| स्मरणामाजी विस्मरण । हेंचि भेदाचें लक्षण । | |
| येकदेसी परिपूर्ण । होत नाहीं । | ४०। |
| पुढें सिके मागें विसरे । पुढें उजेडे मागें अंधारें। | |
| पुढें स्मरे मागें विस्मरे। सकळ कांहीं । | ४१। |
| तुर्या जाणावी स्मरण । सुषुप्ति जाणावी विस्मरण । | |
| उभयेता शरीरीं जाण । वर्तती आतां | ४२। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'अधोधीनरूपणनाम' समास सातवा समाप्त.

दशक १५: समास ८ सूक्ष्मजीवनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

रेणूहून सूक्ष्म किडे । त्यांचें आयुष्य निपटचि थोडें । युक्ति बुद्धि तेणेंचि पाडें। तयामध्यें 8 1 ऐसे नाना जीव असती। पाहों जातां न दिसती। अंत:कर्णपंचकाची स्थिती। तेथेंहि आहे त्यांपुरतें त्यांचें ज्ञान । विषये इंद्रियें समान । सूक्ष्म शरीरें विवरोन । पाहातो कोण 131

| त्यास मुंगी माहाथोर । नेणों चालिला कुंजर । मुंगीस मुताचा पूर । ऐसें बोलती । ४ । तें मुंगीसमान शरीरें । उदंड असती लाहानथोरें । समस्तांमध्यें जीवेश्वरें । वस्ति कीजे । ५ । |
|--|
| ऐसिया किड्यांचा संभार । उदंड दाटला विस्तार । अत्यंत साक्षपी जो नर । तो विवरोन पाहे । ६ । |
| नाना नक्षत्रीं नाना किडे । त्यांस भासती पर्वतायेवढे । आयुष्यहि तेणोंचि पाडें । उदंड वाटे । ७ । |
| पक्षायेवढें लाहान नाहीं। पक्षायेवढें थोर नाहीं। सर्प आणि मछ पाहीं। येणेंचि पाडें। ८। |
| मुंगीपासून थोरथोरें । चढती वाढती शरीरें । त्यांचीं निर्धारितां अंतरें । कळों येती । ९ । |
| नाना वर्ण नाना रंग । नाना जीवनाचे तरंग। येक सुरंग येक विरंग । किती म्हणौनि सांगावे । १०। |
| येकें सकुमारें येकें कठोरें। निर्माण केलीं जगदेश्वरें। सुवर्णासारिखीं शरीरें। दैदिप्यमानें ।११। |
| शरीरभेदें आहारभेदें। वाचाभेदें गुणभेदें। अंतरीं वसिजे अभेदें। येकरूपें । १२। |
| येक त्रासकें येक मारकें। पाहों जातां नाना कौतुकें। कितीयेक आमोलिकें। सृष्टीमध्यें । १३। |
| ऐसीं अवधीं विवरोन पाहे । ऐसा प्राणी कोण आहे । आपल्यापुरतें जाणोन राहे । किंचितमात्र । १४। |
| नवखंड हे वसुंधरा । सप्तसागरांचा फेरा । ब्रह्मांडाबाहेरील नीरा । कोण पाहे । १५। |
| त्या नीरामध्यें जीव असती । पाहों जातां असंख्याती । त्या विशाळ जीवांची स्थिती । कोण जाणे ।१६। |

| जेथें जीवन तेथें जीव । हा उत्पत्तीचा स्वभाव। | |
|---|---|
| पाहातां याचा अभिप्राव । उदंड असे । १७। | l |
| पृथ्वीगर्भी नाना नीरें। त्या नीरामध्यें शरीरें। | |
| नाना जिनस लाहानथोरें। कोण जाणे ।१८। | ļ |
| येक प्राणी अंतरिक्ष असती । तेंही नाहीं देखिली क्षिती। | |
| वरीच्यावरी उडोन जाती । पक्ष फुटल्यानंतरें ।१९ | l |
| नाना खेचरें आणि भूचरें । नाना वनचरें आणि जळचरें । | |
| चौऱ्यासि योनीप्रकारें । कोण जाणे । २०। | 1 |
| उष्ण तेज वेगळें करूनी । जेथें तेथें जीवयोनी । | |
| कल्पनेपासुनी होती प्राणी । कोण जाणे । २१ | |
| येक नाना सामर्थ्यं केलें । येक इच्छेपासून जाले । | |
| येक शब्दासरिसे पावले । श्रापदेह । २२ | l |
| येक देह बाजीगरीचे । येक देह वोडंबरीचे । | |
| येक देह देवतांचे । नाना प्रकारें । २३ | |
| येक क्रोधापासून जाले । येक तपापासून जन्मले । येक उश्रापें पावले । पूर्वदेह । २४। | |
| | ŀ |
| ऐसें भगवंताचें करणें । किती म्हणौन सांगणें। | |
| विचित्र मायेच्या गुणें । होत जातें । २५ | l |
| नाना अवधड करणी केली । कोणीं देखिली ना ऐकिली । | |
| विचित्र कळा समजली । पाहिजे सर्वे । २६ | |
| थोडें बहुत समजलें। पोटापुरती विद्या सिकलें। | |
| प्राणी उगेंच गर्वें गेलें। मी ज्ञाता म्हणौनी ।२७। | |
| ज्ञानी येक अंतरात्मा । सर्वांमधें सर्वात्मा । | _ |
| त्याचा कळावया महिमा । बुद्धि कैंची । २८ | l |
| सप्तकंचुक ब्रह्मांड। त्यांत सप्तकंचुक पिंड। | |
| त्या पिंडामधें उदंड । प्राणी असती । २९ | I |

| आपल्या देहांतील न कळे । मा तें अवधें कैंचें कळे | 1 |
|--|-----------|
| लोक होती उतावळे । अल्पज्ञानें | 1961 |
| अनुरेणाऐसे जिनस । त्यांचे आम्ही विराट पुरुष | 1 |
| आमचें उदंडचि आयुष्य । त्यांच्या हिसेबें | 1381 |
| त्यांच्या रिती त्यांचे दंडक । वर्तायाचे असती अनेक | 1 |
| जाणे सर्विह कौतुक । ऐसा कैंचा | 1351 |
| धन्य परमेश्वराची करणी । अनुमानेना अंतःकरणीं | 1 |
| उगीच अहंता पापिणी । वेढा लावी | 1881 |
| अहंता सांडून विवरणें । कित्येक देवाचें करणें | 1 |
| पाहातां मनुष्याचें जिणें। थोडें आहे | 1381 |
| थोडें जिणें अर्धपुडी काया। गर्व करिती रडाया | 1 |
| शरीर आवधें पडाया । वेळ नाहीं | 1341 |
| कुश्चीळ ठाईं जन्मलें । आणि कुश्चीळ रसेंचि वाढलें | 1 |
| यास म्हणती थोरलें। कोण्या हिसेबें | |
| कुशीळ आणि क्षणभंगुर । अखंड वेथा चिंतातुर लोक उगेच म्हणती थोर । वेडपणें | |
| | 1391 |
| काया माया दों दिसांची । आदिअंतीं अवघी ची ची झांकातापा करून उगीचि । थोरीव दाविती | |
| झांकिलें तरी उपंढर पडे । दुगंधी सुटे जिकडे तिकडे | 1361 |
| जो कोणी विवेकें पवाडे। तोचि धन्य | । ।३९। |
| उगेंचि कायसा तंडावें। मोडा अहंतेचे पुंडावे | 1 4 7 1 |
| विवेकें देवास धुंडावें । हें उत्तमोत्तम | 1801 |
| | |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सूक्ष्मजीवनिरूपणनाम' समास आठवा समाप्त.

दशक १५: समास ९

पिंडोत्पत्ती

| बौंखाणीचे प्राणी असती । अवघे उदकेंचि वाढती | 1 | | |
|--|---|-----|---|
| के होती आणी जाता । असख्यात | I | 8 | l |
| जारीर जालें। अंतरात्म्यासगट वळलें | | | |
| त्यांचे मूळ जों शोधिलें । तों उदकरूप | | 3 | 1 |
| शरताळींचीं शरीरें। पीळपीळों झिरपती नीरें | 1 | | |
| उभये रेतें येकत्रे । मिसळती रक्ती | 1 | 3 | 1 |
| अन्नरस देहरस । रक्तरेतें बांधे मूस | ١ | | |
| रमद्वयें सावकास । वाढों लागे | I | 8 | l |
| वाढतां वाढतां वाढलें। कोमळाचें कठीण जालें | 1 | | |
| पुढें उदक पैसावलें । नाना अवेवीं | | 4 | 1 |
| संपर्ण होतां बाहेरी पडे । भूमीस पडतां मग तें रडे | 1 | | |
| अवध्याचें अवधेंच घडे । ऐसें आहे | | Ę | ı |
| कुडी वाढे कुबुद्धि वाढे । मुळापासून अवधेंचि घडे | 1 | | |
| अवधेंचि मोडे आणि वाढे । देखतदेखतां | l | 9 | 1 |
| पुढें अविधयांचें शरीर । दिवसेंदिवस जालें थोर | | | |
| सुचों लागला विचार । कांहीं कांहीं | | 6 | 1 |
| फळामधें बीज आलें। तेणें न्यायें तेथें जालें | | | |
| ऐकतां देखतां उमजलें । सकळ कांहीं | | 9 | 1 |
| बीजें उन्ने ः े े | | • | • |
| बीजें उदकें अंकुरती । उदक नस्तां उडोन जाती येके ठाईं उदक माती । होतां बरें | | 0 - | |
| अंश उदक माती। होता बर | 1 | १० | 7 |

| -10:-1: 0 C-1 |
|---|
| दोहिंमधें असतां बीज । भिजोन अंकुर सहज। |
| वाढतां वाढतां पुढें रीझ । उदंड आहे |
| इकडे मुळ्या घावा घेती । तिकडे अग्रें हेलावती । |
| मुळें अत्र द्विद्या होती । बीजापासून । १२। |
| मुळ्या चालिल्या पाताळीं । अत्रे घांवती अंतराळीं । |
| नाना पत्रीं पुष्पीं फळीं। लगडलीं झाडें ।१३। |
| फळांवडिल सुमनें । सुमनांवडिल पानें । |
| पानांवडिल अनुसंघानें । काष्ठें आवधीं । १४। |
| काष्ठांवडिल मुळ्या बारिक । मुळ्यांवडिल तें उदक। |
| उदक आळोन कौतुक । भूमंडळाचें ।१५। |
| याची ऐसी आहे प्रचिती । तेव्हां सकळांवडिल जगती। |
| जगतीवडिल मूर्ती । आपोनारायेणाची । १६। |
| तयाविडल अग्निदेव । अग्नीविडल वायेदेव । |
| वायेदेवावडिल स्वभाव । अंतरात्म्याचा । १७। |
| सकळांवडिल अंतरात्मा । त्यासि नेणे तो दुरात्मा । |
| दुरात्मा म्हणिजे दुरी आत्मा । अंतरला तया ।१८। |
| जवळी असोन चुकलें। प्रत्ययास नाहीं सोकलें। |
| उगेंचि आलें आणी गेलें । देवाचकरितां । १९। |
| म्हणौन सकळांवडिल देव । त्यासी होतां अनन्यभाव। |
| मग हे प्रकृतीचा स्वभाव। पालटों लागे ।२०। |
| करी आपुला व्यासंग । कदापि नव्हे ध्यानभंग । |
| बोलणें चालणें वेंग । पडोंच नेदी । २१। |
| जें वडिलीं निर्माण केलें । तें पाहिजे पाहिलें। |
| काये काये वडिलीं केलें। किती पाहावें । २२। |
| तो वडिल जेथें चेतला। तोचि भाग्यपुरुष जाला। |
| अल्प चेतनें तयाला । अल्पभाग्य । २३। |

| तया नारायेणाला मनीं मग ते लक्ष्मी तयापासुनी | । अखंड आठवावें ध्यानीं । । जाईल कोठें । २४। |
|--|---|
| नारायेण असे विश्वीं याकारणें तोषवावी | । त्याची पूजा करीत जावी । । कोणीतरी काया । २५। |
| उपासना शोधून पाहिली न कळे लीळा परीक्षिली | । तों ते विश्वपाळिती जाली। । न वचे कोणा । २६। |
| | । आणीक दुसरा पाहे कोण । |
| उपासना सकळां ठाईं याकारणें ठाईं ठाईं | |
| ऐसी माझी उपासना | |
| देवाकरितां कर्में चालती | । देवाकरितां उपासक होती । । कितियेक ।३०। |
| नाना शास्त्रें नाना मतें नेमकांनेमक वेस्तावेस्तें | । देवचि बोलिला समस्तें। । कर्मानुसार । ३१। |
| अधिकारासारिखें चालावें | । त्यांत घेऊं ये तितुकें घ्यावें । । म्हणिजे बरें ।३२। |
| आवाहन विसर्जन पूर्वपक्ष जाला येथून | । ऐसेंचि बोलिलें विधान। । सिद्धांत पुढें ।३३। |
| वेदांत सिद्धांत धादांत पंचिकर्ण सांडून हित | । प्रचित प्रमाण नेमस्त । |
| | ·) (C.) · · · · · · · · · · · · · · · · · · |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'पिंडोत्पत्तीनाम' समास नववा समाप्त.

दशक १५: समास १०

सिद्धान्तनिरूपण

।। श्रीराम ।।

| गगना अवधेचि होत जातें। गगनाऐसें तगेना तें | ŀ | | |
|---|---|-----|---|
| निश्चळीं चंचळ नाना तें । येणेंचि न्यायें | 1 | 8 | 1 |
| अंधार दाटला बळें। वाटे गगन जालें काळें | ı | | |
| रविकिणें तें पिवळें। सर्वेचि वाटे | t | 5 | l |
| उदंड हिंव जेव्हां पडिलें। गमे गगन थंड जालें | ı | | |
| उष्ण झळेनें वाळलें। ऐसें वाटे | | ş | ŀ |
| ऐसें जें कांहीं वाटलें। तें तें जाले आणि गेलें | | | |
| आकाशासारिखें तगलें । हें तों घडेना | | 8 | ١ |
| उत्तम जाणीवेचा जिनस। समजोन पाहे सावकास | l | | |
| निराभास तें आकाश । भास मिथ्या | | ધ | ļ |
| उदक पसरे वायो पसरे । आत्मा अत्यंतचि पसरे | | | |
| तत्त्वें तत्त्व अवधेंचि पसरे । अंतर्यामीं | | Ę | l |
| चळतें आणि चळेना तें । अंतरीं अवधेंच कळतें | | | |
| विवरणेंचि निवळतें । प्राणीमात्रासी | | 9 | 1 |
| विवरतां विवरतां शेवटीं । निवृत्तिपदीं अखंड भेटी | | | |
| जालियानें तुटी । होणार नाहीं | ` | 6 | 1 |
| जेथें ज्ञानाचें होतें विज्ञान । आणि मनाचें होतें उन्मन | | | |
| तत्त्वनिर्शनीं अनन्य । विवेकें होतें | | 8 | 1 |
| विडिलांस शोधून पाहिलें । तों चंचळाचें निश्चळ जालें देवभक्तपण गेलें । तये ठाइं | | 9.0 | ı |
| यसम्बर्धायण याल । तथ ठाइ | - | १० | • |

| ठाव म्हणतां पदार्थ नाहीं । पदार्थमात्र मुळीं नाहीं । जैसें तैसें बोलों कांहीं । कळावया । ११। |
|---|
| |
| अज्ञानशक्ति निरसली । ज्ञानशक्ति मावळली । |
| वृत्तिसुन्यें कैसी जाली। स्थिती पाहा ।१२। |
| मुख्य शक्तिपात तो ऐसा । नाहीं चंचळाचा वळसा । |
| निवांतीं निवांत कैसा । निर्विकारी । १३। |
| चंचळाचीं विकार बालटें । तें चंचळचि जेथें आटे। |
| चंचळ निश्चळ घनवटे । हें तों घडेना । १४। |
| माहावाक्याचा विचारु । तेथें संन्याशास अधिकारु । |
| दैवीकृपेचा जो नरु । तोहि विवरोन पाहे ।१५। |
| संन्यासी म्हणिजे शडन्यासी । विचारवंत सर्व संन्यासी । |
| आपली करणी आपणासी । निश्चयेंसीं ।१६। |
| जगदीश वोळल्यावरी । तेथें कोण अनुमान करी । |
| आतां असो हें विचारी । विचार जाणती । १७। |
| · |
| जे जे विचारी समजले । ते ते निःसंग होऊन गेले। |
| देहाभिमानी जे उरले। ते देहाभिमान रक्षिती । १८। |
| लक्षीं बैसलें अलक्ष । उडोन गेला पूर्वपक्ष । |
| हेतुरूपें अंतरसाक्ष । तोहि मावळला । १९। |
| आकाश आणि पाताळ । दोनी नामें अंतराळ । |
| काढितां दृश्याचें चडळ । अखंड जालें ।२०। |
| तें तों अखंडचि आहे। मन उपाधी लक्षून पाहे। |
| उपाधीनिरासें साहे। शब्द कैसा ।२१। |
| |
| शब्दपर कल्पनेपर । मनबुद्धिअगोचर । |
| विचारें पाहावा विचार । अंतर्यामीं । २२। |
| पाहातां पाहातां कळों येतें । कळलें तितुकें वेर्थ जातें। |
| अवघड कैसें बोलावें तें । कोण्या प्रकारें । २३। |

| वाक्यार्थवाच्यांश शोधिला पुढें समजोन बोला शाश्वतास शोधीत गेला विकार सांडून मिळाला दु:स्वप्न उदंड देखिलें पुन्हां जरी तें आठविलें | । तेणें ज्ञानी साच जाला। । निर्विकारीं । जागें होतां लटिकें जालें। | २४। २५। |
|---|---|------------|
| प्रारब्धयोगें देह असे विचार अंतरीं बैसे बीज अग्नीनें भाजलें | । असे अथवा नासे। | १७। |
| ज्ञात्यास तैसें जालें विचारें निश्चळ जाली बुद्धि पाहातां विडलांची बुद्धि | । वासनाबीज । व । बुद्धिपासीं कार्यसिद्धि । | 281 |
| निश्चळास ध्यातो तो निश्चळ भूतास ध्यातो तो केवळ | । चंचळास ध्यातो तो चंचळ। । भूत होये । ३ । तयास हें कांहींच न करी। |) 0 |
| अंतरनिष्ठां बाजीगरी मिथ्या ऐसें कळों आलें अवधें भयेंचि उडालें | 1 तैसी माया 1 विचारानें सदृढ जालें। 1 अकस्मात | ३१। ३२। |
| उपासनेचें उत्तीर्ण व्हावें अंतरीं विवेकें उपजावें | । भक्तजनें वाढवावें।। सकळ कांहीं। | ३३। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सिद्धान्तनिरूपणनाम' समास दहावा समाप्त.

दशक पंधरावा समाप्त

दशक सोळावा : सप्ततिन्वयाचा

दशक १६: समास १

वाल्मीकिस्तवन

| धन्य धन्य तो वाल्मीक । ऋषीमाजी पुण्यश्लोक । |
|---|
| जयाचेन हा त्रिलोक्य । पावन जाला । १ । |
| भविष्य आणी शतकोटी । हें तों नाहीं देखिलें दृष्टी । |
| धांडोळितां सकळ सृष्टि । श्रुत नव्हे । २ । |
| भविष्याचें येक वचन । कदाचित जालें प्रमाण । |
| तरी आश्चिर्य मानिती जन । भूमंडळीचे । ३ । |
| नसतां रघुनाथ अवतार । नाहीं पाहिला शास्त्राधार । |
| रामकथेचा विस्तार । विस्तारिला जेणें । ४ । |
| ऐसा जयाचा वाग्विळास । ऐकोनी संतोषला महेश । |
| मग विभागिलें त्रयलोक्यास । शतकोटी रामायेण । ५ । |
| ज्याचें कवित्व शंकरें पाहिलें। इतरां न वचे अनुमानलें। |
| रामउपासकांसी जालें। परम समाधान । ६ । |
| ऋषी होते थोर थोर । बहुतीं केला कवित्वविचार । |
| परी वाल्मीकासारिखा कवेश्वर । न भूतो न भविष्यति । ७ । |
| पूर्वी केलीं दुष्ट कर्में। परी पावन जाला रामनामें। |
| नाम जपतां दृढ नेमें । पुण्यें सीमा सांडिली । ८ । |
| उफराटें नाम म्हणतां वाचें । पर्वत फुटले पापाचे । |
| ध्वज उभारले पुण्याचे । ब्रह्मांडावरुते । ९। |
| वाल्मीकें जेथें तप केलें । तें वन पुण्यपावन जालें। |
| शुष्क काष्ठीं अंकुर फुटले । तपोबळें जयाच्या । १०। |

| पूर्वी होता वाल्हाकोळी। जीवघातकी भूमंडळीं। |
|---|
| तोचि वंदिजे सकळीं। विबुधीं आणि ऋषेश्वरीं। ११। |
| उपरित आणि अनुताप । तेथें कैंचें उरेल पाप । |
| देह्यांततपें पुण्यरूप । दुसरा जन्म जाला । १२। |
| अनुतापें आसन घातलें । देह्याचें वारुळ जालें। |
| तेंचि नाम पुढें पडिलें । वाल्मीक ऐसें । १३। |
| वारुळास वाल्मीक बोलिजे । म्हणोनि वाल्मीक नाम साजे । |
| जयाच्या तीव्र तपें झिजे । हृदय तापसाचें ।१४। |
| जो तापसांमाजीं श्रेष्ठ । जो कवेश्वरांमधें वरिष्ठ । |
| जयाचें बोलणें पष्ट । निश्चयाचें । १५। |
| जो निष्ठावंतांचें मंडण। रघुनाथभक्तांचें भूषण। |
| |
| ज्याची घारणा असाघारण । सांधकां सदृढ करी ।१६। |
| ज्याची घारणा असाघारण । सांधकां सदृढ करी । १६। धन्य वाल्मीक ऋषेश्वर । समर्थाचा कवेश्वर । |
| ज्याची घारणा असाघारण । साधकां सदृढ करी ।१६। धन्य वाल्मीक ऋषेश्वर । समर्थाचा कवेश्वर । तयासी माझा नमस्कार । साष्टांगभावें ।१७। |
| ज्याची घारणा असाघारण । साधकां सदृढ करी ।१६। धन्य वाल्मीक ऋषेश्वर । समर्थाचा कवेश्वर । तयासी माझा नमस्कार । साष्टांगभावें ।१७। वाल्मीक ऋषी बोलिला नसता । तरी आम्हांसी कैंची रामकथा । |
| ज्याची घारणा असाघारण । सांधकां सदृढ करी ।१६। धन्य वाल्मीक ऋषेश्वर । समर्थाचा कवेश्वर । तयासी माझा नमस्कार । साष्टांगभावें ।१७। वाल्मीक ऋषी बोलिला नसता । तरी आम्हांसी कैंची रामकथा । म्हणोनियां समर्था । काय म्हणोनी वर्णावें ।१८। |
| ज्याची घारणा असाघारण । साधकां सदृढ करी ।१६। घन्य वाल्मीक ऋषेश्वर । समर्थाचा कवेश्वर । तयासी माझा नमस्कार । साष्टांगभावें ।१७। वाल्मीक ऋषी बोलिला नसता । तरी आम्हांसी कैंची रामकथा । म्हणोनियां समर्था । काय म्हणोनी वर्णावें ।१८। रघुनाथकीर्ति प्रगट केली । तेणें तयाची महिमा वाढली । |
| ज्याची घारणा असाघारण । सांघकां सदृढ करी ।१६। धन्य वाल्मीक ऋषेश्वर । समर्थाचा कवेश्वर । तयासी माझा नमस्कार । साष्टांगभावें ।१७। वाल्मीक ऋषी बोलिला नसता । तरी आम्हांसी कैंची रामकथा । म्हणोनियां समर्था । काय म्हणोनी वर्णावें ।१८। रघुनाथकीर्ति प्रगट केली । तेणें तयाची महिमा वाढली । भक्तमंडळी सुखी जाली । श्रवणमात्रें ।१९। |
| ज्याची घारणा असाघारण । साधकां सदृढ करी ।१६। धन्य वाल्मीक ऋषेश्वर । समर्थाचा कवेश्वर । तयासी माझा नमस्कार । साष्टांगभावें ।१७। वाल्मीक ऋषी बोलिला नसता । तरी आम्हांसी कैंची रामकथा । म्हणोनियां समर्था । काय म्हणोनी वर्णावें ।१८। रघुनाथकीर्ति प्रगट केली । तेणें तयाची महिमा वाढली । भक्तमंडळी सुखी जाली । श्रवणमात्रें ।१९। आपुला काळ सार्थक केला । रघुनाथकीर्तीमधें बुडाला । |
| ज्याची घारणा असाघारण । साधकां सदृढ करी ।१६। धन्य वाल्मीक ऋषेश्वर । समर्थाचा कवेश्वर । तयासी माझा नमस्कार । साष्टांगभावें ।१७। वाल्मीक ऋषी बोलिला नसता । तरी आम्हांसी कैंची रामकथा । म्हणोनियां समर्था । काय म्हणोनी वर्णावें ।१८। रघुनाथकीर्ति प्रगट केली । तेणें तयाची महिमा वाढली । भक्तमंडळी सुखी जाली । श्रवणमात्रें ।१९। आपुला काळ सार्थक केला । रघुनाथकीर्तीमधें बुडाला । भूमंडळीं उधरिला । बहुत लोक ।२०। |
| ज्याची घारणा असाघारण । साधकां सदृढ करी ।१६। धन्य वाल्मीक ऋषेश्वर । समर्थाचा कवेश्वर । तयासी माझा नमस्कार । साष्टांगभावें ।१७। वाल्मीक ऋषी बोलिला नसता । तरी आम्हांसी कैंची रामकथा । म्हणोनियां समर्था । काय म्हणोनी वर्णावें ।१८। रघुनाथकीर्ति प्रगट केली । तेणें तयाची महिमा वाढली । भक्तमंडळी सुखी जाली । श्रवणमात्रें ।१९। आपुला काळ सार्थक केला । रघुनाथकीर्तीमधें बुडाला । |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'वाल्मीकिस्तवननाम' समास पहिला समाप्त.

दशक १६: समास २

सूर्यस्तवन

| धन्य धन्य हा सूर्यवौंश । सकळ वौंशामधें विशेष । |
|---|
| मार्तंडमंडळाचा प्रकाश । फांकला भूमंडळीं । १ । |
| सोमाआंगीं आहे लांछन । पक्षा येका होय क्षीण । |
| रविकिर्ण फांकतां आपण । कळाहीन होये । २ । |
| याकारणें सूर्यापुढें। दुसरी साम्यता न घडे। |
| जयाच्या प्रकाशें उजेडे। प्राणीमात्रांसी । ३। |
| नाना धर्म नाना कर्में। उत्तमें मध्यमें अधमें। |
| सुगमें दुर्गमें नित्य नेमें । सृष्टीमधें चालती । ४ । |
| वेदशास्त्रें आणी पुराणें। मंत्र यंत्र नाना साधनें। |
| संध्या स्नान पूजाविधानें । सूर्येविण बापुडीं । ५ । |
| नाना योग नाना मतें । पाहों जातां असंख्यातें । |
| जाती आपुलाल्या पंथें । सूर्यउदय जालियां । ६ । |
| प्रपंचिक अथवा परमार्थिक । कार्य करणें कोणीयेक । |
| दिवसेंविण निरार्थक । सार्थक नव्हे । ७ । |
| सूर्याचें अधिष्ठान डोळे । डोळे नसतां सर्व आंघळे । |
| याकारणें कांहींच न चले। सूर्येविण । ८। |
| म्हणाल अंघ कवित्वें करिती । तरी हेहि सूर्याचीच गती। |
| थंड जालियां आपुली मती । मग मतिप्रकाश कैंचा । ९ । |
| उष्ण प्रकाश तो सूर्याचा । शीत प्रकाश तो चंद्राचा । |
| उष्णत्व नस्तां देह्याचा । घात होये । १०। |
| थाकारणें सूर्येविण । सहसा न चले कारण। श्रोते तम्ही विचश्रण । शोधन पाहा । ११। |
| श्रीते तुम्ही विचक्षण । शोधून पाहा । ११। |

| हरिहरांच्या अवतारमूर्ती । शिवशक्तीच्या अनंत वेक्ती । |
|--|
| यापूर्वी होता गभस्ती । आताहि आहे । १२। |
| जितुके संसारासी आले। तितुके सूर्याखालें वर्तले। |
| अंतीं देहे त्यागून गेले। प्रभाकरादेखतां ।१३। |
| चंद्र ऐलीकडे जाला । क्षीरसागरीं मथून काढिला । |
| चौदा रत्नांमधें आला। बंधु लक्षुमीचा ।१४। |
| विश्वचक्षु हा भास्कर । ऐसे जाणती लाहानथोर । |
| याकारणें दिवाकर । श्रेष्ठाहून श्रेष्ठ । १५। |
| अपार नभमार्ग क्रमणें । ऐसेंचि प्रत्यहीं येणें जाणें। |
| या लोकोपकाराकारणें । आज्ञा समर्थाची । १६। |
| दिवस नस्तां अंधकार । सर्वांसी नकळे सारासार । |
| दिवसेविण तश्कर । कां दिवाभीत पक्षी ।१७। |
| सूर्यापुढें आणिक दुसरें। कोण आणावें सामोरें। |
| तेजोरासी निधरिं। उपमेरहित ।१८। |
| ऐसा हा सविता सकळांचा । पूर्वज होय रघुनाथाचा । |
| अगाध महिमा मानवी वाचा । काये म्हणोनि वर्णावी ।१९। |
| रघुनाथवौंश पूर्वापर । येकाहूनि येक थोर । |
| मज मितमंदास हा विचार । काये कळे ।२०। |
| रघुनाथाचा समुदाव। तेथें गुंतला अंतर्भाव। |
| म्हणौनि वणिता महत्त्व । वाग्दुबळ मा ।२१। |
| सकळ दोषाचा परिहार। करितां सूर्यास नमस्कार। |
| स्फूर्ति वाढे निरंतर । सूर्यदर्शन घेतां । २२। |
| |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सूर्यस्तवननाम' समास दुसरा समाप्त.

दशक १६: समास ३

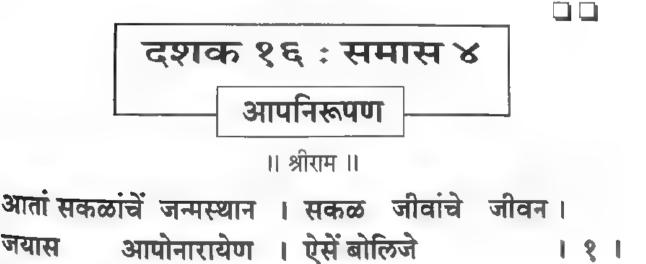
पृथ्वीस्तवन

| धन्य धन्य हे वसुमती । इचा महिमा सांगों किती | | | |
|---|---|----|----------|
| | | | |
| | | 8 | 1 |
| अंतरीक्ष राहाती जीव । तोहि पृथ्वीचा स्वभाव | l | | |
| देहे जड नस्तां जीव । कैसे तगती | ١ | 2 | l |
| जाळिती पोळिती कुदळिती । नांगरिती उकरिती खाणती | | | |
| मळ मूत्र तिजवरी करिती । आणी वमन | 1 | ş | ı |
| नासकें कुजकें जर्जर । पृथ्वीविण कैची थार | ı | | |
| देह्यांतकाळीं शरीर । तिजवरी पडे | • | 8 | 1 |
| बरें वाईट सकळ कांहीं । पृथ्वीविण थार नाहीं | | | |
| नाना धातु द्रव्य तेंही । भूमीचे पोटीं | | ų | 1 |
| येकास येक संव्हारिती । प्राणी भूमीवरी असती | l | | |
| भूमी सांडून जाती । कोणीकडे | 1 | Ę | 1 |
| गड कोठ पुरें पट्टणें। नाना देश कळती अटणें | ì | | |
| देव दानव मानव राहाणें । पृथ्वीवरी | | 9 | 1 |
| नाना रत्नें हिरे परीस । नाना धातु द्रव्यांश | 1 | | |
| गुप्त प्रगट कराव्यास । पृथ्वीविण नाहीं | 1 | 6 | 1 |
| मेरुमांदार हिमाचळ । नाना अष्टकुळाचळ | 1 | | |
| नाना पक्षी मछ व्याळ । भूमंडळीं | | 9 | 1 |
| नाना समुद्रापैलीकडे । भोंवतें आवर्णोदका कडें | 1 | | |
| असंभाव्य तुटले कडे । भूमंडळाचे | 1 | १० |) |

| | 200 |
|-------------------------------|---------------------------|
| त्यांमधें गुप्त विवरें। | लाहानथोरें अपारें। |
| तेथें निबिड अंधकारें। | वस्ती कीजे । ११। |
| आवर्णोदक तें अपार । | त्याचा कोण जाणे पार। |
| उदंड दाटले जळचर। | असंभाव्य मोठे । १२। |
| त्या जीवनास आधार पवन । | निबिड दाट आणी घन। |
| फुटों शकेना जीवन। | |
| त्या प्रभंजनासी आधार । | कठीणपणें अहंकार। |
| ऐसा त्या भूगोळाचा पार । | कोण जाणे । १४। |
| नाना पदार्थांच्या खाणी। | धातुरत्नांच्या दाटणी । |
| कल्पतरु चिंतामणी । | अमृतकुंडें । १५। |
| नाना दीपें नाना खंडें। | वसती उद्दसें उदंडें। |
| तेथें नाना जीवनाचीं बंडें। | वेगळालीं । १६। |
| मेरुभोंवते कडे कापले। | असंभाव्य कडोसें पडिलें। |
| निबिड तरु लागले । | |
| त्यासन्निध लोकालोक । | जेथें सूर्याचें फिरे चाक। |
| चंद्राद्रि द्रोणाद्रि मैनाक । | माहां गिरी । १८। |
| नाना देशीं पाषाणभेद । | नाना जिनसी मृत्तिकाभेद । |
| नाना विभूति छंद बंद । | नाना खाणी । १९। |
| बहुरत्न हे वसुंदरा । | ऐसा पदार्थ कैंचा दुसरा। |
| | जिकडे तिकडे ।२०। |
| अवघी पृथ्वी फिरोन पाहे । | ऐसा प्राणी कोण आहे। |
| दुजी तुळणा न साहे । | |
| नाना वल्ली नाना पिकें। | देसोदेसीं अनेकें । |
| पाहों जातां सारिख्यासारिखें। | येकिह नाहीं । २२। |

स्वर्ग मृत्य आणी पाताळें । अपूर्व रचिलीं तीन ताळें। पाताळलोकीं माहां व्याळें । वस्ती कीजे 1231 नाना वल्ली बीजांची खाणी । ते हे विशाळ धरणी। अभिनव कर्त्याची करणी । होऊन गेली 1881 गड कोठ नाना नगरें। पुरें पट्टणें मनोहरें। सकळां ठाईं जगदेश्वरें । वस्ती कीजे 1241 माहां बळी होऊन गेले । पृथ्वीवरी चौताळले । सामर्थ्यं निराळे राहिले । हें तों घडेना 1351 असंभाव्य हे जगती । जीव कितीयेक जाती । नाना अवतारपंगती । भूमंडळावरी । २७। सध्यां रोकडें प्रमाण । कांहीं करावा नलगे अनुमान । नाना प्रकारीचें जीवन । पृथ्वीचेनि आधारें । २८। कित्तेक भूमी माझी म्हणती । सेवटीं आपणचि मरोन जाती। कित्तेक काळ होतां जगती । जैसी तैसी 1531 ऐसा पृथ्वीचा महिमा । दुसरी काये द्यावी उपमा । ब्रह्मादिकांपासुनी आम्हां । आश्रयोचि आहे । ३०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'पृथ्वीस्तवननाम' समास तिसरा समाप्त.

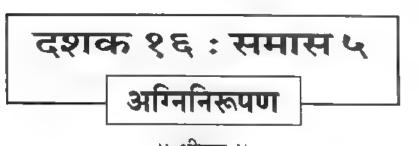


| पृथ्वीस आधार आवर्णोदक । सप्तसिंधूचें सिंधोदक । |
|---|
| नाना मेघीचें मेघोदक । भूमंडळीं चालिलें । २ । |
| नाना नद्या नाना देसीं । वाहात मिळाल्या सागरासी । |
| लाहानथोर पुण्यरासी । अगाध महिमे । ३ । |
| नद्या पर्वतींहून कोंसळल्या । नाना सांकडीमधें रिचवल्या । |
| धबाबां खळाळां चालिल्या । असंभाव्य |
| कूप बावी सरोवरें । उदंड तळीं थोरथोरें । |
| निर्मळें उचंबळती नीरें। नाना देसीं । ५। |
| गायेमुखें पाट जाती । नाना कालवे वाहाती। |
| नाना झऱ्या झिरपती । झरती नीरें । ६ । |
| डुरें विहीरे पाझर । पर्वत फुटोन वाहे नीर । |
| ऐसे उदकाचे प्रकार । भूमंडळीं । ७ । |
| जितुके गिरी तितुक्या धारा । कोंसळती भयंकरा। |
| पाभळ वाहाळा अपारा । उकळ्या सांडिती । ८। |
| भूमंडळीचें जळ आघवें। किती म्हणोनी सांगावें। |
| नाना कारंजीं आणावें । बांधोनी पाणी । ९ । |
| डोहो डवंकें खबाडीं टांकीं । नाना गिरिकंदरीं अनेकीं। |
| नाना जळें नाना लोकीं । वेगळालीं । १०। |
| तीर्थें येकाहून येक । माहांपवित्र पुण्यदायक । |
| अगाध महिमा शास्त्रकारक । बोलोनि गेले ।११। |
| नाना तीर्थांचीं पुण्योदकें । नाना स्थळोस्थळीं सीतळोदकें । |
| तैसींच नाना उष्णोदकें । ठाईं ठाईं । १२। |
| नाना वल्लीमधें जीवन । नाना फळीं फुलीं जीवन । |
| नाना कंदीं मुळीं जीवन । गुणकारकें ।१३। |

| क्षारोदकें सिंघोदकें । विषोदकें पीयूषोदकें । |
|--|
| नाना स्थळांतरीं उदकें । नाना गुणाचीं । १४। |
| नाना युक्षदंडाचे रस । नाना फळांचे नाना रस । |
| नाना प्रकारीचे गोरस । मद पारा गुळत्र ।१५। |
| नाना मुक्तफळांचें पाणी । नाना रत्नीं तळपे पाणी। |
| नाना शस्त्रामधें पाणी । नाना गुणाचें । १६। |
| शुक्लीत श्रोणीत लाळ मूत्र स्वेद । नाना उदकाचे नाना भेद । |
| विवरोन पाहातां विशद । होत जातें 1१७। |
| उदकाचे देह केवळ । उदकाचेंचि भूमंडळ । |
| चंद्रमंडळ । उदकाकरितां । १८। |
| क्षारसिंधु । सुरासिंधु आज्यसिंधु। |
| दिधिसिंधु युक्षरसिंधु । शुद्ध सिंधु उदकाचा ।१९। |
| ऐसें उदक विस्तारलें। मुळापासून सेवटा आलें। |
| मधेंहि ठाईं ठाईं उमटलें । ठाईं ठाईं गुप्त ।२०। |
| जे जे बीजीं मिश्रित जालें । तो तो स्वाद घेऊन उठिलें। |
| उसामधें गोडीस आलें। परम सुंदर ।२१। |
| उदकाचें बांधा हें शरीर । उदकचि पाहिजे तदनंतर । |
| उदकचि उत्पत्तिविस्तार । किती म्हणोनि सांगावा । २२। |
| उदक तारक उदक मारक । उदक नाना सौख्यदायेक। |
| पाहातां उदकाचा विवेक । अलोलीक आहे । २३। |
| भूमंडळीं घांवे नीर । नाना ध्वनी त्या सुंदर । |
| धबाबां धबाबां थोर । रिचवती धारा । २४। |
| ठाईं ठाईं डोहो तुंबती । विशाळ तळीं डबाबिती। |
| चबाबिती थबाबिती । कालवे पाट । २५। |

| येकी पाल | थ्या गंग | ा वाहाती | | उदकें सन्निधचि | असती | 1 |
|------------------------|----------|------------------|-----|---|--------------|---------------------|
| खळाळां | झरे | वाहाती | 1 | भूमीचे पोटीं | | 1561 |
| भूमीगर्भी | डोहो | भरले | ı | कोण्ही देखिले ना | ऐकिले | 1 |
| ठाई ठाई | झोवी | रे जाले | 1 | विदुल्यतांचे | | 1501 |
| पृथ्वीतळीं | पाणी | भरलें | 1 | पृथ्वीमधें पाणी | खेळे | 1 |
| पृथ्वीवरी | | प्रगटलें | 1 | उदंड पाणी | | 1281 |
| | | | | | | |
| स्वर्गमृत्यप | ाताळीं | | ł | येक नदी तीन | ताळीं | 1 |
| स्वर्गमृत्यप मेघोदक | | अंतराळीं | | येक नदी तीन वृष्टी करी | ताळीं | 1561 |
| | | अंतराळीं जीवन | 1 | _ | ताळीं दहन | 1561 |
| मेघोदक | | | 1 | वृष्टी करी | | 1561 |
| मेघोदक पृथ्वीचें | मूळ | जीवन | 1 1 | वृष्टी करी जीवनाचें मूळ थोराहून थोर | | 3 o 4 6 |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आपनिरूपणनाम' समास चौथा समाप्त.



॥ श्रीराम ॥

धन्य धन्य हा वैश्वानरु । होये रघुनाथाचा श्वशुरु । विश्वव्यापक विश्वंभरु । पिता जानकीचा । १ । ज्याच्या मुखें भगवंत भोक्ता । जो ऋषीचा फळदाता । तमहिमरोगहर्ता । भर्ता विश्वजनाचा । २ । नाना वर्ण नाना भेद । जीवमात्रांस अभेद । अभेद आणी परम शुध । ब्रह्मादिकांसी । ३ ।

| अग्नीकरितां सृष्टी चाले । अग्नीकरितां लोक घाले । |
|--|
| अग्नीकरितां सकळ ज्याले । लाहानथोर । ४ । |
| अग्नीनें आळलें भूमंडळ । लोकांस राहाव्या जालें स्थळ। |
| दीप दीपिका नाना ज्वाळ । जेथें तेथें । ५ । |
| पोटामधें जठराग्नी । तेणें क्षुघा लागे जनीं । |
| अग्नीकरितां भोजनीं । रुची येते । ६ । |
| अग्नी सर्वांगी व्यापक । उष्णें राहे कोणी येक । |
| उष्ण नस्तां सकळ लोक । मरोन जाती । ७ । |
| आधीं अग्नी मंद होतो । पुढें प्राणी तो नासतो । |
| ऐसा हा अनुभव येतो । प्राणिमात्रांसी । ८। |
| असतां अग्नीचें बळ । शत्रु जिंके तात्काळ। |
| अग्नी आहे तावत्काळ । जिणें आहे । ९। |
| नाना रस निर्माण जाले । अग्नीकरितां निपजले । |
| माहांरोगी आरोग्य जाले । निमिषमात्रें । १०। |
| सूर्य सकळांहून विशेष । सूर्याउपरी अग्नीप्रकाश । |
| रात्रभागीं लोक अग्नीस । साहें करिती । ११। |
| अंत्यजगृहींचा अग्नी आणिला । त्यास दोष नाहीं बोलिला । |
| सकळां गृहीं पवित्र जाला । वैश्वानरू । १२। |
| अग्नीहोत्र नाना याग । अग्नीकरितां होती सांग । |
| अग्नी त्रुप्त होतां मग । सुप्रसन्न होतो । १३। |
| देव दानव मानव । अग्नीकरितां चाले सर्व । |
| सकळ जनासी उपाव । अग्नी आहे । १४। |
| लग्नें करिती थोर थोर । नाना दारूचा प्रकार। |
| भूमंडळीं यात्रा थोर । दारूनें शोभती । १५। |

| नाना लोक रोगी होती | । उष्ण औषधें सेविती । |
|-------------------------|------------------------------|
| तेणें लोक आरोग्य होती | । वन्हीकरितां । १६। |
| ब्राह्मणास तनुमनु | । सूर्यदेव हुताशनु । |
| 3 3 | 1 A 1 A 1 |
| येतद्विषईं अनुमानु | |
| लोकामधें जठरानळु | । सागरीं आहे वडवानळु। |
| भूगोळाबाहेर आवर्णानळु | । शिवनेत्रीं विदुल्यता । १८। |
| कुपीपासून अग्नी होतो | । उंचदर्पणीं अग्नी निघतो । |
| काष्ठमंथनी प्रगटतो | । चकमकेनें ।१९। |
| अग्नी सकळां ठाईं आहे | । कठीण घिसणीं प्रगट होये। |
| आग्यासर्पं दग्ध होये | |
| | |
| | । अग्नीकरितां नाना अपाये । |
| विवेकेंविण सकळ होये | । निरार्थक |
| भूमंडळीं लाहानथोर | । सकळांस वन्हीचा आधार । |
| अग्नीमुखें परमेश्वर | । संतुष्ट होये । २२। |
| ऐसा अग्नीचा महिमा | । बोलिजे तितुकी उणी उपमा । |
| उत्तरोत्तर अगाध महिमा | । अग्नीपुरुषाचा । २३। |
| जीत असतां सुखी करी | । मेल्यां प्रेत भस्म करी। |
| सर्वभक्षकु त्याची थोरी | । काये म्हणोनी सांगावी । २४। |
| सकळ सृष्टीचा संव्हार | । प्रळय करी वैश्वानर। |
| वैश्वानरें पदार्थमात्र | । कांहींच उरेना |
| नाना होम उदंड करिती | । घरोघरीं वैशदेव चालती। |
| नाना क्षेत्रीं दीप जळती | । देवापासीं । २६। |
| दीपाराधनें निलांजने | । देव वोवाळिजे जने। |
| खरें खोटें निवडणें | |
| 111001 | 1 14-4 61111 |

अष्टधा प्रकुर्ती लोक तिन्ही । सकळ व्यापून राहिला वन्ही ।
अगाध महिमा वदनीं । किती म्हणोनी बोलावा ।२८।
च्यारी शृंगे त्रिपदीं जात । दोनी शिरें सप्त हात ।
ऐसा बोलिला शास्त्रार्थ । प्रचितीविण ।२९।
ऐसा वन्ही उष्णमूर्ती । तो मी बोलिलों येथामती ।
न्यून्यपूर्ण क्षमा श्रोतीं । केलें पाहिजे ।३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'अग्निनिरूपणनाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक १६: समास ६ वायोस्तवननिरूपण

॥ श्रीराम ॥

धन्य धन्य हा वायदेव । याचा विचित्र स्वभाव । वायोकिरतां सकळ जीव । वर्तती जनीं । १ । वायोकिरतां श्वासोश्वास । नाना विद्यांचा अभ्यास । वायोकिरतां शारीरास । चळण घडे । २ । चळण वळण प्रासारण । निरोधन आणी आकोचन । प्राण अपान व्यान उदान । समान वायु । ३ । नाग कूर्म कर्कश वायो । देवदत्त धनंजयो । ऐसे हे वायोचे स्वभावो । उदंड असती । ४ । वायो ब्रह्मांडीं प्रगटला । ब्रह्मांडदेवतांस पुरवला । तेथुनी पिंडीं प्रगटला । नाना गुणें । ५ । स्वर्गलोकीं सकळ देव । तैसेचि पुरुषार्थी दानव । मृत्यलोकींचे मानव । विख्यात राजे । ६ ।

| प्यामास ह |
|---|
| नरदेहीं नाना भेदे । अनंत भेदाचीं श्वापदें। वनचरें जळचरें आनंदें । क्रीडा करिती |
| त्या समस्तांमध्यें वायु खेळे । खेचरकुळ अवधें चळे। उठती वन्हीचे उबाळे । वायोकरितां |
| वायो मेघाचें भरण भरी । सर्वेच पिटून परतें सारी । वायो ऐसा कारबारी । दसरा नाहीं |
| परी ते आत्मयाची सत्ता । वर्ते शरीरी तत्वता। |
| गिरीहून दाट फौजा । मेघ उठिले लोककाजा। |
| चंद्र सूर्य नक्षत्रमाळा । ग्रहमंडळें मेघमाळा । ये ब्रह्मांडीं नाना कळा । वायोकरितां ।१२। |
| येकवटलें तें निवडेना । कालवलें तें वेगळें होयेना । तैसें हे बेंचाड नाना । केवी कळे ।१३। |
| तैसे जीव हे नीरा- । स्वरिसे पटनी । १४। |
| तया जळाच्या आधारे भगोला । नोचे आधार जळा। |
| तरी मग घेतला क्या अहारें फुगे शरीर। |
| येवहें शरीर हें -िलें। नेणों ब्रह्मांड पालथें घातलें। |
| वाराहें आपुलें दंतीं । पृथ्वी धरिली होती। तयाची येवढी शक्ती । वायुबळें |

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर । चौथा आपण जगदेश्वर । वायोस्वरूप विचार । विवेकी जाणती । १९। तेतिस कोटी सुरवर । अठ्यासी सहस्र ऋषेश्वर । सिंघ योगी भारेभार । वायोकरितां । 1201 नव कोटी कात्यायणी । छेपन कोटी च्यामुंडिणी । औट कोटी भूतखाणी । वायोरूपें ।२१। भूतें देवतें नाना शक्ती । वायोरूप त्यांच्या वेक्ती । नाना जीव नेणों किती। भूमंडळीं ।२२। पिंडी ब्रह्मांडीं पुरवला । बाहेर कंचुकास गेला । सकळां ठाई पुरवला । समर्थ वायु । २३। ऐसा हा समर्थ पवन । हनुमंत जयाचा नंदन । रघुनाथस्मरणीं तनमन । हनुमंताचें । २४। हनुमंत वायोचा प्रसीध । पित्यापुत्रांस नाहीं भेद । म्हणोनी दोघेहि अभेद । पुरुषार्थविषीं ।२५। हनुमंतास बोलिजे प्राणनाथ । येणें गुणें हा समर्थ। प्राणेविण सकळ वेर्थ । होत जातें ।२६। मागें मृत्य आला हनुमंता । तेव्हां वायो रोधला होता । सकळ देवांस आवस्ता । प्राणांत मांडलें । २७। देव सकळ मिळोन । केलें वायूचें स्तवन । वायो प्रसन्न होऊन । मोकळें केलें । २८। म्हणोनि प्रतापी थोर । हनुमंत ईश्वरी अवतार । याचा पुरुषार्थ सुरवर । पाहातचि राहिले । २९। देव कारागृहीं होते । हनुमंतें देखिलें अवचितें । संव्हार करूनी लंकेभोंवतें । विटंबून पाडिलें ।३०।

उसिणें घेतलें देवांचें । मूळ शोधिलें राक्षसांचें । मोठें कौतुक पुछ्यकेताचें । आश्चीर्य वाटे । ३१। रावण होता सिंह्यासनावरी । तेथें जाऊन ठोंसरे मारी । लंकेमधें निरोध करी । उदक कैचें । ३२। देवास आधार वाटला । मोठा पुरुषार्थ देखिला । मनामधें रघुनाथाला । करुणा करिती । ३३। दैत्य आवधे संव्हारिले । देव तत्काळ सोडिले । प्राणीमात्र सुखी जाले । त्रयलोक्यवासी । ३४।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'वायोस्तवननिरूपणनाम' समास सहावा समाप्त.

दशक १६: समास ७ महद्भूतिकपण

॥ श्रीराम ॥

पृथ्वीचें मूळ जीवन । जीवनाचें मूळ अग्न । अग्नीचें मूळ पवन । मागां निरोपिलें । १ । आतां ऐका पवनाचें मूळ । तो हा अंतरात्माचि केवळ । अत्यंतिच चंचळ । सकळांमधें । २ । तो येतो जातो दिसेना । स्थिर होऊन बैसेना । ज्याचें रूप अनुमानेना । वेदश्रुतींसी । ३ । मुळीं मुळींचे स्फूर्ण । तेंचि अंतरात्म्याचें लक्षण । जगदेश्वरापासून त्रिगुण । पुढें जाले । ४ । त्रिगुणापासून जालीं भूतें । पावलीं पष्ट दशेतें। त्या भूतांचें स्वरूप तें । विवेकें वोळखावें । ५ ।

| त्यामधें मुख्य आकाश । चौ भूतामधें विशेष। |
|---|
| याच्या प्रकाशें प्रकाश । सकळ कांहीं । ६ । |
| येक विष्णु महद्भूत । ऐसा भूतांचा संकेत । |
| परंतु याची प्रचीत । पाहिली पाहिजे । ७ । |
| विस्तारें बोलिलीं भूतें। त्या भूतामधें व्यापक तें। |
| विवरोन पाहातां येतें । प्रत्ययासी । ८ । |
| आत्मयाच्या चपळपणापुढें । वायो तें किती बापुडें। |
| आत्याचें चपळपण रोकडें । समजोन पाहावें । ९ । |
| आत्म्यावेगळें काम चालेना । आत्मा दिसेना ना आडळेना । |
| गुप्तरूपें विचार नाना । पाहोन सोडी ।१०। |
| पिंड ब्रह्मांड व्यापून धरिलें । नाना शरीरीं विळासलें। |
| विवेकी जनासी भासलें । जगदांतरीं । ११। |
| आत्म्याविण देहे चालती । हें तों न घडे कल्पांतीं। |
| अष्टधा प्रकुर्तीच्या वेक्ती । रूपासी आल्या ।१२। |
| मुळापासून सेवटवरी । सकळ कांहीं आत्माच करी । |
| आत्यापैलिकडे निर्विकारी । परब्रह्म तें ।१३। |
| आत्मा शरीरीं वर्ततो । इंद्रियेंग्राम चेष्टवितो । नाना सुखदुःखें भोगितो । देह्यात्मयोगें ।१४। |
| सप्तकंचुक हें ब्रह्मांड । त्यामधें सप्तकंचुक पिंड । |
| त्या पिंडामधें आत्मा जाड । विवेकें वोळखा । १५। |
| शब्द ऐकोन समजतो । समजोन प्रत्योत्तर देतो । |
| कठीण मृद सीतोष्ण जाणतो । त्वचेमधें ।१६। |
| नेत्रीं भरोनी पदार्थ पाहाणें । नाना पदार्थ परीक्षणें। |
| उंच नीच समजणें। मनामधें ।१७। |

| क्रूरदृष्टी सौम्यदृष्टी। कपटदृष्टी कृपादृष्टी। |
|---|
| नाना पकारीच्या उसी । के — |
| |
| जिव्हेमधें नाना स्वाद । निवडूं जाणे भेदाभेद । |
| जें जें जाणें तें तें विशद । करुनी बोले ।१९। |
| 1991 |
| उत्तम अन्नाचे परिमळ। नाना सुगंध परिमळ। |
| नाना फळांचे परिष्ण । । । तुराव पारमळ । |
| नाना फळांचे परिमळ । घ्राणइंद्रियें जाणे ।२०। |
| जिक्हेनें स्वाद घेणें बोलणें। पाणीइंद्रियें घेणें देणें। |
| पादइंद्रियें येणें जाणें। सर्वकाळ |
| न्य वर्ण जाण । सर्वकाळ ।२१। |
| शिस्नइदियें सरत्योग । गुनुनंतिने |
| मनेकक्ती गर्वा |
| मनेंकरूनी सकळ सांग । कल्पून पाहे ।२२। |
| ऐसे व्यापार परोपरी । त्रिभुवनीं येकलाचि करी । |
| त्याची तार्णातमा कोरी |
| त्याची वर्णावया थोरी । दुसरा नाहीं । २३। |
| त्यावण दुसरा कैचा । जे महिमा मांगाल — |
| व्याप आटोप आत्मयाचा । न भूतो न भविष्यति ।२४। |
| - अविष्यति । २४। |
| वादा विद्या चासष्टी कळा । धर्तपाणक्या उपन |
| वेद शास्त्र पराण जिल्हाका । नेन्ये |
| वेद शास्त्र पुराण जिव्हाळा । तेणेंविण कैचा । २५। |
| यहलाकाचा आचार । गरकोकी |
| उभय लोकींचा निर्धार । आत्माच करी । २६। |
| नाना करें - । आत्माच करा । १६। |
| नाना मतें नाना भेद। नाना संवाद वेवाद। |
| TOTAL METAL STREET |
| मख्य वल क्लां अत्माच करा ।२७। |
| मुख्य तत्व विस्तारलें । तेणें तयास रूप आणिलें । |
| ताथक जल । मतन्त्र कर्न |
| लिहिणें वाचणें पाठांतर करणें । पुसणें सांगणें अर्थ करणें । गाणें वाजवणें नाचारें । |
| गाणें कानकारं - रें पुसर्ण सांगणें अर्थ करणें। |
| गाणें वाजवणें नाचणें । आत्म्याचकरितां । २९। |
| |

| _ | । नाना दुःखें कष्टी होतो। |
|---|---|
| | । नानाप्रकारें । ३०। |
| वकलाच नाना दह धरा | । येकलाचि नटे परोपरी। । त्याविण नाहीं ।३१। |
| • | |
| | । बहुरूपी बहुसाक्षपी। |
| 9 | । आणी लंडी । ३२। |
| | । पाहे बहुविध तमासा। |
| दंपत्येविण कैसा | |
| | । पुरुषासी पाहिजे स्त्रीवेष । |
| ऐसा आवडीचा संतोष | |
| स्यूळाचें मूळ ते लिंग | । लिंगामधें हे प्रसंग। |
| येणें प्रकारें जग | । प्रत्यक्ष चाले । ३५। |
| पुरुषांचा जीव स्त्रियांची जीवी | । ऐसी होती उठाठेवी । |
| परी या सूक्ष्माची गोवी | । समजली पाहिजे । ३६। |
| स्थूळाकरितां वाटे भेद | । सूक्षमी आवर्धेचि अभेद। |
| ऐसें बोलणें निरुध | |
| बायकोनें बायकोस भोगिलें | । ऐसें नाही कीं घडलें। |
| | । ध्यान पुरुषाचें ।३८। |
| स्त्रीसी पुरुष पुरुषास वधु | । ऐसा आहे हा समंधु। |
| याकारणें सूक्ष्म संवादु | । सुक्ष्मीं च आहे । ३९। |
| पुरुषइछेमधें प्रकृती | । प्रकृतीमधें पुरुषवेक्ती । |
| | 1 Admitted Total |
| | |
| प्रकृतीपुरुष बोलती पिंडावरून ब्रह्मांड पाहावें | । येणें न्यायें ।४०। |

द्वैतइछा होते मुळीं । तरी ते आली भूमंडळीं । भूमंडळीं आणी मुळीं । रुजु पाहावें 1851 येथें मोठा जाला साक्षेप । फिटला श्रोतयांचा आक्षेप । जे प्रकृतीपुरुषाचें रूप । निवडोन गेलें । ४३।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'महद्भूतनिरूपणनाम' समास सातवा समाप्त.

दशक १६: समास ८ आत्मारामनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

नमूं गणपती मंगळमूर्ती । जयाचेनि मतिस्फूर्ती । लोक भजती स्तवन करिती । आत्मयाचें 181 नमूं वैखरी वागेश्वरी । अभ्यांतरीं प्रकाश करी । नाना भरोवरी विवरी । नाना विद्या सकळ जनामधें नाम । रामनाम उत्तमोत्तम । श्रम जाउनी विश्राम । चंद्रमौळी पावला । ३ । नामाचा महिमा थोर । रूप कैसें उत्तरोत्तर । परात्पर परमेश्वर । त्रयलोक्यधर्ता । ४ । आत्पाराम चहुंकडे । लोक वावडे जिकडे तिकडे । देहे पडे मृत्य घडे । आत्मयाविण । ५ । जीवात्मा शिवात्मा परमात्मा । जगदात्मा विश्वात्मा गुप्तात्मा । आत्मा अंतरात्मा सूक्ष्मात्मा । देवदानवमानवीं । ६ । सकळ मार्ग चालती बोलती । अवतारपंगतीची गती। आत्याकरितां होत जाती । ब्रह्मादिक

| नादरूप जोतीरूप। | साक्षरूप | सत्तारूप | l |
|--|---------------------------|--------------------|-----------|
| चैतन्यरूप सस्वरूप। | द्रष्टारूप जार् | णेजे | 151 |
| | पुरुषोत्तमु | _ | I |
| सर्वोत्तमु उत्तमोत्तमु । | त्रयलोक्यवा | सी | । ९ । |
| नाना खटपट आणी चटपट | | • | |
| आत्मा नस्तां सर्व सपाट | चहुंकडे | | १०। |
| आत्म्याविण वेडें कुडें आत्म्याविण थडें रोकडें | | | । ।११। |
| | | | |
| आत्मज्ञानी समजे मनीं भुवनीं अथवा त्रिभुवनीं | पाह जना उ आत्म्याविणें | वोस <u>वो</u> स | ।१२। |
| परम सुंदर आणि चतुर | जाणे सक | ळ सारासार | l |
| आत्म्याविण अंधकार | उभय लोकी | | 1 ६३। |
| | | नाना वेध | 1 |
| नाना खेद आणी आनंद | तेणेंचिकरित | Ť | ११४। |
| | | लवी अनेक | l |
| पाहावा नित्यानित्यविवेक | कोण्ही येकें | | १९५। |
| ज्याचे घरीं पद्मिणी नारी | आत्मा तंवर |) आवडी धरी | l |
| आत्मा गेलियां शरीरीं | तेज कैंचें | | ।१६। |
| आत्मा दिसेना ना भासेना | बाह्यात्कारे | अनुमानेना | l |
| नाना मनाच्या कल्पना | | | १९७। |
| आत्मा शरीरीं वास्तव्य करी | अवधें ब्रह्मां | ड विवरी भरी | l |
| वासना भावना परोपरीं | | नी सांगाव्या | |
| मनाच्या अनंत वृत्ती | अनंत क | त्पना धरिती | |
| अनंत प्राणी सांगों किती | | | ।१९। |
| अनंत राजकारणें घरणें | कुबुधी सु | षुधी विवरणें | 1 |
| कळों नेदणें चुकावणें | प्राणीमात्रांस | TÎ . | 1901 |

| येकास येक जपती टपती । येकास येक खपती लपती । |
|---|
| शत्रुपणाची स्थिती गती । चहुंकडे ।२१। |
| |
| कित्तेक भक्त प्रयोग्नी । प्रयोग्नी |
| 1 4 5 1 |
| येक आत्मा अनंत भेद । देहेपरत्वें घेती स्वाद। |
| आत्मा ठाईंचा अभेद । भेदिह धरी ।२३। |
| पुरुषास स्त्री पाहिजे । स्त्रीम गास्त्र करिके |
| नवरीस नवरी पाहिजे । हें तों घडेना । २४। |
| पुरुषाचा जीव स्त्रियांची जीवी । ऐसी नाहीं उठाठेवी। |
| |
| ज्या पणायाम चो अस्त । तथ भद आहे । २५। |
| ज्या प्राण्यास जो आहार । तेथेंचि होती तत्पर । |
| पशूचे आहारीं नर । अनादरें वर्तती । २६। |
| आहारभेद देहे भेद। गुप्त प्रगट उदंड भेद। |
| तसाच जाणीवा आनद् । वेगळाला । २७। |
| सिंधु भूगर्भींचीं नीरें। त्या नीरामधील शरीरें। |
| आवर्णोदकाचीं जळचरें। अत्यंत मोठीं । २८। |
| सूक्ष्म दृष्टीं आणितां मना । शरीराचा अंत लागेना । |
| ALUI MANIGUE SERVEN PAR 7 7 |
| देह्यात्मयोग क्योक्टर क्य |
| देह्यात्मयोग शोधून पाहिला । तेणें कांहीं अनुमानला । |
| स्थूळसूक्ष्माचा गलबला। गथागोवी ।३०। |
| गथागोवी उगवाव्याकारणें । केलीं नाना निरूपणें। |
| अंतरात्मा कृपाळुपणें । बहुतां मुखें बोलिला ।३१। |
| |

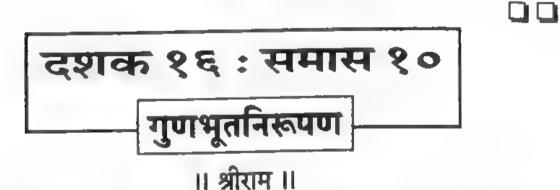
इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आत्मारामनिरूपणनाम' समास आठवा समाप्त.

नाना उपासनानिरूपण

| तथापी वृक्षांचेनि पडिपाडें। जीवन घालितां कोठें पडे। |
|---|
| ये गोष्टीचें सांकडें। कांहींच नाहीं । ११। |
| मागील आशंकेचें निर्शन । होतां जालें समाधान । |
| आतां गुणास निर्गुण । कैसें म्हणती । १२। |
| चंचळपणें विकारलें । सगुण ऐसें बोलिलें । |
| येर तें निर्गुण उरलें । गुणातीत । १३। |
| वक्ता म्हणे हा विचार । शोधून पाहावें सारासार। |
| अंतरीं राहातां निर्धार । नांव नाहीं । १४। |
| विवेकेंचि तो मुख्य राजा । आणि सेवकाचें नांव राजा। |
| याचा विचार समजा। वेवाद खोटा ।१५। |
| कल्पांतप्रळईं जें उरलें । तें निर्गुण ऐसें बोलिलें। |
| येर तें अवधेंचि जालें। मायेमधें ।१६। |
| सेना शाहार बाजार । नाना यात्रा लाहानथोर । |
| शब्द उठती अपार । कैसे निवडावे ।१७। |
| काळामधें प्रज्यन्यकाळ । मध्यरात्रीं होतां निवळ । |
| नाना जीव बोलती सकळ । कैसें निवडावें ।१८। |
| नाना देश भाषा मतें । भूमंडळीं असंख्यातें । बहु ऋषी बहु मतें । केली किल |
| न्धु ^{न्द्रपा} बहुँ मते । कैसीं निवहातीं । १९। |
| वृष्टि होतां च अंकुर । सृष्टीवरी निघती अपार । नाना तरु लहानशोर । कैसे किस्से |
| "" (ण्हानथार । केमे चित्रहाते । २०। |
| खेचरें भूचरें जळचरें । नाना प्रकारीचीं शरीरें। |
| १ विश्वावाचत्रे । कैसीं निवडावीं । ११। |
| उदंडनि अकारल । नानापरीं विकारले। |
| पैसावलें । कैसें निवडावें । २२! |

पोकळीमधें गंधर्वनगरें। नाना रंग लाहानथोरें। बहु वेक्ति बहु प्रकारें । कैसीं निवडावीं 1231 दिवसरजनीचे प्रकार । चांदिणें आणी अंधकार । विचार आणी अविचार । कैसा निवडावा 1581 विसर आणी आठवण । नेमस्त आणी बाष्कळपण । प्रचित आणी अनुमान । येणें रीतीं 1241 न्याय आणी अन्याय । होय आणी न होये । विवेकेंविण काये । उमजों जाणे 1741 कार्यकर्ता आणी निकामी । शूर आणी कुकर्मी। धर्मी आणी अधर्मी । कळला पाहिजे । २७। धनाढ्य आणी दिवाळखोर । साव आणी तश्कर। खरें खोटें हा विचार । कळला पाहिजे । २८। वरिष्ठ आणी कनिष्ठ । भ्रष्ट आणी अंतरनिष्ठ । सारासार विचार पष्ट । कळला पाहिजे

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'नाना उपासनानिरूपणनाम' समास नववा समाप्त.



पंचभूतें चाले जग । पंचभूतांची लगबग । पंचभूतें गेलियां मग । काये आहे । १ । श्रोता वक्तयास बोले । भूतांचे महिमे वाढविले । आणि त्रिगुण कोठें गेले । सांगा स्वामी । २ ।

| अंतरात्मा पांचवें भूत । त्रिगुण त्याचें अंगभूत । |
|--|
| सावध करूनियां चित्त । बरें पाहें । ३। |
| भूत म्हणिजे जितुकें जालें। त्रिगुण जाल्यांत आलें। |
| इतुकेन मूळ खंडलें । आशंकेचें । ४ । |
| भूतावेगळे कांहीं नाहीं । भूतजात हे सर्विहि । |
| येकावेगळे येक कांहीं । घडेचिना |
| आत्म्याचेनी जाला पवन । पवनाचेन प्रगटे अग्न । |
| अग्नीपासून जीवन । ऐसें बोलती । ६ । |
| जीवन आवधें डबाबिलें। तें रिवमंडलें आकरें। |
| वन्हावायचिन जालें। भूमंडळ |
| वन्ही वायो रवी नस्तां । तरी होते उदंह सीवक्तर । |
| त सातळतमध उष्णता । येणें न्यामें |
| आवधें वर्मासी वर्म केलें। तरीच येवढें फांपावलें। |
| परमात्र ।ततुक जाले । वर्माकरितां |
| आवर्षे सीतळचि असते । तरी गाणीया रूपे र |
| आवध्या उद्योचि करणते । सन्तर्भा निर्माणीय परामा जाता । |
| 977 |
| मग सहज चि देवें उचिन्नें । जन्म |
| स्तिमानी केन्स्र — |
| पुढ उद्या काहीं सीतन । |
| सीतकाळें कुछले |
| सीतकाळें कष्टले लोक । कपोंन गेलें वृक्षादिक। |
| त्यानिक्यें । वर्षाकाळाचें । १३। |
| सीतकाळ नायःकाळ । माध्यानकाळ सायंकाळ । |
| उष्णकाळ । निर्माण केले । १४। |

| ऐसें येकामार्गे येक केलें । विलेनें नेमस्त लाविलें। येणेंकरितां जगले । प्राणीमात्र । १५। |
|--|
| नाना रसें रोग कठीण । म्हणोनी औषधी केल्या निर्माण । परंतु सृष्टीचें विवरण । कळलें पाहिजे । १६। |
| देहेमूळ रक्त रेत । त्या आपाचे होती दात । ऐसीच भूमंडळीं प्रचित । नाना रत्नांची ।१७। |
| सकळांसी मूळ जीवन बांधा । जीवनें चाले सकळ धंदा। जीवनेंविण हरिगोविंदा । प्राणी कैंचे । १८। |
| जीवनाचें मुक्ताफळ । शुक्रासारिखें सुढाळ । हिरे माणिके इंद्रनीळ । ते जळें जाले । १९। |
| महिमा कोणाचा सांगावा । जाला कर्दमुचि आघवा। वेगळवेगळु निवडावा । कोण्या प्रकारें ।२०। |
| परंतु बोलिले कांहींयेक । मनास कळावया विवेक । जनामधें तार्किक लोक । समजती आघवें । २१। |
| आवधें समजलें हें घडेना । शास्त्रांशास्त्रांसी पडेना। अनुमानें निश्चय होयेना। कांहींयेक ।२२। |
| अगाध गुण भगवंताचे । शेष वर्णूं न शके वाचे । वेदविधी तेहि काचे । देवेंविण ।२३। |
| आत्माराम सकळां पाळी । आवधें त्रयलोक्य सांभाळी । तया येकेंविण धुळी । होये सर्वत्रांची । २४। |
| जेथें आत्माराम नाहीं । तेथें उरों न शके कांहीं । त्रयलोकीचे प्राणी सर्वही । प्रेतरूपी । २५। आत्मा नस्तां येती मरणें । आत्म्याविण कैंचें जिणें। |
| बरा विवेक समजणें। अंतर्यामीं । २६। |

समजणें जें विवेकाचें । तेंहि आत्म्याविण कैंचें ।
कोणीयेकें जगदीशाचें । भजन करावें । २७।
उपासना प्रगट जाली । तरी हे विचारणा कळली ।
याकारणें पाहिजे केली । विचारणा देवाची । २८।
उपासनेचा मोठा आश्रयो । उपासनेविण निराश्रयो ।
उदंड केलें तरी तो जयो । प्राप्त नाहीं । २९।
समर्थाची नाहीं पाठी । तयास भलताच कुटी ।
याकारणें उठाउठी । भजन करावें ।३०।
भजन साधन अभ्यास । येणें पाविजे परलोकास ।
दास म्हणे हा विश्वास । धरिला पाहिजे । ३१।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'गुणभूतनिरूपणनाम' समास दहावा समाप्त.

दशक सोळावा समाप्त

दशक सतरावा : प्रकृतिपुरुष

दशक १७: समास १

देवबळात्कार

| निश्चळ ब्रह्मीं चंचळ आत्मा । सकळां पर जो परमात्मा । |
|--|
| चैतन्य साक्षी ज्ञानात्मा । शङ्गुणैश्वरु |
| सकळ जगाचा ईश्वरु । म्हणौन नामें जगदेश्वरु । |
| तयापासून विस्तारः । विस्तारला । २ |
| शिवशक्ति जगदेश्वरी । प्रकृतिपुरुष परमेश्वरी । |
| मूळमाया गुणेश्वरी । गुणक्षोभिणी । ३ । |
| क्षेत्रज्ञ द्रष्टा कूटस्त साक्षी । अंतरात्मा सर्वलक्षी । |
| शृद्धसत्व महत्तत्त्व परीक्षी । जाणता साधु । ४ । |
| ब्रह्मा विष्णु महेश्वरु । नाना पिंडीं जीवेश्वरु । |
| त्यास भासती प्राणीमात्रु । लाहानथोर |
| देहदेउळामधें बैसला । न भजतां मारितो देहाला । |
| म्हणौनि त्याच्या भेणें तयाला । भजती लोक |
| जे वेळेसी भजन चुकलें। तें तें तेव्हां पछ्याडिलें। |
| आवडीनें भजों लागले । सकळ लाक |
| जें जें जेव्हां आक्षेपिलें। तें तें तत्काळचि दिधले। |
| त्रैलोक्य भजों लागलें। येण प्रकार |
| पांचा विषयांचा नैव्यद्य । जेव्हां पाहिजे तेव्हां सिद्ध । |
| ऐसें न करितां सद्य। रोग होती |

| जेणें काळें नैव्यद्य पावेना । तेणें काळें देव राहेना | r ı |
|---|---------|
| भाग्य वैभव पदार्थ नाना । सांडून जातो | 1801 |
| जातो तो कळों देईना । कोणास ठाउकें होयेना | . 1 |
| देवेविण अनुमानेना । कोणास देव | 1881 |
| देव पाहावयाकारणें । देउळें लागती पाहाणें | |
| कोठेंतरी देउळाच्या गुणें । देव प्रगटे | |
| देउळें म्हणिजे नाना शरीरें । तेथें राहिजे जीवेश्वरें | 1881 |
| नाना शरीरें नाना प्रकारें । अनंत भेदें | |
| चालतीं खोळवीं चेच्ये : १ | 1831 |
| चालतीं बोलतीं देउळें। त्यामधें राहिजे राउळें | 1 |
| जितुकों देउळें तितुकों सकळें । कळलीं पाहिजे | 1881 |
| मछ कूर्म वाराह देउळें। भूगोळ धरिला सर्वकाळें | 1 |
| पाराळ विक्राळ निमळ । कितियेक | 101.1 |
| कित्येक देउळीं सौख्य पाहे । भरतां आवधें सिंध आहे | 1 |
| परा रा सवकाळ न राहे । अणाश्रत | 1001 |
| अशाश्वताचा मस्तकमार्गा । ज्यानी के | |
| दिसेना तरी काये जालें धनी । तयासीच म्हणावें | |
| 6101 31913 | ।१७। |
| ऐसा अधोर्ध संवाद । होत जातो | 1 |
| सकळांचें गर्क की | 1881 |
| सकळांचें मूळ दिसेना । भव्य भारी आणी भासेना | l |
| | |
| · VIII(VI UITTIESE | |
| तुझी लीळा सर्वोत्तमा । तूंच जाणसी संसारा आलियाचे सार्थक । तूंच जाणसी | 1001 |
| संसारा आलियाचें सार्थक । जेथें नित्यानित्यविवेक | , , = , |
| | |
| in a tillala | 1581 |

मननसीळ लोकांपासीं । अखंड देव आहिर्निशीं । पाहातां त्यांच्या पूर्वसंचितासी । जोडा नाहीं 1221 अखंड योग म्हणोनि योगी । योग नाहीं तो वियोगी। वियोगी तोहि योगी। योगबळें ।२३। भल्यांची महिमा ऐसी । जे सन्मार्ग लावी लोकांसी । पोहणार असतां बुडतयासी । बुडों नेदावें । २४। स्थूळसूक्ष्मतत्वझाडा । पिंडब्रह्मांडाचा निवाडा । प्रचित पाहे ऐसा थोडा । भूमंडळीं 1241 वेदांतींचें पंचिकर्ण । अखंड तयाचें विवर्ण । माहांवाक्यें अंतःकरण । रहस्य पाहे । २६। ये पृथ्वीमधें विवेकी असती । धन्य तयांची संगती । श्रवणमात्रें पावती गती । प्राणीमात्र 1291 सत्संग आणी सत्शास्त्र श्रवण । अखंड होतसे विवर्ण । नाना सत्संग आणी उत्तम गुण । परोपकाराचे 1261 जे सद्कीर्तीचे पुरुष । ते परमेश्वराचे अंश । धर्मस्थापनेचा हव्यास । तेथेंचि वसे । २९। विशेष सारासारविचार । तेणें होय जग्गोद्धार । संगत्यागें निरंतर । होऊन गेले 1301

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'देवबळात्कारनाम' समास पहिला समाप्त.

शिवशक्तीनिरूपण

।। श्रीराम ।।

| ब्रह्म | निर्मळ | निश्चळ | ı | जैसें गगन अंतराळ। | | |
|--------------------|------------------|-------------------------|---|--|------------|--|
| निराकार | | केवळ | ι | 0 20 | १। | |
| अंतचि | नाहीं | तें अनंत | 1 | शाश्वत आणी सदोदित। | | |
| असंत | नव्हे | तें संत | 1 | सर्वकाळ । | २। | |
| परब्रह्म | तें | अविनाश | 1 | जैसें आकाश अवकाश। | | |
| | | | | | 3 1 | |
| | | | | तेथें स्मरण ना विस्मरण। | | |
| | | _ | | | ४ । | |
| तेथें चंद्र | सूर्य | ना पावक | l | नव्हे काळोखें ना प्रकाशक । | | |
| | | | | | 4 1 | |
| निश्चळी | स्मर | ण चेतलें | 1 | त्यास चैतन्य ऐसें कल्पिलें। | | |
| | | | | | ξl | |
| | | | | तैसी जाणिजे मूळमाया। | | |
| | | | | वेळ नाहीं । । | 9 I | |
| ानगुणा अर्धनारी | न्द्रेश <u>क</u> | गुणावकारु | 1 | तोचि शङ्गुणैश्वरु । | | |
| | | | | तयास म्हणिजे । त | ۱ ر ا | |
| तेथन | पढें ः | ाशपशाक्त नाना वेक्ती | 1 | मुळीं आहे सर्वशक्ति। निर्माण जाल्या | şΙ | |
| | | | | रजतमाचें गूढत्व। | • | |
| तयासि | म्हणि | जे महत्तत्व | i | | οl | |

मूळीं असेचिना वेक्ती । तेथें कैंची शिवशक्ती । ऐसें म्हणाल तरी चित्तीं । सावधान असावें ।११। ब्रह्मांडावरून पिंड । अथवा पिंडावरून ब्रह्मांड । अधोर्घ पाहातां निवाड । कळों येतो ।१२। बीज फोडून आणिलें मना । तेथें फळ तों दिसेना । वाढत वाढत पुढें नाना । फळें येती । १३। फळ फोडितां बीज दिसे । बीज फोडितां फळ नसे । तैसा विचार असे । पिंडब्रह्मांडीं । १४। नर नारी दोनी भेद । पिंडीं दिसती प्रसिद्ध । मुळीं नस्तां विशद । होतील कैसीं । १५। नाना बीजरूप कल्पना । तींत काये येक असेना । सूक्ष्म म्हणोनि भासेना । येकायेकी ।१६। स्थूळाचें मूळ ते वासना । ते वासना आधीं दिसेना। स्यूळावेगळें अनुमानेना । सकळ कांहीं ।१७। कल्पनेची सृष्टी केली । ऐसीं वेदशास्त्रें बोलिलीं । दिसेना म्हणोन मिथ्या केली । न पाहिजेत कीं ।१८। पडदा येका येका जन्माचा । तेथें विचार कळे कैंचा। परंतु गूढत्व हा नेमाचा । ठाव आहे ।१९। नाना पुरुषांचे जीव । नाना स्त्रियांचे जीव । येकचि परी देहस्वभाव । वेगळाले ।२०। नवरीस नवरी नलगे। ऐसा भेद दिसों लागे। पिंडावरून उमगे। ब्रह्मांडबीज ।२१। नवरीचें मन नवऱ्यावरी । नवऱ्याचें मन नवरीवरी । ऐसी वासनेची परी । मुळींहून पाहावी । २२। वासना मुळींची अभेद । देहसमंधें जाला भेद । तुटतां देहाचा समंघ । भेद गेला । २३।

नरनारींचे बीजकारण । शिवशक्तीमधें जाण। देह धरितां प्रमाण । कळों आलें । २४। नाना प्रीतीच्या वासना । येकाचें येकास कळेना । तिक्षण दृष्टीनें अनुमाना । कांहींसें येतें 1241 बाळकास वाढ्वी जननी । हें तों नव्हे पुरुषाचेनी । उपाधी वाढे जयेचेनी। ते हे वनिता । २६। वीट नाही कंटाळा नाहीं। आलस्य नाहीं त्रास नाहीं। इतुकी माया कोठेंचि नाहीं । मातेवेगळी 1291 नाना उपाधी वाढऊं जाणे। नाना मायेनें गोऊं जाणे। नाना प्रीति लाऊं जाणे । नाना प्रपंचाची । २८। पुरुषास स्त्रीचा विश्वास । स्त्रीस पुरुषाचा संतोष । परस्परें वासनेस । बांधोन टाकिलें । २९। ईश्वरें मोठें सूत्र केलें। मनुष्यमात्र गुंतोन राहिलें। लोभाचें गुंडाळें केलें। उगवेना ऐसें ।३०। ऐसी परस्परें आवडी । स्त्रीपुरुषांची माहां गोडी । हे मुळींहून चालिली रोकडी । विवेकें पाहावी 1381 मुळीं सूक्ष्म निर्माण जालें। पुढें पष्ट दिसोन आलें। उत्पतीचें कार्य चाले । उभयतांकरितां 1321 मुळीं शिवशक्ती खरें। पुढें जालीं वधुवरें। चौऱ्यासि लक्ष विस्तारें । विस्तारली जे ।३३। येथें शिवशक्तीचें रूप केलें । श्रोतीं मनास पाहिजे आणिलें । 1381 विवरितयांविण बोलिलें । तें वेर्थ जाणावें

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'शिवशक्तीनिरूपणनाम' समास दुसरा समाप्त.

श्रवणनिरूपण

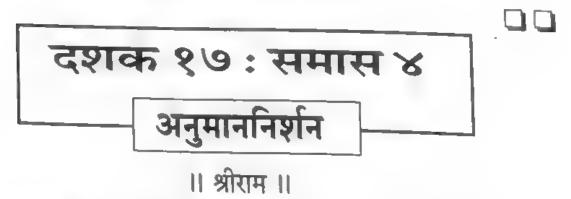
| थांबा थांबा ऐका ऐका। | |
|---|-------------------------------|
| सांगितलें तें ऐका । | सावधपणें । १ |
| श्रवणामध्ये सार श्रवण । | तें हें अध्यात्मनिरूपण। |
| 9 | ग्रन्थामधें विवरावें । २ |
| श्रवणमननाचा विचार । | निजध्यासें साक्षात्कार। |
| रोकडा मोक्षाचा उधार । | |
| नाना रत्नें परीक्षितां । | अथवा वजनें करितां। |
| उत्तम सोनें पुटीं घालितां । | सावधान असावें । ४। |
| नाना नाणीं मोजून घेणें । | नाना परीक्षा करणें। |
| विवेकी मनुष्यासी बोलणें। | सावधपणें । ५ । |
| -111 / | निवडून वेंचितां होतें मान्य । |
| GIG AIIIII | देव क्षोभे । ६। |
| येकांतीं नाजुक कारबार । | तेथें असावें अति तत्पर। |
| त्याच्या कोटिगणें विचार । | अध्यात्मग्रन्था । ७ । |
| काहिएया कथा गोष्टी पवाड । | नाना अवतारचरित्र वाड । |
| त्या समस्तांमध्यें जाड । | अध्यात्मावद्या । ७ । |
| गत गोष्टीस ऐकिलें । | तेणें काय हातास आला |
| म्हणती पुण्य प्राप्त जालें। | परी तें दिसेना कीं । १। |
| तैसें नव्हे अध्यात्मसार । कळतां अनुमानाचा संव्हार। | होत जातो ।१०। |
| marit Alifallalladi de Cara | |

| मोठे मोठे येऊन गेले। | आत्म्याकरितांच वर्तले। |
|------------------------------|---------------------------|
| त्या आत्म्याचा महिमा बोले । | ऐसा कवणु । ११ |
| युगानयुगें येकटा येक। | • |
| त्या आत्म्याचा विवेक । | पाहिलाच पाहावा । १२। |
| प्राणी आले येऊन गेले। | • |
| ते वर्तणुकेचें कथन केलें। | इछेसारिखें । १३। |
| जेथें आत्मा नाहीं दाट। | |
| आत्म्याविण बापुडें काष्ठ । | काये जाणे ।१४। |
| ऐसें वरिष्ठ आत्मज्ञान । | दुसरें नाहीं यासमान। |
| सृष्टीमधें विवेकी सज्जन । | तेचि हें जाणती । १५। |
| पृथ्वी आणी आप तेज । | |
| | तें वेगळेंचि राहिले । १६। |
| वायोपासून पैलिकडे । | |
| जवळीच आत्मा सांपडे । | |
| वायो आकाश गुणमाया । | |
| | कठिण आहे । १८। |
| मायादेवीच्या धांदली । | |
| समजला त्याची तुटली । | - |
| मूळमाया चौथा देहे। | |
| | धन्य तो साधु ।२०। |
| विचारें ऊर्घ चढती। | |
| | पदार्थज्ञानें । २१। |
| पदार्थ चांगले दिसती। | |
| अतो भ्रष्ट ततो भ्रष्ट होती । | लोक तेणें ।२२। |

8 1

याकारणें पदार्थज्ञान । नाना जिनसीचा अनुमान । सर्व सांडून निरंजन । धुंडीत जावें । २३। अष्टांग योग पिंडज्ञान । त्याहून थोर तत्वज्ञान । त्याहून थोर आत्मज्ञान । तें पाहिलें पाहिजे । २४। मूळमायेचे सेवटीं । हरिसंकल्प मुळीं उठी । उपासनायोगें मिठी । तेथें घातली पाहिजे । मग त्यापैलिकडे जाण । निखळ ब्रह्म निर्गुण । निर्मळ निश्चळ त्याची खूण । गगनासारिखी । २६। येथून तेथवरी दाटलें । प्राणीमात्रांस भेटलें । पदार्थमात्रीं लिगटलें । व्यापून आहे । २७। त्याऐसें नाहीं थोर । सूक्ष्माहून सूक्ष्म विचार । पिंडब्रह्मांडाचा संव्हार । होतां कळे 1261 अथवा पिंड ब्रह्मांड असतां । विवेकप्रळये पाहों जातां। शाश्वत कोण हें तत्त्वता । उमजों लागे । २९। करून अवधा तत्त्वझाडा । सारासाराचा निवाडा । सावधपणें ग्रन्थ सोडा । सुखिनावें 1301

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'श्रवणनिरूपणनाम' समास तिसरा समाप्त.



बहुत जनासी उपाये। वक्तयास पुसतां त्रासों नये। बोलतां बोलतां अन्वयें। सांडूं नये

| श्रोत्यानें आशंका घेतली । ते तत्काळ पाहिजे फेडिली | h | | |
|--|---|-----|---|
| स्वगोष्टीनें स्वगोष्टी पेंचली । ऐसें न व्हावें | | 2 | ١ |
| पुढें घरितां मागें पेंचला । मागें धरितां पुढें उडाला | ı | | |
| ऐसा सांपडतचि गेला । ठाई ठाई | | ş | 1 |
| पोहणारचि गुचक्या खातो । जनास कैसा काढूं पाहतो | 1 | | |
| आशय लोकांचा राहातो । ठाइं ठाइं | 1 | 8 | 1 |
| आपणिच बोलिला संव्हार । आपणिच बोलिजे सर्वसार | ١ | | |
| दुस्तर मायेचा पार । टाकिला पाहिजे | l | 4 | ١ |
| जें जें सूक्ष्म नाम घ्यावें । त्याचें रूप बिंबऊन द्यावें | ١ | | |
| | | É | 1 |
| ब्रह्म कसें मूळमाया कैसी । अष्ट्या प्रकृति शिवशक्ति कैसी | l | | |
| शड्गुणेश्वराची स्थिति कैसी । गुणसाम्याची | 1 | 9 | 1 |
| अर्धनारीनटेश्वर । प्रकृतिपुरुषाचा विचार | | | |
| नुगद्गाम्यमा अयुग्यस्य । अरुग्यस्य | • | 6 | 1 |
| पूर्वपक्ष कोठून कोठवरी । वाच्यांश लक्ष्यांशाची परी | | | |
| सूक्ष्म नाना विचार करी । धन्य तो साधु | | 9 | ŀ |
| नाना पाल्हाळीं पडेना। बोलिलेंचि बोलावेना। | 1 | | |
| मौन्यगर्भ अनुमाना । आणून सोडी | | 0 | 1 |
| घडी येक विमळ ब्रह्म । घडी येक म्हणे सर्व ब्रह्म | | | |
| द्रष्टा साक्षी सत्ता ब्रह्म । क्षण येक | | , X | ' |
| निश्चळ तेंचि जालें चंचळ । चंचळ तेंचि ब्रह्म केवळ। | | 2 | |
| जिल्ला विकास व | | ? | • |
| चळतें आणी निश्चळ । अवधें चैतन्यचि केवळ । रूपें वेगळालीं प्रांजळ । कदापी बोलवेना | | 3 | ı |
| नाजाला प्राज्ञ । कदापा बालवना | 3 | * | 7 |

| उगीच करी गथागोवी । तो लोकांस कैसें उगवी | l |
|--|------|
| नाना निश्चर्ये नाना गोवी । पडत जाते | 1881 |
| भ्रमास म्हणें परब्रह्म । परब्रह्मास म्हणे भ्रम | l |
| ज्ञातेपणाचा संभ्रम । बोलोन दावी | |
| घाली शास्त्रांची दडपण। प्रचितिविण निरूपण | l |
| gai olitii o ita | ।१६। |
| ज्ञात्यास आणि पदार्थिभिडा । तो काय बोलेल बापुडा | t |
| सारासाराचा निवाडा । जाला पाहिजे | |
| वैद्य मात्रेची स्तुती करी । मात्रा गुण कांहींच न करी | 1 |
| प्रचितिविण तैसी परी । ज्ञानाची जाली | |
| जेथें नाहीं सारासार । तेथें अवघा अंघकार | 1 |
| नाना परीक्षेचा विचार । राहिला तेथें | 1881 |
| पाप पुण्य स्वर्ग नर्क। विवेक आणि अविवेक | |
| सर्वब्रह्मीं काये एक । सांपडलें नाहीं | 1201 |
| पावन आणि तें पतन। दोनीं मानिलीं तत्समान | 1 |
| निश्चये आणि अनुमान । ब्रह्मरूप | 1561 |
| ब्रह्मरूप जालें आघवें । तेथें काये निवडावें | |
| आवधी साकरचि टाकावें । काये कोठें | |
| तैसें सार आणि असार । अवघा जाला येकंकार | |
| तेथें बळावला अविचार । विचार कैंचा | |
| वंद्य निंद्य येक जालें। तेथें काये हाता आलें | |
| उन्मत्त द्रव्यें जें भुललें। तें भलतेंच बोले | |
| तैसा अज्ञानभ्रमें भुलला। सर्व ब्रह्म म्हणोन बैसला | 1 |
| माहांपापी आणि भला । येकचि मानी | 1241 |

सर्वसंगपरित्याग । अव्हासवा विषयेभोग ।
दोघे येकचि मानितां मग । काये उरलें ।२६।
भेद ईश्वर करून गेला । त्याच्या बाचेन न वचे मोडिला ।
मुखामधें घांस घातला । तो अपानीं घालावा ।२७।
ज्या इंद्रियांस जो भोग । तो तो करी येथासांग ।
ईश्वराचें केलें जग । मोडितां उरेना ।२८।
अवधी भ्रांतीची भुटाटकी । प्रचितिविण गोष्टी लटकी ।
वेड लागलें जे बटकी । ते भलतेंचि बोले ।२९।
प्रत्ययज्ञाता सावधान । त्याचें ऐकावें निरूपण ।
आत्मसाक्षात्काराची खूण । तत्काळ बाणे ।३०।
वेडें वांकडें जाणावें । आंधळें पाउलीं वोळखावें ।
बाङ्कळ बोलणें सांडावें । वमक जैसें ।३१।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'अनुमाननिर्शननाम' समास चौथा समाप्त.

दशक १७: समास ५

॥ श्रीराम ॥

येकवीस सहस्र सासें जपा । नेमून गेली ते अजपा । विचार पाहातां सोपा । सकळ कांहीं । १ । मुखीं नासिकीं असिजे प्राणें । तयास अखंड येणें जाणें । याचा विचार पाहाणें । सूक्ष्मदृष्टीं । २ । मुळीं पाहातां येक स्वर । त्याचा तार मंद्र घोर । त्या घोराहुन सूक्ष्म विचार । अजपाचा । ३ ।

| सरिगमपदनिस । | सरिं मात्रुका सायास। |
|-----------------------------|--------------------------|
| प्रथम स्वरें मात्रुकांस । | म्हणोन पाहावें । ४ । |
| परेवाचेहून अर्ते । | आणि पश्यंतीखालतें। |
| स्वराचें जन्मस्थान तें। | तेथून उठे । ५ । |
| येकांतीं उगेंच बैसावें। | तेथें हें समजोन पाहावें। |
| अखंड घ्यावें सांडावें। | प्रभंजनासी । ६ । |
| येकांतीं मौन्य धरून बैसे । | |
| सोहं सोहं ऐसे। | शब्द होती । ७। |
| उच्चारेतिमा जे शब्द । | ते जाणावे सहजशब्द। |
| प्रत्यया येती परंतु नाद । | कांहींच नाहीं । ८ । |
| ते शब्द सांडून बैसला । | तो मौनी म्हणावा भला। |
| योगाभ्यासाचा गल्बला । | याकारणें १९। |
| येकांतीं मौन्य धरून बैसला । | तेथें कोण शब्द जाला। |
| सोहं ऐसा भासला । | अंतर्यामीं । १०। |
| घरितां सो सांडितां हं । | अखंड चाले सोहं सोहं। |
| याचा विचार पाहातां बहु । | विस्तारला । ११। |
| देहधारक तितका प्राणी । | श्वेतजउद्भिजादिक खाणी। |
| स्वासोस्वास नस्तां प्राणी । | कैसे जिती । १२। |
| ऐसी हे अजपा सकळांसी । | परंतु कळे जाणत्यासी। |
| सहज सांडून सायासीं । | पडोंच नये ।१३। |
| सहज देव असतिच असे। | सायासें देव फुटे नासे। |
| नासिवंत देवास विश्वासे । | ऐसा कवणु । १४। |
| जगदांतराचें दर्शन । | सहज घडे अखंड ध्यान। |
| आत्पइछेनें जन। | सकळ वर्तती ।१५। |
| | |

| आत्मयाचें समाधान । | घडे तैसेंचि आशन। |
|-----------------------------|-----------------------------|
| सांडलें फिटलें समर्पण। | । तयासीच होये । १६। |
| अग्नपुरुष पोटीं वसती । | • |
| लोक आज्ञेमधें असती। | । आत्मयाचे । १७। |
| सहज देवजपध्यानें। | |
| सहज घडे तें भगवात्रें। | । मान्य कीजे । १८। |
| सहज समजायाकारणें। | |
| परंतु येकायेकीं समजणें। | |
| द्रव्य चुकतें दिरद्र येतें। | । तळीं लक्ष्मी वरी वर्ततें। |
| | । ठाउकें नाहीं ।२०। |
| तळघरामधें उदंड द्रव्य । | |
| स्तंभीं तुळवटीं द्रव्य । | |
| लक्ष्मीमध्यें करंटा नांदे। | ** |
| नवल केलें परमानंदें। | _ |
| येक पाहाती येक खाती। | |
| प्रवृत्ति अथवा निवृत्ति । | |
| ज्याची क्यारी ने | । लक्ष्मीस काये उणें। |
| ज्याची लक्ष्मी तो आपणें। | । बळकट घरावा । २४। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'अजपानिरूपणनाम' समास पाचवा समाप्त.

देहात्मनिरूपण

| आत्मा देहामध्यें असतो | 1 | नाना सुखदुखें भोगितो | ١ | | |
|--------------------------|---|--------------------------|---|----|---|
| सेवटीं शरीर सांडून जातो | 1 | येकायेकीं | | 8 | l |
| शरीरीं शक्ति तारुण्यपणीं | 1 | नाना सुखें भोगी प्राणी। | | | |
| अशक्त होतां वृद्धपणीं | l | दुःखें भोगी | l | ? | I |
| मरावेना ऐसी आवडी | 1 | हातपाये खोडून प्राण सोडी | ì | | |
| नाना दुःखें अवघडी | 1 | वृद्धपणीं | 1 | 3 | 1 |
| देहआत्मयांची संगती | 1 | कांहींयेक सुख भोगिती | 1 | | |
| चर्फडचर्फड्न जाती | 1 | देहांतकाळीं | ŀ | 8 | l |
| ऐसा आत्मा दुःखदायेक | 1 | येकांचे प्राण घेती येक | i | | |
| आणी सेवटीं निरार्थक | - | काहीच नाही | • | ų | 1 |
| ऐसा दों दिसांचा भ्रम | 1 | त्यास म्हणती परब्रह्म | 1 | | |
| नाना दुःखाचा संभ्रम | 1 | मानून घेतला | ı | E | ١ |
| द:खी होऊन चर्फडन गेले | 1 | तेथें कोण समाधान जालें | l | | |
| कांहींयेक सुख भोगिलें | 1 | तो सवीच दुःख | ı | 9 | 1 |
| जन्मदारभ्य आठवावें | 1 | म्हणिजे अवधें पडेल ठावें | l | | |
| नाना दुःख मोजावें | 1 | काये म्हणोनी | 1 | 6 | ١ |
| ऐसी आत्मयाची संगती | 1 | नाना दुःखें प्राप्त होती | 1 | | |
| दैन्यवाणे होऊन जाती | | | | 9 | l |
| कांहीं आनंद कांहीं खेद | 1 | जन्मवरी पडिला समंध | | | |
| नाना प्रकारीं विरुद्ध | | | | १० | |

| निद्राकाळीं ढेकुण पिसा । | | 1 |
|--|----------------------|------|
| नाना उपायें वळसा । | त्यांस होये | 1881 |
| भोजनकाळीं माश्या येती । | | 1 |
| पुढें त्यांचीहि फजिती। | मार्जरें करिती | 1851 |
| वा चामवा गोंचिड । | गांधेलें कानटें उदंड | 1 |
| येकास येक चर्फड । | | |
| विंचु सर्प वाग रिसें । | • | |
| परस्परें सुखसंतोषें। | | |
| चौऱ्यासी लक्ष उत्पत्ती । | | |
| नाना पीडा दुःखणी किती। | | |
| ऐसी अंतरात्म्याची करणी। | | |
| परस्परें संव्हारणी। | | |
| अखंड रडती चर्फडिती। | | |
| मूर्ख प्राणी त्यास म्हणती । | | 1801 |
| परब्रह्म जाणार नाहीं। | _ | |
| स्तुति निंदा दोनी नाहीं। | | ।१८। |
| उदंड सिव्या दिधल्या। | - | |
| विचार पाहातां प्रत्यया आल्या । | | ११९। |
| धगडीचा बटकीचा लवंडीचा। | _ | |
| ऐसा हिशेब सिव्यांचा। | | |
| इतुकें परब्रह्मीं लागेना । | | |
| तडातोडीचें ज्ञान मानेना । | | 1281 |
| सृष्टीमधें सकळ जीव । याकारणें ठायाठाव । | | 1221 |
| ा वायाठाव | निर्मिला देवें | 141. |

उदंड लोक बाजारीचे । जें जें आलें तें तें वेंचे । उत्तम तितुके भाग्याचे । लोक घेती 1531 येणेंचि न्यायें अन्न वसन । येणेंचि न्यायें देवतार्चन । येणेंचि न्यायें ब्रह्मज्ञान । प्राप्तव्यासारिखें । २४। अवघेच लोक सुखी असती । संसार गोड करून नेती। माहाराजे वैभव भोगिती । तें करंट्यास कैंचें ।२५। परंतु अंतीं नाना दुःखें । तेथें होतें सगट सारिखें। पूर्वी भोगिलीं नाना सुखें । अंतीं दुःख सोसवेना । २६। कठिण दुःख सोसवेना । प्राण शरीर सोडिना । मृत्यदुःख सगट जना । कासाविस करी । २७। नाना अवेवहीन जालें । तैसेंचि पाहिजे वर्तलें । प्राणीं अंतकाळीं गेलें । कासाविस होउनी । २८। रूप लावण्य अवधें जातें । शरीरसामर्थ्य अवधें राहातें । कोणी नस्तां मरतें । आपद आपदों । २९। अंतकाळ दैन्य दीन । सकळिकांस तत्समान । ऐसें चंचळ अवलक्षण । दुःखकारी ।३०। भोगून अभोक्ता म्हणती । हे तों अवघीच फजिती। लोक उगेच बोलती । पाहिल्याविण ।३१। अंतकाळ आहे कठिण । शेरीर सोडिना प्राण । बराड्यासारिखें लक्षण । अंतकाळीं ।३२।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'देहात्मनिरूपणनाम' समास सहावा समाप्त.

जगज्जीवननिरूपण

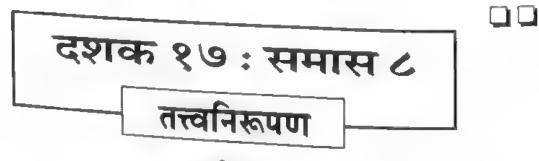
| मुळीं उदक निवळ असतें | । नाना वल्लीमधें जातें। | |
|-------------------------|-------------------------------|---|
| संगदोषें तैसें होतें | । आंब्ल तिक्षण कडवट । १ | 1 |
| आत्मा आत्मपणें असतो | । देहसंगें विकारतो। | |
| साभिमानें भरीं भरतो | | 1 |
| बरी संगती सांपडली | । जैसी उंसास गोडी आली। | |
| विषवल्ली फांपावली | । घातकी प्राणी । ३ | ŀ |
| अठराभार वनस्पती | । गुण सांगावे ते किती। | |
| नाना देहाचे संगती | । आत्मयास होये । ४ | 1 |
| त्यामधें कोणी भले | । ते संतसंगें निघाले। | |
| देहाभिमान सांडून गेले | | 1 |
| उदकाचा नाशचि होतो | । आत्मा विवेकें निघतो। | |
| ऐसा आहे प्रत्यय तो | । विवेकें पाहा । ६ | ١ |
| ज्यास स्वहितचि करणें | । त्यास किती म्हणौन सांगणें। | |
| ह ज्याचे त्याने समजणे | । सकळ कांहीं । ७ | ı |
| आपला आपण करी कुडावा | । तो आपला मित्र जाणावा । | |
| आपला नाश करी तो समजावा | । वैरी ऐसा | l |
| आपलें आपण अन्हित करावें | । त्यास आडवें कोणें निघावें । | |
| येकांतीं जाऊन जीवें | । मारी आपणासी । ९ | 1 |
| जो आपला आपण घातकी | । तो आत्महत्यारा पातकी। | |
| विवेकी | । धन्य साधु ।१० | 1 |

पुण्यवंतां सत्संगती । पापिष्टां असत्संगती । गति आणि अवगती । संगतीयोगें । ११। उत्तम संगती धरावी । आपली आपण चिंता करावी । अंतरीं बरी विवरावी । बुद्धि जाणत्याची । १२। इहलोक आणि परलोक । जाणता तो सुखदायेक। नेणत्याकरितां अविवेक । प्राप्त होतो । १३। जाणता देवाचा अंश । नेणता म्हणिजे तो राक्षस । यामधें जें विशेष । तें जाणोन घ्यावें ।१४। जाणता तो सकळां मान्य । नेणता होतो अमान्य । जेणेंकरिता होईजे धन्य । तेंचि घ्यावें ।१५। साक्षपी शाहाण्याची संगती । तेणें साक्षपी शाहाणे होती । आळसी मूर्खाची संगती । आळसी मूर्ख । १६। उत्तम संगतीचें फळ सुख । अद्धम संगतीचें फळ दुःख । आनंद सांडुनिया शोक । कैसा घ्यावा । १७। ऐसे हें प्रगट दिसे। जनामधें उदंड भासे। प्राणीमात्र वर्ततसे । उभयेयोगें । १८। येका योगें सकळ योग । येका योगें सकळ वियोग। विवेकयोगें सकळ प्रयोग । करीत जावे । १९। अवचितें सांकडींत पडिलें। तरी तेथून पाहिजे निघालें। निघोन जातां जालें । परम समाधान । २०। नाना दुर्जनांचा संग । क्षणक्षणा मनभंग । याकारणें कांहीं रंग । राखोन जावें । २१। शाहाणा येत्न त्याच्या गुणें । पाहों जातां काये उणें। संतोष भोगणें । नाना श्लाघ्यता सुख 1221

¹⁷⁸⁰ Dasbodh (Marathi)_Section_21_1_Front

आतां लोकीं ऐसें आहे । सृष्टीमधें वर्तताहे । जो कोणी समजोन पाहे । त्यास घडे 1531 बहुरल वसुंधरा । जाणजाणों विचार करा। समजल्यां प्रत्ययो अंतरा- । माजी येतो 1581 दुर्बळ आणि संपन्न । वेडें आणि वित्पन्न । हें अखंड दंडायमान । असतचि असे । २५। येक भाग्यपुरुष मोडती । येक नवे भाग्यवंत होती । तैसीच विद्या वित्पती । होत जाते । २६। येक भरे येक रितें। रितें मागुतें भरतें। भरतेंहि रितें होतें । काळांतरीं 1291 ऐसी हे सृष्टीची चाली । संपत्ति दुपारची साउली । वयेसा तरी निघोन गेली । हळुहळु 1261 बाळ तारुण्य आपलें । वृधाप्य प्रचितीस आलें । ऐसें जाणोन सार्थक केलें । पाहिजे कोणियेकें । २९। देह जैसें केलें तैसें होतें । येत्न केल्यां कार्ये साधतें। तरी मग कष्टावें तें। काये निमित्य ।३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'जगज्जीवननिरूपणनाम' समास सातवा समाप्त.



॥ श्रीराम् ॥

उन्मेषवृत्ती । तेचि परा जाणिजे श्रोतीं । ध्वनिरूप पश्यंती । हृदई वसे

| कंठापासून नाद जाला । मध्यमा वाचा बोलिजे त्याला । |
|--|
| उच्चार होतां अक्षराला । वैखरी बोलिजे । २ । |
| नाभिस्थानीं परा वाचा । तोचि ठाव अंतःकर्णाचा । |
| अंतः कर्णपंचकाचा । निवाडा ऐसा । ३ । |
| निर्विकल्प जें स्फुरण । उगेंच असतां आठवण । |
| तें जाणावें अंतःकर्ण । जाणतीकळा । ४ । |
| अंतःकर्ण आठवलें । पुढें होये नव्हेसें गमलें । |
| करूं न करू ऐसें वाटलें। तेंचि मन |
| संकल्प विकल्प तेंचि मन । जेणेंकरितां अनुमान । |
| पुढें निश्चयो तो जाण । रूप बुद्धीचें । ६ । |
| करीनचि अथवा न करी। ऐसा निश्चयोचि करी। |
| तेचि बुद्धि हे अंतरीं । विवेकें जाणावी । ७ । |
| जे वस्तुचा निश्चये केला । पुढें तेचि चिंतूं लागला । |
| तें चित्त बोलिल्या बोला । येथार्थ मानावें । ८ । |
| पुढें कार्याचा अभिमान घरणें । हें कार्ये तों अगत्य करणें। |
| ऐस्या कार्यास प्रवर्तणें । तोचि अहंकारु । ९ । |
| ऐसें अंतः कर्णपंचक । पंच वृत्ती मिळोन येक । |
| कार्येभागें प्रकारपंचक । वेगळाले । १०। |
| जैसे पांचिह प्राण । कार्येभागें वेग्ळाले जाण । |
| नाहीं तरी वायोचें लक्षण । येकचि असे ।११। |
| सर्वांगीं व्यान नाभीं समान । कंठीं उदान गुदीं अपान । |
| मुखीं नासिकीं प्राण । नेमस्त जाणावा ।१२। |
| बोलिलें हें प्राणपंचक । आतां ज्ञानइंद्रियेंपंचक । |
| श्रोत्र त्वचा चक्षु जिव्हा नासिक । ऐसीं हें ज्ञानेंद्रियें । १३। |

| वाचा पाणी पाद शिस्न गुद । हे कर्मइंद्रियें प्रसिद्ध । |
|---|
| शब्द स्पर्श रूप रस गंध । ऐसें हें विषयपंचक । १४। |
| अंतः कर्ण प्राणपंचक । ज्ञानेंद्रियें कर्मेंद्रियें पंचक । |
| पांचवें विषयपंचक । ऐसीं हे पांच पंचकें ।१५। |
| ऐसे हे पंचविस गुण। मिळोन सूक्ष्म देह जाण। |
| याचा कर्दम बोलिला श्रवण । केलें पाहिजे ।१६। |
| अंतः कर्ण व्यान श्रवण वाचा । शब्दविषये आकाशाचा । |
| पुढें विस्तार वायोचा । बोलिला असे । १७। |
| मन समान त्वचा पाणी । स्पर्श रूप हा पवनीं। |
| ऐसे हे अडाखे साधुनी । कोठा करावा ।१८। |
| बुद्धि उदान नयेन चरण । रूपविषयाचें दर्शन । |
| संकेतें बोलिलें मन । घालून पाहिजे ।१९। |
| चित्त अपान जिव्हा शिस्न । रसविषये आप जाण । |
| पुढें ऐका सावधान। पृथ्वीचें रूप ।२०। |
| अहंकार प्राण घ्राण । गुद गंधविषये जाण । |
| ऐसें केलें निरूपण । शास्त्रमतें ।२१। |
| ऐसा हा सूक्ष्म देहे । पाहातां होईजे निसंदेहे । |
| येथें मन घालून पाहे । त्यासीच हें उमजे । २२। |
| ऐसें सूक्ष्म देहे बोलिलें। पुढें स्थूळ निरोपिलें। |
| आकाश पंचगुणें वर्तलें । कैसें स्थुळीं । २३। |
| काम क्रोध शोक मोहो भये । हा पंचविध आकाशाचा अन्वये। |
| पुढें पंचविध वायो । निरोपिला । २४। |
| चळण वळण प्रासारण । निरोध आणि अकोचन । |
| हैं पंचविध लक्षण । प्रभंजनाचें ।२५। |

क्षया त्रुषा आलस्य निद्रा मैथुन । हे तेजाचे पंचविध गुण। आतां पुढें आपलक्षण । निरोपिलें पाहिजे 1251 शुक्लीत श्रोणीत लाळ मूत्र स्वेद । हा पंचविध आपाचा भेद। पुढें पृथ्वी विशद । केली पाहिजे 1291 अस्ति मांष त्वचा नाडी रोम । हे पृथ्वीचे पंचविध धर्म । ऐसे स्थूळ देहाचें वर्म । बोलिलें असे 1261 पृथ्वी आप तेज वायो आकाश । हे पांचाचे पंचविस । ऐसें मिळोन स्थूळ देहास । बोलिजेतें 1231 तिसरा देह कारण अज्ञान । चौथा देह माहांकारण ज्ञान । हे च्यारी देह निर्शितां विज्ञान । परब्रह्म तें 1301 विचारें चौदेहावेगळे केलें। मीपण तत्वांसरिसें गेले। अनन्य आत्मनिवेदन जालें । परब्रह्मीं 1381 विवेकें चुकला जन्म मृत्य । नरदेहीं साधिलें महत्कृत्य । भक्तियोगें कृत्यकृत्य । सार्थक जालें ।३२। इति श्री पंचीकर्ण। केलेंचि करावें विवर्ण। लोहाचें जालें सुवर्ण । परिसाचेन योगें 1331 हाहि दृष्टांत घडेना । परिसाचेन परीस करवेना । शरण जातां साधुजना । साधुच होइजे 1381

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'तत्त्वनिरूपणनाम' समास आठवा समाप्त.

तनुचतुष्टये

| स्थूळ सूक्ष्म कारण माहाकारण । ऐसे हे चत्वार देह जाण | 1 | | |
|--|----------|----------|---|
| जागृद्धि स्थान सामित पूर्ण । — (— १ | i I | १ | ı |
| विश्व तैजस प्राज्ञ । प्रत्यगात्मा हे अभिमान | | Ì | • |
| नेत्रस्थान कंठस्थान हृदयस्थान । मूर्धनी ते | | २ | ı |
| स्थूळभोग प्रविविक्तभोग । आनंदभोग आनंदावभासभोग | | ` | ` |
| ऐसे हे चत्वार भोग । चौंदेहाचे | | Ę | ı |
| अकार उकार मकार। अर्धमात्रा तो ईश्वर | | * | • |
| एस्या मात्रा चत्वार । चौदेहाच्या | ' ' | X | ı |
| तमोगुण रजोगुण। सत्वगण शब्दमलसाम | | | • |
| एस हे चत्वार गुण । चौंदेहाचे | 1 (| Ų | ı |
| क्रियाशक्ति द्रव्याशक्ति । इछाशक्ति ज्ञानशक्ती | | ` | • |
| ९२॥ चत्वार शक्ता । चौदेहाच्या | | Ę | 1 |
| ऐसीं हे बत्तिस तत्त्वें । दोहींचीं पन्नास तत्त्वे | | • | |
| अज्ञान अधास तत्त्वे । अज्ञान आणी चान | h 1 | 9 | 1 |
| ा १ तत्व जाणावा । जाणोर रूप्य ने | | | • |
| राष्ट्रा निरसावा । येणे रितीं | | /. | ı |
| साक्षा महिणाजे जान । | | | • |
| | | ९ | 1 |
| ब्रह्मांडीं देह कल्पिले । विराट हिरण्यगर्भ बोलिले ते हे विवेकें निर्शले । आत्मजानें | 1 | • | • |
| | । १ | 0 | 1 |

| आत्मानात्मविवेक करितां । सारासारविचार पाहातां । पंचभूतांची माइक वार्ता । प्रचित आली । ११। |
|---|
| अस्ति मांष त्वचा नाडी रोम । हे पांचहि पृथ्वीचे गुणधर्म । प्रत्यक्ष शरीरीं हें वर्म । शोधून पाहावें ।१२। |
| शुक्लीत श्रोणीत लाळ मूत्र स्वेद । हे आपाचे पंचकभेद । तत्वें समजोन विशद । करून घ्यावीं । १३। |
| क्षुधा त्रुषा आलस्य निद्रा मैथुन । हे पांचिह तेजाचे गुण । या तत्त्वांचें निरूपण । केलेंचि करावें ।१४। |
| चळण वळण प्रासारण। निरोध आणि आकोचन। हे पांचहि वायोचे गुण। श्रोतीं जाणावे ।१५। |
| काम क्रोध शोक मोहो भये । हा आकाशाचा परियाये। हें विवरल्याविण काये। समजों जाणे । १६। असो ऐसें हें स्थूळ शरीर। पंचविस तत्वांचा विस्तार। |
| आतां सूक्ष्मदेहाचा विचार । बोलिजेल । १७। अंतः कर्ण मन बुद्धि चित्त अहंकार । आकाशपंचकाचा विचार । |
| पुढें वायो निरोत्तर । होऊन ऐका । १८। व्यान समान उदान । प्राण आणी अपान । |
| ऐसे हे पांचिह गुण । वायोतत्त्वाचे ।१९। श्रोत्र त्वचा चक्षु जिव्हा घ्राण । पांचिह तेजाचे गुण । |
| आतां आप सावधान । होऊन ऐका ।२०। वाचा पाणी पाद शिस्न गुद । हे आपाचे गुण प्रसिद्ध । |
| आतां पृथ्वी विशद । निरोपिली । २१। शब्द स्पर्श रूप रस गंध । हे पृथ्वीचे गुण विशद । |
| ऐसे हे पंचवीस तत्वभेद। सूक्ष्म देहाचे ।२२। इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'तनुचतुष्टयेनाम' समास नववा समाप्त. |

टोणपसिद्धलक्षण

| आवर्णोदकीं हटकेश्वर । त्यास घडे नमस्कार । |
|--|
| महिमा अत्यंतचि थोर । तया पाताळलिंगाचा । १ |
| परंतु तेथें जाववेना । शरीरें दर्शन घडेना । |
| विवेकें आणावें अनुमाना । तया ईश्वरासी । २ । |
| सातां समुद्रांचे वेडे । उदंड भूमि पैलिकडे । |
| सेवटीं तुटले कडे। भूमंडळाचे । ३। |
| सात समुद्र वोलांडावे । तेथें जाणें कैसें फावे। |
| म्हणोन विवेकी असावे । साधुजन । ४ । |
| जें आपणांस नव्हे ठावें । तें जाणतयास पुसावें। |
| मनोवेगें तनें फिरावें । हें तो घडेना । ५। |
| जे चर्मदृष्टीस नव्हे ठावें । तें ज्ञानदृष्टीनें पाहावें। |
| ब्रह्मांड विवरोन राहावें । समाधानें । ६ । |
| मध्यें आहे भूमीचें चडळ । म्हणौन आकाश आणी पाताळ । |
| तें चडळ नस्तां अंतराळ । चहुंकडे |
| तयास परब्रह्म म्हणावें । जें उपाधीवेगळें स्वभावें । |
| जेथें दृश्यमायेच्या नांवें । सुन्याकार । ८। |
| दृष्टीचें देखणें दृश्य । मनाचें देखणें भास । |
| मनातीत निराभास । विवेकें जाणावें । ९। |
| द्श्य भास अवधा विघडे । विवेक तेथें पवाडे । |
| भूमंडळीं ज्ञाते थोडे । सूक्ष्मदृष्टीचे ।१०। |

| वाच्यांश वाचेनें बोलावा । न बोलतां लक्ष्यांश जाणावा । |
|--|
| निर्गुण अनुभवास आणावा । गुणाचेन योगें । ११। |
| नाना गुणास आहे नाश । निर्गुण तें अविनाश । |
| ढोबळ्याहून विशेष । सूक्ष्म देखणें । १२। |
| जें दृष्टीस न पडे ठावें । तें ऐकोन जाणावें। |
| श्रवणमननें पडे ठावें । सकळ कांहीं । १३। |
| अष्टधेचे जिनस नाना । उदंड पाहातां कळेना । |
| अवधें सगट पिटावेना । कोणीयेकें । १४। |
| सगट सारिखी स्थिती जाली । तेथें परीक्षाच बुडाली । |
| चिवनटानें कालिवलीं । नाना अन्ने । १५। |
| टोणपा नव्हे गुणग्राहिक । मूर्खास कळेना विवेक । |
| विवेक आणी अविवेक । येकचि म्हणती । १६। |
| उंच नीच कळेना ज्याला । तेथें अभ्यासचि बुडाला । |
| नाना अभ्यासें प्राणीयाला । सुटिका कैंची ।१७। |
| वेड लागोन जालें वोंगळ । त्यास सारिखेंच वाटे सकळ। |
| तें जाणावें बाश्कळ। विवेकी नव्हेती ।१८। |
| ज्यास अखंड होतो नाश । त्यासीच म्हणती अविनाश । |
| बहुचकीच्या लोकांस । काये म्हणावें ।१९। |
| ईश्वरें नाना भेद केले। भेदें सकळ सृष्टी चाले। |
| |
| आंधळे परीक्षवंत मिळाले । तेथें परीक्षा कैंची । २०। |
| जेथें परीक्षेचा अभाव । तो टोणपा समुदाव । |
| जेथें परीक्षेचा अभाव । तो टोणपा समुदाव । गुणचि नाहीं गौरव । येईल कैंचें । २१। |
| जेथें परीक्षेचा अभाव । तो टोणपा समुदाव । |

उत्तम वस्तूची परीक्षा । कैसी घडे नतद्रक्षा । दीक्षाहीनापासीं दीक्षा । येईल कैंची 1231 आपलेन वोंगळपणें। दिशा करून शौच्य नेणे। वेद शास्त्रें पुराणें । त्यास काये करिती । २४। आधी राखावा आचार। मग पाहावा विचार। आचारविचारें पैलपार । पाविजेतो 1241 जें नेमकास न कळे। तें बाष्कळास केवीं कळे। डोळस ठकती आंघळे। कोण्या कामाचे । २६। पापपुण्य स्वर्गनर्क । अवधेंच मानिलें येक । विवेक आणी अविवेक । काये मानावें 1291 अमृत विष येक म्हणती । परी विष घेतां प्राण जाती । कुकर्में होते फजिती । सत्कर्में कीर्ति वाढे । २८। इहलोक आणि परलोक । जेथें नाहीं साकल्य विवेक । तेथें अवधेंच निरार्थक । सकळ कांहीं । २९। म्हणौन संतसंगेंचि जावें। सत्शास्त्रचि श्रवण करावें। उत्तम गुणास अभ्यासावें । नाना प्रयेत्नें ।३०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'टोणपसिद्धलक्षणनाम' समास दहावा समाप्त.

> > दशक सतरावा समाप्त

दशक अठरावा : बहुजिनसी

दशक १८: समास १

| तुज नमूं गजवदना । तुझा महिमा कळे | ना । | | |
|---|--------|---|---|
| विद्या बुद्धी देसी जना । लाहानथोरांसी | ١ | 8 | I |
| तुज नमूं सरस्वती । च्यारी वाचा तुझेन स्फूर | र्गी । | | |
| तुझें निजरूप जाणती । ऐसे थोडे | 1 | ? | 1 |
| धन्य धन्य चतुरानना । तां केली सृष्टिरचन | ग । | | |
| वेद शास्त्रें भेद नाना । प्रगट केले | -1 | 3 | l |
| धन्य विष्णु पाळण करिसी । येकांशें सकळ जीवांस | री । | | |
| वाढविसी वर्तविसी । जाणजाणों | | 8 | Į |
| धन्य धन्य भोळाशंकर । जयाच्या देण्यास नाहीं पा | र । | | |
| रामनाम निरंतर । जपत आहे | 1 | 4 | 1 |
| धन्य धन्य इंद्रदेव । सकळ देवांचाहि दे | व । | | |
| इंद्रलोकींचें वैभव । काये म्हणौनि सांगावें | l | Ę | l |
| धन्य धन्य येमधर्म । सकळ जाणती धर्माध | र्म । | | |
| प्राणीमात्रांचे वर्म । ठाईं पाडिती | | 9 | 1 |
| वेंकटेसीं महिमा किती। भले उभ्यां अत्र खात | ती । | | |
| वडे घिरडीं स्वाद घेती । आतळस आपालांचा | 1 | 6 | ł |
| धन्य तूं वो बनशंकरी । उदंड शाखांचिया हा | री । | | |
| विवरविवरों भोजन करी । ऐसा कैंचा | ı | 9 | 1 |

| धन्य भीम गोलांगुळा । कोरवड्यांच्या उदंड माळा । |
|--|
| दिह वडे खातां सकळां। समाधान होये ।१०। |
| धन्य तूं गा खंडेराया । भंडारें होये पिंवळी काया । |
| कांदेभरीत रोटगे खाया। सिन्द होती ।११। |
| धन्य तुळजाभोवानी । भक्तां प्रसन्न होते जनीं। |
| गुणवैभवास गणी। ऐसा कैंचा ।१२। |
| धन्य धन्य पांडुरंग । अखंड कथेचा होतो धिंग । |
| तानमानें रागरंग । नाना प्रकारीं । १३। |
| धन्य तूं गा क्षत्रपाळा । उदंड जना लाविला चाळा । |
| भावें भक्ति करितां फळा । वेळ नाहीं ।१४। |
| रामकृष्णादिक अवतार। त्यांचा महिमा अपार। |
| उपासनेस बहुत नर। तत्पर जाले ।१५। |
| सकळ देवांचें मूळ। तो हा अंतरात्माचि केवळ। भमंडळीं भोग सकळ। त्यासीच घडे ।१६। |
| |
| नाना देव होऊन बैसला । नाना शक्तिरूपें जाला । भोक्ता सकळ वैभवाला । तोचि येक ।१७। |
| याचा पाहावा विचार । उदंड लांबला जोजार । |
| होती जाती देव नर । किती म्हणोनि । १८। |
| कीर्ति आणि अपकीर्ति । उदंड निंदा उदंड स्तुती । |
| सर्वत्रांची भोगप्राप्ती । अंतरात्म्यासीच घडे ।१९। |
| कोण देहीं काये करितो । कोण देहीं काये भोगितो । |
| भोगी त्यागी वीतरागी तो । येकचि आत्मा ।२०। |
| प्राणी साभिमानें भुललें । देह्याकडे पाहात गेले । |
| मुख्य अंतरात्म्यास चुकले । अंतरी असोनी । २१। |

आरे या आत्मयाची चळवळ पाहे । ऐसा भूमंडळीं कोण आहे ।
अगाध पुण्यें अनुसंघान राहे । कांहींयेक ।२२।
त्या अनुसंघानासिरसें । जळोनी जाईजे किल्मिषें ।
अंतरिनष्ठ ज्ञानी ऐसे । विवरोन पाहाती ।२३।
अंतरिनष्ठ तितुके तरले। अंतरभ्रष्ट तितुके बुडाले।
बाह्याकारें भरंगळले। लोकाचारें ।२४।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'बहुदेवस्थाननिरूपणनाम' समास पहिला समाप्त.

दशक १८ : समास २

सर्वज्ञसंगनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

नेणपणें जालें तें जालें। जालें तें होऊन गेलें। वर्तलें । पाहिजे नेमस्त जाणतेपणें जाणत्याची संगती धरावी । जाणत्याची सेवा करावी । जाणत्याची सदबुद्धि घ्यावी । हळुहळु 31 जाणत्यापासीं लेहों सिकावें । जाणत्यापासीं वाचूं सिकावें । जाणत्यापासीं पुसावें । सकळ कांहीं 3 1 जाणत्यास करावा उपकार । जाणत्यास झिजवावें शरीर । जाणत्याचा पाहावा विचार । कैसा आहे 181 जाणत्याचे संगतीनें भजावें । जाणत्याचे संगतीनें झिजावें । जाणत्याचे संगतीनें रिझावें । विवरविवरों जाणत्यापासीं गावें गाणें। जाणत्यापासीं वाजवणें। नाना आळाप सिकणें । जाणत्यापासीं

| जाणता सांगेल तें करावें । पथ्य आधीं । ७ । जाणत्यापासीं परीक्षा सिकणें । जाणत्यापासीं तालिम करणें । जाणत्यापासीं पोहणें। अभ्यासावें । ८ । जाणता बोलेल तैसें बोलावें । जाणता सांगेल तैसें चालावें । जाणत्याचे ध्यान ध्यावें । नाना प्रकारीं । ९ । जाणत्याच्या कथा सिकाव्या । जाणत्याच्या युक्ति समजाव्या । जाणत्याच्या गोष्टी विवराव्या । सकळ कांहीं ।१०। जाणत्याचे पेंच जाणावे । जाणत्याचे पीळ उकलावे । जाणत्याचे पेंच जाणावे । जाणत्याचे पीळ उकलावे । जाणत्याचे जाणावे प्रसंग । जाणत्याचे घ्यावे रंग । जाणत्याचे स्फूर्तीचे तरंग । अभ्यासावे ।११२। जाणत्याचे स्फूर्तीचे तरंग । अभ्यासावे ।११३। जाणत्याचा साक्षेप घ्यावा । जाणत्याचा तर्क जाणावा । जाणत्याचा उल्लेख समजावा । न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचे धूर्तपण । जाणत्याचे राजकारण । जाणत्याचे किवत्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१६। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे तीक्षणता । जाणत्याचे सहिष्णता । जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सहिष्णता । जाणत्याची नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । जाणत्याचा काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । जाणत्याचे गुण अनेक । आवधेच घ्यावे ।१९। | जाणत्याचे कासेसी लागावें। जाणत्याचें औषध घ्यावें। |
|--|--|
| जाणत्यापासीं परीक्षा सिकणें । जाणत्यापासीं तालिम करणें । जाणत्यापासीं पोहणें। अभ्यासावें । ८ । जाणत्याचे ध्यान ध्यावें । जाणता सांगेल तैसें चालावें । जाणत्याचे ध्यान ध्यावें । नाना प्रकारीं । १ । जाणत्याच्या कथा सिकाव्या । जाणत्याच्या युक्ति समजाव्या । जाणत्याच्या गोष्टी विवराव्या । सकळ कांहीं ।१०। जाणत्याचे पेंच जाणावे । जाणत्याचे पीळ उकलावे । जाणत्याचे पेंच जाणावे । जाणत्याचे पीळ उकलावे । जाणत्याचे जाणावे प्रसंग । जाणत्याचे ध्यावे रंग । जाणत्याचे स्फूर्तीचे तरंग । अभ्यासावे ।११। जाणत्याचा साक्षेप ध्यावा । जाणत्याचा तर्क जाणावा । जाणत्याचा उल्लेख समजावा । न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचे धूर्तपण । जाणत्याचे राजकारण । जाणत्याचे किवत्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१६। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे तीक्षणता । जाणत्याचे सहिष्णता । जाणत्याचे तीक्षणता । जाणत्याचे सहिष्णता । जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सहिष्णता । जाणत्याची नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | |
| जाणत्यापासीं पोहणें। अभ्यासावें । ८। जाणता बोलेल तैसें बोलावें । जाणता सांगेल तैसें चालावें । जाणत्याच्ये ध्यान घ्यावें । नाना प्रकारीं । ९। जाणत्याच्या कथा सिकाव्या । जाणत्याच्या युक्ति समजाव्या । जाणत्याच्या गोष्टी विवराव्या। सकळ कांहीं ।१०। जाणत्याच्ये पेंच जाणावे । जाणत्याचे पीळ उकलावे । जाणत्याचे पेंच जाणावे । लोक राजी ।११। जाणत्याचे जाणावे प्रसंग । जाणत्याचे घ्यावे रंग । जाणत्याचे स्फूर्तीचे तरंग । अभ्यासावे ।१२। जाणत्याचा साक्षेप घ्यावा । जाणत्याचा तर्क जाणावा । जाणत्याचा उल्लेख समजावा । न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचे धूर्तपण । जाणत्याचे राजकारण । जाणत्याचे किवत्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं। अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे तीक्षणता । जाणत्याचे सिहण्णता । जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सिहण्णता । जाणत्याची नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्पविवेक । | |
| जाणता बोलेल तैसें बोलावें । जाणता सांगेल तैसें चालावें । जाणत्याचे ध्यान घ्यावें । नाना प्रकारीं । १ । जाणत्याच्या कथा सिकाव्या । जाणत्याच्या युक्ति समजाव्या । जाणत्याच्या गोष्टी विवराव्या । सकळ कांहीं ।१०। जाणत्याचे पेंच जाणावे । जाणत्याचे पीळ उकलावे । जाणत्याचे पीळ उकलावे । जाणत्याचे जाणावे प्रसंग । जाणत्याचे घ्यावे रंग । जाणत्याचे स्फूर्तीचे तरंग । अभ्यासावे ।१२। जाणत्याचा साक्षेप घ्यावा । जाणत्याचा तर्क जाणावा । जाणत्याचा उल्लेख समजावा । न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचे धूर्तपण । जाणत्याचे राजकारण । जाणत्याचे ह्यूर्तपण । गाणत्याचे राजकारण । जाणत्याचे किवत्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याचे तीक्षणता । जाणत्याची सिहण्णता । जाणत्याची सिहण्णता । जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्यविवेक । | · |
| जाणत्याचे ध्यान घ्यावें । नाना प्रकारीं । १ । जाणत्याच्या कथा सिकाव्या । जाणत्याच्या युक्ति समजाव्या । जाणत्याच्या गोष्टी विवराव्या । सकळ कांहीं ।१०। जाणत्याचे पेंच जाणावे । जाणत्याचे पीळ उकलावे । जाणत्याचे जाणावे प्रसंग । जाणत्याचे घ्यावे रंग । जाणत्याचे जाणावे प्रसंग । जाणत्याचे घ्यावे रंग । जाणत्याचे स्फूर्तीचे तरंग । अभ्यासावे ।१२। जाणत्याचा साक्षेप घ्यावा । जाणत्याचा तर्क जाणावा । जाणत्याचा उल्लेख समजावा । न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचे धूर्तपण । जाणत्याचे राजकारण । जाणत्याचे किवत्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे तीक्षणता । जाणत्याचे सहिष्णता । जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सहिष्णता । जाणत्याची नाना संवाद । बरे शोधावे ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मिविवेक । | जाणत्यापासी पोहणे। अभ्यासाव । ८। |
| जाणत्याच्या कथा सिकाव्या । जाणत्याच्या युक्ति समजाव्या । जाणत्याच्या गोष्टी विवराव्या । सकळ कांहीं ।१०। जाणत्याचे पेंच जाणावे । जाणत्याचे पीळ उकलावे । जाणत्याचे जाणावे प्रसंग । जाणत्याचे घ्यावे रंग । जाणत्याचे प्रमुक्तींचे तरंग । अभ्यासावे ।१२। जाणत्याचा साक्षेप घ्यावा । जाणत्याचा तर्क जाणावा । जाणत्याचा उल्लेख समजावा । न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचे धूर्तपण । जाणत्याचे राजकारण । जाणत्याचे किवत्वे सिकावीं । गद्ये पद्ये वोळखावीं । माधुर्यवचने समजावीं । अंतर्यामीं ।१४। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याचे तीक्षणता । जाणत्याचे सहिष्णता । जाणत्याचे सहिष्णता । जाणत्याचे सहिष्णता । जाणत्याचे समजोवीं । उदारता । समजोन घ्यावी ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची अध्यात्मिविवेक । | |
| जाणत्याच्या गोष्टी विवराव्या। सकळ कांहीं ।१०। जाणत्याचे पेंच जाणावे। जाणत्याचे पीळ उकलावे। जाणता राखेल तैसे राखावे। लोक राजी ।११। जाणत्याचे जाणावे प्रसंग । जाणत्याचे घ्यावे रंग। जाणत्याचे स्फूर्तीचे तरंग । अभ्यासावे ।१२। जाणत्याचा साक्षेप घ्यावा। जाणत्याचा तर्क जाणावा। जाणत्याचा उल्लेख समजावा। न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचे धूर्तपण। जाणत्याचे राजकारण। जाणत्याचे विकलवें सिकावीं। गद्ये पद्ये वोळखावीं। गधुर्यवचनें समजावीं। गद्ये पद्ये वोळखावीं। माधुर्यवचनें समजावीं। अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद। जाणत्याचे वचनभेद। जाणत्याचे नाना संवाद। बरे शोधावे ।१६। जाणत्याचे तीक्षणता। जाणत्याची सहिष्णता। जाणत्याची तिक्षणता। जाणत्याची सहिष्णता। जाणत्याची नाना कल्पना। जाणत्याची दीर्घ सूचना। जाणत्याची नाना कल्पना। जाणत्याची दीर्घ सूचना। जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक। | जाणत्याचे ध्यान घ्यावें । नाना प्रकारीं । ९ । |
| जाणत्याच्या गोष्टी विवराव्या। सकळ कांहीं ।१०। जाणत्याचे पेंच जाणावे। जाणत्याचे पीळ उकलावे। जाणता राखेल तैसे राखावे। लोक राजी ।११। जाणत्याचे जाणावे प्रसंग । जाणत्याचे घ्यावे रंग। जाणत्याचे स्फूर्तीचे तरंग । अभ्यासावे ।१२। जाणत्याचा साक्षेप घ्यावा। जाणत्याचा तर्क जाणावा। जाणत्याचा उल्लेख समजावा। न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचे धूर्तपण। जाणत्याचे राजकारण। जाणत्याचे विवर्वे समजावीं। गद्ये पद्ये वोळखावीं। गधुर्यवचने समजावीं। गद्ये पद्ये वोळखावीं। माधुर्यवचने समजावीं। गद्ये पद्ये वोळखावीं। गधुर्यवचने समजावीं। अंतर्यामीं ।१६। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद। जाणत्याचे वचनभेद। जाणत्याचे नाना संवाद। बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची तीक्षणता। जाणत्याची सहिष्णता। जाणत्याची सहिष्णता। जाणत्याची समजोन घ्यावी ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना। जाणत्याची दीर्घ सूचना। जाणत्याची नाना कल्पना। जाणत्याची अध्यात्मविवेक। जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक। | जाणत्याच्या कथा सिकाव्या । जाणत्याच्या युक्ति समजाव्या । |
| जाणता राखेल तैसे राखावे । लोक राजी ।११। जाणत्याचे जाणावे प्रसंग । जाणत्याचे घ्यावे रंग। जाणत्याचे स्फूर्तीचे तरंग । अभ्यासावे ।१२। जाणत्याचा साक्षेप घ्यावा । जाणत्याचा तर्क जाणावा । जाणत्याचा उल्लेख समजावा । न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचे धूर्तपण । जाणत्याचे राजकारण । जाणत्याचे विकल्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे तीक्षणता । जाणत्याची सहिष्णता । जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सहिष्णता । जाणत्याची नाना संवाद । समजोन घ्यावी ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | |
| जाणत्याचे स्फूर्तींचे तरंग । अभ्यासावे घ्यावे रंग । जाणत्याचे स्फूर्तींचे तरंग । अभ्यासावे ।१२। जाणत्याचा साक्षेप घ्यावा । जाणत्याचा तर्क जाणावा । जाणत्याचा उल्लेख समजावा । न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचे धूर्तपण । जाणत्याचे राजकारण । जाणत्याचे निरूपण । ऐकत जावे ।१४। जाणत्याचे किवित्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सहिष्णता । जाणत्याची ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । समजोन घ्यावी ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची ववंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | जाणत्याचे पेंच जाणावे। जाणत्याचे पीळ उकलावे। |
| जाणत्याचे स्फूर्तींचे तरंग । अभ्यासावे घ्यावे रंग । जाणत्याचे स्फूर्तींचे तरंग । अभ्यासावे ।१२। जाणत्याचा साक्षेप घ्यावा । जाणत्याचा तर्क जाणावा । जाणत्याचा उल्लेख समजावा । न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचे धूर्तपण । जाणत्याचे राजकारण । जाणत्याचे निरूपण । ऐकत जावे ।१४। जाणत्याचे किवित्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सहिष्णता । जाणत्याची ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । समजोन घ्यावी ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची ववंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | जाणता राखेल तैसे राखावे । लोक राजी । ११। |
| जाणत्याचे स्फूर्तींचे तरंग । अभ्यासावे !१२। जाणत्याचा साक्षेप घ्यावा । जाणत्याचा तर्क जाणावा । जाणत्याचा उल्लेख समजावा । न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचें धूर्तपण । जाणत्याचें राजकारण । जाणत्याचें निरूपण । ऐकत जावें ।१४। जाणत्याचें किवित्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सिहण्णता । जाणत्याची उदारता । समजोन घ्यावी ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची ववंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | |
| जाणत्याचा साक्षेप घ्यावा । जाणत्याचा तर्क जाणावा । जाणत्याचा उल्लेख समजावा । न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचें धूर्तपण । जाणत्याचें राजकारण । जाणत्याचें निरूपण । ऐकत जावें ।१४। जाणत्याचें किवित्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सिहष्णता । जाणत्याची । समजोन घ्यावी ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | |
| जाणत्याचा उल्लेख समजावा । न बोलतांचि ।१३। जाणत्याचें धूर्तपण । जाणत्याचें राजकारण । जाणत्याचें निरूपण । ऐकत जावें ।१४। जाणत्याचीं किवित्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सिहष्णता । जाणत्याची उदारता । समजोन घ्यावी ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | |
| जाणत्याचें धूर्तपण । जाणत्याचें राजकारण । जाणत्याचें निरूपण । ऐकत जावें । १४। जाणत्याचीं किवित्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सिहष्णता । जाणत्याची ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची ववंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याची ववंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याची वांचें नाना कल्पना । जाणत्याची अध्यात्यविवेक । | 3 10 |
| जाणत्याचें निरूपण । ऐकत जावें । १४। जाणत्याचीं किवत्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सिहष्णता । जाणत्याची सहष्णता । जाणत्याची ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | · · |
| जाणत्याचीं किवत्वें सिकावीं । गद्यें पद्यें वोळखावीं । माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं ।१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सिहष्णता । जाणत्याची उदारता । समजोन घ्यावी ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | |
| माधुर्यवचनें समजावीं । अंतर्यामीं 1१५। जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे 1१६। जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सिहष्णता । जाणत्याची उदारता । समजोन घ्यावी 1१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी 1१८। जाणत्याचा काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | • |
| जाणत्याचे पाहावे प्रबंद । जाणत्याचे वचनभेद । जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सहिष्णता । जाणत्याची ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | |
| जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सिहष्णता । जाणत्याची ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याची काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | |
| जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सिहष्णता । उदारता । समजोन घ्यावी ।१७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याचा काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | |
| जाणत्याची उदारता । समजोन घ्यावी । १७। जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी । १८। जाणत्याचा काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | जाणत्याचे नाना संवाद । बरे शोधावे ।१६। |
| जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सूचना । जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याचा काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | जाणत्याची तीक्षणता । जाणत्याची सहिष्णता । |
| जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी । १८। जाणत्याचा काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | जाणत्याची उदारता । समजोन घ्यावी । १७। |
| जाणत्याची विवंचना । समजोन घ्यावी ।१८। जाणत्याचा काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । | जाणत्याची नाना कल्पना । जाणत्याची दीर्घ सचना । |
| the state of the s | |
| जाणत्याचे गुण अनेक । आवधेच घ्यावे ।१९। | जाणत्याचा काळ सार्थक । जाणत्याचा अध्यात्मविवेक । |
| | जाणत्याचे गुण अनेक । आवधेच घ्यावे ।१९। |

| जाणत्याचा भक्तिमार्ग । जाणत्याचा वैराग्ययोग । |
|--|
| जाणत्याचा अवधा प्रसंग । समजोन घ्यावा ।२०। |
| जाणत्याचें पाहावें ज्ञान । जाणत्याचें सिकावें ध्यान । |
| जाणत्याचें सूक्ष्म चिन्ह । समजोन घ्यावें । २१। |
| जाणत्याचें अलिप्तपण । जाणत्याचें विदेहलक्षण । |
| जाणत्याचें ब्रह्मविवरण । समजोन घ्यावें । २२। |
| जाणता येक अंतरात्मा । त्याचा काये सांगावा महिमा । |
| विद्याकळागुणसीमा । कोणें करावी । २३। |
| परमेश्वराचे गुणानुवाद । अखंड करावा संवाद । |
| तेणेंकरितां आनंद । उदंड होतो । २४। |
| परमेश्वरें निर्मिलें तें। अखंड दृष्टीस पडतें। |
| विवरविवरों समजावें तें । विवेकी जनीं । २५। |
| जितुकें कांहीं निर्माण जालें । तितुकें जगदेश्वरें निर्मिलें। |
| निर्माण वेगळें केलें। पाहिजे आधीं । २६। |
| तो निर्माण करितो जना । परी पाहों जातां दिसेना। |
| विवेकबळें अनुमाना । जाणीत जावा । २७। |
| त्याचें अखंड लागतां ध्यान । कृपाळुपणें देतो आशन । |
| सर्वकाळ संभाषण । तदांशोंचि करावें । २८। |
| ध्यान धरीना तो अभक्त । ध्यान धरील तो भक्त । |
| संसारापासुनी मुक्त । भक्तांस करी । २९। |
| उपासनेचे सेवटीं । देवां भक्तां अखंड भेटी । |
| अनुभवी जाणेल गोष्टी । प्रत्ययाची । ३०। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सर्वज्ञसंगनिरूपणनाम' समास दुसरा समाप्त.

दशक १८: समास ३

निः स्पृहसिकवणनिरूपण

| दुल्लभ शरीरीं दुल्लभ आयुष्य । याचा करूं नये नास । |
|--|
| दास म्हणे सावकास । विवेक पाहावा । १ |
| न पाहातां उत्तम विवेक । आवघा होतो अविवेक । |
| अविवेकें प्राणी रंक। ऐसा दिसे । २ |
| हे आपलें आपण केलें । आळसें उदास नागविलें। |
| वाईट संगतीनें बुडिवलें। देखत देखतां । ३ |
| मूर्खपणाचा अभ्यास जाला । बाष्कळपणें घातला घाला । |
| काम चांडाळ उठिला । तरुणपणीं । ४। |
| मूर्ख आळसी आणी तरुणा । सर्वांविषीं दैन्यवाणा । |
| कांहीं मिळेना कोणा। काये म्हणावें । ५। |
| जें जें पाहिजे तें तें नाहीं। अन्नवस्त्र तेंहि नाहीं। |
| उत्तम गुण कांहींच नाहीं । अंतर्यामीं । ६ । |
| बोलतां येना बैसतां येना । प्रसंग कांहींच कळेना। |
| शरीर मन हें वळेना । अभ्यासाकडे । ७ । |
| लिहिणें नाहीं वाचणें नाहीं । पुसणें नाहीं सांगणें नाहीं। |
| नेमस्तपणाचा अभ्यास नाहीं । बाष्कळपणें । ८ । |
| आपणास कांहींच येना । आणी सिकविलेंही मानेना । |
| आपण वेडा आणी सज्जना । बोल ठेवी |
| अंतरी येक बाहेर येक । ऐसा जयाचा विवेक । |
| परलोकाचें सार्थक । कैसें घडे |

आपला संसार नासला । मनामधें प्रस्तावला । तरी मग अभ्यास केला । पाहिजे विवेकाचा । ११। येकाप्र करूनियां मन । बळेंचि धरावें साधन । येलीं आळसाचें दर्शन । होऊंच नये । १२। अवगुण अवघेचि सांडावे । उत्तम गुण अभ्यासावे । प्रबंद पाठ करीत जावे। जाड अर्थ । १३। पदप्रबंद श्लोकप्रबंद । नाना धाटी मुद्रा छंद । प्रसंगज्ञानेंचि आनंद । होत आहे । १४। कोणे प्रसंगीं काये म्हणावें । ऐसें समजोन जाणावें । उगेंचि वाउगें सिणावें । कासयासी ।१५। दुसऱ्याचें अंतर जाणावें । आदर देखोन म्हणावें । जें आठवेल तें गावें । हें मूर्खपण ।१६। ज्याची जैसी उपासना । तेंचि गावें चुकावेना । रागज्ञाना ताळज्ञाना । अभ्यासावें । १७। साहित संगीत प्रसंग मानें । करावीं कथेचीं घमशानें । अर्थांतर श्रवणमननें । काढीत जावें । १८। पाठ उदंडचि असावें। सर्वकाळ उजळीत जावें। सांगितले गोष्टींचें असावें । स्मरण अंतरीं । १९। अखंड येकांत सेवावा । ग्रन्थमात्र धांडोळावा । प्रचित येईल तो घ्यावा । अर्थ मनीं ।२०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'निःस्पृहसिकवण निरूपणनाम' समास तिसरा समाप्त.

दशक १८: समास ४

देहेदुल्लभनिरूपण

| देह्याकरितां गण | शिपूजन । | देह्याकरितां शारदावंदन | 1 | |
|-----------------------------------|-------------|---------------------------------------|-----|----------|
| देह्याकरितां गुरू | सज्जन | संत श्रोते | 1 : | ۱ ۶ |
| देह्याकरितां कवित्व | र्वे चालती। | देह्याकरितां अधेनें करिती | ı | |
| देह्याकरितां अध | भ्यासिती । | नाना विद्या | 1 | ۱ ۶ |
| देह्याकरितां ग्रं | थलेखन । | नाना लिपीवोळखण | l | , , |
| नाना पदा | र्थशोघन । | देह्याकरितां | 1 3 | } |
| देह्याकरितां म | ाहाज्ञानी । | सिद्ध साधु ऋषी मुनी | ı | |
| देह्याकरितां तं | ोर्थाटणीं । | 0 0 | 8 | 5 |
| देह्याकरितां श्रव | ण घडे । | देह्याकरितां मननीं पवाडे | l | |
| देह्याकरितां देही | | | 4 | 1 |
| देह्याकरितां | कर्ममार्ग । | देह्याकरितां उपासनामार्ग। | 1 | |
| देह्याकरितां | | भूमंडळीं | Ę | 1 |
| योगी वीतरागी | | देह्याकरितां नाना सायासी। | | |
| देह्याकरितां आ | | | 9 | 1 |
| B B 600 | | देह्याकरितां सकळ सार्थक। | | |
| | | | 6 | • |
| | | गोरांजनें धूप्रपानें। | 9 | 1 |
| सीतोष्ण पंचारनी देह्याकरितां १ | | | • | ' |
| देह्याकरितां | _ | देह्याकरितां पापी केवळ । सुचिस्मंत | १० | 1 |
| | | 3 | | |

| देह्याकरितां अवतारी । देह्याकरितां वेषधारी । |
|--|
| नाना बंडें पाषांडें करी । देह्याकरितां । ११। |
| देह्याकरितां विषयेभोग । देह्याकरितां सकळ त्याग । |
| होती जाती नाना रोग । देह्याकरितां । १२। |
| देह्याकरितां नवविधा भक्ती । देह्याकरिता चतुर्विधा मुक्ती । |
| देह्याकरितां नाना युक्ती । नाना मतें । १३। |
| देह्याकरितां दानधर्म । देह्याकरितां नाना वर्म । |
| देह्याकरितां पूर्वकर्म । म्हणती जनीं । १४। |
| देह्याकरितां नाना स्वार्थ । देह्याकरितां नाना अर्थ। |
| देह्याकरितां होईजे वेर्थ । आणी धन्य । १५। |
| देह्याकरितां नाना कळा । देह्याकरितां उणा आगळा । |
| देह्याकरितां जिव्हाळा । भक्तिमार्गाचा । १६। |
| नाना सन्मार्गसाधनें । देह्याकरितां तुटती बंधनें । |
| देह्याकरितां निवेदनें । मोक्ष लाभे । १७। |
| देह सकळामधें उत्तमु । देही राहिला आत्मारामु । |
| सकळां घटीं पुरुषोत्तमु । विवेकी जाणती ।१८। |
| देह्याकरितां नाना कीर्ती । अथवा नाना अपकीर्ती । |
| देह्याकरितां होती जाती । अवतारमाळिका । १९। |
| देह्याकरितां नाना भ्रम । देह्याकरितां नाना संभ्रम । |
| देह्याचेन उत्तमोत्तम । भोगिती पर्दे ।२०। |
| देह्याकरितां सकळ कांहीं । देह्याविण कांहीं नाहीं। |
| आत्मा विरे ठाईं ठाईं। नव्हताच जैसा ।२१। |
| देहे परलोकीचें तारूं। नाना गुणांचा गुणागरु। |
| नाना रत्नांचा विचारु । देह्याचेनी । २२। |

| देह्याचेन गायेनकळा । देह्याचेन संगीतकळा । |
|--|
| चेक्नाचेन अंतर्केळा । ठाइ पड |
| नेने बहादानें फळ । देहे दुल्लभान कवळ। |
| गरी या देह्यास निवळ । उमजवाव १२४। |
| टेक्गकरितां लाहानथोर । करिती आपुलाले व्यापार । |
| त्याहि मधें लाहानथोर । कितायक |
| जे जे देहे धरुनी आले । ते ते कांहीं करून गेले। |
| हरिभजनें पावन जाले । कितीयेक । २६। |
| अष्ट्रधा प्रकृतीचें मूळ । संकल्परूपचि केवळ । |
| नाना संकल्पें देहेफळ । घेऊन आलें ।२७। |
| हरिसंकल्प मुळीं होता । तोचि फळीं पाहावा आतां । |
| नाना दह्यातरा तत्पता । शामिता पर |
| वेलाचे मुळीं बीज । उदकरूप वेली समज । |
| पढ फळामध्य बाज । चुळाच्या गरा |
| मुळाकरितां फळ येतें। फळाकरितां मूळ होतें। |
| येणेंकरितां होत जातें । भूमंडळ ।३०। असो कांहीं येक करणें । कैसें घडे देह्याविणें। |
| देहे सार्थकीं लावणें। म्हणिजे बरें ।३१। |
| आत्म्याकरितां देहे जाला । देह्याकरितां आत्मा तगला । |
| उभययोगें उदंड चालिला । कार्यभाग |
| चोरून गुप्तरूपें करावें। तें आत्मयासी पडे ठावें। |
| कर्तुत्व याचेन स्वभावें । सकळ कांहीं । ३३। |
| देह्यामधें आत्मा असतो । देहे पूजितां आत्मा तोषतो । |
| देहे पिडितां आत्मा क्षोभतो । प्रतक्ष आतां । ३४। |
| |

देह्यावेगळी पूजा पावेना । देह्याविण पूजा फावेना । जनीं जनार्दन म्हणोनी जना । संतुष्ट करावें । ३५। उदंड प्रगटला विचार । धर्मस्थापना तदनंतर । तेथेंच पूजेस अधिकार । पुण्यशरीरीं । ३६। सगट भजन करूं येतें । तरी मूर्खपण आंगीं लागतें । गाढवासी पूजितां कळतें । काये त्याला ।३७। पूज्य पूजेसी अधिकार । उगेचि तोषवावे इतर । दुखऊं नये कोणाचें अंतर । म्हणिजे बरें । ३८। सकळ जगदांतरींचा देव । क्षोभतां राहाव्या कोठें ठाव । जनावेगळा जनास उपाव । आणीक नाहीं ।३९। परमेश्वराचे अनंत गुण । मनुष्यें काये सांगावी खूण । परंतु अध्यात्मग्रंथश्रवण । होतां उमजे ।४०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'देहेदुल्लभनिरूपणनाम' समास चौथा समाप्त. □□

दशक १८: समास ५ करंटपरीक्षानिरूपण

॥ श्रीराम ॥

धान्य उदंड मोजिले । परी त्या मापें नाहीं भक्षिलें । विवरत्याविण तैसें जालें । प्राणीमात्रासी । १ । पाठ म्हणतां आवरेना । पुसतां कांहींच कळेना । अनुभव पाहातां अनुमाना— । मधें पडे । २ । शब्दरत्नें परीक्षावीं । प्रत्ययाचीं पाहोन घ्यावीं । ये ते अवधीं सांडावीं । येकीकडे । ३ ।

| नांवरूप आवधें सांडावें। मग अनुभवास मांडावें। |
|--|
| सार असार येकचि करावें । हें मूर्खपण । ४। |
| लेखकें कुळ समजवावें। किंवा उगेंच वाचावें। |
| येणें दृष्टांतें समजावें । कोणीतरी |
| जेथें नाहीं समजावीस । तेथे आवधी कुसमुस । |
| पुसों जातां वसवस । वक्ता करी । ६। |
| नाना शब्द येकविटले । प्रचीतीवीण उपाव केले । |
| परी ते अवधेचि वेर्थ गेले । फडप्रसंगीं । ७। |
| पसेवरी वैरण घातलें। तांतडीनें जातें वोडिलें। |
| तेणें पीठ बारीक आलें । हें तों घडेना |
| घांसामार्गे घांस घातला । आवकाश नाहीं चावायाला । |
| अवघा बोकणा भरिला। पुढे कैसें । १। |
| एका फडनिसीचें लक्षण। विरंग जाऊं नेदी क्षण। |
| समस्ताच अतःकणा सामाळाता जान |
| सूक्ष्म नामें सुखें घ्यावीं । तितुकीं रूपें वोळखावीं । |
| वाळखान समजवावा । श्रातानाता |
| समशा पुरतां सुखी होती । श्रोते अवधे आनंदती । |
| अवय क्षणक्षणा चादता । गालाायमाता |
| समशा पुरतां वंदिती । समशा न पुरतां निंदिती । गोसांवी चिणचिण करिती । कोण्या हिशेबें । १३। |
| शुध सोनें पाहोन घ्यावें । कसीं लाउनी तावावें । |
| श्रवणमननें जाणावें। प्रत्ययासी |
| THE PART OF THE PA |

वैद्याची प्रचित येना । वेथा परतीं होयेना । आणी रागेजावें जना । कोण्या हिशेबें ।१५। खोटें कोठेंचि चालेना । खोटें कोणास मानेना । याकारणें अनुमाना । खरें आणावें । १६। लिहिणें न येतां व्यापार केला । कांहीं येक दिवस चालिला । पुसता सुरनीस भेटला । तेव्हां खोटें । १७। सर्व आवधें हिशेबीं ठावें । प्रत्यय साक्षीनें बोलावें । मग सुरनीसें काये करावें । सांगाना कां । १८। स्वयें आपणचि गुंते । समजावीस कैसी होते । नेणतां कोणीयेक ते । आपदों लागती । १९। बर्ळेविण युध्यास गेला । तो सर्वस्वें नागवला । शब्द ठेवावा कोणाला । कोण कैसा ।२०। जें प्रचीतीस आलें खरें । तेंचि घ्यावें अत्यादरें। अनुभवेंविण जें उत्तरें । तें फलकटें जाणावीं । २१। सिकऊं जातां राग चढे। परंतु पुढें आदळ घडे। खोटा निश्चय तात्काळ उडे । लोकामधें । २२। खरें सांडुनी खोटें घेणें। भकाधेस काये उणें। त्रिभुवनीं नारायणें । न्याय केला । २३। तो न्याय सांडितां सेवटीं । अवधें जगचि लागे पाठीं । जनीं भांडभांडों हिंपुटी । किती व्हावें 1581 अन्यायें बहुतांस पुरवलें । हें देखिलें ना ऐकिलें। वेडें उगेंचि भरीं भरलें। असत्याचे 1241 असत्य म्हणिजे तेंचि पाप । सत्य जाणावें स्वरूप । साक्षप । कोणाचा करावा 1361 दोहींमधें मायेमधें बोलणें चालणें साचें । माया नस्तां बोलणें कैंचें। याकारणें निशब्दाचें । मूळ शोधावें 1201 वाच्यांश जाणोनी सांडावा । लक्ष्यांश विवरोन घ्यावा । याकारणें निशब्द मुळाचा गोवा । आडळेना 1281 अष्टघा प्रकृती पूर्वपक्ष । सांडून अलक्षीं लावावें लक्ष । मननसीळ परम दक्ष । तोचि जाणे 1281 नाना भूस आणि कण । येकचि म्हणणें अप्रमाण। रसे चोवडिया कोण । शाहाणा सेवी 1301 पिंडीं नित्यानित्यविवेक । ब्रह्मांडीं सारासार अनेक । सकळ शोधूनियां येक । सार घ्यावें 1381 मायेकरितां कोणीयेक । अन्वय आणि वीतरेक । ते माया नस्तां विवेक । कैसा करावा 1321 तत्वें तत्त्व सर्व शोधावें । माहांवाकीं प्रवेशावें । आत्मनिवेदनें पावावें । समाधान 1331

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'करंटपरीक्षानिरूपणनाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक १८ : समास ६

उत्तमपुरुषनिरूपण

| नाना वस्त्रें नाना भूषणें। येणें शरीर शृंघारणें | l | | |
|---|---|-----|---|
| विवेकें विचारें राजकारणें। अंतर शृंघारिजे | | 8 | l |
| शरीर सुंदर सतेज । वस्त्रें भूषणें केलें सज्ज | l | | |
| अंतरीं नस्तां च्यातुर्यबीज । कदापी शोभा न पवे | | 7 | l |
| तुंड हेंकाड कठोरवचनी । अखंड तोले साभिमानी | l | | |
| न्याय नीति अंतःकर्णी । घेणार नाहीं | | 3 | l |
| तन्हे सीघ्रकोपी सदा । कदापि न धरी मर्यादा | ì | | |
| राजकारण संवादा । मिळोंचि नेणे | | ሄ | ļ |
| ऐसे लौंद बेइमानी। कदापि सत्य नाहीं वचनीं | 1 | | |
| पापी अपस्मार जनीं। राक्षेस जाणावे | | 4 | ١ |
| समयासारिखा समयो येना । नेम सहसा चालेना | 1 | | |
| नेम धरितां राजकारणा । अंतर पडे | | Ę | ı |
| अति सर्वत्र वर्जावें। प्रसंग पाहोन चालावें | 1 | 1.0 | |
| हटनिग्रहीं न पडावें । विवेकी पुरुषें | 1 | 9 | ı |
| बहुतिच करितां हट । तेथें येऊन पडिले तट | 1 | | |
| कोणीयेकाचा सेवट । जाला पाहिजे | ı | 6 | 1 |
| बरें ईश्वर आहे साभिमानी। विशेष तुळजाभोवानी | 1 | | |
| परंतु विचार पाहोनी । कार्ये करणें | | 8 | 1 |
| अखंडचि सावधाना । बहुत काये करावी सूचना | 1 | | |
| परंतु कांहीं येक अनुमाना । आणिलें पाहिजे | 1 | १० | 1 |

| समर्थांपासीं बहुत जन । राहिला पाहिजे साभिमान । |
|---|
| निश्चळ करूनियां मन । लोक असती ।११। |
| म्लेच दुर्जन उदंड। बहुतां दिसाचें माजलें बंड। |
| याकारणें अखंड । सावधान असावें ।१२। |
| सकळकर्ता तो ईश्वरु । तेणें केला आंगिकारु । |
| तया पुरुषाचा विचारु । विरुळा जाणे । १३। |
| न्याय नीति विवेक विचार । नाना प्रसंगप्रकार । |
| परिक्षिणें परांतर । देणें ईश्वराचें । १४। |
| माहायेत्न सावधपणें । समईं धारिष्ट धरणें । |
| अद्भुतिच कार्य करणें। देणें ईश्वराचें ।१५। |
| येश कीर्ती प्रताप महिमा । उत्तम गुणासी नाहीं सीमा । |
| नाहीं दुसरी उपमा । देणें ईश्वराचें । १६। |
| देव ब्राह्मण आचार विचार । कितेक जनासी आधार। |
| सदा घडे परोपकार । देणें ईश्वराचें । १७। |
| येहलोक परलोक पाहाणें । अखंड सावधपणें राहाणें । |
| बहुत जनाचें साहाणें। देणें ईश्वराचें ।१८। |
| देवाचा कैपक्ष घेणें । ब्राह्मणाची चिंता वाहाणें । |
| बहु जनासी पाळणें। देणें ईश्वराचें ।१९। |
| धर्मस्थापनेचे नर । ते ईश्वराचे अवतार । |
| जाले आहेत पुढें होणार । देणें ईश्वराचें ।२०। |
| उत्तम गुणाचा प्राहिक । तर्क तीक्षण विवेक । |
| धर्मवासना पुण्यश्लोक । देणें ईश्वराचें । २१। |

सकळ गुणामधें सार । तजविजा विवेक विचार । जेणें पाविजे पैलपार । अरत्रपरत्रींचा । २२।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'उत्तमपुरुषनिरूपणनाम' समास सहावा समाप्त.

दशक १८: समास ७

जनस्वभावनिरूपण

| जनाचा लालची स्वभाव । आरंभींच म्हणती देव । | | |
|--|---|---|
| म्हणिजे मला कांहीं देव । ऐसी वासना | 3 | l |
| कांहींच भक्ती केली नस्तां । आणी इछिती प्रसन्नता । | | |
| जैसें कांहींच सेवा न करितां । स्वामीस मागती | 2 | ١ |
| कप्टेंविण फळ नाहीं। कप्टेंविण राज्य नाहीं। | | |
| केल्याविण होत नाहीं । साध्य जनीं | 3 | ı |
| आळसें काम नासतें। हें तों प्रत्ययास येतें। | | |
| कष्टाकडे चुकावितें । हीन जन | 8 | ı |
| आधीं कष्टाचें दुःख सोसिती । ते पुढें सुखाचें फळ भोगिती । | | |
| आधीं आळसें सुखावती । त्यासीं पुढें दुःख | ų | 1 |
| येहलोक अथवा परलोक । दोहिंकडे सारिखाचि विवेक । | | |
| दार्घ सूचनेचें कौतुक । कळलें पाहिजे | E | 1 |
| मळिविती तितुकें भक्षिती । ते कठीण काळीं मरोन जानी । | • | |
| ें भवनम् सहस्र । बेल् क्लो | 9 | 1 |

| येहलोकींचा संचितार्थ। | परलोकींचा परमार्थ। |
|--|--------------------------|
| न्धिकार वर्ष । | जात मल । । । |
| ्र अञ्चलने सटेना । | पन्हा जन्मजिन्मी यातना । |
| भागाम मारी वांचविना । | ता आत्महत्यारा । ५ । |
| चित्रकारीं आत्मधात । | कोणें करावें गणीत। |
| राकारणें जन्ममृत्य । | केवी चुक ।१०। |
| देव सकळ कांहीं करितो । | ऐसें प्राणिमात्र बोलतो। |
| त्याचे भेटीचा लाभ तो। | अकस्मात जाला । ११। |
| विवेकाचा लाभ यडे। | जेणें परमात्मा ठाई पड । |
| विवेक पाहातां सांपडे । | विवेकी जनीं ।१२। |
| देव पाहातां आहे येक। | परंतु करितो अनेक। |
| त्या अनेकास येक। | म्हणों नये कीं ।१३। |
| देवाचें कर्तुत्व आणि देव । | कळला पाहिजे अभिप्राव । |
| | उगेच बोलती ।१४। |
| | शाहाणपण वाढायाकारणें। |
| 3 | ऐसें जालें 1१५। |
| जेहीं उदंड कष्ट केले। | त भाग्य भागून ठल। |
| येर ते बोलतचि राहिले। | |
| करंट्याचें करंट लक्षण। | करंट्यास कळेना । १७। |
| | |
| त्याची पैसावली कुबुद्धी । कुबुद्धीं तेचि सुबुद्धी । | _ |
| मनुष्यशुद्धीस सांडावें। | 3111 410 |
| जेथें विचाराच्या नांवें । | |
| | 9 |

विचारें येहलोक परलोक । विचारें होतसे सार्थक । विचारें नित्यानित्यविवेक । पाहिला पाहिजे । २०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'जनस्वभावनिरूपणनाम' समास सातवा समाप्त.

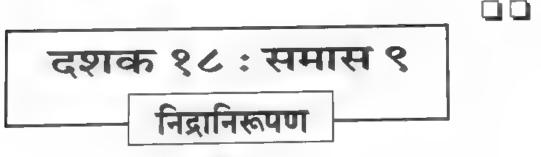
दशक १८: समास ८ अंतर्देवनिरूपण

| ब्रह्म निराकार निश्चळ । आत्म्यास विकार चंचळ | 1 | | |
|--|---|---|---|
| तयास म्हणती सकळ। देव ऐसें | l | 8 | l |
| देवाचा ठावचि लागेना । येक देव नेमस्त कळेना | 1 | | |
| बहुत देवीं अनुमानेना । येक देव | l | २ | 1 |
| म्हणोनी विचार असावा । विचारें देव शोधावा | | | |
| बहुत देवांचा गोवा । पडोंचि नये | l | 3 | 1 |
| देव क्षत्रीं पाहिला । त्यासारिखा धातूचा केला | ١ | | |
| पृथ्वीमधें दंडक चालिला । येणें रीती | l | 8 | I |
| नाना प्रतिमादेवांचे मूळ। तो हा क्षत्रदेवचि केवळ | 1 | | |
| नाना क्षत्रें भूमंडळ । शोधून पाहावें | l | 4 | 1 |
| क्षत्रदेव पाषाणाचा । विचार पाहातां तयाचा | 1 | | |
| तंत लागला मुळाचा । अवताराकडे | ı | Ę | l |
| अवतारी देव संपले। देहे धरुनी वर्तीन गेले | 1 | | |
| | | 9 | ١ |
| त्या तिही देवांस ज्याची सत्ता । तो अंतरात्माचि पाहातां | 1 | | |
| कर्ता भोक्ता तत्वतां। प्रतक्ष आहे | ì | 4 | ı |
| Will Wild and | 4 | | • |

| युगानयुगें तिन्ही लोक । येकचि चालवी अनेक । |
|--|
| हा निश्चयाचा विवेक । वेदशास्त्रीं पाहावा । ९। |
| आत्मा वर्तवितो शरीर। तोचि देव उत्तरोत्तर। |
| जाणीवरूपें कळिवर । विवेकें वर्तवी । १०। |
| तो अंतर्देव चुकती। घांवा घेऊन तीर्था जाती। |
| प्राणी बापुडे कष्टती । देवास नेणतां । ११। |
| मग विचारिती अंत:कर्णीं। जेथें तेथें घोंडा पाणी। |
| उगेंचि वणवण हिंडोनि । काये होतें । १२। |
| ऐसा ज्यासी विचार कळला । तेणें सत्संग धरिला। |
| सत्संगें देव सांपडला। बहुत जनांसी । १३। |
| ऐसीं हे विवेकाचीं कामे । विवेकी जाणतील नेमें। |
| अविवेकी भुलले भ्रमें। त्यांस हें कळेना । १४। |
| अंतरवेधी अंतर जाणे। बाहेरमुद्रा कांहींच नेणे। |
| म्हणोन विवेकी शाहाणे । अंतर शोधिती ।१५। |
| विवेकेंविण जो भाव। तो भावचि अभाव। |
| मूर्खस्य प्रतिमा देव । ऐसे वचन ।१६। |
| पाहात समजत सेवटा गेला । तोचि विवेकी भला। |
| तत्वें सांडुनी पावला । निरंजनीं ।१७। |
| आरे जें आकारासी येतें । तें अवघेंच नासों जाते । मग गल्बल्यावेगळें तें । परब्रह्म जाणावें ।१८। |
| चंचळ देव निश्चळ ब्रह्म । परब्रह्मीं नाहीं भ्रम । |
| प्रत्ययज्ञानें निभ्रम । होईजेतें ।१९। |
| प्रचीतीविण जें केलें। तें तें अवधें वेर्थ गेलें। |
| प्राणी कष्टकष्ट्रोंचि मेले । कर्मकचारें ।२०। |

कर्मावेगळें न व्हावें । तरी देवास कासया भजावें । विवेकी जाणती स्वभावें । मूर्ख नेणे ।२१। कांहीं अनुमानलें विचारें । देव आहे जगदांतरें । सगुणाकरितां निधरिं । निर्गुण पाविजे ।२२। सगुण पाहातां मुळास गेला । सहजिच निर्गुण पावला । संगत्यागें मोकळा जाला । वस्तुरूप ।२३। परमेश्वरीं अनुसंधान । लावितां होईजे पावन । मुख्य ज्ञानेंचि विज्ञान । पाविजेतें ।२४। ऐसीं हे विवेकाचीं विवर्णें । पाहावीं सुचित अंतःकर्णें । नित्यानित्यविवेक श्रवणें । जगदोधार ।२५।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'अंतर्देवनिरूपणनाम' समास आठवा समाप्त.



॥ श्रीराम ॥

वंदूनिया आदिपुरुष । बोलों निद्रेचा विळास ।
निद्रा आलियां सावकास । जाणार नाहीं । १ ।
निद्रेनें व्यापिली काया । आळस आंग मोडे जांभया ।
तेणेंकरितां बैसावया । धीर नाहीं । २ ।
कडकडां जांभया येती । चटचटां चटक्या वाजती ।
डकडकां डुकल्या देती । सावकास । ३ ।
येकाचे डोळे झांकती । येकाचे डोळे लागती ।
येक ते वचकोन पाहाती । चहुंकडे । ४ ।

| EGA |
|--|
| येक उल्थोन पडिले। तिहीं ब्रह्मविणे फोडिले। |
| टकडे जाल । सुधा गहा |
| े रेंकोन बैसले। तेथीच घारा लागल। |
| चेक उताणें पसरले। सावकास । ६। |
| कोणी मुकुँडी घालिती। कोणी कानवडे निजती। |
| कोगी चक्री फिरता। चहुकड |
| रोक हात हालविती । येक पाये हालविती । |
| येक दांत खाती । कर्कराटें । ८। |
| येकाचीं वस्त्रें निघोनि गेलीं । ते नागवींच लोळों लागलीं। |
| येकाचीं मुंडासीं गडबडिलीं । चहुंकडे । १। |
| येक निजेलीं अव्यावेस्तें । येक दिसती जैसीं प्रेतें। |
| दांत पसरुनी जैसीं भूतें । वाईट दिसती ।१०। |
| येक वोसणतिच उठिले । येक अंधारीं फिरों लागले । |
| येक जाऊन निजेले । उकरङ्यावरी ।११। |
| येक मडकी उतरिती। येक भोंई चांचपती। |
| येक उठोन वाटा लागती । भलतीकडे ।१२। |
| येक प्राणी वोसणाती । येक फुंदफुंदों रडती । |
| येक खदखदां हांसती । सावकास । १३। |
| येक हाका मार्र्स लागले । येक बोंबलित उठिले । |
| येक वचकोन राहिले। आपुले ठाईँ। १४। |
| येक क्षणक्षणा खुरडती । येक डोई खाजविती । |
| यक कढों लागती । सावकास । १५१ |
| येकाच्या लाळा गळाल्या । येकाच्या पिका सांडल्या। |
| येकीं लघुशंका केल्या । सावकास |

| बेक राउत सोडिती । येक कर्पट ढेंकर देती । |
|--|
| येक खांकरुनी थुंकिती । भलतीकडे । १७। |
| येक हागती येक वोकिती। येक खोंकिती येक सिंकिती। |
| येक ते पाणी मागती। निदसुऱ्या स्वरें ।१८। |
| येक दुस्वप्नें निर्बुजले। येक सुस्वप्नें संतोषले। |
| येक ते गाढमुढीं पडिले । सुषुप्तिमध्यें ।१९। |
| इकडे उजेडाया जालें । कोण्हीं पढणें आरंभिलें । |
| कोणीं प्रातस्मरामि मांडिलें । हरिकीर्तन ।२०। |
| कोणी आठविल्या ध्यानमूर्ति । कोणी येकांतीं जप करिती । |
| कोणी पाठांतर उजळिती । नाना प्रकारें ।२१। |
| नाना विद्या नाना कळा। आपलाल्या सिकती सकळा। |
| तानमानें गायेनकळा । येक गाती । २२। |
| मागें निद्रा संपली । पुढें जागृति प्राप्त जाली । |
| वेवसाईं बुद्धी आपुली । प्रेरिते जाले । २३। |
| ज्ञाता तत्वे सांडून पळाला । तुर्येपैलिकडे गेला । |
| आत्मनिवेदनें जाला । ब्रह्मरूप । २४। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'निद्रानिरूपणनाम' समास नववा समाप्त.

दशक १८ : समास १०

श्रोताअवलक्षणनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

कोणीयेका कार्याचा साक्षप । कांहीं तऱ्ही घडे विक्षेप । काळ साहें तें आपेंआप । होत जातें । १ ।

| कार्यभाग होत चालिला । तेणें प्राणी शोक जाला | l | | |
|---|---|----|-------------|
| विचारिह सुचों लागला । दिवसेंदिवस | l | २ | ı |
| कोणीयेक प्राणी जन्मासी येतो । कांहीं तन्ही काळ साहें होतो | l | | |
| दुःखाउपरी सुख देतो । देव कृपाळुपणें | l | ş | 1 |
| अवघाचि काळ जरी सजे । तरी अवघेचि होती राजे | ì | | |
| कांहीं सजे कांहीं न सजे। ऐसें आहे | 1 | 8 | 1 |
| येहलोक अथवा परलोक । साधतां कोणीयेक विवेक | ı | | |
| अद्भुत होये स्वाभाविक । देणें ईश्वराचें | l | 4 | 1 |
| ऐकल्याविण कळलें । सिकविल्याविण शहाणपण आलें | 1 | | |
| देखिलें ना ऐकिलें। भूमंडळीं | l | Ę | ł |
| सकळ कांहीं ऐकतां कळे। कळतां कळतां वृत्ति निवळे | l | | |
| नेमस्त मनामधें आकळे। सारासार | l | 9 | 1 |
| श्रवण म्हणिजे ऐकावें । मनन म्हणिजे मनीं धरावें | | | |
| येणें उपायें स्वभावें । त्रयलोक्य चाले | 1 | 6 | 1 |
| श्रवणाआड विक्षेप येती । नाना जिनस सांगों किती | ١ | | |
| सावध असतां प्रत्यय येती । सकळ कांहीं | 1 | 9 | l |
| श्रवणीं लोक बैसले । बोलतां बोलतां येकाग्र जाले | l | | |
| त्याउपरी जे नूतन आले । ते येकाग्र नव्हेती | l | १० | > |
| मनुष्य बाहेर हिंडोनी आलें। नाना प्रकारीचें ऐकिलें | ١ | | |
| उदंड गलबलूं लागलें । उमें असेना | 1 | १ | ŖΙ |
| प्रसंग पाहोन चालती । ऐसे लोक थोडे असती | 1 | | |
| श्रवणीं नाना विक्षेप होती । ते हे ऐका | l | १ | २ । |

| श्रवणीं बैसले ऐकाया। अडों लागलीसें काया। | |
|--|-----|
| येती कडकडां जांभया । निद्राभरें । | १३। |
| बैसले सुचित करूनि मना । परी तें मनचि ऐकेना। | |
| मार्गे होतें ऐकिलें नाना। तेंचि धरुनी बैसलें । | १४। |
| तत्पर केलें शरीर । परी मनामधें आणीक विचार । | |
| कल्पना कल्पी तो विस्तार । किती म्हणोनी सांगावा । | १५। |
| जें जें कांहीं श्रवणीं पडिलें । तितुकें समजोन विवरलें। | |
| तरीच कांहीं सार्थक जालें। निरूपणीं | १६। |
| मन दिसतें मां धरावें। ज्याचें त्यानें आवरावें। | |
| आवरून विवेकें घरावें । अर्थांतरीं । | १७। |
| निरूपणीं येऊन बैसला । परी तो उदंड जेऊन आला । | |
| 9 | १८। |
| आधीं उदक आणिवलें । घळघळां उदंड घेतलें । | |
| तेणें मळमळूं लागलें । उठोनी गेला । | १९। |
| कर्पट ढेंकर उचक्या देती । वारा सरतां मोठी फजिती । | |
| क्षणाक्षणा उठोनी जाती । लघुशंकेसी । | २०। |
| दिशेनें कासावीस केला। आवधेंचि सांडून धांविला। | |
| निरूपणप्रसंगीं निघोनी गेला । अखंड ऐसा । | २१। |
| दृष्टांतीं कांहीं अपूर्व आलें । अंतः कर्ण तेथेंचि राहिलें। | |
| कोठवरी काये वाचिलें। कांहीं कळेना | २२। |
| निरूपणीं येऊन बैसला। तो विंचुवें फणकाविला। | |
| कैंचें निरूपण जाला । कासावीस । | 189 |

| पोटामधें तिडिक उठिली। पाठीमधें करक भरली | 1 |
|---|------|
| चालक चिखल्या पुळी जाली । बैसवेना | 1881 |
| पिसोळा चाऊन पळाला । तेणें प्राणी दुश्रीत जाला | 1 |
| कोणें नेटें गल्बला केला । तेथेंचि धांवें | 1241 |
| विषई लोक श्रवणीं येती। ते बायेकांकडेच पाहाती | 1 |
| चोरटे लोक चोरून जाती। पादरक्षा | 1351 |
| होये नव्हे वादवेवाद । तेणें उदंड जाला खेद | 1 |
| सिव्या गाळी अप्रमाद । होतां चुकला | 1२७। |
| कोणी निरूपणीं बैसती । सावकास गोष्टी लाविती | 1 |
| हरिदास ते रें रें करिती । पोटासाठीं | 1261 |
| बहुत जाणते मिळाले । येकापुढें येक बोले | |
| लोकांचे आशये राहिले । कोण जाणे | 1561 |
| माझें होये तुझें नव्हे । ऐसी अखंड जयास सवे | |
| न्याये नीति सांडून घांवे । अन्यायाकडे | 1301 |
| आपल्या थोरपणासाठीं । अच्यावाच्या तोंड पिटी | 1 |
| न्याये नाहीं ते सेवटीं। परम अन्याई | 1361 |
| येकेकडे अभिमान उठे । दुसरेकडे उदंड पेटे | 1 |
| ऐसे श्रोते खरे खोटे । कोण जाणे | 1351 |
| म्हणोन जाणते विचक्षण । ते आधींच धरिती नेणपण | 1 |
| मूर्ख टोणपा आपण । कांहींच नाहीं | 1331 |
| आपणाहून देव थोर । ऐसा जयास कळला विचार | 1 |
| सकळ कांहीं जगदांतर । तेहिं राखावें | 1381 |

| सभेमधें कळहो जाला। शब्द येतो जाणत्याला। |
|--|
| अंतरें राखों नाहीं सिकला । कैसा योगी |
| वैर करितां वैरचि वाढे । आपणास दुःख भोगणें घडे । |
| |
| |
| अखंड आपणा सांभाळिती । क्षुल्लकपण येऊं नेदिती । |
| थोर लोकांस क्ष्मा शांति । अगत्य करणें ।३७। |
| अवगुणापासीं बैसला गुणी । आवगुण कळतो ततक्षणीं । |
| विवेकी पुरुषाची करणी। विवेकें होते ।३८। |
| उपाये परियाये दीर्घ प्रेत्न । विवेकबळें नाना येत्न । |
| |
| |
| दुर्जनी वेवदरून घेतला। बाश्कळ लोकीं घसरिला। |
| विवेकापासून चेवला। विवेकी कैसा ।४०। |
| न्याये परियाये उपाये। मूर्खास हें कळे काये। |
| मूर्खाकरितां चिवडा होये । मज्यालसीचा ।४१। |
| मग ते शाहाणे नीट करिती । स्वयें साहोन साहिवती । |
| |
| स्वयें करून करविती । लोकांकरवीं ।४२। |
| पृथ्वीमधें उदंड जन। जनामधें असती सज्जन। |
| जयांकरितां समाधान । प्राणीमात्रांसी ।४३। |
| तो मनोगतांची आंगें जाणे । मान प्रसंग समये जाणे। |
| संतप्तालागीं निवजं जाणे । नाना प्रकारें ।४४। |
| |
| ऐसा तो जाणता लोक । समर्थ तयाचा विवेक । |
| त्याचें करणें कांहीं येक । जनास कळेना ।४५। |
| |
| |

बहुत जनास चालवी । नाना मंडळें हालवी । हे समर्थपदवी । विवेकें होते 1881 ऐसी विवेक एकांतीं करावा । जगदीश धारणेनें धरावा । लोक आपला आणी परावा । म्हणोंचि नये 1891 येकांतीं विवेक ठाईं पडे। येकांती येत्न सांपडे। येकांती तर्क वावडे । ब्रह्मांडगोळीं 1881 येकांतीं स्मरण करावें। चुकलें निधान पडे ठावें। अंतरात्म्यासरिसें फिरावें । कांहीं तरी 1881 जयास येकांत मानला । अवघ्या आधीं कळें त्याला । त्यावेगळें वडिलपणाला । ठावचि नाहीं 1401

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'श्रोताअवलक्षणनिरूपणनाम' समास दहावा समाप्त.

दशक अठरावा समाप्त

दशक एकोणिसावा : सिकवणनाम

दशक १९: समास १

लेखनक्रियानिरूपण

| ब्राह्मणें बाळबोध अक्षर । घडसुनी करावें सुंदर | | | |
|--|---|---|---|
| जें देखतांचि चतुर । समाधान पावती | ١ | 8 | ١ |
| वाटोळें सरळें मोकळें। वोतलें मसीचें काळे | 1 | | |
| कुळकुळीत वळी चालिल्या ढाळें । मुक्तमाळा जैशा | 1 | ? | ł |
| अक्षरमात्र तितुकें नीट । नेमस्त पैस काने नीट | 1 | | |
| आडव्या मात्रा त्याहि नीट । आर्कुलीं वेलांड्या | 1 | 3 | l |
| पहिलें अक्षर जें काढिलें । ग्रंथ संपेतों पाहात गेलें | | | |
| येका टांकेंचि लिहिलें। ऐसें वाटे | | 8 | I |
| अक्षराचें काळेपण । टांकांचें ठोसरपण | | | |
| तैसेंचि वळण वांकाण । सारिखेंचि | | ધ | Į |
| वोळीस वोळी लागेना । आर्कुली मात्रा भेदीना | | | |
| खालीले वोळीस स्पर्शेना । अथवा लंबाक्षर | | É | 1 |
| पान शिषानें रेखाटावें । त्यावरी नेमकचि ल्याहावें | l | | |
| दुरी जवळी न व्हावें । अंतर वोळीचें | 1 | 9 | 1 |
| कोठें शोधासी आडेना । चुकी पाहातां सांपडेना | 1 | | |
| 9 | | 6 | 1 |
| ज्याचें वय आहे नूतन । त्यानें ल्याहावें जपोन | 1 | | |
| जनासी पडे मोहन । ऐसें करावें | 1 | 9 | 1 |

बहु बारिक तरुणपणीं । कामा नये म्हातारपणीं । मध्यस्त लिहिण्याची करणी । केली पाहिजे भोंवतें स्थळ सोडून द्यावें । मधेंचि चमचिमत ल्याहावें । कागद झडतांहि झडावें । नलगेचि अक्षर । ११। ऐसा ग्रंथ जपोनि ल्याहावा । प्राणीमात्रांस उपजे हेवा। ऐसा पुरुष तो पाहावा । म्हणती लोक । १२। काया बहुत कष्टवावी । उत्कट कीर्ति उरवावी । चटक लाउनी सोडावी। कांहीं येक 1831 घट्य कागद आणावे। जपोन नेमस्त खळावे। लिहिण्याचे सामे असावे । नानापरी 1881 सुऱ्या कातऱ्या जागाईत । खळी घोंटाळें तागाईत । नाना सुरंग मिश्रित । जाणोनि घ्यावें । १५। नाना देसीचे बरु आणावे । घटी बारिक सरळे घ्यावे । नाना रंगाचे आणावे । नाना जिनसी 1 १ ६ । नाना जिनसी टांकतोडणी । नाना प्रकारें रेखाटणी। चित्रविचित्र करणी । सिसेंलोळ्या । १७। हिंगुळ संप्रहीं असावे । वाळले आळिते पाहोन घ्यावे । सोपें भिजउनी वाळवावे । संग्रह मसीचे । १८। तगटी इतिश्रया कराव्या । बंदरी फळ्या घोटाव्या । नाना चित्रीं चिताराव्या । उंच चित्रें 1881 नाना गोप नाना बासनें । मेणकापडें सिंदुरवर्णे । पेट्या कुलपें जपणें। पुस्तकाकारणें ।२०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'लेखनक्रियानिरूपणनाम' समास पहिला समाप्त.

दशक १९: समास २

विवरणनिरूपण

| मागां बोलिले लेखनभेद । आतां ऐका अर्थभेद । |
|---|
| नाना प्रकारीचे संवाद । समजोन घ्यावे । १ । |
| शब्दभेद अर्थभेद । मुद्राभेद प्रबंधभेद । |
| नाना शब्दाचे शब्दभेद । जाणोनी पाहावे । २ । |
| नाना आशंका प्रत्योत्तरें । नाना प्रचित साक्षात्कारें । |
| जेणेंकरितां जगदांतरें। चमत्कारती । ३। |
| नाना पूर्वपक्ष सिद्धांत । प्रत्ययो पाहावा नेमस्त । |
| अनुमानाचें खस्तवेस्त । बोलोंचि नये । ४ । |
| प्रवृत्ति अथवा निवृत्ती । प्रचितीविण अवधी भ्रांती । |
| गळंग्यांमधील जगज्जोति । चेतेल कोठें । ५ । |
| हेत समजोन उत्तर देणें । दुसऱ्याचे जीवीचें समजणें । |
| मुख्य चातुर्याचीं लक्षणें। तें हें ऐसीं । ६। |
| चातुर्येविण खटपट । ते विद्याचि फलकट । |
| सभेमधें आटघाट । समाघान कैंचें । ७ । |
| बहुत बोलणें ऐकावें। तेथें मोन्यचि धरावें। |
| अल्पचिन्हें समजावें। जगदांतर । ८। |
| बाष्कळांमधें बैसों नये। उद्धटासीं तंडों नये। |
| आपणाकरितां खंडों नये । समाधान जनाचें । १। |
| नेणतपण सोडूं नये । जाणपणें फुगों नये । नाना जनांचें हृदये । मृद शब्दें उकलावें । १०। |
| गाम अनाम हृदय । भृद शब्द उक्तलाव । १०। |

| प्रसंग जाणावा नेटका । बहुतांसी जाझु घेऊं नका । |
|---|
| करें असतांचि नासका । फड हाता । १११। |
| नेक चेनां आलमों नये । भ्रष्ट लोकीं बैसों नये । |
| बैसलें तरी टाकूं नये। मिथ्या दोष । १२। |
| अंतर आर्ताचें शोधावें । प्रसंगीं थोडेंचि वाचावें । |
| चटक लाउनी सोडावें। भल्या मनुष्यासी ।१३। |
| मज्यालसींत बैसों नये। समाराधनेसी जाऊं नये। |
| जातां येळीलवाणें होये । जिणें आपुलें । १४। |
| |
| उत्तम गुण प्रगटवावे । मग भलत्यासी बोलतां फावे । |
| भले पाहोन करावे । शोधून मित्र । १५। |
| उपासनेसारिखें बोलावें । सर्व जनासी तोषवावें । |
| सगट बरेंपण राखावे । कोण्हीयेकासी । १६। |
| ठाईं ठाईं शोध घ्यावा । मग ग्रामीं प्रवेश करावा । |
| |
| प्राणीमात्र बोलवावा । आप्तपणें । १७। |
| |
| प्राणामात्र बालवावा । आप्तपण । १९७। उंच नीच म्हणों नये । सकळांचें निववावें हृदये । अस्तमानीं जाऊं नये । कोठें तऱ्हीं । १८। |
| उंच नीच म्हणों नये। सकळांचें निववावें हृदये। अस्तमानीं जाऊं नये। कोठें तऱ्हीं ।१८। |
| उंच नीच म्हणों नये। सकळांचें निववावें हृदये। अस्तमानीं जाऊं नये। कोठें तऱ्हीं ।१८। जगामधें जगमित्र। जिव्हेपासीं आहे सूत्र। |
| उंच नीच म्हणों नये। सकळांचें निववावें हृदये। अस्तमानीं जाऊं नये। कोठें तऱ्हीं ।१८। जगामधें जगमित्र। जिव्हेपासीं आहे सूत्र। कोठें तऱ्ही सत्पात्र। शोधून काढावें ।१९। |
| उंच नीच म्हणों नये। सकळांचें निववावें हृदये। अस्तमानीं जाऊं नये। कोठें तन्हीं ।१८। जगामधें जगमित्र। जिव्हेपासीं आहे सूत्र। कोठें तन्ही सत्पात्र। शोधून काढावें ।१९। कथा होती तेथें जावें। दुरी दीनासारिखें बैसावें। |
| उंच नीच म्हणों नये। सकळांचें निववावें हृदये। अस्तमानीं जाऊं नये। कोठें तन्हीं ।१८। जगामधें जगमित्र। जिव्हेपासीं आहे सूत्र। कोठें तन्ही सत्पात्र। शोधून काढावें ।१९। कथा होती तेथें जावें। दुरी दीनासारिखें बैसावें। तेथील सकळ हरद्र घ्यावें। अंतर्यामीं ।२०। |
| उंच नीच म्हणों नये। सकळांचें निववावें हृदये। अस्तमानीं जाऊं नये। कोठें तऱ्हीं ।१८। जगामधें जगमित्र। जिव्हेपासीं आहे सूत्र। कोठें तऱ्ही सत्पात्र। शोधून काढावें ।१९। कथा होती तेथें जावें। दुरी दीनासारिखें बैसावें। तेथील सकळ हरद्र घ्यावें। अंतर्यामीं ।२०। तेथें भलें आडळती। व्यापक तेहि कळों येती। |
| उंच नीच म्हणों नये। सकळांचें निववावें हृदये। अस्तमानीं जाऊं नये। कोठें तन्हीं ।१८। जगामधें जगिमत्र। जिव्हेपासीं आहे सूत्र। कोठें तन्ही सत्पात्र। शोधून काढावें ।१९। कथा होती तेथें जावें। दुरी दीनासारिखें बैसावें। तेथील सकळ हरद्र घ्यावें। अंतर्यामीं ।२०। तेथें भलें आडळती। व्यापक तेहि कळों येती। हळुहळु मंदगती। रीग करावा ।२१। |
| उंच नीच म्हणों नये। सकळांचें निववावें हृदये। अस्तमानीं जाऊं नये। कोठें तऱ्हीं ।१८। जगामधें जगमित्र। जिव्हेपासीं आहे सूत्र। कोठें तऱ्ही सत्पात्र। शोधून काढावें ।१९। कथा होती तेथें जावें। दुरी दीनासारिखें बैसावें। तेथील सकळ हरद्र घ्यावें। अंतर्यामीं ।२०। तेथें भलें आडळती। व्यापक तेहि कळों येती। |

धूर्तपणें सकळ जाणावें। अंतरीं अंतर बाणावें। समजल्याविण सिणावें। कासयासी ।२३।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'विवरणनिरूपणनाम' समास दुसरा समाप्त.

दशक १९: समास ३

करंटलक्षणनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

सुचित करुनी अंतःकर्ण। ऐका करंटलक्षण। हें त्यागितां सदेवलक्षण । आंगीं बाणे 181 पापाकरितां दरिद्र प्राप्त । दरिद्रें होये पापसंचित । ऐसेंचि होत जात । क्षणक्षणां 1 5 1 याकारणें करंटलक्षणें। ऐकोनी त्यागचि करणें। म्हणिजे कांहीं येक बाणे । सदेवलक्षण 1 \$ 1 करंट्यास आळस आवडे । यत्न कदापी नावडे । त्याची वासना वावडे । अधर्मी सदा 181 सदा भ्रमिष्ट निदसुरा। उगेचि बोले सैरावैरा। कोणीयेकाच्या अंतरा । मानेचिना 141 लेहों नेणे वाचूं नेणे । सवदासुत घेऊं नेणे । हिशेब कितेब राखों नेणे । घारणा नाहीं 1 4 1 हारवी सांडी पाडी फोडी । विसरे चुके नाना खोडी । भल्याचे संगतीची आवडी । कदापी नाहीं 101 चाट गडी मेळविले । कुकर्मी मित्र केले । खट नट येकवटिले । चोरटे पापी

| ज्यासीं त्यासीं कळकटा । स्वयें सदाचा चोरटा। |
|--|
| परघातकी घाटामोटा । वाटा पाडी |
| दीर्घ सूचना सुचेचिना। न्याय नीति हे रुचेना। |
| परअभिळासीं वासना । निरंतर ।१०। |
| आळसें शरीर पाळिलें। परंतु पोटेंविण गेलें। |
| सुडकें मिळेनासें जालें। पांघराया ।११। |
| आळसें शरीर पाळी । अखंड कुंसी कांडोळी । |
| निद्रेचे पाडी सुकाळीं। आपणासी ।१२। |
| जनासीं मीत्री करीना । कठीण शब्द बोले नाना । |
| मूर्खपणें आवरेना । कोणीयेकासी । १३। |
| पवित्र लोकांमधें भिडावे । वोंगळामधें निशंक धांवे । |
| सदा मनापासून भावे। जननिंद्य क्रिया ।१४। |
| तेथें कैंचा परोपकार । केला बहुतांचा संव्हार । पापी अनर्थी अपस्मार । सर्व अबद्धी । १५। |
| शब्द सांभाळून बोलेना । आवरितां आवरेना । |
| कोणीयेकासी मानेना । बोलणें त्याचें । १६। |
| कोणीयेकास विश्वास नाहीं । कोणीयेकासीं सख्य नाहीं । |
| विद्या वैभव कांहींच नाहीं । उगाचि ताठा । १७। |
| राखावीं बहुतांचीं अंतरें। भाग्य येतें तदनंतरें। |
| ऐसीं हे विवेकाचीं उत्तरें । ऐकणार नाहीं । १८। |
| स्वयें आपणास कळेना । सिकविलें तें ऐकेना । |
| तयासी उपाय नाना । काये करिती ।१९। |
| कल्पना करी उदंड कांहीं । प्राप्तव्य तों कांहींच नाहीं। |
| अखंड पडिला संदेहीं । अनुमानाचे ।२०। |

| पुण्यमार्ग सांडिला मनें । पाप झडावें का | शानें । |
|---|----------|
| निश्चय नाहीं अनुमानें । नास केला | 1561 |
| कांहींयेक पुर्तें कळेना । सभेमधें बोलों रा | हेना। |
| बाष्कळ लाबाड ऐसें जना । कळों आलें | |
| कांहीं नेमकपण आपुलें। बहुत जनासी कळों उ | भालें । |
| तेंचि मनुष्य मान्य जालें । भूमंडळीं | 1831 |
| झिजल्यावांचुनी कीर्ति कैंची । मान्यता नव्हे कीं फुव | गची । |
| जिकडे तिकडे होते ची ची । अवलक्षणें | 1881 |
| भल्याची संगती धरीना । आपणासी शाहाणे क | रीना । |
| तो आपला आपण वैरी जाणा । स्वहित नेणे | |
| लोकांसी बरें करावें । तें उसिणें सर्वेचि ह | यावें । |
| ऐसें जयाच्या जीवें । जाणिजेना | 1761 |
| जेथें नाहीं उत्तम गुण । तें करंटपणाचें ल | क्षण । |
| बहुतांसी न मने तें अवलक्षण । सहजचि जालें | 1291 |
| कार्याकारण सकळ कांहीं। कार्येविण तों कांहींच | नाहीं । |
| निकामी तो दुःखप्रवाहीं। वाहातचि गेला | |
| बहुतांसीं मान्य थोडा । त्याच्या पापासी नाहीं | जोडा । |
| निराश्रई पडे उघडा । जेथे तेथें | 1291 |
| याकारणें अवगुण त्यागावे । उत्तम गुण समजोन | व्यावे । |
| तेणें मनासारिखें फावे। सकळ कांहीं | 1301 |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'करंटलक्षणनिरूपणनाम' समास तिसरा समाप्त.

दशक १९: समास ४

सदेवलक्षणनिरूपण

| मागां बोलिलें करंटलक्षण । तें विवेकें सांडावे सपूर्ण | 1 | | |
|--|----|-----|---|
| आतां ऐका सदेव लक्षण । परम सौख्यादायेक | | 8 | ŧ |
| उपजतगुण शरीरीं । परोपकारी नानापरी | 1 | | |
| आवडे सर्वांचे अंतरीं। सर्वकाळ | | 7 | ı |
| सुंदर अक्षर लेहों जाणे । चपळ शुद्ध वाचूं जाणे | l | | |
| अर्थांतर सांगों जाणे । सकळ कांहीं | t | 3 | 1 |
| कोणाचें मनोगत तोडीना । भल्यांची संगती सोडीना | E | | |
| सदेवलक्षण अनुमाना । आणून ठेवी | ŧ | 8 | 1 |
| तो सकळ जनासी व्हावा । जेथें तेथें नित्य नवा | i | | |
| मूर्खपणें अनुमानगोवा । कांहींच नाहीं | 1 | 4 | 1 |
| नाना उत्तम गुण सत्पात्र । तेचि मनुष्य जगमित्र | 1 | | |
| प्रगट कीर्ती स्वतंत्र । पराधेन नाहीं | l | Ę | 1 |
| राखे सकळांचें अंतर । उदंड करी पाठांतर | l | | |
| नेमस्तपणाचा विसर । पडणार नाहीं | l | 9 | ŧ |
| नम्रपणें पुसों जाणे । नेमस्त अर्थ सांगों जाणे | 1 | | |
| बोलाऐसें वर्तें जाणे । उत्तम क्रिया | l | ሪ | 1 |
| जो मानला बहुतांसी । कोणी बोलों न शके त्यासी | l | | |
| धगधगीत पुण्यरासी । माहांपुरुष | | 8 | ı |
| तो परोपकार करितांचि गेला । पाहिजे तो ज्याला त्याला | ı | | |
| मग काये उणें तयाला। भूमंडळीं | 11 | 8 0 | 1 |

| बहुत जन वास पाहे। वेळेसी तत्काळ उभा राहे। |
|--|
| उणें कोणाचें न साहे। तया पुरुषासी ।११। |
| चौदा विद्या चौसष्टी कळा । जाणे संगीत गायेनकळा । |
| आत्मविद्येचा जिव्हाळा । उदंड तेथें ।१२। |
| सकळांसी नम्र बोलणें। मनोगत राखोन चालणें। |
| अखंड कोणीयेकाचें उणें। पडोंचि नेदी ।१३। |
| न्याय नीति भजन मर्यादा । काळ सार्थक करी सदा । |
| दरिद्रपणाची आपदा । तेथें कैंची ।१४। |
| उत्तमगुणें शृंघारला। तो बहुतांमधें शोभला। |
| प्रगट प्रतापें उगवला । मार्तंड जैसा । १५। |
| जाणता पुरुष असेल जेथें। कळहो कैंचा उठेल तेथें। |
| उत्तम गुणाविषीं रितें। तें प्राणी करंटें ।१६। |
| प्रपंचीं जाणे राजकारण । परमार्थीं साकल्य विवरण । |
| सर्वांमधें उत्तम गुण । त्याचा भोक्ता ।१७। |
| मार्गे येक पुढें येक । ऐसा कदापी नाहीं दंडक । |
| सर्वत्रांसीं अलोलिक । तया पुरुषाची ।१८। |
| अंतरासी लागेल ढका । ऐसी वर्तणूक करूं नका । |
| जेथें तेथें विवेका। प्रकट करी । १९। |
| कर्मविधी उपासनाविधी। ज्ञानविधी वैराग्यविधी। |
| विशाळ ज्ञात्रुत्वाची बुद्धी । चळेल कैसी ।२०। |
| पाहातां अवधे उत्तम गुण । तयास वाईट म्हणेल कोण। |
| जैसा आत्मा संपूर्ण। सर्वा घटीं ।२१। |
| आपल्या कार्यास तत्पर। लोक असती लाहानथोर। |
| तैसाचि करी परोपकार । मनापासुनी । २२। |
| |

| दुसऱ्याच्या दुःखें दुखवे । दुसऱ्याच्या सुखें सुखावे। |
|--|
| आवधेचि सुखी असावे । ऐसी वासना । २३। |
| उदंड मुलें नानापरी । वडिलांचें मन अवध्यांवरी । |
| तैसी अवध्यांची चिंता करी । माहांपुरुष । २४। |
| जयास कोणाचें सोसेना। तयाची निःकांचन वासना। |
| धीकारिल्यां धीकारेना । तोचि माहांपुरुष ।२५। |
| मिथ्या शरीर निंदलें। तरी याचें काये गेलें। |
| ज्ञात्यासी आणि जिंतिलें । देहेबुद्धीनें । २६। |
| हें अवधें अवलक्षण । ज्ञाता देहीं विलक्षण । |
| कांहीं तऱ्ही उत्तम गुण । जनीं दाखवावे ।२७। |
| उत्तम गुणास मनुष्य वेधे । वाईट गुणासी प्राणी खेदे । |
| तीक्षण बुद्धि लोक साधे। काये जाणती । २८। |
| लोकीं अत्यंत क्षमा करिती । आलियां लोकांचे प्रचिती । |
| मग ते लोक पाठी राखती। नाना प्रकारीं ।२९। |
| बहुतांसी वाटे मी थोर । सर्वमान्य पाहिजे विचार । |
| धीर उदार गंभीर। माहांपुरुष ।३०। |
| जितुके कांहीं उत्तम गुण। तें समर्थाचें लक्षण। |
| अवगुण तें करंटलक्षण । सहजचि जालें ।३१। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सदेवलक्षणनिरूपणनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक १९: समास ५

देहेमान्यनिरूपण

| मातीचे देव धोंड्याचे देव । सोन्याचे देव रुप्याचे देव | l | | |
|---|---|----|---|
| काशाचे देव पितळेचे देव । तांब्याचे देव चित्रलेपें | 1 | 8 | 1 |
| रुविच्या लांकडाचे देव पोंवळ्यांचे देव । बाण तांदळे नर्मदे देव | | | |
| शालियाम काश्मिरी देव । सूर्यकांत सोमकांत | l | 5 | I |
| तांब्रनाणीं हेमनाणीं । कोणी पूजिती देवार्चनीं | | | |
| चक्रांगीत चक्रतीर्थाहुनी । घेऊन येती | l | ş | 1 |
| उदंड उपासनेचे भेद । किती करावे विशद | 1 | | |
| आपलाले आवडीचा वेघ। लागला जनीं | l | 8 | l |
| परी त्या सकळांचेंहि कारण । मुळीं पाहावें स्मरण | | | |
| तया स्मरणाचे अंश जाण । नाना देवतें | l | ų | l |
| मुळीं द्रष्टा देव तो येक । त्याचे जाहाले अनेक | 1 | | |
| समजोन पाहातां विवेक । उमजों लागे | l | Ę | ı |
| देह्यावेगळी भक्ति फावेना । देह्यावेगळा देव पावेना | 1 | | |
| याकारणें मूळ भजना । देहेचि आहे | ı | 9 | l |
| देहे मुळींच केला वाव। तरी भजनासी कैंचा ठाव | 1 | | |
| म्हणोनी भजनाचा उपाव । देह्यात्मयोगें | 1 | 6 | Į |
| देहेंविण देव कैसा भजावा । देहेंविण देव कैसा पुजावा | ı | | |
| देह्याविण मोहछाव कैसा करावा । कोण्या प्रकारें | | 8 | l |
| अत्र गंध पत्र पुष्प। फल तांबोल धूप दीप | 1 | | |
| नाना भजनाचा साक्षेप । कोठें करावा | | 80 | ı |

| देवाचें तीर्थ कैसें घ्यावें । देवासी गंध कोठें लावावें। |
|---|
| · |
| |
| म्हणोनी देह्याविण आडतें। अवधें सांकडेंचि पडतें। |
| देह्याकरितां घडतें । भजन कांहीं । १२। |
| देव देवता भूतें देवतें । मुळींचें सामर्थ्य आहे तेथें। |
| अधिकारें नाना देवतें। भजत जावीं ।१३। |
| नाना देवीं भजन केलें। तें मूळ पुरुषासी पावलें। |
| नाना द्या भजन कल । त मूळ पुरुषासा पावल । |
| याकारणें सन्मानिलें। पाहिजे सकळ कांहीं ।१४। |
| मायावल्ली फांपावली। नाना देहेफळीं लगडली। |
| मुळींची जाणीव कळों आली । फळामधें ।१५। |
| म्हणोनी येळील न करावें । पाहाणें तें येथेंचि पाहावें। |
| |
| |
| प्राणी संसार टाकिती । देवास धुंडीत फिरती । |
| नाना अनुमानीं पडती । जेथ तेथें । १७। |
| लोकांची पाहातां रीती। लोक देवार्चनें करिती। |
| अथवा क्षत्रदेव पाहाती । ठाईं ठाईं ।१८। |
| |
| अथवा नाना अवतार । ऐकोनी धरिती निर्धार । |
| परी तें अवधें सविस्तर । होऊन गेलें ।१९। |
| येक ब्रह्मविष्णुमहेश । ऐकोन म्हणती हे विशेष । |
| गुणातीत जो जगदीश । तो पाहिला पाहिजे ।२०। |
| देवासी नाहीं थानमान । कोठें करावें भजन । |
| हा विचार पाहातां अनुमान । होत जातो ।२१। |
| |
| नसतां देवाचें दर्शन । कैसेन होईजे पावन । |
| धन्य धन्य ते साधुजन । सकळ जाणती ।२२। |

| 4)(|
|--|
| भूमंडळीं देव नाना । त्यांची भीड उलंघेना । |
| गुज्य प्रा पाळना किहा केल्या |
| कर्तृत्व वेगळें करावें। मग त्या देवासी पाहावें। तरीच कांहीयेक पडे ठावें। गोप्यगुह्य |
| तें दिसेना ना भासेना। कल्यांनीनि |
| सुकृतावगळ विश्वासेना । तेथें मन |
| उदंड काल्पत कल्पना । उदंह कि |
| अन्यातरा तरग नाना । उदयाते पावती |
| म्हणोनी कल्पनारहित । तेचि वस्तु शाश्वत । अंत नाहीं म्हणोनी अनंत । बोलिजे तथा |
| हें ज्ञानदृष्टीनें पाहावें । पाहोनी तेथेंचि राहावें। |
| निजध्यास तद्रूप व्हार्व । संगत्यामें |
| नाना लीळा नाना लाघवें । तें काये जाणिजे बापुड्या जीवें । |
| सतसग स्वानुभव । स्थिति बाणे ।२९। |
| ऐसी सूक्ष्म स्थिती गती । कळतां चुके अधोगती। सद्गुरुचेनि सदगती । तत्काळ होते |
| सद्गुरुचीन सद्गती । तत्काळ होते ।३०। |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'देहेमान्यनिरूपणनाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक १९: समास ६ बुद्धिवादनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

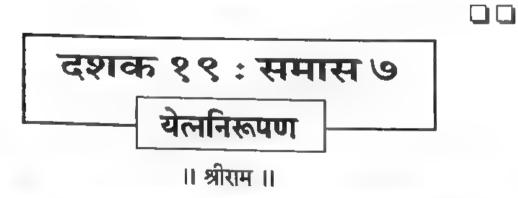
परमार्थी आणि विवेकी । त्याचें करणें माने लोकीं। कां जे विवरविवरों चुकी । पडोंचि नेदी । १।

| जो जो संदेह वाटे जना। तो तो कदापी करीना। |
|---|
| आदिअंत अनुमाना । आणून सोडी । २ |
| स्वतां निस्पृह असेना । त्याचें बोलणेंचि मानेना । |
| कठीण आहे जनार्दना । राजी राखणें । ३ । |
| कोणी दादून उपदेश देती । कोणी मध्यावर्ती घालिती । |
| ते सहजचि हळु पडती। लालचीनें । ४। |
| जयास सांगावा विवेक । तोचि जाणावा प्रतिकुंचक । |
| पुढें पुढें नासक । कारबार होतो । ५ । |
| भावास भाऊ उपदेश देती । पुढें पुढें होते फजीती । |
| वोळखीच्या लोकांत महंती । मांडूंचि नये । ६ । |
| पहिलें दिसे परी नासे। विवेकी मान्य करिती कैसे। |
| अविवेकी ते जैसे तैसे। मिळती तेथें। ७। |
| भ्रतार शिष्य स्त्री गुरु । हाहि फटकाळ विचारु । |
| नाना भ्रष्टाकारी प्रकारु । तैसाचि आहे । ८ । |
| प्रगट विवेक बोलेना । झांकातापा करी जनां । |
| मुख्य निश्चय अनुमाना । आणूंच नेदी । ९ । |
| हुकीसरिसा भरीं भरे। विवेक सांगतां न धरे। |
| दुरीदृष्टीचे पुरे। साधु नव्हेती ।१०। |
| कोण्हास कांहींच न मागावें । भगवद्भजन वाढवावें। |
| विवेकबळें जन लावावे। भजनाकडे । ११। |
| परांतर रक्षायाचीं कामें । बहुत कठिण विवेकवर्में । स्वइछेनें स्वधर्में । लोकराहाटी ।१२। |
| स्वइंछने स्वधर्मे । लोकराहाटी । १२। |

| आपण तुरुक गुरु केला । शिष्य चांभार मेळिवल | TI |
|--|----------|
| नीच यातीनें नासला । समुदाव | 1831 |
| ब्राह्मणमंडळ्या मेळवाव्या । भक्तमंडळ्या मानाळ्य | Πı |
| संतमंडळ्या शोधाव्या । भूमंडळीं | 1881 |
| उत्कट भव्य तेंचि घ्यावें । मळमळीत अवधेंचि टाका | वें । |
| निस्पृहपणें विख्यात व्हावें । भूमंडळीं | 1841 |
| अक्षर बरें वाचणें बरें। अर्थांतर सांगणें ब | रें। |
| गाणें नाचणें अवधेंचि बरें । पाठांतर | 1 १६ । |
| दीक्षा बरी मीत्री बरी। तीक्ष्ण बुधी राजकारणी बर | री । |
| आपणास राखे नानापरी । अलिप्तपणें | 1801 |
| अखंड हरिकथेचा छंदु । सकळांस लागे नामवे | र द । |
| प्रगट जयाचा प्रबोधु । सूर्य जैसा | ।१८। |
| दुर्जनासी राखों जाणे । सज्जनासी निवकं जाण | • |
| सकळांचे मनीचें जाणे। ज्याचें त्यापरी | 1881 |
| संगतीचें मनुष्य पालटे। उत्तम गुण तत्काळ उत | 3 1 |
| अखंड अभ्यासीं लगटे। समुदाव | 1301 |
| जेथें तेथें नित्य नवा। जनासी वाटे हा असाव | T 1 |
| परंतु लालचीचा गोवा। पडोंचि नेदी | 1281 |
| उत्कट भक्ति उत्कट ज्ञान । उत्कट चातुर्य उत्कट भजन | 71 |
| उत्कट योग अनुष्ठान । ठाई ठाई | 1221 |
| उत्कट निस्पृहता धरिली । त्याची कीर्ति दिगांतीं फांकर्ल | 1771 |
| उत्कट भक्तीनें निवाली । जनमंडळी | 1531 |
| | |

कांहीं येक उत्कटेविण । कीर्ति कदापि नव्हे जाण । उगेंच वणवण हिंडोन । काये होतें 1881 नाहीं देह्याचा भरंवसा। केव्हां सरेल वयसा। प्रसंग पडेल कैसा। कोण जाणे ।२५। याकारणें सावधान असावें । जितुकें होईल तितुकें करावें। भगवत्कीर्तीनें भरावें । भूमंडळ । २६। आपणास जें जें अनकूळ । तें तें करावें तात्काळ । होईना त्यास निवळ । विवेक उमजावा । २७। विवेकामधें सांपडेना । ऐसें तो कांहींच असेना । येकांतीं विवेक अनुमाना । आणून सोडी । २८। अखंड तजवीजा चाळणा जेथें । पाहातां काय उणें तेथें। येकांतेंविण प्राणीयांतें । बुद्धि कैसी 1231 येकांती विवेक करावा । आत्माराम वोळखावा । येथून तेथवरी गोवा । कांहींच नाहीं ।३०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'बुद्धिवादनिरूपणनाम' समास सहावा समाप्त.



कथेचें घमंड भरून द्यावें। आणी निरूपणीं विवरावें। उणें पडोंचि नेदावें। कोणीयेकविषीं। १।

| भ्रेजणार खालें पडिला । तो भ्रेजणारीं जाणितला । |
|--|
| नेणता लोक उगाच राहिला । टकमकां पाहात । २। |
| उत्तर विलंबी पडिलें। श्रोतयांस कळों आलें। |
| म्हणिजे महत्व उडालें। वक्तयाचें । ३। |
| थोडें बोलोनी समाधान करणें। रागेजोन तरी मन धरणें। |
| मनुष्य वेधींच लावणें । कोणी येक । ४ । |
| सोसवेना चिणचिण केली । तेथें तामसवृत्ती दिसोन आली । |
| आवधी आवडी उडाली। श्रोतयाची । ५। |
| कोण कोण राजी राखले। कोण कोण मनीं भंगिले। |
| क्षणक्षणां परीक्षिले । पाहिजे लोक । ६ । |
| शिष्य विकल्पें रान घेतो । गुरु मागें मागें धांवतो । |
| विचार पाहों जातां तो । विकल्पचि अवघा । ७ । |
| आशाबिद्ध क्रियाहीन । नाहीं च्यातुर्याचें लक्षण । |
| ते महंतीची भणभण । बंद नाहीं । ८ । |
| ऐसे गोसावी हळु पडती । ठाईं ठाईं कष्टी होती । |
| तेथें संगतीचे लोक पावती । सुख कैंचें । ९ । |
| जिकडे तिकडे कीर्ति माजे । सगट लोकांस हव्यास उपजे । |
| लोक राजी राखोन कीजे। सकळ कांहीं ।१०। |
| परलोकीं वास करावा । समुदाव उगाच पाहावा । |
| मागण्याचा तगादा न लवावा । कांहीं येक |
| |
| जिंकडे जग तिकडे जगन्नायेक । कळला पाहिजे विवेक । रात्रीदिवस विवेकी लोक । सांभाळीत जाती |
| प्रशास्त्रम क्रिका लाक । सामाणप्र ज्याप |

| जो जो लोक दृष्टीस पडिला । तो तो नष्ट ऐसा कळला | 1 | | |
|---|---|------------|------------|
| अवघेच नष्ट येकला भला । काशावरूनी | ı | ? : | ₹ I |
| वोस मुलकीं काये पाहावें । लोकांवेगळें कोठें राहावें | t | | |
| तन्हे खोटी सांडतें घ्यावें । कांहीं येक | ı | ११ | ደ I |
| तस्मात लोकिकीं वर्ततां नये । त्यास महंती कामा नये | 1 | | |
| परत्र साधनाचा उपाये । श्रवण करून असावें | ı | १ | ٩l |
| आपणासीं बरें पोहतां न ये । लोक बुडवावयाचें कोण कार्ये | ı | | |
| गोडी आवडी वायां जाये । विकल्पचि अवघा | 1 | १६ | įI |
| अभ्यासें प्रगट व्हावें । नाहीं तरी झांकोन असावें | 1 | | |
| प्रगट होऊन नासावें । हें बरें नव्हे | 1 | 8 6 | 9 |
| मंद हळु हळु चालतो । चपळ कैसा अटोपतो | | | |
| अरबी फिरवणार तो । कैसा असावा | 1 | १८ | 1 2 |
| हे धकाधकीचीं कामें। तिक्षण बुद्धीचीं वर्में | 1 | | |
| भोळ्या भावार्थें संभ्रमें । कैसें घडे | 1 | १९ | ξ Ι |
| सेत केलें परी वाहेना । जवार केलें परी फिरेना | l | | |
| जन मेळविलें परी धरेना । अंतर्यामीं | l | २ |) |
| जरी चढती वाढती आवडी उठे । तरी परमार्थ प्रगटे | 1 | | |
| घसघस करितां विटे। सगट लोकु | l | ? 9 | 8 1 |
| आपलें लोकांस मानेना । लोकांचें आपणांस मानेना | ı | | |
| अवघा विकल्पची मना । समाधान कैंचें | I | ? ? | 8 1 |
| नासक दीक्षा सिंतरु लोक । तेथें कैंचा असेल विवेक | ı | | |
| जेथें बळावला अविवेक । तेथें राहणें खोटें | ı | ? ? | şΙ |

बहुत दिवस श्रम केला । सेवटीं अवघाचि वेर्थ गेला । आपणास ठाकेना गल्बला । कोणें करावा 1881 संगीत चालिला तरी तो व्याप । नाहीं तरी अवघाचि संताप । क्षणक्षणा विक्षेप । किती म्हणौनि सांगावा । २५। मूर्ख मूर्खपणें भरंगळती । ज्ञाते ज्ञातेपणें कळहो करिती । होते दोहींकडे फजीती। लोकांमधें 1251 कारबार आटोपेना करवेना । आणि उगेंहि राहेना । याकारणें सकळ जना । काये म्हणावें ।२७। नासक उपाधीस सोडावें । वय सार्थकीं घालावें । कंठावें । कोठें तरी परिभ्रमणें 1261 परिभ्रमण करीना । दुसऱ्याचें कांहींच सोसीना । तरी मग उदंड यातना । विकल्पाची 1561 आतां हें आपणाचिपासीं । बरें विचारावें आपणासी । अनकूळ पडेल तैसी । वर्तणूक करावी ।३०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'येत्ननिरूपणनाम' समास सातवा समाप्त.

> > दशक १९: समास ८

उपाधीलक्षणनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

सृष्टिमधें बहु लोक । परिभ्रमणें कळे कौतुक । नाना प्रकारीचे विवेक । आडळों लागती 8 1

| किती प्रपंची जन। अखंड वृत्ति उदासीन। |
|---|
| सुखदुःखें समाधान । दंडळेना । २ । |
| स्वभावेंचि नेमक बोलती। सहजचि नेमक चालती। |
| अपूर्व बोलण्याची स्थिती । सकळांसि माने । ३ । |
| सहजचि ताळज्ञान येते । स्वभावेंचि रागज्ञान उमटते । |
| सहजचि कळत जातें। न्यायेनीतिलक्षण । ४। |
| येखादा आडळे गाजी । सकळ लोक अखंड राजी । |
| सदा सर्वदा आवडी ताजी । प्राणीमात्रांची । ५ । |
| चुकोन उदंड आडळतें । भारी मनुष्य दृष्टीसी पडतें । |
| महंताचें लक्षणसें वाटतें। अकस्मात । ६। |
| ऐसा आडळतां लोक। चमत्कारें गुणत्राहिक। |
| क्रिया बोलणें नेमक । प्रत्ययाचे । ७ । |
| सकळ अवगुणामधें अवगुण । आपले अवगुण वाटती गुण । |
| मोठें पाप करंटपण । चुकेना कीं । ८ । |
| ढाळेंचि काम होतें सदा । जें जपल्यानें नव्हे सर्वदा। |
| तेथें पीळपेंचाची आपदा । आडळेचिना । ९ । |
| येकासी अभ्यासितां न ये। येकासी स्वभावेंचि ये। |
| ऐसा भगवंताचा महिमा काये। कैसा कळेना ।१०। |
| मोठीं राजकारणें चुकती। राजकारणीं वेढां लागती। |
| नाना चुकीची फजीती । चहुंकडे ।११। |
| याकारणें चुकों नये । म्हणिजे उदंड उपाये । |
| उपायाचा अपाये । चुकतां होये । १२। |

| काये चुकलें तें कळेना । मनुष्याचें मनचि वळेना । |
|---|
| खबळला अभिमान गळेना । दोहिंकडे । १३। |
| आवधे फडिच नासती । लोकांचीं मनें भंगती । |
| कोठें चुकते युक्ती । कांहीं कळेना ।१४। |
| व्यापेंविण आटोप केला । तो अवघा घसरतिच गेला । |
| अकलेचा बंद नाहीं घातला । दुरीदृष्टीनें ।१५। |
| येखादें मनुष्य तें सिळें। त्याचें करणेंचि बावळें। |
| नाना विकल्पाचें जाळें। करून टाकी ।१६। |
| तें आपणासी उकलेना। दुसऱ्यास कांहींच कळेना। |
| नाचे विकल्पें कल्पना । ठाईं ठाईं ।१७। |
| त्या गुप्त कल्पना कोणास कळाव्या । कोणें येऊन अटोपाव्या । |
| ज्याच्या त्यानें कराव्या । बळकट बुद्धि ।१८। |
| ज्यासी उपाधी आवरेना । तेणें उपाधी वाढवावीना । |
| सावचित करूनियां मना । समाधानें असावें ।१९। |
| धांवधावों उपाधी वेष्टी । आपण कष्टी लोकहि कष्टी । |
| हे कामा नये गोष्टी । कुसमुसेची ।२०। |
| लोक बहुत कष्टी जाला । आपणिह अत्यंत त्रासला । वेर्थीच केला गल्बला । कासयासी । २१। |
| |
| The many the second |
| लोकांपासीं भावार्थ कैंचा । आपण जगवावा तयांचा । |
| सेवट उगांवर कोगान । नाम |
| १२३। |

अंतरात्म्याकडे सकळ लागे । निर्गुणीं हें कांहींच न लगे। नाना प्रकारीचे दगे । चंचळामधें 1881 शुद्ध विश्रांतीचें स्थळ । तें येक निर्मेळ निश्चळ । तेथें विकारचि सकळ । निर्विकार होती । २५। उद्वेग अवघे तुटोनि जाती । मनासी वाटे विश्रांती । ऐसी दुल्लभ परब्रह्मस्थिती । विवेकें सांभाळावी 1 २६ । आपणास उपाधी मुळींच नाहीं । रुणानबंधें मिळाले सर्वहि । आल्यागेल्याची क्षिती नाहीं । ऐसें जाले पाहिजे । २७। जो उपाधीस कंटाळला । तो निवांत होऊन बैसला । 1261 आटोपेना तो गल्बला । कासयासी कांहीं गल्बला कांहीं निवळ । ऐसा कंठीत जावा काळ। जेणेंकरितां विश्रांती वेळ । आपणासी फावे । २९। उपाधी कांहीं राहात नाहीं । समाधानायेवढें थोर नाहीं । 1301 नरदेहे प्राप्त होत नाहीं । क्षणक्षणां

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'उपाधीलक्षणनिरूपणनाम' समास आठवा समाप्त.

> > दशक १९: समास ९

॥ श्रीराम ॥

ज्ञानी आणी उदास । समुदायाचा हव्यास । तेणें अखंड सावकाश । येकांत सेवावा । १ ।

| जेथें तजवीजा कळती । अखंड चाळणा निघती । |
|--|
| प्राणीमात्रांची स्थिती गती । कळों येते । २ । |
| जरी हा चाळणाचि करीना । तरी कांहींच उमजेना । |
| हिसेबझाडाचि पाहीना । दिवाळखोर । ३ । |
| येक मिरासी साधिती। येक सीध्या गवाविती। |
| व्यापकपणाची स्थिती । ऐसी आहे । ४ । |
| जेणें जें जें मनीं धरिलें। तें तें आधींच समजलें। |
| कृत्रिम अवधेंचि खुंटलें । सहजचि येणें । ५ । |
| अखंड राहातां सलगी होते । अतिपरिचयें अवज्ञा घडते । |
| याकारणें विश्रांती ते। घेतां नये । ६। |
| आळसें आळस केला । तरी मग कारबारिच बुडाला । |
| अंतरहेत चुकत गेला । समुदायाचा । ७ । |
| उदंड उपासनेचीं कामें। लावीत जावीं नित्यनेमें। |
| अवकाश कैंचा कृत्रिमें । करावयासी । ८ । |
| चोर भांडारी करावा। घसरतांच सांभाळावा। |
| गोवा मूर्खपणाचा काढावा । हळु हळु । ९। |
| या अवघ्या पहिल्याच गोष्टी । प्राणी कोणी नव्हता कष्टी । |
| राजकारणें मंडळ वेष्टी । चहुंकडे ।१०। |
| नष्टासी नष्ट योजावे । वाचाळासी वाचाळ आणावे । |
| आपणावरी विकल्पाचे गोवे । पडोंच नेदी ।११। |
| कांटीने कांटी झाडावी। झाडावी परी ते कळों नेदावी। |
| कळकटेपणाची पदवी । असों द्यावी । १२। |

| न कळतां करी कार्य जें तें । तें काम तत्काळचि हो | तिं । |
|---|---------|
| गचगचेंत पडतां तें । चमत्कारें नव्हे | 1831 |
| ऐकोनी आवडी लागावी । देखोनी बळकटचि व्हार | वी । |
| सलगीनें आपली पदवी। सेवकामधें | 1881 |
| कोणीयेक काम करितां होतें। न करितां तें मागें पड | तें । |
| याकारणें ढिलेपण तें । असोंचि नये | 1 १ ५ । |
| जो दुसऱ्यावरी विश्वासला । त्याचा कार्यभाग बुडात | ग्र । |
| जो आपणचि कष्टत गेला । तोचि भला | ।१६। |
| अवध्यास अवधें कळलें। तेव्हां तें रितें पडित | लें । |
| याकारणें ऐसें घडलें। न पाहिजे कीं | ।१७। |
| मुख्य सूत्र हातीं घ्यावें । करणें तें लोकांकरवीं करवा | वें। |
| कित्तेक खलक उगवावें । राजकारणामधें | 1861 |
| बोलके पहिलवान कळकटे । तयासीच घ्यावे झ | टे । |
| दुर्जनें राजकारण दाटे। ऐसें न करावें | 1881 |
| ग्रामण्य वर्मीं सांपडावें । रगडून पीठचि करा | वें । |
| करूनि मागुती सांवरावें । बुडऊं नये | 1501 |
| खळदुर्जनासी भ्यालें । राजकारण नाहीं राखित | |
| तेणें अवधें प्रगट जालें । बरें वाईट | 1581 |
| समुदाव पाहिजे मोठा । तरी तनावा असाव्या बळकत | |
| मठ करुनी ताठा। धरूं नये | |
| दुर्जन प्राणी समजावे। परी ते प्रगट न कराव | |
| सज्जनापरीस आळवावे । महत्त्व देउनी | 1531 |

जनामधें दुर्जन प्रगट । तरी मग अखंड खटखट । याकारणें ते वाट । बुझून टाकावी । २४। गनीमाच्या देखतां फौजा । रणशूरांच्या फुर्फुरिती भुजा । ऐसा पाहिजे कीं राजा । कैपक्षी परमार्थी 1241 तयास देखतां दुर्जन धाके । बैसवी प्रचीतीचे तडाखे। बंड पाषांडाचे वाखे। सहजचि होती ।२६। हे धूर्तपणाचीं कामें। राजकारण करावें नेमें। ढिलेपणाच्या संभ्रमें । जाऊं नये 1291 कोठेंच पडेना दृष्टीं । ठाईं ठाईं त्याच्या गोष्टी । वाग्विळासें सकळ सृष्टी । वेधिली तेणें । २८। हुंब्यासी हुंबा लाऊन द्यावा । टोणप्यास टोणपा आणावा । लौंदास पुढें उभा करावा । दुसरा लौंद 1231 घटासी आणावा घट। उत्घटासी पाहिजे उत्घट। खटनटासी खटनट । अगत्य करी ।३०। जैशास तैसा जेव्हां भेटे । तेव्हां मज्यालसी थाटे । इतुकें होतें परी धनी कोठें । दृष्टीस न पडे ।३१।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'राजकारणनिरूपणनाम' समास नववा समाप्त.

दशक १९: समास १०

विवेकलक्षणनिरूपण

| जेथें अखंड नाना चाळणा । जेथें अखंड नाना धारणा | ı | | |
|---|------|---|---|
| जेथें अखंड राजकारणा । मनासी आणिती | Ī | 8 | 1 |
| सृष्टीमधें उत्तम गुण । तितकें चाले निरूपण | 1 | Ť | |
| निरूपणाविण क्षण । रिकामा नाहीं | ı | 2 | l |
| चर्चा आशंका प्रत्योत्तरें। कोण खोटें कोण खरें | 1 | | |
| नाना वग्त्रुत्वे शास्त्राधारें । नाना चर्चा | ı | ş | 1 |
| भक्तिमार्ग विशद कळे। उपासनामार्ग आकळे | | · | |
| ज्ञानावचार निवळे। अंतर्यामीं | 1 | 8 | 1 |
| वैराग्याची बहु आवडी । उदास वृत्तीची गोडी | E | | |
| उदंड उपाधा तरी सोडी । लागोंच नेदी | 1 | ų | 1 |
| प्रबंदाचीं पाठांतरे । उत्तरासी संगीत उत्तरें | 1 | | |
| नेमक बोलतां अंतरें। निववी सकळांचीं | ١ | Ę | ١ |
| आवडी लागली बहु जना । तेथें कोणाचें कांही चालेना | ı | | |
| दळवट पडिला अनुमाना । येईल कैसा | l | 9 | Į |
| उपासना करूनियां पुढें। पुरवलें पाहिजे चहुंकडे | ŧ | | |
| भूमंडळीं जिकडे तिकडे । जाणती तया | 1 | 6 | I |
| जाणती परी आडळेना। काये करितो तें कळेना नाना देसीचे लोक नाना। येऊन जाती | | | |
| | | 9 | 1 |
| तितुक्यांची अंतरें धरावीं । विवेकें विचारें भरावीं कडोविकडीचीं विवरावीं । अंतःकर्णे | | | |
| नन्यानमञ्जामा ।मम्परामा । प्राप्तामा | 1 \$ | 0 | 1 |

| किती लोक तें कळेना । किती समुदाव आकळेना । |
|--|
| सकळ लोक श्रवणमनना । मध्यें घाली । ११ |
| फड समजाविसी करणें। गद्यपद्य सांगणें। |
| परांतरासी राखणें। सर्वकाळ ।१२ |
| ऐसा ज्याचा दंडक । अखंड पाहाणें विवेक । |
| सावधापुढें अविवेक । येईल कैंचा । १३। |
| जितुकें कांहीं आपणासी ठावें । तितुकें हळुहळु सिकवावें । |
| शाहाणे करूनि सोडावे। बहुत जन ।१४। |
| परोपरीं सिकवणें । आडणुका सांगत जाणें। |
| निवळ करुनी सोडणें। निस्पृहासी । १५। |
| होईल तें आपण करावें । न होतां जनाकरवीं करवावें । |
| भगवद्भजन राहावें । हा धर्म नव्हे । १६। |
| आपण करावें करवावें । आपण विवरावें विवरवावें । |
| आपण धरावें धरवावें । भजनमार्गासी । १७। |
| जुन्या लोकांचा कंटाळा आला । तरी नूतन प्रांत पाहिजे धरिला । |
| जितुकें होईल तितुक्याला । आळस करूं नये ।१८। |
| देह्याचा अभ्यास बुडाला । म्हणिजे महंत बुडाला । |
| लागवेगें नूतन लोकांला। शाहाणें करावें ।१९। |
| उपाधींत सांपडों नये । उपाधीस कंटाळों नये । |
| निसुगपण कामा नये। कोणीयेकविषीं ।२०। |
| काम नासणार नासतें । आपण वेडें उगेंच पाहातें । |
| आळसी हृदयसुन्य तें । काये करूं जाणे ।२१। |
| धकाधकीचा मामला । कैसा घडे अशक्ताला । |
| नाना बुद्धि शक्ताला । म्हणोनी सिकवाव्या । २२। |
| |

| व्याप होईल तो राहावें आनंदरूप फिरावें | | |
|--|------------------------|-------|
| उपाधीपासुनी सुटला | । तो निस्पृहपणें बळावल | ग । |
| जिकडे अनकूळ तिकडे चालिला कीर्ति पाहातां सुख नाहीं | | ी १४। |
| केल्याविण कांहींच नाहीं | । कोठें तऱ्हीं | 1241 |
| येरवीं काय राहातें | | |
| प्राणी मात्र अशक्त तें | | |
| आधींच तकवा सोडिला | | |
| तरी संसार हा सेवटाला | | • |
| संसार मुळींच नासका | | |
| नेटका करितां फिका | | |
| ऐसा याचा जिनसाना | | |
| परंतु धीर सांडावाना | | |
| धीर सांडितां काये होतें | | |
| नाना बुद्धि नाना मर्ते | । शाहाणा जाण | 1301 |

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'विवेकलक्षणनिरूपणनाम' दहावा समास समाप्त.

दशक एकोणिसावा समाप्त

दशक विसावा : पूर्ण

दशक २०: समास १

पूर्णापूर्णनिरूपण

| प्राणी व्यापक मन व्यापक । पृथ्वी आप तेज व्यापक | | | |
|--|---|---|---|
| वायो आकाश त्रिगुण व्यापक । अंतरात्मा मूळमाया | 1 | 8 | ١ |
| निर्गुण ब्रह्म तें व्यापक । ऐसें अवधेंच व्यापक | 1 | | |
| तरी हें सगट किं काये येक । भेद आहे | | 3 | 1 |
| आत्मा आणि निरंजन । येणेंहि वाटतो अनुमान | | | |
| आत्मा सगुण किं निर्गुण । आणि निरंजन | I | ş | 1 |
| श्रोता संदेहीं पडिला । तेणें संदेह वाढला | 1 | | |
| अनुमान धरून बैसला । कोण तो कैसा | 1 | 8 | 1 |
| ऐका पहिली आशंका । अवघा गल्बला करूं नका | 1 | | |
| प्रगट करून विवेका । प्रत्यये पाहावा | 1 | 4 | 1 |
| शरीरपाडें सामर्थ्यपाडें । प्राणी व्याप करी निवाडें | | | |
| परी पाहातां मनायेवढें। चपळ नाहीं | ı | Ę | 1 |
| चपळपण येकदेसी । पूर्ण व्यापकता नव्हे त्यासी | 1 | | |
| पाहातां पृथ्वीच्या व्यापासी । सीमा आहे | 1 | 9 | ١ |
| तैसेंचि आप आणि तेज । अपूर्ण दिसती सहज | 1 | | |
| वायो चपळ समज। येकदेसी | | 6 | ı |
| गगन आणि निरंजन । तें पूर्ण व्यापक सधन कोणीयेक अनमान । तेथें असेचिना | | | |
| कोणीयेक अनुमान । तेथें असेचिना | Į | 9 | ľ |

| त्रिगुण गुणक्षोभिणी माया । माईक जाईल विलया । अपूर्ण येकदेसी तया । पूर्ण व्यापकता न घडे । १०। |
|---|
| आत्मा आणि निरंजन। हें दोहिंकडे नामाभिधान। अर्थान्वये समजोन। बोलणें करावें ।११। |
| आत्मा मन अत्यंत चपळ। तरी हें व्यापक नव्हेचि केवळ। सुचित अंतःकर्ण निवळ। करून पाहावें। १२। |
| अंतराळीं पाहातां पाताळीं नाहीं । पाताळीं पाहातां अंतराळीं नाहीं । पूर्णपणें वसत नाहीं । चहूंकडे । १३। पुढें पाहातां मागें नाहीं । मागें पाहातां पुढें नाहीं । |
| वाम सव्य व्याप नाहीं। दशदिशा । १४। चहुंकडे निशाणें मांडावीं। येकसरीं कैसीं सिवावीं। |
| याकारणें समजोन उगवी । प्रत्ययें आपणासी । १५। सूर्य आला प्रतिबिंबला । हाहि दृष्टांत न घडे वस्तुला । |
| वस्तुरूप निर्गुणाला । म्हणिजेत आहे । १६। घटाकाश मठाकाश । हाहि दृष्टांत विशेष । |
| तुळूं जातां निर्गुणास । साम्यता येते । १७। ब्रह्मींचा अंश आकाश । आणी आत्म्याचा अंश मानस । दोहींचा अनुभव प्रत्ययास । येथें घ्यावा । १८। |
| गगन आणी हें मन । कैसें होती समान । मननसीळ महाजन । सकळिह जाणती ।१९। |
| मन हें पुढें वावडे । मार्गे आवधेंचि रितें पडे । पूर्ण गगनास साम्यता घडे । कोण्या प्रकारें । २०। |
| परब्रह्महि अचळ । आणि पर्वतासिह म्हणती अचळ । दोनीही येक केवळ । हें कैसें म्हणावें । २१। |
| ज्ञान अज्ञान विपरीतज्ञान । तिनी कैसीं होतीं समान । याचा प्रत्ययो मनन । करून पाहावा ।२२। |

ज्ञान म्हणिजे जाणणें । अज्ञान म्हणिजे नेणणें । विपरीत ज्ञान म्हणिजे देखणें। येकाचें येक ।२३। जाणणें नेणणें वेगळें केलें । ढोबळें पंचभूतिक उरलें। विपरीत ज्ञान समजलें। पाहिजे जीवीं । २४। द्रष्टा साक्षी अंतरात्मा । जीवात्माचि होये शिवात्मा । पुढें शिवात्मा तोचि जीवात्मा । जन्म घेतो 1241 आत्मत्वीं जन्ममरण लागे । आत्मत्वीं जन्ममरण न भंगे । संभवामि युगे युगे। ऐसें हें वचन । २६। जीव येकदेसी नर । विचारें जाला विश्वंभर । 1291 विश्वंभरास संसार । चुकेना कीं ज्ञान आणि अज्ञान । वृत्तिरूपे हें समान । निवृत्तिरूपें विज्ञान । जालें पाहिजे 1261 ज्ञानें येवढें ब्रह्मांड केलें। ज्ञानें येवढें वाढिवलें। नाना विकाराचें वळलें। तें हें ज्ञान ।२९। आठवें देह ब्रह्मांडीचें। तें हें ज्ञान साचें। विज्ञानरूप विदेहाचें। पद पाविजे ।३०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'पूर्णापूर्णनिरूपणनाम' समास पहिला समाप्त.

> > दशक २०: समास २ सृष्टित्रिविधलक्षणनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

मूळमाया नस्तां चंचळ। निर्गुण ब्रह्म तें निश्चळ। गगन अंतराळ । चहुंकडे जैसें

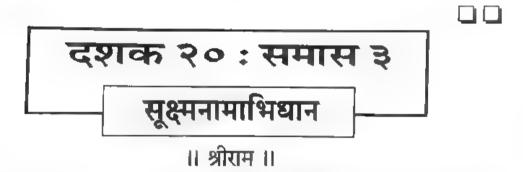
THE RESERVE OF THE PARTY OF THE

| दृश्य आलें आणि गेलें। परी तें ब्रह्म संचलें। |
|--|
| दृष्य आल आण गल । गरा रा अल संबं |
| जैसें गगन कोंदाटलें। चहुंकडे । २। |
| जिकडे पाहावें तिकडे अपार । कोणेकडे नाहीं पार । |
| येकजिनसी स्वतंत्र । दुसरें नाहीं । ३ । |
| ब्रह्मांडावरतें बैसावें । अवकाश भकास अवलोकावें । |
| तेथें चंचळ व्यापकाच्या नांवें। सुन्याकार । ४। |
| दृश्य विवेकें काढिलें। मग परब्रह्म कोंदाटलें। |
| कोणासीच अनुमानलें । नाहीं कदा । ५ । |
| अधोर्घ पाहातां चहुंकडे । निर्गुण ब्रह्म जिकडे तिकडे । |
| मन धांवेल कोणेकडे। अंत पाहावया । ६। |
| दृश्य चळे ब्रह्म चळेना। दृश्य कळे ब्रह्म कळेना। |
| दृश्य आकळे ब्रह्म आकळेना । कल्पनेसी । ७ । |
| कल्पना म्हणिजे कांहींच नाहीं। ब्रह्म दाटलें ठाईंचा ठाईं। |
| वाक्यार्थ विवरत जाइं। म्हणिजे बरें । ८। |
| परब्रह्मायेवढें थोर नाहीं । श्रवणापरतें साधन नाहीं । |
| कळल्याविण कांहींच नाहीं । समाधान । ९। |
| पिप्लीकामार्गे हळु हळु घडे । विहंगमें फळासी गांठी पडे । |
| साधक मननीं पवाडे । म्हणिजे बरें । १०। |
| परब्रह्मासारिखें दुसरें। कांहींच नाहीं खरें। |
| निंदा आणी स्तुतिउत्तरें। परब्रह्मीं नाहीं । ११। |
| ऐसें परब्रह्म येकजिनसी। कांहींच तुळेना तयासी। |
| मानुभव पुण्यरासी । तेथें पवाडती । १२। |
| चंचळें होते दुःखप्राप्ती । निश्चळाएवडी नाहीं विश्रांती । |
| निश्चळ प्रत्ययें पाहाती । माहानुभाव । १३। |
| मुळापासून सेवटवरी । विचारणा केलीच करी । |
| प्रत्ययाचा निश्चयो अंतरीं । तयासीच फावे । १४। |

| कल्पनेची सृष्टी जाली। त्रिविध प्रकारें भासली | ı |
|---|------|
| तिक्षण बुद्धीनें आणिली । पाहिजे मना | |
| मूळमायेपासून त्रिगुण । अवधें येकदेसी लक्षण | 1 |
| पांचा भूतांचा ढोबळा गुण। दिसत आहे | |
| पृथ्वीपासून च्यारी खाणी । चत्वार वेगळाली करणी | 1 |
| सकळ सृष्टीची चाली येथुनी । पुढें नाहीं | |
| सृष्टीचें त्रिविध लक्षण । विशद करूं निरूपण | 1 |
| श्रोतीं सुचित अंतःकर्ण। केलें पाहिजे | |
| मूळमाया जाणीवेची। मुळीं सूक्ष्म कल्पनेची | 1001 |
| जैसी स्थिती परे वाचेची । तद्रूपची ते | |
| अष्ट्रधा प्रकृतीचें मूळ । ते हे मूळमायाच केवळ सूक्ष्मरूप बीज सकळ । मुळींच आहे | 1201 |
| जड पदार्थ चेतिवतें तें । म्हणौन चैतन्य बोलिजेतें | 1 |
| | 1281 |
| | 1 |
| प्रकृतिपुरुषाचा विचार । अर्धनारनिटश्वर अष्टधा प्रकृतीचा विचार । सकळ कांहीं | 1221 |
| गुप्त त्रिगुणाचें गूढत्व। म्हणौन संकेत महत्तत्त्व | 1 |
| गुप्तरूपें शुद्धसत्व । तेथेंचि वसे | 1531 |
| जेथून गुण प्रगटती । तीस गुणक्षोभिणी म्हणती | 1 |
| त्रिगुणाचीं रूपें समजती । धन्य ते साधु | 1581 |
| गुप्तरूपें गुणसौम्य । म्हणौनि बोलिजे गुणसाम्य | 1 |
| सूक्ष्म संकेत अगम्य । बहुतांस कैंचा | 1741 |
| मूळमायेपासून त्रिगुण । चंचळ येकदेसी लक्षण | 1261 |
| प्रत्ययें पाहातां खूण । अंतरीं येते पुढें पंचधनांचीं बंदें । ताढलीं विशालें उदंडें | |
| ज नवनुताया अंड । जाकरम नम | 1501 |
| सप्तद्वीपें नवखंडें । वसुंधरा हे | |

त्रिगुणापासून पृथ्वीवरी । दुसऱ्या जिनसान्याची परी । दोनी जिनस याउपरी । तिसरा ऐका । २८। पृथ्वी नाना जिनसाचें बीज । अंडज जारज श्वेतज उद्विज । च्यारी खाणी च्यारी वाणी सहज । निर्माण जाल्या । २९। खाणी वाणी होती जाती । परन्तु तैसीच आहे जगती । ऐसे होती आणी जाती । उदंड प्राणी । ३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सृष्टित्रिविधलक्षणनिरूपणनाम' समास दुसरा समाप्त.



मुळींहून सेवटवरी । विस्तार बोलिला नानापरी । पुन्हा विवरत विरत माघारी । वृत्ति न्यावी च्यारी वाणी च्यारी खाणी । चौऱ्यासि लक्ष जीवयोनी। नाना प्रकारीचे प्राणी । जन्मास येती 2 | अवघे होती पृथ्वीपासुनी । पृथ्वीमधें जाती नासोनी । अनेक येती जाती परी अवनी । तैसीच आहे 131 ऐसें हें सेंड्याकडील खांड । दुसरें भूतांचे बंड । तिसरें नामाभिधानें उदंड । सूक्ष्मरूपें 8 1 स्थूळ अवधें सांडून द्यावें । सूक्ष्मरूपें वोळखावें । गुणापासून पाहिलेंच पाहावें । सूक्ष्मदृष्टीं | 4 | गुणाची रूपें जाणीव नेणीव । पाहिलाच पाहावा अभिप्राव । सूक्ष्मदृष्टीचें लाघव । येथून पुढें 1 8 1

| शुद्ध नेणीव तमोगुण । शुद्ध जाणीव सत्वगुण । जाणीवनेणीव रजोगुण । मिश्रित चालिला । ७ । |
|---|
| त्रिगुणाची रूपें ऐसीं । कळों लागलीं अपैसीं । गुणापुढील कर्दमासी । गुणक्षोभिणी बोलिजे । ८ । |
| रज तम आणि सत्व । तिहींचें जेथें गूढत्व । तें जाणिजे महत्तत्त्व । कर्दमरूप । ९ । |
| प्रकृति पुरुष शिवशक्ति । अर्धनारीनटेश्वर म्हणती । परी याची स्वरूपस्थिती । कर्दमरूप । १०। |
| सूक्ष्मरूपें गुणसौम्य । त्यास बोलिजे गुणसाम्य । तैसेंचि चैतन्य अगम्य । सूक्ष्मरूपी । ११। |
| बहुजिनसी मूळमाया । माहांकारण ब्रह्मांडीची काया । ऐसिया सूक्ष्म अन्वया । पाहिलेंचि पाहावें । १२। |
| च्यारी खाणी पांच भूतें । चौदा सूक्ष्म संकेतें । काये पाहाणें तें येथें । शोधून पाहावें । १३। |
| आहाच पाहातां कळेना । गरज केल्यां समजेना । नाना प्रकारीं जनाच्या मना । संदेह पडती । १४। चौदा पांच येकोणीस । येकोणीस च्यारी तेविस । |
| यांपर्धे मूळ चतुर्दश । पाहिलेंचि पाहावें ।१५। जो विवरोन समजला । तेथें संदेह नाहीं उरला। |
| समजल्याविण जो गल्बला। तो निरार्थक । १६। सकळ सृष्टीचें बीज। मूळमायेंत असे सहज। |
| अवधें समजतां सज्ज । परमार्थ होतो । १७। समजलें माणुस चावळेना । निश्चइ अनुमान धरीना । |
| सावळगोंदा करीना । परमार्थ कदा । १८। शब्दातीत बोलतां आलें । त्यास वाच्यांश बोलिलें । |
| शुद्ध लक्ष्यांश लक्षिलें। पाहिजे विवेकें । १९। |

| पूर्वपक्ष म्हणिजे माया । सिद्धांतें जाये विलया । |
|---|
| माया नस्तां मग तया। काये म्हणावें ।२०। |
| अन्वये आणी वीतरेक । हा पूर्वपक्षाचा विवेक । |
| सिद्धांत म्हणिजे शुद्ध येक । दुसरें नाहीं । २१। |
| अधोमुखें भेद वाढतो । ऊर्धमुखें भेद तुटतो । |
| निःसंगपणें निर्गुणी तो । महांयोगी । १२। |
| माया मिथ्या ऐसी कळली । तरी मग भीड कां लागली। |
| मायेचे भिडेनें घसरली । स्वरूपस्थिती । २३। |
| लटके मायेनें दपटावें। सत्य परब्रह्म सांडावें। |
| मुख्य निश्चर्ये हिंडावें । कासयासी ।२४। |
| पृथ्वीमधें बहुत जन। त्यामधें असती सज्जन। |
| परी साधूस वोळखतो कोण । साधुवेगळा ।२५। |
| म्हणौन संसार सांडावा । मग साधूचा शोध घ्यावा । |
| फिरफिरों ठाइं पाडावा । साधुजन । २६। |
| उदंड हुडकावे संत । सांपडे प्रचितीचा महंत । |
| प्रचितिविण स्वहित । होणार नाहीं । २७। |
| प्रपंच अथवा परमार्थ । प्रचितीविण अवधें वेर्थ । प्रत्ययेज्ञानी तो समर्थ । सकळांमध्यें । २८। |
| रात्रंदिवस पाहावा अर्थ। अर्थ पाहेल तो समर्थ। |
| परलोकींचा निजस्वार्थ। तेथेंचि घडे । २९। |
| म्हणौन पाहिलेंचि पाहावें । आणि शोधिलेंचि शोधावें । |
| अवधें कळतां स्वभावें। संदेह तुटती ।३०। |
| |

दशक २०: समास ४

आत्मानिरूपण

| सकळ जनास प्रार्थना । उगेंच उदास करावेंना | 1 | | |
|--|----|---|---|
| निरूपण आणावें मना । प्रत्ययाचें | 1 | 8 | ١ |
| प्रत्यये राहिला येकेकडे । आपण द्यांवतो भलतेकडे | | | |
| तरी सारासाराचे निवाडे । कैसे होती | | 3 | ١ |
| उगिच पाहातां सृष्टी । गल्बला दिसतो दृष्टी | | | |
| परी ते राजसत्तेची गोष्टी । वेगळीच | | 3 | 1 |
| पृथ्वीमधें जितुकीं शरीरें । तितुकीं भगवंताचीं घरें | | | |
| नाना सुखें येणें द्वारें । प्राप्त होती | | 8 | 1 |
| त्याचा महिमा कळेल कोणाला । माता वांदून कृपाळु जाला | | | |
| प्रत्यक्ष जगदीश जगाला । रक्षितसे | | ų | ١ |
| सत्ता पृथ्वीमध्यें वांटली । जेथें तेथें विभागली कळेनें सृष्टि चालिली । भगवंताचे | | æ | ٠ |
| मूळ जाणत्या पुरुषाची सत्ता । शरीरीं विभागली तत्वतां | | | ' |
| सकळ कळा चातुर्यता । तेथें वसे | | 9 | 1 |
| सकळ पुराचा ईश। जगामधें तो जगदीश | 1 | | |
| नाना शरीरीं सावकास । करूं लागे | | 6 | 1 |
| पाहातां सृष्टीची रचना । ते येकाचेन चालेना | ı | | |
| येकची चालवी नाना। देह धरूनी | , | 9 | 1 |
| नाही उंच नीच विचारिलें । नाहीं बरें वाईट पाहिलें | | | |
| कार्ये चालों ऐसें जालें। भगवंतासी | 18 | 0 | |

| किंवा नेणणें आडवें केलें । किंवा अभ्यासीं घातलें । हैं कैसें कैसें केलें । त्याचा तोचि जाणे । ११। |
|---|
| जगदांतरीं अनुसंधान । बरें पाहाणें हेंचि ध्यान । ध्यान आणी तें ज्ञान । येकरूप । १२। |
| प्राणी संसारास आला। कांहीं येक शाहाणा जाला। मग तो विवरों लागला। भूमंडळीं । १३। |
| प्रगट रामाचें निशाण । आत्माराम ज्ञानघन । विश्वंभर विद्यमान । भाग्यें कळे । १४। |
| उपासना धुंडून वासना धरिली। तरी ते लांबतिच गेली। महिमा न कळे बोलिली। येथार्थ आहे ।१५। |
| द्रष्टा म्हणिजे पाहाता । साक्षी म्हणिजे जाणता । अनंतरूपी अनंता । वोळखावें ।१६। |
| संगती असावी भल्यांची । घाटी कथा निरूपणाची । कांहीं येक मनाची । विश्रांती आहे । १७। |
| त्याहिमधें प्रत्ययेज्ञान । जाळून टाकिला अनुमान । प्रचितिविण समाधान । पाविजेल कैंचें ।१८। |
| मूळ संकल्प तो हरिसंकल्प । मूळमायेमधील साक्षेप । जगदांतरीं तेंचि रूप । देखिजेतें ।१९। |
| उपासना ज्ञानस्वरूप । ज्ञानीं चौथा देह आरोप । याकारणें सर्व संकल्प । सोडून द्यावा ।२०। |
| पुढें परब्रह्म विशाळ । गगनासारिखें पोकळ । घन पातळ कोमळ । काये म्हणावें । २१। |
| उपासना म्हणिजे ज्ञान । ज्ञानें पाविजे निरंजन । योगियांचें समाधान । येणें रितीं । २२। |
| विचार नेहदूनसा पाहे । तरी उपासना आपणिच आहे । येक जाये एक राहे । देह धरूनी । २३। |

अखंड ऐसी घालमेली । पूर्वापार होत गेली । आतांहि तैसीच चालिली । उत्पत्तिस्थिती 1881 बनावरी बनचरांची सत्ता । जळावरी जळचरांची सत्ता । भूमंडळीं भूपाळां समस्तां । येणोंचि न्यायें ।२५। सामर्थ्य आहे चळवळेचें। जो जो करील तयाचें। परंतु येथें भगवंताचें । अधिष्ठान पाहिजे । २६। कर्ता जगदीश हें तों खरें। परी विभाग आला पृथकाकारें। तेथें अहंतेचें काविरें । बाधिजेना 1291 हरिर्दाता हरि भोंक्ता । ऐसें चालतें तत्वतां । ये गोष्टीचा आतां । विचार पाहावा । २८। सकळ कर्ता परमेश्वरु । आपला माइक विचारु । जैसें कळेल तैसें करूं। जगदांतरें 1231 देवायेवढें चपळ नाहीं। ब्रह्मायेवढें निश्चळ नाहीं। पाइरीनें पाइरी चढोन पाहीं । मूळपरियंत 1301

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आत्मानिरूपणनाम' समास चौथा समाप्त.

दशक २०: समास ५

॥ श्रीराम ॥

येथून पाहातां तेथवरी । चत्वार जीनस अवधारीं । येक चौदा पांच च्यारी । ऐसें आहे । १ । परब्रह्म सकळांहून वेगळें । परब्रह्म सकळांहून आगळें । नाना कल्पनेनिराळें । परब्रह्म तें । २ ।

| परब्रह्माचा विचार । नाना कल्पनेहून पर । |
|---|
| निर्मळ निश्चळ निर्विकार । अखंड आहे । ३। |
| परब्रह्मास कांहींच तुळेना । हा येक मुख्य जिनसाना । दुसरा जिनस नाना कल्पना । मूळमाया । ४ । |
| |
| नाना सूक्ष्मरूप। सूक्ष्म आणी कर्दमरूप। |
| मुळींच्या संकल्पाचा आरोप । मूळमाया । ५ । |
| हरिसंकल्प मुळींचा । आत्माराम सकळांचा । |
| संकेत नामाभिधानाचा । येणें प्रकारें । ६ । |
| निश्चळीं चंचळ चेतलें । म्हणौनि चैतन्य बोलिलें । |
| गुणसमानत्वें जालें । गुणसाम्य ऐसें । ७ । |
| अर्धनारीनटेश्वर । तोचि शङ्गुणैश्वर । |
| प्रकृतिपुरुषाचा विचार । शिवशक्ती । ८ । |
| शुद्धसत्वगुणाची मांडणी। अर्धमात्रा गुणक्षोभिणी। |
| पुढें तिही गुणांची करणी। प्रगट जाली । १। |
| मन माया अंत्रात्मा । जीवर क्लिके |
| जारात्मा । चादा जिनसाचा सामा । |
| 1" "" " S(14) O(5 1) U |
| ऐसा दुसरा जिनस। अभिधानें चतुर्दश। |
| गता ।तसरा जिनस् । पंचमाहाधाने । १००। |
| नव पहिला जाणात क्रोनी |
| ार्थिया तातडा । तो चौक्का ि |
| व्यास खाणा अनंत गणने |
| च्यारी खाणी अनंत प्राणी । जाणीवेची जाली दाटणी। च्यारी जिनस येथुनी । संपूर्ण जाले । १३। |
| बीज शोहें २०२२ सपूर्ण जाले ।१३। |
| बीज थोडें पेरिजेतें। पुढें त्याचें उदंड होतें। |
| ऐसी अन्य ''' खाणा वाणी प्रगटता।१४। |
| ऐसी सत्ता प्रबळली । खोडे सत्तेची उदंड जाली । मनुष्यवेषें सृष्टी भोगिली । नाना प्रके |
| मनुष्यवेषें सृष्टी भोगिली । नाना प्रकारें । १५। |
| |

| प्राणी मारून स्वापद पळे। वरकड त्यास काये कळे। |
|--|
| नाना भोग तो निवळे । मनलाहेही |
| नाना भोग तो निवळे। मनुष्यदेहीं ।१६। |
| नाना शब्द नाना स्थापा । जान्य रूप |
| नाना गर्ध त विशेष । नरदेह जाणे |
| अमाल्य रत्न नाना वस्त्र । नाना गाने नान |
| नाना विद्या कळा शास्त्रें। नरदेह जाणे ११८। |
| 1881 |
| पृथ्वी सत्तेनें व्यापिली । स्थळोस्थळीं अटोपिली । |
| नाना विद्या कळा केली। नाना धारणा । १९। |
| दृश्य अवधेंचि पाहावें । स्थानमान सांभाळावें । |
| सारासार विचारावें। नरदेहे जालियां ।२०। |
| नेन्से क्या । वर्ष जालया । २०। |
| येहलोक आणी परलोक । नाना प्रकारींचा विवेक। |
| विवक आणी अविवेक । मनुष्य जाणे । २१। |
| नाना पिंडीं ब्रह्मांडरचना । नाना मुळींची कल्पना । |
| नाना प्रकारीं धारणा । मनुष्य जाणे ।२२। |
| जन्म जारण नारणा । मनुष्य जाण । १२२। |
| अष्टभोग नवरस । नाना प्रकारींचा विळास । |
| वाच्यांश लक्ष्यांश सारांश । मनुष्य जाणे । २३। |
| मनुष्यें सकळांस आळिलें । त्या मनुष्यास देवें पाळिलें । |
| 11 d 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 |
| १२४। |
| नरदेह परम दुल्लभ । येणें घडे अलभ्य लाभ । |
| दुल्लभ तें सुल्लभ । होत आहे । २५। |
| वरकड देहे हें काबाड । नरदेह मोठें घबाड । |
| |
| गेके राहण जाड । विवेकरचना । २६। |
| येथें जेणें आळस केला । तो सर्वस्वें बुडाला । |
| १५ नाहा वाळाखला । विवेकबळे । २७। |
| नर तोचि नारायेण। जरी प्रत्ययें करी श्रवण। |
| मननशीळ अंतःकर्ण। सर्वकाळ १२८। |
| भननशाळ अंतःकर्ण। सर्वकाळ ।२८। |

जेणें स्वयंचि पोहावें। त्यास कासेस नलगे लागावें। स्वतंत्रपणें शोधावें। सकळ कांहीं । २९। सकळ शोधून राहिला। संदेह कैचा तयाला। पुढें विचार कैसा जाला। त्याचा तोचि जाणे ।३०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'चत्वारजिनसनाम' समास पाचवा समाप्त.

दशक २०: समास ६

आत्मागुणनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

पाहों जातां भूमंडळ । ठाईं ठाईं आहे जळ ।
िकत्तेक ते निर्मळ माळ । जळेंविण पृथ्वी । १ ।
तैसें दृश्य विस्तारलें । कांहींयेक जाणीवेनें शोभलें ।
जाणीवरहित उरलें । कितीयेक दृश्य । २ ।
च्यारी खाणी च्यारी वाणी । चौऱ्यासी लक्ष जीवयोनी ।
शास्त्रीं अवधें नेमुनी । बोलिलें असे । ३ ।

जलजा नवलक्षाश्च दशलक्षाश्च पक्षिणः। कृमयो रुद्रलक्षाश्च विंशल्लक्षा गवादयः॥ स्थावरास्त्रिशल्लक्षाश्च चतुर्लक्षाश्च मानवाः। पापपुण्यं समं कृत्वा नरयोनिषु जायते॥

मनुष्यें च्यारी लक्ष। पशु वीस लक्ष। क्रिम आक्रा लक्ष। बोलिलें शास्त्रीं । ४।

| दहा लक्ष ते खेचर । नव लक्ष जळचर । तीस लक्ष स्थावर । बोलिलें शास्त्रीं । ५ । |
|---|
| ऐसी चौऱ्यासी लक्ष योनी । जितुका तितुका जाणता प्राणी । |
| अनंत देह्याची मांडणी। मर्यादा कैंची। ६। |
| अनंत प्राणी होत जाती । त्यांचें अधिष्ठान जगती । जगतीवेगळी स्थिती । त्यास कैंची । ७ । |
| पुढें पाहातां पंचभूतें । पावलीं पष्टदशेतें । |
| कोणी विद्यमान कोणी ते । उगीच असती । ८ । अंतरात्म्याची वोळखण । तेचि जेथें चपळपण । |
| जाणीवेचें अधिष्ठान । सावध ऐका । ९ । |
| सुखदुख जाणता जीव । तैसाचि जाणावा सदाशिव । |
| अंतः कर्णपंचक अपूर्व। अंश आत्मयाचा । १०। |
| स्थुळीं आकाशाचे गुण । अंश आत्मयाचे जाण । |
| सत्त्व रज तमोगुण । गुण आत्मयाचे ।११। |
| नाना चाळणा नाना धृती । नवविधा भक्ति चतुर्विधा मुक्ती । |
| अलिप्तपण सहजस्थिती । गुण आत्मयाचे । १२। |
| द्रष्टा साक्षी ज्ञानघन । सत्ता चैतन्य पुरातन । |
| श्रवण मनन विवरण। गुण आत्मयाचे ।१३। |
| दृश्य द्रष्टा दर्शन।ध्येय ध्याता ध्यान। |
| ज्ञेय ज्ञाता ज्ञान । गुण आत्मयाचे । १४। |
| वेदशास्त्रपुराणअर्थ । गुप्त चालिला परमार्थ। |
| सर्वज्ञपणें समर्थ। गुण आत्मयाचे ।१५। |
| बद्ध मुमुक्ष साधक सिद्ध । विचार पाहाणें शुद्ध । |
| बोध आणी प्रबोध । गुण आत्मयाचे ।१६। |

| जागृति स्वप्न सुषुप्ति तुर्या । प्रकृतिपुरुष मूळमाया । |
|--|
| पिंड ब्रह्मांड अष्टकाया । गुण आत्मयाचे । १७। |
| परमात्मा आणि परमेश्वरी । जगदात्मा आणी जगदेश्वरी । |
| महेश आणी माहेश्वरी । गुण आत्मयाचे । १८। |
| सूक्ष्म जितुकें नामरूप । तितुकें आत्मयाचें स्वरूप । |
| संकेत नामाभिधानें अमूप । सीमा नाहीं ।१९। |
| आदिशक्ती शिवशक्ती । मुख्य मूळमाया सर्वशक्ती । |
| नाना जीनस उत्पती स्थिती । तितुके गुण आत्मयाचे ।२०। |
| पूर्वपक्ष आणी सिद्धांत । गाणें वाजवणें संगीत । |
| नाना विद्या अद्भुत । गुण आत्मयाचे । २१। |
| ज्ञान अज्ञान विपरीतज्ञान । असद्वृत्ति सद्वृत्ति जाण । |
| ज्ञेप्तिमात्र अलिप्तपण । गुण आत्मयाचे । २२। |
| पिंड ब्रह्मांड तत्वझाडा । नाना तत्वांचा निवाडा । |
| विचार पाहाणें उघडा । गुण आत्मयाचे । २३। |
| नाना ध्यानें अनुसंधानें । नाना स्थिति नाना ज्ञानें । |
| अनन्य आत्मनिवेदनें । गुण आत्मयाचे । २४। |
| तेतिस कोटी सुरवर । आठ्यासी सहस्र ऋषेश्वर । |
| भूत खेचर अपार । गुण आत्मयाचे । २५। |
| भूतावळी औट कोटी । च्यामुंडा छपन्न कोटी । |
| कात्यायेणी नव कोटी। गुण आत्मयाचे । २६। |
| चंद्र सूर्य तारामंडळें। नाना नक्षत्रें ग्रहमंडळें। |
| शेष कूर्म मेघमंडळें। गुण आत्मयाचे ।२७। |
| देव दानव मानव। नाना प्रकारीचे जीव। |
| पाहातां सकळ भावाभाव । गुण आत्मयाचे । २८। |
| आत्मयाचे नाना गुण। ब्रह्म निर्विकार निर्गुण। |
| जाणणें येकदेसी पूर्ण । गुण आत्मयाचे । २९। |
| |

। तेणें पावले निरंजना । आत्मारामंडपासना अनुमाना । ठावचि नाहीं निसंदेहे 1301

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आत्मागुणनिरूपणनाम' समास सहावा समाप्त.

दशक २०: समास ७ आत्मनिरूपण

| ॥ श्रीराम ॥ | | | |
|---|---|---|---|
| अनुर्वाच्य समाधान जालें। तें पाहिजे बोलिलें | ١ | | |
| बोलिल्यासाठीं समाधान गेलें । हें तों घडेना | 1 | 8 | 1 |
| कांहीं सांडावें लागत नाहीं । कांहीं मांडावें लागत नाहीं | | | |
| येक विचार शोधून पाहीं । म्हणिजे कळे | ١ | 3 | 1 |
| मुख्य कासीविश्वेश्वर । श्वेतबंद रामेश्वर | 1 | | |
| मलकार्जुन भीमाशंकर । गुण आत्मयाचे | l | 3 | 1 |
| जैसीं मुख्य बारा लिंगें। यावेगळीं अनंत लिंगें | | | |
| प्रचित जाणिजेत जगें । गुण आत्मयाचे | 1 | 8 | ١ |
| भूमंडळीं अनंत शक्ति । नाना साक्षात्कार चमत्कार होती | 1 | | |
| नाना देवांच्या सामर्थ्यमूर्ती । गुण आत्मयाचे | 1 | 4 | 1 |
| नाना सिन्हांचीं सामर्थ्ये । नाना मंत्रांचीं सामर्थ्ये | 1 | | |
| नाना मोहरेवल्लींत सामर्थ्ये । गुण आत्मयाचे | 1 | Ę | 1 |
| नाना तीर्थांचीं सामर्थ्ये । नाना क्षत्रांची सामर्थ्ये | | | |
| नाना भूमंडळीं सामर्थ्यं । गुण आत्मयाचे | 1 | 9 | 1 |
| जितुके कांहीं उत्तम गुण । तितुकें आत्मयाचें लक्षण | 1 | | |
| | | 6 | 1 |

| शुद्ध आत्मा उत्तमगुणी । सबळ आत्मा अवलक्षणी | 1 | | |
|--|-----|----|------------|
| बरी वाईट आवधी करणी । आत्मयाची | ŧ | 9 | 1 |
| नाना साभिमान धरणें । नाना प्रतिसृष्टि करणें | I | | |
| नाना श्रापउश्रापलक्षणें । आत्मयाचेनी | ı | 8 | 0 |
| पिंडाचा बरा शोध घ्यावा । तत्वांचा पिंड शोधावा | 1 | | |
| तत्व शाधिता पिंड आघवा । कळों येतो | ١ | 8 | १। |
| जड देह भूतांचा । चंचळ गुण आत्मयाचा | Į | | |
| निश्चळ ब्रह्मावेगळा ठाव कैंचा । जेथें तेथें | 1 | 8 | २। |
| निश्चळ चंचळ आणी जड । पिंडीं करावा निवाड | 1 | | |
| प्रत्ययावेगळें जाड । बोलणें नाहीं | | 8 | ٦ إ |
| पिंडामधून आत्मा जातो । तेव्हां निवाडा कळों येतो | 1 | | |
| देहे जड हा पडतो । देखतदेखतां | | 8. | ४। |
| जड तितुकें पडिलें । चंचळ तितुकें निघोन गेलें | | | |
| जडचंचळाचें रूप आलें । प्रत्ययासी | | 8 | 41 |
| निश्चळ आहे सकळां ठाईं। हें तो पाहाणें नलगे कांहीं | | | |
| गुणविकार तेथें नाहीं । निश्चळासी | | 8 | દ્વા |
| जैसें पिंड तैसें ब्रह्मांड । विचार दिसतो उघड | | | |
| जड चंचळ जातां जाड । परब्रह्मचि आहे | | 81 | 91 |
| माहांभूतांचा खंबीर केला । आत्मा घालून पुतळा जाला | | | |
| चालिला सृष्टीचा गल्बला । येणें रितीं | | ٧, | 61 |
| आत्मा माया विकार करी । आळ घालिती ब्रह्मावरी प्रत्ययें सकळ कांहीं विवरी । तोचि भला | ŀ | 0 | 5 1 |
| ब्रह्म व्यापक अखंड । वरकड व्यापकता खंड | | 3 | १। |
| शोधून पाहातां जड । कांहींच नाहीं | 1 | 2 | o I |
| 2 1919 | - 4 | 1 | |

गगनासी खंडता नये। गगनाचें नासेल काये। जरी जाला माहांप्रळये । सृष्टीसंव्हार । २१। जें संव्हारामध्यें सांपडले । तें सहजचि नासिवंत जालें । जाणते लोकीं उगविलें । पाहिजे कोडें । २२। न कळतां वाटे कोडें। कळतां आवधें दिसे उघडें। म्हणोनी येकांतीं निवाडे । विचार पाहावा । २३। मिळतां प्रत्ययाचे संत । येकांतापरीस येकांत । केली पाहिजे सावचीत । नाना चर्चा ।२४। पाहिल्यावेगळें कळत नाहीं । कळतां कळतां संदेह नाहीं । विवेक पाहातां कोठेंचि नाहीं। मायाजाळ 1241 गगनीं अभाळ आलें। मागुती सर्वेचि उडालें। आत्म्याकरितां दृश्य जालें । उडेल तैसें । २६। मुळापासून सेवटवरी । विवेकी विवेकें विवरी । तोचि निश्चय थावरी । चळेना ऐसा । २७। वरकड निश्चय अनुमानाचें । अनुमानें बोलतां काये वेचे । जाणते पुरुष प्रचितीचे । ते तों मानीतना । २८। उगेंच बोलणें अनुमानाचें । अनुमानाचें कोण्या कामाचें । येथें सगट विचाराचें। काम नाहीं । २९। सगट विचार तो अविचार। कित्येक म्हणती येकंकार। येकंकार भ्रष्टाकार। करूं नये ।३०। कृत्रिम अवधें सांडावें। कांहीं येक शुद्ध घ्यावें। जाणजाणों निवडावें । सारासार 1381

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'आत्मनिरूपणनाम' समास सातवा समाप्त.

दशक २०: समास ८

देहक्षेत्रनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

| विधीप्रपंचतरु वाढला । वाढता वाढता विस्तीण जाला | 1 | | |
|--|---|-----|---|
| फळें येतां विश्रांती पावला । बहुत प्राणी | t | 8 | ١ |
| नाना फळें रसाळें लागलीं । नाना जिनसी गोडीस आलीं | 1 | | |
| गोडी पाहावया निर्माण केलीं। नाना शरीरें | t | ? | l |
| निर्माण जाले उत्तम विषये। शरीरेविण भोगितां नये | l | | |
| म्हणोनि निर्मिला उपाये । नाना शरीरें | l | 3 | ١ |
| ज्ञानइंद्रियें निर्माण केलीं । भिन्न भिन्न गुणाचीं निर्मिलीं | 1 | | |
| येका शरीरासी लागलीं । परी वेगळालीं | l | 8 | 1 |
| श्रोत्रइंद्रिईं शब्द पडिला । त्याचा भेद पाहिजे कळला | ŀ | | |
| ऐसा उपाये निर्माण केला । इंद्रियांमधें | l | 4 | ١ |
| त्वचेइंद्रियें सीतोष्ण भासे । चक्षुइंद्रियें सकळ दिसे | l | | |
| इंद्रियांमधें गुण ऐसे । वेगळाले | l | Ę | 1 |
| जिव्हेमधें रस चाखणें। घ्राणामधें परिमळ घेणें | ì | | |
| इंद्रियांमधें वेगळाल्या गुणें। भेद केले | | 9 | I |
| वायोपंचकीं अंतः कर्णपंचक । मिसळोनि फिरे निशंक | 1 | | |
| ज्ञानइंद्रियें कर्मइंद्रियें सकळिक । सावकास पाहे | | 6 | ١ |
| कर्मइंद्रियें लागवेगीं। जीव भोगी विषयांलागीं | | | |
| ऐसा हा उपाये जगीं। ईश्वरें केला | | 8 | ١ |
| विषय निर्माण जाले बरवे । शरीरेंविण कैसें भोगावे | | | |
| नाना शरीराचे गोवे । याकारणें | | 9 0 | 3 |
| | | | |

| अस्तीमांशाचे | शरीर । | त्यामधें गुणप्र | कार । |
|----------------------|------------|-----------------------|-----------|
| शरीरासारिखें | यंत्र । | आणीक नाहीं | 1881 |
| ऐसीं शरीरें निर्माण | केलीं । | विषयभोगें वार्ढा | वेलीं । |
| लाहानथोर निर्माण | जालीं । | येणें प्रकारें | 1881 |
| अस्तिमांशाचीं | शरीरें । | निर्माण केलीं जग | देश्वरें। |
| विवेकें गुण | ाविचारें । | करूनियां | 1831 |
| अस्तिमौंशाचा | पुतळा । | जेणें ज्ञानें सकळ व | मळा । |
| शरीरभेद | वेगळा । | ठाईं ठाईं | 1881 |
| तो भेद कार्या | कारण । | त्याचा उदंड आहे | गुण । |
| सकळ तीक्षण बु | द्घीविण । | काये कळे | 1 १ ५ । |
| सकळ करणें ई | श्वराला । | म्हणोनी भेद निर्माण व | केला । |
| ऊर्धमुख होतां | भेदाला । | ठाव कैंचा | ।१६। |
| सृष्टिकर्णीं आगत्य | भेद । | संव्हारें सहजची 3 | ाभेद । |
| भेद अभेद हा | संवाद । | मायागुणें | 1 १७। |
| मायेमधें अंत | तरात्मा । | नकळे तयाचा मा | हिमा। |
| जाला चतुर्मुख | ब्रह्मा । | तोहि संदेहीं पडे | 1861 |
| पीळ पेंच कडोवि | विकडीं । | तर्क तीक्षण घडीनें | घडी । |
| मनासी होये | तांतडी । | विवरण करितां | 1881 |
| आत्मत्वें लागतें सकळ | कांहीं । | निरंजनीं हे कांहींच | नाहीं । |
| येकांतकाळीं समजोन | र पाहीं । | म्हणिजे बरें | 1501 |
| देहेसामर्थ्यानुसार | 1 | सकळ करी जगत | श्वर । |
| थोर सामर्थ्यं उ | भवतार । | बोलिजेती | 1581 |

शेष कुर्म वऱ्हाव जाले । येवढे देहे विशाळ धरिले । तेणेंकरितां रचना चाले । सकळ सृष्टीची । २२। ईश्वरें केवढें सूत्र केलें । सूर्यबिंब धांवाया लाविलें। धुकटाकरवीं धरविलें । अगाध पाणी । २३। पर्वताऐसे ढग उचलती । सूर्यबिंबासी अछ्यादिती । तेथें सर्वेचि वायोची गती । प्रगट होये 1881 झिडकझिडकुं धांवे वारा । जैसा काळाचा म्हणियारा । ढग मारुनी दिनकरा। मोकळें करी 1241 बैसती विजांचे तडाखे । प्राणीमात्र अवचिता धाके । गगन कडकडून तडके । स्थळांवरी । २६। येहलोकांसी येक वर्म केलें । महद्भूतें महद्भूत आळिलें। सकळां समभागें चालिलें । सृष्टिरचनेसी 1 २७ । ऐसे अनंत भेद आत्मयाचे । सकळ जाणती ऐसे कैंचें। विवरतां विवरतां मनाचे । फडके होती 1281 ऐसी माझी उपासना । उपासकीं आणावी मना । अगाध महिमा चतुरानना । काये कळे । २९। अवाहन विसर्जन । हेंचि भजनाचें लक्षण । सकळ जाणती सज्जन । मी काये सांगों ।३०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'देहक्षेत्रनिरूपणनाम' समास आठवा समाप्त.

दशक २०: समास ९ सूक्ष्मिनरूपण

॥ श्रीराम ॥

| मृतिकापूजन करावें । आणी सर्वेचि विसर्जावें | 1 | | |
|---|-----|---|---|
| हें मानेना स्वभावें । अंतः कर्णासी | 1 | 8 | 1 |
| देव पूजावा आणी टाकावा । हें प्रशस्त न वटे जीवा | 1 | | |
| याचा विचार पाहावा । अंतर्यामीं | 1 | 2 | 1 |
| देव करिजे ऐसा नाहीं । देव टाकिजे ऐसा नाही | ۱ ا | | |
| म्हणोनि याचा कांहीं । विचार पाहावा | ١ | 3 | Ì |
| देव नाना शरीरें धरितो । धरुनी मागुती सोडितो | 1 | | |
| तरी तो देव कैसा आहे तो । विवेकें वोळखावा | 1 | 8 | ١ |
| नाना साधनें निरूपणें । देव शोधायाकारणें | 1 | | |
| सकळ आपुले अंतःकर्णें । समजलें पाहिजे | 1 | 4 | ı |
| ब्रह्मज्ञानाचा उपाये । समजल्याविण देतां नये | 1 | | |
| पदार्थ आहे मा घे जाये । ऐसें म्हणावें | 1 | Ę | ١ |
| सगट लोकांचे अंतरींचा भाव । मज प्रतक्ष भेटवावा देव | ı | | |
| परंतु विवेकाचा उपाव । वेगळाचि आहे | 1 | 9 | 1 |
| विचार पाहातां तगेना । त्यास देव ऐसें म्हणावेना | 1 | | |
| परंतु जन राहेना । काये करावें | | 6 | I |
| थोर लोक मरोनि जाती । त्यांच्या सुरता करुनी पाहाती | 1 | | |
| तैसीच आहे हेहि गती । उपासनेची | | 9 | F |

| थोर व्यापार ठाकेना जनीं । म्हणोनि केली रखतवानी । |
|---|
| राजसंपदा तयाचेनी । प्राप्त कैची । १०। |
| म्हणोनि जितुका भोळाभाव । तितुका अज्ञानाचा स्वभाव । |
| अज्ञानें तरी देवाधिदेव । पाविजेल कैचा ।११। |
| अज्ञानासी ज्ञान न माने। ज्ञात्यास अनुमान न माने। |
| म्हणोनि सिन्द्रांचीये खुणें । पावलें पाहिजे । १२। |
| माया सांडून मुळास जावें । तरीच समाधान पावावें । |
| ऐसें न होतां भरंगळावें । भलतीकडे । १३। |
| माया उलंघायाकारणें । देवासी नाना उपाय करणें। |
| अध्यात्मश्रवणपंथेंचि जाणें । प्रत्ययानें । १४। |
| ऐसें न करितां लोकिकीं। अवधीच होते चुकामुकी। |
| स्थिती खरी आणि लटकी । ऐसी वोळखावी ।१५। |
| खोट्याचे वाटे जाऊं नये । खोट्याची संगती धरूं नये। |
| खोटें संप्रहीं करूं नये । कांहींयेक |
| खोटें तें खोटेंचि खोटें। खऱ्यासीं तगेनात बालटें। |
| मन अधोमुख उफराटें । केलें पाहिजे । १७। |
| अध्यात्मश्रवण करीत जावें । म्हणिजे सकळ कांहीं फावे। |
| नाना प्रकारीचे गोवे । तुटोनी जाती ।१८। |
| सूत गुंतलें तें उकलावें । तैसें मन उगवावें । |
| मानत मानत घालावें । मुळाकडे । १९। |
| सकळ कांहीं कालवलें। त्या सकळाचें सकळ जालें। |
| शरीरीं विभागलें। सकळ कांहीं ।२०। |

काये तें येथेंचि पाहावें। कैसें तें येथेंचि शोधावें। सुक्ष्माचीं चौदा नांवें । येथेचि समजावीं । २१। निर्गुण निर्विकारी येक । तें सर्वां ठाईं व्यापक। देह्यामधें तें निष्कळंक । आहे कीं नाहीं । २२। मूळमाया संकल्परूप । तें अंतःकर्णाचें स्वरूप । जड चेतवी चैतन्यरूप । तें हि शरीरीं आहे ।२३। समानगुण गुणसाम्य । सूक्ष्म विचार तो अगम्य । सूक्ष्म साधु जाणते प्रणम्य । तया समस्तांसी ।२४। द्विधा भासतें शरीर । वामांग दक्षणांग विचार । तोचि अर्धनारीनटेश्वर । पिंडीं वोळखावा । २५। तोचि प्रकृतिपुरुष जाणिजे । शिवशक्ती वोळिखजे । शड्गुणईश्वर बोलिजे । तया कर्दमासी । २६। तयासीच म्हणिजे महत्तत्त्व । जेथें त्रिगुणाचें गूढत्व । अर्घमात्रा शुद्धसत्व । गुणक्षोभिणी 1291 त्रिगुणें चालतें शरीर । प्रतक्ष दिसतो विचार । मुळींच्या कर्दमाचें शरीर । ऐसें जाणावें 1261 मन माया आणि जीव । हाहि दिसतो स्वभाव। चौदा नामाचा अभिप्राव । पिंडीं पाहावा । २९। पिंड पडतां अवधेंचि जातें। परंतु परब्रह्म राहातें। शाश्वत समजोन मग तें। दृढ धरावें ।३०।

> इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'सूक्ष्मिनरूपणनाम' समास नववा समाप्त.

दशक २०: समास १०

विमलब्रह्मनिरूपण

॥ श्रीराम ॥

| घरूं जातां धरितां न ये। टाकूं जातां टाकितां न ये | 1 | | |
|--|---|----|---|
| जेथें तेथें आहेच आहे। परब्रह्म तें | 1 | 8 | 1 |
| जिकडे तिकडे जेथें तेथें । विन्मुख होतां सन्मुख होतें | 1 | | |
| सन्मुखपण चुकेना तें । कांहीं केल्यां | ı | ? | 1 |
| बैसलें माणुस उठोन गेलें । तेथें आकाशचि राहिलें | ı | | |
| आकाश चहुंकडे पाहिलें । तरी सन्मुखचि आहे | | 3 | 1 |
| जिकडे जिकडे प्राणी पळोन जातें । तिकडे आकाशचि भोंवतें | ı | | |
| बळें आकाशाबाहेर तें । कैसें जावें | ı | 8 | 1 |
| जिकडे जिकडे प्राणी पाहे। तिकडे तें सन्मुखचि आहे | | | |
| समस्तांचे मस्तकीं राहे । माध्यानीं मार्तंड जैसा | 1 | ધ | 1 |
| परी तो आहे येकदेसी। दृष्टांत न घडे वस्तुसी | | | |
| कांहीं येक चमत्कारासी । देउनी पाहिलें | l | Ę | 1 |
| नाना तीर्थं नाना देसीं। कष्टत जावें पाहाव्यासी | | | |
| तैसें न लगे परब्रह्मासी । बैसले ठाईं | | 9 | l |
| प्राणी बैसोनीच राहातां । अथवा बहुत पळोन जातां | | | |
| परब्रह्म तें तत्वतां । समागमें | | 6 | ı |
| पक्षी अंतराळीं गेला । भोंवतें आकाशचि तयाला | 1 | | |
| तैसें ब्रह्म प्राणीयांला । व्यापून आहे परब्रह्म पोकळ घनदाट । ब्रह्म सेवटाचा सेवट | | 4 | • |
| ज्यासी त्यासी ब्रह्म नीट । सर्वकाळ | | १० | 1 |
| The second secon | 1 | 10 | 4 |

| दृश्या सबाहे अंतरीं। ब्रह्म दाटलें ब्रह्मांडोदरीं। |
|--|
| आरे त्या विमळाची सरी । कोणास द्यावी ।११। |
| वैकुंठकैळासस्वर्गलोकीं । इंद्रलोकीं चौदा लोकीं। |
| पन्नगादिकपाताळलोकीं । तेथेंहि आहे । १२। |
| कासीपासून रामेश्वर । आवधें दाटलें अपार । |
| परता परता पारावार । त्यास नाहीं । १३। |
| परब्रह्म तें येकलें । येकदांचि सकळांसी व्यापिलें । |
| सकळांस स्पर्शोन राहिलें । सकळां ठाईं । १४। |
| परब्रह्म पाउसें भिजेना । अथवा चिखलानें भरेना । |
| पुरामधें परी वाहेना । पुरासमागमें ।१५। |
| येकसरें सन्मुख विमुख । वाम सव्य दोहिंकडे येक । |
| आर्धऊर्घ प्राणी सकळीक । व्यापून आहे ।१६। |
| आकाशाचा डोहो भरला । कदापी नाहीं उचंबळला। |
| असंभाव्य पसरला । जिकडे तिकडे । १७। |
| येकजिनसी गगन उदास । जेथें नाहीं दृश्यभास । |
| भासेंविण निराभास । परब्रह्म जाणावें । १८। |
| संतसाधुमाहानुभावां । देवदानवमानवां । |
| ब्रह्म सकळांसी विसांवा। विश्रांतिठाव । १९। |
| कोणेकडे सेवटा जावें । कोणेकडे काये पाहावें। |
| असंभाव्य तें नेमावें । काये म्हणोनी ।२०। |
| स्थूळ नव्हे सूक्ष्म नव्हे। कांहीं येकासारिखें नव्हे। |
| ज्ञानदृष्टीविण नव्हे । समाधान । २१। |

पिंडब्रह्मांडिनरास । मग तें ब्रह्म निराभास। येथून तेथवरी अवकास । भकासरूप 1251 ब्रह्म व्यापक हें तों खरें। दृश्य आहे तों हें उत्तरें। व्यापेंविण कोण्या प्रकारें। व्यापक म्हणावें 1531 ब्रह्मासी शब्दचि लागेना । कल्पना कल्पूं शकेना । कल्पनेतीत निरंजना । विवेकें वोळखावें । २४। शुद्ध सार श्रवण । शुद्ध प्रत्ययाचें मनन । विज्ञानीं पावतां उन्मन । सहजचि होतें । २५। जालें साधनाचें फळ । संसार जाला सफळ । निर्गुणब्रह्म तें निश्चळ । अंतरीं बिंबलें । २६। हिसेब जाला मायेचा । जाला निवाडा तत्वांचा । साध्य होतां साधनाचा । ठाव नाहीं । २७। स्वप्नीं जें देखिलें। तें तें जागृतीस उडालें। सहजचि अनुर्वाच्य जालें । बोलतां न ये । २८। ऐसें हें विवेकें जाणावें । प्रत्ययें खुणेसी बाणावें। जन्ममृत्याच्या नांवें । सुन्याकार 1281 भक्तांचेनि साभिमानें । कृपा केली दाशरथीनें । समर्थकृपेचीं वचनें। तो हा दासबोध ।३०। वीस दशक दासबोध । श्रवणद्वारें घेतां शोध । मननकर्त्यास विशद । परमार्थ होतो । ३१। वीस दशक दोनीसें समास । साधकें पाहावें सावकास । विवरतां विशेषाविशेष । कळों लागे ।३२।

00

ग्रंथाचें करावें स्तवन । स्तवनाचें काये प्रयोजन । येथें प्रत्ययास कारण । प्रत्ययो पाहावा ।३३। देहे तंव पांचा भूतांचा। कर्ता आत्मा तेथीचा। आणी कवित्वप्रकार मनुशाचा । काशावरुनी 1381 सकळ करणें जगदीशाचें। आणी कवित्वचि काय मानुशाचें। ऐशा अप्रमाण बोलण्याचें । काये घ्यावें ।३५। सकळ देह्याचा झाडा केला । तत्त्वसमुदाव उडाला । तेथें कोणत्या पदार्थाला । आपुलें म्हणावें ।३६। ऐसीं हें विचाराचीं कामें । उगेंच भ्रमों नये भ्रमें । जगदेश्वरें अनुक्रमें। सकळ केलें ।३७। इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे 'विमलब्रह्मनिरूपणनाम' समास दहावा समाप्त.

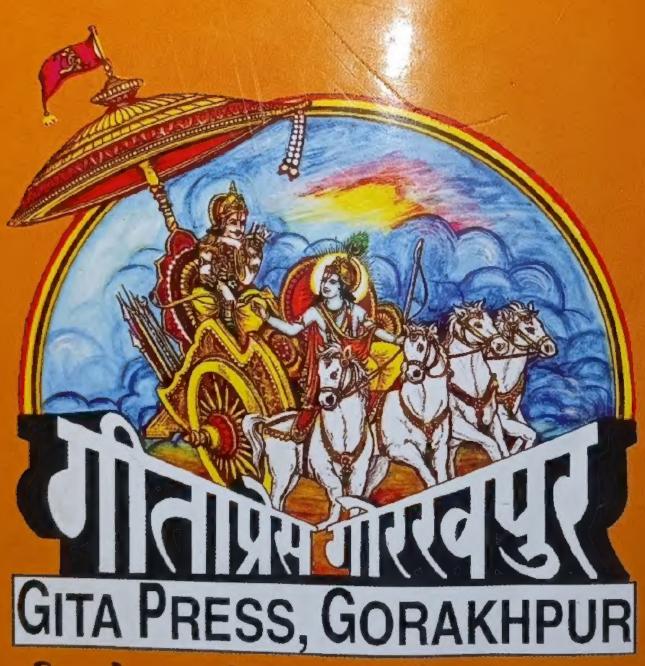
> दशक विसावा समाप्त श्रीमत् दासबोध ग्रंथ समाप्त

आरती मनोबोधाची

वेदांचें जें गुह्य शास्त्रांचें जें सार।
प्राकृत शब्दांमाजी केला विस्तार।
कर्म उपासना ज्ञान गंभीर।
ज्याच्या मननमात्रें आत्मा गोचर॥१॥
जयदेव जयदेव जय मनोबोधा।
पंचप्राणें आरती तुज स्वात्मशुद्धा॥धृ॥
दोन शतें पांच श्लोक हें जाण।
श्रवणें अर्थें साधक पावित हे खूण।
परमार्थासी सुलभ मार्ग हा पूर्ण।
यशवंत सद्गुरु दासाचा प्राण॥२॥

= आरती दासबोधाची =

वेदांतसंमतीचा काव्यसिंधु भरला। श्रुति शास्त्रग्रन्थ गीता साक्ष संगम केला। महानुभाव संतजनीं अनुभव चाखीला। अज्ञान जड जीवा मार्ग सुगम जाला॥१॥ जय जया दासबोधा ग्रन्थराज प्रसिद्धा। आरति वोवाळीन विमळज्ञान बाळबोध॥धृ॥ नवविधा भक्तिपंथें रामरूप अनुभवी। चातुर्यनिधी मोठा मायाचक्र उगवी। हरिहरहृदयींचें गुह्य प्रगट दावी। बद्धचि सिद्ध जाले असंख्यात मानवी॥२॥ वीसिंह दशकींचा अनुभव जो पाहे। नित्यनेम विवरितां स्वयें ब्रह्मचि होये। अपार पुण्य गांठी तरी श्रवण लाहे। कल्याणलेखकाचें हृदईं॥ ३॥ भावगर्भ



गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

फोन: (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स: २३३६९९७